॥ श्री गणेशाय नमः ॥

16





श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्पादित



श्री आर्यभट्ट-पञ्चांगम्

श्री विक्रम सम्वत्–2072 • शाके :–1937

सन्–2015–2016 ई. • भारतीय गणराज्य संवत् 66–67

प्रधान सम्पादक
पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति
बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न, प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली

सम्पादकः
धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र, 2/45-ए,
वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

प्रकाशकः
धर्मसन्त प्रकाशन
2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ❖ दूरभाष : 011-32663222, 23264986, 23285234

विषय सूची

आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि

1. हमारे "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश 28°।38 एवं पूर्व रेखांश 77°।12 के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।
2. आर्यभट्ट पंचांग के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सूक्ष्म दृक्गणित एवं चित्रा पक्षीय निरयण पद्धति को ही अपनाया गया है।
3. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अंतर आना स्वाभाविक है। अतः प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 2 मिनट ऋण (−) तथा सूर्यास्त में 2 मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।
4. इस पंचांग में करण सूर्योदय कालीन दिये गये हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।
5. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग आदि भा.स्टै.टा. में हैं। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।
6. महीनों में अष्टमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टै.टा. प्रातः 5 घं. 30 मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी, उदयास्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। ग्रह स्पष्टों के साथ कुण्डली भी उपरोक्त समय की है।
7. लस्टर में A, B, C, D आदि चिन्ह दिये गये हैं, उनका मतलब यह है कि मैटर उस लाईन में नहीं आ सका, जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाईन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतावली को पंचांग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।
8. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी-पल, उनका समाप्ति काल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरांत से माना जाये। उन घटी-पलों के घटा-मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घंटा-मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भा.स्टै.टा. में ज्ञात हो जायेगा।
9. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि, नक्षत्रादि के घटी-पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घंटा-मिनट में भी दे दिये गये हैं। जिससे तिथि, नक्षत्रादि के समाप्ति काल को घंटा-मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे-मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां 24 लिखा हो वह रात्रि के ठीक 12 बजे समझे जायें। जहां 27।18 लिखा हो वहां 27 में से 24 घटाकर रात्रि के 3 बजकर 18 मि. समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।
10. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कॉलम में 15 को पूर्णमासी तथा कृष्ण पक्ष में 30 को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को बदी भी कहते हैं।
11. रा. मि. पहले कॉलम में दी गई हैं। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कॉलम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिये गये हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रविष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें लिखी हैं।
12. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टै.टा. प्रातः 5।30 बजे (दिल्ली) के दिये गये हैं और लग्न का समाप्ति काल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।
13. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य (0) चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे 60।00 घटी लिखा है। उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ.-अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त-अप्रैल-अक्टूबर (मास)
अनु.-अनुराधा (नक्षत्र)
आ.-आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आषा., आश्विन
अं.-अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ.-उदय, उपरांत
उ.फा.-उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा.-उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा.-उत्तरा भाद्रपद (नक्षत्र)
ऐं.-ऐन्द्र (योग)
क.-कर्क-कन्या (राशि), कला
का.-कार्तिक मास
क्रांति सा.-साम्य (महापात)
कृ.-कृतिका नक्षत्र, कृष्ण पक्ष
कु.-कुंभ राशि
गु.-गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा.-गुरु दान से
गो.-गोधूलि (लग्न)
गं.-गंड (योग)
घ.-घटी
घं.-घंटा
चि.-चित्रा (लग्न)
चै.-चैत्र (मास)
चौ.-चौर (पंचक)
चं.-चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज.-जयंती, जनवरी (मास)
जू.-जून (मास)
जु.-जुलाई (मास)
ज्ये.-ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता.-तारीख
तु.-तुला राशि
दि. ल.-दिन में लग्न
ध.-धनु (राशि), धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु.-धूलिमुख (अन्यगोधूली) लग्न
ध्रु.-ध्रुव (योग)
धृ.-धृति (योग)
नि.-निम्बार्क (सम्प्रदाय)
नृ.-नृप (पंचक)
प.-परिध (योग), पल
प्र.-प्रवेश
प्रा.-प्रारंभ
प्री.-प्रीति (योग)
पु.-पुष्य (नक्षत्र)
पुन.-पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा.-पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा.-पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा.-पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु.-फाल्गुन (मास)
ब्र.-ब्रह्म योग
वृ.-वृद्धि योग
बु.-बुध (वार), बुध ग्रह
भ.-भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र.-भाद्रपद (मास)
म.-मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास)
मा.-मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि.-मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी.-मीन राशि
मु.-मुहूर्त
मू.-मूल (नक्षत्र)
मे.-मेष (राशि) लग्न
मृ.-मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र.-रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा.-राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे.-रेवती (नक्षत्र)
रो.-रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल.-लग्न
व.-वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र.-व्रत
व्य.-व्यतिपात (योग)
वृ.-वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या.-व्याघात (योग)
वि.-विशाखा (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि.मु.-विवाह मुहूर्त
वै.-वैष्णव सम्प्रदाय, वैधृत योग, वैशाख मास
श.-शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा नक्षत्र
शि.-शिव योग
शु.-शुक्रवार, शुक्रग्रह, शुभ, शुक्लयोग, शुक्ल पक्ष
श्रा.-श्रावण (मास)
सा.-साध्य (योग)
स्वा.-स्वाती (नक्षत्र)
स्मा.-स्मार्त (सम्प्रदाय)
सि.-सिद्धि (योग), सितंबर मास
सिं.-सिंह (राशि)
सु.-सुकर्मा (योग)
सौ.-सौभाग्य (योग)
ह.-हस्त (नक्षत्र), हर्षल (योग)
हि.-हिन्दी (मास तारीख)

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र की स्थापना सन् 1983 में हुई और भारत सरकार से इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यंत्र-मंत्र-तंत्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोगादि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्यकाल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी, ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अंतर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंसित किया, तब हमारे देशवासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसंधान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री रामकृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमेरिका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानंद जी ने अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप आदि देशों में घूम-घूमकर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदोपरांत स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों संत-महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलंबन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन-मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थाएं हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला-कौशल तथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थलों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचें। लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारण उत्तर भारत में इस विद्या का सबसे अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भंडार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान् प्राचीन ग्रन्थों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिए अत्यंत उपयोगी ग्रन्थ **"शतक मार्त्तण्ड"** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है, उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता **श्री आर्यभट्ट** थे, जिनका जन्म 476 ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ **"आर्य भटीय"** कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यंजनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्वप्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्ही महापुरुष के नाम पर **आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान् नये-नये प्रयोग व आविष्कार करने में सफल होंगे।

शतक मार्त्तण्ड जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक ऐसे पंचांग के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अधिक से अधिक विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने **श्री आर्यभट्ट पंचांग** ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरंभ किया। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों तथा विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिए क्षमा प्रदान करते हुए अपने सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

—सम्पादक

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ वृहत् जातक की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने **आर्यभटीय** ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय से ही मिलता है। यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरंभ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रह-नक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धांत, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरूप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा सिद्धांत, गणित संहिता, मुहूर्त, फलित प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरंतर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अंदर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्राचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थाएं थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्या अध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम से कम 28000 वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् 476 में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ **आर्यभटीय** में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि 4967 योजन बताई है। सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः-छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णों को एक-एक संख्या वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया-जैसे पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क=1, ख=2, ग=3, घ=4, ङ=5, च=6, छ=7, ज=8, इसी प्रकार क्रम से म=25, य=30, र=40, ल=50, व=60, श=70, ष=80, स=90, ह=100; क=एक, कि=सौ, कु=दस हजार, कृ=दस लाख, क्लृ=दस करोड़, के=दस अरब, कै=दस खरब, को=दस नील, कौ=दस शंख, इसी प्रकार ख=दो, खि=दो सौ, खु=बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ **आर्यभटीय** की रचना प्राचीन कुसुमपुर (जो आज का पटना नगर है) में रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य त्यवहार श्रेणियों का विशद् विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि 598 ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल 1114 ई. के पहले का है, इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ **महा आर्यभटीय** है। इसमें 18 अध्याय हैं। जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीजगणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धांतों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ महा आर्यभटीय भी बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान विद्वान् थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बनाये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध तथा आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते है कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

– लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

प्रमुख व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत व्रत पर्वादि सं. 2072 वि.

भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश दिन (ता. 21 मार्च 2015 से 07 अप्रैल 2016 ई. तक)

श्री राम नवमी	28	मार्च
श्री महावीर जयन्ती	02	अप्रै.
डॉ. अम्बेडकर ज., वैशाखी	14	"
मई दिवस	01	मई
बुद्ध पूर्णिमा	04	"
शब-ए-मिराज (ऐ.)	17	"
गंगा दशहरा	28	"
शब-ए-बारात (ऐ.)	03	जून
ईद-उल-फित्र	18	जुला.
भा. स्वतंत्रता दिवस 69वां वर्ष	15	अग.
रक्षा बंधन	29	"
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	05	सितं.
श्री गणेश जन्म चतुर्थी	17	"
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	25	"
अनन्त चतुर्दशी	27	"
महात्मा गांधी व शास्त्री ज.	02	अक्टू.
श्री अग्रसेन जयंती	13	"
विजया दशमी	22	"
मुहर्रम ताजिया	24	"
श्री वाल्मीकि जयंती	27	अक्टू.
महावीर निर्वाण दिवस	11	नवं.
दीपावली	11	"
भैया दूज	13	"
गुरु नानक देव जयंती	25	"
गुरु तेग बहादुर बलिदान दि.	16	दिसं.
चैहल्लुम (ऐ.)	02	"
क्रिसमस डे	25	"
ईद-ए-मिलाद (ऐ.)	25	"
ईद-ए-मौलाद (ऐ.)	30	"
अंग्रेजी नववर्ष 2016 प्रा. (ऐ.)	01	जन.
लोहड़ी उत्सव (पं.-हरि-हिप्र) ऐ.	13	"
मकर संक्रांति (ऐ.)	14	"
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	16	"
भा. गणतंत्र दिवस 67वां वर्ष	26	"
वसंत पंचमी	12	फर.
श्री महाशिवरात्री व्रत	07	मार्च
होलिका दहन	23	"
छारेड़ी, धुलैण्डी	24	"

प्रमुख व्रत पर्वोत्सवादि

नववर्ष प्रारंभ	21	मार्च
सिंधारा (राज.), चेटीचण्ड	21	"
गणगौरी 3, गौरी 3, सौभाग्य 3	22	"
श्री पंचमी, कल्पादि 5, नाग पंचमी	24	"
स्कंद षष्ठी व्रत	25	"
श्री दुर्गाष्टमी (भवान्युत्पत्ति)	27	"
श्री रामनवमी, नवरात्र पूर्ण	28	"
हरिदमनोत्सव	01	अप्रै.
अनंग त्रयोदशी	02	"
दमनक चतुर्दशी, गुड फ्राईडे	03	"
चैत्री पूर्णिमा, मन्वादि 15	04	"
श्री हनुमान ज., वैशाख स्नान प्रा.	04	"
अनुसुइया जयंती	08	"
शीतला पूजन, बूढ़ा बासोड़ा	12	"
देव दामोदर पुण्य तिथि (असम)	19	अप्रै.
शिवाजी व परशुराम जयंती	20	"
अक्षय 3, त्रेता युगादि 3	21	"
कल्पादि 3	21	"
श्री गंगा सप्तमी (गंगोत्पत्ति)	25	"
श्री सीता नवमी (जानकी ज.)	27	"
रुक्मिणी द्वादशी	30	"
विश्व मजदूर दिवस	01	मई
अशोक त्रिरात्री व्रत प्रा.	01	"
श्री नृसिंह जयंती	02	"
वैशाख पूर्णिमा व्रत, कूर्म जयंती	04	"
पीपल पूजन	04	"
अशोक त्रिरात्री व्रत पूर्ति	04	"
वैशाख स्नान पूर्ति, बुद्ध पूर्णिमा	04	"
देवर्षि नारद जयंती	06	"
श्री दादूदयाल पुण्य तिथि	10	"
मधुसूदन द्वादशी	15	मई
भावुका अमावस्या, वट व्रत-पूजन	17	"
वट सावित्री व्रत प्रा.	18	"
करवीर व्रत, करिदिनं	19	"
गंगा स्नान प्रा.	19	"
रम्भा तृतीया व्रत	20	"
अरण्य षष्ठी, जामित्र 6 (बंगाल)	24	"
महेश नवमी (माहेश्वरीणां उत्पत्ति)	27	"
श्री गंगा दशहरा (गंगावतरण)	28	"
चम्पक द्वादशी	30	"
वट सावित्री व्रत प्रा.	31	"
वट सावित्री व्रत पूजन	02	जून
ज्येष्ठी पूर्णिमा	02	"
विश्व पर्यावरण दिवस	05	
गोपद्म व्रतोद्यापन	11	"
मनोरथ द्वितीया (बंगाल)	18	जुला.
जगदीश रथ यात्रा (पुरी)	18	"
कुमार षष्ठी व्रत	22	"
वैवस्वत सप्तमी (सूर्य पूजन)	23	"
लोकमान्य तिलक जयंती	23	"
खरसी पूजा (त्रिपुरा)	24	"
भड्डली नवमी, शूद्रादि 9	25	"
आशा दशमी व्रत	26	"
चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रा.	27	"
आषाढ़ी पूर्णिमा, मन्वादि 15	31	"
गुरु 15, व्यास पूजा	31	"
कोकिला व्रत, वायु परीक्षा	31	"
अशून्य शयन व्रत प्रा. (बंगाल)	01	अग.
लोकमान्य तिलक पुण्य दिवस	01	"
नाग पंचमी (मरुस्थले)	04	"
शीतला सप्तमी (उड़ीसा)	06	"
केर पूजा (त्रिपुरा)	09	"
मंगला गौरी पूजा	10	"
हरियाली 30, मन्वादि 30	14	"
चित्तलगी 30, सरस माधुरी जयंती	14	"
भा. स्वतंत्रता दिवस 69वां वर्ष	15	"
सिंधारा (राजस्थान)	16	"
मधुश्रवा (छोटी) तीज, हरियाली तीज	17	अग.
मंगला गौरी पूजा	18	"
वरद चतुर्थी, बहुला चतुर्थी	18	"
नाग पंचमी देशाचारे	19	"
शीतला सप्तमी (सिंध)	21	"
मंगला गौरी पूजा	25	"
पवित्रार्पण 12, दधि भक्षण व्रतारंभ	27	"
हयग्रीव जयंती, उपाकर्म (अथर्व.)	29	"
श्रावणी पूर्णिमा, गायत्री जयंती	29	"
अमरनाथ दर्शन (कश्मीर), रक्षाबंधन	29	"
सिंधारा (राजस्थान)	31	"
कज्जली (बड़ी) तीज, सातुड़ी तीज	01	सितं.
संकट चतुर्थी, बहुला चतुर्थी	01	"
रक्षा 5 (उड़ीसा), पुत्रार्थी व्रतारंभ	03	"
चंदन 6, ऊभी 6, ललही 6	03	"
माधवदेव पुण्य तिथि (असम)	04	"
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत	05	"
मां आद्याकाली जयंती	05	"
गोगा नवमी, नंदोत्सव (गोकुल)	06	"
गोवत्स द्वादशी	09	"
अघोरा 14, कैलाश यात्रा	12	"
कुशोत्पाटिनी पिठोरी अमावस्या	12	"
मन्वादि 30, लोहार्गल स्नान (राज.)	13	"
कुंभ पर्व (नासिक)	13	"
संवत्सरी जैन	15	"
हरितालिका 3, गौरी 3, मन्वादि 3	16	"
विनायक 4, कलंकी 4, पत्थर 4	17	"
ऋषि पंचमी व्रत	18	"
सूर्य षष्ठी व्रत, ललिता 6 (गुज.)	19	"
बलदेव 6 (श्री बलराम ज.)	19	"
मुक्ताभरण 7, संतान सप्तमी	20	"
श्री राधा जयंती	21	"
श्री चन्द 9, अदु:ख 9	22	"
मेला रामदेव	23	"
भुवनेश्वरी जयंती, वामन ज.	25	"
अनन्त चतुर्दशी व्रत, पूर्णिमा व्रत	27	"
प्रोष्ठपदी पूर्णिमा व्रत, महालयारंभ	27	"

नोट-अवकाश (ऐं.) को ऐच्छिक अर्थात् वैकल्पिक समझें। मुस्लिम त्यौहार चांद से होते हैं। स्थान भेद आदि कारणों से कभी-कभी एक दिन का फर्क आ जाता है। अवकाशों को सरकारी गजट से मिला लेना आवश्यक है।

चन्दन षष्ठी व्रत	02 अक्टू.
महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	02 "
जीवित्पुत्रिकाष्टमी व्रत	04 "
महालक्ष्मी व्रत	04 "
सौभाग्यवती स्त्रीणां श्राद्ध	06 "
महालय श्राद्ध	12 "
शारदीय नवरात्र प्रा., घटस्थापन	13 "
उपांग ललिता पंचमी व्रत	18 "
सरस्वती आवाहनम्, भद्रकाल्यावतार	19 "
महाष्टमी, दुर्गाष्टमी, सरस्वती पूजनं	21 "
महानवमी, मन्वादि 9	22 "
नवरात्र पूर्ण, सरस्वती विसर्जन	22 "
विजया दशमी (रावण दाह)	22 "
अपराजिता व शमी पूजन	22 "
भरत मिलाप	23 "
कोजागर व्रत	26 "
शरत्पूर्णिमा, रास पूर्णिमा (वृंदावन)	27 "
कार्तिक स्नान प्रा.	27 "
करवा चौथ, कर्क 4, दशरथ 4	30 "
इन्दिरा गांधी पुण्य दि.,	31 "
सरदार पटेल ज.	31 "
अहोई 8	03 नवं.
गोवत्स द्वादशी (गोवत्स पूजन)	07 "
धनतेरस, धन्वंतरी ज., यमाय दीपदानम्	09 "
नरकहारिणी रूप चतुर्दशी	10 "
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	11 "
गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, बली पूजा	12 "
भैया दूज, यम द्वितीया, यमुना स्नान	13 "
चित्रगुप्त पूजन	13 "
सूर्य षष्ठी व्रतारंभ (बिहार)	14 "
पं. जवाहर लाल नेहरू ज.	14 "
बाल दिवस	14 "
सौभाग्य पंचमी, पाण्डव 5	16 "
सूर्य षष्ठी (डाला छठ) पूजा (बिहार)	17 "
सहस्त्रार्जुन ज.	18 "
श्रीमती इंदिरा गांधी जन्म दिवस	19 "
गोपाष्टमी, गोसंवर्धन सप्ताह पूर्ति	19 "
अक्षय 9, कूष्माण्ड 9, आंवला 9	20 "
कृतयुगादि 9, जगद्धातृ पूजन	20 "
भीष्म पंचक व्रत प्रा.	22 "
प्रबोधिनी 11 व्रत, तुलसी विवाह	22 "

चातुर्मास्य व्रत नियमादि पूर्ण	22 नवं.
मन्वादि 12, कालीदास जयंती	23 "
वैकुण्ठ 14 व्रत	24 "
गुरु नानकदेव जयंती, देव दीपोत्सव	25 "
कार्तिकी पूर्णिमा, मन्वादि 15	25 "
कार्तिक स्नान व भीष्म पंचक पूर्ण	25 "
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	28 "
विश्व एड्स दिवस	01 दिसं.
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ज. दि.	03 "
श्री काल भैरवाष्टमी, भैरव पूजन	03 "
वैतरणी व्रत, भारतीय झण्डा दिवस	07 "
मानवाधिकार दिवस	10 "
स्वा. श्रद्धानंद बलिदान दि.	23 "
अन्नपूर्णा जयंती, श्री दत्तात्रेय जयंती	25 "
क्रिसमस डे (बड़ा दिन)	25 "
ईद-ए-मौलाद (मु.)	30 "
न्यू ईयर इवनिंग डे	31 "
सन् 2016 ई.	
नववर्ष 2016 प्रारंभ	01 जन.
लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दिवस	11 "
लोहड़ी उत्सव	13 "
मकर संक्रांति, पोंगल पर्व	14 "
भारतीय थल सेना दिवस	15 "
वैकुण्ठ 11 (द.भा.)	20 "
फातिहा यजदहूम (मु.)	22 "
पौषी पूर्णिमा पुण्यं, माघ स्नान प्रा.	23 "
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती	23 "
भारतीय गणतंत्र दिवस 68 वां वर्ष	26 "
महात्मा गांधी पुण्य दिवस	30 "
स्वामी विवेकानन्द जयंती	31 "
श्री रामानंदाचार्य ज.	31 "
तिल 12, ऋषभदेव मोक्ष	05 फर.
श्री शीतलनाथ जन्म-तप (जैन)	05 "
रटन्ति कालिका पूजन	05 "
मौनी अमावस्या	08 "
गौरी 3 व्रत, गौंतरी (पं.)	11 "
वरद-तिल 4	11 "
वसन्त (श्री) पंचमी, तक्षक पूजा	12 "
रति कामोत्सव, सरस्वती पूजन	12 "
दारिद्रय हरण 6, शीतला 6 (बंगाल)	13 "
रथ सप्तमी, आरोग्य 7, अचल 7	14 "

मन्वादि 7, चन्द्रभागा 7, वैलेण्टाइन डे	14 फर.
भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी	15 "
भीष्म द्वादशी (भीष्म तर्पण)	19 "
संत रैदास जयंती	22 "
ललिता जयंती, माघ स्नान पूर्ण	22 "
दशाश्वमेध घाटे स्नान पूर्ति (काशी)	22 "
समर्थ गुरु रामदास जयंती	03 मार्च
महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती	04 "
श्री महाशिवरात्री व्रत	07 "
शिव खप्पर पूजन	08 "
फुलरिया दूज, रामकृष्ण परमहंस ज.	10 "
पं. लेखराम वीर तृतीया	11 "
महर्षि याज्ञवल्क जयंती	13 "
गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल)	14 "
होलाष्टक प्रारम्भ, दादुदयाल जयंती	16 "
होलिका दहन, होलाष्टक पूर्ति	23 "
मन्वादि 15, चैतन्य महाप्रभु जयंती	23 "
छारेड़ी, धुलैण्डी, वसन्त प्रतिपदा	24 "
गणगौरी पूजनारंभ (राज.)	24 "
आशा चतुर्थी व्रत (राज.)	27 "
रंग पंचमी	28 "
एकनाथ षष्ठी व्रत	29 "
शीतलाष्टमी, शीतला पूजन	01 अप्रै.
रंग त्रयोदशी	05 "
मन्वादि 30, चान्द्र संवत्सर 2072 पूर्ण	07 "

विनायक चौथ व्रत (शुक्ल पक्षीय)

चैत्र	सोमवार	23 मार्च
वैशाख	बुधवार	22 अप्रैल
ज्येष्ठ	गुरुवार	21 मई
प्र.आषाढ़	शनिवार	20 जून
द्वि.आषाढ़	सोमवार	20 जुला.
श्रावण	मंगलवार	18 अग.
भाद्रपद	गुरुवार	17 सितं.
आश्विन	शुक्रवार	16 अक्टू.
कार्तिक	रविवार	15 नवं.
मार्गशीर्ष	मंगलवार	15 दिसं.
	सन् 2016 ई.	
पौष	बुधवार	13 जन.
माघ	गुरुवार	11 फर.
फाल्गुन	शनिवार	12 मार्च

चतुर्थी व्रत (कृष्ण पक्षीय)

वैशाख	बुधवार	08 अप्रैल
ज्येष्ठ	गुरुवार	07 मई
प्र.आषाढ़	शुक्रवार	05 जून
द्वि.आषाढ़	रविवार	05 जुलाई
श्रावण	सोमवार	03 अग.
भाद्रपद	मंगलवार	01 सितं.
आश्विन	गुरुवार	01 अक्टू.
कार्तिक	शुक्रवार	30 अक्टू.
मार्गशीर्ष	रविवार	29 नवं.
पौष	सोमवार	28 दिसं.
	सन् 2016 ई.	
माघ	बुधवार	27 जन.
फाल्गुन	शुक्रवार	26 फर.
चैत्र	रविवार	27 मार्च

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

चैत्र	शुक्रवार	27 मार्च
वैशाख	रविवार	26 अप्रैल
ज्येष्ठ	मंगलवार	26 मई
प्र.आषाढ़	बुधवार	24 जून
द्वि.आषाढ़	शुक्रवार	24 जुला.
श्रावण	रविवार	23 अग.
भाद्रपद	सोमवार	21 सितं.
आश्विन	बुधवार	21 अक्टू.
कार्तिक	गुरुवार	19 नवं.
मार्गशीर्ष	शनिवार	19 दिसं.
	सन् 2016 ई.	
पौष	रविवार	17 जन.
माघ	सोमवार	15 फर.
फाल्गुन	बुधवार	16 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत

वैशाख	रविवार	12 अप्रै.
ज्येष्ठ	सोमवार	11 मई
प्र.आषाढ़	मंगलवार	09 जून
द्वि.आषाढ़	बुधवार	08 जुला.
श्रावण	शुक्रवार	07 अग.
भाद्रपद	शनिवार	05 सितं.

आश्विन	रविवार	04 अक्टू.
कार्तिक	मंगलवार	03 नवं.
मार्गशीर्ष	गुरुवार	03 दिसं.
सन् 2016 ई.		
पौष	शनिवार	02 जन.
माघ	सोमवार	01 फर.
फाल्गुन	मंगलवार	01 मार्च.
चैत्र	शुक्रवार	01 अप्रैल

एकादशी व्रत

चैत्र	शुक्ल	कामदा	30 मार्च
वैशाख	कृष्ण	वरूथिनी	15 अप्रैल
"	शुक्ल	मोहिनी	29 "
ज्येष्ठ	कृष्ण	अपरा	14 मई
"	शुक्ल	निर्जला	29 "
प्र.आषाढ़	कृष्ण	योगिनी	12 जून
प्र.आषाढ़	शुक्ल	कमला	28 "
द्वि.आषाढ़	कृष्ण	कामदा	12 जुलाई
द्वि.आषाढ़	शुक्ल	देवशयनी	27 "
श्रावण	कृष्ण	कामिका	10 अग.
"	शुक्ल	पवित्रा	26 "
भाद्रपद	कृष्ण	अजा	08 सितं.
"	शुक्ल	पद्मा (जलझू)	24 "
आश्विन	कृष्ण	इन्दिरा	08 अक्टू.
"	शुक्ल	पापांकुशा	23 "
कार्तिक	कृष्ण	रमा	07 नव.
"	शुक्ल	देव प्रबोधिनी	22 "
मार्गशीर्ष	कृष्ण	उत्पत्ति	07 दिसं.
"	शुक्ल	मोक्षदा	21 "
सन् 2016 ई.			
पौष	कृष्ण	सफला	05 जन.
पौष	शुक्ल	पुत्रदा	20 जन.
माघ	कृष्ण	षट्तिला	04 फर.
"	शुक्ल	जया	18 "
फाल्गुन	कृष्ण	विजया	05 मार्च
"	शुक्ल	आमलकी	19 "
चैत्र	कृष्ण	पापमोचनी	03 अप्रै.

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल		01 अप्रै.
वैशाख	कृष्ण		16 "
वैशाख	शुक्ल		01 मई
ज्येष्ठ	कृष्ण		15 "
"	शुक्ल		31 "
प्र.आषाढ़	कृष्ण		14 जून
प्र.आषाढ़	शुक्ल	सोमप्रदोष	29 "
द्वि. "	कृष्ण	" "	13 जुला.
द्वि.आषाढ़	शुक्ल		29 "
श्रावण	कृष्ण	भौमप्रदोष	11 अग.
"	शुक्ल		27 "
भाद्रपद	कृष्ण		10 सितं.
"	शुक्ल	शनि प्रदोष	26 "
आश्विन	कृष्ण	" "	10 अक्टू.
"	शुक्ल		25 "
कार्तिक	कृष्ण	भौम प्रदोष	09 नवं.
"	शुक्ल	" "	23 "
मार्गशीर्ष	कृष्ण	" "	08 दिसं.
"	शुक्ल		23 "
सन् 2016 ई.			
पौष	कृष्ण		07 जन.
"	शुक्ल	शनिप्रदोष	21 "
माघ	कृष्ण	" "	06 फर.
"	शुक्ल		20 "
फाल्गुन	कृष्ण		06 मार्च
"	शुक्ल	भौमप्रदोष	20 "
चैत्र	कृष्ण		05 अप्रैल

मासिक शिवरात्री व्रत

वैशाख	शुक्रवार	17 अप्रै.
ज्येष्ठ	शनिवार	16 मई
प्र.आषाढ़	रविवार	14 जून
द्वि.आषाढ़	मंगलवार	14 जुला.
श्रावण	बुधवार	12 अग.
भाद्रपद	शुक्रवार	11 सितं.
आश्विन	रविवार	11 अक्टू.
कार्तिक	सोमवार	09 नवं.
मार्गशीर्ष	बुधवार	09 दिसं.
सन् 2016 ई.		
पौष	शुक्रवार	08 जन.
माघ	शनिवार	06 फर.
फाल्गुन	सोमवार	07 मार्च
चैत्र	मंगलवार	05 अप्रैल

पूर्णिमा व्रत

चन्द्रोदय व्यापिनी	मास	सूर्योदय व्यापिनी
03 अप्रै.	चैत्र	04 अप्रै.
03 मई	वैशाख	04 मई
02 जून	ज्येष्ठ	02 जून
01 जुला.	प्र.आषाढ़	02 जुला.
31 "	द्वि.आषाढ़	31 "
29 अग.	श्रावण	29 अग.
27 सितं.	भाद्रपद	28 सितं.
27 अक्टू.	आश्विन	27 अक्टू.
25 नवं.	कार्तिक	25 नवं.
25 दिसं.	मार्गशीर्ष	25 दिसं.
	सन् 2016 ई.	
23 जन.	पौष	23 जन.
22 फर.	माघ	22 फर.
22 मार्च	फाल्गुन	23 मार्च

अमावस्याएं

पितृकार्या तर्पणादि निमित्त	मास	देवकार्या स्नान दानार्थ
18 अप्रै.	वैशाख	18 अप्रै.
17 मई	ज्येष्ठ	18 मई
16 जून	प्र.आषाढ़	16 जून
15 जुला.	द्वि.आषाढ़	16 जुला.
14 अग.	श्रावण	14 अग.
12 सितं.	भाद्रपद	13 सितं.
12 अक्टू.	आश्विन	12 अक्टू.
11 नवं.	कार्तिक	11 नवं.
11 दिसं.	मार्गशीर्ष	11 दिसं.
	सन् 2016 ई.	
09 जन.	पौष	09 जन.
08 फर.	माघ	08 फर.
08 मार्च	फाल्गुन	09 मार्च
07 अप्रैल	चैत्र	07 अप्रैल

श्री सत्यनारायण व्रत

चैत्र	शनिवार	04 अप्रै.
वैशाख	सोमवार	04 मई
ज्येष्ठ	मंगलवार	02 जून
प्र.आषाढ़	गुरुवार	02 जुलाई
द्वि.आषाढ़	शुक्रवार	31 जुला.
श्रावण	शनिवार	29 अग.
भाद्रपद	सोमवार	28 सितं.
आश्विन	मंगलवार	27 अक्टू.
कार्तिक	बुधवार	25 नवं.
मार्गशीर्ष	शुक्रवार	25 दिसं.
सन् 2016 ई.		
पौष	शनिवार	23 जन.
माघ	सोमवार	22 फर.
फाल्गुन	बुधवार	23 मार्च

सायन संक्रांतियां

वृष	सोमवार	20 अप्रै.
मिथुन	गुरुवार	21 मई
कर्क	रविवार	21 जून
सिंह	गुरुवार	23 जुला.
कन्या	रविवार	23 अग.
तुला	बुधवार	23 सितं.
वृश्चिक	शुक्रवार	23 अक्टू.
धनु	रविवार	22 नवं.
मकर	मंगलवार	22 दिसं.
सन् 2016 ई.		
कुम्भ	बुधवार	20 जन.
मीन	शुक्रवार	19 फर.
मेष	रविवार	20 मार्च

निरयण संक्रांतियां (पुण्यकाल)

मेष	मंगलवार	14 अप्रै.
वृष	शुक्रवार	15 मई
मिथुन	सोमवार	15 जून
कर्क	गुरुवार	16 जुला.
सिंह	सोमवार	17 अग.
कन्या	गुरुवार	17 सितं.
तुला	शनिवार	17 अक्टू.
वृश्चिक	सोमवार	16 नवं.
धनु	बुधवार	16 दिसं.
सन् 2016 ई.		
मकर	गुरुवार	14 जन.
कुम्भ	शनिवार	13 फर.
मीन	सोमवार	14 मार्च

षडऋतु, गोल एवं अयनारंभ

तारीख	ऋतु	अयन	गोल
21 अप्रै.	ग्रीष्म	–	–
21 जून	वर्षा	दक्षिण	–
23 अग.	शरद	–	–
23 सितं.	–	–	दक्षिण
23 अक्टू.	हेमन्त	–	–
21 दिसं.	शिशिर	उत्तर	–
18 फर.	वसन्त	–	–
20 मार्च	–	–	उत्तर

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध (महालय)

पूर्णिमा श्राद्ध (12।07 के बाद)	27 सितं.
प्रतिपदा श्राद्ध (08।23 के बाद)	28 "
द्वितीया श्राद्ध	29 "
तृतीया श्राद्ध	30 "
चतुर्थी श्राद्ध	01 अक्टू.
पंचमी श्राद्ध	02 "
षष्ठी श्राद्ध	03 "
सप्तमी श्राद्ध (14।36 से पहले)	04 "
अष्टमी श्राद्ध	05 "
नवमी श्राद्ध (सौभाग्यवती श्राद्ध)	06 "
दशमी श्राद्ध	07 "
एकादशी श्राद्ध	08 "
द्वादशी श्राद्ध	09 "
त्रयोदशी श्राद्ध	10 "
चतुर्दशी श्राद्ध (दुर्मरण श्राद्ध)	11 अक्टू.
अमावस्या श्राद्ध (सर्वपितृ श्राद्ध)	12 "
मातामह श्राद्ध	12 "

दशावतार जयन्तियां

श्री मत्स्य जयंती	22 मार्च
श्री राम जयंती	28 "
श्री परशुराम जयंती	20 अप्रै.
श्री नृसिंह जयंती	02 मई
श्री कूर्म जयंती	03 "
श्री बुद्ध जयंती	04 "
श्री कल्की जयंती	20 अग.
श्री कृष्ण जयंती	05 सितं.
श्री वराह जयंती	16 सितं.
श्री वामन जयंती	25 सितं.

दसमहाविद्या जयंतियां

श्री महातारा जयंती	27 मार्च
श्री मातंगी जयंती	21 अप्रै.
श्री बगलामुखी जयंती	26 "
श्री छिन्नमस्ता जयंती	02 मई
श्री धूमावती जयंती	26 "
आद्या मां श्रीकाली जयंती	04 सितं.
श्री भुवनेश्वरी जयंती	25 "
श्री कमला जयंती	11 नवं.
षोडशी श्री त्रिपुर सुन्दरी जयंती	25 दिसं.
श्री विद्या मां ललिता जयंती	22 फर.

जैन व्रत, पर्वोत्सव

दशलक्षण व्रत प्रा.	22 मार्च
रोहिणी व्रत	25 "
आर्यबिल ओली प्रा.	26 "
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	28 "
श्री सुमतिनाथ जन्म-ज्ञान-मोक्ष	30 "
श्री महावीर जयंती	02 अप्रै.
दशलक्षण व्रत पूर्ण	03 "
आर्यबिल ओली पूर्ण	04 "
मुनि सुव्रत नाथ जन्म-तप	14 "
श्री कुन्थनाथ जन्म-तप	19 "
रोहिणी व्रत	22 "
श्री महावीर स्वामी कैवल्य ज्ञान	28 "
ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा.	05 मई
श्री अनन्त नाथ जन्म-तप	15 "
श्री शांति नाथ जन्म-तप	17 "
रोहिणी व्रत	19 "
श्रुति पंचमी	22 "
श्री सुपार्श्व नाथ जन्म-तप	30 "
ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ण	02 जून
रोहिणी व्रत	15 "
श्री नमीनाथ जन्म-तप	11 जुला.
रोहिणी व्रत (द्वि.आषाढ़)	13 "
नेमीनाथजी मोक्ष	23 जुला.
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	24 "
चौमासी 14	30 "
चातुर्मास व्रत नियम प्रा.	30 "
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	31 "
रोहिणी व्रत	09 अग.
श्री नेमी नाथ जयंती	20 "
श्री पार्श्वनाथ मोक्ष	22 "
रोहिणी व्रत	05 सितं.
पर्युषण पर्व प्रा.	10 "
कल्पसूत्र पाठ	14 "
तेलाधर तप, संवत्सरी	15 "
पर्युषण पर्व पूर्ण	17 "
दशलक्षण व्रत प्रा.	18 "
श्री कालू निर्वाण दिवस	19 "
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	26 "
दशलक्षण व्रत पूर्ण	27 "
क्षमावणी पर्व	28 "
रोहिणी व्रत	02 अक्टू.
आर्यबिल ओली प्रा.	20 "
आर्यबिल ओली पूर्ण	27 "
रोहिणी व्रत	30 "
श्री पद्मप्रभु जन्म-तप	09 नवं.
श्री महावीर निर्वाण दिवस	11 "
आचार्य श्री तुलसी ज.दि.	13 "
ज्ञान पंचमी	16 "
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	18 "
चातुर्मास्य व्रत नियमादि पूर्ण	25 "
श्री संभवनाथ जन्म, अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	25 "
रोहिणी व्रत	26 "
श्री महावीर स्वामी दीक्षा दिवस	05 दिसं.
श्री पुष्पदंत नाथ जन्म-तप	12 "
श्री मल्लिनाथ जन्म-तप, मौनी 11	21 "
श्री अरहनाथ जन्म-तप, रोहिणी व्रत	24 "
आचार्य श्री तुलसी दीक्षा दिवस	29 "

सन् 2016 ई.

श्री पार्श्वनाथ जन्म-तप	05 जन.
श्री चन्द्रप्रभु जन्म-तप	05 "
श्री यतीन्द्र सुरीश्वर जन्म-पु., त्रिस्तुति	12 "
श्री राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य	16 "
रोहिणी व्रत	20 "
श्री शीतल नाथ जन्म-तप	05 फर.
मेरु त्रयोदशी	06 "
श्री ऋषभदेव मोक्ष	07 "
श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणंक	07 "
दशलक्षण व्रत प्रा.	12 "
रोहिणी व्रत	16 "
श्री अजित नाथ जन्म-तप	17 "
श्री अभिनंदन नाथ जन्म-तप	19 "
श्री धर्मनाथ जन्म-तप	20 "
श्री जिनेन्द्र रथयात्रा, दशलक्षण व्रत पूर्ण	21 "
श्री पद्मप्रभु मोक्ष	26 "
श्री श्रेयांश नाथ जन्म-तप	05 मार्च
श्री वासुपूज्य जन्म-तप	08 "
अष्टान्हिका पर्व प्रा., रोहिणी व्रत	16 "
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	23 "
श्री ऋषभदेव जन्म-तप	01 अप्रै.

इस्लामी त्यौहार

हजरत अली जन्म	03 मई
शब्बे मिराज	17 "
शब-ए-बारात (मु.)	03 जून
पाक रोजे शुरू	19 "
सहादत-ए-हजरत अली	09 जुला.
जमात-ए-अलविदा	17 "
ईद-उल-फितर (मीठी ईद)	18 "
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	25 सितं.
मोहर्रम हिजरी सन् 1437 प्रा.	15 अक्टू.
मुहर्रम ताजिया	24 "
चेहल्लम शहीद करबला	03 दिसं.
आखरी चाहर शम्बा	09 "
सहादत-ए-इमाम हसन	11 "
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	25 दिसं.
ईद-ए-मौलाद	30 "
फातिहा यजदहूम	22 जन.16

क्रिश्चियन पर्व

पाम सण्डे	29 मार्च
गुड फ्राइडे	03 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	05 "
क्रिसमस डे (बड़ा दिन), ईसा ज.	25 दिसं.

न्यू ईयर ईवनिंग डे	31 दिसं.
न्यू ईयर सन् 2016 प्रा.	01 जन.
वेलेण्टाईन डे	14 फर.

महापुरुष जयन्तियां

श्री गौतम जयंती	21 मार्च
श्री झूलेलाल जयंती	22 "
भक्त श्री पीपाराम जयंती	04 अप्रै.
श्री बल्लभाचार्य जयंती	15 "
डॉ. भीमराव आंबेडकर जयंती	15 "
श्री शुकदेव मुनि जयंती	18 "
श्री बाबू कुंवरसिंह जयंती (बिहार)	23 "
आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयंती	23 "
श्री सूरदास जयंती	23 "
श्री रामानुजाचार्य जयंती (द.भा.)	24 "
कवि श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	07 मई
श्री महाराणा प्रताप जयंती	20 "
लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जयंती	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जयंती	22 "
डॉ. सर्वपल्ली श्री राधाकृष्णन जयंती	05 सितं.
संत ज्ञानेश्वर जयंती	05 "
संत सुथरेशाह जयंती	13 "
ऋषि दधीचि जयंती	21 "
स्वामी हरिदास जयंती	21 "
स्वामी शिवानन्द जयंती	27 "
पंडित गोविन्द वल्लभ पंत जयंती	28 "
महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	02 अक्टू.
अग्रसेन जयंती	13 "
महर्षि वाल्मीकि जयंती	27 "
सरदार पटेल जयंती	31 "
कविकुल गुरु कालीदास जयंती	23 नवं.
वीर वैरागी जयंती (नकोदर)	24 "
श्री निम्बार्काचार्य जयंती	25 "
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस	03 दिसं.
भक्त नरसी मेहता जयंती	18 "
ईसा मसीह जयंती (क्रिश्चियन)	25 "
पं. मदनमोहन मालवीय जयंती	25 "

सन् 2016 ई.

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती	23 जन.
लाला लाजपत राय जयंती	28 "
स्वामी विवेकानन्द जयंती	31 "
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	31 जन.
योगीराज बाबा लाल दयाल जयंती	10 फर.
श्री दीनबंधु इण्ड्रयूज जयंती	12 "
श्री रामचरण स्नेही जयंती	21 "
भक्त रैदास जयंती	22 "
समर्थ गुरु रामदास जयंती	03 मार्च
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती	04 "
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	10 "
पं. लेखराम वीर जयंती	11 "
महर्षि याज्ञवल्क जयंती	13 "
संत श्री दादूदयाल जयंती	16 "
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	23 "
संत तुकाराम जयंती	25 "

सिक्ख गुरु पर्व (प्रा. मत से)

प्रकाश दिवस

गुरु तेगबहादुर जी	09 अप्रै.
गुरु अर्जुनदेव जी	11 "
गुरु अंगददेव जी	19 "
गुरु अमरदास जी	03 मई
गुरु हरगोविन्द जी	03 जून
गुरु हरकिशन जी	08 अग.
गुरुग्रंथ साहिब जी	14 सितं.
गुरु रामदास जी	29 अक्टू.
गुरु नानकदेव जी	25 नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	16 जन.
गुरु हरराय जी	20 फर.

गुरुयाई मिली (प्रा. मत से)

गुरु नानकदेव जी	अवतार दिन से
गुरु अमरदास जी	21 मार्च
गुरु तेगबहादुर जी	02 अप्रै.
गुरु हरगोविन्द जी	11 मई
गुरु अर्जुनदेव जी	15 सितं.
गुरु रामदास जी	26 "
गुरु अंगददेव जी	02 अक्टू.
गुरु हरकिशन जी	04 नव.
गुरुग्रंथ साहिब जी	13 "
गुरु गोविन्द सिंह जी	14 दिसं.
गुरु हरराय जी	05 अप्रै.

ज्योति जोत समाए (प्रा. मत से)

गुरु अंगददेव जी	23 मार्च
गुरु हरगोविन्द जी	24 "
गुरु हरकिशन जी	03 अप्रै.
गुरु अर्जुनदेव जी	22 मई
गुरु रामदास जी	16 सितं.
गुरु अमरदास जी	28 "
गुरु नानकदेव जी	07 अक्टू.
गुरु हरराय जी	04 नव.
गुरु गोविन्द सिंह जी	16 "
गुरु तेगबहादुर जी	16 दिसं.

प्रकाश दिवस

(नानकशाही कैलेंडर से)
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अनुसार)

खालसा पंथ साजना	14 अप्रै.
गुरु अंगददेव जी	18 "
गुरु तेगबहादुर जी	18 "
गुरु अर्जुनदेव जी	02 मई
गुरु अमरदास जी	23 "
गुरु हरगोविन्द जी	05 जुला.
गुरु हरकिशन जी	23 "
गुरु ग्रंथ साहिब जी	01 सितं.
गुरु रामदास जी	09 अक्टू.
गुरु ग्रंथ साहिब जी गद्दी	13 नव.
गुरु नानकदेव जी	25 "
गुरु गोविन्द सिंह जी	16 जन.
गुरु हरराय जी	31 "

गुरुयाई मिली

गुरु नानकदेव जी	अवतार दिन से
गुरु हरराय जी	14 मार्च
खालसा पंथ साजना	14 अप्रै.
गुरु तेगबहादुर जी	16 "
गुरु अमरदास जी	16 "
गुरु हरगोविन्द जी	11 जून
गुरु रामदास जी	16 सितं.
गुरु अर्जुनदेव जी	16 "
गुरु अंगददेव जी	18 सितं.
गुरु हरकिशन जी	20 अक्टू.
गुरुग्रंथ साहिब जी	13 नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	24 "

ज्योति जोत समाए

गुरु अंगददेव जी	16 अप्रै.
गुरु हरकिशन जी	16 "
गुरु अर्जुनदेव जी	22 मई
गुरु अमरदास जी	16 सितं.
गुरु रामदास जी	16 "
गुरु नानकदेव जी	22 "
गुरु हरराय जी	20 अक्टू.
गुरु गोविन्द सिंह जी	16 नवं.
गुरु तेगबहादुर जी	24 "
गुरु हरगोविन्द जी	19 मार्च

मेले एवम् उत्सवादि

मेला चीमा नानकसर (पंजाब)	21 मार्च
मेला चेटीचण्ड, गणगौर (जयपुर)	22 "
मेला माई सरखाना (पंजाब)	25 "
मेला मनसादेवी पंचकुला (हरि.)	27 "
मेला बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	27 "
मेला ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर)	27 "
मेला श्री राम जन्मोत्सव (अयोध्या)	28 "
मेला माता कांसा देवी (कांसल रोपड़)प्रा.	02 अप्रै.
मेला देवी हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	03 "
मेला बालासुन्दरी देवबंद (उ.प्र.)	03 "
मेला मानकपुर शरीफ (पंजाब)	04 "
मेला हनुमान जयंती सालासर (राज.)	04 "
मेला हनुमान जयंती तारानगर (राज)	04 "
मेला वैशाखी उत्सव (पं.हरि.हि.)	14 "
मेला कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू)	16 "
मेला पिंजौर (हरियाणा)	18 "
मेला श्री बांके बिहारीजी चरणदर्शन (वृन्दा.)	21 "
मेला पीपल जातर (कुल्लू)	28 "
मेला आनी आउटर सिराज (कुल्लू)	07 मई
मेला बंजार 4 दिन का प्रा. (कुल्लू)	14 "
मेला डूंगरी जात्तर (मनाली) प्रा.	15 "
मेला साढ़ी जातरनगर प्रा. (हि.प्र.)	18 "

मेला क्षीर भवानी (कश्मीर)	26 मई
मेला गंगा दशहरा (हरिद्वार)	28 "
मेला सपोर यात्रा धारलदा (ऊधमपुर)	28 "
मेला बरहे भटिण्डा (पंजाब)	29 "
मेला पीपलू (ऊना) हि.प्र.	29 "
मेला पाण्डवों की बाड़ी का (सोलन)	15 जून
मेला भून्तर (कुल्लू) प्रा. 3 दिन का	15 "
मेला संतोष सिंह जी नानकसर चीमा प्रा.	09 जुला.
मेला श्री जगन्नाथ रथयात्रा (पुरी)	17 "
मेला शरीफ भवानी (कश्मीर)	25 "
मेला नैमिषारण्य काहनवाल(गुरदासपुर)	31 "
मेला गुरु पूर्णिमा (कुराली)	31 "
मेला बाबा प्यारासिंह जी चमकौर प्रा.	05 अग.
मेला नैना देवी व चिंतपूर्णी (हि.प्र.)	23 "
मेला बाबा निधान सिंह जी (लुधि.)	28 "
मेला अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	29 "
मेला द्रौण दनकौर प्रा. (उ.प्र.)	04 सितं.
मेला श्री कृष्ण जन्मोत्सव	05 "
मेला नंदोत्सव नन्दगांव, बरसाना	06 "
मेला गोगा पीर (ददरेवा)	06 "
मेला कैलाश यात्रा (कश्मीर)	10 "
मेला सुथरेशाह (दिल्ली)	13 "
मेला राणीसती (झुंझुनू) राज.	13 "
स्नान मेला (लोहार्गल) राज.	13 "
मेला गुसाई आंणा कुराली (पंजाब)	15 "
मेला गणेश जन्मोत्सव (मण्डी) हि.प्र.	17 "
मेला गणेश जन्मोत्सव (महा.)	17 "
मेला पट्टा प्रा. (कश्मीर)	18 "
मेला देवछटी व्रजमण्डल व गौतम	19 "
मेला गरुड़ गोविन्द छटीकरा (उ.प्र.)	20 "
मेला श्री राधा जन्मोत्सव बरसाना (उ.प्र.)	21 "
मेला बाबा रामदेवजी पूर्ण रुणीचा व तारानगर	23 "
मेला चारभुजानाथ मेवाड़ (राज.)	24 "
मेला वामन द्वादशी अंबाला	25 "
मेला बाबा सोढल व छपार (जालंधर)	27 "
मेला गोइंद वाल साहिब (तरनतारन)	28 "
मेला आशापति यात्रा (कश्मीर)	11 अक्टू.
मेला फल्गु. पिहोवा (हरि.)	12 "
मेला ज्वालामुखी	21 "
मेला तारादेवी (हि.प्र.)	21 "
मेला ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर)	21 अक्टू.
मेला दशहरा (रावणदाह) सर्वत्र	22 "
मेला शाकंभरी देवी (उ.प्र.)	26 "
मेला देवि हर्यौंहरा (कुरुक्षेत्र)	26 "
मेला महारासोत्सव (व्रजमण्डल)	27 "
मेला राधाकुण्ड स्नान गोवर्धन (उ.प्र.)	03 नवं.
मेला दीपावली (अमृतसर)	11 "
मेला अन्नकूट गोवर्धन (उ.प्र.)	12 "
मेला यमुना स्नान मथुरा (उ.प्र.)	22 "
मेला रेणुका (नाहन) हि.प्र.	22 "
मेला पुण्डरपुर यात्रा (महा.)	22 "
मेला बाबा रुद्रानंदनारी (ऊना)	22 "
मेला जुगल जोड़ी परिक्रमा (वृंदावन)	23 "
मेला वीर वैरागी नकोदर (पंजाब)	24 "
मेला पुष्कर (राज.)	25 "
मेला रामतीर्थ (अमृतसर)	25 "
गढ़गंगा (उ.प्र.)	25 "
मेला कपालमोचन (हरि.)	25 "
मेला पुरमण्डल देविका स्नान (जम्मू)	10 दिसं.
मेला श्रीबांके बिहारी जी प्रादु. (वृंदा.)	16 "
मेला दुदेहर साहिब (अमृतसर)	17 "
मेला श्री घालदास ज. रामधाम खेड़ापा	21 "
मेला कपर्दीश्वर यात्रा दर्शन (कश्मीर)	24 "
मेला जोड़ फतेहगढ़ साहेब (पं.)	26 "
मेला संगीत (बाबा हरवल्लभ) प्रा.(जाल.)	27 "

सन् 2016 ई.

मेला हतापन नाशन स्नान (चेन्नई)	09 जन.
मेला लोहरी उत्सव (पं. हरि. हि.प्र.)	13 "
मेला माघी मुक्तसर (पंजाब)	14 "
मेला मकर संक्रांति (सर्वत्र)	14 "
मेला पोंगल पर्व (द.भा.)	14 "
मेला बाबा अन्वर सिंह जी मस्तुआणां (पं.)	03 फर.
मेला मौनी अमावस्या (प्रयाग व हरिद्वार)	08 "
मेला बसन्त पंचमी (सर्वत्र)	12 "
मेला डेजर्ट उत्सव 3 दिन प्रा. (जैसलमेर)	12 "
मेला वेणेश्वर (मुख्य) बांसवाड़ा	19 "
मेला पंचखण्ड पीठ विराटनगर (राज.)	20 "
मेला माघी पूर्णिमा (उ.प्र.)	22 "
मेला नीलकण्ठ महादेव (उत्तरांचल)	07 मार्च
मेला होलियां, होलाष्टक प्रा.	16 "
मेला फूलडोलोत्सव शाहपुरा (मेवाड़)	19 मार्च
मेला श्यामजी खाटू (राज.)	20 "
मेला बीरमदास बधौछी (पटियाला)	22 "
मेला पंखा झज्जर (हरि.)	24 "
मेला होला श्री आनंदपुर साहिब (पं.)	24 "
मेला गुरु रामसहाय (देहरादून)	28 "
मेला शीतला माता कुराली (पंजाब)	31 "
मेला केशरिया (मेवाड़)	01 अप्रै.
मेला कैलादेवी 15 दिन का प्रा. (करौली)	01 "
मेला पृथूदक् पिहोवा (हरि.)	14 "

पंचक सं. 2072 वि.

प्रारम्भ		समाप्ति	
तारीख	घं.मि.	तारीख	घं.मि.
18 मार्च	07।02	22 मार्च	06।32
14 अप्रै.	15।56	18 अप्रै.	17।25
11 मई	22।21	15 मई	26।44
07 जून	27।43	12 जून	09।42
05 जुला.	10।04	09 जुला.	15।10
01 अग.	18।33	05 अग.	20।59
28 "	28।54	01 सितं.	28।51
25 सितं.	15।39	29 सितं.	15।03
22 अक्टू.	24।52	26 अक्टू.	26।15
19 नवं.	07।37	23 नवं.	12।20
16 दिसं.	12।58	20 दिसं.	19।48
12 जन.	19।21	16 जन.	25।16
08 फर.	28।14	13 फर.	07।15
07 मार्च	14।54	11 मार्च	15।44
03 अप्रै.	25।18	07 अप्रै.	26।24

गण्ड मूलादि नक्षत्र सं. 2072 वि.

प्रारम्भ		समाप्ति	
तारीख	घं.मि.	तारीख	घं.मि.
22 मार्च	06।32	23 मार्च	28।26
31 मार्च	11।42	01 अप्रै.	14।48
10 अप्रै.	07।32	11 "	07।39
18 "	17।25	19 "	15।12
27 "	18।40	28 "	21।42
07 मई	13।06	08 मई	19।05
15 "	26।44	16 "	24।55
24 "	26।30	25 "	29।22
03 जून	19।52	04 जून	19।24
12 "	09।42	13 "	08।28
21 "	10।43	22 "	13।23
30 "	28।31	01 जुला.	09।33
09 जुला.	15।10	10 "	14।12
18 "	18।24	19 "	21।09
28 "	13।55	29 "	13।11
05 अग.	20।59	06 अग.	19।42
14 "	25।31	15 "	28।09
24 "	23।14	25 "	23।01
01 सितं.	28।51	02 सितं.	26।51
11 "	07।36	12 "	10।23
21 "	07।07	22 "	07।37
29 "	25।03	30 "	12।24
08 अक्टू.	13।29	09 अक्टू.	16।21
18 "	13।15	19 "	14।13
26 "	26।15	27 "	23।28
04 नवं.	20।06	05 नवं.	22।50
14 "	18।47	15 "	19।41
23 "	12।20	24 "	10।01
01 दिसं.	28।04	02 दिसं.	30।25
11 "	25।23	12 "	25।53
20 "	19।48	21 "	18।12
29 "	13।05	30 "	15।01
08 जन.	09।50	09 जन.	10।03
16 "	25।16	17 "	24।00
25 "	21।57	26 "	23।42
04 फर.	19।21	05 फर.	19।46
13 "	07।15	14 "	29।35
21 "	29।30	22 "	07।25
02 मार्च	28।23	03 मार्च	29।22
11 "	15।44	12 "	13।17
20 "	11।37	21 "	13।49
30 "	11।52	31 "	13।26
07 अप्रै.	26।24	08 अप्रै.	23।25

ग्रहण विवरण संवत् 2072 विक्रमी

विक्रम संवत् 2072 (21 मार्च 2015 ई. से 7 अप्रैल 2016 के मध्य) में पृथ्वी पर सूर्य व चन्द्र के कुल चार ग्रहण होंगे। जिनमें दो सूर्यग्रहण एवं दो ही चन्द्रग्रहण हैं। भारतीय भू-भाग पर चन्द्र के दो एवं सूर्य का एक ग्रहण दिखाई देगा। भारतीय भू-भाग पर जो ग्रहण दृश्य नहीं होगा उसका धार्मिक महत्व नहीं होगा।

1. **खग्रास चन्द्रग्रहण** (भारते दृश्य)–चैत्र शुक्ल 15 शनिवार, ता. 4 अप्रैल 2015 ई.।
2. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** (भारते अदृश्य)–भाद्रपद कृष्ण 30 रविवार ता. 13 सितं. 2015 ई.।
3. **खग्रास चन्द्रग्रहण** (भारते दृश्य)–भाद्रपद शुक्ल 15 सोमवार, ता. 28 सितंबर 2015 ई.।
4. **खग्रास सूर्यग्रहण** (भारते-दृश्य)–फाल्गुन कृष्ण 30, बुधवार, ता. 9 मार्च 2016 ई.।

भारतीय भू-भाग पर दृश्य चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण

1. खग्रास चन्द्रग्रहण

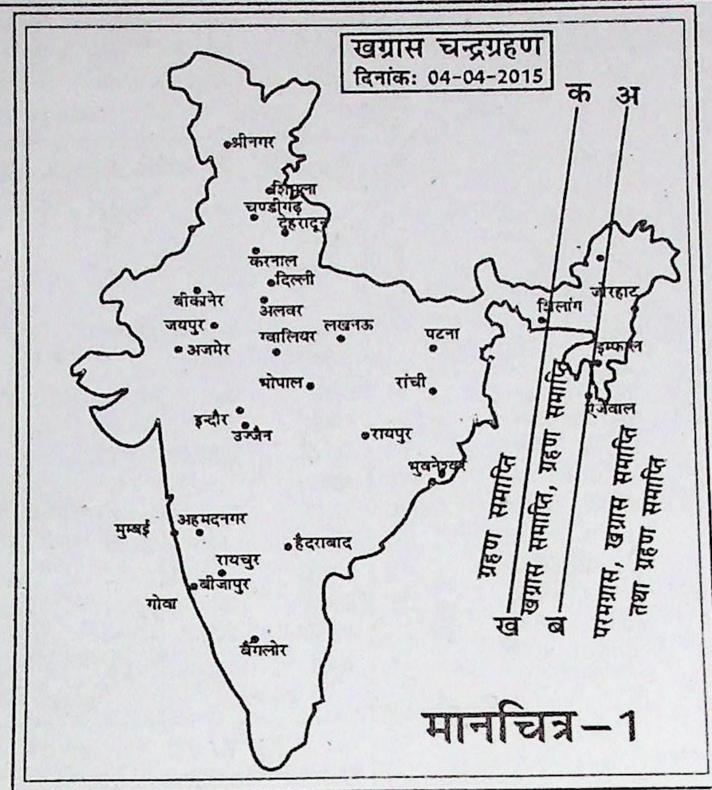
वर्ष का प्रथम खग्रास चन्द्रग्रहण चैत्र शुक्ल 15 शनिवार दिनांक 4 अप्रैल 2015 ई. को हस्त नक्षत्र, कन्या राशि में भारतीय समयानुसार 15।46 पर सम्पूर्ण भारत में ग्रस्तोदय रूप में दृश्य होगा। यानि भारतीय नगरों में चन्द्रोदय से काफी पहले की ग्रहण प्रारंभ हो चुका होगा। भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों जहां चन्द्रोदय पहले हो जाता है वहां इस ग्रहण का परमग्रास तथा परमग्रास की समाप्ति देखी जा सकती है। शेष भारतीय भू-भाग पर चन्द्रोदय के समय खग्रास समाप्ति के बाद केवल ग्रहण समाप्ति ही दृष्टिगोचर होगी। जैसा कि मानचित्र–1 में दिखाया गया है। रेखा **"अ–ब"** के दायीं तरफ यानि भारत के पूर्वी क्षेत्रों में इस ग्रहण का परमग्रास, खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण समाप्ति देखी जा सकती है। रेखा **"क–ख"** और रेखा **"अ–ब"** के मध्य के क्षेत्रों में खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण समाप्ति दृश्य होगी। शेष भारतीय भू-भाग यानि रेखा **"क–ख"** के बायीं तरफ केवल ग्रहण समाप्ति दिखाई देगी।

भारत के अतिरिक्त यह खग्रास चन्द्रग्रहण उत्तर-पूर्वी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमेरिका, हांगकांग, चीन, म्यामार, साउथ कोरिया, थाईलैण्ड, अंटार्कटिका, हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर व एशिया महाद्वीप के अधिकांश भागों में देखा जा सकेगा। ग्रहण के प्रसार क्षेत्र को **मानचित्र–2** में दिखाया गया है।

ग्रहण के स्पर्श, मोक्षादि का विवरण भा.स्टै.टा. के अनुसार निम्न प्रकार है।

ग्रहण स्पर्श –	15।46 बजे
ग्रहण सम्मीलन –	17।28 बजे
ग्रहण मध्य –	17।30 बजे
ग्रहण उन्मीलन –	17।33 बजे
ग्रहण मोक्ष –	19।15 बजे।

परमग्रास मान-1.001, पर्वकाल-3 घं. 29 मि.



ग्रहण वेध (सूतक)-ता. 4 अप्रैल 2015 ई. को प्रातः सूर्योदय के समय से ही प्रारंभ हो जायेगा। ग्रहण वेध काल में बालक, वृद्ध और रोगी जनों को छोड़कर भोजन, शयन, मूर्ति पूजा-स्पर्श, हास्य-विनोद करना निषेध माना गया है। ग्रहण अवधि काल में अन्न, वस्त्र, धन, स्वर्ण का दान, ध्यान, मंत्र-जप, जप-पाठ, हवनादि विषेश फल दायक होता है।

ग्रहण का मेषादि राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मेष-रोग	वृष-अपमान	मिथुन-सिद्धि	कर्क-लाभ
सिंह-हानि	कन्या-घात	तुला-हानि	वृश्चिक-धन प्राप्ति
धनु-विध्वंस	मकर-चिन्ता	कुम्भ-सौख्य	मीन-दम्पति वियोग

भारत के प्रमुख नगरों में दृश्य चन्द्रग्रहण (चन्द्रोदय) का विवरण

डिब्रूगढ़	17।25	कलकत्ता	17।53	कानपुर	18।26	मेरठ	18।35
जोरहाट	17।30	धारीवाल	18।50	रायपुर	18।18	दिल्ली	18।40
इम्फाल	17।31	मुजफ्फरनगर	18।40	नागपुर	18।27	पानीपत	18।41
ईटानगर	17।32	पटना	18।03	आगरा	18।35	अलवर	18।42
शिलांग	17।37	रांची	18।04	मथुरा	18।35	मेरठ	18।36
गुवाहाटी	17।00	भुवनेश्वर	17।59	शिमला	18।41	बड़ौदा	18।50
जम्मू	17।38	लखनऊ	18।25	फरीदाबाद	18।39	ग्वालियर	18।33
जयपुर	18।44	गोरखपुर	18।13	चण्डीगढ़	18।41	भोपाल	18।34
एजवाल	17।33	इलाहाबाद	18।18	देहरादून	18।35	बैंगलोर	18।30

2. ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण

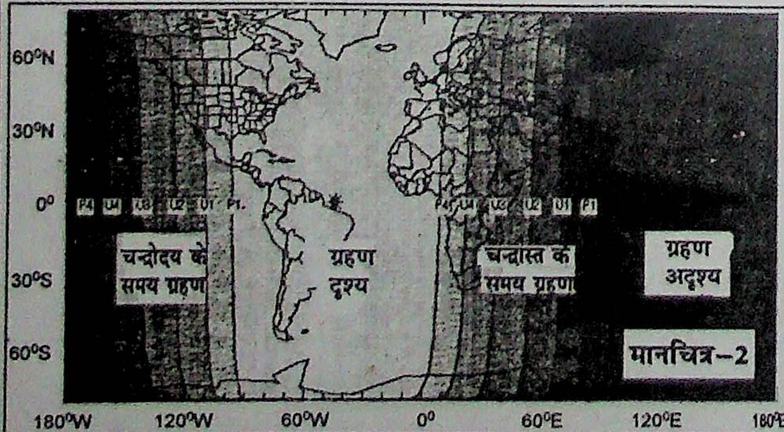
यह ग्रहण भाद्रपद शुक्ल 15 सोमवार तदनुसार 28 सितंबर 2015 ई. को उ.भा. नक्षत्र, मीन राशि अंतर्गत भारतीय समयानुसार 6।37 पर भारत के पश्चिमी गुजरात एवं पश्चिमी राजस्थान के सुदूर क्षेत्रों में ही अल्पकाल के लिए चन्द्रास्त के समय आरंभ होता हुआ दृश्य होगा। इसके अलावा भारत के किसी भी क्षेत्र में ग्रहण दृश्य नहीं होगा।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण यूरोप, अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, इंग्लैण्ड, ईरान, ईराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, प्रशांत महासागर व हिन्द महासागर में देखा जा सकेगा। ग्रहण के प्रसार क्षेत्र को मानचित्र–2 में दिखाया गया है।

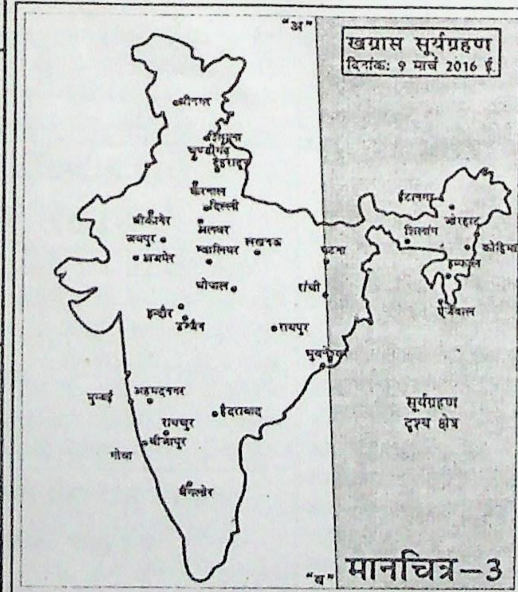
ग्रहण के स्पर्श, मोक्षादि का विवरण भा.स्टै.टा. के अनुसार निम्न प्रकार है।

भूमंडलीय ग्रहण स्पर्श	5।42 बजे	ग्रहण प्रारंभ -	6।37 बजे
ग्रहण सम्मीलन -	7।41 बजे	ग्रहण मध्य -	8।17 बजे
ग्रहण उन्मीलन -	8।53 बजे	ग्रहण मोक्ष -	10।52 बजे।

परमग्रास मान-1.276



3. खण्डग्रास सूर्यग्रहण



(भारते दृश्य)–यह ग्रहण फाल्गुन कृष्ण 30, बुधवार, ता. 9 मार्च 2016 ई. को पू.भा. नक्षत्र, कुंभ राशि अंतर्गत भा.स्टै.टा. अनुसार रात्रि 4।50 पर भारत के उत्तर-पश्चिमी एवं पश्चिमी भागों में दिखाई देगा। जैसा कि मानचित्र–3 में दिखाया गया है। रेखा "अ–ब" के दायीं तरफ यानि भारत के पूर्वी क्षेत्रों में कुछ समय के लिए इस ग्रहण को देख सकते हैं। शेष भारतीय भू-भाग पर अदृश्य होने के कारण मान्य नहीं होगा।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण कोरिया, जापान, आस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, भूटान, थाईलैण्ड, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, सुमात्रा, मलेशिया, जकार्ता, प्रशांत महासागर व अमेरिका के कुछ भागों में दिखाई देगा। ग्रहण का विवरण भा.स्टै.टा. के अनुसार निम्न प्रकार है।

ग्रहण प्रारंभ -	4।50 बजे	खग्रास आरंभ -	5।46 बजे
परमग्रास-	7।30 बजे	खग्रास समाप्त -	9।09 बजे
ग्रहण समाप्त -	10।05 बजे।		

ग्रहण वेध (सूतक)–ता. 8 मार्च 2016 ई. को सायं 4।50 से प्रारंभ हो जायेगा। ग्रहण वेध काल में बालक, वृद्ध और रोगी जनों को छोड़कर भोजन, शयन, मूर्ति पूजा-स्पर्श, हास्य-विनोद करना निषेध माना गया है। ग्रहण अवधि काल में अन्न, वस्त्र, धन, स्वर्ण का दान, ध्यान, मंत्र-जप, जप-पाठ, हवनादि विषेश फल दायक होता है।

भारतीय भू-भाग पर दिखाई न देने वाले ग्रहण

1. खण्डग्रास सूर्यगहण (भारते अदृश्य)–भाद्रपद कृष्ण 30 रविवार ता. 13 सितंबर 2015 ई. को भारतीय समयानुसार 10।12 से प्रारंभ होगा तथा मोक्ष 14।37 पर होगा। ग्रहण की अवधि 4 घंटे 25 मि. की है। यह ग्रहण दक्षिणी अफ्रीका, स्विटजरलैण्ड, अन्टार्कटिका, अटलांटिक, नामीबिया, भारतीय महासागर में दिखाई देगा। भारत में दिखाई नहीं देने के कारण यहां सूतकादि मान्य नहीं होगा। अत: इसके वेध आदि नियमों को पालन करने की आवश्यकता नहीं है।

2. खण्डछाया चन्द्रग्रहण–फाल्गुन शुक्ल 15 बुधवार दिनांक 23 मार्च 2016 ई. को भारतीय समयानुसार मध्यान्ह 15।12 पर प्रारंभ होकर रात्रि 19।23 पर समाप्त होगा। खण्डछाया एशिया महाद्वीप के अधिकांश भाग, आस्ट्रेलिया, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, प्रशांत-अटलांटिक हिन्द महासागर, आर्कटिक तथा अन्टार्टिका में छाया दृश्य होगा।

व्यापार भविष्य सन् 2015-2016 ई.

लेखक–
श्री प्रेम चन्द्र जैन
(पोरसा वाले)

1 जनवरी 2015 ग्रह Position

सूर्य	बुध	मंगल	शुक्र	शनि	चन्द्र	गुरु	राहु
8	8	9	9	7	0	3	5
16	29	27	2	6	26	27व	21

21 मार्च 2015 ग्रह Position

सूर्य	चन्द्र	मंगल	शुक्र	गुरु	शनि	राहु	बुध
11	11	11	0	3	7व	5	10
6	14	28	10	19R	10R	16	18

संवत् 2072 का राजा शनि ग्रह है। अतः गल्ला Grain Market में सरसों Mustard, अलसी, मूंगफली तेल, गेहूं भयंकर तेजी सन् 2015-2016 में अच्छी तेजी की आशा है। आषाढ़ का महीना लोंद का महीना है। अतः गुड़-शक्कर, शेयर मार्केट में अच्छी तेजी चलने की संभावना है। बाजार रुख Trend देखकर व्यापार करें। सन् 2013-2014 का साल व्यापार के हिसाब से बेकार रहा। मगर गुड़, शक्कर शेयर सन् 2014 में तेजी आई है। जनवरी 2014 से 7-8 जुलाई, 2014 के बीच बी.एस.ई.सेंसेक्स शेयर्स इंडेक्स करीब 19 हजार से बढ़कर 25999 के आसरे होकर एक तेजी आई है। सन् 2015-2016 में BSE Index 45 हजार, 2014 से सन् 2017 के बीच कभी भी Index 70 हजार के लेवल को छू सकता है। 9 अप्रैल 2015 से 11 अगस्त 2015 मंगल ग्रह अस्त, 6 से 24 जुलाई 2015 तक शुक्र पश्चिम दिशा में अस्त, 15 अगस्त 2015 से 9 सितंबर 2015 के बीच गुरु ग्रह Jupiter अस्त, 25 जुलाई से 7 सितंबर 2015 के बीच शुक्र वक्री होना 5 जुलाई 2015 को शुक्र सिंह राशि में 13 अगस्त 2015 को वक्र गति से कर्क राशि में, 2 अक्टूबर 2015 को पुनः सिंह राशि में प्रवेश, 3 नवंबर 2015 को कन्या राशि में शुक्र एक राशि में साढ़े 3-4 महीना रहने से सोना, चांदी, सरसों, अरण्ड, शेयर्स मैंथा में खतरनाक तेजी-मंदी की लाईन निकलने की संभावना है। 1 जून से 11 जुलाई 2015 तक सरसों 575 तेज, चना, अरहर, मूसर, काबुली चना में भयंकर तेजी। सन् 2012 में सरसों 4500-4700 कंडीसन सरसों के भाव सुने गए। अभी सन् 2014 में नीचे में 2950 मंडियों के भाव, सन् 2015-2016 के बीच सरसों 4499 या 5 हजार के टोप भाव हो सकते हैं।

20 फरवरी 2016 वृश्चिक राशि में मंगल, 18 जून 2016 वक्र गति से तुला में, 12 जुलाई 2016 पुनः वृश्चिक राशि में, 19 सितंबर 2016 धनु राशि में मंगल एक राशि में डेढ़ महीना रहता है। मगर 6-7 महीना बड़ी भयंकर गल्ला मार्केट में तेजी-मंदी, शेयर्स मार्केट गुवार, चना, मेन्था पिपरमेन्ट में खतरनाक तेजी आकर खतरनाक मंदी। 16 अप्रैल 2016 से 30 जून 2016 तक मंगल ग्रह वक्री रहेगा। 25 मार्च 2016 से 13 अगस्त 2016 तक शनि ग्रह वक्री रहेना। अप्रैल-मई 2016 कुछ गल्ला मार्केट तेजी बनने की संभावना है।

6 जनवरी 2015

(माघ मास में 5 मंगलवार होने से)

3 से 25 जनवरी 2015 के मध्य कभी भी चावल 177 तेज, तूअर 175 तेज, लौंग 115 तेज, हल्दी 300 तेज, गेहूं 65 तेज, शक्कर 145 तेज, बिनौला 275 तेज, गेहूं तेज, दक्षिण भारत पानी, वर्षा से लालमिर्च में तेजी, लौंग 75 तेज, तो बाजरा, ज्वार, मूंग, उड़द में मंदी। 25 जनवरी 2015 से 4 फरवरी 2015 तक अरहर 75 मंदी, उड़द 99 की मंदी, गुड़ 75 की मंदी, तो जीरा में तेजी, लौंग, सुपारी, कालीमिर्च में तेजी। इस चेपटर में 2 विधियों से तेजी-मंदी दी गई जो बाजार की तेजी-मंदी चल रही हो, उसी एक विधि का उपयोग करें।

4 फरवरी 2015

(फाल्गुन मास में 5 बुधवार होने से)

4 से 16 फरवरी 2015 तक शक्कर 165 तेज, खोपरा, इलाइची 75 तेज, तो मसूर 475 की जोरदार मंदी, लालमिर्च 1555 की जोरदार मंदी, मैथी 377 की मंदी, तो कलौंजी 700 की तेजी, चना 1752 की मंदी। 17 फरवरी, 2015 से 7 मार्च, 2015 तक, बड़ी इलाइची 75 तेजी तो गेहूं, जायफल में अच्छी मंदी, काबुली चना में 505 की मंदी, चावल 275 की मंदी, सौंठ 1177 की जोरदार मंदी, किशमिस में 999 की भारी तेजी।

6 मार्च 2015

(चैत्र मास में 5 शुक्रवार होने से)

6 जनवरी से 15 मार्च 2015 तक गुड़ 275 तेजी, 29 जनवरी से 7 मार्च 2015 तक मैंथा आइल में 371 की जोरदार मंदी, 1 जनवरी 2015 से 9 फरवरी, 2015 तक गुवार में 555 की तेजी, 9 फरवरी से 15 मार्च 2015 तक गुवार में 999 तूफानी मंदी, 15 मार्च 2015 से 21 अप्रैल 2015 तक गुवार में 999 की तेजी। 11 फरवरी से 7 अप्रैल, 2015 तक रुई में 2325 की तूफानी तेजी। 15 मार्च से 5 अप्रैल, 2015 तक हल्दी 707 की मंदी, 5 अप्रैल से 5 मई 2013 तक हल्दी में 1775 की जोरदार तेजी। 1 मार्च से 23 मई 2013 तक गेहूं में 277 की खतरनाक मंदी। 14 नवंबर, 2014 से 15 मार्च 2015 कालीमिर्च में 55 रुपये प्रति किलो पर तेजी तो 16 जुलाई 2015 तक कालीमिर्च में तूफानी तेजी। जीरा 15 दिसंबर 2014 से 19 जनवरी 2015 तक जीरा में 45 रुपया किलो की तेजी, तो 8 मार्च तक 25 की मंदी, 9 मार्च से 27 अप्रैल 2015 तक जीरा की तेजी चल सकती है। सावधानी से व्यापार करें।

5 अप्रैल 2015

(वैशाख मास में 5 रविवार होने से)

27 मार्च से 1 अप्रैल 2015 तक अरहर 115 की मंदी, हल्दी 500 मंदी, चना 145 मंदी, बादाम 200 मंदी, लालमिर्च 1505 की मंदी, गुड़ चीनी में तेजी। 5 से 15 अप्रैल 2015 तक, सौंठ 1500 तेज, लौंग 115 तेज, चना 45 की तेजी, शक्कर 45 तेजी, सौंफ में 700 की तेजी। कालीमिर्च में 2500 की तेजी। 15 अप्रैल 2015 से 4 मई 2015 तक छोटी इलाइची 200 मंदी, सोयाबीन 700 मंदी, काबुली चना 500 मंदी, मक्का में 99 की मंदी, राजमां में 500 की मंदी, गेहूं में 45 की मंदी, किशमिस 900 की मंदी, मगज तरबूज में मंदी। 15 से 23 अप्रैल 2015 अरहर 500 तेजी, हल्दी 700 तेजी, जीरा 1500 तेजी। अरण्ड 9 फर. से 5 अप्रैल 2015 तक अरण्ड में 1905 की भारी तेजी, 4 अप्रैल से 5 जून 2015 तक 2575 की भारी मंदी। 5 मार्च से 27 मई 2015 तक गेहूं में 175 की मंदी, 27 मई से 30 जून 2015 तक गेहूं में 115 की जोरदार तेजी। चना 3 मार्च 2015 से 7 अप्रैल 2015 तक 405 की तेजी तो 15 जून 2015 तक चना 605 की जोरदार मंदी आ सकती है।

5 मई 2015

(ज्येष्ठ मास में 5 मंगलवार होने से)

5 मार्च 2015 से 5 मई 2015 के बीच गुवार 999 की भड़कती तेजी 5 मई 2015 से 7 जून 2015 तक, गुवार में 2575 की जोरदार मंदी। 5 मई से 3 जुलाई 2015 तक गुड़ में 145 की तेजी, 3 जुलाई से 27 जुलाई 2015 तक गुड़ में 175 की मंदी।

शेष पृष्ठ 190 पर

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र संवत् 2072 वि.

विक्रम संवत् 2072 का आकाशीय परिषद् की गणना एवं विविध लग्नों तथा वर्ष प्रवेश, वर्षेश प्रवेश, आर्द्रा प्रवेश, लग्नानुसार मेदनीय ज्योतिष गणना से वि. सं. 2072 शाके 1937 का सारांश सूत्र के भविष्य संसार चक्र इस प्रकार रहेगा।

- **केन्द्रीय सरकार** की विशिष्ट योजनाओं की क्रियान्विति में बाधाएं एवं राजनैतिक पतन की घटना घटेगी।
- **प्रांतों में स्थानीय** सरकारों में निशदिन अपमानजनक घटनाओं से जनता में नेताओं का विश्वास घटेगा।
- **अतिवृष्टि** एवं अनावृष्टि के साथ वर्षा का संतुलन बिगड़ता नजर आएगा। प्राकृतिक आपदाओं से तटीय प्रदेशों में जन जीवन संकट मय रहेगा।
- **नारी उत्पीड़न**, यौन शोषण की घटना एवं हत्याओं का दौर नित प्रति अच्छे-अच्छे व्यक्तियों के द्वारा भी घटने का तांडव चलता रहेगा।
- नारी निकेतनों की दुर्दशा शनि राजा के योग से तथा कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा अपना हित चिंतन बावत झूठे तथ्यों के प्रदर्शन से जनता भ्रमित होगी।
- **शैक्षिक स्तर** का विकास अच्छा होगा। तकनीकी शिक्षा निदेशालय से नवीन शिक्षा शोध पत्र जारी होने से रोजगार संबंधी क्षेत्र बढ़ेगा। कार्य योजना सफल होगी।
- **केन्द्रीय सरकार** भारत का वर्चस्व आर्थिक सामाजिक एवं व्यापारिक दृष्टि से वर्चस्व बढ़ेगा। जनता में भी सरकार के प्रति आस्था का अच्छा संकेत बनेगा।
- **फिल्मी दुनियां** का स्तर घटेगा। अश्लीलता के प्रदर्शन से भारतीय सभ्यता संस्कृति का ह्रास होगा।
- **खनन विभाग** को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। खान में मृत्यु तुल्य घटनाएं घटेंगी।
- **धार्मिक स्थलों** का दुरुपयोग तथा अन्यान्य संबंधी घटनाओं का केन्द्र बनने जैसे योग बनेंगे।
- तीन विशिष्ट नेताओं का देह त्याग, आठ नेताओं का पद त्याग तथा तेरह नेताओं को आरोप पत्र के जरिए जेल तक की यात्रा करने का संकेत बनता है।
- चुनावी घटनाओं में अनियंत्रण से दंगा-फंसाद योग बनकर राजनीतिक तूल बनकर तर्क-वितर्क के बाद न्यायालय तक मामला पहुंचेगा।
- मुस्लिम राष्ट्रों में दंगा बाधाएं गृह युद्ध की तरह चलने का संकेत। अमेरिका, चीन, रूस में अहं भावना का मुद्दा विश्व में नया मोड़ परिवर्तन का कारक बनेगा।
- हवाई दुर्घटनाएं एवं अपहरण के योग शनि+मंगल तथा गुरु ग्रह के कारण बनेंगे। रेलवे यातायात में भी दंगा दुर्घटनाएं व चोरी की घटनाएं ज्यादा घटेंगी।
- भूस्खलन, जल प्रवाह, नदियों का बहाव कहीं तर-बतर तो कहीं सूखा भी रहेगा। ❑ खेल नीति बनेगी, मंगल से अनुपालना का अभाव रहेगा।
- **अदालती मामलों** की कार्यशैली बढ़ेगी तथा अदालती मामलों में विशेष अभिवृद्धि गुप्तचरों सहित होगी।
- अग्रसर कार्य कर्त्ताओं का धौखा एवं हत्या जैसा योग भी बनेगा। असम, तेलंगाना, आ.प्र., कर्नाटक विशेष रूप से जनता के लिए चिंता दायक। हड़तालें होंगी।
- सुनामी (समुद्री तूफान) की आशंका वर्ष पर्यन्त बनी रहेगी। स्थानीय सरकारों के मंत्रिमंडल भी चिंता में शासन करेंगे।
- शासन तंत्र में चन्द्रमा-गुरु+शुक्र के कारण स्त्रीवर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। चुनावों में विजय का योग स्त्रीवर्ग को ज्यादा बनेगा।
- सिंहस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यक्रमों का सर्वत्र वर्चस्व छाया रहेगा। आश्रमों की प्रतिष्ठा घटेगी। ❑ **वैदिक संस्कृति** का विश्व में प्रचार-प्रसार बढ़ेगा।
- केन्द्रीय मंत्रिमंडल में तीन बार परिवर्तन योग तथा दिल्ली सरकार पर संकट के बादल छाए रहेंगे। ❑ भारत के पड़ौसी देशों में भय का वातावरण बना रहेगा।
- अणुभाभा तकनीकी में वैज्ञानिकों का वर्चस्व भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चमकेगा। व्यापार भी बढ़ेगा।
- सन् 2015 से 2022 तक का समय चिंतादायक। मानवता की हीनता से अशोभनीय कृत्यों तथा अणु बमों से भी अग्नि कांड जन्य वारदातों से भय का वातावरण रहेगा। राजकीय कार्यों में योजनाओं की गति में तीव्रता का अभाव रहेगा। यत्र-तत्र आपात काल तथा धारा 144 का अलर्ट योग यदा-कदा यत्र-तत्र सर्वत्र भी बनने का योग। पुलिस विभाग को नयी तकनीक का सहारा लेना पड़ेगा। सीमांकन जिला निर्माण, तहसील, निर्माण संबंधी मुद्दों से एवं कृषक वर्ग नीति, व्यापार नीति का शिष्टाचार में दुराचार योग से भारत बंद जैसा वातावरण तथा विश्व पर भी प्रभाव पड़ेगा। राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री भी चिंता के योग से गुजरेंगे।

विश्व परिदृश्य में ग्रह योग भविष्य बोध

पाकिस्तान—इस देश में आतंकवाद का प्रभाव बना रहेगा। किसी नेता का अपमान, देश में दुर्घटना, हत्या जैसा आतंक भी बनेगा। विश्व के अन्य देशों से संबंधों में मतभेद बढ़ेगा। भारत के साथ संबंध अन्तःघाती रहेगा। प्राकृतिक आपदा से यह देश भी काफी संकट से गुजरेगा। राजकोष की स्थिति दयनीय होगी। फौजी शासन जैसा योग। उत्तरी-पश्चिम क्षेत्र में जल प्रवाह तेज रहेगा। दिनांक 24.06.2015 से 30.11.2015 तक सावधानी से रहें। संकट योग।

चीन—इस देश में औद्योगिक व्यापारिक गतिविधियां बढ़ेंगी। केन्द्रीय सत्ता पक्ष में असामान्य घटना से देश में शोक की लहर भी चलेगी। शनि सामाजिक पतन का कारण बनेगा। संवैधानिक अधिकारों के प्रति जनता में क्रांति भी छा सकती है। राजकीय सेवारत लोग भी संकट में रहेंगे। घोटाला एवं अनैतिकता की बाढ़ जैसा योग रहेगा। दिनांक 15.5.15 से 30.9.2015 तक संकट दायक योग। प्राकृतिक आपदा से हानियोग भी।

अमेरिका—इस देश में नारी वर्ग को इस वर्ष संकट ज्यादा रहेगा। राजकोष बढ़ेगा, लेकिन औद्योगिक एवं सैनिक वर्ग में खर्चा ज्यादा होगा। अमेरिका की सरकार को तीन संकट के योग से भयभीत का वातावरण बनेगा। अमानवीयता की घटना से कोर्ट-कचहरी का योग ज्यादा बनेगा। अविष्कार की दृष्टि से जलयान एवं कृषि उत्पादन संबंधी सामग्री का निर्माण ज्यादा होगा। भारत के साथ संबंध बना रहेगा, लेकिन कभी-कभी चिंताजनक वातावरण भी बनाएगा। अग्नि संबंधी घटनाएं अधिक घटेंगी। ता. 30.06.2015 से 13.10.2015 तक कार्य में अशुभता की घटना घटेगी। विश्व में नया अविष्कार का चमत्कारिक कार्य भी होगा। हत्याएं एवं प्राकृतिक आपदा का योग ज्यादा।

ब्रिटेन—यह वर्ष शनि के कारण काफी प्रगतिदायक रहेगा। विश्व शांति का पैगाम जैसी भावना का उद्भव बनेगा। सैनिक बल बढ़ेगा। सीमांकन के विवाद में कुछ क्रांति योग। आतंकवाद के विरुद्ध आंदोलन भी चलेगा। दिनांक 17.05.2015 से दिनांक 30.09.2015 तक राजनीतिक उथल-पुथल योग बनेगा।

रूस—लग्नेश चन्द्रमा के योग औषधि निर्माण, औद्योगिक क्षेत्र में विशेष वृद्धि होगी। यह वर्ष रूस की अर्थ-व्यवस्था हेतु श्रेष्ठ रहेगा। लेकिन राजतंत्र में बाधाएं आएंगी। मंगल ग्रह के कारण भूमि विवाद, सीमांकन तथा अशुभ खाद्य पदार्थों के सेवन से जन अकाल मृत्यु तक भी सजा भोग सकते हैं। आयात-निर्यात में अच्छी वृद्धि का योग बनेगा। भारत-मैत्री संबंध एवं नेताओं की यात्राओं में विशेष लाभदायक योग परस्पर बनेंगे। दिनांक 14.05.15 से 27.09.15 तक प्राकृतिक आपदा-दुर्घटनाओं का आतंक चलेगा।

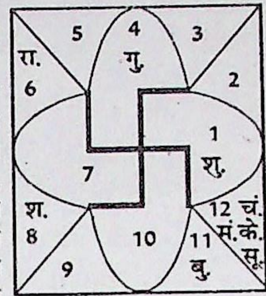
जापान—यहां पर शत्रु पक्षीय वार्ता विफल होगी। शैक्षिक दृष्टि से जापान तकनीकी शिक्षा में अग्रगामी रहेगा। वैज्ञानिक क्षेत्र में विशेष अनुसंधान करके विश्व में चमत्कारिक घटना का क्षेत्र बनेगा। प्राकृतिक आपदा से आर्थिक एवं जन हानि का योग बन सकता है। भारत मैत्री योग में व्यापारिक क्षेत्र में विशेष सहयोग देगा। अतः गुप्त योग से झगड़ा भी किसी देश से होने का संकेत बनता है। दि. 16.06.15 से 30.11.15 तक यातायात दुर्घटनाएं, आतंकवाद तथा विवाद जनक योग रहेगा।

श्रीलंका, आस्ट्रेलिया, मलेशिया, कोरिया, बंगलादेश, मिश्र—इन देशों में इस वर्ष भौतिक विकास में नए आयाम बनेंगे। कृषि संबंधी कार्यों में शोध चलेगा। औद्योगिक क्रांति का योग। तीन-चार वरिष्ठ नेताओं का देहावसान योग बनेगा। अश्लील हरकतों से विश्व में मान घटेगा। मंदिरों, गिरिजा घरों, संत आश्रमों की गरिमा भी अकल्पित घटनाओं के कारण दयनीय होगी। अणु, परमाणु संबंधी वैज्ञानिक तकनीकी अनुकरणीय होगी। व्यापारिक दृष्टि से निर्यात बढ़ेगा। प्राकृतिक आपदा से जन-धन का हानि योग। दिनांक 20.6.15 से 18.11.15 तक चिंतादायक योग।

इजरायल, ईरान, ईराक, फ्रांस, अफगानिस्तान, नेपाल, ब्रह्मा—इन देशों में इस वर्ष राजनीतिक अशांति का योग तथा विद्रोह बढ़ेगा। रोजगार जन्य बाधा तथा विविध कंपनियों को न्यायालय की शरण लेनी पड़ सकती है। अशोभनीय मार-पीट, हत्याएं तथा दुर्घटनाओं का अम्बार रहेगा। राष्ट्रपति जैसे गरिमामय पद का भी अपमान या हत्या जैसा योग बनता है। व्यापारिक गतिविधियों में धोखा होगा, लेकिन उत्पादन एवं मशीनरी कार्य शैली में सम्मान, अवार्ड प्राप्त करेंगे। यातायात की व्यवस्था बिगड़ेगी। प्राकृतिक आपदाओं से यहां के लोगों के जीने की चिंता तक बनेगी। भारत के साथ इनका मैत्री पूर्ण व्यवहार भी बिगड़ सकता है। यहां की नारी शक्ति आंदोलन करेगी। सत्ता पक्ष में स्थान या स्वयं सत्ताधारी भी बन सकती हैं। दिनांक 15.06.15 से 30.10.2015 तक अशोभनीय घटनाओं से चिंता चलती रहेगी।

भारत—वि.सं. 2072 शाके 1937 कर्क लग्न वर्ष का लग्न होने से भारत एवं विश्व में पूर्वी राज्यों में सुख समृद्धि होगी। उत्तरी राज्यों-देशों में उपद्रव अधिक होगा। पश्चिमी देशों एवं प्रांतों में दुर्भिक्ष योग बनता है। सूर्य नवम होने से अदालतें न्यायाधीश, धार्मिक स्थान, वायुसेना विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्र में विकास होगा। तिल, तैल व तिलहनों में तेजी, अनाजों व दलहनों में मंदी यानि व्यापारिक जगत में अस्थिरता रहेगी। शुक्र, मंगल की राशि पर आकर शासन तंत्र में स्त्री वर्ग का स्वामित्व बढ़ाएगा। शनि वृश्चिक का शिक्षा विभाग में परीक्षा व्यवस्था में गड़-बड़ करेगा या आंदोलन का कारक होगा। बुध गोपनीय अपराध खुलने से पूर्व ही यह लीला खत्म करने की प्रक्रिया में व्यापारी वर्ग शेयर्स लेन-देन कर्ताओं पर संकट दायक योग होगा। भारत सरकार की योजना में 30% सफलता का कारक शुक्र रहेगा। सन्तों का वर्चस्व बढ़ेगा। उच्च का गुरु स्वयं को नहीं अन्यों को लाभ पहुंचाएगा। यानि मकर राशि पति शनि संबंधी तकनीकी शिक्षा अणु बम-विस्फोटक पदार्थ, मशीनरी में विकास का कारक होगा। रा+के के कारण प्रसिद्ध राष्ट्र नेताओं को पद्च्युत होना पड़ेगा या अपहरण जैसी घटना घटेगी। विदेशी व्यापार में वृद्धि तथा भारत में संस्कार जन्य शिक्षा के प्रति लोगों का मन बनेगा। दक्षिणी भारत में राजनीतिक संकट से राष्ट्रपति शासन का दो बार योग बनेगा। दिल्ली में स्थानीय सरकार का वर्चस्व न्यून होगा। जनता का विश्वास घटेगा। दुर्घटना तथा अन्य अशोभनीय घटनाओं को गिनना संभव नहीं होगा। लोक सभा, राज्य सभाओं में हंगामा से मर्यादा भंग जैसा योग बनेगा। हालांकि नियंत्रण तुरंत हो जाएगा। विदेशी संबंध बढ़ेगा। भारत का वर्चस्व भी बढ़ेगा। भौमादित्य योग अग्नि कांडों का कारक जन हानि करेगा। चन्द्रादित्य योग विश्व शांति में भारत का वर्चस्व रहेगा।। चन्द्र, केतु, सूर्य, मंगल नवम भाव में दृष्टि राहु की होय। ज्योतिष की दृष्टि से विश्व में भारत की नीति सर्वत्र सफल होय।।

वर्ष लग्न कुण्डली



आर्यभट्ट पंचांगम्

प्रान्तीय / राज्य वार प्रमुख भविष्य बोध में दैवज्ञ दृष्टि

1. राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड– इन राज्यों में राजनीतिक गतिविधियां अस्थिरता के साथ चलेंगी। जनता में विश्वास घात जैसी धारणाएं बनेंगी। प्राकृतिक प्रकोप से जन धन हानि के साथ अशोभनीय घटनाएं तथा चोरी की वारदातों का तांडव छाया रहेगा। राजतंत्र में पुरानी घटनाओं के विवाद में नेता उलझकर शत्रुता जैसा व्यवहार करेंगे। तकनीकी कार्य बढ़ेगा। औद्योगिक कार्य योजना सफल होगी। विशिष्ट नेता का अपहरण तुल्य योग बनता है। शैक्षिक स्तर बढ़ेगा। पुलिस विभाग का भय मिटेगा। दि. 18.5.15 से 20.9.15 तक अनहोनी घटनाओं से जन-जन आश्चर्य करेंगे। वर्षा अनियमित।

2. झारखंड, बंगाल, असम, अरुणांचल, मिजोराम, सिक्किम, त्रिपुरा– इन प्रांतों में वर्षा का आधिक्य होने के कारण कृषि कार्यों में हानि। बाढ़ जैसा वातावरण तथा बहाव में जन पशुओं की मृत्यु जैसा योग बनता रहेगा। इन प्रांतों में विपक्ष वर्ग का सरकार में बोलबाला रहेगा। अभ्यता के गुण जनता में पाये जाएंगे। भुखमरी यातनाएं एवं हत्याओं की गणना भी मुश्किल होगी। क्षेत्रीय पार्टियों में भी विद्रोह बढ़ेगा। ता. 16.6.15 से 20.10.15 तक प्राकृतिक आपदा का भय से जन धन हानि एवं व्याधि।

3. छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, कर्नाटका, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, केरल, तामिलनाडु, तेलंगाना, मध्य प्रदेश, गुजरात का पश्चिम भाग, गोवा, भूटान क्षेत्र– इन राज्यों में भौतिक विकास एवं राजतंत्र की व्यवस्था में गड़बड़ होगी। तीन-चार राजनेताओं में गड़बड़ी का योग एवं प्राकृतिक आपदा से चिंता बनी रहेगी। जनता में विशेष योग से नवीन योजना का प्रादुर्भाव बनेगा। पुलिस सेवा में विशेष संकट छाया रहेगा। विदेशी व्यापार में स्थानीय उत्पादों का वर्चस्व बढ़ेगा। मुख्य मंत्रियों को संकट का बादल छाया रहेगा। नारी वर्ग की सुरक्षा का अभाव रहेगा। समुद्र तटीय स्थानों में सुनामी जैसा वातावरण या आपदा से प्रभावित होकर धन हानि होगी। मछुआरों का जीवन संकट मय रहेगा। समाचार ब्यूरो की सूचनाओं से प्रदेशों का विकास जन आंदोलन के भय में होना। **अग्नि कांडों का तांडव रहेगा। दिनांक 14.5.15 से 28.10. 2015 तक प्राकृतिक प्रतिक्रियाओं से संकट छाया रहेगा।**

4. दिल्ली, दमन द्वीप, अंडमान, निकोबार द्वीप समूह, चंडीगढ़, कश्मीर, पूर्व उड़ीसा, तमिलनाडु पश्चिम, सौराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि अन्य– ग्रह योग से इन प्रांतों की सरकारों पर संकट के बादल छाये रहेंगे। विपक्षी दल प्रभावी रूप से अपना अभिमत के साथ प्रश्नोत्तर काल से विधान सभाओं में नोक झोंक बनेगी। मिश्रित पार्टी का वर्चस्व से सरकारों का संचालन होगा। पुराने वरिष्ठ नेताओं को अपमान जनक स्थिति से गुजरना पड़ेगा। विविध वर्गों की बेरोजगारी, भ्रष्टाचारी, दुराचारी योग बनेगा। महिलाओं की स्थिति दयनीय होगी। सरकारी काम-काज में घोटालों का बोल बाला होगा। अश्लीलता का तांडव नृत्य होगा। न्यायालयों में भीड़ बढ़ेगी। रोगोपद्रव बढ़ेगा। प्राकृतिक आपदा से भी अरबों की हानि। अपहरण एवं हत्याएं-आत्मा हत्याएं निर्यंत्रित कार्य की भाँति अपना रौद्र रूप प्रकट करेगी। नदियों के बहाव से कृषि कार्यों में भी हानि। सरकारी सहयोग बावत आंदोलन चलेंगे। अति वृष्टि भी जमकर होगी।

राजनैतिक पार्टियों का भविष्य

राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी (आई)– का वर्चस्व गर्त की ओर चलेगा। नेतृत्व के अभाव से बाधा। दिग्गज नेता (पार्टी को) छोड़कर अन्य दल गठन का योग करेगा। कांग्रेस की कुंडली के योग से सन् 2020 से 2022 तक नवीन गठन या अस्तित्व बनेगा। नेतृत्व परिवर्तन हुआ तो पार्टी का वर्चस्व बढ़ेगा। दि. 20.5.15 से 10.11.2015 तक पार्टी में अंतर्कलह योग बनेगा।

भारतीय जनता पार्टी (BJP)–इस पार्टी को नेतृत्व की शुभता के कारण कुंडली ग्रह योग से उच्च का गुरु 30.3.15 से 30.10.2015 तक कुछ नवीन सभी करण बनेगा। बीजेपी में व्यक्तित्व का महत्त्व भी बढ़ेगा। यदि वर्तमान नेतृत्व न्यून होता है तो आगामी वर्ष 2020-25 तक चिंता दायक योग पार्टी का विघटन भी हो सकता है। पार्टी में स्वार्थ की भावना कलह का रूप ले सकती है। सावधान।

माकपा–यह पार्टी यथावत स्थिति में गुरु+मंगल+सूर्य के कारण रहेगी। वृद्धि का योग नहीं है। मगर अस्तित्व बना रहेगा। जनता में वर्चस्व कायम रहेगा।

बसपा–गुरु+मंगल+सूर्य के कारण कुछ वृद्धि का योग। लेकिन केन्द्र की सत्ता प्राप्त करना मुश्किल रहेगा। स्थानीय सरकारों में वर्चस्व नेतृत्व बढ़ेगा। दि. 30.5.15 से 24.8. 2015 तक संकट, नेताओं का देहावसान योग भी है।

सपा–इस पार्टी को इस वर्ष काफी संकट से गुजरना पड़ेगा। बड़ा नेता की हत्या या देहावसान का योग। स्थानीय स्तर पर भी विवाद बढ़ेगा। ता. 20.5.2015 से 29.10.2015 तक गड़बड़ योग ज्यादा।

आम आदमी पार्टी– काफी संकट के साथ विवादों में घिरने से बड़े नेता भी पद त्याग कर सकते हैं। वर्चस्व में न्यूनता आएगी। लोगों का भी विश्वास न्यून होगा। विश्वास घात जैसे योग-परिवर्तन योग बनेंगे।

अन्य क्षेत्रीय पार्टियां– सरकार में इस वर्ष वर्चस्व न्यून रहेगा। फिर भी आम आदमी में कार्यों की समक्षा अच्छी नजर आएगी। बजरंग दल, शिव सेना, करणी सेना आदि पार्टियों में छोटापन व्यवहार बनेगा। इन पार्टियों की गणना में व्यक्तित्व का कटाक्ष चलेगा। दिनांक 10.5.2015 से 20.9.15 तक का समय विशेष संकट दायक होगा।

पार्टियों का विश्लेषण एवं वर्चस्व देखें तो शीर्षस्थ नेताओं में भी स्वार्थ की भावना राष्ट्रीय प्रेम से ज्यादा घर करेगी और सरकार में भी इसका प्रभाव पड़ेगा। श्रीमान् लालकृष्ण जी अडवाणी, श्री मुरली मनोहर जोशी, श्रीमती शीला दीक्षित, श्रीमती महामहिम मारगेट अल्वा, किरण वेदी, अभा हजारे आदि का स्वास्थ्य ठीक नहीं तथा दिनांक 17.5.15 से 23.10. 15 तक विशेष संकट छायेगा।

नेताओं का व्यक्तिगत भविष्य कथन

महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी– इस वर्ष विदेशी यात्राओं में सावधान रहें तो अच्छा रहेगा। कार्य शैली में व्यवहार यथावत रखना वर्चस्व बढ़ेगा। मानसिक विकृति जैसा योग भी एकाएक बन सकता है। ता. 20.5.15 से 23.10.15 तक संकट ज्यादा। शासकीय कार्यों में सीमांकन विवाद में युद्ध की घोषणा योग भी। अन्य पार्टियों द्वारा आरोप पत्र में प्रश्नोत्तर शैली का योग बनेगा।

महामहिम उपराष्ट्रपति जनाब हामिद जी अंसारी–आपको इस वर्ष में भागदौड़ के साथ नेताओं में संकट के निवारण में भागीदारी निभानी पड़ेगी। राज्य सभा की कार्य प्रणाली में अशोभनीय घटना के द्वारा वर्चस्व में न्यूनता बनेगी। अभद्रता के

शेष पृष्ठ 239 पर

द्वादश राशियों का मासिक भविष्यफल वि.सं. 2072, सन् 2015-16 ई.

नोटः-यह राशिफल गोचर ग्रहों के योग से नाम राशि-जन्म राशि मिश्रित गणना के रूप में लिखा गया है। सुविधा के लिए नामाक्षर, राशि स्वामी एवं नग भी लिखे हैं।

मेष-चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

मेष



स्वामी-मंगल नग-मूंगा शुभ

अप्रैल—माह में आपकी सेहत को खराबी का योग। पेट में विकृति। पेशाब संबंधी परेशानियां बढ़ेंगी। विद्यार्थी वर्ग को अच्छा लाभ। धार्मिक कार्यों में खर्चा होगा। कारोबार ठीक चलेगा। विवाह एवं संतान संबंधी योग भी। दक्षिणी दिशा की यात्रा लाभ प्रद रहेगी। आयकर संबंधी परेशानियों से गुजरना पड़ सकता है। शुक्र प्रेम प्रसंग का कारक बनेगा। ता. 18, 19, 26, 27, 29 अशुभदायक। वाहन सावधानी से चलावें। **मई**—माह में आपको कृषि जन्य कार्य में लाभ बनेगा। राजतंत्र में भी समय ठीक रहेगा। धोखे बाजी घटना से बचें तो शुभ। यकृत रोग बाधा बनने का योग शुक्र ग्रह से बनता है। ग्रह गोचर से शुभ कार्य में खर्चा। ता. 5, 6, 7, 20, 22, 27 व 28 अशुभ रहेंगी। **जून**—माह में वायु विकार से परेशानी। मित्र से लाभदायक योजना प्राप्ति। परीक्षा परिणाम अनुकूल रहेगा। व्यापारी वर्ग का कार्य क्षेत्र बढ़ेगा। सामाजिक कार्य का दायित्व बढ़ेगा। नये कार्य के लिए स्त्री वर्ग का योगदान मिलेगा। न्यायालय संबंधी प्रकरण भूमि विवाद से बन सकता है। पुराना विवाद बढ़ेगा। ता. 3, 10, 11, 15, 20, 22, 24 अशुभदायक। वाहन से सावधान रहें। **जुलाई**—माह में भाग-दौड़ बढ़ेगी। शनि+राहु के कारण मानसिक विकृति का योग। चलते कार्य में परिवर्तन योग। विदेशी सामग्रियों के संग्रह से मान-सम्मान में कमी तथा राजकीय सेवा तथा स्थान परिवर्तन योग भी रहेगा। ता. 23, 24, 27, 28 अशुभ हैं। **अगस्त**—माह में आर्थिक स्थिति सुधरेगी। राजकीय मान-सम्मान योग बनेगा। मित्र बंधुओं से लाभ मिलेगा। गुप्त शत्रुओं से बचकर चलें। स्त्री पक्ष से आरोप, भूमि विवाद या रुपयों का लेन-देन से बनेगा। विविध स्थानों की धार्मिक यात्रा का शुभ योग। नया कार्य योग बनेगा। ता. 19, 20, 21, 28, 29 अशुभ। **सितम्बर**—रक्त पित्त रोग परेशानी बढ़ा सकता है। निजी जनों से विवाद बढ़ेगा। किसी अशोभनीय घटना से शोक। मित्र वर्ग की मदद करने में खर्चा भी होगा। विरोधी पक्ष आपको कमजोर करने का प्रयास करेंगे। विद्यार्थी वर्ग के लिए कार्य सफलता का महीना रहेगा। ता. 18, 19, 26, 27, 28 अशुभ। **अक्टूबर**—माह में अचानक चिंता का योग बनेगा। पशुओं से सावधान रहें। माह में आर्थिक लाभ अच्छा रहेगा। शनि एवं राहु का दान करें तो वांछित कार्य में सफलता मिलेगी। कारोबार एवं रोजगार में लाभदायक योजना प्राप्त होगी। स्त्री पक्ष की बीमारी से कुछ चिंता। ता. 10, 12, 13, 20, 23 अशुभ हैं। **नवम्बर**—राजकीय कार्यों में सफलता। शरीर में रोग बाधा से परेशानी। माता-पिता के स्वास्थ्य में चिंता जनक स्थिति रहेगी। उदर पीड़ा का योग। भूमि, भवन निर्माण योग बनेगा। बैंकिंग लेन-देन में सावधानी बरतें। नोट खोने का योग है। ता. 10, 11, 12, 20, 22, 23 अशुभ हैं। **दिसम्बर**—माह में सूर्य+बुध से विद्या लाभ शुभदायक रहेगा। परीक्षा में विशेषांक प्राप्ति का सुखद योग। अचानक शुभ यात्रा से कार्य वृद्धि का योग। शनि+राहु का दान करें तो शुभ योग। विद्या प्रशिक्षण जैसा अवसर भी बनेगा। संतान प्राप्ति योग, राजकीय सेवा का शुभ लाभ मिलेगा। ता. 3, 7, 8, 9, 27, 28 अशुभ। **जनवरी 2016**—कारोबार संबंधी समस्याएं बढ़ेगी। पारिवारिक कार्यों की गति धीमी चलने से आर्थिक हानि। ता. 14 जनवरी के बाद समय शुभदायक। रोजगार बढ़ेगा। सेवा प्राप्ति योग। वाहन क्रय योग एवं उत्तरी दिशा की शुभ यात्रा बनेगी। ता. 10, 11, 12, 27, 28, 29 अशुभ हैं। **फरवरी**—रक्त चाप बढ़ने का योग। घरेलू झंझट में खर्चा होगा, कारोबार में गड़बड़ी। मित्र वर्ग मदद करेंगे। भूखंड क्रय योग। विवाह जैसा मांगलिक कार्य भी बनेगा। शत्रु पक्ष से बचें अन्यथा शारीरिक चोट। ता. 11, 12, 13, 23, 24, 25 अशुभ हैं। **मार्च**—कफ जन्य रोग बाधा। संतान पक्ष से लाभ प्राप्ति, धन का व्यय हितकारक होगा। कारोबार में सुधार जैसी योजना प्राप्ति। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। रोजगार या राज सेवा प्राप्ति का योग, कर्जा निवृति का माह रहेगा। ता. 1, 2, 3, 11, 13, 15, 17 अशुभ हैं। **अप्रैल**—अकस्मात् नए व्यवसाय का नियंत्रण प्राप्त होगा। मित्र बंधुओं से मदद मिलेगी। मानसिक चिंता जैसा योग। यात्रा में अशोभनीय घटना। विवाह कार्य का शुभ दायक संकेत भी। राज पक्ष से लाभ। पुराने विवाद में विजय का योग। ता. 16, 17, 24, 25, 26 अशुभ रहेंगी।

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

वृष



स्वामी-शुक्र नग-हीरा शुभ

अप्रैल—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नई योजना की शुरुआत शुभ समाचार भी मिलेंगे। पेट में रोग बाधा। मित्र वर्ग द्वारा कार्य में शुभता बनी रहेगी। आय, व्यय इस माह में बराबर रहेगा। धार्मिक कार्य में खर्चा भी बनेगा। संतान का भाग्योदय कारक योग। ता. 10, 11, 12, 23, 24 अशुभ रहेंगी। **मई**—माह में कारोबार संबंधी समस्याएं ज्यादा बनेंगी। संतान को रोग बाधा, पत्नी की राय से किया गया कार्य में अर्घ तथा मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। वाहन क्रय का योग। राजकीय सहयोग प्राप्ति का माह रहेगा साझेदारी में किया गया कार्य में हानि होगी। ता. 17, 18, 26, 27, 30 अशुभ। **जून**—स्थिर कार्यों के प्रति कारोबार बढ़ेगा। सामाजिक परिवेश में नवीनता के साथ मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ समाचारों की प्राप्ति मित्रों द्वारा होगी। वृथा यात्रा का योग। परिजनों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यय अधिक होगा। ऋण लेने संबंधी योग बनेंगे। ता. 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ दायक। **जुलाई**—कारोबार संबंधी कार्य में मित्रों का योगदान। सूर्य+बुध के कारण कार्य योजना में सफलता। वायु विकार, चोट, गिरने का योग। चिकित्सालय की सेवाएं लेनी पड़ सकती हैं। कहीं पर लेन-देन में धोखा भी राहु के कारण बनता है। सावधान! ता. 15, 16, 23, 24, 27 अशुभ हैं। **अगस्त**—चन्द्र+राहु+गुरु की स्थिति आपके लिए अनुकूल होने से कार्य योजना तथा पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। वाहन एवं भूमि लेन-देन जैसा योग बनेगा। मान-सम्मान प्राप्ति का शुभ योग। संतान एवं स्त्री पक्ष के लिए भी माह भाग्योदय कारक रहेगा। ता. 21, 22, 24, 30, 31 अशुभ रहेंगी। **सितम्बर**—इस माह में स्वास्थ्य के प्रति आप गंभीर रहें तो शुभ क्योंकि कहीं चोट या ऊपर से गिरने का योग बनता है। व्यवसाय अच्छा चलेगा। शत्रुता पर विजय होगी। राजकीय सेवा योग तथा नौकरी हो तो स्थान परिवर्तन का योग बनेगा।

शेष पृष्ठ 195 पर

विक्रम सम्वत् 2072, शाके 1937 मध्ये शुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः

यहां दिये गये विवाह मुहूर्त्त "लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुध पंचकम्। एकार्गलौपग्रहौ च क्रांति साम्यं तथा परम्॥ दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दश दोषाः महाबलाः। एतान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद् बुधैः॥" श्लोक सूत्रगत प्रमुख दश दोष रहित है तथा जिन दोषों के परिहार वाक्य मिले उन्हें भी दिया गया है। इस दश दोष शुद्धि को रेखाओं में प्रदर्शित किया गया है। रेखाओं में जहां (।) ऐसी खड़ी रेखा है वहां उस दोष की पूर्ण शुद्धि समझें तथा जहां (ऽ) ऐसा चिन्ह है उसे परिहार सहित दोष जानें। वैवाहिक नक्षत्र "रोहिण्युत्तर रेवत्यो स्वाती मूलं मृगो मघा। अनुराधाश्च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदः॥" किन्तु कात्यायनोक्त "त्रिषुः त्रिषूत्तरादिषु" (गृह्य सूत्र) के अनुसार चार विशेष विवाह नक्षत्र भी हैं। इस विषय में धर्म सिंधुकार ने भी लिखा है। "चित्रा श्रवण धनिष्ठा ऽश्विनी यजुर्वेदीनाम्" अतः यजुर्वेदियों के विवाह इन चार विशेष विवाह नक्षत्रों में भी हो सकते हैं। हम पाठकों की सुविधा हेतु इन चार विशेष विवाह नक्षत्रों के मुहूर्त्त भी अलग से दे रहे हैं।

नोटः-यहां क्रांतिसाम्यं (महापात) दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है। लग्नों का समय भा.स्टै.टा. दिल्ली हेतु है। अतः अन्य नगरों के लिये समय परिवर्तित करके संशोधित कर लें। गुरु-शुक्र का उदयास्त सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लिया गया है। लग्नों के आगे दिया गया समय लग्नारंभ काल है।

समय शुद्धि

- मीनाऽर्क (मलमास)–वर्षारंभ से वैशाख कृ. नवमी सोमवार दिनांक 13 अप्रैल 2015 तक तथा फाल्गुन शु. 6 सोमवार दिनांक 14 मार्च 2016 से वर्षान्त तक (सर्वत्र वर्ज्य)
- चन्द्रग्रहण (वेधदोष)–दिनांक 03 अप्रैल 2015 से 07 अप्रैल 2015 तक (सर्वत्र वर्ज्य)
- अधिक आषाढ़ मास दोष–दिनांक 17 जून 2015 से 16 जुलाई 2015 तक (सर्वत्र वर्ज्य)
- चातुर्मास(चौमासा) दोष–द्वि. आषाढ़ शुक्ला 11 सोमवार दिनांक 27 जुलाई 2015 से कार्तिक शुक्ल 11 रविवार दिनांक 22 नवंबर 2015 तक (सर्वत्र वर्ज्य)
- शुक्रास्त (तारा)–श्रावण कृष्णा 11 सोमवार दिनांक 10 अगस्त 2015 से श्रावण शु. 5 गुरुवार दिनांक 20 अगस्त 2015 तक (सर्वत्र वर्ज्य)
- गुरु अस्त (तारा)–श्रावण कृ. 13 बुधवार दिनांक 12 अगस्त 2015 से भाद्रपद कृ. 13 गुरुवार दिनांक 10 सितंबर 2015 तक (सर्वत्र वर्ज्य)
- सिंहस्थ गुरु दोष (मघादि पंचपादत्व दोष)–भाद्रपद शु. 1 सोमवार दिनांक 14 सितंबर 2015 से आश्विन कृ. 3 बुधवार दिनांक 30 सितंबर 2015 तक (गंगा के उत्तर व गोदावरी के दक्षिण भाग में करने योग्य)
- धनुष्याऽर्कः (मलमास)–मार्गशीर्ष शु. 5 बुधवार दिनांक 16 दिसंबर 2015 से पौष शु. 5 गुरुवार दिनांक 14 जनवरी 2016 तक (सर्वत्र वर्ज्य)
- सूर्यग्रहण (वेधदोष)–दिनांक 08 मार्च 2016 से 12 मार्च 2016 तक (सर्वत्र वर्ज्य)
- होलाष्टक–फाल्गुन शु. 8 बुधवार दिनांक 16 मार्च 2016 से फाल्गुन शु. 15 बुधवार दि. 23 मार्च 2016 ई. तक (रावी, व्यास, सतलुज के किनारे एवं पंजाब, हरि., उ.प्र., राजस्थान, हिमाचल प्रदेश में वर्ज्य)

विवाहे सूर्य, गुरु व चन्द्र बल विचार

सूर्यः- 3, 6, 10, 11वां शुभ। 1, 2, 5, 7, 9वां पूज्य। 4, 8, 12वां नेष्ट। **गुरुः**- 2, 5, 7, 9, 11वां शुभ। 1, 3, 6, 10वां पूज्य। 4, 8, 12वां नेष्ट।
चन्द्रः- 1, 2, 3, 5, 6, 7, 9, 10, 11वां शुभ। 12वां ग्राह्य (पूज्य)। 4, 8वां नेष्ट।

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
21 अप्रैल	3	भौम	रोहिणी	7	ऽ।।।ऽऽ।।।।	दि. ल. सिंह, कन्या रा.ल. मकर, कुंभ (मकरे गु.पू.; भद्राः 28।26 से)	मेष	कर्क	वृष
22 "	4	बुध	मृग.	7	।।।।।ऽऽऽ।।	रा. ल. मकर, कुंभ	मेष	कर्क	मिथुन
23 "	5	गुरु	मृग.	7	।।।।।ऽऽऽ।।	दि. ल. मेष	मेष	कर्क	मिथुन
27 "	9	सोम	मघा	7	।ऽ।।।।।ऽऽ।	रा. ल. अ.गोधूलि, मकर, कुंभ (अ.गो.मं.पू.) (मकरे गु.पू.; कुंभे चं. पू)	मेष	कर्क	सिंह
28 "	10	भौम	मघा	8	।।।।।ऽ।।ऽ।	दि. ल. मेष, मिथुन, कन्या, रा.ल. अ. गोधूलि	मेष	कर्क	सिंह
29 "	11	बुध	उफा.	7	।।।।।ऽऽ।ऽ।	रा. ल. कुंभ (भद्रा 25।45 तक) (मिथुने चं. पूज्य)	मेष	कर्क	सिंह
30 "	12	गुरु	उफा.ह.	7	।।।।।ऽऽ।ऽ।	दि. ल. मिथुन, सिंह रा.ल. अ. गोधूलि, मकर, कुंभ	मेष	कर्क	कन्या

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.

दिनांक	ति.	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
5 मई	1	भौम	अनु.	6	IISSSSIIII	रा. ल. अ. गो., 10 (गु. पू.)	मेष	कर्क	वृश्चिक
7 "	3	गुरु	मूल	7	IIIISSISII	रा. ल. अ. गो., 10 (गु. पू.)	मेष	कर्क	वृ.धनु 13:06 से
8 मई	4	शुक्र	मूल	8	IIIISIISII	दि. ल. 3 (रा. दान, चं. पूज्य)	मेष	कर्क	धनु
9 "	5	शनि	उषा.	6	SSIIISIIIS	दि. ल. 6 रा. ल. अ. गो., 11, 12, 1(के. दान, रा. दान)	मेष	कर्क	ध.मकर 18:33 से
14 "	11	गुरु	उभा.	7	IIIISSISII	रा. ल. 1 (शु. दान)	मेष	कर्क	मीन

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.

दिनांक	ति.	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
19 मई	1	भौम	मृग.	9	IIIIISIIII	रा. ल. 11, 12, 1 (रा. दान, शु. दान)	वृष	कर्क	वृष
20 "	2	बुध	मृग.	9	IIIIISIIII	दि. ल. 3, 4, 6, 7 (चं. दान, के. दान)	वृष	कर्क	वृ.मिथुन 18:33से
24 "	6	रवि	मघा	9	IIIIIIISII	रा. ल. 1 (शु. दान)	वृष	कर्क	सिंह
27 "	8	बुध	उफा.	8	IIIIISSIII	दि. ल. 3, 4, 6, 7 (रा. दान, चं. दान) रा. ल. अ. गो., 11, 12 (रा. दान, चं. पूज्य)	वृष	कर्क	सिं.कन्या 15:13से
28 "	10	गुरु	उफा.	9	IIIIIIISII	दि. ल. 3, 4 (मि. रा. दान)	वृष	कर्क	कन्या
30 "	12	शनि	स्वाती	9	SIIIIIIIII	रा. ल. अ. गो. 10, 12 (गु. शु. पूज्य, रा. दान)	वृष	कर्क	तुला
31 "	13	रवि	स्वाती	8	SIIIISIIII	दि. ल. 3, 4, 6 (रा. दान, के. दान)	वृष	कर्क	तुला

प्र. आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.

दिनांक	ति.	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
03 जून	1	बुध	मूल	9	ISIIIIIIII	रा. ल. 12, 1 (रा. दान)	वृष	कर्क	धनु
10 "	9	बुध	उ.भा.	6	IISSIISSII	रा. ल. अ. गो., 1	वृष	कर्क	मीन
12 "	11	शुक्र	रेवती	7	IIIISSISII	दि. ल. 3, 4 (रा. दान)	वृष	कर्क	मी, मेष 9:42 से

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.

दिनांक	ति.	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
26 नवं.	1	गुरु	रोहिणी	8	IIIISIISII	दि. ल. 8, 10, 11 (चं. दान, गु. दान)	वृश्चि.	सिंह	वृष
27 नवं.	2	शुक्र	मृग.	8	IIIISSIIII	रा. ल. 5	वृश्चि.	सिंह	मिथुन
04 दिसं.	9	शुक्र	उ.फा.	6	IISISSISII	रा. ल. अ. गो., 4, 7	वृश्चि.	सिंह	कन्या
05 "	10	शनि	उ.फा.	6	IISISSISII	दि. ल. 9, 10	वृश्चि.	सिंह	कन्या
07 "	11	सोम	स्वाती	8	SIIIIIISII	रा. ल. 3, 4, 5, 6, 8 (रा. दान, बु. पूज्य, शु. दान, के. दान)	वृश्चि.	सिंह	तुला
08 "	12	भौम	स्वाती	8	SIIIIIISII	दि. ल. 8, 10, 11 (गु. पूज्य)	वृश्चि.	सिंह	तुला

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.

दिनांक	ति.	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
13 दिसं.	2	रवि	उषा.	10	IIIIIIIIII	रा. ल. 6, 7, 8 (के. दान)	वृश्चि.	सिंह	धनु
14 दिसं.	3	सोम	उषा.	10	IIIIIIIIII	दि. ल. 10 (गु. पूज्य)	वृश्चि.	सिंह	मकर

दिनांक	ति.	बार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
पौष शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.									
15 जन.	6	शुक्र	उषा.	8	IIIISISIII	दि. ल. 11 (गु. पूज्य) रा. ल. अ. गो.	मकर	सिंह	मीन
19 "	10	भौम	रोहिणी	8	IIIIISIISI	रा. ल. 6 (के. दान)	मकर	सिंह	वृष
20 "	11	बुध	रोहिणी	8	IIIIISIISI	रा. ल. अ. गो.	मकर	सिंह	वृष
21 "	12	गुरु	मृग.	7	SIIISSIIII	रा. ल. अ. गो.	मकर	सिंह	वृ.मिथु. 08।36 से
माघ कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.									
26 जन.	2	भौम	मघा.	8	IIISISIIII	रा. ल. अ. गो.	मकर	सिंह	सिंह
27 "	3	बुध	पूफा.	6	IISISSISII	रा. ल. 8	मकर	सिंह	सिंह
28 "	4	गुरु	उफा.	6	IISISSISII	रा. ल. अ. गो., 8	मकर	सिंह	कन्या
29 "	5	शुक्र	हस्त	9	IIIIIIISII	दि. ल. 11, 3 (गु. पूज्य, रा. दान) रा. ल. अ. गो., 7, 8 (शु. दान)	मकर	सिंह	कन्या
02 फर.	9	भौम	अनु.	8	IIIIIISSII	रा. ल. अ. गो., 6 (10 बजे तक अग्रे बाणदोष)	मकर	सिंह	वृश्चिक
04 "	11	गुरु	मूल	7	IIIIIISSIS	रा. ल. 8	मकर	सिंह	वृश्चिक
05 "	12	शुक्र	मूल	8	IIIIIIISIS	दि. ल. 11, 3 (रा. दान, गु. पूज्य, चं. बु. शु. पूज्य)	मकर	सिंह	धनु
06 "	13	शनि	उषा.	7	IISIISSIII	रा. ल. 6	मकर	सिंह	ध.मक. 25।17
माघ शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.									
12 फर.	5	शुक्र	रेवती	7	ISISIIISII	रा. ल. अ. गो.	मकर	सिंह	मीन
16 "	9	भौम	रोहिणी	7	IIISISSIII	दि. ल. 11 (रा. दान, गु. पूज्य)	कुंभ	सिंह	वृष
17 "	10	बुध	मृग.	6	ISIISSISII	रा. ल. 8 (शु. दान)	कुंभ	सिंह	मिथुन
22 "	15	सोम	मघा	8	IIIISIISII	रा. ल. 6, 7, 9 (मं. पूज्य)	कुंभ	सिंह	सिंह
फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.									
27 फर.	2	शनि	स्वाती	6	ISISISISII	रा. ल. 6, अ. गो.	कुंभ	सिंह	तुला
28 "	3	रवि	स्वाती	7	IIISIISSII	रा. ल. 6, अ. गो.	कुंभ	सिंह	तुला
01 मार्च	7	भौम	अनु.	6	SISIIISIII	दि. ल. 12, रा. ल. अ. गो., 6, 7	कुंभ	सिंह	वृश्चिक
02 "	8	बुध	मूल	7	SIIIIISSII	रा. ल. 10	कुंभ	सिंह	वृ.धनु 28।23 से
05 "	11	शनि	उषा.	8	IIIIISISII	दि. ल. 1, 3, 4 (चं, शु. पूज्य), रा. ल. 7, 8 (शु. दान)	कुंभ	सिंह	ध.मक. 11।30 से
फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.									
10 मार्च	2	गुरु	उषा.	9	IIIISIIIII	दि. ल. 1,3,4	कुंभ	सिंह	मीन

कात्यायनोक्त विवाह मुहूर्त्ताः सम्वत् 2072 वि.

दिनांक	ति.	वार	नक्षत्र	रेखा लतादि दश दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
वैशाख शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.								
02 मई	13	शनि	चित्रा	7 SIIIISSIII	दि. ल. 3, 5 (रा. दान), रा. ल. अ. गो., 11, 12, 1(रा. के. शु. दान)	मेष	कर्क	क.तुला 19।41 से
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.								
11 मई	8	सोम	श्रवण	8 IIIIISISII	दि. ल. 3 (रा. दान)	मेष	कर्क	म.कुंभ 22।21 से
11 "	8	सोम	धनिष्ठा	6 IIISSSISII	दि. ल. 4, 6 (चं. पूज्य, के. दान) रा. ल. अ. गो., 12,1 (के. शु. दान)	मेष	कर्क	म.कुंभ 22।21 से
12 "	9	भौम	धनिष्ठा	7 IIISSIISII	दि. ल. 3 (रा. दान)	मेष	कर्क	कुंभ
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.								
30 मई	12	शनि	चित्रा	7 SSIIIISIII	दि. ल. 3, 4, 6 (रा. के. दान)	वृष	कर्क	तुला
प्र. आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.								
06 जून	4	शनि	श्रवण	7 IIIISIISSI	रा. ल. अ. गो. 12, 1 (रा. दान)	वृष	कर्क	मकर
07 "	5	रवि	धनिष्ठा	6	दि. ल. 3, 4, 6 (रा. के. दान, चं. पूज्य)	वृष	कर्क	म.कुंभ 27।44 से
12 "	11	शुक्र	अश्विनी	7 IIIIISSSII	दि. ल. 4, 6, 7 (के. दान, चं. पूज्य) रा. ल. 10, 12 (गु. शु. पूज्य, रा. दान)	वृष	कर्क	मी.मेष 9।42 से
13 "	12	शनि	अश्विनी	8 IIIIIISSII	दि. ल. 3 (रा. दान)	वृष	कर्क	मेष
कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.								
23 नवं.	12	सोम	अश्विनी	6 SISISIISII	रा. ल. 7 (चं. पूज्य) (व्यतिपात दोष)	वृश्चि.	सिंह	मी.मेष 12।20 से
पौष शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.								
17 जन.	8	रवि	अश्विनी	8 IIIIISISII	दि. ल. 11 (गु. पूज्य) रा. ल. अ. गो., 6 (शु. के. दान)	मकर	सिंह	मेष
फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.								
06 मार्च	12	रवि	श्रवण	9 IIIIIIISII	दि. ल. 1, 3, 4 (चं. शु. पूज्य)	कुंभ	सिंह	मकर
फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.								
11 मार्च	3	शुक्र	अश्विनी	9 IIISIIIIII	दि. ल. 4 रा. ल. अ. गो., 7, 10 (चं. पूज्य)	कुंभ	सिंह	मी.मेष 15।44

पंजाब आदि द्विगर्त देशीय विवाह मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	ति.	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दश दोष	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
द्वि. आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.									
21 जुला.	5	भौम	उफा.	7	IIIIISSIIS	दि. ल. 4, 5,7 रा. ल. अ. गो.	कर्क	सिंह	सिं.,कन्या 6।52 से
22 "	6	बुध	हस्त	7	IISSISIIII	दि. ल. 4, 5,7 रा. ल. अ. गो.	कर्क	सिंह	कन्या
23 जुला.	7	गुरु	चित्रा	10	IIIIIIIIII	दि. ल. 5, 7 रा. ल. अ. गो.	कर्क	सिंह	कं.तुला 19।47
24 "	8	शुक्र	स्वाती	6	SSIIISISII	रा. ल. अ. गो. (श. पूज्य)	कर्क	सिंह	तुला
26 "	10	रवि	अनु.	8	IISIIIIISI	दि. ल. 7 (13।00 से) रा. ल. अ. गो., 2	कर्क	सिंह	तु.,वृश्चि. 6।44 से
31 "	15	शुक्र	श्रवण	7	IIISSIISII	दि. ल. 6, 7 (रा. दान) रा. ल. 11, 2 (गु. शु. श. दान)	कर्क	सिंह	मकर
श्रावण कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.									
01 अग.	1	शनि	धनिष्ठा	8	IIIISISIII	दि. ल. 6, 8 (रा. पूज्य, श. दान) रा. ल. अ. गो. 1, 2	कर्क	सिंह	म.कुंभ 18।33 से
04 "	5	भौम	उभा.	7	IISISISIII	दि. ल. 8 (श. पूज्य) रा. ल. अ. गो., 1, 2	कर्क	सिंह	मीन
आश्विन शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.									
14 अक्टू.	1	बुध	स्वाती	10	IIIIIIIIII	रा. ल. 4, 5 (मं. पूज्य)	कन्या	सिंह	तुला
18 "	5	रवि	मूल	10	IIIIIIIIII	रा. ल. अ. गो. 1	तुला	सिंह	वृ.धनु 13।15 से
21 "	8	बुध	उषा.	9	IIIIIIISII	दि. ल. 7	तुला	सिंह	मकर
21 "	8	बुध	श्रवण	8	IIISIIIISI	रा. ल. अ. गो. 2, 4, 5 (चं. मं. दान)	तुला	सिंह	मकर
25 "	13	रवि	उभा.	5	SISSSISIII	दि. ल. 11 (मं. पूज्य) रा. ल. 1, 2, 4 (श. पूज्य)	तुला	सिंह	मीन
27 "	15	भौम	अश्विनी	6	IIISISSSII	दि. ल. 11 रा. ल. 2, 4, 5 (श. दान, मं. पूज्य)	तुला	सिंह	मेष
कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. 2072 वि.									
31 अक्टू.	5	शनि.	मृग.	8	IIIIIISSII	दि. ल. 7	तुला	सिंह	मिथुन
04 नवं.	9	बुध	मघा	9	IIIIIIISII	रा. ल. 3	तुला	सिंह	क.सिंह 20।06 से
05 "	9	गुरु	मघा	9	IIIIIIISII	रा. ल. अ. गो. 3 (21।50 तक)	तुला	सिंह	सिंह
08 "	12	रवि	हस्त	7	IIISSIIIIS	दि. ल. 7, 8, 9 (श. दान) रा. ल. 2, 3, 5 (श. पूज्य)	तुला	सिंह	कन्या
कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. 2072 वि.									
16 नवं.	5	सोम	उषा.	9	ISIIIIIIII	रा. ल. 6	वृश्चि.	सिंह	ध.मकर 26।19 से
17 "	6	भौम	उषा.	9	ISIIIIIIII	दि. ल. 12, 1(मं. रा. पूज्य) रा. ल. अ. गो. 3	वृश्चि.	सिंह	मकर

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
25 अप्रै.	वैशा.	शु.	7	रवि	पुन.	16141तक	2,3, अभि.
26 "	"	"	8	सोम	पुष्य	13156 तक	2,3, अभि.
30 "	"	"	12	गुरु	उफा.	पूरा दिन	2,3, अभि.
11 मई	ज्ये.	कृ.	8	सोम	श्रव.	10158 तक	2, 3
14 "	"	"	11	गुरु	उभा.	पूरा दिन	2,3, अभि.
28 "	"	"	10	गुरु	उफा.	11129 तक	3
31 "	"	शु.	13	शनि	स्वाती	18117 तक	3,5
07 जून	प्र.आ.	कृ.	5	रवि	श्रव.	16122 तक	3,5
12 "	"	"	11	शुक्र	रेव.	09142 तक	3,5
21 जन.	पौष	शु.	12	गुरु	मृग.	पूरा दिन	11,12, अभि.
29 जन.	माघ	कृ.	5	शुक्र	हस्त	पूरा दिन	11,12, अभि.
31 "	"	"	7	रवि	चित्रा	पूरा दिन	11,12, अभि.
17 फर.	"	शु.	10	बुध	मृग.	पूरा दिन	12
20 "	"	"	13	शनि	पुष्य	पूरा दिन	12,2, अभि.
25 "	फाल्गु.	कृ.	3	गुरु	उफा.	12125 तक	12,2, अभि.
28 "	"	"	5	रवि	स्वाती	21132 तक	12,2, अभि.
05 मार्च	"	"	11	शनि	उषा.	पूरा दिन	12, 2, 3
10 मार्च	"	शु.	2	गुरु	उभा.	पूरा दिन	12, 2, 3

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
29 मार्च	चैत्र	शु.	10	रवि	पुष्य	अहोरात्र	2, 3
06 अप्रै.	वैशा.	कृ.	2	सोम	स्वाती	पूरा दिन	2, 3
29 अप्रै.	वैशा.	शु.	11	बुध	पूफा.	पूरा दिन	2, 3
30 "	"	"	12	गुरु	उफा.	पूरा दिन	2, 3
06 मई	ज्ये.	कृ.	2	बुध	अनु.	12146 तक	2, अभि.
28 "	"	शु.	10	गुरु	उफा.	11129 तक	अभि.
04 जून	प्र.आ.	कृ.	2	गुरु	मूल	19124 तक	5
07 "	"	"	5	रवि	श्रव.	16122 तक	अभि.
29 जन.	माघ	कृ.	5	शुक्र	हस्त	14127 तक	अभि.
10 फर.	"	शु.	2	बुध	शत.	13118 तक	अभि.
17 "	"	"	10	बुध	मृग.	पूरा दिन	2
24 "	फाल्गु.	कृ.	2	बुध	पूफा/उफा.	27142 तक	2
25 "	"	"	3	गुरु	उफा.	12126 तक	2, 3
10 मार्च	"	शु.	2	गुरु	उभा.	18123 तक	2, 3

द्विरागमन मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
15 अप्रै.	वैशा.	कृ.	11	बुध	शत.		2, 3
22 "	"	शु.	4	बुध	मृग.		6, 7
23 अप्रै.	वैशा.	कृ.	5	गुरु	मृग.		2, 3
24 "	"	"	6	शुक्र	पुन.		6, 7
08 मई	ज्ये.	कृ.	4	शुक्र	मूल		3, अभि.
18 नवं.	कार्ति.	शु.	7	बुध	श्रव.		12
26 "	मार्ग.	कृ.	1	गुरु	रोहि.		12, 2, अभि.
27 "	"	"	2	शुक्र	मृग.		12, 2, अभि.
30 "	"	"	5	सोम	पुष्य		12, 2, अभि.
14 दिसं.	"	शु.	3	सोम	उषा.		12, अभि.
17 फर.	माघ	शु.	10	बुध	मृग.		12, 2, 3
25 "	फाल्गु.	कृ.	3	गुरु	हस्त		2, 3, अभि.
07 मार्च	"	"	13	सोम	धनि.		12, 2,3, अभि.
10 "	"	शु.	2	गुरु	उभा.		12, 2, 3, अभि.

मुण्डन संस्कार मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
15 मई	ज्ये.	कृ.	12	शुक्र		26144 तक	2, 3, 4
22 "	"	शु.	5	शुक्र		22117 तक	3, 4
03 जून	प्र.आ.	कृ.	1	बुध		19152 तक	3, 4
12 "	"	"	11	शुक्र	रेव./अ.	25152 तक	3, 4
29 जन.	माघ	कृ.	5	शुक्र	हस्त	14127 तक	12 (मं.पू.)
04 फर.	"	"	11	गुरु	ज्ये.	19121 तक	12 (मं.पू.)
19 फर.	"	"	12	शुक्र	पुन.	27101 तक	12 (मं.पू.)

अक्षरारंभ व विद्यारंभ मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
24 अप्रै.	वैशा.	शु.	6	शुक्र	आर्द्रा	15138 तक	2, 3, 4
07 मई	ज्ये.	कृ.	2	बुध	अनु.	13106 तक	2, 3, 4
15 "	"	"	12	शुक्र	रेव.	17113 तक	2, 3, 4
07 जून	प्र.आ.	कृ.	5	रवि	श्रव.	16122 तक	4
12 "	"	"	11	शुक्र	रेव./अ.	25152 तक	3, 4
29 जन.	माघ	कृ.	5	शुक्र	हस्त	पूरा दिन	अभि.
03 फर.	"	"	10	बुध	अनु.	12140 तक	अभि.
19 "	"	शु.	12	शुक्र	पुन.	27101 तक	11, 2
28 "	फाल्गु.	कृ.	5	रवि	स्वाती	21132 तक	11, 2
06 मार्च	"	"	12	रवि	श्रव.	15139 तक	11, 2
11 "	"	शु.	3	शुक्र	रेव.	15144 तक	12, 2, 3

गृहारंभ (नींव रखना) मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
23 अप्रै.	वैशा.	शु.	5	गुरु	मृग.	वायव्य	0
25 "	"	"	7	शनि	पुन.	वायव्य	5
26 "	"	"	8	रवि	पुष्य	वायव्य	अभि.
30 अप्रै.	वैशा.	शु.	12	गुरु	उफा.	वायव्य	2, अभि.
06 मई	ज्ये.	कृ.	2	बुध	अनु.	वायव्य	2
09 "	"	"	5	शनि	पूषा	वायव्य	अभि.
11 "	"	"	8	सोम	श्रव.	वायव्य	अभि.
14 "	"	"	11	गुरु	उभा.	वायव्य	अभि.
15 "	"	"	12	शुक्र	रेव.	वायव्य	अभि.
20 "	"	शु.	2	बुध	मृग.	नैऋत्य	2
23 "	"	"	5	शनि	पुष्य	नैऋत्य	2, अभि.
30 "	"	"	12	शनि	चित्रा	नैऋत्य	2
08 जून	प्र.आ.	कृ.	6	सोम	धनि.	नैऋत्य	2, अभि.
11 "	"	"	9	गुरु	उभा.	नैऋत्य	2, 4
12 "	"	"	11	शुक्र	रेव.	नैऋत्य	4, अभि.
22 नवं.	कार्ति.	शु.	11	रवि	उभा.	ईशान	2
23 "	"	"	12	सोम	रेव.	ईशान	3, अभि.
26 "	मार्ग.	कृ.	1	गुरु	रोहि.	ईशान	8, अभि.
27 "	"	"	2	शुक्र	मृग.	ईशान	अभि.
05 दिसं.	"	"	10	शनि	उफा.	ईशान	अभि.
07 "	"	"	11	सोम	चित्रा	ईशान	अभि.
14 "	"	शु.	3	सोम	उषा.	ईशान	अभि.
15 जन.	पौष	शु.	6	शुक्र	उभा.	ईशान	अभि.
24 "	"	"	15	रवि	पुष्य	ईशान	अभि.
28 "	माघ	कृ.	4	गुरु	उफा.	ईशान	अभि.
30 "	"	"	6	शनि	चित्रा	ईशान	अभि.
03 फर.	"	"	10	बुध	अनु.	ईशान	11, अभि.
12 "	"	शु.	4	शुक्र	उभा.	ईशान	अभि.
25 "	फाल्गु.	कृ.	3	गुरु	उफा.	ईशान	अभि.
27 "	"	"	4	शनि	चित्रा	ईशान	अभि.
05 मार्च	"	"	11	शनि	उषा.	ईशान	अभि.
10 "	"	शु.	2	गुरु	उभा.	ईशान	अभि.

गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
30 अप्रै.	वैशा.	शु.	12	गुरु	उफा.	27148 तक	2, अभि.
06 मई	ज्ये.	कृ.	2	बुध	अनु.	12143 तक	2, अभि.
28 "	"	शु.	10	गुरु	उफा.	11129 तक	2
30 मई	ज्ये.	शु.	12	शनि	चित्रा	16133 तक	अभि.
12 जून	प्र.आ.	कृ.	11	शुक्र	रेव.	09142 तक	2
30 जन.	माघ	"	6	शनि	चित्रा	07148 बाद	11, अभि.
03 फर.	"	"	10	बुध	अनु.	12140 तक	11, अभि.
11 "	"	शु.	3	गुरु	उभा.	11112 बाद	अभि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
25	फाल्गु.	कृ.	3	गुरु	उफा.	12:26 तक	11, अभि.
05 मार्च	"	"	11	शनि	उषा.	29:01 तक	11, अभि.
10 "	"	शु.	2	गुरु	उभा.	18:23 तक	अभि.

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
9 मई	ज्ये.	कृ.	5	शनि	उषा.	12:42 तक	अभि.
11 "	"	"	8	सोम	धनि.	10:58 तक	अभि.
15 "	"	"	12	शुक्र	रेव.	26:44 तक	2, अभि.
23 "	"	शु.	5	शनि	पुष्य	24:05 तक	2, अभि.
26 नवं.	मार्ग.	कृ.	1	गुरु	रोहि.	27:38 तक	अभि.
27 "	"	"	2	शुक्र	मृग.	26:16 तक	अभि.
30 "	"	"	5	सोम	पुष्य	26:25 तक	अभि.
07 दिसं.	"	"	11	सोम	चित्रा	18:28 तक	अभि.
03 फर.	माघ	कृ.	10	बुध	अनु.	12:40 तक	11
10 "	"	शु.	2	बुध	शत.	13:18 तक	11
20 "	"	"	13	शनि	पुष्य	28:02 तक	11
07 मार्च	फाल्गु.	कृ.	13	सोम	धनि.	13:24 तक	11

विद्यारंभ मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
16 अप्रै.	वैशा.	कृ.	12	गुरु	पूभा.	10:12 तक	2, 3, 4
24 "	"	शु.	6	शुक्र	आर्द्रा	15:38 तक	2, 3, 4
30 "	"	शु.	12	गुरु	उफा.	27:48 तक	3, 4
06 मई	ज्येष्ठ	कृ.	2	बुध	अनु.	12:43 तक	2, 3, 4
14 "	"	कृ.	11	गुरु	उभा.	पूरा दिन	2, 3, 4
15 "	"	कृ.	12	शुक्र	रेव.	17:13 तक	2, 3, 4
28 "	"	शु.	10	गुरु	पूफा.	11:28 तक	3, 4
04 जून	प्र.आ.	कृ.	2	गुरु	मूल	19:24 तक	3, 4
07 "	"	"	5	रवि	श्रव.	16:22 तक	4
12 "	"	"	11	शुक्र	रेव,अश्वि	25:52 तक	3, 4
29 जन.	माघ	कृ.	5	शुक्र	हस्त	अहोरात्र	अभि.
03 फर.	"	"	10	बुध	अनु.	12:40 तक	अभि.
09 "	"	"	12	शुक्र	मूल	19:46 तक	अभि.
10 "	"	शु.	2	बुध	शत.	13:18 तक	11
11 "	"	"	3	गुरु	पूभा.	11:12 तक	11
19 फर.	माघ	शु.	12	शुक्र	पुन.	27:01 तक	11, 2
24 "	फाल्गु.	कृ.	2	बुध	पूफा,उफा	26:31 तक	11, 2
28 "	"	"	5	रवि	स्वाती	21:32 तक	11, 2
06 मार्च	"	"	12	रवि	श्रव.	15:39 तक	11, 2
11 "	"	शु.	3	शुक्र	रेव.	15:44 तक	12, 2, 3

विपणी (दुकान) करण मुहूर्त्ताः सं. 2072 वि.

दिनांक	मास	पक्ष	ति.	वार	नक्षत्र	शुद्धि समय (स्टै.टा.)	लग्न
26 अप्रै.	वैशा.	शु.	8	रवि	पुष्य	15:56 तक	2, 3, अभि.
30 "	"	"	12	गुरु	उफा.	27:48 तक	2, 3, 4
06 मई	ज्ये.	कृ.	2	बुध	अनु.	12:43 तक	3, 4
10 "	"	"	6	रवि	उषा.	06:48 तक	2
14 "	"	"	11	गुरु	उभा.	06:27 बाद	3,4, अभि.
20 "	"	शु.	2	बुध	मृग.	20:48 तक	3,4 (सिं.के.पू.)
23 "	"	"	5	शनि	पुष्य.	24:05 तक	3,4 (सिं.के.पू.)
28 "	"	"	10	गुरु	उफा.	11:29 तक	3,4
30 "	"	"	12	शनि	चित्रा	08:05 तक	4,5(सिं.के.पू.)
12 जून	प्र.आ.	कृ.	11	शुक्र	रेव.	09:42 तक	3, 4
22 जुला.	द्वि.आ.	शु.	6	बुध	हस्त	अहोरात्र	4, 5, 6
27 "	"	"	11	सोम	अनु.	12:27 तक	4, 5, 6
31 "	"	"	15	शुक्र	उषा.	09:56 तक	4, 5
05 अग.	श्राव.	कृ.	6	बुध	रेव.	20:59 तक	5, 6
16 "	"	शु.	3	बुध	चित्रा	20:04 तक	6, 7, 8
19 "	"	"	6	शनि	अनु.	29:53 तक	6, 7, 8
23 "	"	"	10	बुध	उषा.	07:21 बाद	7, 8
16 अक्टू.	आश्वि.	शु.	3	शुक्र	अनु.	09:46 बाद	8
21 "	"	"	8	बुध	उषा.	13:33 तक	7, 8
25 "	"	"	13	रवि	उभा.	07:45 तक	8, अभि.
31 "	कार्ति.	कृ.	5	शनि	मृग.	16:00 तक	7,9, अभि.
08 नवं.	"	"	12	रवि	हस्त	पूरा दिन	8, अभि.
13 "	"	शु.	2	शुक्र	अनु.	17:28 तक	8,9
26 "	मार्ग.	कृ.	1	गुरु	रोहि.	27:38 तक	8,9, अभि.
27 "	"	"	2	शुक्र	मृग.	24:16 तक	8,9, अभि.
30 "	"	"	5	सोम	पुष्य	26:25 तक	8,9, अभि.
05 दिसं.	मार्ग.	कृ.	10	रवि	उफा.	12:25 तक	8,9
07 "	"	"	11	सोम	चित्रा	18:28 तक	8,9, अभि.
16 जन.	पौष	शु.	7	शनि	रेव.	17:58 तक	अभि.
20 "	"	"	11	बुध	रोहि.	10:46 बाद	12 (मं.दा.)
21 "	"	"	12	गुरु	मृग.	20:20 तक	अभि.
29 जन.	माघ	कृ.	5	शुक्र	हस्त	अहोरात्र	अभि.
03 फर.	"	"	10	बुध	अनु.	12:40 तक	12 (मं.दा.)
20 "	"	शु.	13	शनि	पुष्य	21:49 तक	अभि.
25 "	फाल्गु.	कृ.	3	गुरु	उफा.	16:53 तक	12,2
05 मार्च	"	"	11	शनि	उषा.	29:01 तक	12,2, अभि.
10 "	"	शु.	2	गुरु	उभा.	18:23 तक	12,2, अभि.
11 "	"	"	3	शुक्र	रेव.	15:44 तक	12,2, अभि.

संवत्सर आधारित आय-व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	8	2	8	2	5	8	2	8	5	14	14	5
व्यय	5	14	11	8	5	11	14	5	11	11	11	11

आय-व्यय देखने की विधि

जिस राशि का आय-व्यय देखना हो उसके अंकों को जोड़कर एक घटा दें जो शेष बचे उसमें आठ का भाग दे दें। अगर 1 शेष बचे तो उस वर्ष लाभ अच्छा होता है। 2 शेष बचे तो सुख-शांति रहती है। 3 शेष बचे तो क्लेश, झगड़े, विवाद आदि उत्पन्न होते हैं। 4 शेष बचे तो रोग-पीड़ा तथा दुर्घटना आदि का भय रहता है। 5 शेष बचे तो लोकापवाद, अपयश और बदनामी होती है। 6 शेष बचे तो मान-सम्मान बढ़ता है। 7 शेष बचे तो मुकदमें में या प्रतियोगिता, कम्पीटीशन और वाद-विवाद में जीत होती है। 0 या 8 शेष बचे तो धन हानि होती है।

उदाहरण– सौरभ की कुंभ राशि है। इस वर्ष लाभ 14 और हानि 11 को जोड़ा तो 25 प्राप्त हुए। इसमें 1 घटाया तो बाकी 24 में 8 का भाग दिया। शेष बचा 0। इसके अनुसार वर्ष 2015-16 में सौरभ को व्यापार अथवा अन्य उपक्रमों में धन हानि की आशंका रहेगी। इसी प्रकार अन्य राशियों का भी आय-व्यय निकाल सकते हैं।

अथ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् 2072 वि. (दिनांक 21 मार्च 2015 से 07 अप्रैल 2016 तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय के ज्ञानार्थ कोष्ठक (वर-कन्या को सूर्य, गुरु व चन्द्र बल विचार सहित)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए "सूर्य की पूजा" तथा कन्या के लिए "गुरु की पूजा" वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कॉलम में जो तारीखें एक समान मिलें, उन तारीखों में उन राशि वाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए 4, 8, 12वें सूर्य व 4, 8वें चन्द्र का परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अतः 4, 8, 12वें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है। तथा चतुर्थ और अष्टम चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। यहां कात्यायनोक्त चार नक्षत्रों व अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें भी सम्मिलित हैं। अतः स्वप्रथानुसार ग्रहण करें।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पूज्य गुरु
मेष–अप्रैल-21, 22, 23, 27, 28, 29, 30, मई-7, 8, 9, 11, 12, 14, 19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, जून-3, 6, 7, 10, 12, 13, अक्टू.-14, 18, 21, 25, 27, 31, नवं.-4, 5, 8, जन.-15, 16, 17, 19, 20, 21, 26, 27, 28, 29, फर.-5, 6, 16, 17, 22, 24, 27, 28, मार्च-2, 5, 6, 9, 10, 11।	14 अप्रैल से 15 मई तक, 15 मई से 15 जून तक पूज्य, 18 अक्टू. से 17 नवं. तक पूज्य	मेष–अप्रैल-21, 22, 23, 27, 28, 29, 30, मई-7, 8, 9, 11, 12, 14, 19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, जून-3, 6, 7, 10, 12, 13, जुला.-21, 22, 23, 24, 31, अग.-1, 4, अक्टू.-14, 18, 21, 25, 27, 31, नवं.-4, 5, 8, 16, 17, 23, 26, 27, दिसं.-4, 5, 7, 8, 13, 14, जन.-15, 16, 17, 19, 20, 21, 26, 27, 28, 29, फर.-5, 6, 16, 17, 22, 24, 27, 28, मार्च-2, 5, 6, 9, 10, 11।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु ग्राह्य, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त शुद्ध
वृष-मई-19, 20, 27, 28, 29, 30, 31, जून-6, 7, 10, 12, 13, जुला.-21, 22, 23, 24, 26, 31, अग.-1, 4, अक्टू.-14, 18, 21, 25, 27, 31, नवं.-8, 16, 17, 23, 26, 27, दिसं.-5, 7, 8, 14, जन.-15, 16, 17, 20, 21, 28, 29, फर.-2, 4, 12, 16, 17, 24, 27, 28, मार्च-1, 5, 6, 9, 10, 11।	15 मई से 16 जुला., 17 नवं. से 16 दिसं. तक, 15 जन. से 13 फर. तक पूज्य	वृष–अप्रैल-21, 22, 23, 30, मई-2, 5, 9, 11, 12, 14, 19, 20, 27, 28, 29, 30, 31, जून-6, 7, 10, 12, 13।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु ग्राह्य, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु 4 नेष्ट
मिथुन–अप्रैल-21, 22, 23, 27, 28, 29, मई-2, 5, 7, 8, 11, 12, 14, जुला.-24, 26, अग.-1, 4, अक्टू.-18, 21, 25, 27, 31, नवं.-4, 5, 16, 23, 26, 27, दिसं.-7, 8, 13, फर-16, 17, 22, 24, 27, 28, मार्च-1, 2, 9, 10, 11।	15 जून से 17 अग. तक, 18 अक्टू. से 17 नवं., 13 फरवरी से 14 मार्च तक पूज्य	मिथुन–अप्रैल-21, 22, 23, 27, 28, 29, मई-2, 5, 7, 8, 11, 12, 14, 19, 20, 24, 29, 30, 31, जून–3, 10, 12, 13, जुला.-24, 26, अग.-1, 4, अक्टू.-14, 18, 21, 25, 27, 31, नवं.-4, 5, 16, 23, 26, 27, दिसं.-7, 8, 13, जन.-15, 16, 17, 20, 21, 26, 27, फर.-2, 4, 5, 6, 12, 16, 17, 22, 24, 27, 28, मार्च-1, 2, 9, 10, 11।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु शुद्ध, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु 3 पूज्य
कर्क–अप्रैल-21, 22, 23, 27, 28, 29, 30, मई-5, 7, 8, 9, 12, 14 ,19, 20, 24, 27, 28, 29, जून-3, 6, 7, 10, 12, 13, जुला.-21, 22, 23, 24, 26, 31, अग.-1, 4, अक्टू.-14, नवं.-17, 23, 26, 27, दिसं.-5, 7, 8, 13, 14, जन.-15, 16, 17, 20, 21, 26, 27, 28, 29, फर.-2, 4, 5, 6।	17 जुला. से 17 सितं. तक 17 नवं. से 16 दिसं. तक, 14 जन. से 13 फर. तक पूज्य	कर्क–अप्रैल-21, 22, 23, 27, 28, 29, 30, मई-5, 7, 8, 9, 12, 14 ,19, 20, 24, 27, 28, 29, जून-3, 6, 7, 10, 12, 13, जुला.-21, 22, 23, 24, 26, 31, अग.-1, 4, अक्टू.-14, 18, 21, 25, 27, 31, नवं.-4, 5, 8, 16, 17, 23, 26, 27, दिसं.-5, 7, 8, 13, 14, जन.-15, 16, 17, 20, 21, 26, 27, 28, 29, फर.-2, 4, 5, 6, 12, 16, 17, 22, 24, मार्च-1, 2, 5, 6, 9, 10, 11।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु पूज्य, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु शुद्ध
सिंह–अप्रैल-21, 22, 23, 27, 28, 29, 30, मई-2, 7, 8, 9, 11, 12, 19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, जून-3, 6, 7, 12, 13, जुला.-21, 22, 23, 24, 31, अग.-1, अक्टू.-14, 18, 21, 27, 31, नवं.-4, 5, 8, जन.-15, 16, 17, 20, 21, 26, 27, 28, 29, फर.-4, 5, 6, 16, 17, 22, 24, 27, 28, मार्च-2, 5, 6, 9, 11।	14 अप्रै. से 15 मई तक, 17 अग. से 18 अक्टू. तक, 13 फर. से 14 मार्च तक पूज्य	सिंह–अप्रैल-21, 22, 23, 27, 28, 29, 30, मई-2, 7, 8, 9, 11, 12, 19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, जून-3, 6, 7, 12, 13, जुला.-21, 22, 23, 24, 31, अग.-1, अक्टू.-14, 18, 21, 27, 31, नवं.-4, 5, 8, 16, 17, 23, 26, 27, दिसं.-4, 5, 7, 8, 13, 14, जन.–15, 16, 17, 20, 21, 26, 27, 28, 29, फर.–4, 5, 6, 16, 17, 22, 24, 27, 28, मार्च–2, 5, 6, 9, 11।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु ग्राह्य, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु पूज्य

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पूज्य गुरु
कन्या–मई-19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, **जून**-6, 7, 10, **जुला.**-21, 22, 23, 24, 26, 31, **अग.**-1, 4, **अक्टू.**-14, 21, 25, 31, **नवं.**-4, 5, 8, 16, 17, 26, 27, **दिसं.**-4, 5, 7, 8, 14, **जनवरी**-15, 16, 20, 21, 26, 27, 28, 29, **फर.**-2, 4, 6, 12, 16, 17, 22, 24, 27, 28, **मार्च**-1, 5, 6, 9, 10।	15 मई से 15 जून तक, 17 सितं. से 17 नवं. तक, 14 जन. से 13 फर. तक पूज्य	**कन्या–अप्रैल**-21, 22, 23, 27, 28, 29, 30, **मई**-2, 5, 9, 11, 12, 14, 19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, **जून**-6, 7, 10।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु ग्राह्य, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु नेष्ट
तुला–अप्रैल-22, 23, 27, 28, 29, 30, **मई**-2, 5, 7, 8, 11, 12, 14, **जुला.**-21, 22, 23, 24, 26, **अग.**-1, 4, **अक्टू.**-18, 25, 27, 31, **नवं.**-4, 5, 8, 16, 23, 27, **दिसं.**-4, 5, 7, 8, 13, **फर.**-17, 22, 24, 27, 28, **मार्च**-1, 2, 9, 10, 11।	14 अप्रै. से 15 मई तक, 15 जून से 16 जुला. तक, 18 अक्टू. से 16 दिसं., 13 फर. से 13 मार्च तक पूज्य	**तुला–अप्रैल**-22, 23, 27, 28, 29, 30, **मई**-2, 5, 7, 8, 11, 12, 14, 24, 27, 28, 29, 30, 31, **जून**-3, 6, 7, 10, 12, 13, **जुला.**-21, 22, 23, 24, 26, **अग.**-1, 4, **अक्टू.**-14, 18, 25, 27, 31, **नवं.**-4, 5, 8, 16, 23, 27, **दिसं.**-4, 5, 7, 8, 13, **जन.**-15, 16, 17, 21, 26, 27, 28, 29, **फर.**-2, 4, 5, 6, 12, 17, 22, 24, 27, 28, **मार्च**-1, 2, 9, 10, 11।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु ग्राह्य, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु शुद्ध
वृश्चिक–अप्रैल-21, 27, 28, 29, 30, **मई**-2, 5, 7, 8, 9, 11, 12, 14, 19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, **जून**-3, 6, 7, 10, 12, 13, **जुला.**-21, 22, 23, 24, 26, 31, **अग.**-4, **अक्टू.**-14, **नवं.**-17, 23, 26, **दिसं.**-5, 7, 8, 13, 14, **जन.**-15, 16, 17, 20, 21, 26, 27, 28, 29, **फरवरी**-2, 4, 5, 6, 12।	15 मई से 15 जून तक, 17 जुला. से 17 अग. तक, 17 नवं. से 15 जन. तक पूज्य	**वृश्चिक–अप्रैल**-21, 27, 28, 29, 30, **मई**-2, 5, 7, 8, 9, 11, 12, 14, 19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, **जून**-3, 6, 7, 10, 12, 13, **जुला.**-21, 22, 23, 24, 26, 31, **अग.**-4, **अक्टू.**-14, 18, 21, 25, 27, 31, **नवं.**-4, 5, 8, 16, 17, 23, 26, **दिसं.**-5, 7, 8, 13, 14, **जन.**-15, 16, 17, 20, 21, 26, 27, 28, 29, **फरवरी**-2, 4, 5, 6, 12, 16, 22, 24, 27, 28, **मार्च**-1, 2, 5, 6, 9, 10, 11।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु शुद्ध, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु पूज्य
धनु–अप्रैल-21, 22, 23, 27, 28, 29, 30, **मई**-2, 5, 7, 8, 9, 11, 12, 19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, **जून**-3, 6, 7, 12, 13, **अक्टू.**-14, 18, 21, 27, 31, **नवं.**-4, 5, 8, **जनवरी**-16, 17, 20, 21, 26, 27, 28, 29, **फरवरी**-2, 4, 5, 6, 16, 17, 22, 24, 27, 28, **मार्च**-1, 2, 5, 6, 9, 11।	14 अप्रै. से 15 मई तक, 15 जून से 16 जुला. तक, 16 दिसं. से 13 फर. तक पूज्य	**धनु–अप्रैल**-21, 22, 23, 27, 28, 29, 30, **मई**-2, 5, 7, 8, 9, 11, 12, 19, 20, 24, 27, 28, 29, 30, 31, **जून**-3, 6, 7, 12, 13, **जुला.**-21, 22, 23, 24, 26, 31, **अग.**-1, **अक्टू.**-14, 18, 21, 27, 31, **नवं.**-4, 5, 8, 16, 17, 23, 26, 27, **दिसं.**-4, 5, 7, 8, 13, 14, **जनवरी**-16, 17, 20, 21, 26, 27, 28, 29, **फरवरी**-2, 4, 5, 6, 16, 17, 22, 24, 27, 28, **मार्च**-1, 2, 5, 6, 9, 11।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु ग्राह्य, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु शुद्ध
मकर–मई-19, 20, 27, 28, 29, 30, 31, **जून**-3, 6, 7, 10, **जुलाई**-21, 22, 23, 24, 26, 31, **अग.**-1, 4, **अक्टू.**-14, 18, 21, 25, 31, **नवं.**-8, 16, 17, 26, 27, **दिसं.**-4, 5, 7, 8, 13, 14, **जनवरी**-15, 16, 19, 20, 21, 28, 29, **फर.**-2, 4, 5, 6, 12, 16, 17, 24, 27, 28, **मार्च**-1, 2, 5, 6, 9, 10।	15 मई से 15 जून तक, 17 जुला. से 17 अग. तक, 17 सितं. से 18 अक्टू., 15 जन. से 14 मार्च तक पूज्य	**मकर–अप्रैल**-21, 22, 23, 30, **मई**-2, 5, 7, 8, 9, 11, 12, 14, 19, 20, 27, 28, 29, 30, 31, **जून**-3, 6, 7, 10।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु 7 शुद्ध, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु नेष्ट
कुंभ–अप्रैल-22, 23, 27, 28, 29, **मई**-2, 5, 7, 8, 9, 11, 12, 13, **जुला.**-23, 24, 26, 31, **अग.**-1, 4, **अक्टू.**-18, 21, 25, 27, 31, **नवं.**-4, 5, 8, 16, 17, 23, 27, **दिसंबर**-7, 8, 13, 14, **फरवरी**-17, 22, 24, 27, 28, **मार्च**-1, 2, 5, 6, 9, 10, 11।	15 जून से 16 जुला. तक, 18 अक्टू. से 17 नवं., 13 फर. से 14 अप्रै. तक पूज्य	**कुंभ–अप्रैल**-22, 23, 27, 28, 29, **मई**-2, 5, 7, 8, 9, 11, 12, 14, 24, 29, 30, 31, **जून**-3, 6, 7, 10, 12, 13, **जुला.**-23, 24, 26, 31, **अग.**-1, 4, **अक्टू.**-14, 18, 21, 25, 27, 31, **नवं.**-4, 5, 8, 16, 17, 23, 27, **दिसंबर**-7, 8, 13, 14, **जन.**-15, 16, 17, 21, 26, 27, **फरवरी**-2, 4, 5, 6, 12, 17, 22, 24, 27, 28, **मार्च**-1, 2, 5, 6, 9, 10, 11।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु ग्राह्य, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु शुद्ध
मीन–अप्रैल-21, 27, 28, 29, 30, **मई**-5, 7, 8, 9, 11, 12, 14, 19, 20, 24, 27, 28, 29, **जून**-3, 6, 7, 10, 12, 13, **जुला.**-21, 22, 23, 26, 31, **अग.**-1, 4, **नवं.**-23, 26, **दिसं.**-4, 5, 13, 14, **जन.**-15, 16, 17, 19, 20, 26, 27, 28, 29, **फर.**-2, 4, 5, 6, 12।	13 मार्च से 15 मई तक, 17 जुला. से 18 अग. तक, 17 सितं. से 18 अक्टू. तक, 17 नवं. से 16 दिसं. तक पूज्य	**मीन–अप्रैल**-21, 27, 28, 29, 30, **मई**-5, 7, 8, 9, 11, 12, 14, 19, 20, 24, 27, 28, 29, **जून**-3, 6, 7, 10, 12, 13, **जुला.**-21, 22, 23, 26, 31, **अग.**-1, 4, **अक्टू.**-18, 21, 25, 27, **नवं.**-4, 5, 8, 16, 17, 23, 26, **दिसं.**-4, 5, 13, 14, **जन.**-15, 16, 17, 19, 20, 26, 27, 28, 29, **फर.**-2, 4, 5, 6, 12, 16, 22, 24, **मार्च**-1, 2, 5, 6, 9, 10, 11।	14 जुलाई तक उच्चस्थ गुरु शुद्ध, 14 जुलाई से वर्ष पर्यन्त गुरु पूज्य

वि. सं. 2072 के सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर, रवि आदि योगों का विवरण

निम्नांकित शुभ योगों में किये गये शुभ कार्य सिद्धि प्रद होते हैं किन्तु द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योगों में घटित होने वाले शुभ व अशुभ दोनों ही प्रकार के कार्य द्विगुण व त्रिगुण फलप्रद होते हैं। अतः इन में यदि मृत्यु हो तो विधिवत् शांति करवानी आवश्यक होती है। यहां सभी योगों का प्रारंभ व समाप्ति काल अंग्रेजी तारीख अनुसार भा.स्टै.टा. में दिया गया है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
22 मार्च	06:30	22 मार्च	28:24
24 "	06:25	24 "	26:02
25 "	06:24	25 "	30:23
27 "	28:05	27 "	30:20
29 "	06:19	29 "	30:18
30 "	06:18	30 "	08:45
31 "	06:17	31 "	11:40
08 अप्रै.	06:08	08 अप्रै.	30:07
09 "	06:07	09 "	06:52
12 "	07:11	12 "	30:02
13 "	06:13	13 "	28:47
17 "	19:49	17 "	29:57
19 "	05:56	19 "	15:09
21 "	05:54	21 "	11:57
22 "	05:53	22 "	29:52
24 "	12:06	24 "	29:50
26 "	05:49	26 "	15:54
06 मई	05:41	06 मई	12:41
10 "	03:38	10 "	11:57
11 "	05:37	11 "	10:56
14 "	28:35	14 "	29:35
15 "	05:35	15 "	29:34
18 "	21:56	18 "	29:33
20 "	05:32	20 "	20:46
21 "	21:09	21 "	29:31
22 "	05:31	22 "	22:15
30 "	16:31	30 "	29:28
01 जून	---	01 जून	29:28
06 "	19:21	06 "	29:27
11 "	17:32	11 "	29:27
12 "	10:59	12 "	29:27
15 "	06:27	15 "	29:27

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
17 जून	05:27	17 जून	05:41
18 "	06:02	18 "	29:28
19 "	05:28	19 "	06:58
24 "	19:28	24 "	29:29
27 "	05:29	27 "	26:50
29 "	05:30	29 "	28:31
03 जुला.	24:41	03 जुला.	29:32
04 "	05:32	04 "	22:56
07 "	17:46	07 "	29:34
09 "	05:34	09 "	29:35
10 "	05:35	10 "	14:09
13 "	05:36	13 "	29:37
16 "	05:38	16 "	29:38
22 "	05:41	22 "	29:41
25 "	05:42	25 "	11:25
27 "	05:43	27 "	13:51
31 "	09:54	31 "	29:46
01 अग.	05:46	01 अग.	07:41
04 "	05:48	04 "	22:38
06 "	05:49	06 "	19:40
08 "	18:26	08 "	29:51
10 "	05:51	10 "	19:01
13 "	05:53	13 "	23:14
19 "	05:56	19 "	13:22
28 "	06:01	28 "	18:08
01 सितं.	06:03	01 सितं.	07:14
01 "	28:49	01 "	30:03
05 "	06:05	05 "	24:10
13 "	13:21	13 "	30:09
18 "	27:58	18 "	30:11
27 "	20:54	27 "	30:16
29 "	15:01	29 "	30:17
03 अक्टू.	06:19	03 अक्टू.	07:28
11 "	06:23	11 "	30:24

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
16 अक्टू.	09:44	16 अक्टू.	30:27
18 "	13:13	18 "	30:28
25 "	07:43	25 "	29:02
27 "	06:33	27 "	23:26
28 "	20:50	28 "	30:35
02 नवं.	16:25	02 नवं.	30:38
03 "	17:53	03 "	30:39
08 "	06:42	08 "	30:43
12 "	15:43	12 "	30:46
13 "	06:46	13 "	17:26
15 "	06:47	15 "	19:39
22 "	06:53	22 "	14:29
24 "	06:55	24 "	09:59
25 "	07:39	25 "	30:56
29 "	25:32	29 "	31:00
30 "	07:00	30 "	26:23
01 दिसं.	07:00	01 दिसं.	28:02
06 "	07:04	06 "	15:31
09 "	22:57	09 "	31:07
10 "	07:07	10 "	24:24
13 "	25:57	13 "	31:10
14 "	25:44	14 "	31:10
20 "	19:46	20 "	31:14
22 "	16:30	22 "	31:15
27 "	11:20	27 "	31:17
28 "	07:17	28 "	11:50
29 "	07:17	29 "	13:03
06 जन.	07:27	06 जन.	31:19
07 "	07:19	07 "	08:57
10 "	09:42	10 "	31:20
11 "	08:58	11 "	31:20
15 "	26:33	15 "	31:19
17 "	07:19	17 "	23:58
19 "	"	19 "	21:46

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
20 जन.	07:19	20 जन.	31:18
22 "	20:00	22 "	"
24 "	07:17	24 "	20:44
03 फर.	07:13	03 फर.	18:09
07 "	07:10	07 "	18:30
08 "	07:09	08 "	17:04
12 "	09:07	12 "	31:06
15 "	27:09	15 "	31:03
17 "	07:02	17 "	26:15
18 "	26:24	18 "	31:01
19 "	07:01	19 "	26:59
27 "	18:28	27 "	30:52
29 "	24:18	29 "	30:50
05 मार्च	28:59	05 मार्च	30:45
10 "	18:21	10 "	30:59
11 "	06:39	11 "	30:38
14 "	09:27	14 "	30:34
16 "	06:33	16 "	07:47
17 "	07:52	17 "	30:31
18 "	06:31	18 "	08:34
23 "	19:08	23 "	30:24
26 "	06:22	26 "	28:13
28 "	07:06	28 "	30:18
02 अप्रै.	14:27	02 अप्रै.	30:12
07 "	06:08	07 "	30:07
08 "	06:09	08 "	23:23
11 "	06:04	11 "	30:03

अमृत सिद्धि योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
08 मार्च	06:43	08 मार्च	17:31
11 "	24:05	11 "	30:39
08 अप्रै.	06:08	08 अप्रै.	30:07
17 "	19:49	17 "	29:57
06 मई	04:41	06 मई	12:41
15 "	05:35	15 "	26:42

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
12 जून	05:27	12 जून	09:40
13 जुला.	12:53	13 जुला.	29:37
16 "	14:49	16 "	29:38
08 अग.	18:26	08 अग.	29:51
10 "	05:51	10 "	19:01
13 "	05:53	13 "	23:14
01 सितं.	28:49	01 सितं.	30:03
05 "	06:05	05 "	24:10
29 "	15:01	29 "	30:17
03 अक्टू.	06:19	03 अक्टू.	07:28
11 "	22:34	11 "	30:24
27 "	06:33	27 "	23:26
08 नवं.	06:42	08 नवं.	30:43
24 "	06:45	24 "	09:59
06 दिसं.	07:04	06 दिसं.	15:31
09 "	22:57	09 "	31:07
06 जन.	07:27	06 जन.	31:19
15 "	26:33	15 "	31:19
03 फर.	07:13	03 फर.	18:09
12 "	09:07	12 "	31:06
11 मार्च	06:39	11 मार्च	15:52
11 "	16:12	11 "	30:03

द्विपुष्कर योग

प्रारंभ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
17 मार्च	20:16	17 मार्च	25:55
05 अप्रै.	19:34	05 अप्रै.	26:02
19 मई	21:04	19 मई	29:32
30 "	05:28	30 "	16:31
01 अग.	13:08	01 अग.	29:19
03 अक्टू.	15:19	03 अक्टू.	30:19
04 "	06:19	04 "	07:13
30 जन.	17:05	30 जन.	31:14
31 "	07:14	31 "	10:52
15 मार्च	08:19	15 मार्च	11:12
03 अप्रै.	29:38	03 अप्रै.	30:11

त्रिपुष्कर योग

प्रारंभ ता.	मास	घं.	मि.	समाप्त ता.	मास	घं.	मि.
01	मार्च	14	02	01	मार्च	23	55
07	"	06	44	07	"	14	37
25	अप्रै.	05	50	25	अप्रै.	13	40
05	मई	09	54	05	मई	11	51
10	"	06	45	10	"	11	57
23	जून	16	22	23	जून	27	16
28	"	10	45	28	"	28	03
07	जुला.	17	10	07	जुला.	17	46
12	"	08	23	12	"	13	00
12	अग.	05	58	12	अग.	12	24
30	"	20	22	30	"	30	02
01	नवं.	28	50	01	नवं.	30	37
07	"	13	47	07	"	29	04
22	दिसं.	16	30	22	दिसं.	22	50
26	"	15	24	26	"	31	17
27	"	07	17	27	"	11	20
05	जन.	30	54	05	जन.	31	19
10	"	29	40	10	"	31	20
05	मार्च	17	11	05	मार्च	28	59

गुरु पुष्य योग

प्रारंभ ता.	मास	घं.	मि.	समाप्त ता.	मास	घं.	मि.
16	जुला.	14	49	16	जुला.	29	38
13	अग.	05	53	13	अग.	23	14

रवि पुष्य योग

प्रारंभ ता.	मास	घं.	मि.	समाप्त ता.	मास	घं.	मि.
29	मार्च	16	19	29	मार्च	30	18
26	अप्रै.	05	49	26	अप्रै.	15	54
29	नवं.	25	32	29	नवं.	31	00
27	दिसं.	11	20	27	दिसं.	31	17
24	जन.	07	17	24	जन.	20	44

रवि योग

प्रारंभ ता.	मास	घं.	मि.	समाप्त ता.	मास	घं.	मि.
22	मार्च	28	24	22	मार्च	30	26
23	"	06	26	23	"	26	52
24	"	26	02	24	"	30	24
25	"	06	24	25	"	25	57
27	"	08	05	27	"	30	20

प्रारंभ ता.	मास	घं.	मि.	समाप्त ता.	मास	घं.	मि.
28	मार्च	06	20	28	मार्च	30	19
29	"	06	19	29	"	30	18
30	"	06	18	30	"	08	45
02	अप्रै.	17	52	02	अप्रै.	30	13
03	"	06	13	03	"	20	51
10	"	07	30	10	"	30	04
11	"	06	04	11	"	07	36
21	"	11	57	21	"	29	53
22	"	05	53	22	"	11	15
23	"	11	17	23	"	29	51
24	"	05	51	24	"	12	06
26	"	15	54	26	"	29	48
27	"	05	48	27	"	29	47
28	"	05	47	28	"	29	47
28	"	05	47	28	"	29	47
02	मई	06	28	02	मई	29	43
03	"	05	43	03	"	08	44
09	"	12	40	09	"	29	38
10	"	05	38	10	"	11	57
20	"	20	46	20	"	29	32
21	"	05	32	21	"	21	09
22	"	22	15	22	"	29	31
23	"	05	31	23	"	24	03
27	"	08	25	27	"	29	29
28	"	05	29	28	"	"	
29	"	"		29	"	14	13
31	"	18	15	31	"	29	28
01	जून	05	28	01	जून	19	21
07	"	16	20	07	"	29	27
08	"	05	27	08	"	15	02
08	"	17	59	08	"	29	27
09	"	05	27	09	"	13	41
19	"	06	58	19	"	29	28
20	"	05	28	20	"	08	31
21	"	10	41	21	"	29	28
22	"	05	28	22	"	13	22
22	"	16	54	22	"	29	28
23	"	05	28	23	"	16	22
25	"	22	24	25	"	29	29
26	"	05	29	26	"	"	

प्रारंभ ता.	मास	घं.	मि.	समाप्त ता.	मास	घं.	मि.
27	जून	05	29	27	जून	26	50
29	"	28	31	29	"	29	30
30	"	05	30	30	"	28	19
07	जुला.	17	46	07	जुला.	29	34
08	"	05	34	08	"	16	20
18	"	18	32	18	"	29	39
19	"	05	39	19	"	21	07
20	"	16	00	20	"	24	03
21	"	27	11	21	"	29	41
22	"	05	41	22		"	
23	"	"		23	"	06	17
25	"	11	25	25	"	29	43
26	"	05	43	26	"	"	
27	"	"		27	"	13	51
29	"	13	08	29	"	29	45
30	"	05	45	30	"	11	46
05	अग.	20	57	05	अग.	29	49
06		05	49	06	.	19	40
17	"	07	03	17	"	12	34
18	"	10	12	18	"	29	56
19	"	05	56	19	"	13	22
20	"	16	24	20	"	29	57
21	"	05	57	21	"	19	05
23	"	22	36	23	"	29	59
24	"	05	59	24	"	"	
25	"	"		25	"	22	59
27	"	20	20	27	"	30	01
28	"	06	01	28	"	18	08
03	सितं.	25	20	03	सितं.	30	04
04	"	06	04	04	"	24	26
16	"	22	43	16	"	30	10
17	"	06	10	17	"	25	32
18	"	27	58	18	"	30	11
19	"	06	11	19	"	29	51
22	"	07	35	22	"	30	13
23	"	06	13	23	"	30	14
24	"	06	14	24	"	06	19
25	"	26	26	25	"	30	15
26	"	06	15	26	"	23	48

प्रारंभ ता.	मास	घं.	मि.	समाप्त ता.	मास	घं.	मि.
27	सितं.	17	54	27	सितं.	20	54
03	अक्टू.	07	28	03	अक्टू.	30	19
04	"	06	19	04	"	07	13
16	"	09	44	16	"	30	27
17	"	06	27	17	"	11	43
18	"	13	13	18	"	30	28
19	"	06	28	19	"	14	11
21	"	14	20	21	"	30	30
22	"	06	30	22	"	"	
23	"	"		23	"	12	03
25	"	29	02	25	"	30	32
26	"	06	32	26	"	26	13
01	नवं.	15	46	01	नवं.	30	37
02	"	06	37	02	"	16	25
14	"	18	45	14	"	30	47
15	"	06	47	15	"	19	39
16	"	20	09	16	"	30	49
17	"	06	49	17	"	20	14
19	"	19	09	19	"	30	51
20	"	06	51	20	"	07	33
20	"	17	59	20	"	30	52
21	"	06	52	21	"	30	53
22	"	06	53	22	"	14	29
24	"	09	59	24	"	30	56
25	"	06	56	25	"	07	39
30	"	26	23	30	"	31	00
01	दिसं.	07	00	01	दिसं.	28	02
13	"	25	57	13	"	31	10
14	"	07	10	14	"	25	44
15	"	25	15	15	"	31	11
16	"	07	11	16	"	14	52
16	"	24	33	16	"	31	12
17	"	07	12	17	"	23	38
19	"	21	14	19	"	31	13
20	"	07	13	20	"	31	14
21	"	07	14	21	"	18	10
23	"	14	53	23	"	31	15
24	"	07	15	24	"	13	25
31	"	17	31	31	"	31	18
01	जन.	07	18	01	जन.	20	28

प्रारंभ ता.	मास	घं.	मि.	समाप्त ता.	मास	घं.	मि.
12	जन.	30	40	12	जन.	31	20
13	"	07	20	13	"	29	19
14	"	27	56	14	"	31	19
15	"	07	19	15	"	26	33
17	"	23	58	17	"	31	19
18	"	07	19	18	"	"	
19	"	"		19	"	21	46
21	"	20	18	21	"	31	18
22	"	07	18	22	"	20	00
30	"	07	46	30	"	31	14
31	"	07	14	31	"	10	52
11	फर.	11	10	11	फर.	31	07
12	"	07	07	12	"	09	07
13	"	07	13	13	"	29	33
15	"	27	09	15	"	31	03
16	"	07	03	16	"	31	02
17	"	07	02	17	"	26	15
19	"	26	59	19	"	29	03
20	"	28	00	20	"	30	59
21	"	06	59	21	"	29	28
28	"	21	31	28	"	30	51
29	"	06	51	29	"	24	18
11	मार्च	15	42	11	मार्च	30	38
12	"	06	38	12	"	13	15
13	"	11	08	13	"	30	36
14	"	06	36	14	"	09	27
16	"	07	47	16	"	30	31
17	"	06	32	17	"	"	
18	"	06	31	18	"	30	30
19	"	06	30	19	"	09	49
21	"	13	47	21	"	30	26
22	"	06	26	22	"	16	19
29	"	09	41	29	"	30	17
30	"	06	17	30	"	11	50
31	"	06	43	31	"	13	24
09	अप्रै.	20	35	09	अप्रै.	30	05
10	"	06	05	10	"	18	08
11	"	16	12	11	"	30	03
12	"	06	03	12	"	14	55
15	"	15	37	15	"	29	58

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र-राशि संचार, वक्री-मार्गी एवं उदयास्तादि सं. 2072 वि.

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
20	मार्च	उभा.	2	मीन	29:20
25	"	"	3		06:39
28	"	"	4		15:26
31	"	रेवती	1		24:56
04	अप्रै.	"	2		09:30
07	"	"	3		18:47
10	"	"	4		28:13
14	"	अश्वि.	1	मेष	13:49
17	"	"	2		23:29
21	"	"	3		09:20
24	"	"	4		19:20
27	"	भरणी	1		29:34
01	मई	"	2		15:52
04	"	"	3		26:22
08	"	"	4		13:01
11	"	कृति.	1	वृष	23:49
15	"	"	2		10:40
18	"	"	3		21:35
21	"	"	4		08:40
25	"	रोहि.	1		14:56
29	"	"	2		07:13
01	जून	"	3		18:40
04	"	"	4		30:13
08	"	मृग.	1		17:53
11	"	"	2		29:30
15	"	"	3	मिथुन	17:15
18	"	"	4		28:57
22	"	आर्द्रा	1		16:48
25	"	"	2		28:37
29	"	"	3		16:31
02	जुला.	"	4		28:27
06	"	पुन.	1		16:26
10	"	"	2		16:19
13	"	"	3		16:11
16	"	"	4	कर्क	28:04
20	जुला.	पुष्य	1		15:53

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
23	जुला.	पुष्य	2		27:39
27	"	"	3		15:25
30	"	"	4		27:08
03	अग.	आश्ले.	1		14:49
06	"	"	2		26:22
10	"	"	3		13:49
13	"	"	4		25:10
17	"	मघा	1	सिंह	12:25
20	"	"	2		25:34
24	"	"	3		10:37
27	"	"	4		21:34
31	"	पूफा.	1		08:25
03	सितं.	"	2		19:07
06	"	"	3		29:39
10	"	"	4		16:02
13	"	उफा.	1		26:15
17	"	"	2	कन्या	12:20
20	"	"	3		22:16
24	"	"	4		08:24
27	"	हस्त	1		17:45
30	"	"	2		27:16
04	अक्टू.	"	3		12:36
07	"	"	4		21:46
11	"	चित्रा	1		06:46
14	"	"	2		15:35
18	"	"	3	तुला	24:16
21	"	"	4		08:48
24	"	स्वाति	1		17:13
27	"	"	2		25:30
31	"	"	3		09:38
03	नवं.	"	4		17:36
06	"	विशा.	1		25:26
10	"	"	2		09:06
13	"	"	3		16:38
16	"	"	4	वृश्चि.	24:04
20	"	अनु.	1		07:23

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
23	नवं.	अनु.	2		14:37
26	"	"	3		21:46
30	"	"	4		28:49
03	दिसं.	ज्ये.	1		11:47
06	"	"	2		18:38
09	"	"	3		25:23
13	"	"	4		08:04
16	"	मूल	1	धनु	14:42
19	"	"	2		21:18
22	"	"	3		27:54
26	"	"	4		10:27
29	"	पूषा.	1		17:00
01	जन.	"	2		23:30
04	"	"	3		29:59
08	"	"	4		12:28
11	"	उषा.	1		18:57
14	"	"	2	मकर	25:27
18	"	"	3		07:59
21	"	"	4		14:35
24	"	श्रव.	1		21:16
27	"	"	2		27:58
31	"	"	3		10:44
03	फर.	"	4		05:32
06	"	धनि.	1		24:26
10	"	"	2		07:22
13	"	"	3	कुंभ	14:26
16	"	"	4		21:35
19	"	शत.	1		28:54
23	"	"	2		12:18
26	"	"	3		19:51
29	"	"	4		27:29
04	मार्च	पूभा.	1		11:15
08	"	"	2		13:04
11	"	"	3		21:08
14	"	"	4	मीन	11:18
17	"	उभा.	1		19:37

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
20	मार्च	उभा.	2		28:07
24	"	"	3		12:47
27	"	"	4		21:35
31	"	रेवती	1		06:32
03	अप्रै.	"	2		15:38
06	"	"	3		24:51
10	"	"	4		10:14
13	"	अश्वि.	1	मेष	19:48

मंगल का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
06	मार्च	रेवती	1	मीन	06:35
10	"	"	2		15:54
14	"	"	3		25:45
19	"	"	4		12:02
23	"	अश्वि.	1	मेष	22:53
28	"	"	2		10:03
01	अप्रै.	"	3		21:50
06	"	"	4		10:10
10	"	भरणी	1		23:07
15	"	"	2		12:28
19	"	"	3		26:26
24	"	"	4		16:58
29	"	कृति.	1		08:12
03	मई	"	2	वृष	23:58
08	"	"	3		16:17
13	"	"	4		09:15
17	"	रोहि.	1		26:53
22	"	"	2		20:59
27	"	"	3		15:47
01	जून	"	4		11:13
06	"	मृग.	1		07:20
10	"	"	2		27:55
15	"	मृग.	3	मिथु.	25:12
20	"	"	4		22:59
25	"	आर्द्रा	1		21:26
30	"	"	2		20:27

मंगल का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
05	जुला.	आर्द्रा	3		20:04
10	"	"	4		20:14
15	"	पुन.	1		20:55
20	"	"	2		22:10
25	"	"	3		23:58
30	"	"	4	कर्क	26:18
04	अग.	पुष्य	1		29:10
10	"	"	2		08:33
15	"	"	3		12:22
20	"	"	4		16:41
25	"	आश्ले.	1		21:28
30	"	"	2		26:50
05	सितं.	"	3		08:37
10	"	"	4		14:49
15	"	मघा	1	सिंह	21:27
20	"	"	2		28:39
26	"	"	3		12:19
01	अक्टू.	"	4		20:27
06	"	पूफा.	1		29:00
12	"	"	2		14:07
17	"	"	3		23:44
23	"	"	4		09:56
28	"	उफा.	1		20:43
03	नवं.	"	2	कन्या	08:06
08	"	"	3		20:09
14	"	"	4		08:54
19	"	हस्त	1		22:27
25	"	"	2		12:57
30	"	"	3		28:21
06	दिसं.	"	4		20:45
12	"	चित्रा	1		14:20
18	"	"	2		09:23
23	"	"	3	तुला	29:57
29	"	"	4		28:16
04	जन.	स्वाति	1		28:34
10	"	"	2		31:16

मंगल का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
17	जन.	स्वाति	3		12:54
23	"	"	4		21:57
30	"	विशा.	1		11:10
05	फर.	"	2		29:24
12	"	"	3		30:31
20	"	"	4	वृश्चि.	16:53
28	"	अनु.	1		15:38
08	मार्च	"	2		09:28
18	"	"	3		14:47
01	अप्रै.	"	4		14:48

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
03	मार्च	धनि.	1	मकर	30:18
06	"	"	2		19:50
08	"	"	3	कुंभ	30:33
11	"	"	4		14:51
13	"	शत.	1		21:16
15	"	"	2		25:53
17	"	"	3		29:01
20	"	"	4		06:46
22	"	पूभा.	1		07:15
24	"	"	2		06:27
25	"	"	3		28:34
27	"	"	4	मीन	25:36
29	"	उभा.	1		21:39
31	"	"	2		16:40
02	अप्रै.	"	3		10:49
03	"	"	4		28:06
05	"	रेवती	1		20:40
07	"	"	2		12:27
08	"	"	3		27:39
10	"	"	4		18:21
12	"	अश्वि.	1	मेष	08:43
13	"	"	2		22:45
15	"	"	3		12:46
16	"	"	4		26:56

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
18	अप्रै.	भरणी	1		17:30
20	"	"	2		08:39
21	"	"	3		24:50
23	"	"	4		18:25
25	"	कृति.	1		13:57
27	"	"	2	वृष	12:02
29	"	"	3		13:57
01	मई	"	4		20:05
04	"	रोहि.	1		09:52
07	"	"	2		11:36
11	"	"	3		15:32
15	"	"	4		17:22
30	जून	मृग.	1		22:34
03	जुला.	"	2		08:00
05	"	"	3	मिथुन	12:21
07	"	"	4		12:46
09	"	आर्द्रा	1		10:17
10	"	"	2		29:25
12	"	"	3		22:46
14	"	"	4		14:44
16	"	पुन.	1		05:42
17	"	"	2		19:51
19	"	"	3		09:33
20	"	"	4	कर्क	23:05
22	"	पुष्य	1		12:32
23	"	"	2		26:08
25	"	"	3		16:06
27	"	"	4		06:33
28	"	आश्ले.	1		21:38
30	"	"	2		13:24
01	अग.	"	3		06:03
02	"	"	4		23:37
04	"	मघा	1	सिंह	18:15
06	"	"	2		13:56
08	"	"	3		10:51
10	"	"	4		09:04
12	"	पूफा.	1		08:41
14	"	"	2		09:45

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
16	अग.	पूफा.	3		12:29
18	"	"	4		17:03
20	"	उफा.	1		23:40
23	"	"	2	कन्या	08:38
25	"	"	3		20:24
28	"	"	4		11:42
31	"	हस्त	1		07:40
03	सितं.	"	2		10:23
06	"	"	3		24:29
11	"	"	4		17:47
23	"	उफा.	4		16:17
27	"	"	3		13:13
30	"	"	2		13:55
03	अक्टू.	"	1		17:09
15	"	हस्त	1		24:53
18	"	"	2		24:09
21	"	"	3		11:20
23	"	"	4		17:14
25	"	चित्रा	1		20:23
27	"	"	2		21:57
29	"	"	3	तुला	22:45
31	"	"	4		23:06
02	नवं.	स्वाति	1		23:24
04	"	"	2		23:44
06	"	"	3		24:16
08	"	"	4		25:04
10	"	विशा.	1		26:12
12	"	"	2		27:38
14	"	"	3		29:24
17	"	"	4	वृश्चि.	07:31
19	"	अनु.	1		09:55
21	"	"	2		12:34
23	"	"	3		15:28
25	"	"	4		18:35
27	"	ज्ये.	1		21:52
29	"	"	2		25:15
01	दिसं.	"	3		28:46
04	"	"	4		08:21

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
06	दिसं.	मूल	1	धनु	12:02
08	"	"	2		15:47
10	"	"	3		19:42
12	"	"	4		23:49
14	"	पूषा.	1		28:19
17	"	"	2		09:22
19	"	"	3		15:21
21	"	"	4		22:52
24	"	उषा.	1		09:00
26	"	"	2	मकर	23:49
30	"	"	3		24:54
03	जन.	"	4		23:20
07	"	उषा.	3		12:36
11	"	"	2		22:36
14	"	"	1		15:09
16	"	पूषा.	4		28:40
20	"	"	3		07:07
01	फर.	"	4		19:04
05	"	उषा.	1	धनु	20:29
09	"	"	2	मकर	27:09
11	"	"	3		25:21
14	"	"	4		18:30
17	"	श्रव.	1		08:10
19	"	"	2		19:11
21	"	"	3		28:07
24	"	"	4		11:18
26	"	धनि.	1		16:58
28	"	"	2		21:12
02	मार्च	"	3	कुंभ	24:14
03	"	"	4		26:02
05	"	शत.	1		26:46
07	"	"	2		26:24
09	"	"	3		25:03
11	"	"	4		22:44
13	"	पूभा.	1		19:32
15	"	"	2		15:22
17	"	"	3		10:23
18	"	"	4	मीन	28:39

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
20	मार्च	उभा.	1		22:09
22	"	"	2		14:56
24	"	"	3		07:11
25	"	"	4		22:56
27	"	रेवती	1		14:21
28	"	"	2		29:29
30	"	"	3		20:37
01	अप्रै.	"	4		11:57
02	"	अश्वि.	1	मेष	27:46
04	"	"	2		20:21
06	"	"	3		14:13
08	"	"	4		09:56
10	"	भरणी	1		08:22
12	"	"	2		10:41
14	"	"	3		19:01
17	"	"	4		13:22
20	"	कृति.	1		28:51

गुरु का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
14	जुला.	मघा	1	सिंह	06:36
30	"	"	2		12:42
14	अग.	"	3		27:15
30	"	"	4		11:33
14	सितं.	पूफा.	1		21:56
30	"	"	2		18:13
17	अक्टू.	"	3		13:47
05	नवं.	"	4		08:09
28	"	उफा.	1	कन्या	21:52
17	फर.	पूफा.	4	सिंह	23:22
15	मार्च	"	3		12:39
16	अप्रै.	"	2		08:45

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
12	मार्च	अश्वि.	1	मेष	18:10
15	"	"	2		12:11
17	"	"	3		30:24
20	"	"	4		24:48
23	"	भरणी	1		19:25

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
26	मार्च	भरणी	2		14:10
29	"	"	3		09:11
31	"	"	4		28:27
03	अप्रै.	कृति.	1		24:00
06	"	"	2	वृष	19:46
09	"	"	3		15:47
12	"	"	4		12:07
15	"	रोहि.	1		08:49
17	"	"	2		29:44
20	"	"	3		27:04
23	"	"	4		24:46
26	"	मृग.	1		22:55
29	"	"	2		21:28
02	मई	"	3	मिथु.	20:36
05	"	"	4		20:11
08	"	आर्द्रा	1		20:28
11	"	"	2		21:18
14	"	"	3		22:53
17	"	"	4		25:14
20	"	पुन.	1		28:32
24	"	"	2		08:44
27	"	"	3		14:09
30	"	"	4	कर्क	20:58
02	जून	पुष्य	1		29:19
06	"	"	2		15:28
09	"	"	3		27:52
13	"	"	4		18:57
17	"	आश्ले.	1		13:26
21	"	"	2		12:09
25	"	"	3		16:52
30	"	"	4		06:17
05	जुला.	मघा	1	सिंह	09:51
11	"	"	2		17:17
24	"	"	3		08:19
26	"	"	2		21:23
07	अग.	"	1		18:29
13	"	आश्ले.	4	कर्क	17:34
18	"	"	3		27:16
24	"	"	2		29:19

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
19	सितं.	आश्ले.	3		14:27
25	"	"	4		24:40
30	"	मघा	1	सिंह	28:13
05	अक्टू.	"	2		16:58
09	"	"	3		20:36
13	"	"	4		18:06
17	"	पूफा.	1		11:05
20	"	"	2		24:38
24	"	"	3		11:25
27	"	"	4		19:56
30	"	उफा.	1		26:32
03	नवं.	"	2	कन्या	07:31
06	"	"	3		11:07
09	"	"	4		13:33
12	"	हस्त	1		14:58
15	"	"	2		15:28
18	"	"	3		15:12
21	"	"	4		14:14
24	"	चित्रा	1		12:39
27	"	"	2		10:28
30	"	"	3	तुला	07:48
02	दिसं.	"	4		28:36
05	"	स्वाति	1		25:02
08	"	"	2		21:03
11	"	"	3		16:44
14	"	"	4		12:08
17	"	विशा.	1		07:17
19	"	"	2		26:08
22	"	"	3		20:48
25	"	"	4	वृश्चि.	15:16
28	"	अनु.	1		09:31
30	"	"	2		27:34
02	जन.	"	3		21:28
05	"	"	4	वृश्चि.	15:13
08	"	ज्ये.	1		08:53
10	"	"	2		26:21
13	"	"	3		19:46
16	"	"	4		13:06
18	"	मूल	1	धनु	30:23

शेष पृष्ठ 248 पर

वि. सं. 2072 मध्ये शनि की साढ़ेसाती व ढैया विचार

विक्रम संवत् 2072 के प्रारंभ में शनि वक्री वृश्चिक राशि में अनुराधा नक्षत्र में भ्रमण करेगा। इस वर्ष यह अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र का भोग करेगा। 15 मार्च, 2015 से वक्री हुआ 3 अगस्त, 2015 को मार्गी होगा। इसी वर्ष 12 नवंबर को पश्चिम में अस्त होकर 17 दिसंबर को पूरब में उदय होगा।

शनि के राशि भ्रमण के अनुसार तुला, वृश्चिक, धनु राशिवालों को शनि को साढ़ेसाती रहेगी तथा मेष और सिंह राशि वालों को ढैया रहेगा। लोक वार्ता के अनुसार साढ़ेसाती का फल अनुकूल नहीं रहता, यह धारणा अतिप्राचीन काल से साधारण जनमानस में भय सघन संत्रास व आतंक स्थापित किए है।

ज्योतिष शास्त्रानुसार– द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः। सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्॥

शनि जन्मराशि के 12,1,2 के स्थान पर हो तो उसको शनि की साढ़ेसाती होती है। इसी प्रकार ढैया या लघु कल्याणी के नाम से ढाई वर्ष तक रहने वाली शनि की दशा होती है।

कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे।

इस वर्ष मेष और वृश्चिक राशि को शनि का ढैया रहेगा।

जन्म राशि के गोचर से शनि	मेष 08 ढैया	कन्या	कुंभ	स्वर्णपाद-फल श्रम संघर्ष से लाभ
जन्म राशि के गोचर से शनि	मिथुन	तुला 02 पैरों उतरती ढैया	मकर	रजतपाद-फल लाभ, सफलता
जन्म राशि के गोचर से शनि	वृष	सिंह 04 ढैया	धनु 12 सिर चढ़ती ढैया	ताम्रपाद-फल लक्ष्मी प्राप्ति
जन्म राशि के गोचर से शनि	कर्क	वृश्चिक 01 हृदय पर ढैया	मीन	लौहपाद-फल दुख, कलह

वृश्चिक राशिगत शनि का गोचर फल

मेष राशिः इस वर्ष आप शनि के ढैया से ग्रसित रहेंगे। आपकी राशि पर शनि वृश्चिक राशि का होकर स्वर्णपाद का होकर विशेष प्रभाव डालेगा। शनि का राशि परिवर्तन इस वर्ष आपके लिए अशुभ फल देने वाला है। गुरु की पंचम दृष्टि का न्यून लाभ अवश्य मिलेगा। विवादों से जरा दूरी बनाए रखें। आरोग्य को लेकर चिंता का सामना करना पड़ सकता है। उदर विकार व चोट आदि की संभावना है। अनावश्यक लापरवाही से बचें। आप इस वर्ष मानसिक एवं आर्थिक चिंताओं से भी परेशान रहेंगे। अतः आर्थिक फैसलों में जल्दबाजी व असावधानी आपको मुश्किल में डाल सकती है। आलस्य व निद्रा पर नियंत्रण रखें तो व्यावसायिक क्षेत्र में लाभार्जन के योग बनते हैं। आप हनुमान जी की आराधना पर विशेष ध्यान दें। शनिवार को पीपल की पूजा से भी लाभ प्राप्त होगा।

वृष राशिःआपकी राशि पर शनि वृश्चिक राशि का होकर ताम्रपाद का होकर प्रभाव डालेगा। गुरु की दृष्टि का लाभ मिलेगा। आर्थिक संबंधों में मजबूती आएगी परंतु अवरोध का सामना भी करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। वैवाहिक जीवन में प्रेम की अधिकता होगी, संबंधों में मधुरता रहेगी। भाग्योदय का भी समय है कार्यों में अनुकूलता रहेगी। इस समय में आप संतान की तरफ से जरा चिंतित रहेंगे। संपत्ति के विवादों से छुटकारा मिलेगा। विद्यार्थियों को सफलता हासिल करने हेतु विशेष प्रयत्नों की आवश्यकता है। वृष राशि वाले मंलगवार को हनुमान जी को सिंदूर अर्पण करें तो विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

मिथुन राशिः इस वर्ष शनि आपकी राशि पर रजतपाद से प्रभाव डालेगा। चांदी के पाया से शनि का आगमन आपको आर्थिक मजबूती व कार्यों में सिद्धि देता है। अष्टमेश शनि होने से कार्यों में सफलता हेतु विशेष प्रयत्न आवश्यक होंगे। रोगस्थ शनि का प्रभाव होने से रोगों की अधिकता होगी। आरोग्य हेतु सजग रहें। भौम व शनि का योग होने से अकारण ही विवाद की स्थिति उत्पन्न होगी। जिसका प्रभाव आपके कर्म-व्यापार पर भी पड़ेगा। समाज में प्रतिष्ठा का आपको लाभ मिलेगा। पाप ग्रहों के प्रभाव से आपकी अनुकूलताएं भी कम होंगी। छात्रों हेतु शनि का प्रभाव सम रहेगा, प्रयासों के अनुरूप सफलता मिलेगी।

कर्क राशिः इस वर्ष आप ढैया के प्रभाव से मुक्त हो जाएंगे किंतु शनि के लौहे के पाये पर वृश्चिक राशि में आने का आपकी राशि पर न्यून प्रभाव पड़ने की संभावना है। अष्टमेश शनि संतान पक्ष के स्वास्थ्य की चिंता देता है। गुरु का दृष्टि प्रभाव अच्छा है किंतु कार्यसिद्धि हेतु विशेष प्रयत्न की आवश्यकता है। जीवन में कुछ परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। सामाजिक स्थितियों में भी तनावग्रस्त रहेंगे। धनोपार्जन हेतु आपको विशेष रूप से परिश्रम करने की आवश्यकता होगी, व्यापार में भी अकस्मात हानि संभव है। नौकरी आदि में भी विशेष सतर्कता रखनी चाहिए। विद्यार्थी वर्ग को भी अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही तैयारी करनी चाहिए। योजनाएं तो बनेंगी किंतु उनका सफल होने की संभावनाएं कम ही हैं।

सिंह राशिः इस वर्ष आपकी राशि शनि के ढैया के प्रभाव में रहेगी। शनि इस वर्ष तांबे के पाए पर आपकी राशि पर प्रभावी रहेगा। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक स्थायित्व व कार्यों में सफलता रहेगी। रोजमर्रा के कार्यों को बड़ी सहजता के साथ करेंगे। वैवाहिक जीवन सुखमय व प्रसन्न रहेगा। बाल-बच्चों के भविष्य की थोड़ी चिंता जरूर होगी। ढैया के प्रभाव के कारण मानसिक तनाव से ग्रस्त रहेंगे। औद्योगिक सफलताओं में कर्ज आदि से दूरी ही लाभकारी होगी। उच्चवर्गीय जनों के संपर्क का लाभ भी मिल सकता है। 3 अगस्त 2015 को शनि मार्गी होने से रुके हुए काम बनेंगे। मन के सोचे हुए कामों में सफलता होने से मन में प्रसन्नता का संचार होगा।

कन्या राशिः शनि के वृश्चिक राशि में आगमन के साथ ही आप शनि की साढ़ेसाती से मुक्त हो जाएंगे। सोने के पाये में शनि का आगमन भी शुभ फल सूचक है। गुरु की दृष्टि का प्रभाव भी अच्छा रहेगा। आरोग्य के साथ ही व्यावसायिक लाभ की संभावनाएं अत्युत्तम होंगी। बंद पड़े हुए कार्यों में गतिशीलता आएगी। मानसिक तनाव से भी छुटकारा पाएंगे। विरोधियों पर भी आप विजय पाएंगे। प्रयासों में कमी ना रखें वरना बनते हुए काम पुनः बिगड़ने प्रारंभ हो जाएंगे। स्वजनों से भी आत्मीय भाव की प्राप्ति होगी। कुटुम्ब में भी सुख व प्रसन्नताएं रहेंगी, व मंगल कार्यों में अपने आप को सम्मिलित कर सौभाग्य की प्राप्ति करेंगे। छात्रों को बिना परिश्रम के सफलता की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

तुला राशिः आपकी राशि को वृश्चिक में शनि दूसरे स्थान पर इस वर्ष साढ़ेसाती के अंतिम ढैया में रहेगा। शनि चांदी के पाया में आपकी राशि को शुभ फल देने वाला रहेगा। सामान्यतः शनि आपकी राशि के लिए कारक होने के कारण सर्वतोमुखी सफलता का मार्ग प्रशस्त करने वाला है। शनि पर गुरु की दृष्टि का प्रभाव अच्छा न होने के कारण बनते हुए कार्य बिगड़ते हुए नजर आते हैं। मानसिक क्लेश उत्पन्न होने के कारण न तो पारिवारिक स्थिति में सुधार होता है और न ही व्यापारिक दृष्टिकोण से कोई विशेष लाभ की स्थिति में कोई लाभ दिखाई देता है। परंतु कुटुम्ब में सौहार्द्र बना रहता है। नौकरी पेशा वाले अपने कार्य में लाभार्जन प्राप्त करने में सफल रहते हैं। तुला राशि वालों को भूमि आदि के विवादों में इस समय विशेष फायदा मिलेगा। पठन-पाठनार्थियों को इस समय में विशेष लाभ प्राप्त होगा। आप शनिवार को शनि मंदिर में सरसों का तेल दान करें तो विशेष लाभ प्राप्त करेंगे।

वृश्चिक राशिः इस वर्ष शनि की साढ़ेसाती के मध्य ढैया के प्रभाव में आप रहेंगे। लौहे के पाया पर शनि का आपकी राशि में आगमन कष्टकारी व बाधाकारक होगा। गुरु की दृष्टि का प्रभाव भी विशेष कारक नहीं रहेगा। शनि-मंगल का योग कार्यसिद्धि में सहायक होगा। आपको आरोग्य के प्रति सजग रहना चाहिए। आप पेट संबंधी बाधाओं से परेशान रह सकते हैं। व्यापारिक लाभ हेतु आपको अत्यन्त मेहनत करने की जरूरत है। आप पारिवारिक जीवन का संपूर्ण आनन्द उठाएंगे। लड़ाई-झगड़ों से दूरी बनाए रखें। नौकरी करने वाले अपने उच्चाधिकारियों से संबंध मधुर बनाएं अन्यथा परेशानियों में पड़ सकते हैं। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह वर्ष सामान्य फल देने वाला ही होगा। आप भाग्य के ऊपर ही आश्रित न रहकर परिश्रम पर बल देवें।

धनु राशिः इस वर्ष शनि का वृश्चिक राशि में आपकी राशि पर परिवर्तित होना विशेष लाभकारी नहीं होगा। आपकी राशि पर शनि का तांबे के पाया पर आगमन शुभ है। गुरु की दृष्टि भी शुभ सूचक है। यह समय आपको शारीरिक मानसिक रूप से पीड़ा देने वाला है। दैनिक कार्यों की सिद्धि हेतु भी विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। दृढ़ निश्चय से असाध्य कार्यों को भी आसानी से पूरा कर पाने में सक्षम होंगे। विद्यार्थी वर्ग को प्रतियोगी परीक्षाओं में मेहनत व लगन के द्वारा अप्रत्याशित सफलता। भूमि संबंधी विवाद सुलझने की बजाय ज्यादा उलझने के योग हैं व राज के संदर्भित बाधाओं में आप पड़ सकते हैं। कुटुंब में सामंजस्य बनाए रखने हेतु कई कठोर फैसले करने पड़ सकते हैं। शनिदेव की शांति के लिए शनिवार को पीपल के वृक्ष की पूजा करें।

मकर राशिः आपकी राशि का स्वामी शनि वृश्चिक राशि का होकर सुख में चांदी के पाया पर प्रवेश करेगा। इस समय शनि कई शुभ सूचनाएं लेकर आएंगे। मानसिक व शारीरिक बाधाओं से यह समय मुक्ति दिलाने वाला है। व्यापारिक दृष्टि से समय संघर्षपूर्ण रहेगा। सामाजिक क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों के लिए समय नया अवसर लेकर आने वाला है। नौकरी वालों को इस समय में प्रमोशन मिल सकता है। राजनीति के क्षेत्र से जुड़े लोगों को समय काफी लाभदायी रहेगा। कुटुम्ब में सुख व प्रसन्नता का संचार होगा। शैक्षणिक क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों के लिए परिस्थितियां अनुकूल रहेंगी।

कुंभ राशिः इस समय में आपकी राशि में शनि सोने के पाया में मिश्रित फल देने वाले हैं। शनि पर गुरु की दृष्टि प्रभाव भी सार्थक परिणाम देने वाला है। व्यापारिक दृष्टि से शनि का प्रभाव भी अनुकूल फल देने वाला है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिवारजनों से संबंधों में सुधार। मानसिक तनाव दूर होकर मन की स्थितियां अनुकूल होंगी। राजनीतिक व्यक्तियों के लिए समय विशेष लाभप्रद रहेगा। उनके प्रभाव में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। नौकरी वालों के लिए समय नए अवसर लेकर आएगा। बड़े लोगों से संपर्क का लाभ उठाएंगे। मंगल व शनि के योग में आपको अत्यन्त प्रभावी व्यक्तित्व प्राप्त होगा। पंचमुखी हनुमान कवच का जाप करें तो कल्याण होगा।

मीन राशिः इस समय शनि का आपकी राशि में लौहे के पाया में प्रवेश अच्छा नहीं रहेगा। समय समस्याओं को बढ़ाने वाला व बाधाकारक रहेगा। शनि पर गुरु की दृष्टि का प्रभाव मिश्रित होगा जो शारीरिक कष्ट व व्यापारिक दृष्टि से नुकसान को बढ़ाने वाला होगा। वर्ष मध्य में व्यापार के कुछ उत्तम योग बनेंगे। व्यापार में अधिक लाभ हेतु ब्याज पर पैसा न लेवें यह नुकसानप्रद हो सकता है। नौकरी वालों के लिए समय सतर्कता से भरा व चुनौतीपूर्ण रहेगा। विद्यार्थियों को अपेक्षित परिणाम को प्राप्त करने के लिए परिश्रम की आवश्यकता है। पारिवारिक जीवन में थोड़े से परिश्रम से जीवन को सुखमय बना सकते हैं। शनिवार को शनि मंदिर में पूजा से विशेष लाभ।

श्री पुरुषोत्तम मास संवत् 2072 (16 जून से 16 जुलाई 2015 ई.)

एकस्मिन् वर्षे आधियुगे अधिकः द्वयो सति पूर्वाधिमासौ। प्रथमोधि मासः प्राकृतः यज्ञेय अधिक वन्नः त्याज।। असंक्रांति यासो अधिक मासौ स्पुट स्यात्। द्वि संक्रांति मास क्षयरोख्यः कदादित।। भास्कराचार्य।। ज्योतिष की चन्द्र गणना से जब सूर्य की एक ही संक्रांति में दो अमावस्याएं आ जाती हैं। तब दूसरी अमावस्या वाले अमान्त महीने की वृद्धि होकर वह अधिक मास बन जाता है। भविष्य पुराण के कथन अनुसार चन्द्र और सौर मास के अन्तर को ही अधिक मास कहा जाता है।

कहा जाता है कि एक समय दुखी होकर मलमास ने भगवान् विष्णु से प्रार्थना की थी कि हे नाथ! क्या आप इस अभागे की पीड़ा को जानते हो? लव, क्षण, मुहूर्त, पक्ष, दिन, रात्रि, नक्षत्र और राशियां सभी अपने-अपने स्वामी अनुसार निर्भय होकर के विचरण करते हैं। हे नाथ! मुझ अभागे का नाम तो है लेकिन न मेरा कोई स्वामी है और हे नाथ! यहां तक कि विवाह, उद्यापन, मुहूर्त, शुभ कार्य मुझमें नहीं किए जाते हैं। इसलिए हे स्वामी! मैं मरना चाहता हूं। मलीय मास की पीड़ा को समझकर भगवान् विष्णु ने कहा हे! मल के रूप में निंदित मास आज से मैं तुझे अपना नाम प्रदान करता हूं जो लोग मेरे नाम वाले अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) में जप, तप, ध्यान, पूजा, ईश्वर-अराधना व दान-पुण्य करेंगे तो उन्हें पृथ्वी लोक में सुख भोगने के पश्चात् विष्णु लोक की प्राप्ति होगी। इसलिए तब से आज तक अधिक मास में श्री वृज गिरिराज गोवर्धन परिक्रमा व वृज चौरासी की परिक्रमा, श्रीमद्भागवत् सप्ताह दान पुण्य का विशेष महत्त्व है।

श्री पुरुषोत्तम मास निर्णय-सन् 2015 ई. में आषाढ़ नामक पुरुषोत्तम मास है क्योंकि 15 जून 2015 ई. सोमवार को 17115 से सूर्य की मिथुन संक्रांति है। अमावस्या 16 जून 2015 ई. मंगलवार को है। द्वितीय अमावस्या 16 जुलाई 2015 ई. गुरुवार को है। सूर्य नारायण की 16 जुलाई 2015 ई. से ही कर्क संक्रांति का मान होगा। इस प्रकार सूर्य की एक राशि संक्रांति में दो आषाढ़ मास बन गए। अतः आषाढ़ नाम अधिक मास, पुरुषोत्तम मास 16 जून से 16 जुलाई 2015 ई. गुरुवार तक रहेगा। लेकिन भारतवर्ष में महीने की गणना चन्द्रमा के हिसाब से की जाती है। परंतु मलमास व क्षय मास में उपाय द्वारा सूर्य का हिसाब ठीक कर लिया जाता है। लेकिन ऐसी नहीं होता कि मुस्लिम, इस्लामी धर्म वर्ष में प्रति वर्ष पांच-पांच दिन साल की गणना में ही न लिए जाएं और एक हजार वर्ष में 137 साल ही गायब हो जाएं और त्यौहार भी हर मौसम में आ जाएं।

अधिक आषाढ़ फल-"कृषि भयंत्वाषाढ़ युग्मेतथा।।" अर्थात्-वर्षा की विचित्रता कहीं वर्षा कम तो कहीं अधिक व कहीं वर्षा विलम्ब से फसल हानि व खेती को नुकसान।

अधिक मास में करने योग्य कार्य-तीर्थ श्राद्धदर्श श्राद्ध प्रेत श्राद्ध सपिण्डनम्। चन्द्र, सूर्य ग्रहे स्नानं मल मासे विधीयते।। -मनु स्मृतौ।। श्री पुरुषोत्तम में प्राण घातक रोगादि की निवृत्ति के रुद्र, जप आदि अनुष्ठान कपिल षष्ठी आदि व्रत, अनावृष्टि धारण के लिए पुरश्च ग्रहण संबंधी श्राद्ध, दान, जप, तप, पुत्र जन्म के कार्य, पितृमरण के श्राद्धादि पुंसवन से सीमांस जैसे संस्कार अवधि समाप्त करने के पूर्वोत और सीमांत जैसे संस्कार नियत आवाही जैसे संस्कार नियत अवाही करने के पूर्वगत प्रयोग आदि किए जा सकते हैं।

अधिक मास में ना करने योग्य कार्य-अगन्याधेय प्रतिष्ठा च यज्ञो दान व्रतानि च। वेदव्रत, वषोत्सर्ग, चूड़ा करण मेखला ।। गमनं देव तीर्थानां विवाहाभिषेचम्। यानं च गृह कर्माणि मल मासे विवर्जयेते।। गर्ग संहिता। **अर्थात्-**पुरुषोत्तम मास में कूप निर्माण, वावली, बाग, बगीचा लगाना, देव प्रतिष्ठा व किसी प्रकार के प्रायोजन, व्रत, उत्सव, नील वृष का विवाह व ऋषि पूजा, तीर्थ यात्रा, संन्यास, कुंआ पूजन, गृह प्रवेश, निर्माण व किसी भी प्रकार के व्यापार का श्री गणेश, निंदित अन्न का भोजन व नशीले पदार्थों का सेवन मल मास, श्री पुरुषोत्तम मास नहीं करना चाहिए।

विशेष कर्त्तव्य-गोवर्धनं धर्म वंदे गोपालं धर्म गोप रूपिणा। गोकलोत्सव मीशानं गोविन्द गोपिका प्रियः।। विशेष रूप से श्री पुरुषोत्तम में आषाढ़ शुक्ल 1 श्री संवत् 2072, 17 जून 2015 ई. बुधवार से अधिक आषाढ़ कृष्ण 30 संवत् 2072, ता. 16 जुलाई 2015 ई. गुरुवार तक श्री भगवान् पुरुषोत्तम, श्री कृष्ण का ध्यान, जप, पूजन, कीर्तन ध्यान, श्रीमद्भागवत सप्ताह श्रवण, साधु सेवा, अनाथ, विधवा, गौ सेवा व श्री वृज चौरासी कोस परिक्रमा, श्री गोवर्धन गिरिराज जी की परिक्रमा निष्काम भाव से करेंवृज चौरासी कोस की परिक्रमा व परिक्रमार्थियों की सेवा जल, अन्न, फल दान हेतु हमारे यहां से भी व्यवस्था है।

कर्क सिंह राशिगत गुरु का शुभाशुभ गोचर फल सं. 2072 वि.

गुरु ता. 19 जून 2014 ई. प्रातः अपनी उच्च राशि कर्क में प्रवेश किया है। कर्क राशि से गोचर की अवधि में गुरु 10 जुलाई 2014 ई. रात्रि से 09 अगस्त 2014 ई. रात्रि तक अस्त रहेंगे तथा ता. 09 दिसं. 2014 ई. से ता. 08 अप्रैल 2015 ई. तक वक्री रहेंगे। नक्षत्रचारवश गुरु का गोचर कर्क राशि में प्रवेश के समय पुनर्वसु नक्षत्र है। ता. 04 जुलाई 2014 ई. से गुरु का गोचर पुष्य नक्षत्र से ता. 03 सितं. 2014 ई. से आश्लेषा में रहेगा। ता. 14 जुलाई 2015 ई. में गुरु सिंह राशि मघा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।

कर्क एवं सिंह राशिगत गुरु का शुभाशुभ फल

गुरु का गोचर फल—वर्षारंभ में गुरु कर्क राशि में विचरण करते हुए ता. 14 जुलाई 2015 ई. को यह सिंह राशि में विचरण करेंगे। फलतः कर्क एवं सिंह राशि का गुरु का गोचर फल विवेचित है।

मेष—इस राशि में गुरु चतुर्थ एवं वर्ष के उत्तरार्ध में पंचम भाव में विचरण करेंगे। जिससे सुख-दुख दोनों का अनुभव होगा। अपने से बड़ों के आशीर्वाद, अनुग्रह से सफलता प्राप्त होगी। घर में मंगल कार्य होंगे। वर्ष के उत्तरार्ध में व्यर्थ वाद-विवाद, धन की हानि, संतान के अकार्यों से कानूनी विवाद में धन व्यय।

वृष—गुरु तृतीय होकर पुनः चतुर्थ हो जाएंगे। जिससे भाई परिवार में वाद-विवाद, विश्वास घात, धन का अपव्यय। परंतु चतुर्थ होकर सभी परिस्थितियों में सुधार करेगा। शिक्षा-परीक्षा में सफलता, मंगल कार्यों में सफलता तथा आरोग्य, सुख-शांति बनी रह सकती है।

मिथुन—आपकी राशि पर गुरु द्वितीय चलकर फिर तृतीय हो जाए, फलतः गुरु का प्रवेश रजत पाद से शुभफल प्रद है। इससे कार्य व्यवसाय में सुधार जारी रहेगा। गृह भूमि, वाहन का क्रय। अल्पकालिक स्थान परिवर्तन। परंतु गुरु के तृतीय होते ही आंख बाधा, स्थान परिवर्तन, कार्य में विफलता, धन हानि हो सकती है।

कर्क—गुरु जन्मस्थ पूज्य है। जिससे आरोग्य लाभ, सुख, यश, धनागम में सुधार, चल-अचल संपत्ति की प्राप्ति, शिक्षा-परीक्षा में सफलता। परन्तु द्वितीय स्थान गुरु होने से पारिवारिक अवरोध, धन हानि, चुगल खोरी, अनावश्यक वाद-विवाद, स्त्री-संतान कष्ट हो सकता है।

सिंह—आपकी राशि पर गुरु बारहवें अशुभ कारक है। अतः विघ्न बाधाएं, आकस्मिक धन हानि, व्यर्थ धन अपव्यय, भौतिक परपंच कार्य, व्यवसाय में ससंकित मनःस्थिति रहेगी। पुनः गुरु लग्नस्थ होने से सभी परिस्थितियों में सुधार, पुत्रधन, वाहन प्राप्ति।

कन्या—आपकी राशि पर ग्यारहवें गुरु शुभफल प्रद हैं। जिस बुद्धि कुशलता से बाधाएं दूर होकर सर्वत्र प्रभाव वृद्धि होगी। शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिल सकती है। पुनः गुरु बारहवां होने से व्यर्थ खर्च में वृद्धि होगी। घरेलू सुख-शांति में कमी।

तुला—आपकी राशि पर गुरु दशमस्थ होकर पूज्य हैं। फलतः इस राशि में गुरु की स्थिति शुभा-शुभ फलप्रद है। जिससे लोक अपवाद, दुर्वचन, भय, अनियमित दिनचर्या, मानसिक अशांति, परंतु सिंहस्थ गुरु के प्रवेश से परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार। व्यवहारिक अनुकूलता, आरोग्य लाभ।

वृश्चिक—आपकी राशि में भाग्यस्थ गुरु शुभ फलप्रद है। जिससे कार्य व्यवसाय में धन की प्राप्ति, नव निर्माण कार्यों में सफलता, उच्चपद सम्मान की प्राप्ति। सिंह के गुरु प्रवेश से भाग्य उदय, शुभ परिवर्तन, मान-सम्मान, भूमि, भवन, वाहन, पुत्र रत्न प्राप्ति। परंतु स्त्री संतान को कुछ कष्ट।

धनु—आपकी राशि पर गुरु अष्टम होकर अशुभ है। अतः भाग्य अवरोध की स्थिति, घरेलू सुखों में उतार-चढ़ाव, लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होगी। सिंह के गुरु प्रवेश होने से परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार। सर्वत्र अनुकूलता। पुत्ररत्न की प्राप्ति।

मकर—इस राशि में गुरु सातवें शुभ फलप्रद हैं। जिससे आमदनी के नए स्रोत बनेंगे। राजकीय उलझनें शांत होंगी। भूमि, भवन, वाहन, पुत्ररत्न तथा शिक्षा-परीक्षा में सफलता। सिंह का गुरु प्रवेश होते ही मातृ-पितृ कष्ट, अपव्यय, लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होगी। चुगल खोरी, दुष्टों से पीड़ा हो सकती है।

कुंभ—आपकी राशि पर छठवें गुरु पूज्य हैं। जो शुभ फल प्रद नहीं हैं। वाद-विवाद से हानि, स्त्री संतान से कष्ट, स्वप्न वियोग, आकस्मिक घटना-दुर्घटना से कष्ट, परंतु सिंहस्थ गुरु प्रवेश होने से परिस्थितियों में सुधार, स्वास्थ्य लाभ, प्रतियोगिता में सफलता, कठिन कार्यों में सफलता एवं धन की प्राप्ति।

मीन—आपकी राशि में पंचमस्थ गुरु शुभ फलप्रद हैं। जिससे मानसिक शक्तियों का विकास होगा। महत्त्वपूर्ण समस्याओं का समाधान, गृह, कुटुम्ब, दाम्पत्य जीवन में मधुरता। अधिकार क्षेत्र का विस्तार। परंतु सिंहस्थ गुरु प्रवेश होते ही भाग्य अवरोधक कार्य, व्यवसाय में धन-हानि तथा विविध कष्ट हो सकते हैं।

राहु-केतु का गोचर फल

राहु वर्षारंभ में कन्या राशि में तथा केतु मीन राशि में विचरण करते रहेंगे। दिनांक 9 जनवरी 2016 ई. को राहु सिंह में तथा केतु कुंभ में प्रवेश करेंगे।

कन्या राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

कन्या में राहु का गोचर फल

12 जुलाई 2014 से नूतन वर्ष तक इसी राशि में विचरण करेंगे। मेषादि राशियों पर फल इस प्रकार है।

मेष—जन्म राशि के गोचर से राहु, मेष, सिंह, वृश्चिक राशि वाले पद रजतपाद से राहु प्रवेश। जिससे इस राशि वाले को प्रायः सर्वत्र अनुकूलता रहेगी। अभीष्ट सिद्धि, आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हो, ईष्ट मित्रों के समागम से आनन्द लाभ, राजनेताओं एवं उत्तराधिकारियों से अनुकूलता मिलेगी। परंतु संतान के अकार्यों से कुछ कष्ट अनुभव कर सकते हैं।

वृष—कन्या, मकर राशि वाले को लौहपाद से प्रवेश होने से राहु अशुभ फलप्रद रोग-शोक-संताप की प्राप्ति, काम-धंधों की हानि, पारिवारिक वैचारिक मतभेद से मानहानि, कानूनी विवाद में विफलता से चित्त विकल हो सकता है। स्वजनों की कुदृष्टि, चल-अचल संपत्ति पर रहेगी। कार्य व्यवसाय में विफलता, कठिन रोग उत्पन्न कर सकता है। मन अशांत रहेगा।

मिथुन–तुला–मीन राशि वाले को ताम्रपाद से राहु का प्रवेश कुछ शुभफलप्रद कारक है। जिससे कर्त्तव्य पालन के प्रति आप जागरूक रहेंगे। वाद-विवाद प्रतियोगिता में सफलता मिल सकती है। चिर प्रतिक्षित कार्य में सफलता, शत्रुओं से कार्य विरोध निवृत हो सकता है। भूमि, भवन, वाहन का क्रय हो सकता है। परन्तु चोट-चपेट लग सकती है।

कर्क–धनु–कुंभ राशि वाले को स्वर्णपाद से राहु का प्रवेश शुभा-शुभ फल कारक है। अतः अत्यधिक परिश्रम से शरीर अशांत रहेगा। व्यर्थ के झंझट, मौसमी रोग, प्रकोप, प्रिय जन विद्रोह, भौतिक बाधा, कुछ लोग ठगी के शिकार बनेंगे। अभीष्ट लाभ में अनेक बाधाएं। कुलसित भोजन, सयन में कष्ट, प्रतीक स्थान परिवर्तन, लोकोपवाद तथा विविध कार्यों में विघ्न-बाधा, यदा-कदा दूसरों का उत्पीड़न सहन करना पड़ सकता है।

मीन राशिस्थ केतु का शुभाशुभ फल

12 जुलाई 2014 से नूतन वर्ष तक इसी राशि में विचरण करेंगे। मेषादि राशियों पर फल इस प्रकार है।

मेष—इस राशि में केतु द्वादश अशुभ फलप्रद है। जिससे व्यर्थ धन का अपव्यय होगा, उदर रोग, मानसिक अशांति, कार्य-व्यवसाय में गतिरोध, स्त्री संतान को कष्ट।

वृष–इस राशि में एकादश केतु कुछ शुभ फल प्रद है। जिससे लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कार्य-व्यवसाय में सफलता, वाद-विवाद प्रतियोगिता में सफलता, आरोग्य प्राप्ति।

मिथुन–आपकी राशि पर दशमस्थ केतु शुभ फल प्रद में चल रहा है। अन्न, धन सुख की वृद्धि होगी। नवनिर्माण कार्यों में सफलता राजकीय सहयोग मिल सकता है।

कर्क–इस राशि पर नवम केतु पूज्य है। जिससे बौद्धिक कुशलता से बाधाएं दूर होकर सर्वत्र प्रभाव बढ़ेगा। व्यापारिक प्रगति, पत्नी के स्वास्थ्य में सुधार तथा अनुकूल अवसर मिलेंगे। वाद-विवाद से बचे रहें।

सिंह–इस राशि में आठवें केतु अशुभ फलकारक हैं। जिससे मानसिक क्लेश, कार्य में श्रम से सीमित सफलता, स्वजनों से वैर-विरोध, आकस्मिक धन हानि और बिना बात के रगड़े-झगड़े से परेशानी बढ़ेगी।

कन्या–आपकी राशि पर सप्तमस्थ केतु पूज्य है। जिससे दिमागी उलझनों में कमी महसूस होगी। अधिकारियों से संबंध सुधरेगा। भोजन, शयन, अनियमितता से परेशानी होगी। व्यर्थ वाद-विवाद से बचें, अन्यथा जेल यात्रा भी हो सकती है।

तुला–आपकी राशि पर छठवें केतु कुछ शुभ फलप्रद हैं। जिससे दिमागी उलझनों में कमी महसूस करेंगे। अधिकारियों से संबंध सुधरेंगे। व्यक्तित्व में आकर्षण और संपत्ति क्षमता में वृद्धि होगी। कार्य व्यवसाय में लाभ का वातावरण बनेगा।

वृश्चिक–आपकी राशि पर पंचमस्थ केतु पूज्य है। जिससे शुभा-शुभ घटनाओं से हर्ष-विवाद, सामान्य अर्थ लाभ, कार्य सफल, सुखद यात्रा होगी। परन्तु संतान के अकार्य से मान-हानि भी हो सकती है।

धनु–इस राशि में केतु चतुर्थ भाव में अशुभफल प्रद है। फलतः अभीष्ट कार्यों में विफलता, क्रोधाधिक्य, शरीर कष्ट, चल-अचल संपत्ति में बाधाएं, नारी वर्ग से मान-हानि का सामना करना पड़ सकता है।

मकर–राशि में केतु तृतीयस्थ होने से भाग्य उदय, स्थान परिवर्तन, श्रेष्ठ जनों से लाभ, नवीन आकर्षण, पद मान मर्यादा। यश की वृद्धि, स्वास्थ्य से पूर्ण संतुष्टि नहीं रहेगी।

कुंभ–इस राशि में केतु द्वितीयस्थ पूज्य है। अतः बौद्धिक स्थान विरोधियों से संघर्ष भय, स्त्री संतान को कष्ट, प्रतिकूल स्थानान्तरण, अधिकारियों से वैचारिक मतभेद तथा अग्नि, सर्प, वाहन से कष्ट हो सकते हैं।

मीन–आपकी राशि पर जन्मस्थ केतु शुभा-शुभ फलकारक है। जिससे आर्थिक लाभ, व्यय की समानता रहेगी। दिमागी उलझनों में कमी आयेगी। व्यापारिक सफलता अल्प मात्रा में रहेगी। अल्प व्यय से आप परेशान रहेंगे। वाणी चातुर्य से विपरीत परिस्थितियों में कुछ राहत।

शनि, राहु, केतु एवं गुरु के अशुभ स्थिति में इसकी शांति के लिए रुद्राभिषेक एवं दुर्गा संपुट पाठ करना-कराना शांति दायक माना जाता है। विशेष अशुभ कारक स्थितियों में किसी ज्योतिषी के अंतर्गत किसी योग्य विद्वानों के द्वारा श्री महामृत्युंजय मंत्र अनुष्ठान एवं रुद्राभिषेक अनुष्ठान गंगा जल, गौ दुग्ध के द्वारा श्रद्धा भक्ति पूर्वक कराने से कठिन से कठिन दशा-अंतर्दशा वाले को शनि साढ़ेसाती राहु, केतु गोचर फल एवं गुरुकृत अनिष्ट शांति प्रतिकार अवश्य हो सकती है।

सिंह राशिस्थ राहु का गोचर फल

(9 जनवरी 2016 ई.)

मेष– विद्या पक्ष में अशुभता का योग।
वृष– माता को कष्ट, परिवार मे शोक।
मिथुन– बटवारा विवाद योग। हानि योग भी।
कर्क– धन लाभ। ऋण मुक्ति शुभ योग।
सिंह– रोग-पीड़ा बाधा गुप्त बाधा योग।
कन्या–व्यर्थ खर्चा का योग चिंता भी।
तुला– आर्थिक लाभ देगा। व्यवसाय में।
वृश्चिक– पिता को संकट पैतृत संपत्ति लाभ।
धनु– भाग्योदय योग आर्थिक लाभ।
मकर– वाहन से भय रहेगा। यात्रा कष्ट।
कुंभ– रोग पीड़ा तथा रक्त विकार का योग।
मीन– पत्नि का योग एक प्रसव पीड़ा।

कुंभ राशिस्थ केतु का गोचर फल

(9 जनवरी 2016 ई.)

मेष– परीक्षा परिणाम में शुभ योग।
वृष– परिवार में नया कार्य में शुभता का योग।
मिथुन– कार्य में गति अच्छी होगी।
कर्क– चिंतादायक योग मांगने वालो से हानि।
सिंह– रोग-चिंता से मुक्ति का कारक योग।
कन्या– भूमि-भवन वाहन प्राप्ति में खर्चा।
तुला– चोरी धन हानि अग्नि का भय योग।
वृश्चिक– माता को संकट कारक योग बनेगा।
धनु– चलते कार्यों में रुकावट आयेगी।
मकर– ऋण प्राप्ति योग बैंक से आर्थिक लाभ।
कुंभ– चिकित्सालय में सेवा योग लाभ भी।
मीन– मित्र वर्ग से कुछ अशांतिदायक योग।

सन् 2015 ई. में नासिक सिंहस्थ पर्व

भगवान विष्णु के निर्देशानुसार देवों तथा असुरों ने मिलकर अमृत-कुंभ प्राप्ति हेतु समुद्र मंथन किया। फलस्वरूप पहले विष उत्पन्न हुआ जिसे भगवान शंकर ने पी लिया। पुनः अमृत-कुंभ उत्पन्न हुआ, जो इन्द्र को प्राप्त हुआ। अमृत-कुंभ के लिए देव और असुरों में भयंकर युद्ध हुआ। इसी युद्ध में अमृत-कुंभ की रक्षा करते समय इसके बूंदे जिस-जिस स्थानों पर गिरी थीं, उसी स्थान (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक) पर कुंभ महापर्व मनाया जाता है।

पृथिव्यां कुंभ पर्वस्य चतुर्थ भेद उच्यते। चतुः स्थले निपतानात् कुंभस्य भूतले॥ गंगा द्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे। कुंभख्यो द्विव्य योगोअर्य प्रोच्यते शंकरादिभि॥ अर्थात्–पृथ्वी पर कुंभ से चार स्थानों पर अमृत गिरा हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन, नासिक में शंकर आदि देवताओं ने कुंभ नाम को पर्व कहा है। उस समय पृथ्वी पर अमृत कुंभ की गुरु, सूर्य, चन्द्रमा ने रक्षा की थी। उस समय जब-जब वर्तमान राशियों पर जब सूर्य, चन्द्र, गुरु आते हैं। तब-तब इन चारों स्थानों पर महापर्व होता है। **सिंह गुरु भानुश्चन्द्रः क्षय स्तथा। गोदावर्या तथा कुंम्भो जायते अवनि मंडले ॥** अर्थात्–जब-जब सिंह के गुरु, सिंह राशि के सूर्य व चन्द्रमा सिंह राशि में होते हैं। तब-तब नासिक में सिंहस्थ महापर्व होता है। **देवानां द्वादशाहोमिभर्त्ये द्वादिशःवत्सरे। जायते कुंभ पर्वाणि तथा द्वादस संख्यया॥** अर्थात्–बारह वर्ष के उपरांत, मुख्य रूप से गुरु, सूर्य व चन्द्रमा की स्थिति कुंभ पर्व मान्य होता है और द्वादस वर्ष भी प्राप्त हो तो सोने में सुहागा वाली बात है।

तीर्थानिनद्यश्च तथा समुद्रा क्षेत्रय्यरण्यानि तथा अमाश्च। बसन्ति सर्वाणि च वर्षे मेकं गोदातटे सिंह गते सुरेज्ये॥ अर्थात्–कूर्म और ब्रह्मांड पुराना का मत है कि तुल्या, आत्रेयी, गौतमी, भारद्वाजी, वृद्ध गौतमी, वाशिष्ठी। इन सात नामों से विभक्त होकर सागर में मिलने वाली गोदावरी का स्वयं ब्रह्मा ने परिवेष्ठन किया है। जलपान अकर्णेश्वर शिव जी की पूजा, गोदावरी में स्नान व जलपान करने से मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ के समान फल की प्राप्ति होती है और यह संसारी जीवात्मा सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है। स्नान तिथि निम्न प्रकार है–

पवित्रा एकादशी व्रत	26 अग. 2015 ई. बुधवार
रक्षा बंधन पूर्णिमा	29 अगस्त 2015 ई. शनिवार
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत	05 सितंबर 2015 ई. शनिवार
अजा एकादशी व्रत	08 सितंबर 2015 ई. मंगलवार
कुशा ग्रहणी पिठौरी अमावस्या	12 सितंबर 2015 ई. शनिवार
भाद्रपद अमावस्या शाही स्नान	13 सितंबर 2015 ई. रविवार
भाद्रपद शुक्ल 3 शाही स्नान	16 सितंबर 2015 ई. बुधवार
ऋषि पंचमी	18 सितंबर 2015 ई. शुक्रवार

सिंह राशि के गुरु में गोदावरी में स्नान मात्र से प्राणी एक लाख गौदान का फल प्राप्त कर लेता है। (ब्रह्मण पुराण)

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानि शवानि च। वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भः स्नानेन् तत्फलम् । तान्येति यः पुमान् योगे सोअमृत्वाय कल्पते। (स्कंद पुराण)

अर्थात्–भाद्रपद कृष्ण अमावस्या 12 से 13 सितंबर 2015 ई. में समस्त धर्म प्रेमी जन सिंहस्थ पर्व में नासिक में स्नान देवार्चन, तीर्थ दर्शन का लाभ उठाते हैं। हमारी ज्योतिष पीठ की ओर से ऐसे पर्वों में श्रीमद् भागवत् यज्ञ महामृत्युंजय जप, रुद्राभिषेक आदि का आयोजन होता है। धर्म प्रेमी जनता, धन, मन, तन से सहयोग करें व सिंहस्थ पर्व में स्नान कर देश, धर्म, जाति व परिवार का कल्याण करें।

साढ़े पांच बजे (प्रातः 5 बजकर 30 मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भा.स्टै.टा. 5130 के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने 15 अगस्त 2015 शाम 8:45 मि. का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है। इसके लिए 16 अगस्त प्रातः 5130 बजे के सूर्य स्पष्ट में से 8145 घंटे की गति घटायेंगे। 16 अगस्त के सूर्य स्पष्ट (03-28-45-40) में से 15 अगस्त के सूर्य स्पष्ट (03-27-48-00) घटा देने से 24 घंटे की गति पता चलेगी जोकि 57140 कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें 57 कला के सामने 8 घंटे के नीचे 19100 मिले। इसमें 45 मिनट की गति 1147 कलादि जमा कर देने से हमें 20147 कलादि योग प्राप्त हुआ। अब 40 विकला के संस्कार समीपस्थ 40 कला के (8145 घंटे) संस्कार 15 विकल्प जमा कर देने से हमें 21102 कलादि 8 घंटे 45 मिनट की गति प्राप्त हुई इसको 16 अगस्त 5130 के सूर्य स्पष्ट (03-28-45-40) में से घटा देने से शाम 8145 मि. का सूर्य स्पष्ट 3-28-24-38 राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं।

मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में से घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।

5130 बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का ग्रह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया पृथक-पृथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये 15 अगस्त सन् 2015 को शाम के 8:45 मि. के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए-सूर्य-15 अग. के प्रातः 5130 बजे का सूर्य स्पष्ट 03-27-48-00 है और अगले दिन 16 अगस्त के प्रातः 5130 बजे का सूर्य स्पष्ट 03-28-45-40 है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं। यहां 16 तारीख के सूर्य स्पष्ट में से 15 तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
16 ता. को सूर्य स्पष्ट	03	28	45	40
15 ता. को सूर्य स्पष्ट घटाएं.(-)	03	27	48	00
	00	00	57	40

अतः 57' कला, 40" विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। 57'-40" के विकला बनायें: 57×60+40=3460 विकला। सूर्य की यह गति 15 तारीख के 5130 बजे से 16 तारीख के 5130 बजे तक 24 घंटे (1440 मि.) की है। अब अपने इष्ट समय 8145 मि. में से 5130 बजे को घटाया तो समय अंतराल 15 घंटे 15 मिनट (915 मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की 1440 मि. में सूर्य की गति 3460 विकला है। 915 मि. में से सूर्य की गति 3460×915÷1440=2198 विकला- 2198÷60 कला-36 कला 38 विकला 36'-38" इसको 15 अगस्त के सूर्य स्पष्ट में जोड़ दे (03-28-48-00)+(36-38)- 3-28-24-38 अतः 15 अगस्त की शाम 8145 मि. का सूर्य स्पष्ट 3-28-39-33 बना। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री (शनि) ग्रहों के लिए–15 जुलाई 2015 शाम 8:45 मि. का शनि स्पष्ट ज्ञात करना है। अतः उल्टी क्रिया करनी होगी। अर्थात् 15 जुलाई के शनि स्पष्ट में 16 जुलाई के शनि स्पष्ट घटाने होंगे। 15 जुलाई के शनि स्पष्ट 6-22-36-03 में से 16 जुलाई के शनि स्पष्ट 07-04-26-01 को घटायें-1-41 यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। 1 क. 41 वि.-101 विकला। अतः क्रिया पूर्ववत् 101×915÷1440 =64 वि.=01 क. 4 वि.। 1-04 को 15 जुलाई के शनि स्पष्ट में से घटाया (07-04-27-42)-(1-04)= 07-04-26-38 अतः 15 जुलाई को 8145 मि. पर वक्री शनि स्पष्ट 07-04-26-38 आया। यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो 5130 बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

(कृपया पाठक इन ◆ को ¼ चौथाई, ■ को ½ आधा और ● ¾ तिहाई पढ़ें।)

दैनिक गति 24घं.	गति 30मि. क.वि.	गति 1 घं. क.वि.	गति 2 घं. क.वि.	गति 3 घं. क.वि.	गति 4 घं. क.वि.	गति 5 घं. क.वि.	गति 6 घं. क.वि.	गति 7 घं. क.वि.	गति 8 घं. क.वि.	गति 9 घं. क.वि.	गति 10घं. क.वि.	गति 11घं. क.वि.	गति 12घं. क.वि.
1	0101 ◆	0102 ■	0105	0107 ■	0110	0112 ■	0115	0117 ■	0120	0122 ■	0125	0127 ■	0130
2	0102 ■	0105	0110	0115	0120	0125	0130	0135	0140	0145	0150	0155	1100
3	0103 ●	0107 ■	0115	0122 ■	0130	0137 ■	0145	0152 ■	1100	1107 ■	1115	1122 ■	1130
4	0105	0110	0120	0130	0140	0150	1100	1110	1120	1130	1140	1150	2100
5	0106 ◆	0112 ■	0125	0137 ■	0150	1102 ■	1115	1127 ■	1140	1152 ■	2105	2117 ■	2130
6	0107 ■	0115	0130	0145	1100	1115	1130	1145	2100	2115	2130	2145	3100
7	0108 ●	0117 ■	0135	0152 ■	1110	1127 ■	1145	2102 ■	2120	2137 ■	2155	3112 ■	3130
8	0110	0120	0140	1100	1120	1140	2100	2120	2140	3100	3120	3140	4100
9	0111 ◆	0122 ■	0145	1107 ■	1130	1152 ■	2115	2137 ■	3100	3122 ■	3145	4107 ■	4130
10	0112 ■	0125	0150	1115	1140	2105	2130	2155	3120	3145	4110	4135	5100
11	0113 ●	0127 ■	0155	1122 ■	1150	2117 ■	2145	3112 ■	3140	4107 ■	4135	5102 ■	5130
12	0115	0130	1100	1130	2100	2130	3100	3130	4100	4130	5100	5130	6100
13	0116 ◆	0132 ■	1105	1137 ■	2110	2142 ■	3115	3147 ■	4120	4152 ■	5125	5157 ■	6130
14	0117 ■	0135	1110	1145	2120	2155	3130	4105	4140	5115	5150	6125	7100
15	0118 ●	0137 ■	1115	1152 ■	2130	3107 ■	3145	4122 ■	5100	5137 ■	6115	6152 ■	7130
16	0120	0140	1120	2100	2140	3120	4100	4140	5120	6100	6140	7120	8100
17	0121 ◆	0142 ■	1125	2107 ■	2150	3132 ■	4115	4157 ■	5140	6122 ■	7105	7147 ■	8130
18	0122 ■	0145	1130	2115	3100	3145	4130	5115	6100	6145	7130	8115	9100
19	0123 ●	0147 ■	1135	2122 ■	3110	3157 ■	4145	5132 ■	6120	7107 ■	7155	8142 ■	9130
20	0125	0150	1140	2130	3120	4110	5100	5150	6140	7130	8120	9110	10100
21	0126 ◆	0152 ■	1145	2137 ■	3130	4122 ■	5115	6107 ■	7100	7152 ■	8145	9137 ■	10130
22	0127 ■	0155	1150	2145	3140	4135	5130	6125	7120	8115	9110	10105	11100
23	0128 ●	0157 ■	1155	2152 ■	3150	4147 ■	5145	6142 ■	7140	8137 ■	9135	10132 ■	11130
24	0130	1100	2100	3100	4100	5100	6100	7100	8100	9100	10100	11100	12100
25	0131 ◆	1102 ■	2105	3107 ■	4110	5112 ■	6115	7117 ■	8120	9122 ■	10125	11127 ■	12130
26	0132 ■	1105	2110	3115	4120	5125	6130	7135	8140	9145	10150	11155	13100
27	0133 ●	1107 ■	2115	3122 ■	4130	5137 ■	6145	7152 ■	9100	10107 ■	11115	12122 ■	13130
28	0135	1110	2120	3130	4140	5150	7100	8110	9120	10130	11140	12150	14100
29	0136	1112 ■	2125	3137 ■	4150	6102 ■	7115	8127 ■	9140	10152 ■	12105	13117 ■	14130
30	0137	1115	2130	3145	5100	6115	7130	8145	10100	11115	12130	13145	15100

दैनिक गति 24घं.	गति 30मि. क.वि.	गति 1 घं. क.वि.	गति 2 घं. क.वि.	गति 3 घं. क.वि.	गति 4 घं. क.वि.	गति 5 घं. क.वि.	गति 6 घं. क.वि.	गति 7 घं. क.वि.	गति 8 घं. क.वि.	गति 9 घं. क.वि.	गति 10घं. क.वि.	गति 11घं. क.वि.	गति 12घं. क.वि.
31	0138 ●	1117 ■	2135	3152 ■	5110	6127 ■	7145	9102 ■	10120	11137 ■	12155	14112 ■	15130
32	0140	1120	2140	4100	5120	6140	8100	9120	10140	12100	13120	14140	16100
33	0141 ◆	1122 ■	2145	4107 ■	5130	6152 ■	8115	9137 ■	11100	12122 ■	13145	15107 ■	16130
34	0142 ■	1125	2150	4115	5140	7105	8130	9155	11120	12145	14110	15135	17100
35	0143 ●	1127 ■	2155	4122 ■	5150	7117 ■	8145	10112 ■	11140	13107 ■	14135	16102 ■	17130
36	0145	1130	3100	4130	6100	7130	9100	10130	12100	13130	15100	16130	18100
37	0146 ◆	1132 ■	3105	4137 ■	6110	7142 ■	9115	10147 ■	12120	13152 ■	15125	16157 ■	18130
38	0147 ■	1135	3110	4145	6120	7155	9130	11105	12140	14115	15150	17125	19100
39	0148 ●	1137 ■	3115	4152 ■	6130	8107 ■	9145	11122 ■	13100	14137 ■	16115	17152 ■	19130
40	0150	1140	3120	5100	6140	8120	10100	11140	13120	15100	16140	18120	20100
41	0151 ◆	1142 ■	3125	5107 ■	6150	8132 ■	10115	11157 ■	13140	15122 ■	17105	18147 ■	20130
42	0152 ■	1145	3130	5115	7100	8145	10130	12115	14100	15145	17130	19115	21100
43	0153 ●	1147 ■	3135	5122 ■	7110	8157 ■	10145	12132 ■	14120	16107 ■	17155	19142 ■	21130
44	0155	1150	3140	5130	7120	9110	11100	12150	14140	16130	18120	20110	22100
45	0156 ◆	1152 ■	3145	5137 ■	7130	9122 ■	11115	13107 ■	15100	16152 ■	18145	20137 ■	22130
46	0157 ■	1155	3150	5145	7140	9135	11130	13125	15120	17115	19110	21105	23100
47	0158 ●	1157 ■	3155	5152 ■	7150	9147 ■	11145	13142 ■	15140	17137 ■	19135	21132 ■	23130
48	1100	2100	4100	6100	8100	10100	12100	14100	16100	18100	20100	22100	24100
49	1101 ◆	2102 ■	4105	6107 ■	8110	10112 ■	12115	14117 ■	16120	18122 ■	20125	22127 ■	24130
50	1102 ■	2105	4110	6115	8120	10125	12130	14135	16140	18145	20150	22155	25100
51	1103 ●	2107 ■	4115	6122 ■	8130	10137 ■	12145	14152 ■	17100	19107 ■	21115	23122 ■	25130
52	1105	2110	4120	6130	8140	10150	13100	15110	17120	19130	21140	23150	26100
53	1106 ◆	2112 ■	4125	6137 ■	8150	11102 ■	13115	15127 ■	17140	19152 ■	22105	24117 ■	26130
54	1107 ■	2115	4130	6145	9100	11115	13130	15145	18100	20115	22130	24145	27100
55	1108 ●	2117 ■	4135	6152 ■	9110	11127 ■	13145	16102 ■	18120	20137 ■	22155	25112 ■	27130
56	1110	2120	4140	7100	9120	11140	14100	16120	18140	21100	23120	25140	28100
57	1111 ◆	2122 ■	4145	7107 ■	9130	11152 ■	14115	16137 ■	19100	21122 ■	23145	26107 ■	28130
58	1112 ■	2125	4150	7115	9140	12105	14130	16155	19120	21145	24110	26135	29100
59	1113 ●	2127 ■	4155	7122 ■	9150	12117 ■	14145	17112 ■	19140	22107 ■	24135	27102 ■	29130
60	1115	2130	5100	7130	10100	12130	15100	17130	20100	22130	25100	27130	30100

दैनिक ग्रह स्पष्ट

इस पंचांग में नीचे यहां सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला, सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः 5|30 बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित हैं। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-जापान के स्टै. टा. का भारतीय स्टै. टा. से अन्तर +3 घं. 30 मि. है। अतः ये स्पष्ट ग्रह जापान के स्टै. टा. के अनुसार प्रातः 9 घं. 00 मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अंतर के घटी-पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे, वह गति होगी।

अप्रैल सन् 2016 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°|04'|58''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रै.
1	11 17 36 41	08 21 53 45	07 13 15 19	11 26 07 10	04 21 20 11	11 00 06 27	07 22 16 31	04 27 30 11	11 25 51 39	10 16 35 17	08 23 19 30	1
2	11 18 35 53	09 04 59 46	07 13 25 53	11 28 08 28	04 21 13 52	11 01 20 35	07 22 15 48	04 27 31 18	11 25 55 03	10 16 37 17	08 23 20 00	2
3	11 19 35 03	09 18 30 45	07 13 35 53	00 00 08 39	04 21 07 41	11 02 34 43	07 22 15 00	04 27 32 48	11 25 58 28	10 16 39 17	08 23 20 29	3
4	11 20 34 12	10 02 28 24	07 13 45 16	00 02 07 22	04 21 01 38	11 03 48 51	07 22 14 06	04 27 34 13	11 26 01 53	10 16 41 16	08 23 20 56	4
5	11 21 33 18	10 16 52 23	07 13 54 03	00 04 04 15	04 20 55 42	11 05 02 58	07 22 13 06	04 27 35 08	11 26 05 19	10 16 43 13	08 23 21 21	5
6	11 22 32 23	11 01 39 45	07 14 02 12	00 05 58 55	04 20 49 54	11 06 17 05	07 22 12 00	04 27 35 06	11 26 08 44	10 16 45 09	08 23 21 45	6
7	11 23 31 26	11 16 44 30	07 14 09 44	00 07 51 00	04 20 44 15	11 07 31 11	07 22 10 49	04 27 33 51	11 26 12 10	10 16 47 05	08 23 22 06	7

मार्च सन् 2015 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°|04'|11''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
21	11 05 58 48	11 14 25 22	11 27 57 36	10 18 13 03	03 19 04 24	00 10 14 02	07 10 48 52	05 15 46 55	11 21 26 20	10 14 02 55	08 21 17 12	21
22	11 06 58 25	11 29 21 39	11 28 42 34	10 19 52 40	03 19 00 59	00 11 26 10	07 10 48 10	05 15 47 10	11 21 29 40	10 14 05 03	08 21 18 01	22
23	11 07 58 00	00 13 58 30	11 29 27 30	10 21 33 34	03 18 57 45	00 12 38 14	07 10 47 22	05 15 47 53	11 21 33 02	10 14 07 11	08 21 18 47	23
24	11 08 57 33	00 28 10 51	00 00 12 22	10 23 15 44	03 18 54 41	00 13 50 13	07 10 46 28	05 15 48 48	11 21 36 23	10 14 09 18	08 21 19 32	24
25	11 09 57 03	01 11 56 26	00 00 57 12	10 24 59 11	03 18 51 49	00 15 02 07	07 10 45 29	05 15 49 41	11 21 39 45	10 14 11 24	08 21 20 15	25
26	11 10 56 32	01 25 15 22	00 01 41 58	10 26 43 55	03 18 49 08	00 16 13 57	07 10 44 23	05 15 50 21	11 21 43 08	10 14 13 30	08 21 20 57	26
27	11 11 55 58	02 08 09 44	00 02 26 42	10 28 29 59	03 18 46 38	00 17 25 41	07 10 43 11	05 15 50 41	11 21 46 32	10 14 15 34	08 21 21 36	27
28	11 12 55 21	02 20 42 52	00 03 11 23	11 00 17 21	03 18 44 20	00 18 37 20	07 10 41 54	05 15 50 42	11 21 49 55	10 14 17 38	08 21 22 14	28
29	11 13 54 43	03 02 58 48	00 03 56 01	11 02 06 03	03 18 42 13	00 19 48 53	07 10 40 31	05 15 50 30	11 21 53 19	10 14 19 41	08 21 22 50	29
30	11 14 54 02	03 15 01 51	00 04 40 36	11 03 56 06	03 18 40 17	00 21 00 22	07 10 39 02	05 15 50 12	11 21 56 44	10 14 21 43	08 21 23 24	30
31	11 15 53 18	03 26 56 10	00 05 25 07	11 05 47 30	03 18 38 32	00 22 11 44	07 10 37 28	05 15 49 56	11 22 00 09	10 14 23 44	08 21 23 56	31

अप्रैल सन् 2015 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°04'14''

ता. अप्रै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. अप्रै.
1	11 16 52 33	04 08 45 39	00 06 09 36	11 07 40 15	03 18 36 59	00 23 23 01	07 10 35 48	05 15 49 50	11 22 03 34	10 14 25 44	08 21 24 27	1
2	11 17 51 45	04 20 33 40	00 06 54 02	11 09 34 21	03 18 35 37	00 24 34 12	07 10 34 02	05 15 49 55	11 22 06 59	10 14 27 43	08 21 24 56	2
3	11 18 50 55	05 02 23 11	00 07 38 25	11 11 29 48	03 18 34 26	00 25 45 17	07 10 32 11	05 15 50 07	11 22 10 24	10 14 29 41	08 21 25 23	3
4	11 19 50 03	05 14 16 47	00 08 22 45	11 13 26 35	03 18 33 27	00 26 56 17	07 10 30 15	05 15 50 21	11 22 13 50	10 14 31 38	08 21 25 48	4
5	11 20 49 09	05 26 16 40	00 09 07 01	11 15 24 41	03 18 32 39	00 28 07 10	07 10 28 13	05 15 50 30	11 22 17 16	10 14 33 33	08 21 26 11	5
6	11 21 48 12	06 08 24 44	00 09 51 15	11 17 24 04	03 18 32 02	00 29 17 58	07 10 26 06	05 15 50 26	11 22 20 41	10 14 35 28	08 21 26 32	6
7	11 22 47 14	06 20 42 44	00 10 35 26	11 19 24 40	03 18 31 37	01 00 28 39	07 10 23 54	05 15 50 05	11 22 24 07	10 14 37 22	08 21 26 52	7
8	11 23 46 14	07 03 12 20	00 11 19 34	11 21 26 26	03 18 31 23	01 01 39 14	07 10 21 36	05 15 49 31	11 22 27 33	10 14 39 14	08 21 27 10	8
9	11 24 45 13	07 15 55 16	00 12 03 39	11 23 29 17	मा.03 18 31 20	01 02 49 43	07 10 19 13	05 15 48 49	11 22 30 58	10 14 41 06	08 21 27 25	9
10	11 25 44 09	07 28 53 18	00 12 47 42	11 25 33 06	03 18 31 29	01 04 00 06	07 10 16 45	05 15 48 09	11 22 34 24	10 14 42 56	08 21 27 40	10
11	11 26 43 04	08 12 08 11	00 13 31 41	11 27 37 47	03 18 31 49	01 05 10 22	07 10 14 13	05 15 47 45	11 22 37 50	10 14 44 45	08 21 27 52	11
12	11 27 41 57	08 25 41 18	00 14 15 38	11 29 43 10	03 18 32 20	01 06 20 32	07 10 11 35	05 15 47 45	11 22 41 15	10 14 46 33	08 21 28 02	12
13	11 28 40 48	09 09 33 29	00 14 59 31	00 01 49 04	03 18 33 02	01 07 30 36	07 10 08 52	05 15 48 13	11 22 44 40	10 14 48 19	08 21 28 11	13
14	11 29 39 38	09 23 44 31	00 15 43 22	00 03 55 16	03 18 33 56	01 08 40 32	07 10 06 05	05 15 49 09	11 22 48 05	10 14 50 05	08 21 28 18	14
15	00 00 38 26	10 08 12 49	00 16 27 10	00 06 01 32	03 18 35 00	01 09 50 22	07 10 03 12	05 15 50 21	11 22 51 30	10 14 51 48	08 21 28 22	15
16	00 01 37 12	10 22 54 59	00 17 10 55	00 08 07 36	03 18 36 16	01 11 00 06	07 10 00 16	05 15 51 33	11 22 54 54	10 14 53 31	08 21 28 25	16
17	00 02 35 56	11 07 45 47	00 17 54 37	00 10 13 12	03 18 37 43	01 12 09 42	07 09 57 14	05 15 52 27	11 22 58 18	10 14 55 12	08 21 28 27	17
18	00 03 34 38	11 22 38 25	00 18 38 17	00 12 17 59	03 18 39 21	01 13 19 11	07 09 54 08	05 15 52 43	11 23 01 41	10 14 56 52	08 21 28 26	18
19	00 04 33 19	00 07 25 14	00 19 21 53	00 14 21 39	03 18 41 11	01 14 28 33	07 09 50 58	05 15 52 09	11 23 05 04	10 14 58 30	व.08 21 28 23	19
20	00 05 31 57	00 21 58 49	00 20 05 26	00 16 23 53	03 18 43 11	01 15 37 47	07 09 47 43	05 15 50 40	11 23 08 26	10 15 00 07	08 21 28 19	20
21	00 06 30 34	01 06 12 59	00 20 48 57	00 18 24 19	03 18 45 22	01 16 46 54	07 09 44 25	05 15 48 24	11 23 11 48	10 15 01 43	08 21 28 13	21
22	00 07 29 08	01 20 03 33	00 21 32 24	00 20 22 39	03 18 47 44	01 17 55 53	07 09 41 02	05 15 45 36	11 23 15 10	10 15 03 17	08 21 28 05	22
23	00 08 27 41	02 03 28 41	00 22 15 48	00 22 18 33	03 18 50 16	01 19 04 44	07 09 37 35	05 15 42 42	11 23 18 30	10 15 04 50	08 21 27 55	23
24	00 09 26 11	02 16 28 45	00 22 59 10	00 24 11 45	03 18 53 00	01 20 13 26	07 09 34 05	05 15 40 08	11 23 21 50	10 15 06 21	08 21 27 44	24
25	00 10 24 39	02 29 06 01	00 23 42 28	00 26 01 58	03 18 55 54	01 21 22 00	07 09 30 31	05 15 38 19	11 23 25 10	10 15 07 50	08 21 27 31	25
26	00 11 23 05	03 11 24 08	00 24 25 43	00 27 48 56	03 18 58 58	01 22 30 25	07 09 26 53	05 15 37 31	11 23 28 28	10 15 09 18	08 21 27 16	26
27	00 12 21 29	03 23 27 36	00 25 08 55	00 29 32 27	03 19 02 13	01 23 38 41	07 09 23 12	05 15 37 47	11 23 31 46	10 15 10 45	08 21 26 59	27
28	00 13 19 51	04 05 21 15	00 25 52 04	01 01 12 19	03 19 05 38	01 24 46 48	07 09 19 27	05 15 38 57	11 23 35 03	10 15 12 10	08 21 26 40	28
29	00 14 18 11	04 17 09 58	00 26 35 09	01 02 48 22	03 19 09 14	01 25 54 45	07 09 15 40	05 15 40 36	11 23 38 19	10 15 13 33	08 21 26 20	29
30	00 15 16 28	04 28 58 20	00 27 18 12	01 04 20 27	03 19 12 59	01 27 02 33	07 09 11 49	05 15 42 12	11 23 41 34	10 15 14 54	08 21 25 58	30

मई सन् 2015 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।04'।17"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मई
1	00 16 14 44	05 10 50 29	00 28 01 12	01 05 48 26	03 19 16 55	01 28 10 11	07 09 07 55	05 15 43 09	11 23 44 48	10 15 16 14	08 21 25 34	1
2	00 17 12 58	05 22 49 57	00 28 44 08	01 07 12 13	03 19 21 00	01 29 17 39	07 09 03 58	05 15 42 55	11 23 48 01	10 15 17 33	08 21 25 09	2
3	00 18 11 09	06 04 59 3[illegible]	00 29 27 02	01 08 31 43	03 19 25 16	02 00 24 56	07 08 59 58	05 15 41 11	11 23 51 13	10 15 18 49	08 21 24 42	3
4	00 19 09 19	06 17 21 29	01 00 09 52	01 09 46 48	03 19 29 41	02 01 32 03	07 08 55 56	05 15 37 53	11 23 54 24	10 15 20 04	08 21 24 13	4
5	00 20 07 28	06 29 56 48	01 00 52 39	01 10 57 26	03 19 34 16	02 02 38 59	07 08 51 51	05 15 33 15	11 23 57 34	10 15 21 18	08 21 23 42	5
6	00 21 05 34	07 12 46 02	01 01 35 24	01 12 03 32	03 19 39 00	02 03 45 45	07 08 47 43	05 15 27 47	11 24 00 43	10 15 22 29	08 21 23 10	6
7	00 22 03 40	07 25 49 06	01 02 18 05	01 13 05 01	03 19 43 54	02 04 52 19	07 08 43 34	05 15 22 09	11 24 03 51	10 15 23 39	08 21 22 37	7
8	00 23 01 43	08 09 05 33	01 03 00 44	01 14 01 50	03 19 48 57	02 05 58 42	07 08 39 22	05 15 17 03	11 24 06 58	10 15 24 48	08 21 22 01	8
9	00 23 59 46	08 22 34 45	01 03 43 20	01 14 53 55	03 19 54 09	02 07 04 54	07 08 35 08	05 15 13 08	11 24 10 03	10 15 25 54	08 21 21 24	9
10	00 24 57 47	09 06 16 03	01 04 25 53	01 15 41 12	03 19 59 31	02 08 10 53	07 08 30 52	05 15 10 47	11 24 13 07	10 15 26 59	08 21 20 46	10
11	00 25 55 46	09 20 08 44	01 05 08 23	01 16 23 38	03 20 05 02	02 09 16 41	07 08 26 35	05 15 10 03	11 24 16 10	10 15 28 02	08 21 20 06	11
12	00 26 53 44	10 04 12 04	01 05 50 51	01 17 01 09	03 20 10 42	02 10 22 16	07 08 22 15	05 15 10 41	11 24 19 11	10 15 29 03	08 21 19 24	12
13	00 27 51 41	10 18 25 00	01 06 33 15	01 17 33 44	03 20 16 30	02 11 27 39	07 08 17 54	05 15 12 05	11 24 22 11	10 15 30 02	08 21 18 41	13
14	00 28 49 37	11 02 45 53	01 07 15 37	01 18 01 19	03 20 22 28	02 12 32 49	07 08 13 32	05 15 13 28	11 24 25 10	10 15 31 00	08 21 17 56	14
15	00 29 47 31	11 17 12 08	01 07 57 56	01 18 23 55	03 20 28 34	02 13 37 46	07 08 09 08	05 15 14 01	11 24 28 07	10 15 31 55	08 21 17 09	15
16	01 00 45 25	00 01 39 59	01 08 40 12	01 18 41 29	03 20 34 49	02 14 42 30	07 08 04 44	05 15 12 59	11 24 31 03	10 15 32 49	08 21 16 21	16
17	01 01 43 16	00 16 04 38	01 09 22 26	01 18 54 05	03 20 41 13	02 15 47 00	07 08 00 18	05 15 09 55	11 24 33 57	10 15 33 41	08 21 15 32	17
18	01 02 41 07	01 00 20 38	01 10 04 36	01 19 01 43	03 20 47 45	02 16 51 16	07 07 55 51	05 15 04 43	11 24 36 49	10 15 34 31	08 21 14 41	18
19	01 03 38 56	01 14 22 36	01 10 46 44	व.01 19 04 29	03 20 54 26	02 17 55 17	07 07 51 24	05 14 57 43	11 24 39 40	10 15 35 19	08 21 13 49	19
20	01 04 36 44	01 28 06 05	मा.01 11 28 49	01 19 02 28	03 21 01 15	02 18 59 03	07 07 46 56	05 14 49 33	11 24 42 30	10 15 36 05	08 21 12 55	20
21	01 05 34 30	02 11 28 10	01 12 10 51	01 18 55 52	03 21 08 12	02 20 02 34	07 07 42 27	05 14 41 06	11 24 45 18	10 15 36 50	08 21 12 00	21
22	01 06 32 14	02 24 27 51	01 12 52 50	01 18 44 50	03 21 15 17	02 21 05 48	07 07 37 59	05 14 33 20	11 24 48 04	10 15 37 32	08 21 11 04	22
23	01 07 29 57	03 07 06 04	01 13 34 46	01 18 29 38	03 21 22 30	02 22 08 46	07 07 33 30	05 14 27 03	11 24 50 48	10 15 38 13	08 21 10 06	23
24	01 08 27 39	03 19 25 25	01 14 16 39	01 18 10 33	03 21 29 51	02 23 11 27	07 07 29 01	05 14 22 46	11 24 53 30	10 15 38 52	08 21 09 07	24
25	01 09 25 19	04 01 29 48	01 14 58 30	01 17 47 57	03 21 37 20	02 24 13 50	07 07 24 33	05 14 20 37	11 24 56 11	10 15 39 28	08 21 08 07	25
26	01 10 22 58	04 13 23 57	01 15 40 17	01 17 22 14	03 21 44 56	02 25 15 56	07 07 20 05	05 14 20 16	11 24 58 50	10 15 40 03	08 21 07 05	26
27	01 11 20 35	04 25 13 06	01 16 22 02	01 16 53 50	03 21 52 40	02 26 17 42	07 07 15 37	05 14 21 01	11 25 01 27	10 15 40 36	08 21 06 02	27
28	01 12 18 10	05 07 02 30	01 17 03 43	01 16 23 16	03 22 00 31	02 27 19 09	07 07 11 10	05 14 21 53	11 25 04 02	10 15 41 07	08 21 04 58	28
29	01 13 15 44	05 18 57 16	01 17 45 22	01 15 51 03	03 22 08 29	02 28 20 15	07 07 06 43	05 14 21 51	11 25 06 35	10 15 41 36	08 21 03 53	29
30	01 14 13 17	06 01 01 56	01 18 26 58	01 15 17 46	03 22 16 35	02 29 21 02	07 07 02 17	05 14 20 01	11 25 09 06	10 15 42 03	08 21 02 46	30
31	01 15 10 48	06 13 20 20	01 19 08 31	01 14 44 00	03 22 24 47	03 00 21 26	07 06 57 52	05 14 15 47	11 25 11 35	10 15 42 28	08 21 01 38	31

जून सन् 2015 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°04'21"

ता. जून	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	तां. जून
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	
1	01 16 08 18	06 25 55 13	01 19 50 01	01 14 10 19	03 22 33 07	03 01 21 30	07 06 53 29	05 14 09 02	11 25 14 02	10 15 42 51	08 21 00 30	1
2	01 17 05 47	07 08 47 58	01 20 31 28	01 13 37 19	03 22 41 33	03 02 21 10	07 06 49 06	05 14 00 05	11 25 16 27	10 15 43 12	08 20 59 20	2
3	01 18 03 15	07 21 58 36	01 21 12 53	01 13 05 34	03 22 50 06	03 03 20 28	07 06 44 45	05 13 49 41	11 25 18 50	10 15 43 32	08 20 58 09	3
4	01 19 00 42	08 05 25 42	01 21 54 15	01 12 35 35	03 22 58 46	03 04 19 21	07 06 40 26	05 13 38 53	11 25 21 11	10 15 43 49	08 20 56 57	4
5	01 19 58 09	08 19 06 46	01 22 35 34	01 12 07 53	03 23 07 33	03 05 17 50	07 06 36 08	05 13 28 47	11 25 23 30	10 15 44 04	08 20 55 44	5
6	01 20 55 34	09 02 58 41	01 23 16 51	01 11 42 55	03 23 16 26	03 06 15 54	07 06 31 51	05 13 20 23	11 25 25 47	10 15 44 18	08 20 54 30	6
7	01 21 52 59	09 16 58 13	01 23 58 05	01 11 21 04	03 23 25 25	03 07 13 32	07 06 27 37	05 13 14 18	11 25 28 01	10 15 44 29	08 20 53 15	7
8	01 22 50 23	10 01 02 32	01 24 39 17	01 11 02 43	03 23 34 31	03 08 10 43	07 06 23 24	05 13 10 43	11 25 30 14	10 15 44 39	08 20 51 59	8
9	01 23 47 46	10 15 09 25	01 25 20 26	01 10 48 09	03 23 43 43	03 09 07 26	07 06 19 14	05 13 09 20	11 25 32 24	10 15 44 46	08 20 50 42	9
10	01 24 45 09	10 29 17 21	01 26 01 33	01 10 37 36	03 23 53 01	03 10 03 41	07 06 15 05	05 13 09 21	11 25 34 31	10 15 44 52	08 20 49 24	10
11	01 25 42 31	11 13 25 12	01 26 42 37	मा.01 10 31 17	03 24 02 25	03 10 59 26	07 06 10 59	05 13 09 42	11 25 36 37	10 15 44 55	08 20 48 06	11
12	01 26 39 53	11 27 31 53	01 27 23 38	01 10 29 19	03 24 11 55	03 11 54 42	07 06 06 56	05 13 09 14	11 25 38 40	10 15 44 57	08 20 46 46	12
13	01 27 37 15	00 11 35 53	01 28 04 37	01 10 31 50	03 24 21 31	03 12 49 26	07 06 02 55	05 13 06 53	11 25 40 41	10 15 44 56	08 20 45 26	13
14	01 28 34 36	00 25 35 00	01 28 45 34	01 10 38 52	03 24 31 13	03 13 43 38	07 05 58 57	05 13 02 00	11 25 42 39	व.10 15 44 54	08 20 44 05	14
15	01 29 31 56	01 09 26 19	01 29 26 28	01 10 50 28	03 24 41 00	03 14 37 16	07 05 55 01	05 12 54 21	11 25 44 35	10 15 44 50	08 20 42 43	15
16	02 00 29 16	01 23 06 34	02 00 07 20	01 11 06 37	03 24 50 54	03 15 30 20	07 05 51 09	05 12 44 17	11 25 46 29	10 15 44 44	08 20 41 21	16
17	02 01 26 35	02 06 32 31	02 00 48 09	01 11 27 20	03 25 00 53	03 16 22 48	07 05 47 20	05 12 32 33	11 25 48 20	10 15 44 36	08 20 39 58	17
18	02 02 23 54	02 19 41 38	02 01 28 55	01 11 52 32	03 25 10 57	03 17 14 39	07 05 43 34	05 12 20 17	11 25 50 09	10 15 44 25	08 20 38 34	18
19	02 03 21 12	03 02 32 34	02 02 09 39	01 12 22 13	03 25 21 06	03 18 05 51	07 05 39 51	05 12 08 41	11 25 51 55	10 15 44 13	08 20 37 10	19
20	02 04 18 30	03 15 05 24	02 02 50 21	01 12 56 17	03 25 31 21	03 18 56 23	07 05 36 12	05 11 58 51	11 25 53 38	10 15 44 00	08 20 35 45	20
21	02 05 15 47	03 27 21 45	02 03 31 00	01 13 34 41	03 25 41 41	03 19 46 13	07 05 32 36	05 11 51 31	11 25 55 19	10 15 43 44	08 20 34 19	21
22	02 06 13 03	04 09 24 34	02 04 11 36	01 14 17 22	03 25 52 06	03 20 35 20	07 05 29 04	05 11 46 55	11 25 56 58	10 15 43 26	08 20 32 53	22
23	02 07 10 18	04 21 17 56	02 04 52 10	01 15 04 15	03 26 02 36	03 21 23 41	07 05 25 35	05 11 44 46	11 25 58 34	10 15 43 06	08 20 31 27	23
24	02 08 07 33	05 03 06 42	02 05 32 41	01 15 55 15	03 26 13 10	03 22 11 16	07 05 22 10	05 11 44 18	11 26 00 07	10 15 42 45	08 20 30 00	24
25	02 09 04 47	05 14 56 12	02 06 13 09	01 16 50 20	03 26 23 50	03 22 58 02	07 05 18 50	05 11 44 23	11 26 01 38	10 15 42 21	08 20 28 32	25
26	02 10 02 01	05 26 51 53	02 06 53 36	01 17 49 25	03 26 34 34	03 23 43 57	07 05 15 33	05 11 43 49	11 26 03 06	10 15 41 56	08 20 27 05	26
27	02 10 59 13	06 08 59 04	02 07 33 59	01 18 52 27	03 26 45 22	03 24 29 00	07 05 12 21	05 11 41 29	11 26 04 31	10 15 41 29	08 20 25 37	27
28	02 11 56 26	06 21 22 28	02 08 14 20	01 19 59 23	03 26 56 15	03 25 13 08	07 05 09 12	05 11 36 38	11 26 05 53	10 15 41 00	08 20 24 08	28
29	02 12 53 38	07 04 05 46	02 08 54 39	01 21 10 09	03 27 07 13	03 25 56 19	07 05 06 08	05 11 29 00	11 26 07 13	10 15 40 29	08 20 22 40	29
30	02 13 50 49	07 17 11 15	02 09 34 55	01 22 24 43	03 27 18 15	03 26 38 31	07 05 03 08	05 11 18 50	11 26 08 31	10 15 39 57	08 20 21 11	30

जुलाई सन् 2015 ई. प्रात:कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।04'।26''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुला.
1	02 14 48 01	08 00 39 14	02 10 15 09	01 23 43 02	03 27 29 20	03 27 19 42	07 05 00 13	05 11 06 56	11 26 09 45	10 15 39 22	08 20 19 41	1
2	02 15 45 12	08 14 28 01	02 10 55 20	01 25 05 03	03 27 40 31	03 27 59 50	07 04 57 22	05 10 54 23	11 26 10 57	10 15 38 46	08 20 18 12	2
3	02 16 42 23	08 28 33 52	02 11 35 29	01 26 30 43	03 27 51 45	03 28 38 52	07 04 54 36	05 10 42 25	11 26 12 06	10 15 38 08	08 20 16 43	3
4	02 17 39 34	09 12 51 39	02 12 15 36	01 28 00 01	03 28 03 03	03 29 16 45	07 04 51 54	05 10 32 10	11 26 13 12	10 15 37 29	08 20 15 13	4
5	02 18 36 45	09 27 15 37	02 12 55 41	01 29 32 52	03 28 14 25	03 29 53 28	07 04 49 18	05 10 24 24	11 26 14 16	10 15 36 47	08 20 13 44	5
6	02 19 33 56	10 11 40 19	02 13 35 43	02 01 09 13	03 28 25 51	04 00 28 57	07 04 46 45	05 10 19 26	11 26 15 16	10 15 36 04	08 20 12 14	6
7	02 20 31 08	10 26 01 21	02 14 15 44	02 02 48 58	03 28 37 20	04 01 03 10	07 04 44 18	05 10 17 02	11 26 16 14	10 15 35 19	08 20 10 44	7
8	02 21 28 19	11 10 15 46	02 14 55 42	02 04 32 04	03 28 48 53	04 01 36 04	07 04 41 56	05 10 16 28	11 26 17 09	10 15 34 33	08 20 09 14	8
9	02 22 25 32	11 24 21 55	02 15 35 38	02 06 18 24	03 29 00 30	04 02 07 36	07 04 39 38	05 10 16 40	11 26 18 01	10 15 33 44	08 20 07 44	9
10	02 23 22 44	00 08 19 04	02 16 15 32	02 08 07 49	03 29 12 11	04 02 37 44	07 04 37 26	05 10 16 25	11 26 18 51	10 15 32 54	08 20 06 15	10
11	02 24 19 57	00 22 06 53	02 16 55 23	02 10 00 11	03 29 23 55	04 03 06 23	07 04 35 18	05 10 14 39	11 26 19 37	10 15 32 03	08 20 04 45	11
12	02 25 17 11	01 05 45 00	02 17 35 13	02 11 55 19	03 29 35 42	04 03 33 32	07 04 33 16	05 10 10 33	11 26 20 21	10 15 31 10	08 20 03 15	12
13	02 26 14 25	01 19 12 47	02 18 15 01	02 13 53 00	03 29 47 33	04 03 59 06	07 04 31 19	05 10 03 49	11 26 21 01	10 15 30 15	08 20 01 46	13
14	02 27 11 39	02 02 29 14	02 18 54 46	02 15 53 01	03 29 59 27	04 04 23 03	07 04 29 28	05 09 54 39	11 26 21 39	10 15 29 18	08 20 00 17	14
15	02 28 08 54	02 15 33 10	02 19 34 30	02 17 55 06	04 00 11 24	04 04 45 19	07 04 27 42	05 09 43 46	11 26 22 14	10 15 28 21	08 19 58 48	15
16	02 29 06 09	02 28 23 31	02 20 14 11	02 19 58 57	04 00 23 25	04 05 05 49	07 04 26 01	05 09 32 10	11 26 22 46	10 15 27 21	08 19 57 20	16
17	03 00 03 25	03 10 59 39	02 20 53 50	02 22 04 17	04 00 35 28	04 05 24 31	07 04 24 25	05 09 21 02	11 26 23 15	10 15 26 20	08 19 55 52	17
18	03 01 00 40	03 23 21 41	02 21 33 27	02 24 10 48	04 00 47 34	04 05 41 21	07 04 22 56	05 09 11 27	11 26 23 41	10 15 25 18	08 19 54 24	18
19	03 01 57 57	04 05 30 46	02 22 13 02	02 26 18 11	04 00 59 43	04 05 56 15	07 04 21 31	05 09 04 11	11 26 24 04	10 15 24 14	08 19 52 56	19
20	03 02 55 13	04 17 29 05	02 22 52 35	02 28 26 07	04 01 11 55	04 06 09 09	07 04 20 12	05 08 59 35	11 26 24 25	10 15 23 08	08 19 51 29	20
21	03 03 52 30	04 29 19 51	02 23 32 05	03 00 34 18	04 01 24 10	04 06 20 00	07 04 18 59	05 08 57 29	11 26 24 42	10 15 22 01	08 19 50 02	21
22	03 04 49 47	05 11 07 08	02 24 11 34	03 02 42 27	04 01 36 27	04 06 28 44	07 04 17 52	05 08 57 14	11 26 24 56	10 15 20 53	08 19 48 36	22
23	03 05 47 04	05 22 55 41	02 24 51 00	03 04 50 18	04 01 48 46	04 06 35 17	07 04 16 50	05 08 57 52	11 26 25 08	10 15 19 44	08 19 47 10	23
24	03 06 44 22	06 04 50 40	02 25 30 24	03 06 57 38	04 02 01 08	04 06 39 38	07 04 15 54	05 08 58 17	11 26 25 16	10 15 18 33	08 19 45 45	24
25	03 07 41 39	06 16 57 30	02 26 09 45	03 09 04 13	04 02 13 32	व.04 06 41 42	07 04 15 03	05 08 57 28	11 26 25 22	10 15 17 20	08 19 44 21	25
26	03 08 38 58	06 29 21 21	02 26 49 05	03 11 09 52	04 02 25 59	04 06 41 27	07 04 14 19	05 08 54 40	11 26 25 24	10 15 16 07	08 19 42 57	26
27	03 09 36 16	07 12 06 44	02 27 28 23	03 13 14 26	04 02 38 28	04 06 38 52	07 04 13 40	05 08 49 32	11 26 25 24	10 15 14 52	08 19 41 33	27
28	03 10 33 35	07 25 16 56	02 28 07 38	03 15 17 47	04 02 50 59	04 06 33 54	07 04 13 06	05 08 42 14	व.11 26 25 21	10 15 13 36	08 19 40 11	28
29	03 11 30 55	08 08 53 23	02 28 46 52	03 17 19 48	04 03 03 32	04 06 26 32	07 04 12 39	05 08 33 21	11 26 25 15	10 15 12 19	08 19 38 49	29
30	03 12 28 15	08 22 55 06	02 29 26 03	03 19 20 25	04 03 16 07	04 06 16 46	07 04 12 17	05 08 23 45	11 26 25 06	10 15 11 00	08 19 37 27	30
31	03 13 25 36	09 07 18 33	03 00 05 13	03 21 19 34	04 03 28 44	04 06 04 37	07 04 12 01	05 08 14 29	11 26 24 54	10 15 09 41	08 19 36 07	31

अगस्त सन् 2015 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।04'।30''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अग.
1	03 14 22 57	09 21 57 52	03 00 44 21	03 23 17 12	04 03 41 22	04 05 50 04	07 04 11 51	05 08 06 31	11 26 24 39	10 15 08 20	08 19 34 47	1
2	03 15 20 20	10 06 45 35	03 01 23 26	03 25 13 16	04 03 54 03	04 05 33 11	07 04 11 47	05 08 00 34	11 26 24 22	10 15 06 58	08 19 33 28	2
3	03 16 17 43	10 21 33 55	03 02 02 30	03 27 07 46	04 04 06 45	04 05 14 00	मा.07 04 11 48	05 07 56 56	11 26 24 01	10 15 05 35	08 19 32 10	3
4	03 17 15 08	11 06 15 53	03 02 41 32	03 29 00 40	04 04 19 29	04 04 52 35	07 04 11 56	05 07 55 32	11 26 23 37	10 15 04 12	08 19 30 53	4
5	03 18 12 33	11 20 46 09	03 03 20 33	04 00 51 58	04 04 32 14	04 04 29 01	07 04 12 09	05 07 55 51	11 26 23 11	10 15 02 47	08 19 29 37	5
6	03 19 10 00	00 05 01 26	03 03 59 31	04 02 41 41	04 04 45 01	04 04 03 23	07 04 12 27	05 07 57 03	11 26 22 42	10 15 01 21	08 19 28 21	6
7	03 20 07 28	00 19 00 14	03 04 38 28	04 04 29 48	04 04 57 50	04 03 35 49	07 04 12 52	05 07 58 13	11 26 22 10	10 14 59 54	08 19 27 07	7
8	03 21 04 57	01 02 42 24	03 05 17 23	04 06 16 20	04 05 10 40	04 03 06 26	07 04 13 23	05 07 58 27	11 26 21 35	10 14 58 26	08 19 25 53	8
9	03 22 02 28	01 16 08 30	03 05 56 16	04 08 01 17	04 05 23 31	04 02 35 24	07 04 13 59	05 07 57 08	11 26 20 58	10 14 56 58	08 19 24 41	9
10	03 23 00 00	01 29 19 29	03 06 35 08	04 09 44 40	04 05 36 24	04 02 02 53	07 04 14 41	05 07 53 57	11 26 20 17	10 14 55 28	08 19 23 29	10
11	03 23 57 33	02 12 16 22	03 07 13 58	04 11 26 31	04 05 49 18	04 01 29 04	07 04 15 29	05 07 48 58	11 26 19 34	10 14 53 58	08 19 22 19	11
12	03 24 55 08	02 25 00 05	03 07 52 46	04 13 06 49	04 06 02 13	04 00 54 08	07 04 16 23	05 07 42 40	11 26 18 48	10 14 52 27	08 19 21 09	12
13	03 25 52 44	03 07 31 27	03 08 31 32	04 14 45 35	04 06 15 09	04 00 18 17	07 04 17 23	05 07 35 44	11 26 17 59	10 14 50 55	08 19 20 01	13
14	03 26 50 22	03 19 51 16	03 09 10 17	04 16 22 49	04 06 28 07	03 29 41 45	07 04 18 28	05 07 29 02	11 26 17 08	10 14 49 23	08 19 18 54	14
15	03 27 48 00	04 02 00 31	03 09 49 00	04 17 58 33	04 06 41 05	03 29 04 46	07 04 19 40	05 07 23 18	11 26 16 13	10 14 47 50	08 19 17 48	15
16	03 28 45 40	04 14 00 31	03 10 27 41	04 19 32 45	04 06 54 04	03 28 27 33	07 04 20 57	05 07 19 09	11 26 15 16	10 14 46 16	08 19 16 44	16
17	03 29 43 21	04 25 53 09	03 11 06 20	04 21 05 26	04 07 07 03	03 27 50 21	07 04 22 20	05 07 16 50	11 26 14 17	10 14 44 41	08 19 15 40	17
18	04 00 41 03	05 07 40 56	03 11 44 57	04 22 36 36	04 07 20 04	03 27 13 23	07 04 23 48	05 07 16 17	11 26 13 14	10 14 43 06	08 19 14 38	18
19	04 01 38 46	05 19 27 04	03 12 23 33	04 24 06 15	04 07 33 05	03 26 36 54	07 04 25 23	05 07 17 07	11 26 12 09	10 14 41 31	08 19 13 37	19
20	04 02 36 31	06 01 15 18	03 13 02 06	04 25 34 20	04 07 46 06	03 26 01 07	07 04 27 03	05 07 18 43	11 26 11 02	10 14 39 55	08 19 12 37	20
21	04 03 34 16	06 13 09 59	03 13 40 38	04 27 00 53	04 07 59 08	03 25 26 15	07 04 28 49	05 07 20 22	11 26 09 52	10 14 38 18	08 19 11 39	21
22	04 04 32 03	06 25 15 50	03 14 19 08	04 28 25 51	04 08 12 10	03 24 52 32	07 04 30 40	05 07 21 25	11 26 08 39	10 14 36 41	08 19 10 42	22
23	04 05 29 51	07 07 37 46	03 14 57 36	04 29 49 14	04 08 25 13	03 24 20 08	07 04 32 37	05 07 21 21	11 26 07 24	10 14 35 04	08 19 09 47	23
24	04 06 27 39	07 20 20 28	03 15 36 02	05 01 10 59	04 08 38 16	03 23 49 16	07 04 34 40	05 07 19 57	11 26 06 06	10 14 33 27	08 19 08 52	24
25	04 07 25 29	08 03 27 53	03 16 14 27	05 02 31 05	04 08 51 18	03 23 20 04	07 04 36 48	05 07 17 16	11 26 04 46	10 14 31 49	08 19 08 00	25
26	04 08 23 21	08 17 02 35	03 16 52 50	05 03 49 28	04 09 04 22	03 22 52 43	07 04 39 02	05 07 13 38	11 26 03 24	10 14 30 11	08 19 07 08	26
27	04 09 21 13	09 01 05 03	03 17 31 11	05 05 06 06	04 09 17 25	03 22 27 20	07 04 41 21	05 07 09 33	11 26 01 59	10 14 28 32	08 19 06 18	27
28	04 10 19 07	09 15 33 12	03 18 09 30	05 06 20 56	04 09 30 28	03 22 04 03	07 04 43 45	05 07 05 35	11 26 00 31	10 14 26 54	08 19 05 30	28
29	04 11 17 02	10 00 22 07	03 18 47 48	05 07 33 53	04 09 43 31	03 21 42 56	07 04 46 15	05 07 02 17	11 25 59 02	10 14 25 15	08 19 04 43	29
30	04 12 14 59	10 15 24 29	03 19 26 04	05 08 44 53	04 09 56 33	03 21 24 06	07 04 48 51	05 07 00 02	11 25 57 30	10 14 23 36	08 19 03 57	30
31	04 13 12 57	11 00 31 24	03 20 04 18	05 09 53 52	04 10 09 36	03 21 07 36	07 04 51 31	05 06 59 01	11 25 55 56	10 14 21 57	08 19 03 13	31

सितम्बर सन् 2015 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°04'33''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सितं.
1	04 14 10 57	11 15 33 47	03 20 42 31	05 11 00 43	04 10 22 38	03 20 53 28	07 04 54 17	05 06 59 09	11 25 54 19	10 14 20 18	08 19 02 31	1
2	04 15 08 59	00 00 23 39	03 21 20 42	05 12 05 21	04 10 35 40	03 20 41 45	07 04 57 09	05 07 00 11	11 25 52 41	10 14 18 39	08 19 01 50	2
3	04 16 07 03	00 14 55 09	03 21 58 52	05 13 07 38	04 10 48 41	03 20 32 27	07 05 00 05	05 07 01 43	11 25 51 00	10 14 17 00	08 19 01 10	3
4	04 17 05 08	00 29 04 49	03 22 37 00	05 14 07 27	04 11 01 42	03 20 25 36	07 05 03 07	05 07 03 16	11 25 49 17	10 14 15 21	08 19 00 33	4
5	04 18 03 16	01 12 51 28	03 23 15 07	05 15 04 39	04 11 14 43	03 20 21 09	07 05 06 14	05 07 04 28	11 25 47 32	10 14 13 42	08 18 59 56	5
6	04 19 01 25	01 26 15 39	03 23 53 13	05 15 59 03	04 11 27 43	मा.03 20 19 07	07 05 09 26	05 07 05 01	11 25 45 45	10 14 12 04	08 18 59 22	6
7	04 19 59 37	02 09 19 06	03 24 31 16	05 16 50 31	04 11 40 42	03 20 19 27	07 05 12 43	05 07 04 49	11 25 43 57	10 14 10 25	08 18 58 49	7
8	04 20 57 50	02 22 04 15	03 25 09 19	05 17 38 48	04 11 53 41	03 20 22 06	07 05 16 05	05 07 03 55	11 25 42 06	10 14 08 47	08 18 58 18	8
9	04 21 56 06	03 04 33 47	03 25 47 20	05 18 23 44	04 12 06 38	03 20 27 04	07 05 19 33	05 07 02 31	11 25 40 13	10 14 07 09	08 18 57 48	9
10	04 22 54 24	03 16 50 25	03 26 25 19	05 19 05 02	04 12 19 35	03 20 34 15	07 05 23 05	05 07 00 56	11 25 38 18	10 14 05 31	08 18 57 20	10
11	04 23 52 43	03 28 56 39	03 27 03 17	05 19 42 29	04 12 32 31	03 20 43 38	07 05 26 42	05 06 59 28	11 25 36 22	10 14 03 54	08 18 56 54	11
12	04 24 51 05	04 10 54 46	03 27 41 13	05 20 15 46	04 12 45 26	03 20 55 09	07 05 30 24	05 06 58 21	11 25 34 23	10 14 02 17	08 18 56 29	12
13	04 25 49 28	04 22 46 54	03 28 19 07	05 20 44 37	04 12 58 20	03 21 08 45	07 05 34 12	05 06 57 45	11 25 32 23	10 14 00 40	08 18 56 07	13
14	04 26 47 53	05 04 35 10	03 28 57 00	05 21 08 42	04 13 11 12	03 21 24 21	07 05 38 03	05 06 57 40	11 25 30 22	10 13 59 04	08 18 55 46	14
15	04 27 46 21	05 16 21 48	03 29 34 52	05 21 27 41	04 13 24 03	03 21 41 55	07 05 42 00	05 06 58 03	11 25 28 18	10 13 57 28	08 18 55 26	15
16	04 28 44 49	05 28 09 16	04 00 12 41	05 21 41 14	04 13 36 53	03 22 01 22	07 05 46 01	05 06 58 43	11 25 26 13	10 13 55 53	08 18 55 09	16
17	04 29 43 20	06 10 00 20	04 00 50 29	व.05 21 48 59	04 13 49 41	03 22 22 40	07 05 50 07	05 06 59 28	11 25 24 07	10 13 54 18	08 18 54 53	17
18	05 00 41 52	06 21 58 08	04 01 28 15	05 21 50 37	04 14 02 27	03 22 45 43	07 05 54 18	05 07 00 08	11 25 21 59	10 13 52 44	08 18 54 39	18
19	05 01 40 26	07 04 06 08	04 02 06 00	05 21 45 47	04 14 15 12	03 23 10 30	07 05 58 33	05 07 00 35	11 25 19 50	10 13 51 11	08 18 54 26	19
20	05 02 39 02	07 16 28 12	04 02 43 43	05 21 34 13	04 14 27 56	03 23 36 56	07 06 02 53	05 07 00 50	11 25 17 39	10 13 49 38	08 18 54 16	20
21	05 03 37 39	07 29 08 16	04 03 21 24	05 21 15 40	04 14 40 37	03 24 04 58	07 06 07 17	05 07 00 54	11 25 15 27	10 13 48 06	08 18 54 07	21
22	05 04 36 18	08 12 10 06	04 03 59 03	05 20 50 02	04 14 53 16	03 24 34 33	07 06 11 46	05 07 00 54	11 25 13 14	10 13 46 35	08 18 54 00	22
23	05 05 34 59	08 25 36 44	04 04 36 41	05 20 17 14	04 15 05 54	03 25 05 37	07 06 16 19	05 07 00 57	11 25 10 59	10 13 45 04	08 18 53 55	23
24	05 06 33 41	09 09 29 54	04 05 14 17	05 19 37 26	04 15 18 29	03 25 38 08	07 06 20 56	05 07 01 09	11 25 08 44	10 13 43 35	08 18 53 52	24
25	05 07 32 25	09 23 49 24	04 05 51 52	05 18 50 54	04 15 31 03	03 26 12 03	07 06 25 37	05 07 01 31	11 25 06 27	10 13 42 06	08 18 53 50	25
26	05 08 31 11	10 08 32 35	04 06 29 24	05 17 58 09	04 15 43 34	03 26 47 19	07 06 30 23	05 07 02 00	11 25 04 10	10 13 40 38	08 18 53 51	26
27	05 09 29 59	10 23 34 02	04 07 06 56	05 16 59 58	04 15 56 03	03 27 23 52	07 06 35 12	05 07 02 29	11 25 01 51	10 13 39 11	08 18 53 53	27
28	05 10 28 48	11 08 45 53	04 07 44 25	05 15 57 21	04 16 08 29	03 28 01 41	07 06 40 06	05 07 02 49	11 24 59 31	10 13 37 45	मा.08 18 53 57	28
29	05 11 27 40	11 23 58 43	04 08 21 54	05 14 51 33	04 16 20 54	03 28 40 43	07 06 45 03	05 07 02 50	11 24 57 11	10 13 36 19	08 18 54 02	29
30	05 12 26 33	00 09 02 56	04 08 59 20	05 13 44 04	04 16 33 15	03 29 20 54	07 06 50 05	05 07 02 27	11 24 54 49	10 13 34 55	08 18 54 10	30

अक्टूबर सन् 2015 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।04'।36''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
1	05 13 25 29	00 23 50 05	04 09 36 46	05 12 36 32	04 16 45 35	04 00 02 14	07 06 55 10	05 07 01 40	11 24 52 27	10 13 33 32	08 18 54 19	1
2	05 14 24 27	01 08 14 05	04 10 14 09	05 11 30 44	04 16 57 51	04 00 44 39	07 07 00 19	05 07 00 34	11 24 50 05	10 13 32 10	08 18 54 30	2
3	05 15 23 27	01 22 11 35	04 10 51 32	05 10 28 27	04 17 10 05	04 01 28 06	07 07 05 33	05 06 59 22	11 24 47 42	10 13 30 50	08 18 54 44	3
4	05 16 22 30	02 05 41 56	04 11 28 52	05 09 31 25	04 17 22 17	04 02 12 34	07 07 10 49	05 06 58 17	11 24 45 18	10 13 29 30	08 18 54 58	4
5	05 17 21 34	02 18 46 36	04 12 06 12	05 08 41 12	04 17 34 25	04 02 58 01	07 07 16 10	05 06 57 35	11 24 42 53	10 13 28 11	08 18 55 15	5
6	05 18 20 42	03 01 28 34	04 12 43 30	05 07 59 10	04 17 46 31	04 03 44 23	07 07 21 34	05 06 57 28	11 24 40 28	10 13 26 54	08 18 55 34	6
7	05 19 19 51	03 13 51 41	04 13 20 46	05 07 26 24	04 17 58 33	04 04 31 40	07 07 27 02	05 06 57 58	11 24 38 03	10 13 25 38	08 18 55 54	7
8	05 20 19 03	03 26 00 06	04 13 58 01	05 07 03 43	04 18 10 32	04 05 19 48	07 07 32 33	05 06 59 01	11 24 35 38	10 13 24 23	08 18 56 16	8
9	05 21 18 17	04 07 57 55	04 14 35 14	मा.05 06 51 35	04 18 22 29	04 06 08 47	07 07 38 08	05 07 00 23	11 24 33 12	10 13 23 10	08 18 56 40	9
10	05 22 17 33	04 19 48 52	04 15 12 25	05 06 50 13	04 18 34 21	04 06 58 34	07 07 43 46	05 07 01 43	11 24 30 46	10 13 21 58	08 18 57 06	10
11	05 23 16 52	05 01 36 18	04 15 49 35	05 06 59 34	04 18 46 11	04 07 49 07	07 07 49 28	05 07 02 37	11 24 28 19	10 13 20 47	08 18 57 34	11
12	05 24 16 12	05 13 23 06	04 16 26 43	05 07 19 20	04 18 57 57	04 08 40 25	07 07 55 13	05 07 02 44	11 24 25 53	10 13 19 37	08 18 58 04	12
13	05 25 15 35	05 25 11 46	04 17 03 50	05 07 49 02	04 19 09 39	04 09 32 26	07 08 01 01	05 07 01 49	11 24 23 27	10 13 18 29	08 18 58 35	13
14	05 26 15 00	06 07 04 29	04 17 40 55	05 08 28 04	04 19 21 17	04 10 25 09	07 08 06 52	05 06 59 49	11 24 21 00	10 13 17 23	08 18 59 08	14
15	05 27 14 27	06 19 03 13	04 18 17 58	05 09 15 44	04 19 32 52	04 11 18 31	07 08 12 47	05 06 56 52	11 24 18 34	10 13 16 18	08 18 59 43	15
16	05 28 13 55	07 01 09 54	04 18 54 59	05 10 11 14	04 19 44 23	04 12 12 33	07 08 18 44	05 06 53 19	11 24 16 08	10 13 15 14	08 19 00 20	16
17	05 29 13 26	07 13 26 29	04 19 31 58	05 11 13 48	04 19 55 50	04 13 07 11	07 08 24 44	05 06 49 39	11 24 13 42	10 13 14 12	08 19 00 58	17
18	06 00 12 58	07 25 55 13	04 20 08 55	05 12 22 38	04 20 07 12	04 14 02 26	07 08 30 48	05 06 46 24	11 24 11 17	10 13 13 12	08 19 01 39	18
19	06 01 12 33	08 08 38 31	04 20 45 51	05 13 36 57	04 20 18 31	04 14 58 16	07 08 36 54	05 06 44 01	11 24 08 52	10 13 12 13	08 19 02 21	19
20	06 02 12 09	08 21 38 57	04 21 22 45	05 14 56 01	04 20 29 45	04 15 54 39	07 08 43 03	05 06 42 48	11 24 06 27	10 13 11 16	08 19 03 05	20
21	06 03 11 46	09 04 58 57	04 21 59 37	05 16 19 10	04 20 40 55	04 16 51 35	07 08 49 14	05 06 42 47	11 24 04 03	10 13 10 20	08 19 03 51	21
22	06 04 11 26	09 18 40 30	04 22 36 27	05 17 45 46	04 20 52 01	04 17 49 03	07 08 55 29	05 06 43 47	11 24 01 40	10 13 09 27	08 19 04 38	22
23	06 05 11 07	10 02 44 38	04 23 13 15	05 19 15 16	04 21 03 01	04 18 47 01	07 09 01 46	05 06 45 20	11 23 59 17	10 13 08 34	08 19 05 27	23
24	06 06 10 50	10 17 10 49	04 23 50 01	05 20 47 10	04 21 13 58	04 19 45 30	07 09 08 05	05 06 46 48	11 23 56 55	10 13 07 44	08 19 06 18	24
25	06 07 10 34	11 01 56 22	04 24 26 45	05 22 21 00	04 21 24 49	04 20 44 27	07 09 14 26	05 06 47 31	11 23 54 33	10 13 06 55	08 19 07 11	25
26	06 08 10 20	11 16 56 08	04 25 03 28	05 23 56 25	04 21 35 36	04 21 43 53	07 09 20 50	05 06 46 57	11 23 52 12	10 13 06 08	08 19 08 05	26
27	06 09 10 09	00 02 02 33	04 25 40 08	05 25 33 04	04 21 46 17	04 22 43 46	07 09 27 17	05 06 44 43	11 23 49 52	10 13 05 22	08 19 09 01	27
28	06 10 09 59	00 17 06 32	04 26 16 47	05 27 10 41	04 21 56 54	04 23 44 05	07 09 33 45	05 06 40 45	11 23 47 33	10 13 04 39	08 19 09 59	28
29	06 11 09 51	01 01 58 47	04 26 53 24	05 28 49 01	04 22 07 26	04 24 44 51	07 09 40 16	05 06 35 19	11 23 45 16	10 13 03 57	08 19 10 58	29
30	06 12 09 45	01 16 31 15	04 27 30 00	06 00 27 51	04 22 17 53	04 25 46 02	07 09 46 49	05 06 28 58	11 23 42 59	10 13 03 17	08 19 11 59	30
31	06 13 09 41	02 00 38 17	04 28 06 33	06 02 07 01	04 22 28 14	04 26 47 37	07 09 53 24	05 06 22 26	11 23 40 43	10 13 02 39	08 19 13 02	31

नवम्बर सन् 2015 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°04'39''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	नवं.
1	06 14 09 39	02 14 17 07	04 28 43 05	06 03 46 23	04 22 38 30	04 27 49 36	07 10 00 01	05 06 16 30	11 23 38 28	10 13 02 03	08 19 14 06	1
2	06 15 09 39	02 27 27 53	04 29 19 35	06 05 25 50	04 22 48 41	04 28 51 57	07 10 06 41	05 06 11 50	11 23 36 15	10 13 01 29	08 19 15 12	2
3	06 16 09 42	03 10 12 59	04 29 56 03	06 07 05 15	04 22 58 46	04 29 54 41	07 10 13 22	05 06 08 51	11 23 34 03	10 13 00 56	08 19 16 20	3
4	06 17 09 46	03 22 36 23	05 00 32 29	06 08 44 35	04 23 08 45	05 00 57 47	07 10 20 04	05 06 07 38	11 23 31 52	10 13 00 26	08 19 17 29	4
5	06 18 09 53	04 04 42 55	05 01 08 54	06 10 23 45	04 23 18 38	05 02 01 13	07 10 26 49	05 06 07 53	11 23 29 42	10 12 59 57	08 19 18 39	5
6	06 19 10 02	04 16 37 45	05 01 45 16	06 12 02 43	04 23 28 26	05 03 04 59	07 10 33 35	05 06 08 58	11 23 27 34	10 12 59 30	08 19 19 52	6
7	06 20 10 13	04 28 25 54	05 02 21 36	06 13 41 26	04 23 38 08	05 04 09 05	07 10 40 23	05 06 10 04	11 23 25 28	10 12 59 05	08 19 21 06	7
8	06 21 10 26	05 10 11 59	05 02 57 54	06 15 19 52	04 23 47 43	05 05 13 29	07 10 47 13	05 06 10 15	11 23 23 23	10 12 58 43	08 19 22 21	8
9	06 22 10 41	05 22 00 00	05 03 34 10	06 16 58 01	04 23 57 12	05 06 18 12	07 10 54 04	05 06 08 46	11 23 21 20	10 12 58 22	08 19 23 38	9
10	06 23 10 58	06 03 53 15	05 04 10 24	06 18 35 52	04 24 06 35	05 07 23 13	07 11 00 57	05 06 05 08	11 23 19 18	10 12 58 03	08 19 24 56	10
11	06 24 11 16	06 15 54 17	05 04 46 36	06 20 13 23	04 24 15 51	05 08 28 30	07 11 07 51	05 05 59 15	11 23 17 18	10 12 57 46	08 19 26 16	11
12	06 25 11 37	06 28 04 51	05 05 22 45	06 21 50 36	04 24 25 01	05 09 34 04	07 11 14 46	05 05 51 27	11 23 15 20	10 12 57 31	08 19 27 37	12
13	06 26 11 59	07 10 26 04	05 05 58 52	06 23 27 29	04 24 34 04	05 10 39 54	07 11 21 42	05 05 42 24	11 23 13 23	10 12 57 18	08 19 29 00	13
14	06 27 12 23	07 22 58 32	05 06 34 56	06 25 04 03	04 24 43 00	05 11 46 00	07 11 28 40	05 05 33 05	11 23 11 29	10 12 57 07	08 19 30 24	14
15	06 28 12 48	08 05 42 39	05 07 10 58	06 26 40 19	04 24 51 50	05 12 52 21	07 11 35 39	05 05 24 27	11 23 09 36	10 12 56 59	08 19 31 50	15
16	06 29 13 14	08 18 38 52	05 07 46 58	06 28 16 17	04 25 00 32	05 13 58 56	07 11 42 38	05 05 17 22	11 23 07 46	10 12 56 52	08 19 33 17	16
17	07 00 13 42	09 01 47 46	05 08 22 55	06 29 51 58	04 25 09 07	05 15 05 45	07 11 49 39	05 05 12 24	11 23 05 57	10 12 56 47	08 19 34 45	17
18	07 01 14 12	09 15 10 12	05 08 58 50	07 01 27 22	04 25 17 35	05 16 12 48	07 11 56 41	05 05 09 40	11 23 04 11	10 12 56 45	08 19 36 15	18
19	07 02 14 42	09 28 47 13	05 09 34 42	07 03 02 31	04 25 25 55	05 17 20 04	07 12 03 43	05 05 08 50	11 23 02 27	10 12 56 44	08 19 37 46	19
20	07 03 15 14	10 12 39 45	05 10 10 31	07 04 37 25	04 25 34 08	05 18 27 34	07 12 10 46	05 05 09 10	11 23 00 45	10 12 56 46	08 19 39 18	20
21	07 04 15 47	10 26 48 13	05 10 46 18	07 06 12 06	04 25 42 13	05 19 35 16	07 12 17 50	05 05 09 39	11 22 59 05	10 12 56 49	08 19 40 52	21
22	07 05 16 22	11 11 11 55	05 11 22 02	07 07 46 33	04 25 50 11	05 20 43 10	07 12 24 54	05 05 09 12	11 22 57 27	10 12 56 55	08 19 42 27	22
23	07 06 16 57	11 25 48 27	05 11 57 44	07 09 20 49	04 25 58 01	05 21 51 17	07 12 31 59	05 05 06 55	11 22 55 52	10 12 57 03	08 19 44 03	23
24	07 07 17 34	00 10 33 13	05 12 33 23	07 10 54 54	04 26 05 43	05 22 59 35	07 12 39 04	05 05 02 10	11 22 54 19	10 12 57 12	08 19 45 40	24
25	07 08 18 12	00 25 19 43	05 13 09 00	07 12 28 49	04 26 13 17	05 24 08 05	07 12 46 10	05 04 54 48	11 22 52 48	10 12 57 24	08 19 47 18	25
26	07 09 18 51	01 10 00 07	05 13 44 34	07 14 02 35	04 26 20 43	05 25 16 47	07 12 53 16	05 04 45 11	11 22 51 20	10 12 57 38	08 19 48 58	26
27	07 10 19 32	01 24 26 37	05 14 20 06	07 15 36 13	04 26 28 01	05 26 25 40	07 13 00 22	05 04 34 04	11 22 49 55	मा.10 12 57 54	08 19 50 39	27
28	07 11 20 14	02 08 32 35	05 14 55 35	07 17 09 43	04 26 35 11	05 27 34 43	07 13 07 29	05 04 22 31	11 22 48 31	10 12 58 12	08 19 52 20	28
29	07 12 20 57	02 22 13 43	05 15 31 01	07 18 43 07	04 26 42 13	05 28 43 57	07 13 14 36	05 04 11 42	11 22 47 11	10 12 58 32	08 19 54 03	29
30	07 13 21 42	03 05 28 21	05 16 06 24	07 20 16 26	04 26 49 06	05 29 53 21	07 13 21 43	05 04 02 36	11 22 45 53	10 12 58 54	08 19 55 47	30

दिसम्बर सन् 2015 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।04'।43''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
1	07 14 22 28	03 18 17 25	05 16 41 45	07 21 49 39	04 26 55 50	06 01 02 55	07 13 28 49	05 03 55 54	11 22 44 37	10 12 59 19	08 19 57 32	1
2	07 15 23 16	04 00 43 56	05 17 17 03	07 23 22 48	04 27 02 26	06 02 12 39	07 13 35 56	05 03 51 46	11 22 43 24	10 12 59 45	08 19 59 18	2
3	07 16 24 05	04 12 52 22	05 17 52 18	07 24 55 53	04 27 08 52	06 03 22 32	07 13 43 03	05 03 49 54	11 22 42 14	10 13 00 13	08 20 01 05	3
4	07 17 24 56	04 24 48 01	05 18 27 30	07 26 28 53	04 27 15 10	06 04 32 35	07 13 50 09	05 03 49 30	11 22 41 06	10 13 00 44	08 20 02 53	4
5	07 18 25 48	05 06 36 27	05 19 02 40	07 28 01 50	04 27 21 19	06 05 42 45	07 13 57 16	05 03 49 28	11 22 40 02	10 13 01 16	08 20 04 42	5
6	07 19 26 42	05 18 23 13	05 19 37 46	07 29 34 42	04 27 27 19	06 06 53 05	07 14 04 22	05 03 48 37	11 22 39 00	10 13 01 51	08 20 06 32	6
7	07 20 27 36	06 00 13 22	05 20 12 49	08 01 07 30	04 27 33 09	06 08 03 33	07 14 11 27	05 03 45 55	11 22 38 00	10 13 02 27	08 20 08 23	7
8	07 21 28 32	06 12 11 19	05 20 47 48	08 02 40 12	04 27 38 50	06 09 14 08	07 14 18 32	05 03 40 38	11 22 37 04	10 13 03 06	08 20 10 15	8
9	07 22 29 29	06 24 20 32	05 21 22 45	08 04 12 48	04 27 44 21	06 10 24 51	07 14 25 37	05 03 32 34	11 22 36 10	10 13 03 46	08 20 12 07	9
10	07 23 30 28	07 06 43 23	05 21 57 37	08 05 45 17	04 27 49 43	06 11 35 42	07 14 32 41	05 03 22 02	11 22 35 20	10 13 04 29	08 20 14 01	10
11	07 24 31 27	07 19 20 59	05 22 32 27	08 07 17 36	04 27 54 55	06 12 46 40	07 14 39 44	05 03 09 49	11 22 34 32	10 13 05 14	08 20 15 55	11
12	07 25 32 27	08 02 13 19	05 23 07 13	08 08 49 44	04 27 59 57	06 13 57 44	07 14 46 47	05 02 57 04	11 22 33 47	10 13 06 00	08 20 17 50	12
13	07 26 33 28	08 15 19 24	05 23 41 55	08 10 21 38	04 28 04 49	06 15 08 55	07 14 53 49	05 02 44 59	11 22 33 05	10 13 06 49	08 20 19 45	13
14	07 27 34 30	08 28 37 40	05 24 16 34	08 11 53 14	04 28 09 32	06 16 20 13	07 15 00 50	05 02 34 41	11 22 32 26	10 13 07 40	08 20 21 42	14
15	07 28 35 32	09 12 06 23	05 24 51 08	08 13 24 27	04 28 14 04	06 17 31 36	07 15 07 49	05 02 26 53	11 22 31 50	10 13 08 32	08 20 23 39	15
16	07 29 36 35	09 25 44 06	05 25 25 39	08 14 55 14	04 28 18 25	06 18 43 06	07 15 14 48	05 02 21 52	11 22 31 17	10 13 09 27	08 20 25 36	16
17	08 00 37 38	10 09 29 49	05 26 00 06	08 16 25 28	04 28 22 37	06 19 54 41	07 15 21 46	05 02 19 20	11 22 30 47	10 13 10 23	08 20 27 35	17
18	08 01 38 41	10 23 23 06	05 26 34 29	08 17 55 01	04 28 26 38	06 21 06 21	07 15 28 42	05 02 18 31	11 22 30 21	10 13 11 22	08 20 29 33	18
19	08 02 39 45	11 07 23 52	05 27 08 48	08 19 23 46	04 28 30 29	06 22 18 08	07 15 35 37	05 02 18 17	11 22 29 57	10 13 12 22	08 20 31 33	19
20	08 03 40 49	11 21 31 51	05 27 43 03	08 20 51 32	04 28 34 09	06 23 29 59	07 15 42 31	05 02 17 26	11 22 29 36	10 13 13 24	08 20 33 33	20
21	08 04 41 54	00 05 46 10	05 28 17 14	08 22 18 07	04 28 37 38	06 24 41 56	07 15 49 23	05 02 14 51	11 22 29 18	10 13 14 28	08 20 35 33	21
22	08 05 42 59	00 20 04 41	05 28 51 21	08 23 43 18	04 28 40 57	06 25 53 58	07 15 56 14	05 02 09 47	11 22 29 04	10 13 15 34	08 20 37 34	22
23	08 06 44 04	01 04 23 48	05 29 25 23	08 25 06 48	04 28 44 05	06 27 06 05	07 16 03 04	05 02 01 56	11 22 28 52	10 13 16 42	08 20 39 35	23
24	08 07 45 09	01 18 38 44	05 29 59 22	08 26 28 19	04 28 47 02	06 28 18 16	07 16 09 52	05 01 51 36	11 22 28 44	10 13 17 52	08 20 41 37	24
25	08 08 46 15	02 02 43 56	06 00 33 16	08 27 47 29	04 28 49 49	06 29 30 33	07 16 16 38	05 01 39 31	11 22 28 38	10 13 19 03	08 20 43 39	25
26	08 09 47 21	02 16 34 08	06 01 07 07	08 29 03 52	04 28 52 24	07 00 42 54	07 16 23 22	05 01 26 47	11 22 28 36	10 13 20 16	08 20 45 42	26
27	08 10 48 28	03 00 05 08	06 01 40 53	09 00 17 00	04 28 54 49	07 01 55 20	07 16 30 05	05 01 14 38	मा.11 22 28 37	10 13 21 32	08 20 47 44	27
28	08 11 49 34	03 13 14 31	06 02 14 34	09 01 26 19	04 28 57 02	07 03 07 51	07 16 36 46	05 01 04 11	11 22 28 41	10 13 22 48	08 20 49 48	28
29	08 12 50 42	03 26 01 54	06 02 48 11	09 02 31 14	04 28 59 05	07 04 20 25	07 16 43 25	05 00 56 11	11 22 28 48	10 13 24 07	08 20 51 51	29
30	08 13 51 49	04 08 28 54	06 03 21 44	09 03 31 01	04 29 00 56	07 05 33 04	07 16 50 02	05 00 50 59	11 22 28 58	10 13 25 27	08 20 53 55	30
31	08 14 52 57	04 20 38 47	06 03 55 12	09 04 24 57	04 29 02 36	07 06 45 47	07 16 56 36	05 00 48 20	11 22 29 12	10 13 26 49	08 20 55 58	31

जनवरी सन् 2016 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।04'।48"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
1	08 15 54 06	05 02 35 58	06 04 28 35	09 05 12 10	04 29 04 04	07 07 58 34	07 17 03 09	05 00 47 31	11 22 29 28	10 13 28 13	08 20 58 03	1
2	08 16 55 15	05 14 25 40	06 05 01 53	09 05 51 48	04 29 05 21	07 09 11 25	07 17 09 40	05 00 47 30	11 22 29 48	10 13 29 38	08 21 00 07	2
3	08 17 56 24	05 26 13 26	06 05 35 06	09 06 22 57	04 29 06 27	07 10 24 19	07 17 16 08	05 00 47 05	11 22 30 10	10 13 31 05	08 21 02 11	3
4	08 18 57 33	06 08 04 52	06 06 08 14	व.09 06 44 43	04 29 07 21	07 11 37 17	07 17 22 34	05 00 45 11	11 22 30 36	10 13 32 34	08 21 04 16	4
5	08 19 58 43	06 20 05 09	06 06 41 17	09 06 56 13	04 29 08 04	07 12 50 19	07 17 28 57	05 00 41 02	11 22 31 05	10 13 34 04	08 21 06 20	5
6	08 20 59 53	07 02 18 50	06 07 14 14	09 06 56 44	04 29 08 35	07 14 03 23	07 17 35 19	05 00 34 19	11 22 31 37	10 13 35 36	08 21 08 25	6
7	08 22 01 03	07 14 49 26	06 07 47 06	09 06 45 43	04 29 08 54	07 15 16 31	07 17 41 37	05 00 25 13	11 22 32 12	10 13 37 09	08 21 10 29	7
8	08 23 02 14	07 27 39 03	06 08 19 52	09 06 22 50	व.04 29 09 02	07 16 29 42	07 17 47 53	05 00 14 26	11 22 32 50	10 13 38 44	08 21 12 34	8
9	08 24 03 24	08 10 48 12	06 08 52 32	09 05 48 10	04 29 08 58	07 17 42 56	07 17 54 06	05 00 02 58	11 22 33 32	10 13 40 21	08 21 14 38	9
10	08 25 04 34	08 24 15 42	06 09 25 07	09 05 02 13	04 29 08 42	07 18 56 12	07 18 00 17	04 29 51 56	11 22 34 16	10 13 41 59	08 21 16 43	10
11	08 26 05 44	09 07 58 55	06 09 57 35	09 04 05 55	04 29 08 15	07 20 09 31	07 18 06 24	04 29 42 25	11 22 35 04	10 13 43 38	08 21 18 47	11
12	08 27 06 53	09 21 54 12	06 10 29 57	09 03 00 44	04 29 07 36	07 21 22 52	07 18 12 29	04 29 35 10	11 22 35 55	10 13 45 19	08 21 20 51	12
13	08 28 08 02	10 05 57 34	06 11 02 13	09 01 48 34	04 29 06 45	07 22 36 15	07 18 18 31	04 29 30 31	11 22 36 48	10 13 47 01	08 21 22 55	13
14	08 29 09 11	10 20 05 17	06 11 34 22	09 00 31 41	04 29 05 43	07 23 49 41	07 18 24 29	04 29 28 17	11 22 37 45	10 13 48 45	08 21 24 59	14
15	09 00 10 19	11 04 14 25	06 12 06 25	08 29 12 32	04 29 04 29	07 25 03 08	07 18 30 24	04 29 27 53	11 22 38 45	10 13 50 30	08 21 27 02	15
16	09 01 11 26	11 18 22 53	06 12 38 21	08 27 53 39	04 29 03 04	07 26 16 38	07 18 36 17	04 29 28 22	11 22 39 48	10 13 52 16	08 21 29 06	16
17	09 02 12 32	00 02 29 24	06 13 10 10	08 26 37 24	04 29 01 27	07 27 30 09	07 18 42 06	04 29 28 40	11 22 40 53	10 13 54 04	08 21 31 09	17
18	09 03 13 38	00 16 33 01	06 13 41 53	08 25 25 56	04 28 59 39	07 28 43 43	07 18 47 51	04 29 27 49	11 22 42 02	10 13 55 53	08 21 33 11	18
19	09 04 14 43	01 00 32 41	06 14 13 29	08 24 20 56	04 28 57 39	07 29 57 18	07 18 53 33	04 29 25 04	11 22 43 14	10 13 57 43	08 21 35 13	19
20	09 05 15 47	01 14 26 57	06 14 44 57	08 23 23 45	04 28 55 28	08 01 10 55	07 18 59 12	04 29 20 06	11 22 44 29	10 13 59 35	08 21 37 15	20
21	09 06 16 50	01 28 13 50	06 15 16 19	08 22 35 16	04 28 53 06	08 02 24 34	07 19 04 47	04 29 13 03	11 22 45 46	10 14 01 28	08 21 39 17	21
22	09 07 17 53	02 11 50 54	06 15 47 33	08 21 55 56	04 28 50 33	08 03 38 15	07 19 10 19	04 29 04 29	11 22 47 07	10 14 03 22	08 21 41 18	22
23	09 08 18 54	02 25 15 35	06 16 18 40	08 21 25 56	04 28 47 48	08 04 51 58	07 19 15 47	04 28 55 15	11 22 48 30	10 14 05 17	08 21 43 19	23
24	09 09 19 55	03 08 25 37	06 16 49 40	08 21 05 09	04 28 44 53	08 06 05 42	07 19 21 12	04 28 46 20	11 22 49 56	10 14 07 13	08 21 45 19	24
25	09 10 20 55	03 21 19 26	06 17 20 32	मा.08 20 53 18	04 28 41 47	08 07 19 28	07 19 26 33	04 28 38 39	11 22 51 25	10 14 09 10	08 21 47 18	25
26	09 11 21 55	04 03 56 36	06 17 51 17	08 20 49 56	04 28 38 30	08 08 33 16	07 19 31 49	04 28 32 53	11 22 52 57	10 14 11 08	08 21 49 17	26
27	09 12 22 53	04 16 17 51	06 18 21 53	08 20 54 31	04 28 35 02	08 09 47 05	07 19 37 02	04 28 29 20	11 22 54 32	10 14 13 08	08 21 51 16	27
28	09 13 23 51	04 28 25 17	06 18 52 22	08 21 06 32	04 28 31 23	08 11 00 56	07 19 42 12	04 28 27 54	11 22 56 09	10 14 15 08	08 21 53 13	28
29	09 14 24 49	05 10 22 01	06 19 22 42	08 21 25 23	04 28 27 34	08 12 14 48	07 19 47 17	04 28 28 06	11 22 57 49	10 14 17 09	08 21 55 11	29
30	09 15 25 45	05 22 12 10	06 19 52 54	08 21 50 31	04 28 23 34	08 13 28 42	07 19 52 18	04 28 29 10	11 22 59 32	10 14 19 12	08 21 57 07	30
31	09 16 26 41	06 04 00 24	06 20 22 57	08 22 21 22	04 28 19 24	08 14 42 37	07 19 57 15	04 28 30 13	11 23 01 18	10 14 21 15	08 21 59 03	31

फरवरी सन् 2016 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।04'।52"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फर.
1	09 17 27 36	06 15 51 53	06 20 52 51	08 22 57 28	04 28 15 04	08 15 56 34	07 20 02 08	04 28 30 26	11 23 03 06	10 14 23 19	08 22 00 58	1
2	09 18 28 31	06 27 51 50	06 21 22 36	08 23 38 20	04 28 10 33	08 17 10 32	07 20 06 56	04 28 29 11	11 23 04 57	10 14 25 24	08 22 02 53	2
3	09 19 29 25	07 10 05 19	06 21 52 12	08 24 23 32	04 28 05 53	08 18 24 31	07 20 11 40	04 28 26 12	11 23 06 51	10 14 27 30	08 22 04 46	3
4	09 20 30 18	07 22 36 49	06 22 21 38	08 25 12 40	04 28 01 03	08 19 38 32	07 20 16 20	04 28 21 33	11 23 08 47	10 14 29 36	08 22 06 39	4
5	09 21 31 10	08 05 29 45	06 22 50 54	08 26 05 24	04 27 56 04	08 20 52 33	07 20 20 56	04 28 15 41	11 23 10 45	10 14 31 44	08 22 08 31	5
6	09 22 32 01	08 18 46 05	06 23 20 00	08 27 01 24	04 27 50 55	08 22 06 36	07 20 25 27	04 28 09 15	11 23 12 47	10 14 33 52	08 22 10 23	6
7	09 23 32 51	09 02 25 51	06 23 48 56	08 28 00 24	04 27 45 37	08 23 20 39	07 20 29 53	04 28 03 01	11 23 14 50	10 14 36 01	08 22 12 13	7
8	09 24 33 40	09 16 27 00	06 24 17 42	08 29 02 08	04 27 40 10	08 24 34 43	07 20 34 15	04 27 57 41	11 23 16 57	10 14 38 11	08 22 14 02	8
9	09 25 34 28	10 00 45 31	06 24 46 16	09 00 06 22	04 27 34 34	08 25 48 48	07 20 38 32	04 27 53 49	11 23 19 05	10 14 40 21	08 22 15 51	9
10	09 26 35 14	10 15 15 51	06 25 14 39	09 01 12 56	04 27 28 49	08 27 02 54	07 20 42 44	04 27 51 39	11 23 21 17	10 14 42 32	08 22 17 38	10
11	09 27 35 59	10 29 51 45	06 25 42 51	09 02 21 38	04 27 22 57	08 28 17 00	07 20 46 52	04 27 51 05	11 23 23 30	10 14 44 43	08 22 19 25	11
12	09 28 36 43	11 14 27 06	06 26 10 51	09 03 32 18	04 27 16 56	08 29 31 06	07 20 50 54	04 27 51 48	11 23 25 46	10 14 46 55	08 22 21 10	12
13	09 29 37 25	11 28 56 46	06 26 38 40	09 04 44 50	04 27 10 47	09 00 45 13	07 20 54 52	04 27 53 12	11 23 28 04	10 14 49 08	08 22 22 55	13
14	10 00 38 05	00 13 16 53	06 27 06 17	09 05 59 04	04 27 04 31	09 01 59 21	07 20 58 45	04 27 54 40	11 23 30 24	10 14 51 21	08 22 24 38	14
15	10 01 38 44	00 27 24 59	06 27 33 41	09 07 14 56	04 26 58 07	09 03 13 29	07 21 02 32	04 27 55 35	11 23 32 47	10 14 53 34	08 22 26 20	15
16	10 02 39 21	01 11 19 43	06 28 00 54	09 08 32 19	04 26 51 37	09 04 27 37	07 21 06 15	04 27 55 31	11 23 35 12	10 14 55 48	08 22 28 01	16
17	10 03 39 56	01 25 00 34	06 28 27 53	09 09 51 09	04 26 45 00	09 05 41 46	07 21 09 53	04 27 54 15	11 23 37 39	10 14 58 02	08 22 29 41	17
18	10 04 40 29	02 08 27 26	06 28 54 40	09 11 11 22	04 26 38 16	09 06 55 55	07 21 13 25	04 27 51 52	11 23 40 08	10 15 00 17	08 22 31 20	18
19	10 05 41 01	02 21 40 30	06 29 21 14	09 12 32 53	04 26 31 26	09 08 10 04	07 21 16 52	04 27 48 40	11 23 42 39	10 15 02 32	08 22 32 58	19
20	10 06 41 31	03 04 40 02	06 29 47 35	09 13 55 40	04 26 24 30	09 09 24 14	07 21 20 14	04 27 45 04	11 23 45 13	10 15 04 47	08 22 34 35	20
21	10 07 41 59	03 17 26 23	07 00 13 42	09 15 19 40	04 26 17 29	09 10 38 24	07 21 23 31	04 27 41 36	11 23 47 48	10 15 07 03	08 22 36 10	21
22	10 08 42 26	03 29 59 58	07 00 39 35	09 16 44 51	04 26 10 22	09 11 52 35	07 21 26 43	04 27 38 44	11 23 50 25	10 15 09 19	08 22 37 44	22
23	10 09 42 51	04 12 21 26	07 01 05 15	09 18 11 11	04 26 03 10	09 13 06 45	07 21 29 49	04 27 36 47	11 23 53 05	10 15 11 35	08 22 39 17	23
24	10 10 43 14	04 24 31 53	07 01 30 39	09 19 38 37	04 25 55 54	09 14 20 57	07 21 32 50	04 27 35 53	11 23 55 46	10 15 13 51	08 22 40 48	24
25	10 11 43 36	05 06 32 56	07 01 55 49	09 21 07 10	04 25 48 33	09 15 35 08	07 21 35 45	04 27 35 57	11 23 58 29	10 15 16 07	08 22 42 19	25
26	10 12 43 56	05 18 26 47	07 02 20 44	09 22 36 49	04 25 41 07	09 16 49 21	07 21 38 35	04 27 36 47	11 24 01 14	10 15 18 24	08 22 43 48	26
27	10 13 44 15	06 00 16 19	07 02 45 23	09 24 07 31	04 25 33 38	09 18 03 33	07 21 41 20	04 27 38 00	11 24 04 00	10 15 20 40	08 22 45 15	27
28	10 14 44 32	06 12 04 56	07 03 09 47	09 25 39 17	04 25 26 05	09 19 17 46	07 21 43 58	04 27 39 14	11 24 06 49	10 15 22 57	08 22 46 41	28
29	10 15 44 47	06 23 56 38	07 03 33 54	09 27 12 07	04 25 18 29	09 20 31 59	07 21 46 32	04 27 40 09	11 24 09 39	10 15 25 14	08 22 48 06	29

मार्च सन् 2016 ई. प्रातःकालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारंभे स्पष्ट अयनांशा 24°।04'।56"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
1	10 16 45 01	07 05 55 50	07 03 57 44	09 28 46 00	04 25 10 50	09 21 46 13	07 21 48 59	04 27 40 32	11 24 12 31	10 15 27 30	08 22 49 30	1
2	10 17 45 14	07 18 07 10	07 04 21 17	10 00 20 57	04 25 03 09	09 23 00 26	07 21 51 21	04 27 40 20	11 24 15 25	10 15 29 47	08 22 50 52	2
3	10 18 45 25	08 00 35 16	07 04 44 32	10 01 56 56	04 24 55 25	09 24 14 41	07 21 53 38	04 27 39 35	11 24 18 20	10 15 32 04	08 22 52 12	3
4	10 19 45 35	08 13 24 19	07 05 07 30	10 03 34 00	04 24 47 39	09 25 28 55	07 21 55 48	04 27 38 31	11 24 21 16	10 15 34 20	08 22 53 31	4
5	10 20 45 43	08 26 37 37	07 05 30 08	10 05 12 08	04 24 39 52	09 26 43 10	07 21 57 53	04 27 37 20	11 24 24 15	10 15 36 36	08 22 54 49	5
6	10 21 45 49	09 10 17 00	07 05 52 28	10 06 51 20	04 24 32 03	09 27 57 24	07 21 59 52	04 27 36 16	11 24 27 15	10 15 38 53	08 22 56 05	6
7	10 22 45 54	09 24 22 18	07 06 14 28	10 08 31 37	04 24 24 13	09 29 11 39	07 22 01 45	04 27 35 30	11 24 30 16	10 15 41 09	08 22 57 20	7
8	10 23 45 57	10 08 50 59	07 06 36 08	10 10 13 01	04 24 16 23	10 00 25 53	07 22 03 32	04 27 35 07	11 24 33 19	10 15 43 24	08 22 58 33	8
9	10 24 45 58	10 23 37 58	07 06 57 28	10 11 55 31	04 24 08 33	10 01 40 08	07 22 05 13	04 27 35 05	11 24 36 23	10 15 45 40	08 22 59 44	9
10	10 25 45 57	11 08 36 04	07 07 18 26	10 13 39 08	04 24 00 43	10 02 54 22	07 22 06 49	04 27 35 19	11 24 39 28	10 15 47 55	08 23 00 54	10
11	10 26 45 55	11 23 36 54	07 07 39 03	10 15 23 54	04 23 52 53	10 04 08 36	07 22 08 18	04 27 35 39	11 24 42 35	10 15 50 10	08 23 02 02	11
12	10 27 45 50	00 08 32 04	07 07 59 19	10 17 09 48	04 23 45 04	10 05 22 50	07 22 09 41	04 27 35 57	11 24 45 43	10 15 52 25	08 23 03 09	12
13	10 28 45 43	00 23 14 18	07 08 19 12	10 18 56 52	04 23 37 16	10 06 37 04	07 22 10 59	04 27 36 07	11 24 48 52	10 15 54 39	08 23 04 14	13
14	10 29 45 33	01 07 38 21	07 08 38 42	10 20 45 07	04 23 29 31	10 07 51 17	07 22 12 10	04 27 36 07	11 24 52 02	10 15 56 53	08 23 05 18	14
15	11 00 45 22	01 21 41 09	07 08 57 49	10 22 34 32	04 23 21 46	10 09 05 30	07 22 13 16	04 27 36 01	11 24 55 14	10 15 59 06	08 23 06 19	15
16	11 01 45 08	02 05 21 49	07 09 16 33	10 24 25 08	04 23 14 05	10 10 19 43	07 22 14 15	04 27 35 53	11 24 58 26	10 16 01 19	08 23 07 20	16
17	11 02 44 53	02 18 41 03	07 09 34 52	10 26 16 55	04 23 06 26	10 11 33 55	07 22 15 09	04 27 35 52	11 25 01 40	10 16 03 31	08 23 08 18	17
18	11 03 44 34	03 01 40 43	07 09 52 47	10 28 09 53	04 22 58 49	10 12 48 07	07 22 15 56	04 27 36 03	11 25 04 54	10 16 05 43	08 23 09 15	18
19	11 04 44 14	03 14 23 15	07 10 10 17	11 00 04 02	04 22 51 16	10 14 02 19	07 22 16 38	04 27 36 30	11 25 08 10	10 16 07 54	08 23 10 10	19
20	11 05 43 51	03 26 51 18	07 10 27 22	11 01 59 21	04 22 43 47	10 15 16 30	07 22 17 13	04 27 37 08	11 25 11 26	10 16 10 05	08 23 11 04	20
21	11 06 43 26	04 09 07 25	07 10 44 00	11 03 55 47	04 22 36 21	10 16 30 41	07 22 17 42	04 27 37 50	11 25 14 43	10 16 12 15	08 23 11 55	21
22	11 07 42 59	04 21 13 59	07 11 00 12	11 05 53 19	04 22 28 59	10 17 44 52	07 22 18 06	04 27 38 26	11 25 18 01	10 16 14 24	08 23 12 46	22
23	11 08 42 30	05 03 13 09	07 11 15 56	11 07 51 54	04 22 21 42	10 18 59 02	07 22 18 23	04 27 38 42	11 25 21 20	10 16 16 33	08 23 13 34	23
24	11 09 41 59	05 15 06 57	07 11 31 13	11 09 51 26	04 22 14 30	10 20 13 13	07 22 18 35	04 27 38 27	11 25 24 40	10 16 18 41	08 23 14 20	24
25	11 10 41 26	05 26 57 26	07 11 46 01	11 11 51 52	04 22 07 22	10 21 27 23	07 22 18 40	04 27 37 39	11 25 28 00	10 16 20 48	08 23 15 05	25
26	11 11 40 50	06 08 46 43	07 12 00 20	11 13 53 05	04 22 00 20	10 22 41 32	व.07 22 18 40	04 27 36 17	11 25 31 21	10 16 22 55	08 23 15 48	26
27	11 12 40 13	06 20 37 06	07 12 14 09	11 15 54 56	04 21 53 23	10 23 55 42	07 22 18 33	04 27 34 34	11 25 34 43	10 16 25 01	08 23 16 30	27
28	11 13 39 34	07 02 31 18	07 12 27 27	11 17 57 16	04 21 46 32	10 25 09 51	07 22 18 20	04 27 32 45	11 25 38 05	10 16 27 06	08 23 17 09	28
29	11 14 38 53	07 14 32 23	07 12 40 14	11 19 59 53	04 21 39 47	10 26 24 00	07 22 18 02	04 27 31 09	11 25 41 28	10 16 29 10	08 23 17 47	29
30	11 15 38 11	07 26 43 53	07 12 52 29	11 22 02 35	04 21 33 08	10 27 38 09	07 22 17 37	04 27 30 04	11 25 44 51	10 16 31 13	08 23 18 23	30
31	11 16 37 27	08 09 09 42	07 13 04 11	11 24 05 06	04 21 26 36	10 28 52 18	07 22 17 07	04 27 29 44	11 25 48 15	10 16 33 15	08 23 18 57	31

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥1॥ विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥2॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारंभ होता है, उस दिन प्रत्येक घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खाण्ड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शांति होती है।

संवत्सर के फल श्रवण का महात्म्य–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव संवत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र **"ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च"** मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवाकर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरांत सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है–

"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यो बहुसस्य भोगो जह्याश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्॥" अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्षफल का श्रवण करता है, वह बहुत धन-धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्री राम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष महात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्था–(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान 43,20,000 सौर वर्ष है। इस प्रकार 1000 चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में 14 मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में 71 महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक 6 मन्वन्तर के 26 महायुग बीत गये हैं और 27वां महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु 4,32,000 वर्ष है। इसमें 5115 वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का 66वां वर्ष चल रहा है। प्रथम दिन का उदय होकर 13 घड़ी 42 पल 3 विपल 43 प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग–इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु 17,28,000 वर्ष की थी। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए। मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी। ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ होते थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियां पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः 1,00,000 वर्ष, बाल्यावस्था 10,000 वर्ष, देह की लम्बाई 21 हाथ थी। पुण्य 20 विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण 20,000 और चन्द्रग्रहण 2,000 थे।

त्रेतायुग–वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 12,96,000 वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार–वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का 21 बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का बध किया। मनुष्य की परमायुः 10,000 वर्ष और बाल्यावस्था 1,000 वर्ष थी। पुण्य 15 विश्वे, पाप 5 विश्वे था। पुरुष का देहमान 14 हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थे। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण 20,000 और चन्द्रग्रहण 30,000 थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग–माघ कृष्ण 30 को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 8,64,000 वर्ष थी। इसमें 2 अवतार–श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायुः 1,000 वर्ष थी। बाल्यावस्था 100 वर्ष थी। पुरुष का देहमान 7 हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर, कुछ सत्यवक्ता, कुछ झुठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य 10 विश्वे था। सूर्यग्रहण 24,000 और चन्द्रग्रहण 36,000 थे।

कलियुग–भाद्र कृष्ण 13 को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 4,32,000 वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु 120 वर्ष और बाल्यावस्था 10 वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य 5 विश्वे, पाप 15 विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख, तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख, शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्रग्रहण 46,000 होंगे। सं. 2072 में कलियुग के 5116 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के 4,26,884 वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियां अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी। इति।

संवत् 2072 वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि दशाधिकारी फलम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वागीशाद्या सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे। यं नत्वा कृतकृत्या स्युः तन्नमामि विनायकम्॥ तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करण मेव च। पंचांगं शृणुते नित्य गंगा स्नान फलं लभेत्॥ तिथि आयुकरि प्रोक्ता नक्षत्रं पाप नाशनम्। वारं शत्रून् विनाशाय योगो वृद्धि शतानि च॥ करणं करोतु कल्याणं चन्द्रो लक्ष्मी दिने दिने। यशसो वर्द्धते नित्यं दिवाकरो भूमण्डले॥

अथ कल्पादि से गत वर्ष (गताव्य) गणना 1955885116। तत्र कृत युग प्रमाणम् (सतयुग) 1728000। त्रेतायुग प्रमाणम् 1296000। द्वापर युग प्रमाणम् 864000। कलियुग प्रमाणम् 432000। तन्मध्ये गत कलि 5116, भोग्य शेष कलि 426884, अथास्मिन शुभ संवत्सरे श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्यात् संवत् 2072, शाके 1937। अथास्मिन वर्षे दशाधिकारी गण परिषद गणना। राजा शनि। मंत्री भौमः। सस्येशो गुरुः। धान्येशो बुधः। मेघेशश्चन्द्रः। रसेश शनिः। नीरसेशो गुरुः। फलेशश्चन्द्रः। धनेशो गुरुः। दुर्गेशः चन्द्रः। वर्षनाम पौषः। चतुर्थ मेघनाम द्रौण। रोहिणी निवास समुद्रे। समय निवास मालाकार गृहे। विंशति काया 2। कीलक नामस्य संवत्सर, समय विश्वा 18। समय वाहन महिष। स्तंभः 0 (अन्न+जल+तृण)। सोमवत्या अमावस्या 3। सोमवती पंचमी 1। अंगारकी चतुर्थी 1। भानु सप्तमी 2। बुधाष्टमी 3। रवि दशमी 3। समय मुहूर्तानि 390। समय दिनानि 384। तिथि क्षय 19। तिथि वृद्धि 23। अष्टोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा 93। खपति विश्वा 93। विंशोत्तरी मतेन उत्पत्ति 81। खपति विश्वा 117। वर्षा विश्वा 07। धान्य 15। तृणं 7। शीतम् 7। तेज 17। वायु 13। वृद्धि 15। क्षय 15। विग्रह 11। ऐक्यम् 107। क्षुधा 11। तृष्णा 7। निद्रा 15। आलस्य 15। उद्यम 15। शांति 1। क्रोध 3। दण्ड 5। मैत्री 13। उत्सव 11। पाप 11। पुण्य 7। उग्रत्व 17। रसोत्पत्ति 17। फलोत्पत्ति 5। व्याधि 3। व्याधिनाश 17। आचार 17। अनाचार 5। मृत्यु 19। जन्म 11। चौर 17। उपशमन 5। अग्निभय 11। अग्नि शमः 3। सत्यम् आधा। धर्म डेढ़। पाप 18। शनि दृष्टिः पश्चिमे। ग्रहण 1 चन्द्रमा। उद्रिज 11। जरायुज 3। पिण्डज 5। स्वेदज 15। इस वर्ष का फल उत्तम है। आगे गौ, प्रजा भाग्य प्रबल है। संवत् 2072, शाके 1937, वर्षारंभे चैत्र शुक्ला प्रतिपदायाम्, शनिवासरे प्रवृति (सूर्योदय) काले अहर्गण (ता. 21 मार्च 2015), केतकी चक्र 7, अहर्गण 1445, सौर पक्ष चक्रः 45 अहर्गण 67, ब्रह्म पक्ष अहर्गण 303900। सर्वजन सुखद समृद्धि भवेत्।

अखिलेश्वर काल के कर्त्ता, अभियन्ता व लोक नायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के राजा-मंत्री आदि दशाधिकारियों का प्रभाव यूं तो न्यूनाधिक सर्वत्र होता है। तथापि राजा का प्रभाव भारत वर्ष मुकुटमणि कश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। इसी प्रकार मंत्री का प्रभाव कलिंग में, सस्येश का विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट व मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कौंकण व गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा में, फलेश का पश्चिमी भू-भाग व कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धनेश व दुर्गेश का प्रभाव सर्वत्र समान रूप से पड़ता है।

उत्तम फल शुभ योग संवत् दो हजार बहत्तर का सण जानिये।
गौ सेवा शुभ कर्म से अपना भविष्य सफल बनाइये॥

अथ कीलक नाम संवत्सर फलम्

कीलकाब्देत्वति भीतिः प्रजा क्षोभ नृपावहौ।
तथापि वर्द्धते लोकाः सम धान्यर्थ वृष्टिभिः ॥

कीलक नाम संवत्सर का फल- प्रजा में अकाल का भय पैदा हो। राजा-प्रजा मध्ये रोष उत्पन्न हो। विशेष वृष्टि का योग नहीं बनता है। महंगाई कम होती है।

अथ राजा शनिः तस्य फलम्

शनैश्चरे भूमिपतौ सुकृज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीड्यते जनः।
युद्धं नृपाणां गदतस्कराद्यैर्भमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान् ॥

राजा शनि का फल-जिस वर्ष का राजा शनि हो उस वर्ष स्वल्प वर्षा हो, रोगों की अधिकता से लोग दुखी हों। राष्ट्रों में संघर्ष बढ़े। चोरी आदि का भय, भुखमरी बढ़े।

अथ मंत्री भौमः तस्य फलम्

अवनिजो ननु मंत्रिपदं गतो भवति दस्युगदा द्विजवेदना।
जनपदेषु जयंसुखसंचय न बहुगोषुपयो द्विजकर्म च ॥

मंत्री भौम का फल- भौम मंत्री हो तो चौर-भय बढ़े, उच्चवर्णों को वेदना हो। नित्य नैमित्तिक अनुष्ठान हेतु गायों का दूध बढ़े। जनपदों में सुख व ऐश्वर्य की अधिकता हो।

अथ सस्येशो गुरुः तस्य फलम्

सस्यपतौसुरराजपुरोहिते सकल सौख्य करः श्रुतिपूर्वकाः।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहूनि वसूनि वै ॥

सस्येश गुरु का फल- यदि गुरु सस्येश हो तो वेदविहित मार्ग के प्रचार में सौख्य हो। ब्राह्मणों को सुख हो। वर्षा की अधिकता हो, अन्न-जल व तृण में भी विशेष लाभ हो।

अथ धान्येशो बुधः तस्य फलम्

बुधे धन्याधिप मेघाजलं मुंचति वै भृशम् ।
सैन्ध वे लाट देशे च माधवोल्पंच वर्षति ॥

धान्येश बुध का फल- यदि बुध धान्येश हो तो जल की अधिकता रहे। सर्वत्र जल बरसे। सिंधु एवं लाट देश में वर्षा की कमी हो। जल से ही अन्न की अधिक पैदावार हो एवं प्रजा में प्रसन्नता का संचार हो।

अथ मेघेशो चन्द्रः तस्य फलम्

शशिनितो यदपेयदिगो महिष्यजवरादिषु दुग्धं रसं तदा।
फलवती धनधान्य वतीधरा विविध भोगवतीननुगामिनी ॥

मेघेश चन्द्र का फल- चन्द्रमा यदि मेघेश हो तो गाय, भैंस आदि पशुओं के दूध में वृद्धि हो। पृथ्वी पर अन्न आदि के भंडार आदि भरे रहें। वृक्षों पर फलों की पैदावार भी अधिक हो। धान्यादि में वृद्धि हो।

अथ रसेशो शनिः तस्य फलम्

रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्व पयोधराः।
अजगवां गजवाजि खरोष्ट्र हाजन पदेषु नरान्नरसैर्युता ॥

रसेशो शनि का फल- शनि यदि रसेश हो तो सभी प्रकार के रसों की कमी रहे। महंगाई बढ़े। हाथी, घोड़ा, उंट, गधा की हानि, जनता परेशान। बादलों से पानी के बदले रोग बरसें। पशुओं के दूध की कमी हो। मृत्युभय बढ़े। मनुष्यों में नीरसता बढ़े।

अथ नीरसेशो गुरुः तस्य फलम्

हरिदा पीत वस्तूनां पीत वस्त्रादिकं च यत् ।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीति रुत्तमाः ॥

नीरसेश गुरु का फल- गुरु यदि नीरसेश हो तो हल्दी, पीले वस्त्र, सोना, पीत वस्तुओं के मूल्य में गिरावट हो। चीजें सस्ती हों। खनिज पदार्थ भरपूर मिले। मनुष्यों के चित्त में भी प्रसन्नता हो। सभी को सुख हो।

अथ फलेशो चन्द्रः तस्य फलम्

यदिविधुः फलपोद्रुमराशयः फलयुता व्रतिभिः कुसुमैर्युता।
द्विजमुखा वर भोग समन्विता नृपतयोनयनाटन तत्पराः ॥

फलेश चन्द्र का फल- चन्द्रमा यदि फलेश हो तो वृक्षों पर फल-फूलों की मात्रा अधिक हो। ब्राह्मणों, शिक्षकों को विशेष लाभ की प्राप्ति हो। राष्ट्र में प्रेम व सद्भाव हो। लोग न्यायप्रिय तथा भ्रमणशील हों।

अथ धनेशो गुरुः तस्य फलम्

सुमनसांचगुरुर्द्रविणाधिपोवणिजवृत्तिपराः सुखभाजनाः।
फलितपुष्पितभूमिरुहाः सदाविविधद्रव्ययुता भुविमानवाः॥

धनेश गुरु का फल- गुरु धनेश हो तो लोग पापमुक्त हों। वणिकों को विशेष लाभ की प्राप्ति हो। फलों की पैदावार भी अधिक हो। लोग कई प्रकार के शुभ कार्यो के द्वारा धनार्जन व संचयन करें। मनुष्यों में नीरसता बढ़े।

अथ दुर्गेशो चन्द्रः तस्य फलम्

गढ़पति मेंलांछनके यदा नृप सुराज्य विलासित पौरजाः।
बहुधनेक्षुज गोरस भोगिनो नरवरा नरवर्णित विग्रहाः ॥

दुर्गेश चन्द्र का फल- चन्द्रमा यदि दुर्गेश हो तो राजा का विशेषलाभ व राज में भी सौख्य रहे। प्रजा प्रसन्न रहे, गन्ना तथा गोरस भोगियों को विशेष लाभ की प्राप्ति हो। नारी सम्मान में वृद्धि हो। प्रबुद्ध वर्ग में रोष की अधिकता हो।

अथ वर्षनाम् माघ तत्फलम्

सुभिक्षं पूर्व याम्यानां मध्यमं पश्चिमे तथा।
उत्तरे रौरवं माघ वर्षे धान्य महर्घता।।

वर्षनाम माघ का फल- वर्षनाम माघ होने से पूर्व दक्षिण में सुभिक्ष रहे। पश्चिम में मध्यम समय तथा उत्तर में युद्ध भय एवं प्राकृतिक आपदा से जनता दुखी रहे। महंगाई का प्रभाव सभी वस्तुओं में होने से सभी लोग परेशान रहें।

महीषाः स्वसंपत्ति वृद्धयासमेता समस्ता महीभूरिधानेन युक्ता।
यदा जायते द्रोण नामपयोदस्ता देवराजो भवेत्सत्पयोदः ॥

चतुर्मेघानाम 'द्रोण' फलम्:-राजा के भंडार भरे रहें, प्रजा को भी धन का लाभ हो। धरती धन-धान्य से परिपूर्ण हो। प्रजा में खुशहाली रहे। देवराज इन्द्र भी राजा व प्रजा के अनुकूल ही उत्तम वर्षा देते हैं।

वर्ष के चार स्तम्भों का फल- जिस वर्ष स्तंभ (जल, तृण, वायु, अन्न) का अभाव रहता है, उस वर्ष में कोई विशेष फल की प्राप्ति नहीं होती है। प्रजा में रोग तथा अभाव रहता है। सुख-समृद्धि की कमी रहती है। जल की कमी रहने से फसलों का नाश होता है, वायु से संबंधित प्रकोप एवं किसी विशेष अनहोनी की संभावना भी बनी रहती है। तृणाभाव रहने से पशुओं आदि में भी कोई विशेष फल प्राप्त नहीं होता है। खंड वृष्टि होने से अन्न की पैदावार में भी कमी बनी रहती है। प्रजा को भय व दुख का सामना करना पड़ सकता है।

यदापयोनिधिस्थले गतो विरंचिभं तदा। अतीववर्षणं भवेत्समस्त धान्य वर्द्धनम्।।

रोहिणी निवासे 'समुद्रे' तत्फलम्- जिस वर्ष रोहिणी का वास समुद्र में होता है उस वर्ष वारिश का योग श्रेष्ठ रहता है। समुद्रतट पर पानी की अधिकता होने से बाढ़ एवं नुकसान का खतरा भी बना रहता है। वर्षा की अधिकता से अन्न को फायदा तो होता है किंतु अधिक वर्षा से फसल को हानि की संभावनाएं भी बढ़ जाती हैं।

समय निवासो 'मालाकार गृहे' तत्फलम्- जिस वर्ष समय का निवास मालाकार के घर हो, उस वर्ष वारिश की अधिकता रहती है। अन्न, शाक, पुष्पों आदि में विशेष लाभ की स्थितियां उत्पन्न होती हैं। समयनिवास माली के घर होने से धन-धान्य की अधिकता रहती है। व्यापार बढ़े। मेघ वर्षा से परिपूर्ण रहते हैं। पर्याप्त मात्रा में वर्षा हो तो पर्याप्त मात्रा

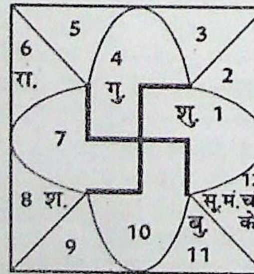
संवत्सर का असर-नववर्ष विक्रम संवत् 2072 शाका 1937 के वर्ष प्रवेश

प्लवंग का असर 20 मार्च 2015 ई. तक

वर्ष 2015 में 20 मार्च तक प्लवंग नामक संवत्सर रहेगा। इसमें राजा चन्द्रमा और मंत्री भी चन्द्रमा है अतः भारतवर्ष के लिए यह संवत्सर अनेक प्रकार के उतार-चढ़ाव के संकेत दे रहा है। चूंकि प्लवंग सवत्सर की उपलब्धि भारत में मोदी सरकार के रूप में जबरदस्त सत्ता परिवर्तन रहा। जिसमें नरेन्द्र मोदी को भाजपा के नेतृत्व में अगुवाई करने का मौका मिला। बल्कि सम्पूर्ण विश्व में उनकी ख्याति आज के युग में सबसे प्रखर भारतीय नेता के रूप में हुई। लेकिन विरासत में मिली सरकारी खाली खजाने के लिए मोदी को पूरे साल काफी मेहनत करनी पड़ेगी। उन्होंने एक प्रयोगवादी सरकार को आगे लाकर जनआकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अनेक प्रकार की प्रयोजनाओं का शुभ आरंभ किया। जिनमें बेरोजगारी, महंगाई और गरीबी के उन्मूलन के लिए नये सिरे से विचार किया। 28 मई 2014 को मोदी सरकार ने शपथ ली और 10 जुलाई 2014 को अपना बजट पेश किया। इन सबके चलते शेयर बाजार में बहुत अच्छा उछाल आया। विदेशों से धन भी भारत के लिए आया। आगामी वर्ष तक प्रयोजनाओं पर लगने वाले खर्च की आपूर्ति के लिए हमें दुनियां के अमीर देशों से कर्ज के लिए मुंह ताकने की नौबत नहीं आयेगी। हमारे पास जो भी संसाधन उपलब्ध थे उसमें भारत को अपने पैरों पर खड़ा होने का बेहतर मौका मिला। नीचे से ऊपर तक जड़ जमा चुका भ्रष्टाचार खत्म हुआ। सरकारी दफतरों में काम होने लगा और इन सबका अभी पूरा परिणाम जनवरी से मार्च तक आ जाने की उम्मीद है। और आशा की जाती है कि कुछ एक बिन्दुओं पर सरकार की कमजोरी को छोड़कर अन्य बिन्दुओं में हमारी सफलता सुनिश्चित होगी। यद्यपि मोदी सरकार के आते ही महंगाई और मूल्य वृद्धि ने अपना रिकार्ड कायम किया लोग सकपका गये कि यह आखिर क्या हुआ? लेकिन महंगाई तो कोई भी सरकार आती उसी तरह से बढ़ती। फिर भी मोदी सरकार ने चोर बाजारी, जमाखोरी पर जितने शासकीय अंकुश लगाये वो काफी कारगर रहे और देर से ही सही लेकिन अच्छे परिणाम आने लगे। वर्ष 2015 में फरवरी-मार्च तक कृषि और उद्योगों के बेहतर परिणाम आने तथा निर्यात में वृद्धि होने, कल-कारखानों की स्थापना तथा ढांचागत अर्थव्यवस्था में जान फूंकने की जो कोशिश रहेगी उसके चलते वर्ष 2015 की यह तिमाही बहुत ही उपलब्धिकारक रहेगी। बेरोजगारी तो एकदम मिट नहीं सकती, लेकिन आगे के समय में नये रोजगार पैदा होने के और वैकल्पिक रोजगारों की भरमार रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में भारत अब एक ऐसी शिक्षा को देने में सक्षम रहेगा जो न केवल रोजगार परक होगी बल्कि विश्व के अन्य देशों के नागरिकों के लिए भी प्रेरणादायक होगी। यह माना जाता है कि चिकित्सा के क्षेत्र में हम अभी कारगर सफलता हासिल नहीं कर सके और जनसंख्या वृद्धि नहीं रोक पाये। ठीक है सभी कुछ एक साथ ही हाथ में नहीं आ जाता।

कीलक संवत्सर क्या करेगा ता. 21 मार्च 2015 वर्ष में?

॥ अर्थः वर्ष लग्न ॥

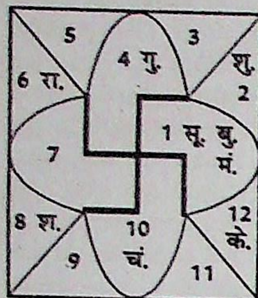


दिनांक 21 मार्च 2015 को शनिवार के अपराह्न कर्क लग्न में विक्रम वर्ष 2072 का संवत्सर और शक संवत् 1937 आरंभ हो रहा है। इस दौरान कर्क लग्न में वृहस्पति तीसरे भाव में, कन्या का राहु पांचवें भाव में, वृश्चिक का शनि अष्टम भाव में, कुंभ का बुध नवम भाव में, मीन राशि का चन्द्रमा सूर्य मंगल और केतु तथा दशम भाव में मेष राशि का शुक्र बैठा है। कुल नौ ग्रहों में वर्ष का राजा शनि और मंत्री चन्द्रमा है। अन्य ग्रहों रस पदार्थों का स्वामी भी शनि। मेघेश, फलेश और रक्षा मामलों के स्वामी चन्द्रमा हैं। मंत्री पद मंगल ग्रह को मिला है। धान्य पदार्थों के स्वामी बुध, दलहन आदि फसलों के स्वामी गुरु हैं। इस ग्रह मंडल के विधान सभा में पांच स्थान पर सौम्य ग्रह और तीन स्थानों पर उग्र ग्रहों का अधिकार है। अतः वर्ष का फल विचार उत्तम है। शनि और मंगल के राजा-मंत्री होने के बावजूद प्रजा में सुख शांति रहेगी। धन धान्य की प्रचुरता रहेगी। रोजगार, आजीविका के साधन उपलब्ध होंगे तथा सरकारी खजाने में धन की वृद्धि होगी। देश में आधुनिक अस्त्र-शस्त्र, मशीनरी तथा अन्तरिक्ष में काम आने वाले उपकरण और उपग्रहों की लगातार वृद्धि होगी। बिजली, पानी तथा स्वचालित यंत्रों का विकास होगा। राजनीति में नेताओं में परस्पर असंतोष, क्लेश और विद्रोह की झलक मिलेगी। केन्द्र और राज्यों के बीच में कहीं-कहीं तालमेल नहीं दिखेगा। नौकरशाही में हड़कम्प रहेगी। कानून और दंड की तत्काल घोषणा होगी। भ्रष्टाचारियों तथा तस्करों की कमी होगी। वर्ष लग्न कर्क होने से उत्तरी प्रांतों सहित समुद्रवर्तीय क्षेत्रों में जमीन के भाव काफी महंगे होंगे। लग्न में कर्क का वृहस्पति होने से शिक्षित संस्थाओं की मान्यतायें बढ़ेंगी और अच्छी शिक्षा लेकर विद्यार्थी वर्ग समाज सेवा में उतरेंगे। बुध ग्रह धान्येश और दलहन के स्वामी होने के कारण दालों के भाव बहुत बढ़ेंगे। यद्यपि सरकारी अंकुश से कुछ समय तक महंगाई स्थिर रहेगी लेकिन वर्ष के आरंभ और अन्त में प्रजा का हाल बेहाल होगा। इस वर्ष कपास, तिलहन और दलहन की फसलें अच्छी पैदावार देंगी। उसके बावजूद साग-सब्जी, फल, मेवे, मिष्ठान आदि सब महंगे होंगे। तम्बाकू, जीरा, धनिया, मिर्च, हल्दी से लेकर नमक, सुई-धागा और तोप, सरिया, सीमेंट सब महंगाई के चलते जनता को पीड़ा की स्थिति में डाल सकते हैं। शनि ग्रह का राजा होना देश के लिए ढांचागत विकास और विदेश नीति में कुशलता प्राप्त करने का संकेत है। विदेश मंत्री चाहे कोई भी हो लेकिन मंत्री मंगल के प्रभाव से दुनिया के विकसित देशों में भारत की वाणिज्य और कूटनीति से भरे कदमों की प्रशंसा होगी। मंगल और शनि का दुर्योग यह भी होगा कि कानून व्यवस्था कहीं-कहीं नियंत्रण से बाहर रहेगी। आतंकवाद और अन्य असन्तुष्ट गुटों का प्रहार बेकसूर जनता को झेलना पड़ेगा। इस मामले में मध्य भारत और दक्षिण भारत के लोग अधिक आतंकित रहेंगे।

इस वर्ष इन दशाधिकारियों में समय का निवास माली के घर है। कुल समय बिस्वा 18 हैं और वाहन महिष यानि भैंस है। इस साल कुल तीन सोमवती अमावस्या होंगी। एक सोमवती पंचमी। एक अंगारक चतुर्थी। दो भानु सप्तमी और तीन रवि दशमी होंगी। शादी-विवाह और गृह प्रवेश समेत सभी संस्कारों के लिए 390 मुहूर्त होंगे। वर्ष 2015 में दो ग्रहण लगेंगे पहला खग्रास चन्द्र ग्रहण 4 अप्रैल 2015 को, दूसरा खग्रास चन्द्र ग्रहण 28 सितंबर 2015 को लगेगा। कुल मिलाकर इस वर्ष में सिंहस्थ गुरु होने से जून और अक्टूबर के मध्य विवाह मुहूर्तों का अभाव रहेगा, लेकिन विद्वानों के परस्पर विचार विमर्श से नवंबर और दिसंबर महीने में शादियां की जा सकती

हैं। कुल मिलाकर यज्ञ, पूजा पाठ, भक्ति मार्ग की गोष्ठियां और यात्राओं सहित सीमा पार से लड़ाई, युद्ध, चोरी चकारी पर नियंत्रण आदि सहित वर्ष 2072 संवत् यानि 2015-16 भारत के लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष कन्या राशि साढ़ेसाती से मुक्त हो जायेगी। तुला राशि पर उतरती साढ़ेसाती, वृश्चिक राशि पर मध्य साढ़ेसाती तथा धनु राशि पर लगती साढ़ेसाती रहेगी।

मंत्री मंगल का वर्षफल



इस वर्ष मेषार्क 1 गते तद्नुसार मंगलवार 14 अप्रैल 2015 की वर्ष कुण्डली में मंत्री पद मंगल ग्रह को गया है। सौर मेष संक्रांति के दौरान भी कर्क लग्न का उदय हो रहा है। लेकिन लग्न में गुरु, तीसरे भाव में राहु, पंचम भाव में शनि, सप्तम भाव में चन्द्रमा, नवम भाव में केतु तथा दशम भाव में सूर्य, मंगल और बुध हैं। वर्षेश मंगल दशम भाव में स्वग्रही होने के कारण बहुत ही शालीन और निर्भीक ढंग से शासन तंत्र की संचालन शक्ति को बढ़ाता रहेगा। यही कारण है कि देश की मौजूदा स्थिति यानि मोदी सरकार में उपरोक्त सौर मण्डलीय मंत्री परिषद् भारत को आगे ले जाने में मदद करेगी।

संवत्सर और भारत की स्थिति

वर्ष 2015 में 20 मार्च तक प्लवंग नामक संवत्सर का प्रभाव रहेगा। इस प्रकार के ग्रह योग में वर्ष कुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा की बलवान् स्थिति दिखाई दे रही है। इसके प्रभाव से जनसाधारण में उत्साह रहेगा। आम आदमी की जरूरतों के लिए उपभोक्ता वस्तुओं में सुलभता जारी रहेगी। वर्किंग क्लास और बिजनेस क्लास में मध्यम दर्जे की आमदनी वाले लोग प्रसन्न रहेंगे।

संवत्सर और अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश तथा भारत की विदेश नीति

21 मार्च के उपरान्त अगले वर्ष तक कीलक नामक संवत्सर की शुरूआत हो जायेगी। इसके चलते भी शेष वर्ष आम जनता के लिए काफी भारी और चिंताजनक होगा। इसका मुख्य कारण जहां वृश्चिक राशि का शनि होगा वहां कन्या राशि का राहु और वर्षेश शनि के साथ सूर्य और चन्द्रमा का त्रिकोण योग भी जिम्मेदार रहेगा। यह भी उल्लेखनीय है कि वर्षेश कुण्डली में शनि बारहवें घर में रहेगा अत: प्रयासों के बावजूद लोगों को चिकित्सा आवास और रोजगार की सुलभता एवं मजदूरी आदि निर्धारित खर्चे को पूरा करने के लिए नहीं मिल पायेंगे। वर्ष 2015 में उच्च का गुरु अष्टम में बैठा हुआ है। लेखकों एवं प्रकाशकों, चिन्तकों तथा कलाकारों के लिए समय बहुत टाईट रहेगा। उन्हें अपने व्यवसाय को लेकर चिंता होगी। आम आदमी की मुश्किलें और व्यस्तता इतनी बढ़ जायेगी कि उन्हें सर्वसुलभ बौद्धिक संसाधन बेकार से लगेंगे। रेडियो, टीवी, विज्ञापन तथा मीडिया के अन्य साधन चलते-चलते रहेंगे

पाकिस्तान और चीन से सम्बन्ध

जब तक प्लवंग नामक संवत्सर रहेगा तब तक भारत की विदेश नीति का नर्म रुख अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में कोई विशेष उल्लेखनीय भूमिका या उतार-चढ़ाव पैदा नहीं कर पायेगी। 21 मार्च के बाद अप्रैल, मई तक धरती पर राजा शनि और मंत्री मंगल का उग्र स्वरूप सामने दिखाई देगा। इसमें चीन और पाकिस्तान की विस्तारवादी नीतियां दुनिया के सामने उजागर होंगी। भारतीय सीमाओं पर चीन द्वारा अतिक्रमण, उल्लंघन और छिटपुट झड़पों का जवाब देने के लिए अमेरिकी और यूएनओ जैसे संगठन बीच में हस्तक्षेप करने के लिए मजबूर हो सकते हैं। पाकिस्तान के साथ लड़ाई तो नहीं होगी, लेकिन कई बार आतंकवाद पर उसकी गहरी रुचि के कारण भारत अपनी तरफ से किसी भी प्रकार का रुख अख्तियार कर सकता है ताकि पाकिस्तान की जादती रुक सके। चाईना का दूसरा आघात हमारे लघु उद्योग और आईटी सेक्टर के उत्पादों और अन्य सभी प्रकार की उपभोक्ता सामग्री और इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के उत्पादन से जुड़े आघात से है। इसके साथ ही नकली माल का जो जखीरा यहां तक कि नकली नोट, नकली सिक्के एवं अन्य अवैध वस्तुयें भारत में भेजी जा रही हैं उसको रोकने के लिए सरकार की तरफ से कड़े कदम उठाने के संकेत मिलेंगे। इन सब कदमों से हमारी अर्थव्यवस्था को आगे चलकर मजबूती मिल सकती है। पाकिस्तान के साथ रश्मी तौर पर व्यापार बढ़ेगा लेकिन अन्दरूनी खटास कायम रहेगी।

पर्यटन विकास, एफडीआई के लिए अमीर देशों से सम्पर्क

कीलक संवत्सर के दौरान फरवरी-मार्च 2015 से नवंबर, दिसंबर 2015 तक भारत में पर्यटकों की आवक अच्छी रहेगी। विदेशों से कई गुना ज्यादा पर्यटक भारत की समृद्धि में योगदान देंगे। इससे जहां राजकोषीय धन की वृद्धि होगी वहां राज्यों के विभिन्न पर्यटन स्थलों पर इस व्यवसाय से जुड़े लोगों को, होटलों को, हथकरघा तथा अन्य कलात्मक उद्योग से जुड़े लोगों को भी यथासंभव रोजगार और धन लाभ की स्थिति बनेगी। यह कुछ इसलिए भी संभव हो पायेगा कि विगत वर्षों में विदेशों में जो भारत की प्रतिष्ठा गिर गई थी। उसको संवारने में वर्ष 2015 में मोदी सरकार ने भरसक प्रयत्न किये और उसी का नतीजा यह रहा कि अब विदेशों से पूंजी लगाने में भी लोग बेहिचक योगदान दे रहे हैं तथा सैर-सपाटे के लिए भारत में भी आकर खर्च कर रहे हैं।

आधुनिक टैक्नोलॉजी तथा विकास के नये कदम

शनि और मंगल का वर्षेश और पदाधिकारी होना तथा बुध ग्रह का खाद्य मंत्री होना तथा अन्य पदार्थ जैसे स्टील लोहा और मिश्रित धातु तांबा, पीतल आदि के नियंत्रण में रहने से भारत में इलैक्ट्रानिक और वैज्ञानिक संसाधनों के विकास के चलते वर्ष 2015 में जनवरी से लेकर जून-जुलाई तक कई नये कल कारखाने खुलेंगे। सौर ऊर्जा, भूमिगत जल और नदियों के जहाजरानी उपयोग के लिए कार्यों से विकास के नये रास्ते खुल गये हैं। इससे न केवल भरपूर रोजगार मिल रहा है बल्कि राजकोषीय धन एवं राज्यों को भरपूर आमदनी भी प्राप्त हो रही है। इस प्रकार के उद्योगों के अलावा सैकड़ों किस्म की अन्य परियोजनायें भी वर्ष 2015-016 में

चैत्र शुक्ल पक्षः -1

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 21 मार्च से ता. 4 अप्रैल सन् 2015 ई., रा. मिति 30 फाल्गुन से 14 चैत्र तक। रविरुत्तरायणे, उत्तर गोले, वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि			स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिनमान		स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि.				[illegible]	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
		ति	घ.	प.	घं.	मि.	न	घ.	प.	घं.	मि.	यो	घ.	प.	घं.	मि.	क	घ.	प.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.				रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि.	
30	श	1	12	52	11	35	उभा	06	37	09	05	ब्र	46	17	24	57	ब	12	52	11	35	30	13	06	26	18	31	08	29	21	मीन	11	05	58	48	59/37	30	56	19	45	नव संवत्सरारम्भः वासन्तीय नवरात्र, घट स्थापन, A
चै. 1	र	2	04	44	08	19	रे/अ	00/55	18/03	06/28	32/26	ऐं	37	16	21	19	कौ	04	44	08	19	30	18	06	25	18	32	09	[illegible]/01	22	मे. 6।32	11	06	58	25	35	07	41	20	50	चेटी चण्ड, झूलेलाल जयंती, गणगौरी, मत्स्यावतार, मनोरथ B
0	र	3	57	40	29	29	००	00	00	00	00	०	00	00	00	00	०	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	तिथि क्षयः C भौमः 23।53, भ. शुक्रः 19।25
2	चं	4	52	08	27	15	भ	51	16	26	54	वै	29	21	18	08	व	24	43	16	17	30	22	06	24	18	33	10	02	23	मेष	11	07	58	00	33	08	27	21	54	भ. 16।17 से 27।14 तक, विनायक 4 व्रत, मेष अश्वि. C
3	मं	5	48	19	25	42	कृ	49	13	26	04	वि	22	46	15	29	ब	20	01	14	23	30	26	06	23	18	33	11	03	24	वृ. 8।38	11	08	57	33	30	09	15	22	55	श्री पंचमी, नाग पंचमी, हय 5
4	बु	6	46	26	24	56	रो	49	04	25	59	प्री	17	41	13	26	कौ	17	09	13	13	30	30	06	21	18	34	12	04	25	वृष	11	09	57	03	29	10	04	23	52	स्कंध षष्ठी, यमुना षष्ठी ◆ गुड फ्राईडे
5	गु	7	46	32	24	57	मृ	50	52	26	41	आ	14	09	12	00	ग	16	15	12	50	30	35	06	20	18	34	13	05	26	मि.14।14	11	10	56	32	26	10	56	24	00	भ. 24।56 से, आयंबिल औली प्रा. (जैन), पूर्वास्तं बुधः 12।03
6	शु	8	48	33	25	44	आ	54	30	28	07	सौ	12	10	11	11	वि	17	20	13	15	30	39	06	19	18	35	14	06	27	मिथुन	11	11	55	58	23	11	48	24	46	भ. 13।15 तक, दुर्गाष्टमी, तारा जयंती, भवान्युत्पतिः, D
7	श	9	52	16	27	12	पुन	59	45	30	12	शो	11	37	10	57	बा	20	14	14	24	30	43	06	18	18	35	15	07	28	क.23।37	11	12	55	21	22	12	40	25	35	श्री राम नवमी, नवरात्र पूर्ण D मीन में बुध 25।36
8	र	10	57	20	29	13	पु	60	00	–	–	अ	12	16	11	11	तै	24	41	16	09	30	48	06	17	18	36	16	08	29	कर्क	11	13	54	43	19	13	32	26	19	उ.भायां बुधः 21।39
9	चं	11	60	00	–	–	पु	06	18	08	47	सु	13	53	11	49	व	30	17	18	22	30	52	06	16	18	36	17	09	30	कर्क	11	14	54	02	16	14	24	27	00	भ. 18।22 से, कामदा एकादशी व्रत,
10	मं	11	03	24	07	36	आ	13	40	11	42	धृ	16	07	12	41	वि	03	24	07	36	30	56	06	15	18	37	18	10	31	सिं.11।42	11	15	53	18	15	15	15	27	38	भ. 7।36 तक, दोलोत्सव, रेवती में सूर्यः 24।23
11	बु	12	09	56	10	12	म	21	27	14	48	शू	18	40	13	41	बा	09	56	10	12	31	00	06	13	18	38	19	11	A1	सिंह	11	16	52	33	12	16	06	28	14	प्रदोष, हरिदमनोत्सवः, अप्रैल मासारम्भ
12	गु	13	16	33	12	49	पूफा	29	15	17	54	गं	21	16	14	42	तै	16	32	12	49	31	05	06	12	18	38	20	12	02	क.24।40	11	17	51	45	10	16	57	28	49	श्री महावीर जयंती, केदार दर्शन, शिवार्चनम्
13	शु	14	22	53	15	20	उफा	36	45	20	53	वृ	23	38	15	38	व	22	53	15	20	31	09	06	11	18	39	21	13	03	कन्या	11	18	50	55	08	17	48	29	23	भ. 15।20 से 28।27 तक, चांद पुन्य, कृति. शुक्रः 24।00, ◆
14	श	15	28	41	17	38	ह	43	40	23	38	ध्रु	25	36	16	24	ब	28	41	17	38	31	13	06	10	18	39	22	14	04	कन्या	11	19	50	03	06	18	40	29	57	चंद्रग्रहणम् ग्रसित हुआ उदय होगा, श्री हनुमान जयंती, E

A गुड़ी पड़वा, गौतम जयंती, आर्यसमाज स्थापना दिवसः, चंद्रदर्शन मु. 30, सिंहारा, हर्षल अस्तः 17।14 B तृतीया, सौभाग्य 3, अरुंधती व्रत, पू.भा. बुधः 7।15, जमादिलाखर 6 मु.

E मेला सालासर, मन्वादि 15, आर्यंबिल ओली पूर्ण (जैन), वैशाख स्नानारम्भः, सत्यनारायण व्रतं

चैत्र शु. 8 शुक्र, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 27 मार्च

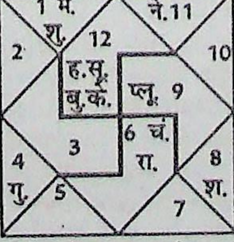
सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	02	00	10	03	00	07	05	11	11	10	08
11	08	02	28	18	17	10	15	15	21	14	21
55	09	26	29	46	25	43	50	50	46	15	21
58	44	42	59	38	41	11	41	41	32	34	36
59	762	44	106	02	71	01	00	00	03	02	00
25	03	42	47	23	41	14	09	09	24	04	39
-	-	मा	मा	व	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-
उ.भा. 3	आर्द्रा 1	अश्विनी	पू.भा. 3	आश्लेषा 1	भरणी 2	अनुराधा 3	हस्त 2	उ.भा. 4	रेवती 2	शत. 3	पू.षा. 3



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शनिवार, उत्तराभाद्रपद, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल पूर्णिमा तद्नुसार दिनांक 21 मार्च से 4 अप्रैल 2015 तक रहेगा। चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ति होगा। कीलक नाम संवत्सर के योग से वि.सं. 2072 प्रारंभ हो रहा है। "कीलकस्यसंवत्सरा प्रवर्तते यस्य वर्षस्य जन धन राजतंत्रादि अनेकानि संघर्षः कारक भविष्यति॥" अर्थात् सर्वत्र सर्व जनसमुदायों में राजा तंत्र सहित दुख मय वातावरण से गुजरेंगे। संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। विश्व में प्राकृतिक प्रकोप के साथ परस्पर विरोध शत्रुता से आस्तीन की बाहें सांप की लोकोक्ति को चरितार्थ जैसी घटनाएं घटेंगी। पश्चिमी देशों में रोगादि बाधा एवं नियंत्रण से बाहर जैसी स्थिति बनेगी। पक्ष में चन्द्र ग्रहण के कारण दुर्भिक्ष का कारक भी बनता है। पूर्वा भाद्रपद में बुध होने के कारण क्षुध-शस्त्र घात, चोर और रोगों में वृद्धि का तथा अति वृष्टि से जन-धन हानि का कारक भी रहेगा। नदियों में बाढ़ादि का खतरा रहेगा। किसी पंजीकृत राजनीतिक दल का विघटन योग बनने का संकेत भी बनता है। व्यापार भविष्य– माह में तृतीया के क्षय होने से मूंग, दालवाना मंहगे होने का योग बनता है। पूर्णिमा हस्त नक्षत्र युक्त होने तथा चन्द्र ग्रहण के कारण कुछ तेजी सभी वस्तुओं में बनेगी। सोना, चांदी, तांबा पर विश्व व्यापार संगठन का नियंत्रण होने जैसी स्थिति बनेगी। विद्युत सामग्री भी मंहगी होगी। आकाश लक्षण– तीस मुहूर्ति बैठी संक्रांति (मेष) के कारण वायुमंडल में गोचर योग से आंधी-बादल गरज, उत्तरी भारत-पश्चिमी देशों में प्राकृतिक आपदा जैसे योग बनाने का कारक बनेगा। शकुन विचार– चैत्र अमावस्या शुक्रवार के कारण शुक्ल प्रतिपदा शनिवार होने के कारण आकाश में बादल गरजे तो आगे श्रावण में वर्षा की न्यूनता बनेगी। शुदी 3 का क्षय होना एकादशी की वृद्धि से यत्र-तत्र अग्निकांड, बिजली गिरने का योग बनेगा। घास एवं खेती का न्यूनतम योग भी है।

चैत्र शु. 15 शनि, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 4 अप्रैल



सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	05	00	11	03	00	07	05	11	11	10	8
19	14	08	13	18	26	10	15	15	22	14	21
50	16	22	26	33	56	30	50	50	13	31	25
03	47	45	35	27	17	15	21	21	50	38	48
59	716	44	117	00	70	01	00	00	03	01	00
07	43	18	31	53	56	59	12	12	25	56	24
-	-	मा	मा	व	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	-	-	-
रेवती 1	हस्त 2	अश्विनी 3	उ.भा. 4	आश्लेषा 1	कृत्तिका 1	अनुराधा 3	हस्त 2	उ.भा. 4	रेवती 2	शत. 3	पू.षा. 3

वैशाख कृष्ण पक्षः-2

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 5 से 18 अप्रैल सन् 2015 ई., रा. मिति 15 चैत्र से 28 चैत्र तक। रविरुत्तरायणे, उत्तर गोले, वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
15	र	01	33	41	19	37	चि	49	48	26	04	व्या	26	59	16	57	बा	01	19	06	40	31	17	06	09	18	40	23	15	05	तु.12।54	11	20	49	09	59/03	19	32	30	32	करिदिन, रेवत्यां बुधः 20।40
16	चं	02	37	44	21	13	स्वा	54	59	28	07	ह	27	40	17	12	तै	05	51	08	28	31	22	06	08	18	40	24	16	06	तुला	11	21	48	12	02	20	25	07	09	वृषे शुक्रः 19।47
17	मं	03	40	41	22	23	वि	59	05	29	45	व	27	32	17	07	व	09	22	09	51	31	26	06	07	18	41	25	17	07	वृ.23।23	11	22	47	14	00	21	20	07	49	भ. 09।51 से 22।24 तक
18	बु	04	42	27	23	04	अ	60	00	–	–	सि	26	30	16	41	ब	11	45	10	47	31	30	06	05	18	41	26	18	08	वृश्चिक	11	23	46	14	58/59	22	14	08	31	चतुर्थी व्रत, अनुसूया जयंती
19	गु	05	42	55	23	14	अ	02	03	06	54	व्य	24	29	15	52	कौ	12	52	11	13	31	34	06	04	18	42	27	19	09	वृश्चिक	11	24	45	13	56	23	08	09	18	व्यतिपात A श्री अर्जुनदेव जयंती
20	शु	06	42	02	22	52	ज्ये	03	42	07	32	व	21	26	14	37	ग	12	40	11	07	31	38	06	03	18	43	28	20	10	ध.07।32	11	25	44	09	55	24	00	10	09	भ. 22।53 से, भरण्यां भौमः 23।07, भौमास्त पश्चिमायां 11।12
21	श	07	39	47	21	57	मू	04	01	07	39	प	17	17	12	57	वि	11	06	10	29	31	42	06	02	18	43	29	21	11	धनु	11	26	43	04	53	24	02	11	04	भ. 10।29 तक, गुरु अर्जुनदेव जी प्रकाश (प्रा.)
22	र	08	36	10	20	29	पूषा	02	59	07	13	शि	12	04	10	51	बा	08	10	09	17	31	47	06	01	18	44	30	22	12	म. 13।01	11	27	41	57	51	24	54	12	02	बूढ़ा बासौड़ा, अश्वि. मेष में बुधः 8।43, सीतला पूजा, A
23	चं	09	31	17	18	31	उषा/श्र	00/57	38/02	06/28	15/49	सि/सा	05/58	47/29	08/29	19/23	तै	03	54	07	34	31	51	06	00	18	44	31	23	13	मकर	11	28	40	48	50	25	44	13	04	भ. 29।22 से,
24	मं	10	25	16	16	05	ध	52	26	26	57	शुभ	50	22	26	08	वि	25	16	16	05	31	55	05	59	18	45	वैशा 01	24	14	कुं.15।56	11	29	39	38	48	26	31	14	07	भ. 16।05 तक, पञ्चकारंभः 15।56 से, अश्वि. मेष में B
25	बु	11	18	17	13	17	श	47	00	24	46	शु	41	33	22	35	बा	18	17	13	17	31	59	05	58	18	45	02	25	15	कुम्भ	00	00	38	26	46	27	17	15	11	वरूथिनी एकादशी व्रत, श्री वल्लभाचार्य जयंती, रोहिण्यां ◆
26	गु	12	10	37	10	12	पूभा	41	01	22	21	ब्र	32	17	18	51	तै	10	37	10	12	32	03	05	57	18	46	03	26	16	मी.16।58	00	01	37	12	44	28	01	16	16	प्रदोष व्रत ◆ शुक्रः 08।49
27	शु	13	02	32	06	57	उभा	34	49	19	51	ऐं	22	46	15	02	व	02	32	06	57	32	07	05	56	18	47	04	27	17	मीन	00	02	35	56	42	28	45	17	22	भ. 06।57 से 17।19 तक, मास शिवरात्रि
00	शु	14	54	20	27	40	००	00	00	00	00	००	00	00	00	00	००	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	तिथि क्षयः
28	श	30	46	27	24	30	रे	28	46	17	25	वै	13	19	11	14	च	20	21	14	03	32	11	05	55	18	47	05	28	18	मे.17।25	00	03	34	38	41	29	29	18	28	देवपितृकार्येऽमा., श्री शुकदेव जयंती, पञ्चक 17।25 तक, C

B रविः 13।49, वैशाखी, अम्बेडकर जयंती, सुव्रतनाथ जन्म-तप

C मेला पिंजोर (हरि.), भरण्यां बुधः 17।30, गुरु अंगददेव, गुरु तेगबहादुर प्रकाश दिवस

वैशाख कृ. 8 रवि, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 12 अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	08	00	11	03	01	07	05	11	11	10	08
27	25	14	29	18	06	10	15	15	22	14	21
41	41	15	43	32	20	11	47	47	41	46	28
57	18	38	10	20	32	35	45	45	15	33	02
58	823	43	125	00	70	02	00	00	03	01	00
52	32	55	42	37	06	40	15	15	25	47	09
-	-	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा
-	-	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-
रेवती 4	पूभा. 4	भर. 1	रेवती 4	आश्ले. 1	कृति. 3	अनु. 3	हस्त 2	उ.भा. 4	रेवती 2	श्रव. 3	पूषा. 3

1 मं., 11 ने., 12 सू., 2 शु., ह. बु. के., 9 चं., 10, प्लू., 3, 4 गु., 8, 6 रा., 7, 5, श.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा रविवार से प्रारंभ होकर शनिश्चरी अमावस्या तक रहेगा। पक्ष में मेष संक्रांति बैशाख कृष्ण दशमी भौमवार, वारात 4, नक्षत्रात् 4, वारनाम महोदरी, चौरान सुखदा, नक्षत्र नाम महोदरी, मध्यान्ह व्यापिनी, विप्रनाम हन्ति, पश्चिमे गमन, वायव्या दृष्टि, विष्टी करणे प्रविष्ठा, मध्य फल, अश्व वाहन, सिंह उपवाहन, वृद्धावस्था (बैठी) 30 मुहूर्ति होने से राज तंत्र में काफी परिवर्तन दायक योग करेगी। **"यदा भानुस्थितो मेषे फलानि तुली मादिकम्। ईक्ष्वादितिल तैलादि तदा चैव महर्घता॥"** महंगाई की कारक संक्रांति तथा भौमवार योग से "विवादानि यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रजायते॥" उष्णता का प्रभाव- **आकाशे सूर्य तपति** से जनता को काफी कष्ट योग बनेगा। आदिवासियों में पीड़ा बढ़ेगी। सत्ताधारी मंत्रीगणों में भी शत्रुता के कारण झलकेंगे। किंवा दुर्घटना में देहावसान तीन नेताओं का बनता है। चतुर्दशी का क्षय होना कृषक वर्ग को हानिदायक योग। कृषि में रोगोत्पति का कारण बनेगा। शनिवारी रेवती नक्षत्राणि अमावस्या गुप्तचरों का पलायन क़ारक मिलेगी। अनुराधा नक्षत्र वृद्धि के योग से सब्जियों के भावों में अस्थिरता फिर भी महंगी होंगी। **व्यापार भविष्य**–पक्ष में गेहूं, चावल, चना, सोना, चांदी, तांबा, रुई में गड़बड़ यानि उतार-चढ़ाव से अस्थिरता कारक योग। शनिश्चरी अमावस्या से किराना सामग्री में तेजी। विश्व व्यापार संगठन में भी अंतर्कलह योग से विश्व व्यापार भी अव्यवस्थित चलेगा। **आकाश लक्षण**– 10 अप्रैल को मंद वर्षा का योग। 13 अप्रैल को नवमी सोमवार यत्र-तत्र वर्षा या आंधी का कारण बनेगा। पश्चिमी राजस्थान में भूकंप जैसा योग बनता है। आकाशीय पिंडों में घर्षण योग बनेगा। तद्नुसार विशिष्ट नेता का देह त्याग, हृदयाघात होने का योग भी है। **शकुन विचार**– **बैशाख बादर पंचरंग अथवा झमकै बिजली अंग। अनेक जन धन बरसाई सावन माहि बहु अन्न निपजाई॥ आधा वैशाखे बदी बिजली गर्जन होय। संवत् अच्छा जानिये संशय करो ना कोय॥ इन शकुनों का योग बने तो सुखद योग रहेगा।**

वैशाख कृ. 30 शनि, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 18 अप्रैल

2 शु., च. ह. के., 1, 12, ने., 3, सू. मं.बु., 10, 11, 4 गु., 7, 9, 5, 6, प्लू., 8 श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
00	11	00	00	03	01	07	05	11	11	10	08
03	22	18	12	18	13	09	15	15	23	14	21
34	38	38	17	39	19	54	52	52	01	56	28
38	25	17	59	21	11	08	43	43	41	52	26
58	890	43	124	01	69	03	00	00	03	01	00
41	42	38	14	44	25	08	10	10	23	39	01
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	-	-
अश्वि. 2	रेवती 2	भर. 2	अश्वि. 4	आश्ले. 1	रोहि. 1	अनु. 2	हस्त 2	उ.भा. 4	रेवती 2	श्रव. 3	पूषा. 3

वैशाख शुक्ल पक्षः -3

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 19 अप्रैल से 4 मई सन् 2015 ई., रा. मिति 29 चैत्र से 14 वैशाख तक। रविरुत्तरायणे, उत्तर गोले, वसंत-ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

ता.	वार	तिथि			स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिन मान		स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक			चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि.				गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
मि.	वा	ति	घ.	प.	घं.	मि.	न	घ.	प.	घं.	मि.	यो	घ.	प.	घं.	मि.	क	घ.	प.	घं.	मि.	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	प्र.	मु.	अं.	रा. घं. मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि.	
चैत्र 29	र	1	39	14	21	35	अ	23	15	15	12	वि/प्री	04/55	13/43	07/28	35/11	कि	12	45	11	00	32	15	05	54	18	48	06	29	19	मेष	0	04	33	19	58/38	30	15	19	33	A सायन वृष में सूर्य
30	चं	2	33	02	19	05	भ	18	38	13	20	आ	48	12	25	09	बा	06	00	08	17	32	19	05	53	18	48	07	30	20	वृ. 18।57	0	05	31	57	37	07	02	20	37	चंद्रदर्शन मु. 30, परशुराम जयंती, शिवाजी जयंती, A
वैशाख 01	मं	3	28	12	17	08	कृ	15	19	11	59	सौ	41	52	22	37	तै	00	27	06	02	32	23	05	52	18	49	08	रज्ज. 01	21	वृष	0	06	30	34	34	07	52	21	38	भ. 28।26 से, अक्षय 3, त्रेतायुगादि, रज्जब मु. मा. 7, B
02	बु	4	25	03	15	52	रो	13	36	11	17	शो	36	57	20	38	वि	25	03	15	52	32	27	05	51	18	49	09	02	22	मि.23।12	0	07	29	08	33	08	44	22	35	भ. 15।52 तक, विनायक 4
03	गु	5	23	48	15	21	मृ	13	43	11	19	अ	33	34	19	15	बा	23	48	15	21	32	31	05	50	18	50	10	03	23	मिथुन	0	08	27	41	30	09	37	23	27	आदि शंकराचार्य ज., सूरदास ज., बुधोदय पश्चिमायां 9।25, F
04	शु	6	24	32	15	38	आ	15	47	12	08	सु	31	46	18	31	तै	24	32	15	38	32	35	05	49	18	51	11	04	24	मिथुन	0	09	26	11	28	10	31	24	00	श्री रामानुजाचार्य जयंती, चंदन षष्ठी
05	श	7	27	12	16	41	पुन	19	45	13	42	धृ	31	26	18	22	व	27	12	16	41	32	38	05	48	18	51	12	05	25	क. 07।14	0	10	24	39	26	11	24	24	14	भ. 16।41 से 29।22 तक, गंगा जयंती, कृति. बुध: 13।57
06	र	8	31	33	18	24	पु	25	22	15	56	शू	32	23	18	44	बव	31	33	18	24	32	42	05	47	18	52	13	06	26	कर्क	0	11	23	05	24	12	17	24	58	बगलामुखी जयंती, दुर्गाष्टमी, मृगे शुक्र: 22।55
07	चं	9	37	09	20	38	आ	32	15	18	40	गं	34	19	19	29	बा	04	15	07	28	32	46	05	46	18	52	14	07	27	सिं.18।40	0	12	21	29	22	13	09	25	37	जानकी जयंती, भरण्यां रवि 29।34, वृषे बुध: 12।02
08	मं	10	43	30	23	09	म	39	53	21	42	वृ	36	49	20	28	तै	10	18	09	52	32	50	05	45	18	53	15	08	28	सिंह	0	13	19	51	20	14	00	26	14	श्री महावीर स्वामी कैवल्य प्राप्ति
09	बु	11	50	01	25	45	पूफा	47	42	24	49	ध्रु	39	29	21	32	व	16	48	12	27	32	53	05	44	18	54	16	09	29	सिंह	0	14	18	11	17	14	51	26	49	भ. 12।27 से 25।45 तक, मोहिनी 11 व्रत (सबका), C
10	गु	12	56	11	28	12	उफा	55	13	27	48	व्या	41	57	22	30	ब	23	12	15	00	32	57	05	43	18	54	17	10	30	कं. 07।35	0	15	16	28	16	15	42	27	23	रुक्मणी द्वादशी C कृत्तिकायां भौम: 8।13
11	शु	13	60	00	–	–	ह	60	00	–	–	ह	43	54	23	16	कौ	29	00	17	19	33	01	05	42	18	55	18	11	01	कन्या	0	16	14	44	14	16	34	27	57	शनि प्रदोष व्रत, अशोक त्रिरात्री व्रतारम्भ, मजदूर दिवस
12	श	13	01	35	06	20	ह	02	00	06	30	व	45	04	23	43	तै	01	35	06	20	33	04	05	42	18	55	19	12	02	तु.19।41	0	17	12	58	11	17	26	28	32	मिथुन में शुक्र: 20।36, नृसिंह जयंती, छिन्नमस्ता जयंती
13	र	14	05	53	08	02	चि	07	44	08	46	सि	45	20	23	49	व	05	53	08	02	33	08	05	41	18	56	20	13	03	तुला	0	18	11	09	10	18	19	29	08	भ. 08।02 से 20।42 तक, वृष में मंगल 23।58, चांदपुन्य, D
14	चं	15	08	57	09	15	स्वा	12	16	10	34	व्य	44	37	23	31	ब	08	57	09	15	33	12	05	40	18	57	21	14	04	वृ. 29।36	0	19	09	19	09	19	14	29	47	व्यतिपात 23।31 तक, सत्यनारायण व्रत, वैशाख स्नान पूर्ण, E

B मातंगी जयंती, श्री बांके बिहारी चरण दर्शन, श्री अर्जुनदेव जयंती

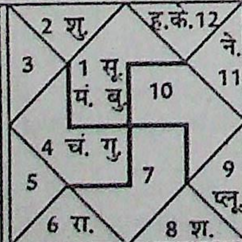
D कूर्मोत्पति, हजरत अली जन्म

E बुद्ध पूर्णिमा, पीपल पुन्य, ज्येष्ठारम्भ, यमाय कुम्भदान

F बाबू कुंअर सिंह ज. (बिहार)

वैशाख शु. 8 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 26 अप्रैल

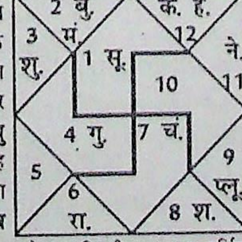
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
00	03	00	00	03	01	07	05	11	11	10	08
11	11	24	27	18	22	09	15	15	23	15	21
23	24	25	48	58	30	26	37	37	28	09	27
05	08	43	56	58	25	53	31	31	28	18	16
58	729	43	105	03	68	03	00	00	03	01	00
25	16	13	06	10	20	39	12	12	18	27	16
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
अश्वि. 4	पुष्य 3	भर. 4	कृत्ति. 1	आश्ले. 1	रोहि. 4	अनु. 2	हस्त 2	उ.भा. 4	रेव. 3	शत. 3	पू.षा. 3



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष बैशाख शुक्ल प्रतिपदा रविवार से प्रारंभ होकर बैशाख शुक्ल पूर्णिमा सोमवार तद्नुसार दिनांक 19 अप्रैल से 4 मई 2015 तक रहेगा। इस पक्ष में मास ग्रह वार गणना के योग से मासफल की गणना में मानी जावे तो माह में पांच रविवार नेष्ट फल दायी हैं। पांच रविवार वर्षा के गर्म को बिगाड़ेंगे। यथा "एक मासे रवेर्वारा पंचनस्यु शुभावहाः। पंचार्क योगे बैशाखे वृष्टि गर्म विनाशकः॥" इस माह में पांच सोमवार होने से धान्य सस्ता होगा। स्त्री वर्ग में शिक्षा का विकास होगा। प्रशासन में स्त्री वर्ग का वर्चस्व रहेगा। "सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवंति हि। धन धान्य समृद्धि स्यात्सुखं भवति सर्वदा।" धन धान्य का सुख योग बनेगा। शनिवारी अमावस्या दुर्भिक्ष होकर महादुख का कारण भी बन सकती है। पिता-पुत्रों में भय या विवाद योग से विमुख होने का योग बनता है। रेवती युक्त अमावस्या से कुछ बचाव बनेगा। "चन्द्र+शुक्र वृषे युक्ति अनाचार वृद्धि भवतिः।" दुराचारी कार्य संख्या में वृद्धि, कन्या हरण योग बनता है। स्त्री वर्ग मंत्री तक भी हरण का या मरण का योग रहेगा। भौमादित्य योग से अग्नि भय। बुधादित्य योग से तकनीकी शिक्षा का विकास, शिक्षा मंहगी। शुक्र+बुध योग से व्यापारी वर्ग चिंतित तथा स्त्री उपयोगी वस्तुओं का व्यापार बढ़ेगा। **व्यापार भविष्य-** धान्यादि एवं लाल वर्ण वस्तुओं में तेजी। घृत, तैल, लवण, रस, कपूर, चंदन आदि महंगी होगी। बुध के कारण बैलों में रोग तथा गाय-बैल भी महंगे होंगे। कपड़ा भी महंगा होगा। **आकाश लक्षण-** उत्तरी एवं पूर्वी भारत में प्राकृतिक आपदा का योग बनेगा। टिड्डी का आगमन योग धान्य में हानि कारक बनेगा। यत्र-तत्र हिंसा का वातावरण बनता रहेगा। बादल गरज के साथ हिमाचल प्रदेश, कश्मीर में वर्षा से जन-धन प्रभावित होंगे। **शकुन विचार-** कृष्ण पक्ष में तिथि घटै, किंतु सुदी में बढ़ जाए। होय सुभिक्ष सुकाल सुख महंगाई हट जाए। पूर्णिमा बैशाखी बरसे। भाद्रपद में वर्षा को तरसे॥ कृतिका के सूर्य में वर्षा हो तो आगे वर्षा का योग अच्छा बने।

वैशाख शु. 15 चंद्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 4 मई



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
00	06	01	01	03	02	07	05	11	11	10	08
19	17	00	09	19	01	08	15	15	23	15	21
09	21	09	46	29	32	55	37	37	54	20	24
19	29	52	48	41	03	56	53	53	24	04	13
58	749	42	72	04	67	04	04	04	03	01	00
09	08	49	39	30	01	03	05	05	10	14	29
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
भर. 2	स्वाति 4	कृत्ति. 2	कृत्ति. 4	आश्ले. 1	मृग. 3	अनु. 2	हस्त 2	उ.भा. 4	रेव. 3	शत. 3	पू.षा. 3

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः-4

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 5 से 18 मई सन् 2015 ई., रा. मिति 15 से 28 वैशाख तक। रविरुत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान	दिनमान	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
15	मं	1	10	44	09	57	वि	15	34	11	53	व	42	55	22	49	कौ	10	44	09	57	33	15	05	39	18	57	22	15	05	वृश्चिक	00	20	07	28	58/06	20	09	30	29
16	बु	2	11	17	10	09	अ	17	41	12	43	प	40	18	21	46	ग	11	17	10	09	33	18	05	38	18	58	23	16	06	वृश्चिक	00	21	05	34	06	21	04	07	15
17	गु	3	10	42	09	54	ज्ये	18	41	13	06	शि	36	49	20	21	वि	10	42	09	54	33	22	05	38	18	58	24	17	07	ध.13।06	00	22	03	40	03	21	59	08	05
18	शु	4	09	03	09	14	मू	18	41	13	05	सि	32	31	18	37	बा	09	03	09	14	33	25	05	37	18	59	25	18	08	धनु	00	23	01	43	03	22	51	08	59
19	श	5	06	28	08	11	पूषा	17	45	12	42	सा	27	31	16	36	तै	06	28	08	11	33	29	05	36	19	00	26	19	09	म. 18।33	00	23	59	46	01	23	41	09	57
20	र.	6	03	02	06	48	उषा	15	59	11	59	शुभ	21	50	14	19	व	03	02	06	48	33	32	05	35	19	00	27	20	10	मकर	00	24	57	47	57/59	24	00	10	57
00	र	7	58	46	29	06	००	00	00	00	00	००	00	00	00	00	००	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	. 0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00
21	चं	8	53	51	27	07	श्र	13	28	10	58	शु	15	33	11	48	बा	26	25	16	09	33	35	05	35	19	01	28	21	11	कुं. 22।21	00	25	55	46	58	24	29	11	58
22	मं	9	48	19	24	54	ध	10	17	09	41	ब्र	08	42	09	03	तै	21	10	14	02	33	38	05	34	19	01	29	22	12	कुम्भ	00	26	53	44	57	25	14	13	00
23	बु	10	42	15	22	28	श	06	30	08	09	ऐं/वै	01/53	23/38	06/27	07/01	व	15	21	11	42	33	41	05	33	19	02	30	23	13	मी.24।53	00	27	51	41	56	25	57	14	03
24	गु	11	35	49	19	52	पूभा/उभा	02/57	15/40	06/28	27/37	वि	45	38	23	48	ब	09	05	09	11	33	44	05	33	19	03	31	24	14	मीन	00	28	49	37	54	26	39	15	06
25	शु	12	29	11	17	13	रे	52	59	26	44	प्री	37	31	20	33	कौ	02	32	06	33	33	47	05	32	19	03	ज्ये./01	25	15	मे. 26।44	00	29	47	31	54	27	22	16	10
26	श	13	22	36	14	34	अ	48	28	24	55	आ	29	27	17	18	व	22	36	14	34	33	50	05	32	19	04	02	26	16	मेष	01	00	45	25	51	28	06	17	14
27	र	14	16	18	12	02	भ	44	24	23	17	सौ	21	40	14	11	श	16	18	12	02	33	53	05	31	19	04	03	27	17	वृ. 28।55	01	01	43	16	51	28	51	18	18
28	चं	30	10	38	09	46	कृ	41	08	21	58	शो	14	26	11	17	ना	10	38	09	46	33	56	05	31	19	05	04	28	18	वृष	01	02	41	07	49	29	40	19	20

- 15: ज्येष्ठ जिनकर व्रतारम्भ (जैन)
- 16: भ. 22।05 से, नारद जयंती, वाद्ययंत्र दानम्
- 17: भ. 09।54 तक, चतुर्थी व्रत, टैगोर जयंती, मां आनन्दमयी ज.
- 18: आर्द्रायां शुक्रः 20।28
- 20: भ. 06।48 से 17।59 तक, श्लेषा. 2 गुरु, दादुजी पुण्य दिवस
- 00: सप्तमी तिथि क्षयः
- 21: पंचक 22।21 से, कालाष्टमी, गुरु हरगोविन्द जी जयंती
- 22: A श्री अनन्त नाथ जन्म तपः (जैन), प्रदोष व्रत
- 23: भ. 11।42 से 22।28 तक, अमरदास जयंती (न), मातृ दिवस
- 24: अपरा एकादशी व्रत (सबका)
- 25: श्री मधुसूदन द्वादशी, पंचक 26।44 तक, वृषे भानु 10।40, A
- 26: भ. 14।34 से 25।16 तक, मास शिवरात्रि
- 27: पितृकार्येऽमा., भावुका 30, शनि जयंती, शांतिनाथ जन्म, B
- 28: सोमवती अमावस्या, देवकार्येऽमा., वट सावित्री, करिदिनं

B रोहिण्यां भौमः 26।53, शब्बे मिराज

ज्येष्ठ कृ. 8 चंद्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 11 मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
00	09	01	01	03	02	07	05	11	11	10	08
25	20	05	16	20	09	08	15	15	24	15	21
55	08	08	23	05	16	26	10	10	16	28	20
46	44	23	38	02	41	35	03	03	10	02	06
57	838	42	39	05	65	04	00	00	03	01	00
59	41	29	44	36	41	18	06	06	02	02	41
-	-	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
भर. 4	श्रव. 4	कृति. 3	रोहि. 2	आश्ले. 2	आर्द्रा 1	अनु. 2	हस्त 2	उ.भा. 4	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 3

2 म. बु. | 1 सू. | 12 के.ह. | 11 ने. | 10 चं. | 3 शु. | 4 गु. | 5 | 7 | 9 प्लू. | 6 रा. | 8 श.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा मंगलवार विशाखा नक्षत्र से प्रारंभ होकर सोमवती अमावस्या कृतिका नक्षत्र तद्नुसार दिनांक 5 से 18 मई 2015 तक रहेगा। माह वृषभ संक्रांति ज्येष्ठ बदी 12 शुक्रवार, वारात 5, नक्षत्रात् 5, वारनाम मिश्रा, पशून सुखदा। पूर्वाह्न प्रथम प्रहर व्यापिनी, नृपतीत हन्ति, पूर्व गमन, आग्नेयां दृष्टिः, तैतिल करणे प्रविष्टा नेष्ट फलम् जायते॥ वाहन रासभ (गधा), युवा अवस्था सूती, 30 मुहूर्ति, गुर्ज कंचुकी, धन-धान्ये समभाव प्रदायिनी। कृष्ण पक्ष में तिथि घटे, किंतु शुक्ल पक्ष में बढ़ जाए। होय सुभिक्ष सुकाल सुख, महंगाई वृद्धि हट जाए॥ बु+मं की युक्ति झगड़े-विवाद, पश्चिमी देशों में भूचाल बनेगा। शनि+चन्द्र युक्ति चाण्डाल योग अशुभ दायक। खनन विभागे विवादेषु हन्ति निर्दोष जनः॥ यानि खनन विभाग में हलचल मचेगा। जिससे निर्दोष लोगों की हत्या तक मामला बन सकता है। सोमवती अमावस्या कृतिका सुभिक्ष दायक योग। क्षेम आरोग्यता फलम् जन-जन में जोग॥ रोगनाशक योग भी तथा सुकाल की कारक होगी। "वृषराशौ यदा सूर्य कनक कान्न महर्घता। बातं च बहते दीर्घ कर्पासादि विनाशनम्॥ सोम पुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुमच्चि लक्षणम्। मेदिनी नव खंडेषु कलहश्च महद्भयम॥" कलह योग बनेगा। व्यापार भविष्य–इस पक्ष में रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी, घी, गुड़, खांड में तेजी कारक। अनाज में मंदी कारक योग तथा गेहूं, जौ का संग्रह करें तो पांचवे मास कार्तिक में लाभ प्राप्त कर सकेंगे। लेकिन छठे मास मार्गशीर्ष में हानि की संभावना रहेगी। आकाश लक्षण–जेठ बदी प्रतिपदा को भौम शनि रविवार । वर्षा का अभाव बने। पैदा अन्न में लागे टिड्डी वार। वर्षा में देरी का योग। आकाश में उल्का पिंड अतिचार योग बनेगा तथा कृत्तिम ग्रहों में व्याधि खराबी का योग बनेगा। शकुन विचार–ज्येष्ठ मासे रवि तपै, उष्ण चलत जग वाय। तो जानो धन बहुत परत धरती सकें न समाय। ज्येष्ठी अमावस्या की रहे नभ निर्मल दिन-रात। तो आगे वर्षांत में वर्षा उत्तम जान।

ज्येष्ठ कृ. 30 चंद्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 18 मई

शु. 3 | 1 | 4 गु. | 2 सू. मं. बु. चं. | ने. 11 | 12 के. ह. | 5 | 6 रा. | 8 श. | 10 | 7 | 9 प्लू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
01	01	01	01	03	02	07	05	11	11	10	08
02	00	10	19	20	16	07	15	15	24	15	21
41	20	04	01	47	51	55	04	04	36	34	14
07	38	36	43	45	16	51	43	43	49	31	41
57	849	42	04	06	64	04	06	06	02	00	00
50	07	09	56	37	08	27	16	16	52	49	51
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
कृति. 2	कृति. 2	रोहि. 1	रोहि. 3	आश्ले. 2	आर्द्रा 4	अनु. 2	हस्त 2	उ.भा. 4	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 3

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः-5

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 19 मई से 2 जून सन् 2015 ई., रा. मिति 29 वैशाख से 12 ज्येष्ठ तक। रविरुत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिन मान घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.
29	मं	1	05	55	07	52	रो	38	59	21	06	अ	07	59	08	42	ब	05	55	07	52	33	59	05	30	19	06	05	29	19
30	बु	2	02	27	06	28	मृ	38	16	20	48	धृ/सु	02/58	35/25	06/28	32/52	कौ	02	27	06	28	34	02	05	30	19	06	06	01	20
31	गु	3	00	33	05	42	आ	39	14	21	11	शू	55	41	27	45	ग	00	33	05	42	34	04	05	29	19	07	07	02	21
ज्ये. 01	शु	4	00	26	05	39	पुन	42	00	22	17	गं	54	24	27	14	वि	00	26	05	39	34	07	05	29	19	07	08	03	22
02	श	5	02	09	06	20	पु	46	32	24	05	वृ	54	31	27	17	बा	02	09	06	20	34	09	05	28	19	08	09	04	23
03	र	6	05	38	07	43	आ	52	36	26	30	ध्रु	55	50	27	48	तै	05	38	07	43	34	12	05	28	19	08	10	05	24
04	चं	7	10	37	09	42	म	59	46	29	22	व्या	58	00	28	40	व	10	37	09	42	34	14	05	27	19	09	11	06	25
05	मं	8	16	35	12	05	पूफा	60	00	–	–	ह	60	00	–	–	ब	16	35	12	05	34	16	05	27	19	10	12	07	26
06	बु	9	22	57	14	37	पूफा	07	30	08	27	ह	00	38	05	42	कौ	22	57	14	37	34	19	05	27	19	10	13	08	27
07	गु	10	29	03	17	04	उफा	15	06	11	29	व	03	13	06	44	ग	29	03	17	04	34	21	05	26	19	11	14	09	28
08	शु	11	34	20	19	10	ह	22	02	14	15	सि	05	20	07	34	व	01	50	06	10	34	23	05	26	19	11	15	10	29
09	श	12	38	21	20	46	चि	27	48	16	33	व्य	06	37	08	05	ब	06	31	08	02	34	25	05	26	19	12	16	11	30
10	र	13	40	50	21	45	स्वा.	32	07	18	17	व	06	49	08	09	कौ	09	47	09	20	34	27	05	26	19	12	17	12	31
11	चं	14	41	43	22	07	वि	34	54	19	23	प	05	47	07	44	ग	11	28	10	01	34	29	05	25	19	13	18	13	J1
12	मं	15	41	06	21	51	अ	36	11	19	53	शि	03	30	06	49	वि	11	35	10	03	34	30	05	25	19	13	19	14	02

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
19	वृष	1	03	38	56	57/48	30	30	20	20	चन्द्रदर्शन मु. 45, श्री दशास्वमेध स्नानारम्भः, वक्री बुधः A
20	मि. 8।52	1	04	36	44	46	07	24	21	16	रम्भा व्रत, प्रताप जयंती, सावान मु. 8
21	मिथुन	1	05	34	30	44	08	18	22	06	भ. 17।33 से, विनायक चतुर्थी व्रत
22	क. 15।56	1	06	32	14	43	09	13	22	52	भ. 05।39 तक, श्रुत पंचमी, भा. ज्येष्ठारम्भः, बुधास्तः B
23	कर्क	1	07	29	57	42	10	07	23	34	A 6।33, करवीर व्रतं, करिदिनं
24	सिं.26।30	1	08	27	39	40	11	00	24	00	B 9।44 पश्चिमायां
25	सिंह	1	09	25	19	39	11	52	24	12	भ. 09।42 से 22।50 तक, रोहिण्यां रविः 19।56
26	सिंह	1	10	22	58	37	12	44	24	48	दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, मेला क्षीर भवानी (कश्मीर)
27	कं. 15।13	1	11	20	35	35	13	34	25	23	महेश नवमी
28	कन्या	1	12	18	10	34	14	25	25	56	श्री गंगा दशहरा C एकादशी व्रत (सबका)
29	तु. 27।28	1	13	15	44	33	15	17	26	31	भ. 6।10 से 19।10 तक, व्यतिपात 7।34 से, निर्जला C
30	तुला	1	14	13	17	31	16	10	27	06	व्यतिपात 8।05 तक, चम्मक द्वादशी, कर्के शुक्रः 20।58
31	तुला	1	15	10	48	30	17	04	27	44	प्रदोष, सावित्री व्रतारम्भः
J1	वृ.13।10	1	16	08	18	29	18	00	28	25	भ. 22।07 से, जून मासारम्भः, वट सावित्री गुर्जराणां
02	वृश्चिक	1	17	05	47	28	18	56	29	09	भ. 10।03 तक, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं, कबीर जयंती, D

D मन्वादि, सत्यनारायण व्रत, ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ण, पुष्ये शुक्रः 29।19

❖ तथा विद्युत का संकट छाया रहेगा। तेज गर्मी से यत्र-तत्र छिट-पुट वर्षा भी होगी। शकुन विचार-चित्रा स्वाती विशाखा जो जेठ मास बरसाय। अन्न भाव मंहगा रहे सावन वर्षा न आय।
ज्येष्ठी पूनम मूल नहीं अथवा नहिं धन विद। तो सावण सुर्कों गयै समो बुरो अतिमंद। यानि दोनों योग बने तो संकट दायक वर्ष रहेगा।

ज्येष्ठ शु. 8 मंगल, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 26 मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
01	04	01	01	03	02	07	05	11	11	10	08
10	13	15	17	21	25	07	14	14	24	15	21
22	23	40	22	44	15	20	20	20	58	40	07
58	57	17	14	56	56	05	16	16	50	03	05
57	710	41	27	07	61	04	00	00	02	00	01
38	31	46	16	40	55	28	24	24	38	34	02
-	-	मा	व	मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व
-	-	अ	अ	उ	ठ	ठ	ठ	ठ	-	-	-
1 रोहि.	1 पू.फा.	2 रोहि.	3 रोहि.	2 आश्ले.	2 पुन.	2 अनु.	2 हस्त	4 उ.भा.	3 रेव.	3 शत.	3 श्रव.

कुण्डली (26 मई): 1; 2 सू. मं. बु.; 3 शु.; 4 गु.; 5 चं.; 6 रा.; 7; 8 श.; 9 प्लू.; 10; 11 ने.; 12 के. ह.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष मंगलवारीय प्रतिपदा रोहिणी नक्षत्र से प्रारंभ होकर पूर्णिमा मंगलवारीय अनुराधा नक्षत्र तक दिनांक 19 मई से 2 जून 2015 तक रहेगा। पक्ष में मासादि योग फलम्-इस माह में पांच मंगलवार होना उदंगल का कारण बनेगा। "यत्र मासे महिसूनोर्जायन्ते पंच वासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥" पांच मंगल के कारण पृथ्वी पर रक्तपात तथा छत्र-भंग यानि राजा, मंत्री का देहत्याग तथा शासन में परिवर्तन भी बनने का कारक होगा। किसी बड़े व्यक्ति का अभाव योग बनता है। मंगलेध्रियते राजा। विश्वस्तरीय सीमा विवाद का झगड़ा। जापान, जर्मनी में भी गृह युद्ध का वातावरण बनेगा। ईराक, ईरान में हिंसा योग। ज्येष्ठ कृष्ण 12 रेवती होने से प्रजा में कष्ट योग बनेगा। सोमवती अमावस्या सुखदा सोम्य योग सुभिक्ष, आरोग्य तथा वर्षा का प्रबल उदय। धान्य की उत्पत्ति और प्रजा में सुखद योग। राजनेताओं में मानवता का उदय योग जन सेवार्थ तत्परता का संदेश यत्र-तत्र-सर्वत्र बढ़ेगा। वृषभ राशि में चार ग्रहों की युक्ति बु+चं+सू+मं दिनांक 20 मई 2015 को बनने से रक्ताच्छादित योग बनेगा। "एक राशौ यदा यान्ति चत्वार पंच खेचराः। प्लावयन्ति महि सर्वा रुधिरेण जलेन वा।" पश्चिमोत्तर राष्ट्रों तथा चीन, पाकिस्तान जैसे उग्रवादी आंदोलन मय सैन्य बल को सतर्क करके सुरक्षा बढ़ानी होगी। महायुद्ध जैसे बादल मंडरायेंगे। आतंकवादी का अंत जैसा योग बनने की स्थिति बनेगी। व्यापार भविष्य-मास में शुक्ला तृतीया क्षय के कारण मूंग, घी महंगे होंगे। सोना, चांदी के भाव तेज रहेंगे। गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा, मोटर गाड़ी आदि, चौपाये पशु एवं वाहनों के भाव तेज होंगे। रस युक्त वस्तुएं सस्ती होंगी। तृण-घास, खल, पशु आहार में तेजी चलेगी। आकाश लक्षण-इस पक्ष में ता. 20 मई 2015 को (बु+चं+सू+मं) चतुर्थ ग्रह योग से सूर्य+मंगल की युति से अग्निकाण्डों❖

ज्येष्ठ शु. 15 मंगल, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 2 जून

कुण्डली (2 जून): 1; 2 सू. मं. बु.; 3; 4 गु. शु.; 5; 6 रा.; 7; 8 चं. श.; 9 प्लू.; 10; 11 ने.; 12 के. ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
01	07	01	01	03	03	07	05	11	11	10	08
17	08	20	13	22	02	06	14	14	25	15	20
15	47	31	37	41	21	49	00	00	16	43	59
47	58	28	19	33	10	06	05	05	27	12	20
57	782	41	32	08	59	04	09	09	02	00	01
29	43	26	24	30	28	21	54	54	24	20	10
-	-	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	अ	अ	उ	उ	ठ	उ	ठ	-	-	-
3 रोहि.	2 अनु.	4 रोहि.	2 रोहि.	2 आश्ले.	4 पुन.	2 अनु.	2 हस्त	4 उ.भा.	3 रेव.	3 शत.	3 श्रव.

प्र. आषाढ़ कृष्ण पक्षः -6

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 3 से 16 जून सन् 2015 ई., रा. मिति 13 से 26 ज्येष्ठ तक। रविरुत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान		सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
13	बु	1	39	08	21	04	ज्ये	36	08	19	52	सि/सा	00/55	05/38	05/27	27/40	बा	10	16	09	32	34	32	05	25	19	14	20	15	03	ध. 19।52	01	18	03	15	57/27	19	52	29	59	शब्बे-ए-बारात, गुरु हरगोविन्द सिंह जयंती (प्रा.म.)
14	गु	2	36	05	19	51	मू	34	59	19	24	शुभ	50	23	25	34	तै	07	44	08	30	34	34	05	25	19	14	21	16	04	धनु	01	19	00	42	27	20	47	30	52	अनुराधायां शनि: 11।37
15	शु	3	32	11	18	17	पूषा	33	00	18	36	शु	44	29	23	12	व	04	14	07	06	34	35	05	25	19	15	22	17	05	म.24।22	01	19	58	09	25	21	39	07	50	भ. 7।06 से 18।17 तक, चतुर्थी व्रत, रक्तदान दिवस
16	श	4	27	40	16	28	उषा	30	24	17	34	ब्र	38	07	20	39	बा	27	40	16	28	34	37	05	25	19	15	23	18	06	मकर	01	20	55	34	25	22	28	08	50	मृगे भौम: 7।20
17	र	5	22	44	14	30	श्र	27	24	16	22	ऐं	31	27	17	59	तै	22	44	14	30	34	38	05	24	19	16	24	19	07	कुं. 27।44	01	21	52	59	24	23	14	09	52	पञ्चकारम्भ: 27।44 से, A 9।32 पूर्वस्यां
18	चं	6	17	34	12	26	ध	24	10	15	04	वै	24	36	15	15	व	17	34	12	26	34	39	05	24	19	16	25	20	08	कुम्भ	01	22	50	23	23	23	57	10	54	भ. 12।26 से 23।21 तक, मृगे रवि 17।53, बुधोदय A
19	मं	7	12	16	10	19	श	20	48	13	44	वि	17	39	12	28	ब	12	16	10	19	34	41	05	24	19	17	26	21	09	कुम्भ	01	23	47	46	23	24	00	11	56	मेला भूंतर (हिमाचल)
20	बु	8	06	54	08	10	पूभा	17	24	12	22	प्री	10	41	09	40	कौ	06	54	08	10	34	42	05	24	19	17	27	22	10	मी. 06।42	01	24	45	09	22	24	39	12	58	B 27।21
21	गु	9	01	33	06	02	उभा	14	02	11	01	आ/सौ	03/56	42/48	06/28	53/07	ग	01	33	06	02	34	43	05	24	19	17	28	23	11	मीन	01	25	42	31	22	25	21	14	00	भ. 16।56 से 27।55 तक, गोपद्म व्रतोद्यापन, मार्गी बुध: B
00	0	10	56	17	27	55	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	01	00	00	00	00	00	00	00	00	दशमी तिथि क्षय:
22	शु	11	51	10	25	52	रे	10	45	09	42	शो	50	02	25	25	ब	23	42	14	53	34	44	05	24	19	18	29	24	12	मे. 09।42	01	26	39	53	22	26	03	15	02	योगिनी एकादशी व्रत, पञ्चक 9।42 तक
23	श	12	46	21	23	57	अ	07	39	08	28	अ	43	29	22	48	कौ	18	43	12	53	34	44	05	24	19	18	30	25	13	मेष	01	27	37	15	21	26	46	16	04	योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णवानां)
24	र	13	41	59	22	12	भ	04	54	07	22	सु	37	19	20	20	ग	14	06	11	03	34	45	05	24	19	18	31	26	14	वृ. 13।07	01	28	34	36	20	27	32	17	06	भ. 22।12 से, प्रदोष व्रत, शिवरात्रि, वक्री नेपच्यून 28।06
25	चं	14	38	18	20	44	कृ	02	41	06	29	धृ	31	41	18	05	वि	10	03	09	25	34	46	05	24	19	19	अमा 01	27	15	वृष	01	29	31	56	20	28	20	18	06	भ. 9।25 तक, मिथुने रवि: 17।15, मिथुने भौम: 25।12, C
26	मं	30	35	33	19	38	रो	01	13	05	54	शू	26	48	16	08	च	06	48	08	08	34	46	05	25	19	19	02	28	16	मि. 17।45	02	00	29	16	19	29	12	19	03	देवपितृकार्येऽमा., अधिमासारम्भ C रोहिणी व्रतं

❖ अनावृष्टि से मास तक महंगा बिके अनाज॥ बदी पंचमी आषाढ़ में निर्मल रहे आकाश, ना बादल न बिजली कृषि का निश्चित नाश॥

प्र. आषाढ़ कृ. 8 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 10 जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
01	10	01	01	03	03	07	05	11	11	10	08
24	29	26	10	23	10	06	13	13	25	15	20
45	17	01	37	53	03	15	09	09	34	44	49
09	21	33	36	01	41	05	21	21	31	52	24
57	848	41	08	09	55	04	00	00	02	00	01
23	04	05	15	21	59	07	24	24	06	04	18
-	-	मा	व	मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
मृग. 1	पू.भा. 3	मृग. 1	रोहि. 1	आश्ले. 3	पुष्य 3	अनु. 1	हस्त 1	उ.भा. 3	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 3

4 गु. शु. | 3 | 2 चं.मं. बु.सू. | 1 | 12 के. ह. | 11 ने. | 5 | 6 रा. | 7 | 8 श. | 9 प्लू. | 10.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा कृष्ण बुधवार ज्येष्ठा नक्षत्र से प्रारंभ होकर भौमवती अमावस्या रोहिणी नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 3 से 16 जून 2015 तक रहेगा। इस पक्ष में मिथुन संक्रांति प्रथम आषाढ़ कृष्ण चौदस सोमवार, वारात् 4, नक्षत्रात् 5, वारनाम ध्वांक्षी, वैश्यान सुखदा, नक्षत्र नाम नंदा, गणकान् सुखदा, अपराह्न तीसरे प्रहर व्यापिनी, वैश्यान हन्ति। **दक्षिणे गमनं नैऋत्यां दृष्टि। शकुनि करणे प्रविष्टा महर्घफलं, श्वान वाहन, शाईली उपवाहनम्, सुभिक्ष कारक, कृष्ण जिंक कचुंकी, बन्ध्या वस्था (ऊभी), 45 मुहूर्ति, धान्ये भावे समर्घ॥ शुक्रोदय पश्चिमायां, दान वस्त्रात् शुभ।** मृगे रवि दिनांक 8 जून 2015, 17।53 घं.मि. से वायु प्रकोप योग। शुक्र+गुरु की कर्क में युक्ति होना बलात्कार, भ्रष्टाचार, यौन दुराचार संबंधी घटनाओं का प्रदर्शन बढ़ेगा। संन्यासियों के आश्रमों की गोपनीय हरकतों का भाण्डाफोड़ भी शुक्र+गुरु की युक्ति से बनेगा। "आषाढ़ बदी चौदस दिना होय रोहिणी योग। **कर्फ्यू अरु कंट्रोल से दुख पावैं सब लोग॥"** के अनुसार सप्ताह के अंदर किसी इलाके में विशेष भारी दंगे-फसाद-झगड़ा आदि होने से कर्फ्यू और कंट्रोल से जनता को कष्ट होगा। यदि आज वायु चले तो खाद्य सामग्री में तेजी होगी। **बृहस्पति यदा कर्के स्वल्प मेघ प्रवर्षसि, राज विग्रह च दैव दुर्भिक्ष तत्र जायते।** मानसून प्रभावित करेगा। **व्यापार भविष्य–** मूंग, मोठ, तिलहन, दलहन, सोना, सीसा, तांबा, कपास, सूती वस्त्र, तृण, घास तथा तांबा, लोहा, सोयाबीन, चना में तेजी का योग अचानक चिंता दायक बनेगा। व्यापारी सावधान रहें! **आकाश लक्षण–**पूर्वोत्तर भारत में बाढ़ जैसी स्थिति बनेगी। प्राकृतिक आपदा से नदियों में भी जलस्तर बढ़कर जन-धन हानि योग। मं+शु+बु की युक्ति से दक्षिण भारत में भूमि कंपन ज्वालामुखी योग से जनता चिंतित। कहीं पर उपग्रह गिरने का योग बनेगा। शकुन विचार–आषाढ़ बदी प्रतिपदा को वर्षा बादल गाज। ❖

प्र. आषाढ़ कृ. 30 मंगल, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 16 जून

4 गु.शु. | बु. च. 2 | 1 | 5 | 3 सू. मं. | 12 ह. के. | 6 रा. | 9 प्लू. | 11 ने. | 7 | 8 श. | 10

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
02	01	02	01	03	03	07	05	11	11	10	08
00	23	00	11	24	15	05	12	12	25	15	20
29	06	07	06	50	30	51	44	44	46	44	41
16	34	20	37	54	20	09	17	17	29	44	21
57	812	40	18	09	52	03	11	11	01	00	01
20	52	50	40	56	45	50	09	09	52	07	22
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	व	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
मृग. 3	रोहि. 4	मृग. 3	रोहि. 1	आश्ले. 3	पुष्य 4	अनु. 1	हस्त 1	उ.भा. 3	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 3

प्र. आषाढ़ शुक्ल पक्षः-7

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 17 जून से 2 जुलाई सन् 2015 ई., रा. मिति 27 ज्येष्ठ से 11 आषाढ़ तक। रविरुत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	दिनमान घ.	दिनमान प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
27	बु	1	34	00	19	00	मृ	00	47	05	43	गं	22	49	14	32	कि	04	36	07	15	34	47	05	25	19	19	03	29	17	मिथुन	02	01	26	35	57/19	30	06	19	57	आश्लेषायां शुक्रः 13।26
28	गु	2	33	51	18	57	आ	01	38	06	04	वृ	19	57	13	24	बा	03	44	06	54	34	47	05	25	19	20	04	30	18	क. 24।42	02	02	23	54	18	07	00	20	45	चन्द्रदर्शन मु. 45
29	शु	3	35	17	19	32	पुन	03	57	07	00	ध्रु	18	18	12	44	तै	04	21	07	10	34	47	05	25	19	20	05	रम. 01	19	कर्क	02	03	21	12	18	07	55	21	29	रोजा शुरू, रमजान 9 मु.
30	श	4	38	19	20	45	पु	07	50	08	33	व्या	17	56	12	35	व	06	36	08	03	34	48	05	25	19	20	06	02	20	कर्क	02	04	18	30	17	08	50	22	10	भ. 8।03 से 20।45 तक
31	र	5	42	49	22	33	आ	13	15	10	43	ह	18	45	12	55	ब	10	24	09	35	34	48	05	25	19	20	07	03	21	सिं. 10।43	02	05	15	47	16	09	43	22	47	सायन कर्क रवि 22।08, दक्षिणायनारम्भः
01	चं	6	48	28	24	49	म	19	55	13	24	व	20	33	13	39	कौ	15	32	11	38	34	48	05	26	19	21	08	04	22	सिंह	02	06	13	03	15	10	35	23	22	राष्ट्रीय आषाढ़ारम्भः, अयन प्रथम दिन, आर्द्रायां रविः 16।48
02	मं	7	54	43	27	19	पूफा	27	25	16	24	सि	23	00	14	38	ग	21	33	14	03	34	48	05	26	19	21	09	05	23	कं. 23।10	02	07	10	18	15	11	26	23	56	भ. 27।19 से,
03	बु	8	60	00	–	–	उफा	35	09	19	30	व्य	25	41	15	43	वि	27	53	16	35	34	47	05	26	19	21	10	06	24	कन्या	02	08	07	33	14	12	17	24	00	भ. 16।35 तक
04	गु	8	00	57	05	49	ह	42	28	22	26	व	28	07	16	41	ब	00	57	05	49	34	47	05	26	19	21	11	07	25	कन्या	02	09	04	47	14	13	08	24	30	आर्द्रायां भौमः 21।06
05	शु	9	06	29	08	02	चि	48	46	24	57	प	29	49	17	22	कौ	06	29	08	02	34	47	05	27	19	21	12	08	26	तु. 11।45	02	10	02	01	12	14	00	25	04	श्लेषा. 4 गुरुः 17।27
06	श	10	10	45	09	45	स्वा	53	33	26	52	शि	30	24	17	37	ग	10	45	09	45	34	46	05	27	19	21	13	09	27	तुला	02	10	59	13	13	14	53	25	40	भ. 22।22 से,
07	र	11	13	21	10	48	वि	56	34	28	05	सि	29	39	17	19	वि	13	21	10	48	34	46	05	27	19	21	14	10	28	वृ. 21।51	02	11	56	26	12	15	47	26	19	भ. 10।48 तक, कमला एकादशी व्रत (सबका)
08	चं	12	14	06	11	06	अ	57	45	28	33	सा	27	24	16	25	बा	14	06	11	06	34	45	05	27	19	21	15	11	29	वृश्चिक	02	12	53	38	11	16	44	27	02	सोम प्रदोष व्रत
09	मं	13	12	59	10	40	ज्ये	57	13	28	21	शुभ	23	42	14	57	तै	12	59	10	40	34	44	05	28	19	22	16	12	30	ध. 28।21	02	13	50	49	12	17	40	27	49	मृगे बुधः 22।34
10	बु	14	10	12	09	33	मू	55	12	27	33	शु	18	41	12	57	व	10	12	09	33	34	43	05	28	19	22	17	13	J1	धनु	02	14	48	01	11	18	36	28	41	भ. 9।33 से 20।47 तक, चांद पुन्य, जुलाई मास प्रारंभ
11	गु	15	05	59	07	52	पूषा	52	02	26	18	ब्र	12	33	10	30	ब	05	59	07	52	34	42	05	29	19	22	18	14	02	धनु	02	15	45	12	11	19	31	29	38	सत्यनारायण व्रतं, पूर्णिमा व्रत

❖ आषाढ़ सुदी एकादशी घटा जो चढ़ै घनघोर। अनाज भाव भादो घटै घी मचावै शोर॥ यानी सुभिक्ष योग है।
दोयज नौमी आषाढ़ सुदी सोम गुरो भृगुवार। उत्तम वर्षा अन्न मंदा रहे व्यापार॥ अधिक मास पुण्य दान करें।

प्र. आषाढ़ शु. 8 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 24 जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
02	05	02	01	03	03	07	05	11	11	10	08
08	03	05	15	26	22	05	11	11	26	15	20
07	06	32	55	13	11	22	44	44	00	42	30
33	42	41	15	10	16	10	18	18	07	45	00
57	708	40	53	10	47	03	00	00	01	00	01
14	16	30	16	37	08	22	02	02	32	22	27
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	व	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
आर्द्रा 1	उ.फा. 2	मृग 4	रोहिणी 2	आश्ले. 3	आश्ले. 2	अनु. 1	हस्त 1	उ.भा. 3	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 3

4 गु.शु. | बु. 2 | 1 | 5 | 3 मं.सू. | 12 ह. के. | 6 चं. रा. | 11 ने. | 7 | 9 प्लू. | 8 श. | 10

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष बुधवार शुक्ल प्रतिपदा मृगशिरा नक्षत्र से प्रारंभ होकर शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र तक तदनुसार दिनांक 17 जून से 2 जुलाई 2015 अधिकमास (पुरुषोत्तम मास) के रूप में अपना महत्त्व रखेगा। इस पक्ष एवं मास का फल इस प्रकार जन हिताय प्रस्तुत है-मास में पांच बुधवार एवं पांच गुरुवार होने के कारण बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरंतरम् प्रजानां सुख मत्यंतं सुभिक्षं च प्रजायते॥ पांच बुधवार होने से सामान्य जनता सुखी और सुभिक्ष कारक योग, अन्नादि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होगा। यत्र मासे पंच वारा जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रह पश्चिम देशे खड्ग युद्धश्च जायते॥ पांच गुरुवार के कारण पश्चिम देशों-क्षेत्रों में संघर्ष तथा युद्ध होने का कारक बनेगा। "सोम पुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुर्याच्च लक्षणम्। मेदिनी नवखंडेषु कलहश्च महद्भयम्॥" वृषभ राशि पर बुध होने से समस्त पृथ्वी पर कलह, संघर्ष हो और अत्यंत भय व्याप्त होने का कारक बनेगा। भौमादित्य योग मिथुने। राज विद्रोह या अग्नि कांड, विस्फोटक पदार्थों से भय, बम फूटने जैसे योग से जनता को हानि दायक योग। व्यापारी वर्ग में विवाद बढ़ेगा। व्यापार भविष्य–सूर्य-मिथुन के योग से कपास, कंद-मूल, तिल, धान्य, घी, खांड, कपूर, खोपरा में तेजी बनेगी। शुक्र कर्क में होने से द्रव्य सामग्री भी तेज। रसों वाले पदार्थों में घट-बढ़ चलेगी। "मिथुने भास्करे यति कार्पासः कन्दमूलकं। तिलाश्च सर्व धान्यानि महर्घाणि स्युरेव हि।" योग से तेजी। आकाश लक्षण–गुरु-शुक्र, सूर्य से आगे होने से तथा सूर्य-भौम से युक्त होना प्राकृतिक आपदा का संकेत बनता है। पवन तेज चलेगा। तेज धूप से परेशानी। स्त्री वर्ग की काम भावना बढ़ेगी। पूर्वी भारत में भूकम्प या भू-स्खलन जैसा अशोभनीय योग बनेगा। शकुन विचार– आषाढ़ सुदी चौथ को बिजली वर्षा गाज। उत्तम वर्षा जानिए उपजें खूब अनाज॥ ❖

प्र. आषाढ़ शु. 15 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 2 जुलाई

4 शु. गु. | बु. 2 | 1 | 5 | 3 सू. मं. | 12 ह. के. | 6 रा. | 9 चं. प्लू. | ने. 11 | 7 | 8 श. | 10

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
02	08	02	01	03	03	07	05	11	11	10	08
15	14	10	25	27	27	04	10	10	26	15	20
45	28	55	05	40	59	57	54	54	10	38	18
12	01	20	03	31	50	22	23	23	57	46	12
57	838	40	84	11	39	02	12	12	01	00	01
11	56	10	02	12	32	48	25	25	10	37	29
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	व	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
आर्द्रा 3	पू.षा. 1	आर्द्रा 2	मृग 1	आश्ले. 4	आश्ले. 4	अनु. 1	हस्त 1	उ.भा. 3	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 3

द्वि. आषाढ़ कृष्ण पक्षः-8

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 3 से 16 जुलाई सन् 2015 ई., रा. मिति 12 से 25 आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ.	तिथि प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र न	नक्षत्र घ.	नक्षत्र प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग यो	योग घ.	योग प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण क	करण घ.	करण प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.
12	शु	1	00	41	05	45	उषा	48	05	24	43	ऐं / वै	05 / 58	34 / 00	07 / 28	42 / 41	कौ	00	41	05	45
00	शु	2	54	40	27	21	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00
13	श	3	48	14	24	47	श्र	43	41	22	58	वि	50	07	25	32	व	21	28	14	05
14	र	4	41	41	22	10	ध	39	09	21	10	प्री	42	09	22	21	ब	14	57	11	28
15	चं	5	35	18	19	37	श	34	46	19	25	आ	34	18	19	13	कौ	08	27	08	53
16	मं	6	29	14	17	12	पूभा	30	43	17	48	सौ	26	44	16	12	ग	02	12	06	24
17	बु	7	23	39	14	59	उभा	27	07	16	22	शो	19	33	13	20	ब	23	39	14	59
18	गु	8	18	36	12	58	रे	24	05	15	10	अ	12	48	10	39	कौ	18	36	12	58
19	शु	9	14	09	11	12	अ	21	39	14	12	सु	06	33	08	09	ग	14	09	11	12
20	श	10	10	20	09	40	भ	19	51	13	29	ध / शू	00 / 55	48 / 37	05 / 27	52 / 47	वि	10	20	09	40
21	र	11	07	12	08	26	कृ	18	44	13	02	गं	51	00	25	57	बा	07	12	08	26
22	चं	12	04	49	07	29	रो	18	23	12	55	वृ	47	04	24	23	तै	04	49	07	29
23	मं	13	03	19	06	53	मृ	18	55	13	08	ध्रु	43	54	23	08	व	03	19	06	53
24	बु	14	02	48	06	41	आ	20	28	13	46	व्या	41	36	22	13	श	02	48	06	41
25	गु	30	03	25	06	57	पुन	23	11	14	51	ह	40	16	21	41	ना	03	25	06	57

रा. मि.	दिनमान घ.	दिनमान प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा. घं. मि.	रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रान्ति	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
12	34	41	05	29	19	22	19	15	03	म. 07/55	02	16	42	23	57/11	20	22	30	38	
00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000°	00	00	00	00	00	00	00	00	00	द्वितीया तिथि क्षयः
13	34	40	05	29	19	21	20	16	04	मकर	02	17	39	34	11	21	11	07	41	भ. 14/05 से 24/47 तक
14	34	39	05	30	19	21	21	17	05	कु. 10/04	02	18	36	45	11	21	57	08	45	चतुर्थी व्रत, पञ्चक 10/04 से, सिंहे मघायां शुक्रः 9/51, A
15	34	38	05	30	19	21	22	18	06	कुम्भ	02	19	33	56	12	22	40	09	49	पुन. रवि 16/26
16	34	37	05	31	19	21	23	19	07	मी. 12/11	02	20	31	08	11	23	22	10	52	भ. 17/12 से 28/04 तक
17	34	35	05	31	19	21	24	20	08	मीन	02	21	28	19	13	24	00	11	54	A मिथुने बुधः 12/21, गुरु हरगोविन्द जयंती (प्रा.मतेन)
18	34	34	05	31	19	21	25	21	09	मे. 15/10	02	22	25	32	12	24	03	12	56	पञ्चक 15/10 तक, आर्द्रायां बुधः 10/17
19	34	32	05	32	19	21	26	22	10	मेष	02	23	22	44	13	24	46	13	57	भ. 22/24 से, B दक्षिणायनारम्भः, पुन. बुध 5/42
20	34	30	05	32	19	21	27	23	11	वृ. 19/21	02	24	19	57	14	25	30	14	58	भ. 09/40 तक, बुधास्त पूर्वस्यां 13/49, श्री नमीनाथ जन्म-तप
21	34	28	05	33	19	20	28	24	12	वृष	02	25	17	11	14	26	16	15	57	पुरुषोत्तमा कामदा एकादशी व्रत
22	34	27	05	33	19	20	29	25	13	मि. 24/59	02	26	14	25	14	27	06	16	55	सोम प्रदोष व्रत
23	34	25	05	34	19	20	30	26	14	मिथुन	02	27	11	39	15	27	57	17	49	भ. 6/53 से 18:44 तक, शिवरात्री
24	34	23	05	34	19	19	31	27	15	मिथुन	02	28	08	54	15	28	51	18	39	पितृकार्येऽमा., पुन. भौमः 20/55, रोहिणी व्रत
25	34	21	05	35	19	19	श्रा. 01	28	16	क. 8/32	02	29	06	09	16	29	45	19	24	देवकार्येऽमा., अधिक मास पूर्ण, कर्के रविः 28/04, निरयण B

द्वि. आषाढ़ कृ. 8 गुरु, प्रातः 5/30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 9 जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
02	11	02	02	03	04	07	05	11	11	10	08
22	24	15	06	29	02	04	10	10	26	15	20
25	21	35	18	00	07	39	16	16	18	33	07
32	55	38	24	30	36	38	40	40	01	44	44
57	841	39	108	11	30	02	00	00	00	00	01
12	16	55	03	39	46	14	09	09	51	49	30
-	-	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
पु. 1	रेवती 3	आर्द्रा 3	मृग. 4	आश्ले. 4	मघा 1	अनु. 1	उ.फा. 1	उ.भा. 3	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 3

4 गु. | 2 | 5 शु. | 3 सू. मं. बु. | 12 चं. के. ह. | 1 | 6 रा. | 9 प्लू. | 11 ने. | 7 | 8 श. | 10

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शुक्रवार उत्तराषाढ़ नक्षत्र से प्रारंभ होकर अमावस्या गुरुवार पुनर्वसु नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 3 से 16 जुलाई 2015 तक रहेगा। द्वितीया क्षय योग से आपदा योग बनेगा। इस पक्ष में कर्क संक्रांति द्वितीया आषाढ़ कृष्ण अमावस्या गुरुवार, वारात 4, नक्षत्रात् 5, वारनाम नंदा, गणकान् सुखदा, नक्षत्रनाम ध्वांक्षी, वैश्यान सुखदा, प्रभात रात्रि चतुर्थ प्रहर व्यापिनी, गोरक्षकान् हन्ति, पश्चिमे गमने, वायव्यो दृष्टि, बव करणे प्रविष्टा, मध्यम फल, सिंह वाहन, गज उपवाहन, श्वेत वस्त्र, स्वर्ण पात्र, अन्न भक्षण, बालावस्था (बैठी) 30 मुहूर्ति, धान्य भाव सम योग। उत्तम वर्षा योग भी। पुनर्वसु गति सूर्य संग मं+चं+बु चत्वार खेचरा। विश्व में अशोभनीय घटना तथा पश्चिमी देशो में वरिष्ठ राजनेता का देहावसान योग। सेन्य बलों में टकराव भी चलेगा। यथा एक राशौ यदा यांति चत्वारः पंच खेचरा। प्लावयंति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा। जल से डूबने का कारण भी बनेगा। बुधादित्य-चंद्रादित्य-भौमादित्य योग से, समझौता योग से कुछ अशांति का निवारण होगा। रक्षा मंत्रालय को सतर्क रहने से नियंत्रण जैसा योग विवेक से शांति से शुभ होगा। व्यापार भविष्य-यदा कन्या स्थित राहुर्धात्री फलम च पिप्पली। मास मेकं हयं चैव महर्घ त्रिगुणं भवेत्॥ इस योग के अनुसार दो मास में आंवला, पीपली, चंदन, कपूर, कस्तूरी आदि सुगंधित पदार्थों में तेजी। अलसी, सरसों, तिल, तेल, तिलहन पदार्थ मंदा तथा रुई, कालीमिर्च में भारी तेजी योग बनेगा। आकाश लक्षण-आकाश तेज तपेगा। सूर्य की किरणों का ताप असह्य होगा। तेज आंधी, तूफान से वर्षा में खंड वृष्टि का योग बनेगा। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान के लोग गर्मी के कारण त्रस्त रहेंगे। दक्षिणी भारत में मानसून का आगमन होगा। अधिक मास समाप्त। शकुन विचार-साढ़ बदी आठे दिना बादल चंदा जोय। वर्षा ऋतु में जानिए भारी वर्षा होय॥ अधिक मास आषाढ़ बदी प्रतिपदा गाज बीज यदि होय। श्रावण-भादव बरसे नहीं खेती में हानि होय॥

द्वि. आषाढ़ कृ. 30 गुरु, प्रातः 5/30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 16 जुलाई

4 | 3 सू. चं. मं. बु. | 2 | 5 शु. गु. | 12 के. ह. | 1 | 6 रा. | 9 प्लू. | 11 ने. | 7 | 8 श. | 10

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
02	02	02	02	04	04	07	05	11	11	10	08
29	28	20	19	00	05	04	09	09	26	15	19
06	23	14	58	23	05	26	32	32	22	27	57
09	31	11	57	25	49	01	10	10	46	21	20
57	762	39	124	12	19	01	11	11	00	01	01
15	34	40	43	02	32	37	32	32	30	00	28
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	व	व
-	-	अ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
पुन. 3	पुन. 3	पुन. 1	आर्द्रा 4	मघा 1	मघा 2	अनु. 1	उ.फा. 4	उ.भा. 2	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 2

द्वि. आषाढ़ शुक्ल पक्षः-9

श्री सं. 2072 शाके 1937 | दिनमान | स्टैं. टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र राशि प्रवेश | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. 17 से 31 जुलाई सन् 2015 ई., रा. मिति 26 आषाढ़ से 9 श्रावण तक। रविर्दक्षिणायणे, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान		उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	प्र.	मु.	अं.	भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
आषा 26	शु	1	05	19	07	43	पु	27	09	16	27	व	39	58	21	35	ब	05	19	07	43	34	18	05	35	19	19	02	29	17	कर्क	03	00	03	25	57 15	30	40	20	06	श्री जगन्नाथपुरी रथ यात्रा, जमात-ए-अलविदा
27	श	2	08	31	09	01	आ	32	24	18	34	सि	40	41	21	52	कौ	08	31	09	01	34	16	05	36	19	18	03	30	18	सिं.18।34	03	01	00	40	17	07	33	20	45	चंद्रदर्शन मु. 30, ईद-उल-फितर, मनोरथ द्वितीया
28	र	3	13	01	10	49	म	38	50	21	09	व्य	42	18	22	32	ग	13	01	10	49	34	14	05	36	19	18	04	01	19	सिंह	03	01	57	57	16	08	26	21	21	भ. 23।54 से, व्यतिपात, सव्वाल मु. 10
29	चं	4	18	34	13	03	पूफा	46	10	24	05	व	44	38	23	28	वि	18	34	13	03	34	12	05	37	19	18	05	02	20	सिंह	03	02	55	13	17	09	18	21	56	भ. 13।03 तक, कर्क बुध: 23।05, पुष्ये रवि: 15।53
30	मं	5	24	50	15	34	उफा	53	59	27	13	प	47	22	24	34	बा	24	50	15	34	34	09	05	38	19	17	06	03	21	कं. 06।52	03	03	52	30	17	10	09	22	30	A 12।32, कुमार षष्ठी व्रत B खरसी पूजा त्रिपुरा
31	बु	6	31	16	18	09	ह	60	00	-	-	शि	50	04	25	40	तै	31	16	18	09	34	07	05	38	19	17	07	04	22	कन्या	03	04	49	47	17	10	59	23	04	स्कन्ध षष्ठी, श्री महावीर जन्म कल्याणांक, पुष्ये बुध: A
श्रा. 01	गु	7	37	16	20	33	ह	01	42	06	19	सि	52	18	26	34	ग	04	21	07	23	34	04	05	39	19	16	08	05	23	तु. 19।47	03	05	47	04	18	11	50	23	39	भ. 20।33 से, विवस्वान सप्तमी व्रत, सूर्य पूजन, तिलक ज.
02	शु	8	42	12	22	32	चि	08	43	09	08	सा	53	37	27	06	वि	09	54	09	37	34	01	05	39	19	16	09	06	24	तुला	03	06	44	22	17	12	42	24	00	भ. 9।37 तक, दुर्गाष्टमी, गुरु हरगोविन्द जयंती (नवीन). B
03	श	9	45	33	23	53	स्वा	14	27	11	27	शुभ	53	39	27	07	बा	14	06	11	18	33	59	05	40	19	15	10	07	25	तुला	03	07	41	39	19	13	35	24	16	भड्डली 9, शूद्र 9, ऐन्द्रीपूजन, मेला शरीफ भवानी, कंदर्प 9
04	र	10	46	59	24	28	वि	18	29	13	04	शु	52	09	26	32	तै	16	31	12	17	33	56	05	40	19	15	11	08	26	वृ.06।44	03	08	38	58	18	14	30	24	56	आशा दशमी, गिरिजा पूजा
05	चं	11	46	21	24	13	अ	20	31	13	53	ब्र	49	02	25	17	व	16	55	12	27	33	53	05	41	19	14	12	09	27	वृश्चिक	03	09	36	16	19	15	26	25	39	भ. 12।27 से 24।15 तक, देवशयनी 11 व्रत (सबका), C
06	मं	12	43	43	23	11	ज्ये	20	33	13	55	ऐं	44	18	23	24	ब	15	16	11	48	33	50	05	41	19	14	13	10	28	ध. 13।55	03	10	33	35	20	16	22	26	28	श्लेषायां बुध: 21।38, वामनपूजा D चौमासी चौदस (जैन)
07	बु	13	39	18	21	25	मू	18	42	13	11	वै	38	06	20	56	कौ	11	42	10	23	33	47	05	42	19	13	14	11	29	धनु	03	11	30	55	20	17	17	27	22	प्रदोष व्रत, जया पार्वती व्रत, सन्यासीनां चातुर्मासारम्भ:
08	गु	14	33	23	19	04	पूषा	15	14	11	48	वि	30	42	17	59	ग	06	29	08	18	33	44	05	43	19	12	15	12	30	म. 17।23	03	12	28	15	21	18	11	28	21	भ. 19।04 से 29।42 तक, कर्क भौम: 26।18, हरिपूजा, D
09	शु	15	26	22	16	16	उषा	10	32	09	56	प्री	22	21	14	39	ब	26	22	16	16	33	41	05	43	19	12	16	13	31	मकर	03	13	25	36	21	19	02	29	24	पूर्णिमा व्रतं पुण्यं, सत्यनारायण व्रत, गुरु पूर्णिमा, वायुपरीक्षा, E

C गोपद्म व्रत, स्वाय महोत्सव:, चातुर्मास व्रतारम्भ: E व्यास पूजा, कोकिला व्रत, विश्वेदेव पूजन, शिवशयन व्रत

द्वि. आषाढ़ शु. 8 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 24 जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
03	06	02	03	04	04	07	05	11	11	10	08
06	04	25	06	02	06	04	08	08	26	15	19
44	50	30	57	01	39	15	58	58	25	18	45
22	40	24	38	08	38	54	17	17	16	33	45
57	720	39	126	12	03	00	00	00	00	01	01
18	37	23	57	23	06	53	06	06	07	11	25
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	व	व
-	-	अ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
2 [illegible]	4 [illegible]	2 [illegible]	2 [illegible]	1 [illegible]	2 [illegible]	1 [illegible]	4 [illegible]	2 [illegible]	3 [illegible]	3 [illegible]	2 [illegible]

5 गु.शु. | 3 मं. | 6 रा. | 4 सू.बु. | 2 | 1 | 7 चं. | 10 | 8 श. | 12 ह. के. | 9 प्लू. | 11 ने.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शुक्रवार पुष्य नक्षत्र से प्रारंभ होकर सुदी पूर्णिमा शुक्रवार उत्तराषाढ़ नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 17 से 31 जुलाई तक रहेगा। यह शुद्ध आषाढ़ माह का शुक्ल पक्ष की गणना में मान्य है। माह में पांच शुक्रवार होने से प्रजा में वृद्धि होगी। प्रजावृद्धिस्तु भार्गवे शुक्रस्य पंचवाराः स्युर्यत्र मासे निरंतरम्। प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्त्तते॥ पांच शुक्रवार के कारण प्रजा की वृद्धि और सुभिक्ष सुख योग होगा। "शनेश्च पंचमं दृष्ट्वा पाताले कंपते फणी। ईशान देशे भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥" पांच शनिवार होने से ईशान देश का भंग। अनाज तेज और अग्नि का भय हो। आषाढ़ कृष्ण तीज को श्रावण होना समर्घता कारक रहेगा। आषाढ़ कृष्ण नौमी को शुक्रवार होने से सुभिक्ष योग बनता है। आषाढ़ कृष्ण 12 को रोहिणी होने से दुर्भिक्ष योग। गुरुवारी अमावस्या के कारण सदा वृष्टि तथा सुभिक्ष कारक कल्याणकारी योग, दुख का विनाश कारक योग बनेगा। पुनर्वसु योग से समर्घता योग। शुक्ल पंचमी को मंगलवार होने से अतिवृष्टि योग बनेगा। गुरुवार को कर्क संक्रांति से पीत वर्ण वाली वस्तुओं के भाव तेज होंगे। धान्यादि मंदे होंगे। अन्नोत्पत्ति अच्छी होगी। व्यापार भविष्य- सोना, पीतल, तांबा, चांदी, बाजरा, ज्वार, ग्वार, मूंग, तिल, तिलहनों में तेजी। किराणा में कुछ मंदी का झटका चलेगा। गेहूं, चना, मूंगफली, साबूदाना, चावल भी महंगे होंगे। सत्ता पक्ष का नियंत्रण भाव चले तो सम भाव योग। लेकिन उत्तरोत्तर तेजी ही रहेगी। आकाश लक्षण-आसाम, उड़ीसा, केरल, तामिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, समुद्र निकटवर्ती क्षेत्रों एवं पर्वतीय भागों में कहीं तेज वर्षा, कहीं हल्की वर्षा योग। दिन के तापमान में गिरावट योग। अमेरिका, टोकियो, जर्मनी, जापान में प्राकृतिक आपदा योग। सतर्क रहने की सलाह है। शकुन विचार-आषाढ़ बादल कटे, चाल उत्तर वाई। तो जानो कार्तिक थकी, सावन माहि बरसाई। मंगल वर्षे अग्नि भय, बुध वर्षे होय रोग, आषाढ़ वृद्धि फल जोय। बाल पीड़ा, गुरु हिते भी जानों सर्वत्र जनमानस में है जोग॥

द्वि. आषाढ़ शु. 15 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 31 जुलाई

5 गु.शु. | 3 | 6 रा. | 4 सू.बु. मं. | 2 | 1 | 7 | 10 चं. | 8 श. | 12 ह. के. | 9 प्लू. | 11 ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
03	09	03	03	04	04	07	05	11	11	10	08
13	07	00	21	03	06	04	08	08	26	15	19
25	18	05	19	28	04	12	14	14	24	09	36
36	33	13	34	44	37	01	29	29	54	41	07
57	873	39	118	12	13	00	08	08	00	01	01
21	19	09	19	38	28	12	41	41	13	20	20
-	-	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	व	व
-	-	अ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
4 [illegible]	4 [illegible]	4 [illegible]	2 [illegible]	2 [illegible]	2 [illegible]	1 [illegible]	4 [illegible]	2 [illegible]	3 [illegible]	3 [illegible]	2 [illegible]

श्रावण कृष्ण पक्षः -10

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 1 से 14 अगस्त सन् 2015 ई., रा. मिति 10 से 23 श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान घ.	प.	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
श्रा. 10	श	1	18	38	13	11	श्र ध	05 59	00 03	07 29	44 21	आ	13	23	11	05	कौ	18	38	13	11	33	38	05	44	19	11	17	14	01	कु. 18।33	03	14	22	57	57 23	19	50	30	28
11	र	2	10	34	09	58	श	53	03	26	57	सौ शो	04 54	06 51	07 27	23 41	ग	10	34	09	58	33	35	05	44	19	10	18	15	02	कुम्भ	03	15	20	20	23	20	36	07	34
12	चं	3	02	33	06	46	पूभा	47	22	24	42	अ	45	51	24	05	वि	02	33	06	46	33	32	05	45	19	10	19	16	03	मी. 19।14	03	16	17	43	25	21	20	08	40
00	चं	4	54	56	27	43	00	00	00	00	00	००	00	00	00	00	००	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00
13	मं	5	47	57	24	56	उभा	42	18	22	40	सु	37	21	20	42	कौ	21	20	14	17	33	29	05	45	19	09	20	17	04	मीन	03	17	15	08	25	22	02	09	44
14	बु	6	41	48	22	29	रे	38	04	20	59	धृ	29	32	17	35	ग	14	45	11	40	33	25	05	46	19	08	21	18	05	मे. 20।59	03	18	12	33	27	22	46	10	48
15	गु	7	36	41	20	27	अ	34	50	19	42	शू	22	31	14	47	वि	09	06	09	25	33	22	05	46	19	07	22	19	06	मेष	03	19	10	00	28	23	30	11	51
16	शु	8	32	39	18	51	भ	32	42	18	52	गं	16	23	12	20	बा	04	31	07	35	33	19	05	47	19	06	23	20	07	वृ. 24।43	03	20	07	28	29	24	00	12	52
17	श	9	29	46	17	42	कृ	31	42	18	28	वृ	11	11	10	16	तै	01	03	06	13	33	15	05	48	19	06	24	21	08	वृष	03	21	04	57	31	24	15	13	52
18	र	10	28	03	17	01	रो	31	50	18	32	ध्रु	06	54	08	34	वि	28	03	17	01	33	12	05	48	19	05	25	22	09	वृष	03	22	02	28	32	25	03	14	49
19	चं	11	27	29	16	48	मृ	33	07	19	03	व्या	03	32	07	14	बा	27	29	16	48	33	08	05	49	19	04	26	23	10	मि. 06।44	03	23	00	00	33	25	54	15	44
20	मं	12	28	03	17	03	आ	35	30	20	01	ह व	01 59	05 33	06 29	15 38	तै	28	03	17	03	33	05	05	49	19	03	27	24	11	मिथुन	03	23	57	33	35	26	46	16	34
21	बु	13	29	45	17	44	पुन	38	59	21	26	सि	58	52	29	22	व	29	45	17	44	33	01	05	50	19	02	28	25	12	क. 15।02	03	24	55	08	36	27	39	17	21
22	गु	14	32	34	18	52	पु	43	33	23	16	व्य	59	02	29	27	वि	01	01	06	15	32	58	05	50	19	01	29	26	13	कर्क	03	25	52	44	38	28	33	18	04
23	शु	30	36	28	20	26	आ	49	10	25	31	व	60	01	29	51	च	04	22	07	36	32	54	05	51	19	00	30	27	14	सिं. 25।31	03	26	50	22	38	29	26	18	44

पंचकारम्भः 18।33 से, नक्त व्रतारम्भः, तिलक पुण्य तिथि, A
भ. 20।22 से, वृहतल्पा
भ. 6।46 तक, मार्गी B
चतुर्थी तिथि क्षयः
नागपंचमी, पुष्ये भौमः 29।10, मघायां सिंहे च बुधः 18।15, C
भ. 22।29 से, पंचक समाप्तः 20।59 C मंगला गौरी व्रत
भ. 9।25 तक, बुधोदय पश्चिमायां 18।49
कालाष्टमी, शिववास गौरीपार्श्वे
भ. 29।18 से, कुंवारी पूजा, गुरु हरिकिशन सिंह जयंती
भ. 17।01 तक, रोहिणी व्रत (जैन) D कैलासे शिववास
कामिका एकादशी व्रत, शुक्रास्त पश्चिमायां 22।03, D
प्रदोष व्रत, भौमोदय पूर्वस्याम् 26।28, शिववास नंदी पर
भ. 17।44 से, पूफायां बुधः 8।41, गुरोरस्तः पश्चिमायां 9।18
भ. 6।15 तक, वक्री श्लेषायां शुक्रः 17।34
देवपितृकार्येऽमा., हरियाली 30, चितलगी 30, लक्ष्मी पोल E

शुक्रास्त पश्चिमायां 10 अग.

गुरोरस्तः पश्चिमायां 12 अग.

A अगस्त मासारम्भः, शिववास गौरीपार्श्वे B शनिः 6।52, श्लेषायां रवि 14।49, अंगारक 4 व्रत, चौथ का व्रत, शिववास कैलासे
E पुष्कर राजस्थान, सरस माधुरी जयंती, मन्वादि 30, मघा 3 गुरु 27।15

श्रावण कृ. 8 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 7 अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
03	00	03	04	04	04	07	05	11	11	10	08
20	19	04	04	04	03	04	07	07	26	14	19
07	00	38	29	57	35	12	58	58	22	59	27
28	14	28	48	50	49	52	13	13	10	54	07
57	829	38	107	12	28	00	00	00	00	01	01
29	36	56	14	49	35	28	47	47	33	27	14
-	-	मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
आश्ले. 2	भर. 2	पुष्य 1	मघा 2	मघा 2	मघा 2	अनु. 1	उ.फा. 4	उ.भा. 2	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 2

5 बु. गु. श। 3 | 6 रा. | 4 सू. मं. | 1 चं. | 2 | 7 | 10 | 8 श. | 12 के. ह. | 9 प्लू. | 11 ने.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शनिवार प्रतिपदा श्रवण नक्षत्र से प्रारंभ होकर अमावस्या शुक्रवार आश्ले. नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 01 से 14 अगस्त 2015 तक रहेगा। इस पक्ष का फल मासिक गणना में माह में पांच शनिवार होने से मंहगाई और दुर्भिक्ष का योग यथा "दुर्भिक्षं पंचम देषु शेषावारा शुभदा शुभ प्रदाः।" शनिवारा यदा पंच मासे पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥" के अनुसार दुर्भिक्ष महाउत्पात आदि हों। ईशान कोण देशों (चीन, मंगोलिया, भूटान, जापान, जर्मनी आदि) में महाउपद्रव, बाधाएं, भूकम्प, अग्निकांड का प्रकोप जैसा योग। श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को धृति योग न होने से धान्यादि भाव मंदे होंगे। श्रावण कृष्ण नवमी शनिवार होने से संतापकारक और राजनीति भी प्रभावित होगी। श्रावण कृष्ण एकादशी को मृगशिरा होने से दुर्भिक्ष योग। शुक्रवारी अमावस होने से वर्षा स्वल्प योग। आश्लेषा नक्षत्र के कारण समभाव यानि तेजी-मंदी बराबर। वर्षा मध्यम, दक्षिण की पवन चले। धान्यादि भावों में अस्थिरता योग। रस पदार्थ, घी, तेल में तेजी की अवधारणा बनेगी। व्यापारी वर्ग हर्षित रहेंगें। प्रजा में सद्भावना जैसे गुणों का विकास योग भी है। दिनांक 12 अगस्त को गुरु अस्त के कारण मांगलिक कार्यों में रुकावट। धातु बाजार में अस्थिरता रहेगी। **व्यापार भविष्य**–पक्ष में धान्य भाव अस्थिरता से चलेंगे। कागज, कपड़ा, कपास, कपूर, लौंग में तेजी। चना, सरसों, रायड़ा, सोयाबीन, तांबा, जस्ता, विद्युत सामग्री, कोयला, डीजल, पेट्रौल में उठा पटक चलेंगी। शेयर बाजार में उठा-पटक के साथ काला बाजारी का भेद मंगल और शनि से उजागर होगा। **आकाश लक्षण**– सिंह राशि में विग्रह योग (गु+शु+बु) के कारण वायुमंडल में खेल जैसा ग्रहों का भ्रमण चमत्कारिक योग वेध शालाओं में देख सकेंगे। गर्मी का प्रकोप एवं पवन का चलन दोनों रोग कारक स्थिति बनाएंगे। पूर्वी भारत में बाढ़ जैसा असह्य योग से जनता में त्राहि-त्राहि रहेगी। **शकुन विचार**–सावन कृतिका नक्षत्र में यदि वर्षा हो जाए। चार मास वर्षा घनी मंदा धान्य बिकाय। श्रावण बदी चौथ सधार, चढ़ै जु रवि बादल मंजार। तो पैतालीस दिन लौं मेह, बरसे नित्य न आवे छेह॥ यानि वर्षा की भरमार रहती है।

श्रावण कृ. 30 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 14 अगस्त

5 बु. गु. | 3 | 6 रा. | 4 सू. मं. चं.शु. | 1 | 2 | 7 | 10 | 8 श. | 12 के. ह. | 9 प्लू. | 11 ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
03	03	03	04	04	03	07	05	11	11	10	08
26	19	09	16	06	29	04	07	07	26	14	19
50	51	10	22	28	41	18	29	29	17	49	18
22	16	17	49	07	45	28	02	02	08	23	54
57	733	38	96	12	36	01	06	06	00	01	01
38	49	44	24	58	49	09	17	17	53	33	06
-	-	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	-	-	-
आश्ले. 4	आश्ले. 1	पुष्य 2	पू.फा. 1	मघा 2	आश्ले. 4	अनु. 1	उ.फा. 4	उ.भा. 2	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 2

श्रावण शुक्ल पक्षः -11

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 15 से 29 अगस्त सन् 2015 ई., रा. मिति 24 श्रावण से 7 भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ.	तिथि प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र न	नक्षत्र घ.	नक्षत्र प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग यो	योग घ.	योग प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण क	करण घ.	करण प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.
श्रा. 24	श	1	41	23	22	24	म	55	43	28	09	प	60	00	-	-	कि	08	48	09	22
25	र	2	47	09	24	44	पूफा	60	00	-	-	प	01	42	06	33	बा	14	10	11	32
26	चं	3	53	31	27	17	पूफा	03	01	07	05	शि	04	02	07	29	तै	20	16	13	59
27	मं	4	60	00	-	-	उफा	10	51	10	14	सि	06	44	08	35	व	26	49	16	36
28	बु	4	00	06	05	56	ह	18	47	13	24	सा	09	33	09	43	वि	00	06	05	56
29	गु	5	06	27	08	29	चि	26	21	16	26	शुभ	12	07	10	45	बा	06	27	08	29
30	शु	6	12	02	10	43	स्वा	33	00	19	07	शु	14	03	11	32	तै	12	02	10	43
31	श	7	16	19	12	27	वि	38	17	21	14	ब	15	00	11	55	व	16	19	12	27
भाद्र 01	र	8	18	54	13	29	अ	41	46	22	38	ऐं	14	37	11	47	व	18	54	13	29
02	चं	9	19	29	13	44	ज्ये	43	16	23	14	वै	12	42	11	01	कौ	19	29	13	44
03	मं	10	17	58	13	08	मू	42	42	23	01	वि	09	06	09	35	ग	17	58	13	08
04	बु	11	14	25	11	43	पूषा	40	12	22	02	प्री/आ	03/57	52/08	07/28	30/49	वि	14	25	11	43
05	गु	12	09	03	09	35	उषा	36	01	20	22	सौ	49	05	25	36	बा	09	03	09	35
06	शु	13	02	10	06	50	श्र	30	29	18	10	शो	39	59	21	58	तै	02	10	06	50
00	शु	14	54	10	27	38	००	00	00	00	00	००	00	00	00	00	००	00	00	00	00
07	श	15	45	23	24	08	ध	24	00	15	35	अ	30	10	18	03	वि	19	50	13	55

ता. मि.	दिनमान घ.	दिनमान प.	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	
श्रा. 24	32	50	05	51	19	00	31	28	15	सिंह	03	27	48	00	57/40	30	19	19	21	भारतीय स्वतंत्रता दिवस 69वां
25	32	47	05	52	18	59	32	29	16	सिंह	03	28	45	40	41	31	11	19	56	चन्द्रदर्शन मु. 30, सावन का सिंधारा
26	32	43	05	52	18	58	भाद्र 01	ज़िल 01	17	कं. 13।51	03	29	43	21	42	08	02	20	30	मघायां सिंहे रविः 12।25, तीज, स्वर्ण गौरी व्रत, मधुश्रवा A
27	32	39	05	53	18	57	02	02	18	कन्या	04	00	41	03	43	08	53	21	04	भ. 16।36 से, वरद चतुर्थी, दुर्वा गणेश, मंगला गौरी
28	32	35	05	54	18	56	03	03	19	तु. 26।57	04	01	38	46	45	09	44	21	39	भ. 5।56 तक, नाग पंचमी, नागदंष्ट्र व्रत
29	32	32	05	54	18	55	04	04	20	तुला	04	02	36	31	45	10	35	22	14	शुक्रोदय पूर्वस्यां 27।25, कल्कि जयंती. वर्ण षष्ठी, उफा. B
30	32	28	05	55	18	54	05	05	21	तुला	04	03	34	16	47	11	27	22	53	शीतला पूजा B नेमीनाथ जयंती, बुधः 23।40
31	32	24	05	55	18	53	06	06	22	वृ. 14।46	04	04	32	03	48	12	20	23	34	भ. 12।27 से 25।04 तक, तुलसी जयंती, पार्श्वनाथ मोक्ष
भाद्र 01	32	20	05	56	18	52	07	07	23	वृश्चिक	04	05	29	51	48	13	14	24	00	राष्ट्रीय भाद्रपदारम्भः, C
02	32	16	05	56	18	51	08	08	24	ध. 23।14	04	06	27	39	50	14	08	24	19	शुक्रोदय पूर्वस्यां : 20 अग.
03	32	12	05	57	18	50	09	09	25	धनु	04	07	25	29	52	15	03	25	09	भ. 24।31 से, आश्लेषायां भौमः 21।28, मंगला गौरी, D
04	32	08	05	57	18	48	10	10	26	म. 27।40	04	08	23	21	52	15	56	26	04	भ. 11।43 तक, पवित्रा 11 व्रत (सबका)
05	32	04	05	58	18	47	11	11	27	मकर	04	09	21	13	54	16	48	27	04	प्रदोष व्रत, पवित्रारोपण, दधित्याग
06	32	00	05	58	18	46	12	12	28	कुं. 28।54	04	10	19	07	55	17	38	28	07	भ. 27।38 से, पंचकारम्भः 28।54
00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	चतुर्दशी तिथि क्षयः D मेला शरीफ भवानी
07	31	56	05	59	18	45	13	13	29	कुम्भ	04	11	17	02	57	18	25	29	13	भ. 13।55 तक, रक्षाबंधन, भद्रा के बाद, श्रावणी उपाकर्म, E

A तीज, रोटक व्रत, जिल्काद मु. 11, सोमेश्वर पूजा C सायन कन्यायां रविः 16।07, दुर्गाष्टमी, कन्यायां बुधः 8।38, मेला नैनादेवी व चिन्तपूर्णी (हिमाचल)
E हयग्रीव जयंती, गायत्री जयंती, सत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, नारियल 15, मेला अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)

श्रावण शु. 8 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 23 अगस्त

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
04	07	03	04	04	03	07	05	11	11	10	08
05	07	14	29	08	24	04	07	07	26	14	19
29	37	57	49	25	20	32	21	21	07	35	09
51	46	36	14	13	08	37	21	21	24	04	47
57	752	38	82	13	31	02	00	00	01	01	00
48	38	27	29	03	35	00	47	47	16	37	55
-	-	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व
-	-	ठ	ठ	अ	ठ	ठ	ठ	ठ	-	-	-
मघा 2	अनु. 2	पुष्य 4	उ.फा. 1	मघा 3	आश्ले. 3	अनु. 1	उ.फा. 4	उ.भा. 2	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 2

रा. 6 | म. शु. 4 | 3 | 5 सू. गु. बु. | 2 | 7 | 8 चं. श. | 11 ने. | 1 | 9 प्लू. | 10 | 12 के. ह.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शनिवार मघा नक्षत्र से प्रारंभ होकर पूर्णिमा शनिवार धनिष्ठा नक्षत्र तक दिनांक 15 से 29 अगस्त 2015 तक चलेगा। रविवारीय चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ति, सिंजारा शृंगार योग देशाचारे। इस पक्ष में सिंह संक्रांति श्रावण शुक्ल तृतीया सोमवासरे, वारात 5, नक्षत्रात् 5, वारनाम ध्वांक्षी, वैश्यान् सुखदा, मध्याह्न द्वितीय प्रहर व्यापिनी, द्विजान हन्ति। नक्षत्र नाम नंदा, गणकान सुखदा, पश्चिमे गमने, वायव्यां दृष्टि, तैतिल करणे प्रविष्ट्य, नेष्टफलं, रासभ वाहनं, मेष उपवाहनं सुभिक्ष कारक। अरुण वस्त्रम्, दण्डायुधं, कांस्य पात्रं, पक्वान्न भक्षण, मृद् लेपनं, पक्षी जाति, केतकी पुष्पं, प्रबल भूषणम्, भुर्जपत्र कंचुकी, युवावस्था (सूती) मु. 45, धान्य भावे समर्घ, वत्स पूर्व, राहु उत्तरे, मूल स्वर्ग, पुण्य काल दान छत्र शुभ। पड़वा पांचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करे, तेजी हो सब छीन।" के अनुसार व्यापारिक वस्तुओं में मंदी। आज का चन्द्रदर्शन एक मास के अंदर किसी राज्य के मंत्रिमंडल में परिवर्तन अथवा भंग होगा तथा अनाज तेज होगा। जो राशि उगे सोम शनि ये अचम्भो दिन जोय। छत्र पड़े दिन तीस में अन्न महंगो होय॥ के कारण उत्तरी भारत में दंगा होगा। खल, मूंगफली, रस पदार्थ में घट-बढ़ होगी। केन्द्रीय सरकार में भी मंत्रिमंडल फेर बदल का योग तथा रेल एवं मोटरयान दुर्घटनाओं का यत्र-तत्र-सर्वत्र योग बनेगा। व्यापार भविष्य–कपास, चावल, बाजरा, बिनौला, धान्य, हल्दी, रुई, घी, मूंगफली, सौंफ, जीरा, समस्त तिलहन पदार्थ, मोठ, उड़द आदि का बाजार भाव मंदा रहकर दो दिन बाद मंदी के झटके भी किसी-किसी वस्तु में बनेगा। शुक्ल पक्ष सावन कभी कोई तिथि का नाश। छत्र भंग का योग है आगे कार्तिक मास। आकाश लक्षण– वायु वेग के साथ वर्षा का आगमन। कच्चे मकानों को विशेष हानि। झुग्गी-झोपड़ियों का स्थान परिवर्तन जैसा योग। हिमालयवर्ती उत्तरी क्षेत्रों में ओलावृष्टि से हानि योग। वायुमंडल में बादल आच्छादित रहकर जीव-जंतुओं की पैदायश करेगा। शकुन विचार–श्रावण शुक्ला सप्तमी को यदि वर्षा हो जाए। अन्न बहुत उपजै चलै, मंगसर मंदी होय। श्रावण शुक्ला अष्टमी के दिन प्रातःकाल सूरज पर बादल छरै वर्षा करे निहाल।

श्रावण शु. 15 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 29 अगस्त

बु. रा. 6 | म. शु. 4 | 3 | 5 सू. गु. | 2 | 7 | 8 श. | 11 ने. चं. | 1 | 9 प्लू. | 10 | 12 के. ह.

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
04	10	03	05	04	03	07	05	11	11	10	08
11	00	18	07	09	21	04	07	07	25	14	19
17	22	47	33	43	42	46	02	02	59	25	04
02	07	48	53	31	56	15	17	17	02	15	43
57	897	38	71	13	19	02	02	02	01	01	00
56	42	17	54	03	52	33	46	46	31	39	46
-	-	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व
-	-	ठ	ठ	अ	ठ	ठ	ठ	ठ	-	-	-
मघा 4	धनि. 3	आश्ले. 1	उ.फा. 4	मघा 3	आश्ले. 2	अनु. 1	उ.फा. 4	उ.भा. 2	रेवती 3	शत. 3	पू.षा. 2

भाद्रपद कृष्ण पक्षः-12

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 30 अगस्त से 13 सितंबर सन् 2015 ई., रा. मिति 8 से 22 भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान घ.	प.	स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
08	र	1	36	16	20	30	श	17	01	12	48	सु	19	58	13	58	बा	10	50	10	19	31	52	05	59	18	44	14	14	30	मो.28।40	04	12	14	59	57/58	19	11	30	19	मघा 4, गुरु 11।33 A बुध: 7।40
09	चं	2	27	13	16	53	पूभा	09	56	09	58	ध/शू	09/59	42/43	09/29	52/53	तै	01	42	06	41	31	48	06	00	18	43	15	15	31	मीन	04	13	12	57	58/00	19	56	07	26	भ. 27।08 से, कज्जली 3, पू.फायां रवि 8।25, हस्ते A
10	मं	3	18	36	13	27	उभा/रे	03/57	10/08	07/28	16/51	गं	50	17	26	07	वि	18	36	13	27	31	44	06	00	18	42	16	16	S 01	मे. 28।51	04	14	10	57	02	20	40	08	32	भ. 13।27 तक, पंचक समाप्त 28।51, अंगारक 4, बहुला B
11	बु	4	10	48	10	20	अ	52	06	26	51	वृ	41	39	22	41	बा	10	48	10	20	31	40	06	01	18	41	17	17	02	मेष	04	15	08	59	04	21	25	09	38	ज्वालामुखी 26।51 से,
12	गु	5	04	05	07	39	भ	48	21	25	22	ध्रु	34	04	19	39	तै	04	05	07	39	31	36	06	01	18	40	18	18	03	मेष	04	16	07	03	05	22	12	10	42	भ. 29।30 से, ज्वालामुखी 7।39 तक, बृहद् गौरी व्रत, C
00	गु	6	58	43	29	31	oo	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	षष्ठी तिथि क्षयः
13	शु	7	54	52	27	58	कृ	46	06	24	28	व्या	27	39	17	05	वि	26	35	16	40	31	32	06	02	18	38	19	19	04	वृ. 07।05	04	17	05	08	08	23	00	11	44	भ. 16।40 तक, मां आद्याकाली जयंती.
14	श	8	52	37	27	05	रो	45	25	24	12	ह	22	30	15	02	बा	23	31	15	27	31	28	06	02	18	37	20	20	05	वृष	04	18	03	16	09	23	51	12	44	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, केशरो, मेला द्रोण (दनकौर), D
15	र	9	51	59	26	50	मृ	46	20	24	35	व	18	39	13	30	तै	22	05	14	53	31	24	06	03	18	36	21	21	06	मि. 12।19	04	19	01	25	12	24	00	13	40	गोगा नवमी, नंदोत्सव नंदगाव, मेला ददरेवा, मेड़ी, मार्गी E
16	चं	10	52	55	27	13	आ	48	47	25	34	सि	16	04	12	29	व	22	15	14	57	31	19	06	03	18	35	22	22	07	मिथुन	04	19	59	37	13	24	43	14	32	भ. 14।57 से 27।13 तक E शुक्र: 13।45
17	मं	11	55	18	28	11	पुन	52	38	27	07	व्य	14	41	11	56	ब	23	56	15	38	31	15	06	04	18	34	23	23	08	क. 20।41	04	20	57	50	16	25	36	15	20	व्यतिपात 11।56 तक, F
18	बु	12	58	56	29	38	पु	57	43	29	09	व	14	21	11	49	कौ	26	57	16	51	31	11	06	04	18	33	24	24	09	कर्क	04	21	56	06	18	26	29	16	03	गोवत्स द्वादशी
19	गु	13	60	00	-	-	आ	60	00	-	-	प	14	56	12	03	ग	31	09	18	32	31	07	06	05	18	31	25	25	10	कर्क	04	22	54	24	19	27	22	16	44	प्रदोष व्रत, गुरोरुदयः पूर्वस्यां 18।49, कैलाश यात्रा
20	शु	13	03	36	07	32	आ	03	48	07	36	शि	16	18	12	36	व	03	36	07	32	31	03	06	05	18	30	26	26	11	सिं.07।36	04	23	52	43	22	28	14	17	21	भ. 7।32 से 20।36 तक G मानसरोवर यात्रा
21	श	14	09	09	09	45	म	10	43	10	23	सि	18	16	13	24	श	09	09	09	45	30	59	06	06	18	29	27	27	12	सिंह	04	24	51	05	23	29	06	17	57	कुश ग्रहणी, पिठौरी 30, अघोरा 14, पितृकार्येऽमा., कैलाश G
22	र	30	15	19	12	14	पूफा	18	13	13	23	सा	20	40	14	22	ना	15	19	12	14	30	54	06	06	18	28	28	28	13	क.20।10	04	25	49	28	25	29	58	18	31	देवकार्येऽमा., लोहार्गल स्नान, मेला राणीसती (झूंझनूं), H

गुरोरुदयः पूर्वस्यां : 10 सितं.

B चतुर्थी, संकष्टी 4, गुरुग्रंथ साहिब प्रकाश दिवस C चन्दन षष्ठी, ललही छठ, उभी 6, माधवदेव तिथि (आसाम) D कालाष्टमी, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ज., रोहिणी व्रत (जैन), संत ज्ञानेश्वर ज. F पर्युषण पर्व (जैन), अजा एकादशी व्रत (सबका), व्यतिपात H मेला सुथरेशाह (दिल्ली), उ.फायां रवि: 26।15

भाद्रपद कृ. 8 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 5 सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
04	01	03	05	04	03	07	05	11	11	10	08
18	12	23	15	11	20	05	07	07	25	14	18
03	51	15	04	14	21	06	04	04	47	13	59
16	28	07	39	43	09	14	28	28	32	42	56
58	814	38	55	13	03	03	00	00	01	01	00
09	05	06	42	00	07	10	52	52	46	38	35
-	-	मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
-	-	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
पू.फा. 2	रोहि. 1	आश्ले. 2	हस्त 2	मघा 4	आश्ले. 2	अनु. 1	उ.फा. 4	उ.भा. 2	चित्रा 3	श्रव. 3	पू.भा. 2

6 रा.बु. | मं. शु. 4 | 3 | 7 | 5 सू. गु. | 2 चं. | 9 प्लू. | 8 श. | 11 ने. | 1 | 10 | 12 के.ह.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा रविवार शतभिषा नक्षत्र से प्रारंभ होकर अमावस्या रविवार पूर्वाफाल्गुली नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 30 अगस्त से 13 सितंबर 2015 तक रहेगा। इस पक्ष में माह की ग्रह गति गणना से पक्ष फल पांच रविवार के योग से-एक मासे रवेर्वारा पंचस्यु शुभावहाः। पांच रविवार भाद्रपद मास में नेष्ट फलदायक रहेंगे। पंचार्कवासरे रोगाः विश्व में कई प्रकार के रोग, उपद्रव बढ़ेंगे। रोगों के प्रकोप से जनता में अशांति कारक योग बनेगा। **पंच भौम भयं महतम्** के अनुसार युद्धादि, आक्रमण बोध या अशुभता रहेगी। भाद्रपद कृष्ण अष्टमी रोहिणी युक्त होने से शुभ दायक। अमावस्या को रविवार होने से संताप बाधा, अर्घनाश, क्लेश और राज दुखद घटना योग से तबाही। भादवा की अमावस्या रविवारी घी, तेल, खोपरा महंगे। गुरुवारी संक्रांति होने से सोना, पीतल, तांबा, पीली रंग की सभी वस्तुओं में तेजी। कृषि कार्य में शुभदायक योग। अन्न अच्छा पैदा होगा। गायों की सुरक्षा करने जैसा वातावरण भी बनेगा। मुस्लिम राष्ट्रों में उपद्रव ज्यादा बढ़ेंगे। स्त्री वर्ग का अपहरण या स्वयं भागने जैसी अशोभनीय घटना घटेगी। गुरु ग्रह का पूर्व में उदय होना सुखद योग बनेगा। सोना, तांबा, पीतल में घट-बढ़ योग। व्यापार भविष्य–सोना, चांदी, रुई, शेयर मार्किट में तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना में भी तेजी। खांड, गुड़, शक्कर, साबूदाना, कपूर, ईलाइची, लौंग, कालीमिर्च में तेजी अस्थिर रहेगी। सिंहस्थ गुरु के कारण पीत एवं लाल वर्ण की सामग्री में तेजी का बोलबाला चलेगा। आकाश लक्षण–एक जगह गुरु, शुक्र से बने युद्ध आसार। अनावृष्टि, अतिवृष्टि से दुख पावे संसार। तेज धूप-छांव से जनता में रोगोपद्रव बढ़ेगा। तापमान वृद्धि से अशांत वातावरण रहेगा। वायु वेग के साथ वर्षा-बाढ़ प्रकोप प्राकृतिक आपदा का भय या घटना घटने जैसा योग बनेगा। शकुन विचार–दोयज भादवा बदी में घटा टोप आकाश। अन्न खरीदो खूब ही तेजी फाल्गुन मास।। श्रवण धनिष्ठा के दिन नभ में बादल जोय। वर्षा ऋतु में समझ लो उत्तम वर्षा होय।

भाद्रपद कृ. 30 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 13 सितंबर

6 बु.रा. | शु. 4 मं. | 3 | 7 | 5 सू. चं.गु. | 2 | 8 श. | 9 प्लू. | 11 ने. | 1 | 10 | 12 के.ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
04	04	03	05	04	03	07	05	11	11	10	08
25	22	28	20	12	21	05	06	06	25	14	18
49	46	19	44	58	08	34	57	57	32	00	56
28	54	07	37	20	45	12	45	45	23	40	07
58	709	37	26	12	14	03	00	00	02	01	00
24	39	53	17	53	42	50	18	18	01	36	22
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	-	-	-
पू.फा. 4	पू.फा. 3	आश्ले. 4	हस्त 4	मघा 4	आश्ले. 2	अनु. 1	उ.फा. 4	उ.भा. 2	चित्रा 3	श्रव. 3	पू.भा. 2

भाद्रपद शुक्ल पक्षः -13

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 14 से 28 सितंबर सन् 2015 ई., रा. मिति 23 भाद्रपद से 6 आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ.	तिथि प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.
23	चं	1	21	52	14	51	उफा	26	03	16	32	शुभ	23	19	15	26	ब	21	52	14	51
24	मं	2	28	29	17	31	ह	33	57	19	42	शु	26	02	16	32	कौ	28	29	17	31
25	बु	3	34	51	20	04	चि	41	34	22	45	ब्र	28	34	17	33	तै	01	43	06	49
26	गु	4	40	38	22	23	स्वा	48	35	25	34	ऐं	30	40	18	24	व	07	50	09	16
27	शु	5	45	26	24	19	वि	54	37	27	59	वै	32	04	18	58	ब	13	10	11	25
28	श	6	48	53	25	42	अ	59	19	29	53	वि	32	30	19	09	कौ	17	20	13	05
29	र	7	50	42	26	26	ज्ये	60	00	–	–	प्री	31	43	18	51	ग	20	00	14	10
30	चं	8	50	39	26	26	ज्ये	02	21	07	07	आ	29	32	17	59	वि	20	54	14	32
31	मं	9	48	41	25	39	मू	03	35	07	37	सौ	25	49	16	30	बा	19	54	14	08
01	बु	10	44	49	24	07	पूषा	02	55	07	21	शो	20	35	14	25	तै	16	58	12	58
02	गु	11	39	13	21	53	उषा / श्र.	00 / 56	24 / 15	06 / 28	21 / 41	अ	13	53	11	45	व	12	13	11	05
03	शु	12	32	08	19	03	ध	50	40	26	28	सु / धृ	05 / 56	51 / 45	08 / 28	33 / 54	ब	05	50	08	32
04	श	13	23	53	15	46	श	44	04	23	50	शू	46	48	24	56	तै	23	53	15	46
05	र	14	14	51	12	09	पूभा	36	48	20	56	गं	36	19	20	45	व	14	51	12	09
06	चं	15	05	24	08	23	उभा	29	19	17	57	वृ	25	39	16	29	ब	05	24	08	23

रा.मि.	दिनमान घ	दिनमान प	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रान्ति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	
23	30	50	06	07	18	27	29	29	14	कन्या	04	26	47	53	28	30	48	19	05	पू.फा. 1 गुरु 21:56, कल्पसूत्र पाठ (जैन)
24	30	46	06	07	18	25	30	30	15	कन्या	04	27	46	21	28	07	39	19	40	संवत्सरी (जैन), चंद्रदर्शनम् मु. 30, सामवेदिनामुपाकर्म, ❖
25	30	42	06	08	18	24	31	01	16	तु. 09:15	04	28	44	49	31	08	30	20	15	हरितालिका व्रत, जिल्हेज मु. 12, हस्ति गौरी व्रत, मन्वादि, A
26	30	37	06	08	18	23	01	02	17	तुला	04	29	43	20	32	09	22	20	52	भ. 9:16 से 22:23 तक, विनायक 4, श्रीगणेश जयंती B
27	30	33	06	09	18	22	02	03	18	वृ. 21:26	05	00	41	52	34	10	14	21	32	ऋषि पंचमी, पंचमी पक्ष ❖ सिंहे मघायां भौमः 21:27
28	30	29	06	09	18	21	03	04	19	वृश्चिक	05	01	40	26	36	11	06	22	15	सूर्य षष्ठी, ललिता 6, चंपा 6, गौरी आवाहन, वलदेव 6, C
29	30	25	06	10	18	19	04	05	20	वृश्चिक	05	02	39	02	37	12	00	23	02	भ. 26:26 से, दूबड़ी 7, मुक्ताभरण, अपराजिता 7, संतान D
30	30	20	06	10	18	18	05	06	21	ध. 07:07	05	03	37	39	39	12	53	23	53	भ. 14:32 तक, राधाष्टमी, गौरी विसर्जन, दधीचि जयंती, E
31	30	16	06	11	18	17	06	07	22	धनु	05	04	36	18	41	13	45	24	00	अदुःख नवमी, गोगा नवमी, भागवतकथारम्भ, श्रीचंद नवमी
01	30	12	06	11	18	16	07	08	23	म. 13:10	05	05	34	59	42	14	36	24	49	दशावतार, मेला रामदेव रूणेचा, सायन तुलायां रविः 23:50
02	30	08	06	12	18	15	08	09	24	मकर	05	06	33	41	44	15	26	25	48	भ. 11:05 से 21:53 तक, पद्मा एकादशी व्रत (सबका), F
03	30	03	06	12	18	13	09	10	25	कुं. 15:39	05	07	32	25	46	16	13	26	51	पंचकारम्भः 15:39 से, वामन ज., गोत्रिरात्र, भुवनेश्वरी ज., ईदुलजुहा-बकरीद
04	29	59	06	13	18	12	10	11	26	कुम्भ	05	08	31	11	48	16	59	27	56	प्रदोष व्रत, थीरूओणम (केरल), अनु. 2 शनि 26:06
05	29	55	06	13	18	11	11	12	27	मी. 15:41	05	09	29	59	49	17	44	29	02	भ. 12:09 से 22:16 तक, अनन्त 14, कदली व्रत, चांद G
06	29	51	06	14	18	10	12	13	28	मीन	05	10	28	48	52	18	29	30	09	पूर्णिमा पुण्यं, सत्यनारायण व्रत, गोत्रिरात्र सम्पूर्ण, पंडित H

H गोविन्द वल्लभ पंत जयंती

A वराह जयंती B व्रत, चंद्रदर्शन निषेध, छमछरी चतुर्थी पक्ष, कन्यायां रवि 12:20, वक्री बुधः 22:49 C मेला व्रजमंडल, कालू निर्वाण दिवस D सप्तमी, गौरीपूजन E दुर्गा 8, स्वामी हरिदास जयंती F जलझूलणी मेला चारभुजा नाथ (मेवाड़), गेल ग्यारस (म.प्र.) G पुण्य, रंभा रोपल, महालयारम्भ, इंदुला पूर्णिमा, पूर्णिमा श्राद्ध, हस्ते रविः 12:45, प्रौष्ठपदी 15, स्वामी शिवानन्द जयंती

भाद्रपद शु. 8 चंद्र, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 21 सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
05	07	04	05	04	03	07	05	11	11	10	08
03	29	03	21	14	24	06	07	07	25	13	18
37	08	21	15	40	04	07	00	00	15	48	54
39	16	24	40	37	58	17	54	54	27	06	07
58	771	37	22	12	28	04	00	00	02	01	00
38	28	40	26	40	54	27	01	01	12	31	07
-	-	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 2	[illegible] 4	[illegible] 1	[illegible] 3	[illegible] 1	[illegible] 4	[illegible] 2	[illegible] 3	[illegible] 3	[illegible] 2

8 चं. श. | 7 | 5 म. गु. | 4 शु. | 6 सू. बु.रा. | 3 | 9 प्लू. | 12 के. ह. | 10 | 2 | 11 ने. | 1

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष सोमवार प्रतिपदा उफा. नक्षत्र से प्रारंभ होकर पूर्णिमा उभा.नक्षत्र तक तद्नुसार दि. 14 से 28 सितं. 2015 तक रहेगा। इस पक्ष में कन्या संक्रांति भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी गुरुवार को, वारात 4, नक्षत्रात् 5, वारनाम नंदा, गणकानाम् सुखदा, नक्षत्रनाम महोदरी, चौरान सुखदा। मध्याह्न द्वितीय प्रहर व्यापिनी, द्विजान हन्ति, पश्चिमे गमनं, वायव्यां दृष्टि, विष्टी करणे प्रविष्ठा, मध्यम फलम्, अश्व वाहन, सिंह उपवाहनम्, स्वैर्य कारकं, कृष्ण वस्त्रम्, कुंता युद्धम्, पत्र पात्रं, चित्रान्न भक्षणम्। ओतुमदोलेपनम्, विप्र जातिः, दुर्वा पुष्पं, गुंजा भूषणम्, नील कंचुकी, वृद्धावस्था (बैठी) मु. 15, धान्य भावे महर्घता। सिंह गुरु मंगल यदा उत्तम योग समाय। आगे बुधादित्य योग में सूर्यग्रहण युवित दुःखदाय॥ शनि वृश्चिक दृष्टि वृषभ मांगलिक कार्यों में संकट करे। शुक्र दृष्टि मकर शनि क्षेत्रे प्रसव पीड़ा करें। राजनेताओं के मध्य कलह। पूर्व कृत अशोभनीय कृत्यों का रहस्य भी खुलेगा। संत समाज का विश्वास जनता में न्यून बनेगा। राज विद्रोह के चक्र में तीन राज्यों की विधान सभा दक्षिण भारत की संकट में चलेंगी। महाराष्ट्र में विशेष उपद्रव घटना से जनता दुःखी होगी। कश्मीरी मुद्दा का समाधान कर पाना अभी खतरा से समाहित रहेगा। पाकिस्तान में विद्रोह योग। व्यापार भविष्य-गेहूं, जौ, चना में तेजी। सरसों, रायरा, ज्वार, बाजरा में समभाव। चांदी-सोना में गिरावट। शेयर्स बाजार में रोना-हंसना की स्थिति। रुई, कपास, बिनौला, तिल, तिलहन, शक्कर, उडद, गुड़ में अस्थिरता, उतार-चढ़ाव का भाव। आकाश लक्षण-अत्यंत तेज वायु के साथ वर्षा होगी। कर्क-शुक्र-मंगल-गुरु-सिंह परस्पर द्विर्द्वादश योग। स्त्री धन संकट में रहे राजतंत्र बहु भोग। धूल भरी आंधी या तूफान जैसा योग भी। अतिवृष्टि से नदियां सीमा लांघकर चलेंगी। शकुन विचार--भादवा शुक्ल पंचमी मेघ न बरसे तोय। दैव कोप ही जानिये सज्जन-दुर्जन होय। भादवा शुक्ल अष्टमी निर्मल चंदा सूर। सस्ता सैंधव सूत सन पांच मास भरपूर॥

भाद्रपद शु. 15 चंद्र, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 28 सितंबर

8 श. | 7 | 5 म. गु. | 4 शु. | 6 सू. बु.रा. | 3 | 9 प्लू. | 12 के. ह.चं. | 10 | 2 | 11 ने. | 1

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
05	11	04	05	04	03	07	05	11	11	10	08
10	08	07	15	16	28	06	07	07	24	13	18
28	45	44	57	08	01	40	02	02	59	37	53
48	53	25	21	29	41	06	49	49	31	45	57
58	914	37	64	12	38	04	00	00	02	01	00
51	01	29	36	25	29	56	11	11	20	25	05
-	-	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	-	-	-
हस्त 1	[illegible] 2	मघा 3	हस्त 2	पू.फा. 1	आश्ले. 4	अनु. 2	उ.फा. 4	उ.भा. 2	रेवती 3	[illegible] 3	[illegible] 2

आश्विन कृष्ण पक्षः -14

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 29 सितंबर से 12 अक्टूबर सन् 2015 ई., रा. मिति 7 से 20 आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

ता. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.
00	चं	1	56	00	28	37	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00
07	मं	2	46	59	25	02	रे	22	02	15	03	ध्रु	15	08	12	17	तै	21	24	14	48
08	बु	3	38	48	21	46	अ	15	23	12	24	व्या/ह	05/55	05/51	08/28	17/35	व	12	45	11	21
09	गु	4	31	49	18	59	भ	09	47	10	10	व	47	41	25	20	ब	05	08	08	18
10	शु	5	26	23	16	49	कृ	05	35	08	30	सि	40	50	22	36	तै	26	23	16	49
11	श	6	22	43	15	22	रो	03	04	07	30	व्य	35	28	20	27	व	22	43	15	22
12	र	7	21	01	14	41	मृ	02	25	07	15	व	31	39	18	52	ब	21	01	14	41
13	चं	8	21	17	14	48	आ	03	44	07	47	प	29	23	18	03	कौ	21	17	14	48
14	मं	9	23	27	15	41	पुन	06	55	09	04	शि	28	34	17	43	ग	23	27	15	41
15	बु	10	27	16	17	13	पु	11	45	11	00	सि	28	59	17	54	वि	27	16	17	13
16	गु	11	32	23	19	16	आ	17	56	13	29	सा	30	22	18	28	बा	32	23	19	16
17	शु	12	38	26	21	42	म	25	04	16	21	शुभ	32	27	19	19	कौ	05	18	08	27
18	श	13	44	59	24	20	पूफा	32	46	19	26	शु	34	57	20	19	ग	11	39	11	00
19	र	14	51	41	27	01	उफा	40	39	22	36	ब्र	37	35	21	23	वि	18	20	13	41
20	चं	30	58	13	29	38	ह	48	25	25	43	ऐं	40	08	22	24	च	24	59	16	21

ता. मि.	दिनमान घं.	मि.	सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	प्रतिपदा तिथि क्षयः
07	29	46	06	14	18	09	13	14	29	मे. 15।03	05	11	27	40	58/53	19	15	07	16	पंचक समाप्त 15।03, द्वितीया श्राद्ध
08	29	42	06	15	18	08	14	15	30	मेष	05	12	26	33	56	20	02	08	23	भ. 11।21 से 21।46 तक, तृतीया श्राद्ध
09	29	38	06	15	18	06	15	16	Oct 01	वृ. 15।41	05	13	25	29	58	20	52	09	29	चतुर्थी व्रत, सिंहे मघायां शुक्रः 28।13, चतुर्थी श्राद्ध, A
10	29	34	06	16	18	05	16	17	02	वृष	05	14	24	27	59/00	21	43	10	32	चंद्र षष्ठी, गांधी व शास्त्री जयंती, पंचमी श्राद्ध
11	29	29	06	16	18	04	17	18	03	मि. 19।17	05	15	23	27	03	22	36	11	31	भ. 15।22 से 26।55 तक, व्यतिपात, उफा. बुधः 17।09, B
12	29	25	06	17	18	03	18	19	04	मिथुन	05	16	22	30	04	23	30	12	27	अशोकाष्टमी, महालक्ष्मी, कालाष्टमी, सप्तमी श्राद्ध
13	29	21	06	17	18	02	19	20	05	क. 26।41	05	17	21	34	08	24	00	13	17	जीवित्पुत्रिका व्रत, आशा भगोती व्रतारम्भः, अष्टमी श्राद्ध
14	29	17	06	18	18	01	20	21	06	कर्क	05	18	20	42	09	24	24	14	02	भ. 28।22 से, पूफा. भौमः 29।00, सौभाग्यवती श्राद्ध, C
15	29	13	06	18	17	59	21	22	07	कर्क	05	19	19	51	12	25	18	14	44	भ. 17।13 तक, बुधोदय पूर्वस्यां 7।19, दशमी श्राद्ध
16	29	08	06	19	17	58	22	23	08	सिं.13।29	05	20	19	03	14	26	11	15	22	इन्दिरा एकादशी व्रत (सबका), साक्षरता दिवस, नानकदेव D
17	29	04	06	20	17	57	23	24	09	सिंह	05	21	18	17	16	27	03	15	58	मार्गी बुधः 19।31, गुरु रामदास प्रकाश दिवस, द्वादशी E
18	29	00	06	20	17	56	24	25	10	क. 26।14	05	22	17	33	19	27	54	16	33	भ. 24।20 से, प्रदोष व्रत, चित्रायां रविः 30।46, त्रयोदशी श्राद्ध
19	28	56	06	21	17	55	25	26	11	कन्या	05	23	16	52	20	28	45	17	07	भ. 13।41 तक, चतुर्दशी श्राद्ध, शस्त्रेणमृतानां श्राद्ध
20	28	52	06	21	17	54	26	27	12	कन्या	05	24	16	12	23	29	35	17	41	सोमवती 30, देवपितृकार्येऽमा., सर्वपितृ श्राद्ध, मेला फल्गु (हरि)

A गुरुग्रंथ साहब प्रकाश दिवस B षष्ठी श्राद्ध C नवमी श्राद्ध D शहीदी दिवस, एकादशी श्राद्ध E श्राद्ध, सन्यासिनां श्राद्ध

❖ टिड्डी या अन्य हानिकारक जीवों से हानि होगी। शकुन विचार–अश्विनी भरणी कृतिका में शशि कुंडल होय। अन्न इकट्ठा करे तो लाभ लहै सब कोय॥
आश्विन लागत चौथ को बादल निकसे सूर। क्षेम कुशल आरोग्यता, वर्षा हो भरपूर॥ बदी घटे सुदी बढ़े तिथि क्रूरवार संक्रांति। संकट राज तंत्र में रहे सर्वत्र अशांति॥

आश्विन कृ. 8 चंद्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 5 अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
05	02	04	05	04	04	07	05	11	11	10	08
17	18	12	08	17	02	07	06	06	24	13	18
21	46	06	41	34	58	16	57	57	42	28	55
34	36	12	12	25	01	10	35	35	53	11	15
59	771	37	45	12	45	05	00	00	02	01	00
06	36	19	55	07	58	23	24	24	24	18	18
-	-	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	ठ	अ	ठ	ठ	ठ	अ	ठ	-	-	-
हस्त 3	आर्द्रा 4	मघा 4	उ.फा. 4	पू.फा. 2	मघा 1	अनु. 2	उ.फा. 4	उ.षा. 2	चित्रा 3	शता 3	पू.भा. 2

7
5 म.गु.
6
शु.
8 श.
4
सू.बु. रा.
3 चं.
9 प्लू.
12
के.ह.
10
2
11 ने.
1

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा क्षय योग से द्वितीया तिथौ मंगलवार रेवती नक्षत्र से आरंभ होकर अमावस्या सोमवती हस्त नक्षत्र के सर्व पितृ श्राद्ध तक चलेगा। तद्नुसार दिनांक 29 सिंत. से 12 अक्टू. 2015 तक रहेगा। फल गणना में माह में पांच मंगल होना किसी बड़े व्यक्ति का अभाव का कारक बनेगा। यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥ इसके योग से विश्व में रक्त-पात, हिंसा तथा छत्र भंग योग होगा। सोमवारी अमावस्या होने से सुभिक्ष। वर्षा का प्रबल योग रहेगा। धान्य उत्पत्ति उन्नत रूप में शुभ, लेकिन अमावस्या को हस्त योग होने से दुर्भिक्ष एवं महंगाई का कारक रहेगा। हस्त नखत अमावस्या दुर्भिक्ष कारक योगः। सर्व वस्तु महंगी बिके ऐसा बनता है। शुक्ल प्रतिपदा की वृद्धि होना सुभिक्ष योग। आश्विन शुक्ला अष्टमी बुधवार की होने से घृत, तेल-तिलहन के भावों में मंदी का योग बनेगा। सुदी एकादशी शनिवारी होने से चौरों की वृद्धि तथा विश्व में गुप्तचर रूप में आतंकवादी अपना वर्चस्व भी दिखाएंगे। मलेशिया, इग्लैण्ड, द. अमेरिका, कोरिया एवं दक्षिणी भारत में प्राकृतिक उपद्रव बढ़ेगा। राज तंत्र में विद्रोह तथा एक दूसरे के प्रति अवमानना जैसा वातावरण बनेगा। स्त्री वर्ग संकट में रहेगी। व्यापार भविष्य–शनिवारी संक्रांति के कारण सभी वस्तुओं में कमी तथा तेजी का विशेष योग रहेगा। दुर्भिक्ष योग के कारण जनता में रोष व्याप्त गरीबों का चूल्हा जलना दुष्कर होगा। शेयर्स बाजार की तेजी-मंदी से कई लोग अपनी लीला समाप्त करने जैसा योग बनेगा। वस्तुओं में सर्वत्र तेजी योग। आकाश लक्षण–बु+रा+सू की युक्ति के कारण कुछ स्थानों पर तेज वायु के साथ अल्पवृष्टि का योग। उत्तरी भारत में ऋतु परिवर्तन जैसा वातावरण बनेगा। शीत प्रकोप योग से पशुधन में हानि का योग। तेज धूप तथा वायु वेग से फसल में हानि तथा ❖

आश्विन कृ. 30 चंद्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 12 अक्टूबर

7
5 म.गु.
शु.
6
8 श.
4
सू.बु.
रा. चं.
3
प्लू.
12
के.
ह.
9
10
11 ने.
2
1

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
05	05	04	05	04	04	07	05	11	11	10	08
24	13	16	07	18	08	07	07	07	24	13	18
16	23	26	19	57	40	55	02	02	25	19	58
12	06	43	20	57	25	13	44	44	53	37	04
59	707	37	25	11	51	05	00	00	02	01	00
22	26	07	19	44	42	47	25	25	26	09	30
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	-	-	-
चित्रा 1	हस्त 2	पू.फा. 1	उ.फा. 4	पू.फा. 2	मघा 3	अनु. 2	उ.फा. 4	उ.षा. 2	रेवती 3	शता 2	पू.भा. 2

आश्विन शुक्ल पक्षः -15

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 13 से 27 अक्टूबर सन् 2015 ई., रा. मिति 21 आश्विन से 5 कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिणगोले, शरद-हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति.	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान		सूर्य उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
आ. 21	मं	1	60	00	–	–	चि	15	47	28	41	वै	42	22	23	19	किं	31	18	18	53	28	47	06	22	17	53	27	28	13	तु. 15।14	05	25	15	35	25	30	26	18	16	नवरात्र घटस्थापन, अग्रसेन जयंती, मातामह श्राद्ध
22	बु	1	04	16	08	05	स्वा	60	00	–	–	वि	44	10	24	02	ब	04	16	08	05	28	43	06	22	17	52	28	29	14	तुला	05	26	15	00	27	07	18	18	52	चन्द्रदर्शन मु. 15
23	गु	2	09	39	10	15	स्वा	02	30	07	23	प्री	45	20	24	31	कौ	09	39	10	15	28	39	06	23	17	51	29	मोह 01	15	वृ.27।12	05	27	14	27	28	08	10	19	31	मोहर्रम मु. 1, हिजरी सन् 1437 शुरू, हस्ते बुधः 24।53
24	शु	3	14	10	12	04	वि	08	25	09	46	आ	45	47	24	42	ग	14	10	12	04	28	35	06	24	17	50	30	02	16	वृश्चिक	05	28	13	55	31	09	02	20	13	भ. 24।48 से, ❖ 23।17, पापांकुशा 11 व्रत
25	श	4	17	37	13	27	अ	13	21	11	45	सौ	45	20	24	32	वि	17	37	13	27	28	31	06	24	17	49	का. 01	03	17	वृश्चिक	05	29	13	26	32	09	55	20	58	भ. 13।27 तक, आकाशदीप, तुलायां रविः 24।16, A
26	र	5	19	51	14	21	ज्ये	17	05	13	15	शो	43	53	23	58	बा	19	51	14	21	28	27	06	25	17	48	02	04	18	ध.13।15	06	00	12	58	35	10	48	21	48	उपांग ललिता व्रत C ज्वालामुखी-तारादेवी (हिमा.)
27	चं	6	20	40	14	42	मू	19	29	14	13	अ	41	19	22	57	तै	20	40	14	42	28	23	06	26	17	47	03	05	19	धनु	06	01	12	33	36	11	39	22	41	सरस्वती आवाहनं मूले . B औली प्रा.
28	मं	7	20	00	14	26	पूषा	20	25	14	36	सु	37	32	21	27	व	20	00	14	26	28	19	06	26	17	46	04	06	20	म. 20।36	06	02	12	09	37	12	30	23	37	भ. 14।26 से, भद्रकाल्यावतार, सरस्वती पूजा, आयंबिल B
29	बु	8	17	44	13	33	उषा	19	48	14	22	धृ	32	30	19	27	ब	17	44	13	33	28	15	06	27	17	45	05	07	21	मकर	06	03	11	46	40	13	18	24	00	भ. 26।05 तक, महाष्टमी, शस्त्रपूजा, बलीदानं, मेला C
30	गु	9	13	55	12	01	श्र	17	39	13	31	शू	26	13	16	57	कौ	13	55	12	01	28	11	06	27	17	44	06	08	22	कुं. 24।52	06	04	11	26	41	14	05	24	37	पंचकारम्भ 24।52 से, बौद्धावतार, विजया 10, पट्टाभिषेक D
का. 01	शु	10	08	36	09	54	ध	14	02	12	05	गं	18	45	13	58	ग	08	36	09	54	28	07	06	28	17	43	07	09	23	कुम्भ	06	05	11	07	43	14	50	25	38	भ. 20।40 से, भा. कार्तिकारंभ, सायन वृश्चिके रविः ❖
02	श	11	01	57	07	16	श	09	06	10	07	वृ	10	14	10	34	वि	01	57	07	16	28	03	06	29	17	42	08	10	24	मी. 26।22	06	06	10	50	44	15	34	26	42	भ. 7।16 तक, स्वात्यां रविः 17।13
00	श	12	54	15	28	11	00	00	00	00	00	oo	00	00	00	00	oo	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	द्वादशी तिथि क्षयः E व्रत, बुधास्त पूर्वे में 14।39
03	र	13	45	44	24	47	पूभा उभा	03 56	08 27	07 29	45 04	ध्रु व्या	00 50	52 54	06 26	50 51	कौ	20	03	14	31	27	59	06	29	17	41	09	11	25	मीन	06	07	10	34	46	16	17	27	47	प्रदोष व्रत, चित्रायां बुधः 20।23
04	चं	14	36	47	21	13	रे	49	23	26	15	ह	40	34	22	44	ग	11	17	11	01	27	55	06	30	17	40	10	12	26	मे. 26।15	06	08	10	20	49	17	02	28	53	भ. 21।13 से, पंचक समाप्त 26।15, शरत्पूर्णिमा, कोजागरी E
05	मं	15	27	48	17	38	अ	42	23	23	28	व	30	14	18	36	वि	02	15	07	25	27	51	06	31	17	39	11	13	27	मेष	06	09	10	09	50	17	49	29	59	भ. 7।25 तक, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, कार्तिक स्नानारंभः, F

A पूफायां शुक्रः 11।05, पूफा. 3 गुरु 13।47

D शमीपूजा, सरस्वती विसर्जन, नीलकंठ दर्शनम्, अपराजिता

F लखीपूजा, नवान्न भक्षण, शाकम्भरी, सत्यनारायण व्रत, आयंबिल ओली (जैन), वाल्मीकी जयंती

आश्विन शु. 8 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 21 अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
06	09	04	05	04	04	07	05	11	11	10	08
03	04	21	16	20	16	08	06	06	24	13	19
11	58	59	19	40	51	49	42	42	04	10	03
46	57	37	10	55	35	14	47	47	03	20	51
59	811	36	85	11	57	06	00	00	02	00	00
39	36	51	09	07	14	13	36	36	24	54	47
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा
-	-	ड	ठ	ठ	उ	ठ	उ	ठ	-	-	-
चित्रा 3	उ.षा. 3	पू.फा. 3	हस्त 2	पू.फा. 3	पू.फा. 2	अनु. 2	उ.फा. 4	उ.भा. 2	रेवती 3	शत. 2	पू.षा. 2

8 श. | 6 बु.रा. | 5
9 | 7 | मं.गु. शु.
प्लू. | सू. | 4
10 चं. | 1
11 ने. | 3
12 के.ह. | 2

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा वृद्धि मंगलवार चित्रा नक्षत्र से प्रारंभ होकर आश्विन पूर्णिमा अश्विनी नक्षत्र तक रहेगा। पक्ष में नवरात्रा घट स्थापना दिवा 10।30 से 1।30 तक शुभदायक। अग्रसेन जयंती, मातामह श्राद्ध योग से धार्मिक आयोजनों से सद्भावना वृद्धि का कारक रहेगा। पक्ष में जम्बूक वर्षा योग बनेगा। शीत प्रकोप बढ़ने का योग। पशु धन को हानि। दुर्घटनाओं का अम्बार योग बनेगा। इसी पक्ष में तिथि क्षय होना प्रशासनिक अधिकारियों में असंतुष्टि के साथ अभाव अभियोग योग भय बनेगा। पक्ष में तुलायां अर्क योग आश्विन शुक्ल चतुर्थी शनिवार वारात 3, नक्षत्रात् 4, वारनाम राक्षसी, चांडाल सुखदा, नक्षत्र नाम राक्षसी, चांडालान सुखदा योग। मध्य रात्रि द्वितीय प्रहर व्यापिनी राक्षसान हन्ति। उत्तरे गमनम्, ऐशान्यां दृष्टि, बव करणे प्रविष्ट, मध्यम् फल, सिंह वाहन, गज उपवाहन। भीति कारक, श्वेत वस्त्र, विचित्र कंचुकी, बालावस्था बैठी मु. 15 मंहगाई की विशेष कारक रहेगी। शनिवारी संक्रांति मध्य रात्रि द्वितीय प्रहर व्यापिनी संकट। सर्व जन दुखी भय रोग योग सर्वत्र विकट। कृषक वर्ग की कृषि में वायु वेग फसल हानि। नेता गण भी दुखी हुए कहता अपनी कहानी। बुधवार 14 अक्टू. चन्द्रदर्शन मुहूर्ति 15। व्यापारी वर्ग सुखी होंगे छोड़ेंगे विद्रोह। यानि तेजी चलेगी। व्यापार भविष्य–गुड़, शक्कर, रस कस, सभी तरह का किराना सामग्री में तेजी बनेगी। फसलों की हानि से सभी खाद्यान्नों में भी तेजी बनेगी। स्टॉक कर्त्ता व्यापारी खुशी मनाएंगे। कपूर, औषधि, पान, सुपारी, नारियल, खोपरा आदि सभी में तेजी। स्टॉक नहीं करें तो अच्छा रहेगा। आकाश लक्षण–कन्या राशि में तीन ग्रहों के कारण वायु वेग, बादल गाज तथा पशु चौपायों की हानि योग। आंधी, झंझावात से जनता दुखी रहेगी। खड़ी फसलें भूमि पर गिरेंगी। बूंदा-बांदी से शीत बढ़ेगा। वायुमंडल में अशोभनीय घटना का योग बनेगा। शकुन विचार–सातें आठें सुदी में बरसें आश्विन मास। बढ़ै शांति सुख संपदा विग्रह होय विनाश। बादल वर्षा बिजली विजया दशमी देख। मूंग, उड़द, तिल, तेल में तेजी रहे विशेष।

आश्विन शु. 15 मंगल, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 27 अक्टूबर

8 श. | 6 रा.बु. | 5
9 | 7 | मं.गु. शु.
प्लू. | सू. | 4
10 | 1 चं.
11 ने. | 3
12 के.ह. | 2

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
06	00	04	05	04	04	07	05	11	11	10	08
09	02	25	25	21	22	09	06	06	23	13	19
10	02	40	33	46	43	27	44	44	49	05	09
09	33	08	04	17	46	17	43	43	52	22	01
59	906	36	97	10	60	06	03	03	02	00	00
49	39	40	13	39	08	28	12	12	19	44	57
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	ठ	अ	ठ	ठ	ठ	ठ	उ	-	-	-
स्वाति 1	अश्वि. 1	पू.फा. 4	चित्रा 1	पू.फा. 3	पू.फा. 3	अनु. 2	उ.फा. 4	उ.भा. 2	रेवती 3	शत. 2	पू.षा. 2

कार्तिक कृष्ण पक्षः -16

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 28 अक्टूबर से 11 नवंबर सन् 2015 ई., रा. मिति 6 से 20 कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिणगोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान घ.	प.	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
06	बु	1	19	11	14	12	भ	35	52	20	52	सि	20	14	14	37	कौ	19	11	14	12	27	47	06	31	17	38	12	14	28	वृ. 26।17	06	10	09	59	59/52	18	37	07	06	उफायां भौमः 20।43 A गुरु रामदास जयंती
07	गु	2	11	22	11	05	कृ	30	18	18	39	व्य	10	53	10	53	ग	11	22	11	05	27	43	06	32	17	38	13	15	29	वृष	06	11	09	51	54	19	29	08	12	भ. 21।43 से, व्यतिपात 10।58 तक, तुलायां बुधः 22।45, A
08	शु	3	04	47	08	28	रो	26	05	16	59	व/ध	02/55	32/30	07/28	34/45	वि	04	47	08	28	27	39	06	33	17	37	14	16	30	मि. 28।24	00	12	09	45	56	20	23	09	15	भ. 8।28 तक, उफायां शुक्रः 26।32, करवा चौथ, दशरथ B
00	शु	4	59	49	30	29	00	00	00	00	00	००	00	00	00	00	००	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	06	00	00	00	00	00	00	00	00	चतुर्थी तिथि क्षयः B ललिता व्रत
09	श	5	56	45	29	16	मृ	23	36	16	00	शि	49	57	26	32	कौ	28	01	17	46	27	36	06	34	17	36	15	17	31	मिथुन	06	13	09	41	58	21	18	10	15	इन्दिरा गांधी पुण्य दिवस, सरदार पटेल जयंती
10	र	6	55	48	28	53	आ	23	05	15	48	सि	46	04	25	00	ग	25	59	16	58	27	32	06	34	17	35	16	18	Nov 01	मिथुन	06	14	09	39	60/00	22	14	11	09	भ. 28।53 से, स्कंध षष्ठी
11	चं	7	57	00	29	23	पुन	24	40	16	27	सा	43	51	24	08	वि	26	07	17	02	27	28	06	35	17	34	17	19	02	क. 10।13	06	15	09	39	03	23	10	11	58	भ.. 17।02 तक, स्वात्यां बुधः 23।24
12	मं	8	60	00	–	–	पु	28	18	17	55	शुभ	43	14	23	53	बा	28	22	17	57	27	25	06	36	17	34	18	20	03	कर्क	06	16	09	42	04	24	00	12	42	कन्यायां भौमः 8।06, कन्यायां शुक्रः 7।31, अहोई अष्टमी, C
13	बु	8	00	12	06	41	आ	33	43	20	26	शु	43	57	24	11	कौ	00	12	06	41	27	21	06	37	17	33	19	21	04	सिं. 20।06	06	17	09	46	07	24	04	13	22	श्रीगुरु हरिकिशन जी ज्योत
14	गु	9	05	07	08	40	म	40	31	22	50	ब्र	45	42	24	54	ग	05	07	08	40	27	17	06	37	17	32	20	22	05	सिंह	06	18	09	53	09	24	57	13	59	भ. 21।50 से, पूफा. 4 गुरु 8।09
15	शु	10	11	14	11	07	पूफा	48	10	25	54	ऐं	48	05	25	52	वि	11	14	11	07	27	14	06	38	17	31	21	23	06	सिंह	06	19	10	02	11	25	49	14	34	भ. 11।07 तक, विशाषायां रविः 25।26
16	श	11	17	58	13	50	उफा	56	07	29	06	वै	50	41	26	55	बा	17	58	13	50	27	10	06	39	17	31	22	24	07	कं. 08।42	06	20	10	13	13	26	40	15	08	रमा एकादशी व्रत (सबका), गोवत्स 12, सायं गोवन्दन
17	र	12	24	47	16	34	ह	60	00	–	–	वि	53	09	27	55	तै	24	47	16	34	27	07	06	40	17	30	23	25	08	कन्या	06	21	10	26	15	27	31	15	42	निरंजन 12, श्रीपद्म प्रभु जन्म-तप (जैन)
18	चं	13	31	12	19	09	ह	03	50	08	12	प्री	55	12	28	45	व	31	12	19	09	27	03	06	40	17	30	24	26	09	तु. 21।41	06	22	10	41	17	28	21	16	16	भ. 19।09 से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्री, गोत्रिरात्रि, D
19	मं	14	36	53	21	26	चि	10	59	11	05	आ	56	37	29	20	वि	04	08	08	20	27	00	06	41	17	29	25	27	10	तुला	06	23	10	58	18	29	13	16	52	भ. 8।20 तक, विशाखायां बुधः 26।12, रूप 14, नरक 14
20	बु	30	41	35	23	20	स्वा	17	17	13	37	सौ	57	16	29	36	च	09	21	10	26	26	56	06	42	17	28	26	28	11	तुला	06	24	11	16	21	30	05	17	30	देवपितृकार्येऽमा., श्री महालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा, कमला E

C कालाष्टमी, राधाकुंड स्नान (गोवर्द्धन), दाम्पत्यष्टमी D श्री हनुमज्जन्मोत्सव, यम तर्पणम्, धन त्रयोदशी, धनवन्तरी जयंती, यमराज को दीपदान
E जयंती, कौमुदी महोत्सव पूर्ण, महावीर निर्वाण दिवस, गुर्जराणां संवत्सर पूर्ण

कार्तिक कृ. 8 मंगल, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 3 नवंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
06	03	04	06	04	04	07	05	11	11	10	08
16	10	29	07	22	29	10	06	06	23	13	19
09	12	56	05	58	54	13	08	08	34	00	16
42	59	03	15	46	41	22	51	51	03	56	20
60	752	36	99	10	62	06	01	01	02	00	01
04	24	27	23	02	56	42	59	59	11	31	08
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
स्वाती 3	पुष्य 3	उ.फा. 1	स्वाती 1	पू.फा. 3	उ.फा. 1	अनु. 3	उ.फा. 3	उ.भा. 1	रेवती 3	शत. 2	पू.षा. 2

8 श.
6 रा.
5 मं.गु. शु.
9 प्लू.
7 सू. बु.
4 चं.
10
1
11 ने.
3
12 ह.के.
2

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा बुधवार भरणी नक्षत्र से आरंभ होकर दीपावली अमावस्या बुधवार स्वाती नक्षत्र तक तदनुसार दिनांक 28 अक्टू. से 11 नवं. 2015 तक रहेगा। इस पक्ष में सिंह राशि स्थित मं+गु+शु विश्व में अशोभनीय घटनाओं, युद्ध जैसा वातावरण बनाएगा। विशिष्ट नेता या धार्मिक मठाधीश को संकट योग या स्वर्गारोहण भी होने का योग बनेगा। **बुधस्य पंचवाराश्चेज्जायते च निरंतरम्। प्रजानाम् सुख मत्यन्त सुभिक्ष च प्रजायते॥** यानि जनता सुखी एवं सुभिक्ष योग बने। **यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पते। विग्रहः पश्चिम देशे खड्ग युद्धश्च जायते॥** पांच गुरुवार होने से पश्चिम देशों में विग्रह तथा युद्ध होंगे। अंतर्राष्ट्रीय सीमांकन विवाद में जन धन की हानि होगी। रा+बु की युक्ति गुप्तचरों में वृद्धि कारक योग बनेगा। स्त्रीवर्ग भी गुप्तचर बनकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में चातुर्य दिखाएगी। स्वराशि का बुध विश्व व्यापार संगठन को भी चिंतित कर देगा। **कन्या राशि गते हि कांचन शुद्ध शर्करा। मासे षष्ठ ददेल्लाम पुनः शस्तो भविष्यति॥** कन्या गत बुध के कारण सोना-चांदी, हल्दी, गेहूं में तेजी होगी। व्यापार भविष्य-सोना, चांदी, तांबा, लोहा, कांसी, रांगा आदि धातु में तेजी। गुड़, खांड, शक्कर, हल्दी, गेहूं, जौ, चना आदि में भी तेजी का योग अच्छा रहेगा। रुई, कपास, मूंग, मोठ, ग्वार में मंदी का योग बनेगा। वायु वेग तेज। यदा दैत्य गुरुः सिंहे हेमरक्तं चतुष्पदः। **धान्यानि च महर्घाणि नाश याति चः।** के कारण लाल रंग के पदार्थ और पशु, धान्य महंगे होंगे। वर्षा का अभाव, वायु तेज गति में। **आकाश लक्षण**-कन्या राशि में त्रिग्रही योग (रा+मं+शु) सू+बु=बुधादित्य योग आध्यात्मिक कार्य होंगे। मौसम शुष्क बनकर अचानक बादल गरज वर्षा से खड़ी फसलों में हानि दायक योग बनेगा। **शकुन विचार**-कार्तिक मंगसिर पूर्णिमा मेघ घटा आकाश। गल्ला घी संग्रह करो, लाभ पांचवें मास। बुध गुरु की आये दिवाली, जीवे रंक मरे भड़साली। यानि गरीबों के लिए शुभ दायक।

कार्तिक कृ. 30 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 11 नवंबर

8 श.
स. शु. रा. 6
5 गु.
9 प्लू.
7 सू. चं. बु.
4
10
1
11 ने.
3
12 के.ह.
2

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
06	06	05	06	04	05	07	05	11	11	10	08
24	15	04	20	24	08	11	05	05	23	12	19
11	54	46	13	15	28	07	59	59	17	57	26
16	17	36	23	51	30	51	15	15	18	46	16
60	726	36	97	09	65	06	07	07	01	00	01
20	03	10	21	13	27	55	01	01	59	16	21
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
विशा. 2	स्वाती 3	उ.फा. 3	विशा. 1	पू.फा. 4	उ.फा. 4	अनु. 3	उ.फा. 3	उ.भा. 1	रेवती 2	शत. 2	पू.षा. 2

कार्तिक शुक्ल पक्षः-17

श्री सं. 2072 शाके 1937 | दिन मान | स्टैं. टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र राशि प्रवेश | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. 12 से 25 नवंबर सन् 2015 ई., रा. मिति 21 कार्तिक से 4 अगहन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिणगोले, हेमन्त ऋतु।

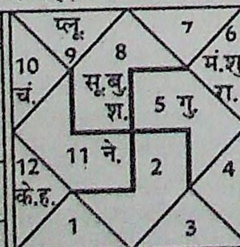
निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ.	तिथि प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र न	नक्षत्र घ.	नक्षत्र प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग यो	योग घ.	योग प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण क	करण घ.	करण प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	दिनमान घ.	दिनमान प.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्र उदय घं.	मि.	चन्द्र अस्त घं.	मि.	
का. 21	गु	1	45	14	24	48	वि	22	36	15	45	शो	57	07	29	33	कि	13	32	12	07	26	53	06	43	17	28	27	29	12	वृ. 9:15	06	25	11	37	60 22	30	58	18	11	हस्ते शुक्र 14:58, पश्चिमायामस्तः शनिः 6:55, गोवर्द्धन A
22	शु	2	47	48	25	51	अ	26	52	17	28	अ	56	08	29	11	बा	16	38	13	23	26	50	06	43	17	27	28	30	13	वृश्चिक	06	26	11	59	24	07	51	18	56	चन्द्रदर्शन मु. 15, भैय्या दूज, यम 2, यमुना स्नान, कलम B
23	श	3	49	18	26	27	ज्ये	30	07	18	47	सु	54	21	28	28	तै	18	40	14	12	26	47	06	44	17	27	29	सफर 01	14	ध. 18:47	06	27	12	23	25	08	44	19	44	सफर मु. 2, नेहरू जयंती, बाल दिवस B दवात पूजा
24	र	4	49	45	26	39	मू	32	21	19	41	धृ	51	44	27	27	व	19	38	14	36	26	44	06	45	17	26	30	02	15	धनु	06	28	12	48	26	09	36	20	36	भ. 14:36 से 26:39 तक, दुर्वागणपती, गणेश चतुर्थी
25	चं	5	49	09	26	26	पूषा	33	33	20	11	शू	48	19	26	05	ब	19	34	14	35	26	40	06	46	17	26	मार्ग 01	03	16	म. 26:15	06	29	13	14	28	10	27	21	32	पाण्डव 5, सौभाग्य 5, आकाशदीप पूर्ण, रवि वृश्चिके 24:04
26	मं	6	47	30	25	47	उषा	33	44	20	16	गं	44	04	24	24	कौ	18	27	14	09	26	37	06	47	17	26	02	04	17	मकर	07	00	13	42	30	11	16	22	30	सूर्य षष्ठी, छठ पूजा (बिहार), डाला 6, वृश्चिके बुधः 7:31
27	बु	7	44	47	24	42	श्र	32	53	19	56	वृ	38	58	22	23	ग	16	15	13	18	26	34	06	47	17	25	03	05	18	मकर	07	01	14	12	30	12	02	23	29	भ. 24:43 से, कल्पादि, सहस्रार्जुन जयंती, अष्टान्हिका पर्व प्रा.
28	गु	8	40	58	23	11	ध	30	57	19	11	ध्रु	33	01	20	01	वि	12	59	12	00	26	32	06	48	17	25	04	06	19	कुं. 07:37	07	02	14	42	32	12	46	24	00	भ. 12:00 तक, पंचक 7:37 से, गोपाष्टमी, C
29	शु	9	36	06	21	15	श	27	59	18	01	व्या	26	13	17	18	बा	08	39	10	16	26	29	06	49	17	24	05	07	20	कुम्भ	07	03	15	14	33	13	29	24	30	युगादि 9, अक्षय 9, तुलसी त्रिरात्र व्रतारम्भ, कुष्माण्ड 9, D
30	श	10	30	15	18	56	पूभा	24	01	16	26	ह	18	36	14	16	तै	03	16	08	08	26	27	06	50	17	24	06	08	21	मी. 10:52	07	04	15	47	35	14	11	25	32	भ. 29:38 से, मेला रेणुका (हिमा.), पंडरपुर यात्रा
अग. 01	र	11	23	32	16	16	उभा	19	11	14	31	व	10	16	10	57	वि	23	33	16	16	26	24	06	51	17	24	07	09	22	मीन	07	05	16	22	35	14	54	26	35	भ. 16:16 तक, प्रबोधिनी एकादशी व्रत (सबका), तुलसी E
02	चं	12	16	12	13	20	रे	13	42	12	20	सि व्य	01 52	21 08	07 27	24 42	बा	16	12	13	20	26	21	06	51	17	24	08	10	23	मे. 12:20	07	06	16	57	37	15	38	27	39	पंचक समाप्त 12:20 तक, प्रदोष व्रत, हरिवासर 12:20 F
03	मं	13	08	30	10	16	अ	07	51	10	01	व	42	45	23	58	तै	08	30	10	16	26	19	06	52	17	23	09	11	24	मेष	07	07	17	34	38	16	24	28	45	रोटक व्रत पूर्ति, बैकुंठ 14, चित्रायां शुक्रः 12:39
04	बु	14	00	48	07	12	भ कृ	01 56	59 32	07 29	41 30	प	33	35	20	19	व	00	48	07	12	26	16	06	53	17	23	10	12	25	वृ. 13:07	07	08	18	12	39	17	14	29	50	भ. 7:12 से 17:42 तक, पूर्णिमा व्रतं पुण्यज्च, कार्तिक G
00	बु	15	53	30	28	17	00	00	00	00	00	oo	00	00	00	00	oo	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	तिथि क्षयः D अनु. रविः 7:23 F तक, श्री कालीदास जयंती

A पूजा, अन्नकूट, मार्गपालिका, नववर्ष गुजरात-महाराष्ट्र C इंदिरा गांधी जयंती, हस्ते भौमः 22:27, अनुराधायां बुधः 9:55 E त्रिरात्र व्रत पूर्ण, तुलसी विवाह, पंच भीष्म व्रतारंभ, चातुर्मास पूर्ण, सायन धनुषि रविः 20:55, मेला पुष्कर G स्नान, व्रतोद्यापन, पञ्च भीष्म व्रत पूर्ण, गुरु नानक देव जयंती, पुष्कर यात्रा, त्रिपुरोत्सव, अष्टान्हिक व्रतपूर्ण, रेणुका तीर्थ गढ़गंगा, निम्बार्क जयंती, मेला रामतीर्थ

कार्तिक शु. 8 गुरु, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 19 नवंबर

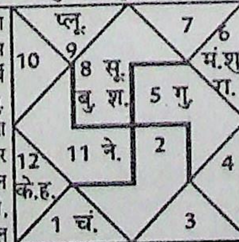
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
07	09	05	07	04	05	07	05	11	11	10	08
02	28	09	03	25	17	12	05	05	23	12	19
14	47	34	02	25	20	03	08	08	02	56	37
42	13	42	31	55	04	43	50	50	27	44	46
60	825	35	95	08	67	07	00	00	01	00	01
31	25	51	01	16	23	03	02	02	43	01	32
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	अ	उ	उ	-	-	-
विशा. 4	धनि. 2	उ.फा. 4	विशा. 4	पू.फा. 4	हस्त 3	अनु. 3	उ.फा. 3	उ.भा. 1	चित्रा 2	श्रवण 2	पू.षा. 2



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा गुरुवार विशाखा नक्षत्र से प्रारंभ होकर सुदी पूर्णिमा कृतिका नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 12 से 25 नवं. 2015 तक रहेगा। इस पक्ष में गोवर्धन पूजा, अन्नकूट देशाचारे गो क्रीड़ा योग। गुजरात में नूतन वर्ष का शुभारंभ से शुभदायक योग रहेगा। चन्द्रदर्शन शुक्रवार अनुराधा नक्षत्रे मु. 15 तेजी कारक योग करेगा तथा नई योजनाओं की क्रियान्विति से जनता को रोजगार प्राप्ति होगी। इस पक्ष शुक्ल पंचमी चन्द्रवार में भुवन भास्कर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में वारात् 3, नक्षत्रात् 4, वारनाम ध्वांक्षी, वैश्यान सुखदा, नक्षत्र नाम नंदा, गणकान् सुखदा, मध्य रात्रि द्वितीय प्रहर व्यापिनी, राक्षसान हन्ति, उत्तरे गमनं, ऐशान्यां दृष्टि, बालव करणे प्रविष्ठा, मध्य फल दायिनी, व्याघ्र वाहनम्। अश्व उपवाहनम, भीतिकारक, पीत वस्त्रम्, गदा युधम्, रौप्य पात्रं, पायस भक्षणम्। कुंकुम लेपनम्, भूत जाति, जाति पुष्पं, कुमारिकावस्था (बैठी) मुहूर्ति 45, धान्य भाव समर्घ, वृश्चिक राशि गते बुध सूर मंद। अंधाधुंध गोली चले होवे द्वन्द॥ मंगल, शुक्र युक्ति राहु यदा कदा भविष्यति। तेज सर्वत्र जनेषु घृणा दोष वैरम् च जायते। आणविक संस्थानों में विस्फोट योग। तकनीकी शिक्षा का अवसर बढ़ेगा। विश्व की प्रत्येक घटना सर्वत्र दृष्टिगोचर लेकिन प्राकृतिक आपदाओं से सभी छिन्न-भिन्न होने का योग बनेगा। आकाश में वायुयान भी टकरायेंगे।

कार्तिक शु. 14 बुध, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 25 नवंबर



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
07	00	05	07	04	05	07	05	11	11	10	08
08	25	13	12	26	24	12	04	04	22	12	19
18	19	09	28	13	08	46	54	54	52	57	47
12	43	00	49	17	05	10	48	48	48	24	18
60	884	35	93	07	68	07	08	08	01	00	01
39	29	35	50	30	37	06	42	42	29	13	39
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	अ	उ	उ	-	-	-
अनु. 2	भर. 4	हस्त 1	अनु. 3	पू.फा. 4	चित्रा 1	अनु. 3	उ.फा. 3	उ.भा. 1	चित्रा 2	श्रवण 2	पू.षा. 2

व्यापार भविष्य-गुड़, खांड, रुई, कपास, घास-तृण में तेजी। चांदी, अलसी, सरसों, बिनौला, मूंगफली में मंदी। ज्वार, बाजरा, ग्वार, मूंग, मोठ में मंदी का योग बनेगा। पेट्रोल, डीजल, तेल, तिल, कोयला, शेयर्स बाजार के भाव अस्थिरता में रहेंगे। अरहर, तारामीरा के भाव तेज रहेंगे। आकाश लक्षण-यदा वृश्चिकम् सौरिर्मेदिनी दुःख संयुक्ता। वर्ष मात्र मयो चोर्ध्वमिन्द्र प्रस्थो विनश्यति। वृश्चिक राशि पर शनि होने से पृथ्वी पर दुःख का कारण यत्र-तत्र बनता रहेगा। वर्ष 2016 में दिल्ली में अनिष्ट (नाश) योग बनेगा। उत्तरी भारत में शीत प्रकोप बढ़ेगा। हिमालय परिक्षेत्र में प्राकृतिक आपदा योग। यात्रियों को संकट मय दोहन (लूट-मार) योग बनेगा। शकुन विचार-दीपावली गुरुवार की होली भी हो गुरुवार। हो सावधान यहां से करना निज व्यापार। कार्तिक सुदी एकादशी बादल बिजली होय। तो आषाढ़ में धड़डरी बरखा चौखी होय॥

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः-18 श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 26 नवंबर से 11 दिसंबर सन् 2015 ई., रा. मिति 5 से 20 अगहन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिणगोले, हेमन्त ऋतु।

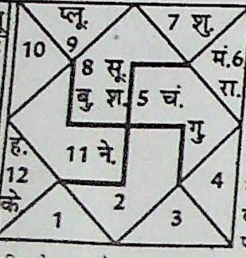
निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.
05	गु	1	46	57	25	41	रो	51	51	27	38	शि	24	55	16	52	बा	20	05	14	56
06	शु	2	41	37	23	33	मृ	48	24	26	16	सि	17	05	13	44	तै	14	06	12	33
07	श	3	37	51	22	04	आ	46	32	25	32	सा	10	23	11	04	व	09	30	10	43
08	र	4	36	00	21	20	पुन	46	35	25	34	शुभ	05	05	08	58	ब	06	40	09	36
09	चं	5	36	15	21	27	पु	48	40	26	25	शु / ब्र	01 / 59	22 / 19	07 / 30	30 / 41	कौ	05	50	09	17
10	मं	6	38	36	22	24	आ	52	46	28	04	ऐं	58	49	30	29	ग	07	09	09	49
11	बु	7	42	52	24	07	म	58	37	30	25	वै	59	39	30	50	वि	10	30	11	11
12	गु	8	48	37	26	26	पूफा	60	00	–	–	वि	60	00	–	–	बा	15	35	13	13
13	शु	9	55	16	29	06	पूफा	05	42	09	17	वि	01	28	07	35	तै	21	51	15	45
14	श	10	60	00	–	–	उफा	13	30	12	25	प्री	03	52	08	33	व	28	41	18	29
15	र	10	02	05	07	51	ह	21	19	15	33	आ	06	20	09	34	वि	02	05	07	51
16	चं	11	08	29	10	26	चि	28	34	18	28	सौ	08	28	10	25	बा	08	29	10	26
17	मं	12	13	57	12	38	स्वा	34	49	20	58	शो	09	53	11	00	तै	13	57	12	38
18	बु	13	18	09	14	19	वि	39	47	22	59	अ	10	22	11	13	व	18	09	14	19
19	गु	14	20	57	15	27	अ	43	25	24	26	सु	09	49	11	00	श	20	57	15	27
20	शु	30	22	23	16	02	ज्ये	45	46	25	23	धृ	08	11	10	22	ना	22	23	16	02

रा. मि.	दिनमान घं.	मि.	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
05	26	13	06	54	17	23	11	13	26	वृष	07	09	18	51	60/41	18	06	30	55	रोहिणी व्रत (जैन)
06	26	11	06	55	17	23	12	14	27	मि. 14|53	07	10	19	32	42	19	02	07	57	ज्येष्ठायां बुधः 21|52
07	26	09	06	55	17	23	13	15	28	मिथुन	07	11	20	14	43	19	59	08	55	भ. 10|43 से 22|04 तक, उफा. 1 गुरु 21|52, सौभाग्य व्रत
08	26	06	06	56	17	23	14	16	29	क. 19|29	07	12	20	57	45	20	56	09	48	अनु. 4 शनि 21|46
09	26	04	06	57	17	23	15	17	30	कर्क	07	13	21	42	46	21	52	10	35	तुलायां शुक्रः 7|48
10	26	02	06	58	17	23	16	18	01	सिं.28|04	07	14	22	28	48	22	47	11	18	भ. 22|24 से 11|11 तक, दिसंबर मासारम्भ, एड्स दिवस
11	26	00	06	58	17	22	17	19	02	सिंह	07	15	23	16	49	23	41	11	57	
12	25	58	06	59	17	22	18	20	03	सिंह	07	16	24	05	51	24	00	12	34	ज्येष्ठायां रविः 11|46, काल भैरवाष्टमी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद A
13	25	56	07	00	17	22	19	21	04	कं. 16|03	07	17	24	56	52	24	32	13	08	A जन्म, चेहल्लुम शहीद कर्बला
14	25	54	07	01	17	23	20	22	05	कन्या	07	18	25	48	54	25	23	13	42	भ. 18|29 से, स्वात्यां शुक्रः 25|02, महावीर स्वामी दीक्षा दिन
15	25	53	07	01	17	23	21	23	06	तु. 29|03	07	19	26	42	54	26	14	14	16	भ. 7|51 तक, मूले धनुषि बुधः 12|02
16	25	51	07	02	17	23	22	24	07	तुला	07	20	27	36	56	27	05	14	51	उत्पन्ना 11 व्रत (सबका), वैतरणी व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्य B
17	25	50	07	03	17	23	23	25	08	तुला	07	21	28	32	57	27	57	15	28	भौम प्रदोष व्रत B दिवस, भारतीय झंडा दिवस
18	25	48	07	04	17	23	24	26	09	वृ.16|31	07	22	29	29	59	28	50	16	08	भ. 14|19 से 26|57 तक, मास शिवरात्रि, मेला पुरमंडल C
19	25	47	07	04	17	23	25	27	10	वृश्चिक	07	23	30	28	59	29	43	16	51	महाव्रतारम्भः, मानवाधिकार दिवस C देवीस्नान (कश्मीर)
20	25	46	07	05	17	23	26	28	11	ध. 25|23	07	24	31	27	61/00	30	37	17	39	देवपितृकार्येऽमा., गौरी तपो व्रत, शहादते इमाम हसन

मार्गशीर्ष कृ. 8 गुरु, प्रातः 5|30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 3 दिसंबर

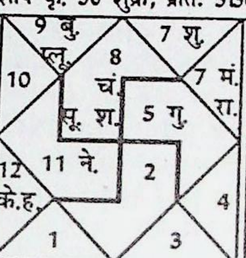
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
07	04	05	07	04	06	07	05	11	11	10	08
16	12	17	24	27	03	13	03	03	22	13	20
24	52	52	55	08	22	43	49	49	42	00	01
05	22	18	53	52	32	03	54	54	14	13	05
60	720	35	93	06	69	07	00	00	01	00	01
50	29	13	02	22	58	07	54	54	09	29	48
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	अ	उ	उ	-	-	-
अनु. 4	मघा 4	हस्त 3	ज्ये. 3	उ.फा. 1	चित्रा 4	अनु. 4	उ.फा. 3	उ.भा. 1	रेवती 2	शत. 2	पू.षा. 3



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा गुरुवार रोहिणी से प्रारंभ होकर अमावस्या शुक्रवार ज्येष्ठा नक्षत्र तक, तदनुसार दिनांक 26 नवं. से 11 दिसं. 2015 तक चलेगा। इस पक्ष में मासिक धारणा का फलादेश गौरी तपो व्रत के रूप में सर्वत्र विधान चलेगा। इस मास में पांच गुरुवार होने से यत्र मासे पंच वारा जायते च बृहस्पतेः, विग्रह पश्चिम देशे खड्ग युद्धञ्च जायते। पांच गुरुवार के कारण पश्चिम देशों में विद्रोह उपद्रव एवं खड्ग युद्ध योग बनेगा, लेकिन पांच शुक्रवार होने से "शुक्रस्य पंच वारास्युर्यत्र मासे निरंतरम्। प्रजा वृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥" पांच शुक्रवार के कारण प्रजा की वृद्धि और सुभिक्ष योग तथा सुख की वृद्धि से युद्ध जैसा वातावरण में शांति होने का योग बनता है। मार्गशीर्ष कृष्ण तीज को आर्द्रा नक्षत्र होने से धान्य सस्ता होगा। राज-काज में भी सुव्यवस्था का घटक रहेगा। प्रजा कार्य में व्यस्त होगी। शुक्रवारी अमावस्या के कारण मेघों से जल प्रंश और खेती में (उ.प्र. में) विशेष बाधाएं हानि होंगी। चोरी जैसी वारदातें बढ़ेंगी। कुहरा या घटा टोप-बर्फ गिरने से फसलों में हानिदायक योग होगा। ज्येष्ठा अमावस्या दुर्भिक्षकारी योग खड़ी फसल को भी प्राकृतिक आपदा से हानि बनने का योग। पूर्णिमा मृगशिरा मंहगाई का कारक तथा चातुर्मास में वर्षा का अभाव का योग भी बनता है। व्यापार भविष्य-चांदी, चावल, शक्कर, दूध, दही, चना, सरसों, सोयाबीन, अरहर, पीपरमेंट में अच्छी तेजी का योग। घी, तिल, तेल में उतार-चढ़ाव चलेगा। उड़द, लहसुन, प्याज, सब्जी भी मंहगी। पशु आहार, खल बिनौला, कपास, सूत, पत्थर, सीमेंट, लोहा भी विशेष तेजी में रहेंगे। आकाश लक्षण-शुक्र, बुध से पीछे होना अशोभनीय मानवता शर्मसार योग करेगा। वृश्चिक राशि में तीन ग्रह बु+सू+श होना आकाश में तारे टूटेंगे तथा वरिष्ठ नेताओं को लेकर जाएंगे। यत्र-तत्र बिजली गिरेगी, अग्निकांड जैसा योग बनेगा। शीतोष्णता जैसा वातावरण बनेगा। शकुन विचार-वृश्चिक की संक्रांति को बादल वर्षा होय। सोना, पीतल, मूंग में लाभ सवाया होय। सूरज बादल उदय में [illegible] उपज कमती रहे मंहगा चरा घास।

मार्गशीर्ष कृ. 30 शुक्र, प्रातः 5|30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 11 दिसंबर



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
07	07	05	08	04	06	07	05	11	11	10	08
24	19	22	07	27	12	14	03	03	22	13	20
31	20	32	17	54	46	39	09	09	34	05	15
27	59	27	36	55	40	44	49	49	32	14	55
61	765	34	92	05	71	07	12	12	00	00	01
00	48	48	14	07	02	03	42	42	46	46	55
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	अ	उ	उ	-	-	-
ज्ये. 3	ज्ये. 1	हस्त 4	मूल 3	उ.फा. 1	स्वाती 2	अनु. 4	उ.फा. 2	पू.भा. 4	रेवती 2	शत. 2	पू.षा. 3

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः-19

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 12 से 25 दिसंबर सन् 2015 ई., रा. मिति 21 अगहन से 4 पौष तक। रवि दक्षिण-उत्तरायने, दक्षिण गोले, हेमन्त शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.		तिथि			स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिनमान		स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि.					चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
मि.	वा	ति	घ.	प.	घं.	मि.	न	घ.	प.	घं.	मि.	यो	घ.	प.	घं.	मि.	क	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.				भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि.	
अग 21	श	1	22	33	16	07	मू	46	58	25	53	शू	05	35	09	20	ब	22	33	16	07	25	45	07	06	17	24	27	29	12	धनु	07	25	32	27	01 01	07	31	18	30	ज्वालामुखी योग 16।07 तक, चित्रायां भौम: 14।20, A
22	र	2	21	39	15	46	पूषा	47	12	25	59	गं वृ	02 57	06 55	07 30	57 16	कौ	21	39	15	46	25	44	07	06	17	24	28	[illegible] 01	13	धनु	07	26	33	28	02	08	23	19	25	रविलावल मु. 3, बुधोदय पश्चिमायां 14।46
23	चं	3	19	52	15	04	उषा	46	38	25	46	ध्रु	53	05	28	21	ग	19	52	15	04	25	43	07	07	17	24	29	02	14	म. 07।57	07	27	34	30	02	09	14	20	24	भ. 26।36 से, पूषाढ़ायां बुध: 28।19
24	मं	4	17	21	14	04	श्र	45	24	25	17	व्या	47	44	26	13	वि	17	21	14	04	25	42	07	08	17	24	30	03	15	मकर	07	28	35	32	03	10	01	21	23	भ. 14।04 तक A पुष्पदंत नाथ जयंती-तप
25	बु	5	14	13	12	49	ध	43	37	24	35	ह	41	55	23	54	बा	14	13	12	49	25	41	07	08	17	25	पौष 01	04	16	कुं. 12।58	07	29	36	35	03	10	46	22	24	पञ्चकारंभ 12।58 से, नाग पंचमी, मूले धनुषि रवि: B
26	गु	6	10	32	11	21	श	41	18	23	40	व	35	41	21	25	तै	10	32	11	22	25	41	07	09	17	25	02	05	17	कुम्भ	08	00	37	38	03	11	29	23	25	विशाखायां शुक्र: 7।17, पूर्व में शनि उदय 25।04
27	शु	7	06	20	09	41	पूभा	38	30	22	34	सि	29	04	18	47	व	06	20	09	41	25	40	07	09	17	25	03	06	18	मी. 16।51	08	01	38	41	04	12	11	24	00	भ. 9।41 से 20।47 तक, भक्त नरसिंह मेहता जयंती
28	श	8	01	39	07	49	उभा	35	14	21	16	व्य	22	03	15	59	ब	01	39	07	49	25	40	07	10	17	26	04	07	19	मीन	08	02	39	45	04	12	52	24	27	व्यतिपात 15।59 तक
00	श	9	56	31	29	46	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	नवमी तिथि क्षय: D श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
29	र	10	50	58	27	34	रे	31	33	19	48	व	14	41	13	03	तै	23	46	16	41	25	39	07	11	17	26	05	08	20	मे. 19।48	08	03	40	49	05	13	34	25	28	पञ्चक समाप्त 19।48
30	चं	11	45	08	25	14	अ	27	32	18	12	प शि	07 59	01 12	10 30	00 52	व	18	04	14	25	25	39	07	11	17	27	06	09	21	मेष	08	04	41	54	05	14	18	26	31	भ.14।25 से 25।14 तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (सबका), C
पौष 01	मं	12	39	14	22	53	भ	23	22	16	32	सि	51	20	27	44	ब	12	10	12	04	25	39	07	12	17	27	07	10	22	वृ. 22।07	08	05	42	59	05	15	04	27	35	भारतीय पौषारम्भ:, सायन मकरे रवि 10।18, उत्तरायनारंभ:
02	बु	13	33	30	20	36	कृ	19	17	14	55	सा	43	40	24	40	कौ	06	19	09	44	25	39	07	12	17	28	08	11	23	वृष	08	06	44	04	05	15	54	28	38	प्रदोष व्रत, अनंग 13, तुलायां भौम 21।57, करिदिनं, स्वामी D
03	गु	14	28	14	18	30	रो	15	36	13	27	शुभ	36	25	21	47	ग	00	47	07	31	25	39	07	13	17	28	09	12	24	मि. 24।49	08	07	45	09	06	16	47	29	40	भ. 18।30 से 29।33 तक, उषा. में बुध: 9।00, पिशाच E
04	शु	15	23	48	16	44	मृ	12	39	12	16	शु	29	53	19	10	ब	23	48	16	44	25	39	07	13	17	29	10	13	25	मिथुन	08	08	46	15	06	17	43	30	40	पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, दत्त जयंती, बतीसी 15, बड़ा दिन, F

B 14।42, मलमासारंभ, गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस, मेला बांके बिहारी जी वृंदावन C गीता जयंती, मल्लीनाथ जन्म-तप जैन, प्लूटो अस्त 27।18, मेला घालदास, रामधाम E मोचन श्राद्ध, कपर्दीश्वर यात्रा, अर्हनाथ जन्म-तपः, रोहिणी व्रत F त्रिपुरा जयंती, सत्यनारायण व्रत, पं. मदन मोहन मालवीय जयंती, इदे मिलाद

मार्गशीर्ष शु. 8 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 19 दिसंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
08	11	05	08	04	06	07	05	11	11	10	08
02	07	27	19	28	22	15	02	02	22	13	20
39	23	08	23	30	18	35	18	18	29	12	31
45	52	48	46	29	08	37	17	17	57	22	33
61	844	34	88	03	71	06	00	00	00	01	02
04	49	17	14	45	49	54	22	22	22	01	00
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
मू. 1	उ.भा. 2	चित्रा 2	पू.षा. 2	उ.फा. 1	विशा. 1	अनु. 4	उ.फा. 2	पू.भा. 4	रेव. 2	शत. 2	पू.षा. 3

10
8 श.
11 ने.
9
सू. प्लू. बु.
7 शु.
6 रा. मं.
12 ह. चं. के.
3
1
5 गु.
2
4

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शनिवार मूल नक्षत्र से आरंभ होकर पूर्णिमा मृगशिरा नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 12 से 25 दिसं. क्रिसमस डे के पर्व तक चलेगा। पक्ष में चन्द्रदर्शन शनिवार शुक्ल प्रतिपदा धन राशि में 30 मुहूर्ति हो रहा है। आभूषण-जेवरातों में तेजी का झटके चलेगा तथा सरकारी कार्यों में गति बढ़ेगी। यात्री वर्ग तीर्थाटनों का लाभ लेंगे। श+सू के कारण पक्ष में जनता को विश्वासघात योग बनायेगा। इस पक्ष में भुवन भास्कर धन राशि में मार्गशीर्ष पंचमी बुधवार को वारात् 3, नक्षत्रात् 3, वारनाम मंदाकिनी, नृपतीन सुखदा, नक्षत्र नाम महोदरी, चौरान सुखदा, अपराह्न 3 प्रहर व्यापिनी, वैश्यान हन्ति। दक्षिणे गमनं, नैऋत्य दृष्टि, कौलव करणे प्रविष्टा। मंहगाई का योग। सिंह वाहन, वृषभ उपवाहनम्। गतालकावस्था (ऊभी), मुहूर्ति 30, धान्य भाव सम। सभी वस्तुओं में तेजी। दक्षिणी देशों में सागर में जहाजों की स्थिति बिगड़ेगी। लंका में उपद्रव बढ़ेगा। गृह युद्ध का वातावरण। बदी बाढ़े सुदी घटे शुभवार संक्रांति। शासन तंत्र में परिवर्तन भवंति। मंगसिर पहले पाख में कोई तिथि बढ़ जाये। कहीं जगत में युद्ध का भारी बादल छाये॥ मंगसिर में शनि का उदय एवं बुधोदय योग। तृण, चारा, कमती मिले पशु बेचगो जोग। पक्ष में काफी राजकीय योजनाओं का लाभ होगा। व्यापार भविष्य–रुई, शेयर्स, चांदी, अफीम में पहले मंदी, फिर तेजी। गुड़ में घटाबढ़ी। गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, अलसी में तेजी। शनि के साथ रवि योग अचानक तेजी-मंदी बनेगी। रस पदार्थों में तेजी। चना, केसर, घी, तेल, सोना, लालमिर्च, सौंठ, अदरक, तिल में तेजी। आकाश लक्षण–पक्ष में शीत लहर चलेगी। हिमालयवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में आंधी तूफान के साथ ओलावृष्टि, वर्षा, हिमपात योग। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, उत्तरी राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, आसाम में तीव्र वेग के साथ बादल चाल और वर्षा की संभावना बनेगी। शकुन विचार–मंगसिर पूनम निर्मला अथवा ग्रहण मयंक। लाभ मिलै आगे करो संग्रह नाज निशंक। मंगसिर चौदस मावसा घटा रहे आकाश। उत्तम उपजेगी फसल, मंदी चौथे मास॥

मार्गशीर्ष शु. 15 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 25 दिसंबर

10
8 श.
11 ने.
बु.
7 मं. शु.
9 सू. प्लू.
6 रा.
12 के. ह.
3 चं.
1
गु. 5
2
4

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
08	02	06	08	04	06	07	05	11	11	10	08
08	02	00	27	28	29	16	01	01	22	13	20
46	43	33	47	49	30	16	39	39	28	19	43
15	56	16	29	49	33	38	31	31	38	03	39
61	837	33	77	02	72	06	12	12	00	01	02
06	45	52	43	41	19	45	38	38	03	13	02
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	अ
मू. 3	मृ. 3	चित्रा 3	उ.षा. 1	उ.फा. 1	विशा. 3	अनु. 4	उ.फा. 2	पू.भा. 4	रेव. 2	शत. 2	पू.षा. 3

पौष कृष्ण पक्षः-20

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 26 दिसं. सन् 2015 से 9 जन. सन् 2016 ई., रा. मिति 5 से 19 पौष तक। रविरुत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

सा.मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.
05	श	1	20	33	15	27	आ	10	47	11	32	ब्र	24	18	16	57	कौ	20	33	15	27
06	र	2	18	48	14	45	पुन	10	20	11	22	ऐं	19	55	15	12	ग	18	48	14	45
07	चं	3	18	49	14	46	पु	11	34	11	52	वै	16	55	14	00	वि	18	49	14	46
08	मं	4	20	42	15	31	आ	14	36	13	05	वि	15	20	13	23	बा	20	42	15	31
09	बु	5	24	26	17	01	म	19	25	15	01	प्री	15	10	13	19	तै	24	26	17	01
10	गु	6	29	44	19	09	पूफा	25	44	17	33	आ	16	12	13	44	व	29	43	19	09
11	शु	7	36	06	21	42	उफा	33	06	20	30	सौ	18	08	14	31	वि	02	48	08	23
12	श	8	42	53	24	25	ह	40	54	23	37	शो	20	30	15	28	बा	09	29	11	03
13	र	9	49	24	27	02	चि	48	27	26	39	अ	22	50	16	24	तै	16	13	13	45
14	चं	10	55	00	29	16	स्वा	55	09	29	20	सु	24	40	17	08	व	22	21	16	12
15	मं	11	59	11	30	57	वि	60	00	–	–	धृ	25	37	17	31	ब	27	17	18	11
16	बु	12	60	00	–	–	वि	00	30	07	29	शू	25	23	17	26	कौ	30	39	19	32
17	गु	12	01	42	07	57	अ	04	16	08	59	गं	23	52	16	49	तै	01	42	07	57
18	शु	13	02	29	08	16	ज्ये	06	23	09	50	वृ	21	02	15	41	व	02	29	08	16
19	श	14	01	40	07	57	मू	06	56	10	03	ध्रु	16	59	14	05	श	01	40	07	57
00	श	30	59	26	31	03	00	00	00	00	00	००	00	00	00	00	००	00	00	00	00

सा.मि.	दिनमान घ.	प.	स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा. घं. मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
05	25	40	07	13	17	29	11	14	26	क.29।21	08	09	47	21	01/07	18	40	07	35	मकरे बुधः 23।49
06	25	40	07	14	17	30	12	15	27	कर्क	08	10	48	28	06	19	37	08	25	भ. 26।41 से, A शनि 17।09
07	25	41	07	14	17	30	13	16	28	कर्क	08	11	49	34	08	20	34	09	11	भ. 14।46 तक, चतुर्थी व्रत, अनु. शुक्रः 9।31, ज्येष्ठायां A
08	25	41	07	15	17	31	14	17	29	सिं.13।05	08	12	50	42	07	21	28	09	53	पूषायां रविः 17।00, आचार्य तुलसी दीक्षा दिवस
09	25	42	07	15	17	32	15	18	30	सिंह	08	13	51	49	08	22	22	10	31	इदे मौलाद
10	25	43	07	15	17	32	16	19	31	क. 24।15	08	14	52	57	09	23	14	11	06	भ. 19।09 से, न्यू ईयर इवनिंग डे
11	25	44	07	15	17	33	17	20	01	कन्या	08	15	54	06	09	24	00	11	41	भ. 8।23 तक, जनवरी 2016 प्रारंभः
12	25	45	07	16	17	34	18	21	02	कन्या	08	16	55	15	09	24	05	12	15	C मास शिवरात्रि, ज्येष्ठायां शुक्र 8।53, वकी गुरु 19।01
13	25	46	07	16	17	34	19	22	03	तु. 13।10	08	17	56	24	09	24	56	12	49	D 3, केतु 11।45, मेला हतापन नाशन स्नान (चैन्नई)
14	25	47	07	16	17	35	20	23	04	तुला	08	18	57	33	10	25	47	13	25	भ. 16।12 से 29।16 तक, स्वात्यां भौम 28।34
15	25	49	07	16	17	36	21	24	05	वृ. 25।00	08	19	58	43	10	26	39	14	03	सफला एकादशी व्रत (सबका), वक्री बुधः 17।38, B
16	25	50	07	16	17	37	22	25	06	वृश्चिक	08	20	59	53	10	27	32	14	45	सुरूप द्वादशी
17	25	52	07	17	17	37	23	26	07	वृश्चिक	08	22	01	03	11	28	26	15	30	B श्री पार्श्वनाथ जन्म-तप
18	25	53	07	17	17	38	24	27	08	ध. 09।50	08	23	02	14	10	29	20	16	20	भ. 8।16 से 20।11 तक, बुधास्तः पश्चिमायां 25।52, C
19	25	55	07	17	17	39	25	28	09	धनु	08	24	03	24	10	30	14	17	14	देवपितृकार्येऽमा., कूहू 30, सिंहे राहु 11।45, कुंभे पू.भा. D
00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	अमावस्या तिथि क्षयः

❑ जापान, जर्मनी, टोकियों, अंटार्टिका क्षेत्रों में सागर का उफान जैसा अशोभनीय असह्य योग बनेगा।

शकुन विचार–पौषी मावस के दिना भौम सूर शनिवार। भय उपजे महंगे बिके ज्वार बाजरा ग्वार। पौष अमावस को पड़े, शनि रवि मंगलवार। धान्य भाव महंगा रहे, भय उपजावन हार।

पौष कृ. 8 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 2 जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
08	05	06	09	04	07	07	05	11	11	10	08
16	14	05	05	29	09	17	00	00	22	13	21
55	25	01	51	05	11	09	47	47	29	29	00
15	40	53	48	21	25	40	30	30	48	38	07
61	707	33	35	01	72	06	00	00	00	01	02
09	43	15	07	11	53	29	03	03	21	26	04
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	अ
पू.षा. 2	हस्त 2	चित्रा 4	उ.षा. 3	उ.फा. 1	अनु. 2	ज्ये. 1	उ.फा. 2	पू.भा. 4	रेवती 2	शत. 3	पू.षा. 3

10 बु. | 8 शु.श. | 11 ने. | 9 सू. प्लू. | 6 रा. चं. | 7 मं. | 12 के.ह. | 3 | 1 | 5 गु. | 2 | 4

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शनिवार आर्द्रा नक्षत्र (मकरे बुध मध्य रात्रि) से प्रारंभ होकर अमावस्या क्षय योग चतुर्दशी शनिवार मूल नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 26 दिसं. 2015 से 9 जन. 2016 तक रहेगा। इस पक्ष एवं मास का फलम्-माह में पांच शनिवार होने से मंहगाई बढ़ेगी। यथा **शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥** पांच शनिवार हों तब पाताल में शेष नाग कांपे। ईशान देश (पूर्वोत्तर भू-भाग) में सत्ता-पलट, अन्नों का भाव तेज और अग्नि भय हो। मंगल चौथ को रवि पूषा. में 17।00 घं.मि. प्रवेश से शीत बढ़ेगी। यत्र-तत्र वर्षा का योग बनेगा। ज्येष्ठा नक्षत्र में स्थित शनि-राजा, पुरोहितों, राजाओं से पूजित (रुचिवादि) सभी संकटदायक योग से गुजरेंगे। प्रधान कुल और जन संघियों को पीड़ित करेगा। अनुराधा में शुक्र होने से अल्प वृष्टि तथा चौपायों में पीड़ा दायक योग। कहीं-कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि योग बनेगा। प्रजा में अध्यात्म कार्य के प्रति रुझान बढ़ेगा। गुरुवारी संक्रांति पौष शुक्ल पंचमी दिना। मकर योग सुख सात्विकता के योग करे जना। धार्मिक स्थलों में, गुरुद्वारों, मस्जिदों की महल की तरह सुख योग "अनुराधा गतः सौरिज्येष्ठायां परिवर्ततें। पश्चिमे दारुणो घोर संहारः तत्र जायते॥" संकट दायक योग बनेंगे। व्यापार भविष्य–रुई, पाट, बारदाना, चावल, धनियां, चाय, कॉफी, कपड़ा, बिनौला, खल, खाद, चमड़ा, सीमेंट में तेजी दायक योग बनेगा। गेहूं, जौ, बाजरा, मक्का में घटबढ़ योग। कृषि की फसलों में मावठा से हानि। सब्जी बाजार फल, प्याज, लहसुन, राई, जीरा, गर्म मसाला आदि शक्कर, गुड़ तेज चलेंगे। आकाश लक्षण–प्रचंड पवन प्रचंड सूर प्रचंड शुक्र की गति। [illegible] भी तूफान। अमेरिका, पश्चिमी देशों में प्राकृतिक आपदा। ❑

पौष कृ. 14 शनि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 9 जनवरी

10 बु. | 8 शु.श. | 9 सू. चं. प्लू. | 11 ने. के. | 6 रा. | 7 मं. | 12 ह. | 3 | 1 | 5 गु. | 2 | 4

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
08	08	06	09	04	07	07	05	11	11	10	08
24	10	08	05	29	17	17	00	00	22	13	21
03	48	52	48	08	42	54	02	02	33	40	14
24	12	32	10	58	56	06	58	58	32	21	38
61	799	32	40	00	73	06	11	11	00	01	02
10	34	37	59	10	15	12	24	24	43	37	05
-	-	मा	व	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	अ
पू.षा. 4	मूल 4	स्वाती 1	उ.षा. 3	उ.फा. 1	ज्ये. 1	ज्ये. 1	उ.फा. 2	पू.भा. 4	रेवती 2	शत. 3	पू.षा. 3

…शीत लहर सर्वत्र चल हिमाच्छादित हिमालय की गति। पर्वतीय क्षेत्रों में आंधी तूफान। अमेरिका, पश्चिमी देशों में प्राकृतिक आपदा। ☐

पौष शुक्ल पक्षः-21

श्री सं. 2072 शाके 1937

रा. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ.	तिथि प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र न	नक्षत्र घ.	नक्षत्र प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग यो	योग घ.	योग प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण क	करण घ.	करण प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	दिनमान घं.	दिनमान मि.	सूर्य उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.
पौष 20	र	1	56	05	29	43	पूषा	06	08	09	44	व्या	11	54	12	03	किं	27	53	18	26	25	57	07	17	17	40	26	29	10	म.15।35	08	25	04	34	61/10	07	07	18	13
21	चं	2	51	54	28	02	उषा	04	17	09	00	ह/व	06/59	00/28	09/31	41/04	बा	24	04	16	55	25	59	07	17	17	40	27	30	11	मकर	08	26	05	44	09	07	57	19	13
22	मं	3	47	10	26	09	श्र/ध	01/58	40/33	07/30	57/42	सि	52	32	28	18	तै	19	35	15	07	26	01	07	17	17	41	28	01	12	कुं. 19।21	08	27	06	53	09	08	44	20	15
23	बु	4	42	08	24	08	श	55	10	29	21	व्य	45	22	25	26	व	14	41	13	09	26	03	07	17	17	42	29	02	13	कुम्भ	08	28	08	02	09	09	29	21	18
24	गु	5	36	58	22	04	पूभा	51	42	27	58	व	38	06	22	31	ब	09	33	11	06	26	05	07	17	17	43	माघ 01	03	14	मी. 22।19	08	29	09	11	08	10	11	22	20
25	शु	6	31	48	20	00	उभा	48	16	26	35	प	30	51	19	37	कौ	04	23	09	02	26	07	07	17	17	44	02	04	15	मीन	09	00	10	19	07	10	53	23	22
26	श	7	26	45	17	58	रे	44	57	25	16	शि	23	41	16	45	व	26	45	17	58	26	09	07	17	17	44	03	05	16	मे. 25।16	09	01	11	26	06	11	35	24	00
27	र	8	21	50	16	01	अ	41	49	24	00	सि	16	38	13	56	ब	21	50	16	01	26	12	07	16	17	45	04	06	17	मेष	09	02	12	32	06	12	17	24	24
28	चं	9	17	09	14	08	भ	38	55	22	50	सा	09	45	11	10	कौ	17	09	14	08	26	14	07	16	17	46	05	07	18	वृ.28।34	09	03	13	38	05	13	02	25	26
29	मं	10	12	46	12	22	कृ	36	20	21	48	शुभ/शु	03/56	06/44	05/29	31/58	ग	12	46	12	22	26	17	07	16	17	47	06	08	19	वृष	09	04	14	43	04	13	49	26	28
30	बु	11	08	46	10	46	रो	34	12	20	57	ब्र	50	47	27	35	वि	08	46	10	46	26	19	07	16	17	48	07	09	20	वृष	09	05	15	47	03	14	39	27	29
माघ 01	गु	12	05	18	09	23	मृ	32	40	20	20	ऐं	45	23	25	25	बा	05	18	09	23	26	22	07	16	17	48	08	10	21	मि. 08।36	09	06	16	50	03	15	33	28	29
02	शु	13	02	34	08	17	आ	31	57	20	02	वै	40	39	23	31	तै	02	34	08	17	26	25	07	15	17	49	09	11	22	मिथुन	09	07	17	53	01	16	28	29	24
03	श	14	00	47	07	34	पुन	32	16	20	10	वि	36	47	21	58	व	00	47	07	34	26	28	07	15	17	50	10	12	23	क. 14।05	09	08	18	54	01	17	24	30	16
04	र	15	00	09	07	19	पु	33	49	20	46	प्री	33	54	20	49	ब	00	09	07	19	26	31	07	15	17	51	11	13	24	कर्क	09	09	19	55	00	18	21	07	04

ता. 10 से 24 जनवरी सन् 2016 ई., रा. मिति 20 पौष से 4 माघ तक। रविरुत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

A मकर संक्रांति, माघी मेला (पंजाब), पोंगल पर्व (द.)
उषायां रवि 18।57, चन्द्रदर्शन मु. 30, लाल बहादुर शास्त्री ❖
पंचकारम्भ 19।21 से, रविलाखर मु. 4, यतीन्द्र सूरीश्वर ●
भ. 13।09 से 24।08 तक, व्यतिपात 25।26, लोहड़ी
मकरे रवि 14।27, धनुषि बुधः 15।09, नि. उत्तरायने, A
भारतीय थल सेना दिवस ❖ पुण्य दिवस ● जन्म-तप
भ. 17।58 से 28।59 तक, पंचक समाप्त 25।16, पूषायां बुधः B
शाकम्भरी यात्रा, भवानी पूजा
मूले धनुषि शुक्रः 30।23
भ. 23।33 से, C (सबका), सायन कुंभे रवि
भ. 10।46 तक, बुध पूर्व में उदय 7।11, पुत्रदा 11 व्रत C
प्रदोष व्रत, भारतीय माघ मासारम्भः, प्लूटोदय 14।38
D बोस जयंती, सत्यनारायण व्रत, शाकम्भरी जयंती
भ. 7।34 से 19।22 तक, चांद पुण्यं, नेताजी सुभाष चन्द्र D
श्रवणे रवि 21।16, पूर्णिमा पुण्य, माघ स्नानारंभ
B 28।40, गुरु गोविन्द सिंह जयंती, राजेन्द्र शूरी जन्म व पुण्य

☐ हिमालयवर्ती क्षेत्रों में बादल चाल के साथ रुक-रुककर वर्षा होने की संभावना रहेगी। कहीं-कहीं ओला वृष्टि योग। भूटान में अमानवीय कृत्य या प्राकृतिक आपदा से धन-जन हानि बनेगी।
शकुन विचार–पौष सुदी तेरस दिना, मंगल या शनिवार। वर्षा ना हो तो भरो, गेहूं के भंडार॥ पौष सुदी एकादशी जो कृतिका नक्षत्र। लाल वस्तुओं में रहे खूब लाभ सर्वत्र॥

पौष शु. 8 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 17 जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
09	00	06	08	04	07	07	04	10	11	10	08
02	02	13	26	29	27	18	29	29	22	13	21
12	29	10	37	01	30	42	28	28	40	54	31
32	24	10	24	27	09	06	40	40	53	04	09
61	845	31	73	01	73	05	00	00	01	01	02
06	04	46	56	43	33	47	11	11	07	48	03
-	-	मा	व	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	अ
उ.षा. 2	अश्वि. 1	स्वाति 2	पू.षा. 4	उ.फा. 1	ज्ये. 4	ज्ये. 1	उ.फा. 1	पू.भा. 3	रेवती 2	शत. 3	पू.षा. 3

12 ह. के. | 11 ने. | 10 सू. | 9 प्लू. बु. | 8 श. शु. | 7 मं. | 1 चं. | 4 | 2 | 6 रा. | 3 | 5 गु.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा रविवार पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र से प्रारंभ होकर पूर्णिमा रविवार पुष्य नक्षत्र तक, तद्नुसार दि. 10 से 24 जन. 2016 तक रहेगा। इस पक्ष में सोमवार को 30 मुहूर्ति, द्वितीया को चंद्रदर्शन शुभदायक एवं उत्तराषाढ़ा में सूर्य का प्रवेश द्वितीय-तृतीय प्रहर संधि काल 18।30 घं.मि. पर प्रवेश से नये कार्य के प्रति मंत्रिमंडल की मंजूरी का योग बनेगा। इसी पक्ष में भुवन भास्कर मकर राशि में पौष सुदी पंचमी गुरुवार दिनांक 14 जन. 2016 पर वारात् 2, नक्षत्रात् 3, वारनाम नंदा, गणकान सुखदा, नक्षत्र नाम घोरा, शूद्रान सुखदा, अपर रात्रि तृतीय प्रहर व्यापिनी, नरान हन्ति, पूर्व गमन, आग्नेय दृष्टिः, कौलव करणे प्रविष्टा। महंगाई का योग ज्यादा। सिंह वाहन, उपवाहन वृषभ (नंदी), कष्टकारक योग युक्त, नील वस्त्र, खड्गा युद्धं, ताम्र पात्रम्, मिष्ठान भक्षणम्, रक्तचंदन लेपनम्, सर्पजाति, वकुल पुष्पं, मोती भूषणम्। गतालकावस्था (ऊपी) मु. 30, धन-धान्ये भाव सम। दानात् योग। शुक्रवार ता. 15.01.2016 शुभदायक, ग्रह योग से विश्व में सिंहस्थ गुरु के प्रभाव से धार्मिक कृत्यों का प्रभाव बढ़ेगा। मुस्लिम देशों की हज यात्रा में कुछ उपद्रव बढ़ेगा। जिससे जन हानि का योग तथा अभाव अभियोग न्यायालय प्रकरण संबंधी दस्तावेज बनकर विवाद बढ़ सकते हैं। आस्ट्रेलिया, हिंद चीन में क्रांति योग, रोग बाधा पीड़ा भी बनेगी। व्यापार भविष्य–पौष में बुध का उदय होने से कहीं भी प्राकृतिक आपदा योग बनने से सभी वस्तुएं तेजी में चलेंगी। गुरुवार की संक्रांति मकरेऽर्क से पीत वर्ण वाली वस्तुओं में उठा-पटक योग बनेगा। अन्नोत्पादन अच्छा होते हुए भी सरकारी नियंत्रण से भावों में गति बढ़ेगी। तिलहन, दलहन एवं अन्य पैट्रोलियम पदार्थों से जनता में क्रांति एवं आंदोलन करने जैसी स्थिति बन जाएगी। **आकाश लक्षण**–इस पक्ष में वर्षा एवं अवर्षा दोनों योग बनते हैं। शीत लहर का प्रकोप बना रहेगा।☐

पौष शु. 15 रवि, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 24 जनवरी

12 के. ह | 11 ने. | 10 सू. | 9 प्लू. बु. शु. | 8 श. | 7 मं. | 1 | 4 | 2 | 6 रा. | 3 | 5 चं. गु.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
09	03	06	08	04	08	07	04	10	11	10	08
09	08	16	21	28	06	19	28	28	22	14	21
19	25	49	05	44	05	21	46	46	49	07	45
55	37	40	09	53	42	12	20	21	56	13	19
61	781	30	15	03	73	05	08	08	01	01	02
00	17	56	48	01	45	22	22	22	28	57	00
-	-	मा	व	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
उ.षा. 4	पुष्य 2	स्वाति 4	पू.षा. 3	उ.फा. 1	मूल 2	ज्ये. 1	उ.फा. 1	पू.भा. 3	रेवती 2	शत. 3	पू.षा. 3

माघ कृष्ण पक्षः -22

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
05	चं	1	00	53	07	36	आ	36	46	21	57	आ	32	09	20	06	कौ	00	53	07	36	26	34	07	14	17	52	12	14	25	सिं. 21।57	09	10	20	55	61/00	19	16	07	47
06	मं	2	03	07	08	29	म	41	09	23	42	सौ	31	32	19	51	ग	03	07	08	29	26	37	07	14	17	53	13	15	26	सिंह	09	11	21	55	60/58	20	11	08	27
07	बु	3	06	51	09	58	पूफा	46	56	26	00	शो	32	03	20	03	वि	06	51	09	58	26	40	07	14	17	53	14	16	27	सिंह	09	12	22	53	58	21	03	09	04
08	गु	4	11	57	12	00	उफा	53	51	28	45	अ	33	30	20	37	बा	11	57	12	00	26	43	07	13	17	54	15	17	28	कं. 08।39	09	13	23	51	58	21	55	09	39
09	शु	5	18	06	14	27	ह	60	00	–	–	सु	35	37	21	27	तै	18	06	14	27	26	46	07	13	17	55	16	18	29	कन्या	09	14	24	49	56	22	46	10	13
10	श	6	24	49	17	08	ह	01	29	07	48	धृ	38	02	22	25	व	24	49	17	08	26	49	07	12	17	56	17	19	30	तु. 21।21	09	15	25	45	56	23	37	10	47
11	र	7	31	27	19	47	चि	09	15	10	54	शू	40	18	23	19	ब	31	27	19	47	26	53	07	12	17	57	18	20	31	तुला	09	16	26	41	55	24	00	11	22
12	चं	8	37	23	22	08	स्वा	16	34	13	49	गं	42	00	23	59	बा	04	33	09	01	26	56	07	11	17	58	19	21	Feb 01	तुला	09	17	27	36	55	24	28	11	59
13	मं	9	42	01	23	59	वि	22	48	16	18	वृ	42	43	24	16	तै	09	54	11	08	26	59	07	11	17	58	20	22	02	वृ. 09।44	09	18	28	31	54	25	20	12	38
14	बु	10	44	58	25	09	अ	27	32	18	11	ध्रु	42	08	24	01	व	13	44	12	40	27	03	07	10	17	59	21	23	03	वृश्चिक	09	19	29	25	53	26	13	13	21
15	गु	11	45	59	25	33	ज्ये	30	28	19	21	व्या	40	07	23	12	ब	15	44	13	27	27	06	07	10	18	00	22	24	04	ध. 19।21	09	20	30	18	52	27	07	14	08
16	शु	12	45	05	25	11	मू	31	31	19	46	ह	36	36	21	47	कौ	15	47	13	28	27	10	07	09	18	01	23	25	05	धनु	09	21	31	10	51	28	01	15	00
17	श	13	42	23	24	05	पूषा	30	48	19	27	व	31	39	19	48	ग	13	57	12	43	27	13	07	08	18	02	24	26	06	म. 25।17	09	22	32	01	50	28	54	15	57
18	र	14	38	09	22	23	उषा	28	30	18	32	सि	25	27	17	18	वि	10	27	11	18	27	17	07	08	18	02	25	27	07	मकर	09	23	32	51	49	29	45	16	57
19	चं	30	32	42	20	12	श्र	24	57	17	06	व्य	18	13	14	24	च	05	34	09	21	27	21	07	07	18	03	26	28	08	कुं. 28।14	09	24	33	40	48	30	35	18	00

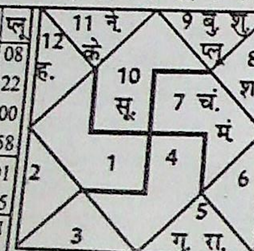
ता. 25 जन. से 8 फर. सन् 2016 ई., रा. मिति 5 से 19 माघ तक। रविरुत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

मार्गी बुधः 26।26 — A गौरी 4 व्रत
भ. 21।09 से, भारतीय गणतंत्र दिवस 67वां
भ. 09।58 तक, तिलकुट्टा 4 व्रत, सौभाग्य सुंदरी व्रत, A
B व्रत, गुरु हरराय जी प्रकाश दिवस
पूषायां शुक्र 29।40 — C रटन्ती काली पूजन
भ. 17।08 से 30।29 तक, विशाखायां भौमः 11।10
स्वामी विवेकानन्द जयंती, रामानन्दाचार्य जयंती, सर्वाप्ति 7 B
फरवरी मासारम्भः, कालाष्टमी
D शिवरात्रि, मेरू 13, आदिनाथ निर्वाण (जैन)
भ. 12।40 से 25।10 तक
षट्तिला एकादशी व्रत (सबका) ■ श्री ऋषभदेव मोक्ष
तिल द्वादशी, उषा. बुध 20।29, सीतल नाथ जन्म-तप, C
भ. 24।05 से, धनिष्ठायां रवि 24।26, प्रदोष व्रत, मास D
भ. 11।18 तक, अर्धोदय योग 22।23 से सूर्योदय तक, ■
पंचक 28।14 से, मकरे बुधः 27।09, सोमवती 30, व्यतिपात E
E 14:24 तक, मेला हरिद्वार, द्वापर युगादि, देवपितृकार्येऽमा.

माघ कृ. 8 चंद्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 1 फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
09	06	06	08	04	08	07	04	10	11	10	08
17	15	20	22	28	15	20	28	28	23	14	22
27	51	52	57	15	56	02	30	30	03	23	00
36	53	51	28	04	34	08	26	26	06	19	58
60	715	29	38	04	73	04	00	00	01	02	01
55	17	49	47	26	57	50	31	31	50	05	55
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
श्रवण 3	स्वाती 3	विशा. 1	पू.षा. 3	उ.फा. 1	पू.षा. 1	ज्ये. 2	उ.फा. 1	पू.भा. 3	रेवती 2	शत. 3	पू.षा. 3



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा चन्द्रवार, आश्लेषा नक्षत्र से प्रारंभ होकर सोमवती अमावस्या श्रवण नक्षत्र तक एवं श्रवणे रवि रात्रि 08।45 (20।45) घं.मि. से तद्नुसार दिनांक 25 जन. से 8 फर. 2016 तक रहेगा। इस पक्ष, मास में ग्रह योग गणना से पांच सोमवार के होने से यथा-**सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्ये समृद्धिः स्यात्सुखं भवति सर्वदा॥** पांच सोमवार होने से धन-धान्य का सुख प्राप्त हो। सोमवारी अमावस्या होने से सुर्भिक्ष, क्षेम, आरोग्य, वर्षा का प्रबल उदय, धान्य की उत्पत्ति और प्रजा सुख हो। अमावस्या श्रवण नक्षत्र युक्त होने से कष्टकारी योग। दुर्भिक्ष दायक योग भी। माघ शुक्ला प्रतिपदा को मंगलवार होने से भयभीत स्थिति का वातावरण राजतंत्र में बनने की स्थिति होगी। धान्य भावों में तेजी। शुक्र+बुध की धनु में युक्ति होना व्यापारिक सौदों में भ्रष्टाचार। गलत निविदाएं प्रस्तुति एवं कार्यशैली में अभद्रता की छाप बनी रहेगी। शीत लहर से उत्तरी भारत एवं पूर्वोत्तर देशों में कोहरा का भय। वायुयान, हेलीकोप्टर की टक्कर या दुर्घटना जन्य योग बनेगा। व्यापार भविष्य—खाण्ड, रस पदार्थ, गुड़, मूंग, मोठ, गेहूं, उड़द, राई, चावल, ज्वार, अरहर, मटर* आदि व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी। सोना, चांदी, तांबा में घटबढ़ योग। औषधि बाजार अनियंत्रित कारक तेजी में चलेगा। लोहा, कांसा, पीतल, तांबा, रांगा, अष्टधातु पदार्थ तेज चलेंगे। **आकाश लक्षण**—दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, आसाम, उत्तरी राजस्थान में शीत लहर का प्रकोप छायेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात योग बनेगा। **शकुन विचार**—माघ मास प्रतिपदा बदी निर्मल नभ और आकाश। वस्तु सुगंधित तेल [illegible]

माघ कृ. 30 चंद्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 8 फरवरी



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
09	09	06	08	04	08	07	04	10	11	10	08
24	16	24	29	27	24	20	27	27	23	14	22
33	27	17	02	40	34	34	57	57	16	38	14
40	00	42	08	10	43	15	41	41	57	11	02
60	851	28	63	05	74	04	04	04	02	02	01
48	31	39	09	32	05	19	35	35	08	10	49
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	-	-
धनि. 1	श्रवण 2	विशा. 2	उ.षा. 1	उ.फा. 1	पू.षा. 4	ज्ये. 2	उ.फा. 1	पू.भा. 3	रेवती 2	शत. 3	पू.षा. 3

माघ शुक्ल पक्षः -23

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 9 से 22 फरवरी सन् 2016 ई., रा. मिति 20 माघ से 3 फाल्गुन तक। रविरुत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर-वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिनमान घं.	मि.	सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
20	मं	1	26	23	17	39	ध	20	30	15	18	व	10	13	11	12	ब	26	23	17	39	27	25	07	06	18	04	27	29	09	कुम्भ	09	25	34	28	60/46	07	22	19	04	चन्द्रदर्शन मु. 15, उषायां शुक्रः 22।05 **A** दानम्, ढूंढी पूजा
21	बु	2	19	33	14	55	श	15	30	13	18	व / सि	01 / 52	43 / 58	07 / 28	47 / 17	कौ	19	33	14	55	27	28	07	06	18	05	28	30	10	मी. 29।44	09	26	35	14	45	08	07	20	08	जमादिलावल मु. 5 **B** पंचमी, सरस्वती पूजा
22	गु	3	12	33	12	06	पूभा	10	18	11	12	सि	44	15	24	47	ग	12	33	12	06	27	32	07	05	18	06	29	फा / 01	11	मीन	09	27	35	59	45	08	50	21	12	भ. 22।43 से, वरद चतुर्थी, तिल चौथ, कुंद 4, गुड़-लवण **A**
23	शु	4	05	39	09	20	उभा	05	13	09	09	सा	35	46	21	22	वि	15	39	09	20	27	36	07	04	18	06	30	02	12	मीन	09	28	36	43	42	09	33	22	16	भ. 09।20 तक, बसंत पंचमी, मकरे शुक्र 14।51, श्री **B**
00	शु	5	59	07	30	43	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	००	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	पंचमी तिथि क्षयः **C** हरण षष्ठी **D** विजय सप्तमी, सूर्य 7
24	श	6	53	11	28	20	रे / अ	00 / 56	30 / 20	07 / 29	15 / 35	शुभ	27	41	18	08	कौ	26	05	17	29	27	40	07	03	18	07	फा / 01	03	13	मे. 07।15	09	29	37	25	40	10	16	23	19	पञ्चक समाप्तः 7।15, कुम्भे रविः 14।26, मंदार 6, दारिद्र **C**
25	र	7	48	00	26	14	भ	52	56	28	13	शु	20	09	15	06	ग	20	30	15	15	27	44	07	02	18	08	02	04	14	मेष	10	00	38	05	39	11	01	24	00	भ. 26।14 से, मन्वादि, पुत्र सप्तमी, रथ 7, अचला 7, **D**
26	चं	8	43	40	24	30	कृ	50	24	27	11	ब्र	13	16	12	20	वि	15	44	13	19	27	48	07	02	18	09	03	05	15	वृ. 09।56	10	01	38	44	37	11	47	24	22	भ. 13।19 तक, ज्वालामुखी, भीष्माष्टमी
27	मं	9	40	16	23	07	रो	48	49	26	32	ऐं	07	06	09	51	बा	11	52	11	46	27	52	07	01	18	09	04	06	16	वृष	10	02	39	21	35	12	37	25	23	ज्वालामुखी 23।07 तक **F** भौमः 16।53, गुरु हरराय जयंती
28	बु	10	37	53	22	09	मृ	48	12	26	17	वै / वि	01 / 57	43 / 06	07 / 29	41 / 50	तै	08	58	10	35	27	55	07	00	18	10	05	07	17	मि. 14।21	10	03	39	56	33	13	28	26	23	श्रवणे बुध 8।10, पूषा 4, गुरु 25।06 **E** मेला वेणेश्वर
29	गु	11	36	33	21	36	आ	48	38	26	26	प्री	53	21	28	19	व	07	06	09	50	27	59	06	59	18	11	06	08	18	मिथुन	10	04	40	29	32	14	22	27	19	भ. 09।50 से 21।36 तक, जया एकादशी व्रत (सबका)
30	शु	12	36	18	21	29	पुन	50	07	27	01	आ	50	27	27	09	ब	06	18	09	29	28	04	06	58	18	12	07	09	19	क. 20।50	10	05	41	01	30	15	17	28	11	शते रवि 28।54, सायन मीने भानु 11।03, भीष्म द्वादशी, **E**
फा / 01	श	13	37	10	21	49	पु	52	42	28	02	सौ	48	27	26	20	कौ	06	37	09	36	28	08	06	57	18	12	08	10	20	कर्क	10	06	41	31	28	16	13	28	59	शनि प्रदोष व्रत, कल्पादि, श्रवण शुक्रः 16।04, वृश्चि. **F**
02	र	14	39	11	22	37	आ	56	24	29	30	शो	47	19	25	52	ग	08	03	10	10	28	12	06	56	18	13	09	11	21	सिं. 29।30	10	07	41	59	27	17	08	29	44	भ. 22।37 से, श्री जिनेन्द्र रथयात्रा, रामचरणस्नेही जयंती
03	चं	15	42	23	23	52	म	60	00	-	-	अ	47	05	25	45	वि	10	39	11	11	28	16	06	55	18	14	10	12	22	सिंह	10	08	42	26	25	18	02	30	24	भ. 10।39 तक, माघी पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, सत्यव्रत, **G**

G माघस्नान पूर्ण, श्री विद्या मां ललिता जयंती, रविदास जयंती, दशाश्वमेध पूर्ण

❑ हो तो भादव वर्षे भली प्रकार॥ माघी साते सुदी में बादल मेघ गर्जन्त। तो आषाढ़ में भड्डरी घणो मेघ करन्त॥"

माघ शु. 8 चंद्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 15 फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	00	06	09	04	09	07	04	10	11	10	08
01	27	27	07	26	03	21	27	27	23	14	22
38	24	33	14	58	13	02	55	55	32	53	26
44	59	41	56	07	29	32	35	35	47	34	20
60	840	27	76	06	74	03	00	00	02	02	01
38	54	18	43	27	08	45	26	26	24	14	42
-	-	मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	अ	-
3	1	3	4	1	2	2	1	3	3	3	3

1 चं. | 2 | 3 | 4 | 5 गु. रा. | 6 | 7 मं. | 8 श. | 9 प्लू. | 10 बु. शु. | 11 सू. ने. | 12 के. ह.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा भौमवार, धनिष्ठा नक्षत्र, चन्द्रदर्शन कुंभ, चन्द्र मुहूर्ति 15, श्री वल्लभ जयंति से प्रारंभ होकर पूर्णिमा सोमवार मघा वृद्धि योग अहोरात्रि तक तद्नुसार दिनांक 9 से 22 फर. 2016 तक रहेगा। चन्द्रदर्शन 15 मुहूर्ति सभी वस्तुओं में तेजी कारक योग करेगा। स्त्री वर्ग संबंधी शृंगार सामग्री एवं मशीनरी पार्ट्स में तेजी का घटक बनेगा। इस पक्ष में भुवन भास्कर सूर्य देव कुंभ राशि में माघ शुक्ला षष्ठी शनिवार वारात् 3, नक्षत्रात् 4, वारनाम राक्षसी, चांडालान् सुखदा, नक्षत्र नाम ध्वांक्षी, वैश्यान सुखदा, मध्याह्न द्वितीय प्रहर व्यापिनी, द्विजान हन्ति, पश्चिमे गमनम्। वायव्यां दृष्टि, कौलव करणे प्रविष्टा मंहगाई कारक, सिंह वाहन, वृषभ उपवाहन कष्टदायी। राजतंत्र एवं प्रशासन में क्रांतिदायी योग। नील वस्त्रम्, खड्गा युद्धं, ताम्र पात्रं, मिष्ठान्न भक्षणम्, रक्त चन्दन लेपनम्, सर्प जाति, वकुल पुष्पं, मोती भूषणम्, हरित कचुंकी, गतालकाश्चावस्था (ऊभी) 30, धन-धान्ये भाव सम॥

माघ शु. 15 चंद्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 22 फरवरी

1 | 2 | 3 | 4 | 5 गु. चं. रा. | 6 | 7 | 8 श. मं. | 9 प्लू. | 10 बु. शु. | 11 सू. ने. | 12 के. ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	03	07	09	04	09	07	04	10	11	10	08
08	29	00	16	26	11	21	27	27	23	15	22
42	59	39	44	10	52	26	38	38	50	09	37
26	58	35	51	22	35	43	44	44	25	19	44
60	746	25	85	07	74	03	02	02	02	02	01
26	47	46	49	09	11	09	24	24	38	16	33
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	-	अ	-
1	4	4	3	4	1	2	1	3	3	3	3

सर्वत्र चिंता योग कारक। माघ शुक्ला सप्तमी रविवार भरणी योग विस्तार। दुर्भिक्ष कर खंडन करें भरणी नक्षत्र विचार॥ पूर्णिमा मघा युक्ता अहोरात्र का ध्यान। धन धान्य उत्तम बने खुशी जन जन जान॥ शनिवारी संक्रांति अशुभ कष्टदायी रोग कारक तथा वस्तुओं की पैदायश में कमी (क्षय) कारक होगी। व्यापार भविष्य-पक्ष में वायदा व्यापार मंदा। हाजिर बाजार में लाभ। पेट्रौल, डीजल मंहगा होगा। तेल, तिल, कोयला, लोहा, बांस, घास, गेहूं, चना, मक्का, मिर्च, जीरा, नमक बाजार तेज चलेगा। सोना, चांदी, तांबा, धातु बाजार गड़बड़ (उतार-चढ़ाव) में चलेगा। आकाश लक्षण-बुध शुक्र-सूर्य से पीछे होना अशोभनीय घटनाओं अपहरण, गंदी वस्तुएं खिलाकर जान खतरे में डालना। छुपना-छिपाना शीत लहर की आड़ में लुच्चे लोग लूटेंगे। शकुन विचार-"माघ सुदी नौमी दिना चौथे प्रहर निहार। बादल ❑

फाल्गुन कृष्ण पक्षः-24

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 23 फरवरी से 9 मार्च सन् 2016 ई., रा. मिति 4 से 19 फाल्गुन तक। रविरुत्तरायणे, दक्षिण गोले, वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति.	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न.	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो.	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिन मान घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	संदर्भ
फा. 04	मं	1	46	41	25	35	म	01	15	07	25	सु	47	42	25	59	बा	14	25	12	40	28	20	06	55	18	14	11	13	23	सिंह	10	09	42	51	60/23	18	55	07	02	
05	बु	2	52	01	27	42	पूफा	07	08	09	45	धृ	49	04	26	31	तै	19	15	14	36	28	24	06	54	18	15	12	14	24	कं. 16।23	10	10	43	14	22	19	47	07	38	A सरस्वती जयंती
06	गु	3	58	08	30	08	उफा	13	55	12	26	शू	51	04	27	18	व	25	01	16	53	28	28	06	53	18	16	13	15	25	कन्या	10	11	43	36	20	20	39	08	12	भ. 16।53 से 30।00 तक, मेला बाबा अम्बर सिंह (पंजाब)
07	शु	4	60	00	-	-	ह	21	22	15	24	गं	53	26	28	14	ब	31	26	19	26	28	32	06	52	18	17	14	16	26	तु. 28।57	10	12	43	56	19	21	30	08	47	धनिष्ठायां बुध 26।58, चतुर्थी व्रत, पद्मप्रभु मोक्ष
08	श	4	04	47	08	45	चि	29	08	18	30	वृ	55	54	29	12	बा	04	47	08	45	28	36	06	51	18	17	15	17	27	तुला	10	13	44	15	17	22	20	09	21	C शुक्र 21।08, महाशिवरात्रि व्रत, बुधास्त पूर्वे 13।52
09	र	5	11	25	11	24	स्वा	36	47	21	32	ध्रु	58	07	30	04	तै	11	25	11	24	28	41	06	50	18	18	16	18	28	तुला	10	14	44	32	15	23	12	09	57	अनुराधायां भौमः 15।38
10	चं	6	17	36	13	51	वि	43	48	24	20	व्या	59	43	30	42	व	17	36	13	51	28	45	06	49	18	19	17	19	29	वृ. 17।40	10	15	44	47	14	24	00	10	35	भ. 13।51 से 26।56 तक
11	मं	7	22	47	15	54	अ	49	41	26	40	ह	60	00	-	-	ब	22	47	15	54	28	49	06	48	18	20	18	20	Mar 01	वृश्चिक	10	16	45	01	13	24	03	11	15	मार्च मासारम्भः, कुंभे बुध 24।14
12	बु	8	26	30	17	23	ज्ये	54	01	28	23	ह व	00 59	23 42	06 30	56 39	कौ	26	30	17	23	28	55	06	46	18	20	19	21	02	ध. 28।23	10	17	45	14	11	24	56	12	00	धनिष्ठायां शुक्रः 11।49, जानकी व्रत
13	गु	9	28	26	18	08	मू	56	31	29	22	सि	57	35	29	47	ग	28	26	18	08	28	59	06	45	18	21	20	22	03	धनु	10	18	45	25	10	25	48	12	48	भ. 30।12 से, समर्थ गुरु रामदास जयंती
14	शु	10	28	22	18	05	पूषा	57	05	29	34	व्य	53	54	28	18	वि	28	22	18	05	29	03	06	44	18	22	21	23	04	धनु	10	19	45	35	08	26	40	13	41	भ. 18।05 तक, उभायां रविः 11।15, महर्षि दयानन्द A
15	श	11	26	18	17	14	उषा	55	43	29	01	व	48	40	26	11	बा	26	18	17	14	29	08	06	43	18	22	22	24	05	म. 11।30	10	20	45	43	06	27	32	14	38	विजया एकादशी व्रत (सबका), शते बुधः 26।46, B
16	र	12	22	21	15	39	श्र	52	38	27	45	प	42	01	23	31	तै	22	21	15	39	29	12	06	42	18	23	23	25	06	मकर	10	21	45	49	05	28	22	15	39	प्रदोष व्रत — B श्रेयान्स नाथ जन्म-तप
17	चं	13	16	46	13	24	ध	48	05	25	55	शि	34	08	20	20	व	16	46	13	24	29	16	06	41	18	24	24	26	07	कुं. 14।54	10	22	45	54	03	29	10	16	43	भ. 13।24 से 24।04 तक, पंचकारम्भ 14।54 से, कुंभे C
18	मं	14	09	52	10	37	श	42	26	23	38	सि	25	16	16	47	श	09	52	10	37	29	20	06	40	18	24	25	27	08	कुम्भ	10	23	45	57	01	29	56	17	48	पितृकार्येऽमा., वासुपूज्य जन्म-तप
19	बु	30	02	01	07	27	पूभा	36	04	21	04	सा	15	43	12	46	ना	02	01	07	27	29	25	06	39	18	25	26	28	09	मी. 15।44	10	24	45	58	59/59	30	41	18	53	देवकार्येऽमा., फाल्गुनी अमावस्या

❑ दुर्घटनाओं से जनता दुखी होगी। लोकसभा में अशोभनीय कृत्यों का योग। मामला उजागर। शकुन विचार–गुरु ग्रह वक्री चले मंगल शनि की संगति वृश्चिक राशि माय। आगे चार मास में धातु, सोना, तांबा में तेजी जोर मचाय। फाल्गुन में बादल रहे किंतु न बरसे नीर। तो फिर वर्षा काल में वर्षा हो गंभीर।।

फाल्गुन कृ. 8 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 2 मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	07	07	10	04	09	07	04	10	11	10	08
17	18	04	00	25	23	21	27	27	24	15	22
45	07	21	20	03	00	51	40	40	15	29	50
14	10	17	57	09	26	21	20	20	25	47	52
60	739	23	95	07	74	02	00	00	02	02	01
12	49	23	31	43	14	19	31	31	54	17	21
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	-	अ	-
शत. 4	ज्ये. 1	अनु. 1	धनि. 3	पू.फा. 4	श्रव. 4	ज्ये. 2	उ.फा. 1	पू.भा. 3	रेव. 3	शत. 3	पू.षा. 3

1, 12 ह., 11, 10 शु., 9 प्लू., सू.बु. के.ने., 8 श. मं. चं., 2, 5 गु. रा., 3, 7, 4, 6

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा भौमवार मघा नक्षत्र से प्रारंभ होकर अमावस्या बुधवारी पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र तक तदनुसार दिनांक 23 फर. से 9 मार्च 2016 तक रहेगा। चतुर्थी वृद्धि तिथि सुभिक्ष कारक रहेगी। युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। पक्ष में महाशिवरात्रि, त्रयोदशी सोमवार की होना सामाजिक उत्थान बावत् आध्यात्मिक सस्थाएं काम करेंगी। माह में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार होने से-**यत्र मासे महीसूनोर्जायंते पंच वासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत।।** पांच मंगलवार होने से पृथ्वी पर रक्तपात (खून-खराबा) का योग तथा छत्र भंग योग बनेगा। लेकिन पांच बुधवार होने से-बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरं। **प्रजानां सुखमत्यंतं सुभिक्ष च प्रजायते।।"** पांच बुधवार होने से जनता को सुख और सुभिक्ष योग बनेगा। राहु कन्या राशि में होने से-**यदा कन्या स्थितो राहुर्धात्रीफलं च पिप्पली। मासमेकं द्वयं चैव महर्घ त्रिगुण भवेत्।।** कन्या राशि पर राहु होने से आंवला और पिप्पली में एक महीने तथा दो महीनों तक तिगुनी तेजी योग। पूर्व तथा दक्षिण देशों में पीड़ा। पश्चिम देशों में युद्धादि का भय और उत्तर दिशा में सुभिक्ष दायक योग रहेगा। श्रीलंका, आस्ट्रेलिया, मलेशिया, ब्राजील, कोरिया, अफगास्तिान द्वीप में प्राकृतिक आपदा का योग। **व्यापार भविष्य**–सोना, चांदी, अनाज, रुई, अलसी, तिलहन में तेजी। बिनौला खल, गर्म मसालों में मंदी का योग। घास, तृण, गेहूं, चना, जौ, गल्ला, खांड, शक्कर, गुड़, मिश्री, बादाम, किशमिश सभी के भाव घट-बढ़ में रहेंगे। मोटर यान, मशीनें, ट्रेक्टर, कारें तथा मोटर साईकिलों के भावों में मंदी का योग। **आकाश लक्षण**– वायु वेग के साथ बादल चाल। दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखंड में [illegible] का ख्याति प्राप्त नेता का हनन या देहावसान। रेलयान ❑

फाल्गुन कृ. 30 बुध, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 9 मार्च

1, 12 ह., 11 सू.चं., 10, 9 प्लू., बु.शु. के.ने., 8 मं. श., 2, 5 गु. रा., 3, 7, 4, 6

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	10	07	10	04	10	07	04	10	11	10	08
24	23	06	11	24	01	22	27	27	24	15	22
45	37	57	55	08	40	05	35	35	36	45	59
58	58	28	31	33	08	13	05	05	23	40	44
60	894	21	103	07	74	01	00	00	03	02	01
00	26	08	07	50	14	38	08	08	05	15	10
-	-	मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	-	अ	-
पू.भा. 2	पू.भा. 2	अनु. 2	शत. 2	पू.फा. 4	धनि. 3	ज्ये. 2	उ.फा. 1	पू.भा. 3	रेव. 3	शत. 3	पू.षा. 3

हिमालय के क्षेत्रों में ओलावृष्टि। विश्व का ख्याति प्राप्त नेता का हनन या देहावसान। रेलयान ❑

फाल्गुन शुक्ल पक्षः-25

श्री सं. 2072 शाके 1937 | दिन मान | स्टैं. टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र राशि प्रवेश | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. 10 से 23 मार्च सन् 2016 ई., रा. मिति 20 फाल्गुन से 3 चैत्र तक, रवि उत्तरायने, दक्षिण-उत्तर गोले, वसंत ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि			स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिन मान		उदय		अस्त		दिनांक			चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टै.टा.	रवि स्पष्ट 5घं. 30मि.					उदय		अस्त		निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
		ति	घ.	प.	घं.	मि.	न	घ.	प.	घं.	मि.	यो	घ.	प.	घं.	मि.	क	घ.	प.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	प्र.	मु.	अं.	रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि.	
00	बु	1	53	33	28	04	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	प्रतिपदा तिथि क्षयः
फा. 20	गु	2	44	58	24	37	उभा	29	24	18	23	शुभ/शु	05/55	47/45	08/28	57/56	बा	19	17	14	20	29	29	06	38	18	25	27	29	10	मीन	10	25	45	57	59/58	07	25	20	00	चन्द्रदर्शन मु. 30, फुलरिया दूज, रामकृष्ण परमहंस जयंती
21	शु	3	36	35	21	15	रे	22	49	15	44	ब्र	46	00	25	01	तै	10	45	10	54	29	33	06	37	18	26	28	ज.उ. 01	11	मे.15:44	10	26	45	55	55	08	10	21	06	पञ्चक समाप्तः 15:44, जमादि लाखर मु. 6, पं. लेखराम 3
22	श	4	28	46	18	06	अ	16	44	13	17	ऐं	36	46	21	18	व	02	36	07	38	29	38	06	36	18	27	29	02	12	मेष	10	27	45	50	53	08	55	22	11	भ. 7:38 से 18:06 तक, शते शुक्रः 30:27, गणेश चतुर्थी
23	र	5	21	52	15	19	भ	11	28	11	10	वै	28	19	17	54	बा	21	52	15	19	29	42	06	34	18	27	30	03	13	वृ. 16:42	10	28	45	43	50	09	43	23	15	याज्ञवल्क्य जयंती, पूभा. बुध 19:32
24	चं	6	16	08	13	00	कृ	07	20	09	29	वि	20	52	14	54	तै	16	08	13	00	29	46	06	33	18	28	चैत्र 01	04	14	वृष	10	29	45	33	49	10	32	24	00	मीने रविः 11:18, गोरूपिणी षष्ठी ❖ उदय 11:13
25	मं	7	11	47	11	15	रो	04	33	08	21	प्री	14	32	12	21	व	11	47	11	15	29	51	06	32	18	28	02	05	15	मि.20:01	11	00	45	22	46	11	24	24	16	भ. 11:15 से 22:35 तक, पूफा. 3 गुरु 12:39, नेप्च्यून ❖
26	बु	8	08	57	10	06	मृ	03	16	07	49	आ	09	26	10	17	ब	08	57	10	06	29	55	06	31	18	29	03	06	16	मिथुन	11	01	45	08	45	12	18	25	14	होलाष्टकारंभ, अष्टान्हिक व्रतारम्भ, दादू दयाल जयंती
27	गु	9	07	43	09	35	आ	03	31	07	54	सौ	05	35	08	44	कौ	07	43	09	35	29	59	06	30	18	30	04	07	17	क.26:22	11	02	44	53	41	13	13	26	08	उ.भा. रवि 19:37
28	शु	10	08	02	09	41	पुन	05	18	08	36	शो	02	57	07	40	ग	08	02	09	41	30	04	06	29	18	30	05	08	18	कर्क	11	03	44	34	40	14	08	26	58	भ. 21:58 से, मीने बुध 28:39 **B** स्यामजी खाटू
29	श	11	09	48	10	23	पु	08	29	09	51	अ	01	28	07	03	वि	09	48	10	23	30	08	06	28	18	31	06	09	19	कर्क	11	04	44	14	37	15	03	27	43	भ. 10:23 तक, आमलकी एकादशी व्रत (सबका). **A**
30	र	12	12	52	11	35	आ	12	57	11	37	सु	01	01	06	51	बा	12	52	11	35	30	12	06	26	18	31	07	10	20	सिं.11:37	11	05	43	51	35	15	57	28	24	उ.भा. बुधः 22:09, प्रदोष व्रत, सायन मेषे भानु, मेला **B**
चैत्र 01	चं	13	17	03	13	14	म	18	29	13	49	धृ	01	26	07	00	तै	17	03	13	14	30	16	06	25	18	32	08	11	21	सिंह	11	06	43	26	33	16	50	29	02	**A** ढाल-तलवार बनाना 10:23 बाद, मेला शाहपुरा मेवाड़
02	मं	14	22	09	15	16	पूफा	24	53	16	21	शू	02	35	07	26	व	22	09	15	16	30	21	06	24	18	32	09	12	22	क.23:02	11	07	42	59	31	17	42	29	38	भ. 16:16 से 28:24, जेल माला पोणी 15:16 तक
03	बु	15	27	57	17	34	उफा	31	57	19	10	गं	04	19	08	07	ब	27	57	17	34	30	25	06	23	18	33	10	13	23	कन्या	11	08	42	30	29	18	33	30	13	पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत, पू.भा. शुक्र 25:13, अष्टान्हिका **C** **C** व्रत पूर्ण, चैतन्य महाप्रभु जयंती, करिदिनं होलिका दहन

❑ रहेगा। हिमालयी क्षेत्रों में ओलावृष्टि, आकाश से तारा टूटने का क्रम चलेगा। राजतंत्र में लोक सभा, राज्य सभा के नेताओं में मुठभेड़ से जनता आश्चर्य करेगी। शकुन विचार–"फाल्गुन सुदी पंचमी पाला जब घर बीज। बैशाख सुदी एकमें बरसे जल अजीज॥ होली जलत समीर तो गगन जाय बिन रोक। युद्ध होवे संसार में दुःख पावै सब लोग॥"

फाल्गुन शु. 8 बुध, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 16 मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	02	07	10	04	10	07	04	10	11	10	08
01	05	09	24	23	10	22	27	27	24	16	23
45	21	16	25	14	19	14	35	35	58	01	07
08	49	33	08	05	43	15	53	53	26	19	20
59	808	18	111	07	74	00	00	00	03	02	00
45	39	30	15	40	13	56	05	05	13	13	59
–	–	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	–	–	–
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

1
12 सू.
11 बु.शु.के. ने.
10
2
ह.
9 प्लू.
3 चं.
6
8
4
मं.श.
5
गु. रा.
7

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा क्षय योग द्वितीय शुक्ला गुरुवार उत्तराभाद्रपद नक्षत्र सहित चंद्रदर्शन मु. 30, फुलेरा दोज श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती से पूर्णिमा बुधवारी उ.फा. नक्षत्र छारण्डी तक तद्नुसार दिनांक 10 मार्च से 23 मार्च 2016 तक रहेगा। पक्ष में विश्व प्रसिद्ध श्री खाटू श्यामजी का मेला का आनन्द रहेगा। इस पक्ष में भुवन भास्कर मीन राशि में प्रवेश फाल्गुन शुक्ला षष्ठी, ता. 14 मार्च 2016 को वारात् 3, नक्षत्रात् 4, वारनाम ध्वांक्षी, वैश्यान सुखदा, नक्षत्र नाम नंदा, गणकान सुखदा, मध्याह्न व्यापिनी द्विजान हन्ति, पश्चिम गमनं, वायत्यां दृष्टिं, तैतिल करणे प्रविष्ठा, नेष्ट फल योग, रासभ (गधा) वाहन, मेष (मेढ़ा) उपवाहन सुभिक्ष कारक, दण्डायुधं, कांस्य पात्रं, पक्वान्न भक्षणं, मृदलेपनं, पक्षी जाति, भूर्ज पत्र, कंचुकी युवावस्था (सूती) मु. 45, धान्य भावे समर्घ मंहगाई कारक, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रक्रिया में उछाल आयेगा। शुक्ला प्रतिपदा क्षय के कारण मंहगाई की घटा-बढ़ी सभी वस्तुओं में कारक रहेगी। "मीन राशि गते भानो सर्वधान्य महर्घता। लवणा तिलं च महर्घ सम जायते॥" एक राशौ यदां यांति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयंति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥" दिनांक 9 मार्च 2016 को यह स्थिति बनने से विश्व में तर्क विवाद युद्ध जैसा वातावरण रहेगा। पृथ्वी पर रक्त या जल से जन हानि का कारक योग बनेगा। चौपाये पशुओं में रोगादि भय रहेगा। व्यापार भविष्य–इस पक्ष की संक्रांति से सभी वस्तुओं में तेजी का योग बनेगा। सरकारी काम काज में तीव्रता बनेगी। स्टॉक वस्तुओं का लाभ प्राप्त होगा। रसादि पदार्थ, धान, गुड़, दही, दूध, घी, शक्कर, जीरा, तारामीरा, सरसों, सतावर, कमलगट्टा, उड़द, चना, गेहूं, जौ, चावल, फल, सब्जी में तेजी का अच्छा योग। आकाश लक्षण–पक्ष में वायु वेग सहित भारत में कहीं-कहीं तेज बारिश होगी। आगामी श्रावण माह में वर्षा का इंतजार ❑

फाल्गुन शु. 15 बुध, प्रातः 5:30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 23 मार्च

1
11 शु.के.
12 सू.
ने.
10
2
बु. ह.
9 प्लू.
3
6 चं.
8
मं.श.
4
5
गु. रा.
7

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	05	07	11	04	10	07	04	10	11	10	08
08	03	11	07	22	18	22	27	27	25	16	23
42	13	15	51	21	59	18	38	38	21	16	13
30	09	56	54	42	02	23	42	42	20	33	34
59	715	15	119	07	74	00	00	00	03	02	00
29	53	29	07	15	10	14	00	00	19	08	47
–	–	मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	–	–	–
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चैत्र कृष्ण पक्षः-26

श्री सं. 2072 शाके 1937

ता. 24 मार्च से 7 अप्रैल सन् 2016 ई., रा. मिति 4 से 18 चैत्र तक, रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, वसंत ऋतु।

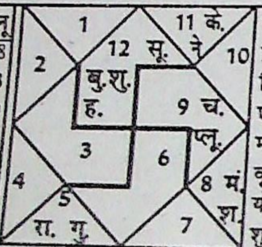
निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र न	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग यो	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण क	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	दिन मान		स्टैं. टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5घं. 30मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
04	गु	1	34	13	20	03	ह	39	28	22	09	वृ	06	29	08	57	बा	01	04	06	47	30	29	06	22	18	34	11	14	24	कन्या	11	09	41	59	50/27	19	24	30	47	छारेड़ी, धुलैण्डी, गणगौर पूजा प्रा. (राज.), वसंत प्रतिपदा, D
05	शु	2	40	44	22	38	चि	47	10	25	13	ध्रु	08	54	09	54	तै	07	29	09	20	30	34	06	21	18	34	12	15	25	तु. 11।41	11	10	41	26	24	20	15	07	22	संत तुकाराम जयंती
06	श	3	47	11	25	12	स्वा	54	49	28	15	व्या	11	24	10	53	व	14	00	11	56	30	38	06	19	18	35	13	16	26	तुला	11	11	40	50	23	21	06	07	57	भ. 11।56 से 25।12, वक्री शनि 10।13, कल्पादि
07	र	4	53	16	27	37	वि	60	00	–	–	ह	13	45	11	48	ब	20	19	14	26	30	42	06	18	18	35	14	17	27	वृ.24।26	11	12	40	13	21	21	58	08	34	चतुर्थी व्रत, रेवत्यां बुध 14।21
08	चं	5	58	37	29	44	वि	02	07	07	08	व	15	43	12	34	कौ	26	05	16	43	30	47	06	17	18	36	15	18	28	वृश्चिक	11	13	39	34	19	22	49	09	13	रंग पञ्चमी D मेला आनन्दपुर साहिब, हर्षल अस्त 23।45
09	मं	6	60	00	–	–	अ	08	37	09	43	सि	17	03	13	05	ग	30	56	18	38	30	51	06	16	18	36	16	19	29	वृश्चिक	11	14	38	53	18	23	41	09	55	एकनाथ षष्ठी व्रत ■ ऋषभदेव जन्म
10	बु	6	02	56	07	25	ज्ये	14	02	11	52	व्य	17	29	13	14	व	02	56	07	25	30	55	06	15	18	37	17	20	30	ध.11।52	11	15	38	11	16	24	00	10	41	भ. 7।25 से 20।02 तक A मेला सीतला
11	गु	7	05	45	08	31	मू	18	01	13	26	व	16	46	12	56	ब	05	45	08	31	30	59	06	14	18	37	18	21	31	धनु	11	16	37	27	14	24	32	11	31	रेवत्यां रवि: 6।32, मीने शुक्र: 27।25, सीतला सप्तमी, A
12	शु	8	06	51	08	57	पूषा	20	17	14	19	प	14	41	12	05	कौ	06	51	08	57	31	04	06	12	18	38	19	22	Apr 01	म.20/26	11	17	36	41	12	25	22	12	25	अप्रैल मासारम्भ, सीतलाष्टमी, मेला केशरिया मेवाड़, ■
13	श	9	06	04	08	37	उषा	20	43	14	28	शि	11	18	10	39	ग	06	04	08	37	31	08	06	11	18	39	20	23	02	मकर	11	18	35	53	10	26	11	13	22	भ. 20।09 से, मेषे अश्विनी बुध 27।46
14	र	10	03	22	07	31	श्र	19	16	13	52	सि सा	06 59	04 28	08 29	36 58	वि	03	22	07	31	31	12	06	10	18	39	21	24	03	कु.25।18	11	19	35	03	09	26	59	14	22	भ. 7।31 तक, पञ्चकारम्भ 25।18 से, पापमोचनी 11 व्रत, B
00	र	11	58	46	29	41	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0000	00	00	00	00	00	00	00	00	00	एकादशी तिथि क्षय: B उ.भायां शुक्र 20।10
15	चं	12	52	33	27	10	ध	16	02	12	34	शुभ	51	35	26	47	कौ	25	53	16	30	31	16	06	09	18	40	22	25	04	कुम्भ	11	20	34	12	06	27	45	15	25	पापमोचनी एकादशी व्रत वैष्णव, वारुणी योग 27।10 से,
16	मं	13	44	58	24	07	श	11	14	10	37	शु	42	34	23	09	ग	18	56	13	43	31	21	06	08	18	40	23	26	05	मी.26।50	11	21	33	18	05	28	29	16	30	भ. 24।07 से, रंग 13, प्रदोष व्रत, वारुणी योग 10:37 तक
17	बु	14	36	22	20	40	पूभा उभा	05 58	10 10	08 29	11 23	ब्र	32	40	19	11	वि	10	48	10	26	31	25	06	07	18	41	24	27	06	मीन	11	22	32	23	03	29	13	17	36	भ. 10।26 तक, बुधोदय पश्चिम में 20।30
18	गु	30	27	07	16	57	रे	50	46	26	24	ऐं	22	14	14	59	च	01	49	06	49	31	29	06	06	18	41	25	28	07	मे.26।24	11	23	31	26	01	29	58	18	43	देवपितृकार्येऽमा., पञ्चक 26।24 तक, चांद्र संवत्सर 2072 पूर्ण

☐ तथा तीर्थाटनों में भी आपदा योग बनेगा। **शकुन विचार– चैत्र बदी दशमी दिना बादल बिजली जोय। तो जानो चित्त माही यह गई गला सब जोय। चैत्र बदी जो पंचमी दिन भर बादल छाय। वर्षा भी होवे कछुक भादव तेज बिकाय॥**

चैत्र कृ. 8 शुक्र, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 1 अप्रैल

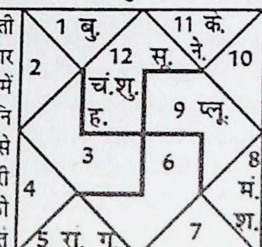
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	08	07	11	04	11	07	04	10	11	10	08
[illegible]	21	13	26	21	00	22	27	27	25	16	23
[illegible]	53	15	07	20	06	16	30	30	51	35	19
[illegible]	45	19	10	11	27	31	11	11	39	17	30
[illegible]	775	10	121	06	74	00	00	00	03	02	00
[illegible]	34	50	41	21	08	39	51	51	24	01	31
–	–	मा	मा	व	मा	व	मा	मा	मा	मा	मा
–	–	उ	अ	उ	उ	उ	उ	ठ	अ	–	–
1	3	3	3	3	4	2	1	3	3	3	3
रेवती	पू.षा.	अनु.	रेवती	पू.फा.	पू.भा.	ज्ये.	उ.फा.	पू.भा.	रेवती	शत.	पू.षा.



[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा गुरुवार हस्त नक्षत्र शुभ योग से (बसंती प्रतिपदा) प्रारंभ होकर अमावस्या गुरुवार रेवती नक्षत्र तक तद्नुसार दिनांक 24 मार्च से 7 अप्रैल 2016 तक रहेगा। इस पक्ष में एकादशी का क्षय होना शासन तंत्र में गड़बड़, उथल-पुथल यानि मंत्रिमंडल में संकट दायक योग रहेगा। गुरुवारी अमावस्या से वृष्टि अच्छी तथा सुभिक्ष दायक योग बनेगा। जन-कल्याणकारी योग। दुख का नाश कारक योग बनेगा। स्वास्थ्य लाभ प्रजा को शुभ प्राकृतिक रूप से मिलेगा। अमावस्या रेवती नक्षत्र युक्त सुभिक्ष कारक योग। रेवती में बुध ग्रह शृंगार सामग्री वृद्धि योग।। बुध रेवती को भेदन से व्यापारी, वैद्य, नौकायान कारक दुखी। जलोद्भव जीव सभी पीड़ा से प्रभावित न रहे कोई जीव सुखी। **पापमोचनी एकादशी का क्षय महंगाई सूत्रधार।** ज्योतिषी कहें इस पक्ष में सभी वस्तुएं तेजी अपार। गाय, घोड़ा, हाथी, सींग वाले हरिण भी पीड़ित होंगे। दक्षिण की पवन चले तो धान्य भावों में मंदी बन सकती है। प्रजा में आध्यात्मिक, धार्मिक वृति का योग ज्यादा चलेगा। अमेरिका, भूटान, इग्लैंड, मॉरिशस, जर्मनी, जापान, ईराक, इंडोनेशिया में धार्मिक क्रांति का आदोलन चलेगा। **व्यापार भविष्य–**रस, घृत, किराना की वस्तुओं में तेजी बनेगी। कांगनी, रुई, अलसी, चांदी, सोना, तांबा, अरहर, तेल, गुड़, तिलों में तेजी। अनाजों के भाव अस्थिरता वाले होंगे। गेहूं, चावल, चना में स्थिरता रहेगी। **कुंभ राशि स्थिते शुक्रे सुभिक्ष प्रचुरं जलम्। भवत्यत्र न सन्देहो, लोका सर्वे निरामया।"** अच्छी वर्षा से मंदी का योग तथा जनता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। **आकाश लक्षण–**ऋतु परिवर्तन का योग, रोगकारक वातावरण। तापमान में बढ़ोतरी। आकाश में तारामंडल में चमत्कार पूर्ण [illegible] पश्चिमी देशों में प्राकृतिक आपदा प्रकोप जैसा वातावरण ☐

चैत्र कृ. 30 गुरु, प्रातः 5।30 बजे के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 7 अप्रैल



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	11	07	00	04	11	07	04	10	11	10	08
23	16	14	07	20	07	22	27	27	26	16	23
31	44	09	51	44	31	10	33	33	12	47	22
26	30	44	00	15	11	49	51	51	10	05	06
59	911	07	110	05	74	01	01	01	03	01	00
02	12	11	31	35	06	15	56	56	26	55	20
–	–	मा	मा	व	मा	व	मा	व	मा	मा	मा
–	–	उ	ठ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	–	–
3	1	4	3	3	2	2	1	3	3	4	4
रेवती	रेवती	अनु.	अश्वि.	पू.फा.	उ.भा.	ज्ये.	उ.फा.	पू.भा.	रेवती	शत.	पू.षा.

ज्योतिष शास्त्र में भौगोलिक महत्व

एक सामान्य अध्ययन

ज्योतिष शास्त्र में खगोल ज्ञान के साथ भौगोलिक जानकारी परमावश्यक है। ग्रहों का देशान्तरीय भेद से उदयास्त, ग्रहणादि का स्थानीय दृश्य काल एवं उसका मान तथा पृथ्वी पर दिखाई देने वाली खगोलीय चमत्कृति का सूक्ष्म समय काल जानने के लिये अक्षांश रेखांशादि भेदिक परिवर्तन समय हेतु भौगोलिक ज्ञान का विशेष महत्व होता है। उत्तर दक्षिण गोलार्द्ध, भूमध्य रेखा, कर्क मकर वृत्त, अक्षांश व रेखांशादि की जानकारी आवश्यक है जिसका सामान्य परिचय दिया जा रहा है।

अक्षांश व उसका अभिप्राय:- पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा "भू मध्य रेखा" कहलाती है। यहां पर अक्षांश (0) शून्य होता है। इसके उत्तर विभाग को "उत्तर गोल" व दक्षिणी विभाग को "दक्षिण गोल" कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर विभाग (उत्तर गोल) में ९० एवं दक्षिण विभाग (दक्षिण गोल) में भी ९० अक्षांश होते हैं।

यह "श्री आर्य भट्ट पंचांगम्" दिल्ली के स्थानीय समय काल हेतु आधारित किया गया है। भौगोलिक स्थित्यानुसार दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर है। भू मध्य रेखा से उत्तर गोल में दिल्ली नगर २८ व २९ अक्षांश के बीच में है। प्रत्येक अक्षांश को ६० भाग में विभाजित किया गया है जिसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर स्थित है।

एक अक्षांश की दूरी ७५ मील होती है। पृथ्वी पर किसी भी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अण्डाकार वस्तु को लंबाई में अर्थात् उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान से काटेंगे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित भाग पर आयेगा। इसलिए पृथ्वी के इसी मध्य भाग को भू मध्य रेखा कहा जाता है। भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर है इससे दक्षिण में ९० अक्षांश है जो दक्षिणी अक्षांश होते हैं। और इसी प्रकार भू मध्य रेखा (0) शून्य से उत्तर में ९० अक्षांश उत्तरी अक्षांश कहे जाते हैं।

उदाहरणार्थ आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा अथवा घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है और घूमते हुए एक अण्डाकार गोल परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसा करते हुए वह अपने केन्द्र स्थान की ओर थोड़ा झुका हुआ रहता है। इसी तरह पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर घूमती है और उसी बदले झुकाव के कारण ही सूर्य "उत्तरायण" तथा "दक्षिणायन" होता प्रतीत होता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया गया है परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में आधार हीन अधर में ही घूमती है।

ता. २१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात प्रथम राशि में प्रवेश करता है उस समय पृथ्वी का भू मध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है जहां रवि की क्रांति शून्य होती है। पृथ्वी पर उस समय दिन रात बराबर होते हैं। इस दिन के बाद से सूर्य उत्तर गोल में चलता है और रवि की उत्तर क्रांति प्रति दिन बढ़ती है। ता. २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है अर्थात् सायन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और रवि क्रांति अपनी चरम सीमा २३अंश हो जाती है। आकाशी क्रांति पथ के साथ पृथ्वी का क्रांति पथ २३.५ अंश का कोण होता है। उस समय दिन का मान अधिक व रात्री का मान न्यून होता है। विश्व का मानचित्र देखें कि भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर भारत से दक्षिण में लम्बी दूरी पर दूर समुन्द्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब इस रेखा पर आता हैतो भारत का मध्य भाग सूर्य के सीधे प्रभाव में होने से वहां पर अधिकतम गर्मी की ऋतु का पूर्ण आभास होता है। ता. २१ जून को सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन हो जाता है। इसे ही "दक्षिणायन" कहते हैं। जो ता. २१ सितम्बर तक दक्षिणावृत्ति से पुन: भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर पहुंच जाता है तथा उसकी उत्तर क्रांति भी क्रमश: कम होकर शून्य हो जाती है और दिन रात बराबर होते हैं। इसके बाद सूर्य दक्षिणावृत्ति से ही चलता है परन्तु ता. २१ सितम्बर तक तो सूर्य पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में ही होता है तत्पश्चात दक्षिण गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से लम्बी दूरी पर होने से यहां शरद ऋतु का आरंभ हो जाता है।

सूर्य निरन्तर दक्षिणायन रहकर दक्षिणी गोलार्द्ध में अग्रसर होता है। जो ता. २१ दिसम्बर को मकर रेखा पर पहुंच जाता है तथा सूर्य की दक्षिण क्रांति अपनी चरम सीमा पर होती है। ता. २१-२२ दिसम्बर को दिन का मान छोटा व रात्री का मान बड़ा होता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) भारत से बहुत दूर हिन्द महासागर के उपर से दक्षिणी अमेरिका के मध्य भाग, दक्षिणी अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है तो उस समय इन सभी देशो में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूरी होने के कारण यहां मौसम अत्यधिक ठण्डा होता है। ता. २१ दिसम्बर के बाद से सूर्य उत्तर की ओर चलनारंभ होता है। इसे ही "उत्तरायण" कहते हैं।

(नोट:- सूर्य आकाश में स्थिर है परंतु पृथ्वी की गति में क्रांति के परिवर्तन होने पर वह इस प्रकार परिवर्तन करता प्रतीत होता है तो प्रचलित बोल चाल तथा लिखने की भाषा में सूर्य चल रहा है यही कहा जाता है।)

ता. २१-२२ दिसंबर से सूर्य उत्तरावृत्ति से पुन: ता. २१ मार्च को दक्षिणी गोलार्द्ध की यात्रा करते हुए भू मध्य रेखा (शून्य अक्षांश) पर आता है। इस दिन रवि की दक्षिण क्रांति भी शून्य होती है। इस दिन सूर्य उत्तरावृत्ति से उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है।

अत: सूर्य की स्थिति ता. २१ मार्च से २१ सितंबर तक उत्तर गोल में और ता. २१ सितम्बर से ता. २१ मार्च तक दक्षिण गोल में होती है। ता. २१ दिसंबर से ता. २१ जून तक सूर्य उत्तरायण एवं ता. २१ जून से ता. २१ दिसंबर तक दक्षिणायन होता है।

सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहां के पूर्व पश्चिम क्षितिज पर सूर्योदय-सूर्यास्त देखकर अथवा ऊपर आकाश में सूर्य भ्रमण पर ध्यान देकर या घर में आने वाली धूप की किरणों के बदलते कोण देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायन होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रति दिन जो अंतर आता है उसे चरांतर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रांति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरांतर सारणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए है। और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरांतर सारणी पृष्ठ संख्या ९६ तथा रवि क्रांति सारणी इस पंचांग के पृष्ठ संख्या ९५ पर दी हुई है।

रेखांश व उसकी उपयोगिता- जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अक्षांशों में विभाजित किया गया है। उसी प्रकार इसको पूर्व-पश्चिम ३६० रेखांशों में विभाजित किया गया है। जिस प्रकार उत्तर व दक्षिण का विभाजन करने के लिए भू मध्य रेखा को (0) शून्य अक्षांश माना गया है। उसी प्रकार पूर्व व पश्चिम का विभाजन करने के लिए मध्यमान होना आवश्यक है और इसके लिए कोई भी रेखा को (0) शून्य रेखांश माना जा सकता है। पहले कभी भारत के उज्जैन नगर को शून्य रेखांश के लिए सम्मान प्राप्त था परन्तु वर्तमान में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला के कारण लंदन के पास ग्रीनविच को यह महत्व दिया गया है। ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे (0) शून्य रेखांश मान कर पूर्व के रेखांशों के पूर्व रेखांश व पश्चिम के रेखांशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है।

पृथ्वी की परिधि भू मध्य रेखा पर २९४०० मील है। अत: भू मध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी ७० मील होती है। पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात ३६० रेखांश २४ घण्टे में सूर्य के सामने से गुजरते हैं। तदनुसार एक रेखांश अंतर चार मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। उदाहरणार्थ माना कि दिल्ली में सूर्योदय ६।३० बजे हुआ है और दिल्ली का रेखांश ७७।१३ पूर्व है तो ७८।१३ पूर्व रेखांश पर स्थित नगर का सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा अथवा पूर्व रेखांश ७६।१३ हो तो ४ मिनट दिल्ली के बाद होगा। इसी प्रकार प्रति रेखांश में ४ मिनट कम अथवा अधिक रेखांशानुसार होगा। यदि रेखांश कम होंगे तो सूर्योदय बाद में तथा रेखांश अधिक होने पर पहले होगा।

प्राचीन काल में प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण धूप घड़ियों ,जल घड़ियों अथवा शंकु छायादि उपकरणों की सहायता से मध्यान्ह और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे।

सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाइम (मानक समय) रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टे आगे था और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैण्डर्ड समय १ सितंबर १९१७ से लागू कर दिया गया परंतु बंगाल प्रांत और आस-पास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रांतों ने सितंबर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाइम को व्यवहार में लाना आरंभ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितंबर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में (जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे) समय १ घण्टा बढ़ा दिया गया था अर्थात ग्रीनविच समय से ६.३० घण्टा आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टा आगे है और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो काम-काज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से संपादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है। उसका समय उतने ही अंतर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अंतर होता है। अत: १५ रेखांश पर १ घण्टे का अंतर हुआ। जो ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टे के अंतर पर निर्धारित है। हौलेण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, वेल्जियम, हंगरी, यूगोस्लाविया, डेनमार्क, स्विट्जरलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टा आगे है। मिश्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराईल, सूडान, वल्गेरिया आदि देशों का समय २ घण्टे आगे है। ये देश २ घण्टे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, ईथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घण्टे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४.३० घण्टे तथा पाकिस्तान ५ घण्टे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घण्टे तथा वर्मा ६.३० घण्टे आगे है। थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घण्टे के क्षेत्र में हैं। चीन, हॉंगकॉंग, फिलिपिन्स ८ घण्टे तथा कोरिया व जापान ९ घण्टे के अंतर पर है। आस्ट्रेलिया १० घण्टे और न्यूजीलैण्ड १२ घण्टे के अंतर पर है। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है। उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंगलैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयॉर्क, वाशिंगटन, टोरंटो, ओटावा, वॉस्टन आदि नगर ५ घण्टे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घण्टे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लॉसएन्जिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घण्टे कम है। किसी भी एटलस में दुनियां का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमाएं लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घण्टे के समय क्षेत्र में रखा गया है। और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगला देश को ६ घण्टे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५.३० घण्टा समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि १ रेखांश पर ४ मिनट का अंतर आता है तो ५.३० घण्टे का अंतर ८२।३० रेखांश पर ही आता है। भारत में ८२।३० रेखांश इलाहाबाद, अयोध्या के आस-पास उत्तर से दक्षिण काकीनाड़ा, मच्छलीपटनम् आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है परंतु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है। तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश "अक्षांशादि सारणी" से ज्ञात कर लिए जाते हैं तत्पश्चात उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है। जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है (कुछ आचार्य ७७।१२, कुछ ७७।१४ भी मानते हैं) यह रेखांश ८२।३० से ५।१७ कम हैं। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से २१ मिनट ८ सैकेण्ड दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से कम होगा। यदि किसी स्थान का रेखांश ८२।३० से अधिक है तो वहां का स्थानीय समय अधिक होगा। जैसे ... ८५।१३ है जो ८२।३० से २।४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय १० मिनट ५२ सैकेण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारणी इस पंचांग में पृष्ठ ९७ पर दी गई है। इसमें मुख्य-मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अंतर तथा दिल्ली के समय से देशांतर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांश आदि सारणी में यह नाम नहीं हैं। मानचित्र में यह धौलपुर और ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर हैं अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है यह स्थान मानचित्र में धौलपुर व ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सेन्टीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नाप कर उनके अक्षांश रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ है वह इस प्रकार है।

स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर	स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	-१८-२८	+२-४०	करौली	२६-३८	७७।०५	-२१-४०	+०-३२
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+३-४८	भिण्ड	२६-४०	७८-५०	-१८-४०	+२-२८

लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्राय: १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रात: के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रात: पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम् में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अतः तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन एवं उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात् दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्नका समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक केअक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है।

	घं.मि.
सारिणी से प्राप्त १५ जु. को वृश्चि. समाप्त	१७।१४
देशान्तर ऋण लेने से धन किया (१३।४८ मि. आधे से अधिक होने से १४ लिये)	+०।१४
मध्यम लग्न समाप्त	=१७।२८

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने १७ मिनट दिये हैं।

मध्यम लग्न समाप्ति	= १७।२८
दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान +-	—०।१७
अतः नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल	१७।११

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें. यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्दि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सै. एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान कोगुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारंभ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

अ/लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	-१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

सन्\राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु.	मकर	कुम्भ	मीन
२००० फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००० फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४ फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	-१
२००९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२ फप	-१	०	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	-१

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

पंचांग में दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल की तालिका प्रति मासिक दी गई है। उनमें पृथ्वी की अयनगति वश प्रति वर्ष परिवर्तन होता है। इसलिए लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल जानने के लिए वार्षिक संस्कार देकर शुद्ध करें लें। अतः वार्षिक लग्नों में संस्कारार्थ तालिका दी जा रही है।

जिन वर्षों में तिथ्याधिक वर्ष हो अर्थात् २९ दिनों का फरवरी मास होता है। (यह प्रति चार से आता है।) उन वर्षों की तालिका में दो बार पंक्तियां दी गई। जिसके सन् के आगे फ.प. लगाया गया है। इसका अभिप्राय है कि १ जनवरी से २८ फरवरी तक इस पंक्ति के संस्कारों को काम में लें तथा उसी सन् को लिखकर आगे फ.बा. लगाया गया है। इन संस्कारों का उपयोग १ मार्च से ३१ दिसम्बर तक करें।

मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	७ २८ १५	८ ५३ १०	१० २८ १५	१२ २३ ३७	१४ ३८ ०८	१६ ५८ २७	१९ १५ ४६	२१ ३२ ०३	२३ ५१ ३१	२ १४ ०५	४ १८ १५	६ ०० ४३
२	७ २४ १९	८ ४९ १४	१० २४ २०	१२ १९ ४१	१४ ३४ १२	१६ ५४ ३१	१९ ११ ५०	२१ २८ ०७	२३ ४७ ३५	२ १० ०९	४ १४ १९	५ ५६ ४७
३	७ २० २३	८ ४५ १८	१० २० २४	१२ १५ ४५	१४ ३० १६	१६ ५० ३६	१९ ०७ ५५	२१ २४ १२	२३ ४३ ४०	२ ०६ १३	४ १० २३	५ ५२ ५२
४	७ १६ २७	८ ४१ २३	१० १६ २८	१२ ११ ४९	१४ २६ २०	१६ ४६ ४०	१९ ०३ ५९	२१ २० १६	२३ ३९ ४४	२ ०२ १७	४ ०६ २७	५ ४८ ५६
५	७ १२ ३२	८ ३७ २७	१० १२ ३२	१२ ०७ ५४	१४ २२ २४	१६ ४२ ४४	१९ ०० ०३	२१ १६ २०	२३ ३५ ४८	१ ५८ २१	४ ०२ ३१	५ ४५ ००
६	७ ०८ ३६	८ ३३ ३१	१० ०८ ३६	१२ ०३ ५८	१४ १८ २८	१६ ३८ ४८	१८ ५६ ०७	२१ १२ २४	२३ ३१ ५२	१ ५४ २५	३ ५८ ३६	५ ४१ ०४
७	७ ०४ ४०	८ २९ ३५	१० ०४ ४०	१२ ०० ०२	१४ १४ ३२	१६ ३४ ५२	१८ ५२ ११	२१ ०८ २८	२३ २७ ५६	१ ५० २९	३ ५४ ४०	५ ३७ ०८
८	७ ०० ४४	८ २५ ३९	१० ०० ४४	११ ५६ ०६	१४ १० ३६	१६ ३० ५६	१८ ४८ १५	२१ ०४ ३२	२३ २४ ००	१ ४६ ३४	३ ५० ४४	५ ३३ १२
९	६ ५६ ४८	८ २१ ४३	९ ५६ ४८	११ ५२ १०	१४ ०६ ४०	१६ २७ ००	१८ ४४ १९	२१ ०० ३६	२३ २० ०४	१ ४२ ३८	३ ४६ ४८	५ २९ १६
१०	६ ५२ ५२	८ १७ ४७	९ ५२ ५२	११ ४८ १४	१४ ०२ ४४	१६ २३ ०४	१८ ४० २३	२० ५६ ४०	२३ १६ ०८	१ ३८ ४२	३ ४२ ५२	५ २५ २०
११	६ ४८ ५६	८ १३ ५१	९ ४८ ५६	११ ४४ १८	१३ ५८ ४९	१६ १९ ०८	१८ ३६ २७	२० ५२ ४४	२३ १२ १२	१ ३४ ४६	३ ३८ ५६	५ २१ २४
१२	६ ४५ ००	८ ०९ ५५	९ ४५ ०१	११ ४० २२	१३ ५४ ५३	१६ १५ १२	१८ ३२ ३१	२० ४८ ४८	२३ ०८ १६	१ ३० ५०	३ ३५ ००	५ १७ २८
१३	६ ४१ ०४	८ ०५ ५९	९ ४१ ०५	११ ३६ २६	१३ ५० ५७	१६ ११ १७	१८ २८ ३६	२० ४४ ५३	२३ ०४ २१	१ २६ ५४	३ ३१ ०४	५ १३ ३२
१४	६ ३७ ०८	८ ०२ ०४	९ ३७ ०९	११ ३२ ३०	१३ ४७ ०१	१६ ०७ २१	१८ २४ ४०	२० ४० ५७	२३ ०० २५	१ २२ ५८	३ २७ ०८	५ ०९ ३७
१५	६ ३३ १२	७ ५८ ०८	९ ३३ १३	११ २८ ३५	१३ ४३ ०५	१६ ०३ २५	१८ २० ४४	२० ३७ ०१	२२ ५६ २९	१ १९ ०२	३ २३ १२	५ ०५ ४१
१६	६ २९ १७	७ ५४ १२	९ २९ १७	११ २४ ३९	१३ ३९ ०९	१५ ५९ २९	१८ १६ ४८	२० ३३ ०५	२२ ५२ ३३	१ १५ ०६	३ १९ १७	५ ०१ ४५
१७	६ २५ २१	७ ५० १६	९ २५ २१	११ २० ४३	१३ ३५ १३	१५ ५५ ३३	१८ १२ ५२	२० २९ ०९	२२ ४८ ३७	१ ११ १०	३ १५ २१	४ ५७ ४९
१८	६ २१ २५	७ ४६ २०	९ २१ २५	११ १६ ४७	१३ ३१ १७	१५ ५१ ३७	१८ ०८ ५६	२० २५ १३	२२ ४४ ४१	१ ०७ १५	३ ११ २५	४ ५३ ५३
१९	६ १७ २९	७ ४२ २४	९ १७ २९	११ १२ ५१	१३ २७ २१	१५ ४७ ४१	१८ ०५ ००	२० २१ १७	२२ ४० ४५	१ ०३ १९	३ ०७ २९	४ ४९ ५७
२०	६ १३ ३३	७ ३८ २८	९ १३ ३३	११ ०८ ५५	१३ २३ २५	१५ ४३ ४५	१८ ०१ ०४	२० १७ २१	२२ ३६ ४९	० ५९ २३	३ ०३ ३३	४ ४६ ०१
२१	६ ०९ ३७	७ ३४ ३२	९ ०९ ३७	११ ०४ ५९	१३ १९ ३०	१५ ३९ ४९	१७ ५७ ०८	२० १३ २५	२२ ३२ ५३	० ५५ २७	२ ५९ ३७	४ ४२ ०५
२२	६ ०५ ४१	७ ३० ३६	९ ०५ ४२	११ ०१ ०३	१३ १५ ३४	१५ ३५ ५३	१७ ५३ १२	२० ०९ २९	२२ २८ ५७	० ५१ ३१	२ ५५ ४१	४ ३८ ०९
२३	६ ०१ ४५	७ २६ ४०	९ ०१ ४६	१० ५७ ०७	१३ ११ ३८	१५ ३१ ५८	१७ ४९ १७	२० ०५ ३४	२२ २५ ०२	० ४७ ३५	२ ५१ ४५	४ ३४ १३
२४	५ ५७ ४९	७ २२ ४४	८ ५७ ५०	१० ५३ ११	१३ ०७ ४२	१५ २८ ०२	१७ ४५ २१	२० ०१ ३८	२२ २१ ०६	० ४३ ३९	२ ४७ ४९	४ ३० १८
२५	५ ५३ ५३	७ १८ ४९	८ ५३ ५४	१० ४९ १६	१३ ०३ ४६	१५ २४ ०६	१७ ४१ २५	१९ ५७ ४२	२२ १७ १०	० ३९ ४३	२ ४३ ५३	४ २६ २२
२६	५ ४९ ५७	७ १४ ५३	८ ४९ ५८	१० ४५ २०	१२ ५९ ५०	१५ २० १०	१७ ३७ २९	१९ ५३ ४६	२२ १३ १४	० ३५ ४७	२ ३९ ५७	४ २२ २६
२७	५ ४६ ०२	७ १० ५७	८ ४६ ०२	१० ४१ २४	१२ ५५ ५४	१५ १६ १४	१७ ३३ ३३	१९ ४९ ५०	२२ ०९ १८	० ३१ ५१	२ ३६ ०२	४ १८ ३०
२८	५ ४२ ०६	७ ०७ ०१	८ ४२ ०६	१० ३७ २८	१२ ५१ ५८	१५ १२ १८	१७ २९ ३७	१९ ४५ ५४	२२ ०५ २२	० २७ ५५	२ ३२ ०६	४ १४ ३४
२९	५ ३८ १०	७ ०३ ०५	८ ३८ १०	१० ३३ ३२	१२ ४८ ०२	१५ ०८ २२	१७ २५ ४१	१९ ४१ ५८	२२ ०१ २६	० २० ०४	२ २८ १०	४ १० ३८
३०	५ ३४ १४	६ ५९ ०९	८ ३४ १४	१० २९ ३६	१२ ४४ ०६	१५ ०४ २६	१७ २१ ४५	१९ ३८ ०२	२१ ५७ ३०	० १६ ०८	२ २४ १४	४ ०६ ४२
३१	५ ३० १८	६ ५५ १३	८ ३० १८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	६ ५१ १७	८ २६ २३	१० २१ ४४	१२ ३६ १५	१४ ५६ ३४	१७ १३ ५३	१९ ३० १०	२१ ४९ ३८	० ०८ १६	२ १६ २२	३ ५८ ५०	५ २६ २२
२	६ ४७ २१	८ २२ २७	१० १७ ४८	१२ ३२ १९	१४ ५२ ३९	१७ ०९ ५८	१९ २६ १५	२१ ४५ ४३	० ०४ २०	२ १२ २६	३ ५४ ५४	५ २२ २६
३	६ ४३ २५	८ १८ ३१	१० १३ ५२	१२ २८ २३	१४ ४८ ४३	१७ ०६ ०२	१९ २२ १९	२१ ४१ ४७	० ०० २४	२ ०८ ३०	३ ५० ५९	५ १८ ३०
४	६ ३९ ३०	८ १४ ३५	१० ०९ ५७	१२ २४ २७	१४ ४४ ४७	१७ ०२ ०६	१९ १८ २३	२१ ३७ ५१	२३ ५६ २८	२ ०४ ३४	३ ४७ ०३	५ १४ ३४
५	६ ३५ ३४	८ १० ३९	१० ०६ ०१	१२ २० ३१	१४ ४० ५१	१६ ५८ १०	१९ १४ २७	२१ ३३ ५५	२३ ५२ ३२	२ ०० ३८	३ ४३ ०७	५ १० ३८
६	६ ३१ ३८	८ ०६ ४३	१० ०२ ०५	१२ १६ ३५	१४ ३६ ५५	१६ ५४ १४	१९ १० ३१	२१ २९ ५९	२३ ४८ ३६	१ ५६ ४३	३ ३९ ११	५ ०६ ४३
७	६ २७ ४२	८ ०२ ४७	९ ५८ ०९	१२ १२ ३९	१४ ३२ ५९	१६ ५० १८	१९ ०६ ३५	२१ २६ ०३	२३ ४४ ४१	१ ५२ ४७	३ ३५ १५	५ ०२ ४७
८	६ २३ ४६	७ ५८ ५१	९ ५४ १३	१२ ०८ ४३	१४ २९ ०३	१६ ४६ २२	१९ ०२ ३९	२१ २२ ०७	२३ ४० ४५	१ ४८ ५१	३ ३१ १९	४ ५८ ५१
९	६ १९ ५०	७ ५४ ५५	९ ५० १७	१२ ०४ ४७	१४ २५ ०७	१६ ४२ २६	१८ ५८ ४३	२१ १८ ११	२३ ३६ ४९	१ ४४ ५५	३ २७ २३	४ ५४ ५५
१०	६ १५ ५४	७ ५० ५९	९ ४६ २१	१२ ०० ५२	१४ २१ ११	१६ ३८ ३०	१८ ५४ ४७	२१ १४ १५	२३ ३२ ५३	१ ४० ५९	३ २३ २७	४ ५० ५९
११	६ ११ ५८	७ ४७ ०३	९ ४२ २५	११ ५६ ५६	१४ १७ १५	१६ ३४ ३४	१८ ५० ५१	२१ १० १९	२३ २८ ५७	१ ३७ ०३	३ १९ ३१	४ ४७ ०३
१२	६ ०८ ०२	७ ४३ ०८	९ ३८ २९	११ ५३ ००	१४ १३ २०	१६ ३० ३९	१८ ४६ ५६	२१ ०६ २४	२३ २५ ०१	१ ३३ ०७	३ १५ ३५	४ ४३ ०७
१३	६ ०४ ०६	७ ३९ १२	९ ३४ ३३	११ ४९ ०४	१४ ०९ २४	१६ २६ ४३	१८ ४३ ००	२१ ०२ २८	२३ २१ ०५	१ २९ ११	३ ११ ३९	४ ३९ ११
१४	६ ०० ११	७ ३५ १६	९ ३० ३८	११ ४५ ०८	१४ ०५ २८	१६ २२ ४७	१८ ३९ ०४	२० ५८ ३२	२३ १७ ०९	१ २५ १५	३ ०७ ४४	४ ३५ १५
१५	५ ५६ १५	७ ३१ २०	९ २६ ४२	११ ४१ १२	१४ ०१ ३२	१६ १८ ५१	१८ ३५ ०८	२० ५४ ३६	२३ १३ १३	१ २१ १९	३ ०३ ४८	४ ३१ १९
१६	५ ५२ १९	७ २७ २४	९ २२ ४६	११ ३७ १६	१३ ५७ ३६	१६ १४ ५५	१८ ३१ १२	२० ५० ४०	२३ ०९ १७	१ १७ २४	२ ५९ ५२	४ २७ २४
१७	५ ४८ २३	७ २३ २८	९ १८ ५०	११ ३३ २०	१३ ५३ ४०	१६ १० ५९	१८ २७ १६	२० ४६ ४४	२३ ०५ २२	१ १३ २८	२ ५५ ५६	४ २३ २८
१८	५ ४४ २७	७ १९ ३२	९ १४ ५४	११ २९ २४	१३ ४९ ४४	१६ ०७ ०३	१८ २३ २०	२० ४२ ४८	२३ ०१ २६	१ ०९ ३२	२ ५२ ००	४ १९ ३२
१९	५ ४० ३१	७ १५ ३६	९ १० ५८	११ २५ २८	१३ ४५ ४८	१६ ०३ ०७	१८ १९ २४	२० ३८ ५२	२२ ५७ ३०	१ ०५ ३६	२ ४८ ०४	४ १५ ३६
२०	५ ३६ ३५	७ ११ ४०	९ ०७ ०२	११ २१ ३३	१३ ४१ ५२	१५ ५९ ११	१८ १५ २८	२० ३४ ५६	२२ ५३ ३४	१ ०१ ४०	२ ४४ ०८	४ ११ ४०
२१	५ ३२ ३९	७ ०७ ४४	९ ०३ ०६	११ १७ ३७	१३ ३७ ५६	१५ ५५ १५	१८ ११ ३२	२० ३१ ००	२२ ४९ ३८	० ५७ ४४	२ ४० १२	४ ०७ ४४
२२	५ २८ ४३	७ ०३ ४९	८ ५९ १०	११ १३ ४१	१३ ३४ ०१	१५ ५१ २०	१८ ०७ ३७	२० २७ ०४	२२ ४५ ४२	० ५३ ४८	२ ३६ १६	४ ०३ ४८
२३	५ २४ ४७	६ ५९ ५३	८ ५५ १४	११ ०९ ४५	१३ ३० ०५	१५ ४७ २४	१८ ०३ ४१	२० २३ ०९	२२ ४१ ४६	० ४९ ५२	२ ३२ २०	३ ५९ ५२
२४	५ २० ५१	६ ५५ ५७	८ ५१ १८	११ ०५ ४९	१३ २६ ०९	१५ ४३ २८	१७ ५९ ४५	२० १९ १३	२२ ३७ ५०	० ४५ ५६	२ २८ २५	३ ५५ ५६
२५	५ १६ ५६	६ ५२ ०१	८ ४७ २३	११ ०१ ५३	१३ २२ १३	१५ ३९ ३२	१७ ५५ ४९	२० १५ १७	२२ ३३ ५४	० ४२ ००	२ २४ २९	३ ५२ ००
२६	५ १३ ००	६ ४८ ०५	८ ४३ २७	१० ५७ ५७	१३ १८ १७	१५ ३५ ३६	१७ ५१ ५३	२० ११ २१	२२ २९ ५८	० ३८ ०५	२ २० ३३	३ ४८ ०४
२७	५ ०९ ०४	६ ४४ ०९	८ ३९ ३१	१० ५४ ०१	१३ १४ २१	१५ ३१ ४०	१७ ४७ ५७	२० ०७ २५	२२ २६ ०३	० ३४ ०९	२ १६ ३७	३ ४४ ०९
२८	५ ०५ ०८	६ ४० १३	८ ३५ ३५	१० ५० ०५	१३ १० २५	१५ २७ ४४	१७ ४४ ०१	२० ०३ २९	२२ २२ ०७	० ३० १३	२ १२ ४१	३ ४० १३
२९	५ ०१ १२	६ ३६ १७	८ ३१ ३९	१० ४६ ०९	१३ ०६ २९	१५ २३ ४८	१७ ४० ०५	१९ ५९ ३३	२२ १८ ११	० २६ १७	२ ०८ ४५	३ ३६ १७
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५ १९ ५२	१७ ३६ ०९	१९ ५५ ३७	२२ १४ १५	० २२ २१	२ ०४ ४९	३ ३२ २१

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	६ २८ २५	८ २३ ४७	१० ३८ १८	१२ ५८ ३८	१५ १५ ५७	१७ ३२ १३	१९ ५१ ४१	२२ १० १९	० १४ २९	२ ०० ५३	३ २८ २५	४ ५३ २०
२	६ २४ ३०	८ १९ ५१	१० ३४ २२	१२ ५४ ४२	१५ १२ ०१	१७ २८ १८	१९ ४७ ४६	२२ ०६ २३	० १० ३३	१ ५६ ५७	३ २४ २९	४ ४९ २४
३	६ २० ३४	८ १५ ५५	१० ३० २६	१२ ५० ४६	१५ ०८ ०५	१७ २४ २२	१९ ४३ ५०	२२ ०२ २७	० ०६ ३७	१ ५३ ०१	३ २० ३३	४ ४५ २८
४	६ १६ ३८	८ १२ ००	१० २६ ३०	१२ ४६ ५०	१५ ०४ ०९	१७ २० २६	१९ ३९ ५४	२१ ५८ ३१	० ०२ ४१	१ ४९ ०६	३ १६ ३७	४ ४१ ३२
५	६ १२ ४२	८ ०८ ०४	१० २२ ३४	१२ ४२ ५४	१५ ०० १३	१७ १६ ३०	१९ ३५ ५८	२१ ५४ ३५	२३ ५८ ४६	१ ४५ १०	३ १२ ४१	४ ३७ ३७
६	६ ०८ ४६	८ ०४ ०८	१० १८ ३८	१२ ३८ ५८	१४ ५६ १७	१७ १२ ३४	१९ ३२ ०२	२१ ५० ३९	२३ ५४ ५०	१ ४१ १४	३ ०८ ४५	४ ३३ ४१
७	६ ०४ ५०	८ ०० १२	१० १४ ४२	१२ ३५ ०२	१४ ५२ २१	१७ ०८ ३८	१९ २८ ०६	२१ ४६ ४४	२३ ५० ५४	१ ३७ १८	३ ०४ ५०	४ २९ ४५
८	६ ०० ५४	७ ५६ १६	१० १० ४६	१२ ३१ ०६	१४ ४८ २५	१७ ०४ ४२	१९ २४ १०	२१ ४२ ४८	२३ ४६ ५८	१ ३३ २२	३ ०० ५४	४ २५ ४९
९	५ ५६ ५८	७ ५२ २०	१० ०६ ५०	१२ २७ १०	१४ ४४ २९	१७ ०० ४६	१९ २० १४	२१ ३८ ५२	२३ ४३ ०२	१ २९ २६	२ ५६ ५८	४ २१ ५३
१०	५ ५३ ०२	७ ४८ २४	१० ०२ ५५	१२ २३ १४	१४ ४० ३३	१६ ५६ ५०	१९ १६ १८	२१ ३४ ५६	२३ ३९ ०६	१ २५ ३०	२ ५३ ०२	४ १७ ५७
११	५ ४९ ०६	७ ४४ २८	९ ५८ ५९	१२ १९ १९	१४ ३६ ३८	१६ ५२ ५४	१९ १२ २२	२१ ३१ ००	२३ ३५ १०	१ २१ ३४	२ ४९ ०६	४ १४ ०१
१२	५ ४५ ११	७ ४० ३२	९ ५५ ०३	१२ १५ २३	१४ ३२ ४२	१६ ४८ ५९	१९ ०८ २७	२१ २७ ०४	२३ ३१ १४	१ १७ ३८	२ ४५ १०	४ १० ०५
१३	५ ४१ १५	७ ३६ ३६	९ ५१ ०७	१२ ११ २७	१४ २८ ४६	१६ ४५ ०३	१९ ०४ ३१	२१ २३ ०८	२३ २७ १८	१ १३ ४२	२ ४१ १४	४ ०६ ०९
१४	५ ३७ १९	७ ३२ ४१	९ ४७ ११	१२ ०७ ३१	१४ २४ ५०	१६ ४१ ०७	१९ ०० ३५	२१ १९ १२	२३ २३ २२	१ ०९ ४७	२ ३७ १८	४ ०२ १३
१५	५ ३३ २३	७ २८ ४५	९ ४३ १५	१२ ०३ ३५	१४ २० ५४	१६ ३७ ११	१८ ५६ ३९	२१ १५ १६	२३ १९ २७	१ ०५ ५१	२ ३३ २२	३ ५८ १८
१६	५ २९ २७	७ २४ ४९	९ ३९ १९	११ ५९ ३९	१४ १६ ५८	१६ ३३ १५	१८ ५२ ४३	२१ ११ २०	२३ १५ ३१	१ ०१ ५५	२ २९ २६	३ ५४ २२
१७	५ २५ ३१	७ २० ५३	९ ३५ २३	११ ५५ ४३	१४ १३ ०२	१६ २९ १९	१८ ४८ ४७	२१ ०७ २५	२३ ११ ३५	० ५७ ५९	२ २५ ३१	३ ५० २६
१८	५ २१ ३५	७ १६ ५७	९ ३१ २७	११ ५१ ४७	१४ ०९ ०६	१६ २५ २३	१८ ४४ ५१	२१ ०३ २९	२३ ०७ ३९	० ५४ ०३	२ २१ ३५	३ ४६ ३०
१९	५ १७ ३९	७ १३ ०१	९ २७ ३२	११ ४७ ५१	१४ ०५ १०	१६ २१ २७	१८ ४० ५५	२० ५९ ३३	२३ ०३ ४३	० ५० ०७	२ १७ ३९	३ ४२ ३४
२०	५ १३ ४३	७ ०९ ०५	९ २३ ३६	११ ४३ ५५	१४ ०१ १४	१६ १७ ३१	१८ ३६ ५९	२० ५५ ३७	२२ ५९ ४७	० ४६ ११	२ १३ ४३	३ ३८ ३८
२१	५ ०९ ४७	७ ०५ ०९	९ १९ ४०	११ ४० ००	१३ ५७ १९	१६ १३ ३५	१८ ३३ ०३	२० ५१ ४१	२२ ५५ ५१	० ४२ १५	२ ०९ ४७	३ ३४ ४२
२२	५ ०५ ५२	७ ०१ १३	९ १५ ४४	११ ३६ ०४	१३ ५३ २३	१६ ०९ ४०	१८ २९ ०८	२० ४७ ४५	२२ ५१ ५५	० ३८ १९	२ ०५ ५१	३ ३० ४६
२३	५ ०१ ५६	६ ५७ १७	९ ११ ४८	११ ३२ ०८	१३ ४९ २७	१६ ०५ ४४	१८ २५ १२	२० ४३ ४९	२२ ४७ ५९	० ३४ २३	२ ०१ ५५	३ २६ ५०
२४	४ ५८ ००	६ ५३ २२	९ ०७ ५२	११ २८ १२	१३ ४५ ३१	१६ ०१ ४८	१८ २१ १६	२० ३९ ५३	२२ ४४ ०३	० ३० २७	१ ५७ ५९	३ २२ ५४
२५	४ ५४ ०४	६ ४९ २६	९ ०३ ५६	११ २४ १६	१३ ४१ ३५	१५ ५७ ५२	१८ १७ २०	२० ३५ ५७	२२ ४० ०८	० २६ ३२	१ ५४ ०३	३ १८ ५९
२६	४ ५० ०८	६ ४५ ३०	९ ०० ००	११ २० २०	१३ ३७ ३९	१५ ५३ ५६	१८ १३ २४	२० ३२ ०२	२२ ३६ १२	० २२ ३६	१ ५० ०७	३ १५ ०३
२७	४ ४६ १२	६ ४१ ३४	८ ५६ ०४	११ १६ २४	१३ ३३ ४३	१५ ५० ००	१८ ०९ २८	२० २८ ०६	२२ ३२ १६	० १४ ४४	१ ४६ १२	३ ११ ०७
२८	४ ४२ १६	६ ३७ ३८	८ ५२ ०८	११ १२ २८	१३ २९ ४७	१५ ४६ ०४	१८ ०५ ३२	२० २४ १०	२२ २८ २०	० १० ४८	१ ४२ १६	३ ०७ ११
२९	४ ३८ २०	६ ३३ ४२	८ ४८ १३	११ ०८ ३२	१३ २५ ५१	१५ ४२ ०८	१८ ०१ ३६	२० २० १४	२२ २४ २४	० ०६ ५२	१ ३८ २०	३ ०३ १५
३०	४ ३४ २४	६ २९ ४६	८ ४४ १७	११ ०४ ३७	१३ २१ ५५	१५ ३८ १२	१७ ५७ ४०	२० १६ १८	२२ २० २८	० ०२ ५६	१ ३४ २४	२ ५९ १९
३१	४ ३० २८	६ २५ ५०	८ ४० २१	११ ०० ४१	१३ १८ ००	१५ ३४ १७	१७ ५३ ४५	२० १२ २२	२२ १६ ३२	२३ ५९ ००	१ ३० २८	२ ५५ २३

जून दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६ २१ ५४	८ ३६ २५	१० ५६ ४५	१३ १४ ०४	१५ ३० २१	१७ ४९ ४९	२० ०८ २६	२२ १२ ३६	२३ ५५ ०४	१ २६ ३२	२ ५१ २७	४ २६ ३३
२	६ १७ ५८	८ ३२ २९	१० ५२ ४९	१३ १० ०८	१५ २६ २५	१७ ४५ ५३	२० ०४ ३०	२२ ०८ ४०	२३ ५१ ०८	१ २२ ३६	२ ४७ ३१	४ २२ ३७
३	६ १४ ०३	८ २८ ३३	१० ४८ ५३	१३ ०६ १२	१५ २२ २९	१७ ४१ ५७	२० ०० ३४	२२ ०४ ४४	२३ ४७ १३	१ १८ ४०	२ ४३ ३५	४ १८ ४१
४	६ १० ०७	८ २४ ३७	१० ४४ ५७	१३ ०२ १६	१५ १८ ३३	१७ ३८ ०१	१९ ५६ ३८	२२ ०० ४९	२३ ४३ १७	१ १४ ४४	२ ३९ ४०	४ १४ ४५
५	६ ०६ ११	८ २० ४१	१० ४१ ०१	१२ ५८ २०	१५ १४ ३७	१७ ३४ ०५	१९ ५२ ४३	२१ ५६ ५३	२३ ३९ २१	१ १० ४८	२ ३५ ४४	४ १० ४९
६	६ ०२ १५	८ १६ ४५	१० ३७ ०५	१२ ५४ २४	१५ १० ४१	१७ ३० ०९	१९ ४८ ४७	२१ ५२ ५७	२३ ३५ २५	१ ०६ ५३	२ ३१ ४८	४ ०६ ५३
७	५ ५८ १९	८ १२ ४९	१० ३३ ०९	१२ ५० २८	१५ ०६ ४५	१७ २६ १३	१९ ४४ ५१	२१ ४९ ०१	२३ ३१ २९	१ ०२ ५७	२ २७ ५२	४ ०२ ५७
८	५ ५४ २३	८ ०८ ५४	१० २९ १३	१२ ४६ ३२	१५ ०२ ४९	१७ २२ १७	१९ ४० ५५	२१ ४५ ०५	२३ २७ ३३	० ५९ ०१	२ २३ ५६	३ ५९ ०१
९	५ ५० २७	८ ०४ ५८	१० २५ १८	१२ ४२ ३७	१४ ५८ ५४	१७ १८ २१	१९ ३६ ५९	२१ ४१ ०९	२३ २३ ३७	० ५५ ०५	२ २० ००	३ ५५ ०५
१०	५ ४६ ३१	८ ०१ ०२	१० २१ २२	१२ ३८ ४१	१४ ५४ ५८	१७ १४ २६	१९ ३३ ०३	२१ ३७ १३	२३ १९ ४१	० ५१ ०९	२ १६ ०४	३ ५१ ०९
११	५ ४२ ३५	७ ५७ ०६	१० १७ २६	१२ ३४ ४५	१४ ५१ ०२	१७ १० ३०	१९ २९ ०७	२१ ३३ १७	२३ १५ ४५	० ४७ १३	२ १२ ०८	३ ४७ १४
१२	५ ३८ ४०	७ ५३ १०	१० १३ ३०	१२ ३० ४९	१४ ४७ ०६	१७ ०६ ३४	१९ २५ ११	२१ २९ २१	२३ ११ ४९	० ४३ १७	२ ०८ १२	३ ४३ १८
१३	५ ३४ ४४	७ ४९ १४	१० ०९ ३४	१२ २६ ५३	१४ ४३ १०	१७ ०२ ३८	१९ २१ १५	२१ २५ २६	२३ ०७ ५४	० ३९ २१	२ ०४ १६	३ ३९ २२
१४	५ ३० ४८	७ ४५ १८	१० ०५ ३८	१२ २२ ५७	१४ ३९ १४	१६ ५८ ४२	१९ १७ २०	२१ २१ ३०	२३ ०३ ५८	० ३५ २५	२ ०० २१	३ ३५ २६
१५	५ २६ ५२	७ ४१ २२	१० ०१ ४२	१२ १९ ०१	१४ ३५ १८	१६ ५४ ४६	१९ १३ २४	२१ १७ ३४	२३ ०० ०२	० ३१ २९	१ ५६ २५	३ ३१ ३०
१६	५ २२ ५६	७ ३७ २६	९ ५७ ४६	१२ १५ ०५	१४ ३१ २२	१६ ५० ५०	१९ ०९ २८	२१ १३ ३८	२२ ५६ ०६	० २७ ३४	१ ५२ २९	३ २७ ३४
१७	५ १९ ००	७ ३३ ३१	९ ५३ ५०	१२ ११ ०९	१४ २७ २६	१६ ४६ ५४	१९ ०५ ३२	२१ ०९ ४२	२२ ५२ १०	० २३ ३८	१ ४८ ३३	३ २३ ३८
१८	५ १५ ०४	७ २९ ३५	९ ४९ ५४	१२ ०७ १३	१४ २३ ३०	१६ ४२ ५८	१९ ०१ ३६	२१ ०५ ४६	२२ ४८ १४	० १५ ४६	१ ४४ ३७	३ १९ ४२
१९	५ ११ ०८	७ २५ ३९	९ ४५ ५९	१२ ०३ १८	१४ १९ ३५	१६ ३९ ०३	१८ ५७ ४०	२१ ०१ ५०	२२ ४४ १८	० ११ ५०	१ ४० ४१	३ १५ ४६
२०	५ ०७ १२	७ २१ ४३	९ ४२ ०३	११ ५९ २२	१४ १५ ३९	१६ ३५ ०७	१८ ५३ ४४	२० ५७ ५४	२२ ४० २२	० ०७ ५४	१ ३६ ४५	३ ११ ५१
२१	५ ०३ १६	७ १७ ४७	९ ३८ ०७	११ ५५ २६	१४ ११ ४३	१६ ३१ ११	१८ ४९ ४८	२० ५३ ५८	२२ ३६ २६	० ०३ ५८	१ ३२ ४९	३ ०७ ५५
२२	४ ५९ २१	७ १३ ५१	९ ३४ ११	११ ५१ ३०	१४ ०७ ४७	१६ २७ १५	१८ ४५ ५२	२० ५० ०२	२२ ३२ ३१	० ०० ०२	१ २८ ५३	३ ०३ ५९
२३	४ ५५ २५	७ ०९ ५५	९ ३० १५	११ ४७ ३४	१४ ०३ ५१	१६ २३ १९	१८ ४१ ५६	२० ४६ ०७	२२ २८ ३५	२३ ५६ ०६	१ २४ ५७	३ ०० ०३
२४	४ ५१ २९	७ ०५ ५९	९ २६ १९	११ ४३ ३८	१३ ५९ ५५	१६ १९ २३	१८ ३८ ०१	२० ४२ ११	२२ २४ ३९	२३ ५२ १०	१ २१ ०२	२ ५६ ०७
२५	४ ४७ ३३	७ ०२ ०३	९ २२ २३	११ ३९ ४२	१३ ५५ ५९	१६ १५ २७	१८ ३४ ०५	२० ३८ १५	२२ २० ४३	२३ ४८ १५	१ १७ ०६	२ ५२ ११
२६	४ ४३ ३७	६ ५८ ०८	९ १८ २७	११ ३५ ४६	१३ ५२ ०३	१६ ११ ३१	१८ ३० ०९	२० ३४ १९	२२ १६ ४७	२३ ४४ १९	१ १३ १०	२ ४८ १५
२७	४ ३९ ४१	६ ५४ १२	९ १४ ३१	११ ३१ ५०	१३ ४८ ०७	१६ ०७ ३५	१८ २६ १३	२० ३० २३	२२ १२ ५१	२३ ४० २३	१ ०९ १४	२ ४४ १९
२८	४ ३५ [illegible]	६ [illegible] १६	[illegible]	११ [illegible] ५५	१३ ४४ १२	१६ ०३ ३९	१८ २२ १७	२० २६ २७	२२ ०८ ५५	२३ ३६ २७	१ ०५ १८	२ ४० २३
२९	४ ३१ ४९	६ ४६ २०	९ ०६ ४०	११ २३ ५९	१३ ४० १६	१५ ५९ ४४	१८ १८ २१	२० २२ ३१	२२ ०४ ५९	२३ ३२ ३१	१ ०१ २२	२ ३६ २७
३०	४ २७ ५३	६ ४२ २४	९ ०२ ४४	११ २० ०३	१३ ३६ २०	१५ ५५ ४८	१८ १४ २५	२० १८ ३५	२२ ०१ ०३	२३ २८ ३५	० ५७ २६	२ ३२ ३२

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३८ २८	८ ५८ ४८	११ १६ ०७	१३ ३२ २४	१५ ५१ ५२	१८ १० २१	२० १४ ३१	२१ ५७ ०७	२३ २४ ३९	० ५३ ३०	२ २८ ३६	४ २३ ५७
२	६ ३४ ३२	८ ५४ ५२	११ १२ ११	१३ २८ २८	१५ ४७ ५६	१८ ०६ ३३	२० १० ४३	२१ ५३ ११	२३ २० ४३	० ४९ ३४	२ २४ ४०	४ [illegible] ०२
३	६ ३० ३६	८ ५० ५६	११ ०८ १५	१३ २४ ३२	१५ ४४ ००	१८ ०२ ३८	२० ०६ ४८	२१ ४९ १६	२३ १६ ४७	० ४५ ३८	२ २० ४४	४ १६ ०६
४	६ २६ ४०	८ ४७ ००	११ ०४ १९	१३ २० ३६	१५ ४० ०४	१७ ५८ ४२	२० ०२ ५२	२१ ४५ २०	२३ १२ ५१	० ४१ ४३	२ १६ ४८	४ १२ १०
५	६ २२ ४४	८ ४३ ०४	११ ०० २३	१३ १६ ४०	१५ ३६ ०८	१७ ५४ ४६	१९ ५८ ५६	२१ ४१ २४	२३ ०८ ५६	० ३७ ४७	२ १२ ५२	४ ०८ १४
६	६ १८ ४९	८ ३९ ०८	१० ५६ २७	१३ १२ ४४	१५ ३२ १२	१७ ५० ५०	१९ ५५ ००	२१ ३७ २८	२३ ०५ ००	० ३३ ५१	२ ०८ ५६	४ ०४ १८
७	६ १४ ५३	८ ३५ १२	१० ५२ ३१	१३ ०८ ४८	१५ २८ १६	१७ ४६ ५४	१९ ५१ ०४	२१ ३३ ३२	२३ ०१ ०४	० २९ ५५	२ ०५ ००	४ ०० २२
८	६ १० ५७	८ ३१ १७	१० ४८ ३६	१३ ०४ ५३	१५ २४ २१	१७ ४२ ५८	१९ ४७ ०८	२१ २९ ३६	२२ ५७ ०८	० २५ ५९	२ ०१ ०४	३ ५६ २६
९	६ ०७ ०१	८ २७ २१	१० ४४ ४०	१३ ०० ५७	१५ २० २५	१७ ३९ ०२	१९ ४३ १२	२१ २५ ४०	२२ ५३ १२	० २२ ०३	१ ५७ ०८	३ ५२ ३०
१०	६ ०३ ०५	८ २३ २५	१० ४० ४४	१२ ५७ ०१	१५ १६ २९	१७ ३५ ०६	१९ ३९ १६	२१ २१ ४४	२२ ४९ १६	० १४ ११	१ ५३ १३	३ ४८ ३४
११	५ ५९ ०९	८ १९ २९	१० ३६ ४८	१२ ५३ ०५	१५ १२ ३३	१७ ३१ १०	१९ ३५ २०	२१ १७ ४८	२२ ४५ २०	० १० १५	१ ४९ १७	३ ४४ ३९
१२	५ ५५ १३	८ १५ ३३	१० ३२ ५२	१२ ४९ ०९	१५ ०८ ३७	१७ २७ १४	१९ ३१ २४	२१ १३ ५२	२२ ४१ २४	० ०६ १९	१ ४५ २१	३ ४० ४३
१३	५ ५१ १७	८ ११ ३७	१० २८ ५६	१२ ४५ १३	१५ ०४ ४१	१७ २३ १९	१९ २७ २९	२१ ०९ ५७	२२ ३७ २८	० ०२ २४	१ ४१ २५	३ ३६ ४७
१४	५ ४७ २१	८ ०७ ४१	१० २५ ००	१२ ४१ १७	१५ ०० ४५	१७ १९ २३	१९ २३ ३३	२१ ०६ ०१	२२ ३३ ३२	२३ ५८ २८	१ ३७ २९	३ ३२ ५१
१५	५ ४३ २६	८ ०३ ४५	१० २१ ०४	१२ ३७ २१	१४ ५६ ४९	१७ १५ २७	१९ १९ ३७	२१ ०२ ०५	२२ २९ ३६	२३ ५४ ३२	१ ३३ ३३	३ २८ ५५
१६	५ ३९ ३०	७ ५९ ४९	१० १७ ०८	१२ ३३ २५	१४ ५२ ५३	१७ ११ ३१	१९ १५ ४१	२० ५८ ०९	२२ २५ ४१	२३ ५० ३६	१ २९ ३७	३ २४ ५९
१७	५ ३५ ३४	७ ५५ ५४	१० १३ १२	१२ २९ २९	१४ ४८ ५७	१७ ०७ ३५	१९ ११ ४५	२० ५४ १३	२२ २१ ४५	२३ ४६ ४०	१ २५ ४१	३ २१ ०३
१८	५ ३१ ३८	७ ५१ ५८	१० ०९ १७	१२ २५ ३४	१४ ४५ ०२	१७ ०३ ३९	१९ ०७ ४९	२० ५० १७	२२ १७ ४९	२३ ४२ ४४	१ २१ ४५	३ १७ ०७
१९	५ २७ ४२	७ ४८ ०२	१० ०५ २१	१२ २१ ३८	१४ ४१ ०६	१६ ५९ ४३	१९ ०३ ५३	२० ४६ २१	२२ १३ ५३	२३ ३८ ४८	१ १७ ४९	३ १३ ११
२०	५ २३ ४६	७ ४४ ०६	१० ०१ २५	१२ १७ ४२	१४ ३७ १०	१६ ५५ ४७	१८ ५९ ५७	२० ४२ २५	२२ ०९ ५७	२३ ३४ ५२	१ १३ ५४	३ ०९ १५
२१	५ १९ ५०	७ ४० १०	९ ५७ २९	१२ १३ ४६	१४ ३३ १४	१६ ५१ ५१	१८ ५६ ०१	२० ३८ २९	२२ ०६ ०१	२३ ३० ५६	१ ०९ ५८	३ ०५ २०
२२	५ १५ ५४	७ ३६ १४	९ ५३ ३३	१२ ०९ ५०	१४ २९ १८	१६ ४७ ५५	१८ ५२ ०६	२० ३४ ३४	२२ ०२ ०५	२३ २७ ००	१ ०६ ०२	३ ०१ २४
२३	५ ११ ५८	७ ३२ १८	९ ४९ ३७	१२ ०५ ५४	१४ २५ २२	१६ ४४ ००	१८ ४८ १०	२० ३० ३८	२१ ५८ ०९	२३ २३ ०५	१ ०२ ०६	२ ५७ २८
२४	५ ०८ ०२	७ २८ २२	९ ४५ ४१	१२ ०१ ५८	१४ २१ २६	१६ ४० ०४	१८ ४४ १४	२० २६ ४२	२१ ५४ १३	२३ १९ ०९	० ५८ १०	२ ५३ ३२
२५	५ ०४ ०७	७ २४ २६	९ ४२ ४५	११ ५८ ०२	१४ १७ ३०	१६ ३६ ०८	१८ ४० १८	२० २२ ४६	२१ ५० १७	२३ १५ १३	० ५४ १४	२ ४९ ३६
२६	५ ०० ११	७ २० ३०	९ ३७ ४९	११ ५४ ०६	१४ १३ ३४	१६ ३२ १२	१८ ३६ २२	२० १८ ५०	२१ ४६ २२	२३ ११ १७	० ५० १८	२ ४५ ४०
२७	४ ५६ १५	७ १६ ३५	९ ३३ ५४	११ ५० ११	१४ ०९ ३९	१६ २८ १६	१८ ३२ २६	२० १४ ५४	२१ ४२ २६	२३ ०७ २१	० ४६ २२	२ ४१ ४४
२८	४ ५२ १९	७ १२ ३९	९ २९ ५८	११ ४६ १५	१४ ०५ ४३	१६ २४ २०	१८ २८ ३०	२० १० ५८	२१ ३८ ३०	२३ ०३ २५	० ४२ २६	२ ३७ ४८
२९	४ ४८ २३	७ ०८ ४३	९ २६ ०२	११ ४२ १९	१४ ०१ ४७	१६ २० २४	१८ २४ ३४	२० ०७ ०२	२१ ३४ ३४	२२ ५९ २९	० ३८ ३०	२ ३३ ५२
३०	४ ४४ २७	७ ०४ ४७	९ २२ ०६	११ ३८ २३	१३ ५७ ५१	१६ १६ २८	१८ २० ३८	२० ०३ ०६	२१ ३० ३८	२२ ५५ ३३	० ३४ ३५	२ २९ ५७

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५६ ५५	९ १४ १४	११ ३० ३१	१३ ४९ ५९	१६ ०८ ३७	१८ १२ ४६	१९ ५५ १४	२१ २२ ४६	२२ ४७ ४१	० २६ ४३	२ २२ ०५	४ ३६ ३५
२	६ ५२ ५९	९ १० १८	११ २६ ३५	१३ ४६ ०३	१६ ०४ ४१	१८ ०८ ५१	१९ ५१ १९	२१ १८ ५०	२२ ४३ ४६	० २२ ४७	२ १८ ०९	४ ३२ ३९
३	६ ४९ ०३	९ ०६ २२	११ २२ ३९	१३ ४२ ०७	१६ ०० ४५	१८ ०४ ५५	१९ ४७ २३	२१ १४ ५४	२२ ३९ ५०	० १४ ५५	२ १४ १३	४ २८ ४३
४	६ ४५ ०७	९ ०२ २६	११ १८ ४३	१३ ३८ ११	१५ ५६ ४९	१८ ०० ५९	१९ ४३ २७	२१ १० ५८	२२ ३५ ५४	० १० ५९	२ १० १७	४ २४ ४८
५	६ ४१ १२	८ ५८ ३०	११ १४ ४७	१३ ३४ १५	१५ ५२ ५३	१७ ५७ ०३	१९ ३९ ३१	२१ ०७ ०३	२२ ३१ ५८	० ०७ ०३	२ ०६ २१	४ २० ५२
६	६ ३७ १६	८ ५४ ३५	११ १० ५२	१३ ३० २०	१५ ४८ ५७	१७ ५३ ०७	१९ ३५ ३५	२१ ०३ ०७	२२ २८ ०२	० ०३ ०७	२ ०२ २५	४ १६ ५६
७	६ ३३ २०	८ ५० ३९	११ ०६ ५६	१३ २६ २४	१५ ४५ ०१	१७ ४९ ११	१९ ३१ ३९	२० ५९ ११	२२ २४ ०६	२३ ५९ ११	१ ५८ २९	४ १३ ००
८	६ २९ २४	८ ४६ ४३	११ ०३ ००	१३ २२ २८	१५ ४१ ०५	१७ ४५ १५	१९ २७ ४३	२० ५५ १५	२२ २० १०	२३ ५५ १६	१ ५४ ३३	४ ०९ ०४
९	६ २५ २८	८ ४२ ४७	१० ५९ ०४	१३ १८ ३२	१५ ३७ ०९	१७ ४१ १९	१९ २३ ४७	२० ५१ १९	२२ १६ १४	२३ ५१ २०	१ ५० ३७	४ ०५ ०८
१०	६ २१ ३२	८ ३८ ५१	१० ५५ ०८	१३ १४ ३६	१५ ३३ १३	१७ ३७ २३	१९ १९ ५१	२० ४७ २३	२२ १२ १८	२३ ४७ २४	१ ४६ ४२	४ ०१ १२
११	६ १७ ३६	८ ३४ ५५	१० ५१ १२	१३ १० ४०	१५ २९ १७	१७ ३३ २७	१९ १५ ५५	२० ४३ २७	२२ ०८ २२	२३ ४३ २८	१ ४२ ४६	३ ५७ १६
१२	६ १३ ४०	८ ३० ५९	१० ४७ १६	१३ ०६ ४४	१५ २५ २२	१७ २९ ३२	१९ १२ ००	२० ३९ ३१	२२ ०४ २६	२३ ३९ ३२	१ ३८ ५०	३ ५३ २०
१३	६ ०९ ४४	८ २७ ०३	१० ४३ २०	१३ ०२ ४८	१५ २१ २६	१७ २५ ३६	१९ ०८ ०४	२० ३५ ३५	२२ ०० ३१	२३ ३५ ३६	१ ३४ ५४	३ ४९ २४
१४	६ ०५ ४८	८ २३ ०७	१० ३९ २४	१२ ५८ ५२	१५ १७ ३०	१७ २१ ४०	१९ ०४ ०८	२० ३१ ३९	२१ ५६ ३५	२३ ३१ ४०	१ ३० ५८	३ ४५ २९
१५	६ ०१ ५३	८ १९ ११	१० ३५ २८	१२ ५४ ५६	१५ १३ ३४	१७ १७ ४४	१९ ०० १२	२० २७ ४४	२१ ५२ ३९	२३ २७ ४४	१ २७ ०२	३ ४१ ३३
१६	५ ५७ ५७	८ १५ १६	१० ३१ ३३	१२ ५१ ०१	१५ ०९ ३८	१७ १३ ४८	१८ ५६ १६	२० २३ ४८	२१ ४८ ४३	२३ २३ ४८	१ २३ ०६	३ ३७ ३७
१७	५ ५४ ०१	८ ११ २०	१० २७ ३७	१२ ४७ ०५	१५ ०५ ४२	१७ ०९ ५२	१८ ५२ २०	२० १९ ५२	२१ ४४ ४७	२३ १९ ५२	१ १९ १०	३ ३३ ४१
१८	५ ५० ०५	८ ०७ २४	१० २३ ४१	१२ ४३ ०९	१५ ०१ ४६	१७ ०५ ५६	१८ ४८ २४	२० १५ ५६	२१ ४० ५१	२३ १५ ५७	१ १५ १४	३ २९ ४५
१९	५ ४६ ०९	८ ०३ २८	१० १९ ४५	१२ ३९ १३	१४ ५७ ५०	१७ ०२ ००	१८ ४४ २८	२० १२ ००	२१ ३६ ५५	२३ १२ ०१	१ ११ १९	३ २५ ४९
२०	५ ४२ १३	७ ५९ ३२	१० १५ ४९	१२ ३५ १७	१४ ५३ ५४	१६ ५८ ०४	१८ ४० ३२	२० ०८ ०४	२१ ३२ ५९	२३ ०८ ०५	१ ०७ २३	३ २१ ५३
२१	५ ३८ १७	७ ५५ ३६	१० ११ ५३	१२ ३१ २१	१४ ४९ ५९	१६ ५४ ०८	१८ ३६ ३६	२० ०४ ०८	२१ २९ ०३	२३ ०४ ०९	१ ०३ २७	३ १७ ५७
२२	५ ३४ २१	७ ५१ ४०	१० ०७ ५७	१२ २७ २५	१४ ४६ ०३	१६ ५० १३	१८ ३२ ४१	२० ०० १२	२१ २५ ०७	२३ ०० १३	० ५९ ३१	३ १४ ०१
२३	५ ३० २५	७ ४७ ४४	१० ०४ ०१	१२ २३ २९	१४ ४२ ०७	१६ ४६ १७	१८ २८ ४५	१९ ५६ १६	२१ २१ ११	२२ ५६ १७	० ५५ ३५	३ १० ०६
२४	५ २६ २९	७ ४३ ४८	१० ०० ०५	१२ १९ ३३	१४ ३८ ११	१६ ४२ २१	१८ २४ ४९	१९ ५२ २०	२१ १७ १६	२२ ५२ २१	० ५१ ३९	३ ०६ १०
२५	५ २२ ३४	७ ३९ ५२	९ ५६ ०९	१२ १५ ३७	१४ ३४ १५	१६ ३८ २५	१८ २० ५३	१९ ४८ २४	२१ १३ २०	२२ ४८ २५	० ४७ ४३	३ ०२ १४
२६	५ १८ ३८	७ ३५ ५७	९ ५२ १४	१२ ११ ४२	१४ ३० १९	१६ ३४ २९	१८ १६ ५७	१९ ४४ २९	२१ ०९ २४	२२ ४४ २९	० ४३ ४७	२ ५८ १८
२७	५ १४ ४२	७ ३२ ०१	९ ४८ १८	१२ ०७ ४६	१४ २६ २३	१६ ३० ३३	१८ १३ ०१	१९ ४० ३३	२१ ०५ २८	२२ ४० ३३	० ३९ ५१	२ ५४ २२
२८	५ १० ४६	७ २८ ०५	९ ४४ २२	१२ ०३ ५०	१४ २२ २७	१६ २६ ३७	१८ ०९ ०५	१९ ३६ ३७	२१ ०१ ३२	२२ ३६ ३७	० ३५ ५५	२ ५० २६
२९	५ ०६ ५०	७ २४ ०९	९ ४० २६	११ ५९ ५४	१४ १८ ३१	१६ २२ ४१	१८ ०५ ०९	१९ ३२ ४१	२० ५७ ३६	२२ ३२ ४२	० ३२ ००	२ ४६ ३०
३०	५ ०२ ५४	७ २० १३	९ ३६ ३०	११ ५५ ५८	१४ १४ ३५	१६ १८ ४५	१८ ०१ १३	१९ २८ ४५	२० ५३ ४०	२२ २८ ४६	० २८ ०४	२ ४२ ३४

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२ २१	९ २८ ३८	११ ४८ ०६	१४ ०६ ४४	१६ १० ५४	१७ ५३ २२	१९ २० ५३	२० ४५ ४८	२२ २० ५४	० १६ १६	२ ३४ ४२	४ ५५ ०२
२	७ ०८ २५	९ २४ ४२	११ ४४ १०	१४ ०२ ४८	१६ ०६ ५८	१७ ४९ २६	१९ १६ ५७	२० ४९ ५३	२२ १६ ५८	० १२ २०	२ ३० ४७	४ ५१ ०६
३	७ ०४ २९	९ २० ४६	११ ४० १४	१३ ५८ ५२	१६ ०३ ०२	१७ ४५ ३०	१९ १३ ०१	२० ३७ ५७	२२ १३ ०२	० ०८ २४	२ २६ ५१	४ ४७ १०
४	७ ०० ३३	९ १६ ५०	११ ३६ १८	१३ ५४ ५६	१५ ५९ ०६	१७ ४१ ३४	१९ ०९ ०५	२० ३४ ०१	२२ ०९ ०६	० ०४ २८	२ २२ ५५	४ ४३ १५
५	६ ५६ ३८	९ १२ ५५	११ ३२ २३	१३ ५१ ००	१५ ५५ १०	१७ ३७ ३८	१९ ०५ १०	२० ३० ०५	२२ ०५ १०	० ०० ३२	२ १८ ५९	४ ३९ १९
६	६ ५२ ४२	९ ०८ ५९	११ २८ २७	१३ ४७ ०४	१५ ५१ १४	१७ ३३ ४२	१९ ०१ १४	२० २६ ०९	२२ ०१ १४	२३ ५६ ३६	२ १५ ०३	४ ३५ २३
७	६ ४८ ४६	९ ०५ ०३	११ २४ ३१	१३ ४३ ०८	१५ ४७ १८	१७ २९ ४६	१८ ५७ १८	२० २२ १३	२१ ५७ १८	२३ ५२ ४०	२ ११ ०७	४ ३१ २७
८	६ ४४ ५०	९ ०१ ०७	११ २० ३५	१३ ३९ १२	१५ ४३ २२	१७ २५ ५०	१८ ५३ २२	२० १८ १७	२१ ५३ २३	२३ ४८ ४५	२ ०७ ११	४ २७ ३१
९	६ ४० ५४	८ ५७ ११	११ १६ ३९	१३ ३५ १६	१५ ३९ २६	१७ २१ ५४	१८ ४९ २६	२० १४ २१	२१ ४९ २७	२३ ४४ ४९	२ ०३ १५	४ २३ ३५
१०	६ ३६ ५८	८ ५३ १५	११ १२ ४३	१३ ३१ २१	१५ ३५ ३०	१७ १७ ५८	१८ ४५ ३०	२० १० २५	२१ ४५ ३१	२३ ४० ५३	१ ५९ १९	४ १९ ३९
११	६ ३३ ०२	८ ४९ १९	११ ०८ ४७	१३ २७ २५	१५ ३१ ३५	१७ १४ ०२	१८ ४१ ३४	२० ०६ २९	२१ ४१ ३५	२३ ३६ ५७	१ ५५ २३	४ १५ ४३
१२	६ २९ ०६	८ ४५ २३	११ ०४ ५१	१३ २३ २९	१५ २७ ३९	१७ १० ०७	१८ ३७ ३८	२० ०२ ३३	२१ ३७ ३९	२३ ३३ ०१	१ ५१ २८	४ ११ ४७
१३	६ २५ १०	८ ४१ २७	११ ०० ५५	१३ १९ ३३	१५ २३ ४३	१७ ०६ ११	१८ ३३ ४२	१९ ५८ ३८	२१ ३३ ४३	२३ २९ ०५	१ ४७ ३२	४ ०७ ५१
१४	६ २१ १४	८ ३७ ३१	१० ५६ ५९	१३ १५ ३७	१५ १९ ४७	१७ ०२ १५	१८ २९ ४६	१९ ५४ ४२	२१ २९ ४७	२३ २५ ०९	१ ४३ ३६	४ ०३ ५६
१५	६ १७ १९	८ ३३ ३६	१० ५३ ०४	१३ ११ ४२	१५ १५ ५१	१६ ५८ १९	१८ २५ ५१	१९ ५० ४६	२१ २५ ५१	२३ २१ १३	१ ३९ ४०	३ ६० ००
१६	६ १३ २३	८ २९ ४०	१० ४९ ०८	१३ ०७ ४५	१५ ११ ५५	१६ ५४ २३	१८ २१ ५५	१९ ४६ ५०	२१ २१ ५५	२३ १७ १७	१ ३५ ४४	३ ५६ ०४
१७	६ ०९ २७	८ २५ ४४	१० ४५ १२	१३ ०३ ४९	१५ ०७ ५९	१६ ५० २७	१८ १७ ५९	१९ ४२ ५४	२१ १७ ५९	२३ १३ २१	१ ३१ ४८	३ ५२ ०८
१८	६ ०५ ३१	८ २१ ४८	१० ४१ १६	१२ ५९ ५३	१५ ०४ ०३	१६ ४६ ३१	१८ १४ ०३	१९ ३८ ५८	२१ १४ ०४	२३ ०९ २६	१ २७ ५२	३ ४८ १२
१९	६ ०१ ३५	८ १७ ५२	१० ३७ २०	१२ ५५ ५७	१५ ०० ०७	१६ ४२ ३५	१८ १० ०७	१९ ३५ ०२	२१ १० ०८	२३ ०५ ३०	१ २३ ५६	३ ४४ १६
२०	५ ५७ ३९	८ १३ ५६	१० ३३ २४	१२ ५२ ०१	१४ ५६ ११	१६ ३८ ३९	१८ ०६ ११	१९ ३१ ०६	२१ ०६ १२	२३ ०१ ३४	१ २० ००	३ ४० २०
२१	५ ५३ ४३	८ १० ००	१० २९ २८	१२ ४८ ०६	१४ ५२ १६	१६ ३४ ४३	१८ ०२ १५	१९ २७ १०	२१ ०२ १६	२२ ५७ ३८	१ १६ ०४	३ ३६ २४
२२	५ ४९ ४७	८ ०६ ०४	१० २५ ३२	१२ ४४ १०	१४ ४८ २०	१६ ३० ४८	१७ ५८ १९	१९ २३ १४	२० ५८ २०	२२ ५३ ४२	१ १२ ०८	३ ३२ २८
२३	५ ४५ ५१	८ ०२ ०८	१० २१ ३६	१२ ४० १४	१४ ४४ २४	१६ २६ ५२	१७ ५४ २३	१९ १९ १९	२० ५४ २४	२२ ४९ ४६	१ ०८ १३	३ २८ ३२
२४	५ ४१ ५५	७ ५८ १२	१० १७ ४०	१२ ३६ १८	१४ ४० २८	१६ २२ ५६	१७ ५० २७	१९ १५ २३	२० ५० २८	२२ ४५ ५०	१ ०४ १७	३ २४ ३७
२५	५ ३८ ००	७ ५४ १७	१० १३ ४५	१२ ३२ २२	१४ ३६ ३२	१६ १९ ००	१७ ४६ ३१	१९ ११ २७	२० ४६ ३२	२२ ४१ ५४	१ ०० २१	३ २० ४१
२६	५ ३४ ०४	७ ५० २१	१० ०९ ४९	१२ २८ २६	१४ ३२ ३६	१६ १५ ०४	१७ ४२ ३६	१९ ०७ ३१	२० ४२ ३६	२२ ३७ ५८	० ५६ २५	३ १६ ४५
२७	५ ३० ०८	७ ४६ २५	१० ०५ ५३	१२ २४ ३०	१४ २८ ४०	१६ ११ ०८	१७ ३८ ४०	१९ ०३ ३५	२० ३८ ४०	२२ ३४ ०२	० ५२ २९	३ १२ ४९
२८	५ २६ १२	७ ४२ २९	१० ०१ ५७	१२ २० ३४	१४ २४ ४४	१६ ०७ १२	१७ ३४ ४४	१८ ५९ ३९	२० ३४ ४५	२२ ३० ०७	० ४८ ३३	३ ०८ ५३
२९	५ २२ १६	७ ३८ ३३	९ ५८ ०१	१२ १६ ३८	१४ २० ४८	१६ ०३ १६	१७ ३० ४८	१८ ५५ ४३	२० ३० ४९	२२ २६ ११	० ४४ ३७	३ ०४ ५७
३०	५ १८ २०	७ ३४ ३७	९ ५४ ०५	१२ १२ ४३	१४ १६ ५२	१५ ५९ २०	१७ २६ ५२	१८ ५१ ४७	२० २६ ५३	२२ २२ १५	० ४० ४१	३ ०१ ०१

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३० ४१	९ ५० ०९	१२ ०८ ४७	१४ १२ ५७	१५ ५५ २४	१७ २२ ५६	१८ ४७ ५१	२० २२ ५७	२२ १८ १९	० ३६ ४५	२ ५७ ०५	५ १४ २४
२	७ २६ ४५	९ ४६ १३	१२ ०४ ५१	१४ ०९ ०१	१५ ५१ २८	१७ १९ ००	१८ ४३ ५५	२० १९ ०१	२२ १४ २३	० ३२ ४९	२ ५३ ०९	५ १० २८
३	७ २२ ४९	९ ४२ १७	१२ ०० ५५	१४ ०५ ०५	१५ ४७ ३३	१७ १५ ०४	१८ ३९ ५९	२० १५ ०५	२२ १० २७	० २८ ५४	२ ४९ १३	५ ०६ ३२
४	७ १८ ५३	९ ३८ २१	११ ५६ ५९	१४ ०१ ०९	१५ ४३ ३७	१७ ११ ०८	१८ ३६ ०४	२० ११ ०९	२२ ०६ ३१	० २४ ५८	२ ४५ १७	५ ०२ ३६
५	७ १४ ५८	९ ३४ २६	११ ५३ ०३	१३ ५७ १३	१५ ३९ ४१	१७ ०७ १२	१८ ३२ ०८	२० ०७ १३	२२ ०२ ३५	० १७ ०६	२ ४१ २२	४ ५८ ४१
६	७ ११ ०२	९ ३० ३०	११ ४९ ०७	१३ ५३ १७	१५ ३५ ४५	१७ ०३ १७	१८ २८ १२	२० ०३ १७	२१ ५८ ३९	० १३ १०	२ ३७ २६	४ ५४ ४५
७	७ ०७ ०६	९ २६ ३४	११ ४५ ११	१३ ४९ २१	१५ ३१ ४९	१६ ५९ २१	१८ २४ १६	१९ ५९ २१	२१ ५४ ४३	० ०९ १४	२ ३३ ३०	४ ५० ४९
८	७ ०३ १०	९ २२ ३८	११ ४१ १५	१३ ४५ २५	१५ २७ ५३	१६ ५५ २५	१८ २० २०	१९ ५५ २५	२१ ५० ४८	० ०५ १८	२ २९ ३४	४ ४६ ५३
९	६ ५९ १४	९ १८ ४२	११ ३७ १९	१३ ४१ २९	१५ २३ ५७	१६ ५१ २९	१८ १६ २४	१९ ५१ ३०	२१ ४६ ५२	० ०१ २२	२ २५ ३८	४ ४२ ५७
१०	६ ५५ १८	९ १४ ४६	११ ३३ २४	१३ ३७ ३३	१५ २० ०१	१६ ४७ ३३	१८ १२ २८	१९ ४७ ३४	२१ ४२ ५६	२३ ५७ २६	२ २१ ४२	४ ३९ ०१
११	६ ५१ २२	९ १० ५०	११ २९ २८	१३ ३३ ३७	१५ १६ ०५	१६ ४३ ३७	१८ ०८ ३२	१९ ४३ ३८	२१ ३९ ००	२३ ५३ ३०	२ १७ ४६	४ ३५ ०५
१२	६ ४७ २६	९ ०६ ५४	११ २५ ३२	१३ २९ ४२	१५ १२ ०९	१६ ३९ ४२	१८ ०४ ३६	१९ ३९ ४२	२१ ३५ ०४	२३ ४९ ३४	२ १३ ५०	४ ३१ ०९
१३	६ ४३ ३०	९ ०२ ५८	११ २१ ३६	१३ २५ ४६	१५ ०८ १४	१६ ३५ ४५	१८ ०० ४०	१९ ३५ ४६	२१ ३१ ०८	२३ ४५ ३९	२ ०९ ५४	४ २७ १३
१४	६ ३९ ३४	८ ५९ ०२	११ १७ ४०	१३ २१ ५०	१५ ०४ १८	१६ ३१ ४९	१७ ५६ ४५	१९ ३१ ५०	२१ २७ १२	२३ ४१ ४३	२ ०५ ५९	४ २३ १७
१५	६ ३५ ३९	८ ५५ ०७	११ १३ ४४	१३ १७ ५४	१५ ०० २२	१६ २७ ५३	१७ ५२ ४९	१९ २७ ५४	२१ २३ १६	२३ ३७ ४७	२ ०२ ०३	४ १९ २२
१६	६ ३१ ४३	८ ५१ ११	११ ०९ ४८	१३ १३ ५८	१४ ५६ २६	१६ २३ ५७	१७ ४८ ५३	१९ २३ ५८	२१ १९ २०	२३ ३३ ५१	१ ५८ ०७	४ १५ २६
१७	६ २७ ४७	८ ४७ १५	११ ०५ ५२	१३ १० ०२	१४ ५२ ३०	१६ २० ०२	१७ ४४ ५७	१९ २० ०२	२१ १५ २४	२३ २९ ५५	१ ५४ ११	४ ११ ३०
१८	६ २३ ५१	८ ४३ १९	११ ०१ ५६	१३ ०६ ०६	१४ ४८ ३४	१६ १६ ०६	१७ ४१ ०१	१९ १६ ०६	२१ ११ २९	२३ २५ ५९	१ ५० १५	४ ०७ ३४
१९	६ १९ ५५	८ ३९ २३	१० ५८ ००	१३ ०२ १०	१४ ४४ ३८	१६ १२ १०	१७ ३७ ०५	१९ १२ ११	२१ ०७ ३३	२३ २२ ०३	१ ४६ १९	४ ०३ ३८
२०	६ १५ ५९	८ ३५ २७	१० ५४ ०४	१२ ५८ १४	१४ ४० ४२	१६ ०८ १४	१७ ३३ ०९	१९ ०८ १५	२१ ०३ ३७	२३ १८ ०७	१ ४२ २३	३ ५९ ४२
२१	६ १२ ०३	८ ३१ ३१	१० ५० ०९	१२ ५४ १८	१४ ३६ ४६	१६ ०४ १८	१७ २९ १३	१९ ०४ १९	२० ५९ ४१	२३ १४ ११	१ ३८ २७	३ ५५ ४६
२२	६ ०८ ०७	८ २७ ३५	१० ४६ १३	१२ ५० २३	१४ ३२ ५०	१६ ०० २२	१७ २५ १७	१९ ०० २३	२० ५५ ४५	२३ १० १६	१ ३४ ३१	३ ५१ ५०
२३	६ ०४ ११	८ २३ ३९	१० ४२ १७	१२ ४६ २७	१४ २८ ५४	१५ ५६ २६	१७ २१ २१	१८ ५६ २७	२० ५१ ४९	२३ ०६ २०	१ ३० ३५	३ ४७ ५४
२४	६ ०० १५	८ १९ ४३	१० ३८ २१	१२ ४२ ३१	१४ २४ ५९	१५ ५२ ३०	१७ १७ २६	१८ ५२ ३१	२० ४७ ५३	२३ ०२ २४	१ २६ ४०	३ ४३ ५८
२५	५ ५६ २०	८ १५ ४८	१० ३४ २५	१२ ३८ ३५	१४ २१ ०३	१५ ४८ ३४	१७ १३ ३०	१८ ४८ ३५	२० ४३ ५७	२२ ५८ २८	१ २२ ४४	३ ४० ०३
२६	५ ५२ २४	८ ११ ५२	१० ३० २९	१२ ३४ ३९	१४ १७ ०७	१५ ४४ ३८	१७ ०९ ३४	१८ ४४ ३९	२० ४० ०१	२२ ५४ ३२	१ १८ ४८	३ ३६ ०७
२७	५ ४८ २८	८ ०७ ५६	१० २६ ३३	१२ ३० ४३	१४ १३ ११	१५ ४० ४३	१७ ०५ ३८	१८ ४० ४३	२० ३६ ०५	२२ ५० ३६	१ १४ ५२	३ ३२ ११
२८	५ ४४ ३२	८ ०४ ००	१० २२ ३७	१२ २६ ४७	१४ ०९ १५	१५ ३६ ४७	१७ ०१ ४२	१८ ३६ ४७	२० ३२ १०	२२ ४६ ४०	१ १० ५६	३ २८ १५
२९	५ ४० ३६	८ ०० ०४	१० १८ ४१	१२ २२ ५१	१४ ०५ १९	१५ ३२ ५१	१६ ५७ ४६	१८ ३२ ५२	२० २८ १४	२२ ४२ ४४	१ ०७ ००	३ २४ १९
३०	५ ३६ ४०	७ ५६ ०८	१० १४ ४५	१२ १८ ५५	१४ ०१ २३	१५ २८ ५५	१६ ५३ ५०	१८ २८ ५६	२० २४ १८	२२ ३८ ४८	१ ०३ ०४	३ २० २३
३१	५ ३२ ४४	७ ५२ १२	१० १० ५०	१२ १४ ५९	१३ ५७ २७	१५ २४ ५९	१६ ४९ ५४	१८ २५ ००	२० २० २२	२२ ३४ ५२	० ५९ ०८	३ १६ २७

नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७ ४८ १६	१० ०६ ५४	१२ ११ ०४	१३ ५३ ३१	१५ २१ ०३	१६ ४५ ५८	१८ २१ ०४	२० १६ २६	२२ ३० ५७	० ५५ १२	३ १२ ३१	५ २८ ४८
२	७ ४४ २०	१० ०२ ५८	१२ ०७ ०८	१३ ४९ ३५	१५ १७ ०७	१६ ४२ ०२	१८ १७ ०८	२० १२ ३०	२२ २७ ०१	० ५१ १६	३ ०८ ३५	५ २४ ५२
३	७ ४० २४	९ ५९ ०२	१२ ०३ १२	१३ ४५ ४०	१५ १३ ११	१६ ३८ ०६	१८ १३ १२	२० ०८ ३४	२२ २३ ०५	० ४७ २१	३ ०४ ३९	५ २० ५६
४	७ ३६ २९	९ ५५ ०६	११ ५९ १६	१३ ४२ ४४	१५ ०९ १५	१६ ३४ ११	१८ ०९ १६	२० ०४ ३८	२२ १९ ०९	० ४३ २५	३ ०० ४४	५ १७ ०१
५	७ ३२ ३३	९ ५१ १०	११ ५५ २०	१३ ३७ ४८	१५ ०५ १९	१६ ३० १५	१८ ०५ २०	२० ०० ४२	२२ १५ १३	० ३९ २९	२ ५६ ४८	५ १३ ०५
६	७ २८ ३७	९ ४७ १४	११ ५१ २४	१३ ३३ ५२	१५ ०१ २४	१६ २६ १९	१८ ०१ २४	१९ ५६ ४६	२२ ११ १७	० ३५ ३३	२ ५२ ५२	५ ०९ ०९
७	७ २४ ४१	९ ४३ १८	११ ४७ २८	१३ २९ ५६	१४ ५७ २८	१६ २२ २३	१७ ५७ २८	१९ ५२ ५१	२२ ०७ २१	० ३१ ३७	२ ४८ ५६	५ ०५ १३
८	७ २० ४५	९ ३९ २२	११ ४३ ३२	१३ २६ ००	१४ ५३ ३२	१६ १८ २७	१७ ५३ ३३	१९ ४८ ५५	२२ ०३ २५	० २७ ४१	२ ४५ ००	५ ०१ १७
९	७ १६ ४९	९ ३५ २७	११ ३९ ३६	१३ २२ ०४	१४ ४९ ३६	१६ १४ ३१	१७ ४९ ३७	१९ ४४ ५९	२१ ५९ २९	० २३ ४५	२ ४१ ०४	४ ५७ २१
१०	७ १२ ५३	९ ३१ ३१	११ ३५ ४०	१३ १८ ०८	१४ ४५ ४०	१६ १० ३५	१७ ४५ ४१	१९ ४१ ०३	२१ ५५ ३४	० १५ ५३	२ ३७ ०८	४ ५३ २५
११	७ ०८ ५७	९ २७ ३५	११ ३१ ४५	१३ १४ १२	१४ ४१ ४४	१६ ०६ ३९	१७ ४१ ४५	१९ ३७ ०७	२१ ५१ ३८	० ११ ५७	२ ३३ १२	४ ४९ २९
१२	७ ०५ ०१	९ २३ ३९	११ २७ ४९	१३ १० १६	१४ ३७ ४८	१६ ०२ ४३	१७ ३७ ४९	१९ ३३ ११	२१ ४७ ४२	० ०८ ०२	२ २९ १६	४ ४५ ३३
१३	७ ०१ ०५	९ १९ ४३	११ २३ ५३	१३ ०६ २१	१४ ३३ ५२	१५ ५८ ४७	१७ ३३ ५३	१९ २९ १५	२१ ४३ ४६	० ०४ ०६	२ २५ २०	४ ४१ ३७
१४	६ ५७ १०	९ १५ ४७	११ १९ ५७	१३ ०२ २५	१४ २९ ५६	१५ ५४ ५२	१७ २९ ५७	१९ २५ १९	२१ ३९ ५०	० ०० १०	२ २१ २५	४ ३७ ४२
१५	६ ५३ १४	९ ११ ५१	११ १६ ०१	१२ ५८ २९	१४ २६ ००	१५ ५० ५६	१७ २६ ०१	१९ २१ २३	२१ ३५ ५४	२३ ५६ १४	२ १७ २९	४ ३३ ४६
१६	६ ४९ १८	९ ०७ ५५	११ १२ ०५	१२ ५४ ३३	१४ २२ ०५	१५ ४७ ००	१७ २२ ०५	१९ १७ २७	२१ ३१ ५८	२३ ५२ १८	२ १३ ३३	४ २९ ५०
१७	६ ४५ २२	९ ०३ ५९	११ ०८ ०९	१२ ५० ३७	१४ १८ ०९	१५ ४३ ०४	१७ १८ ०९	१९ १३ ३२	२१ २८ ०२	२३ ४८ २२	२ ०९ ३७	४ २५ ५४
१८	६ ४१ २६	९ ०० ०३	११ ०४ १३	१२ ४६ ४१	१४ १४ १३	१५ ३९ ०८	१७ १४ १४	१९ ०९ ३६	२१ २४ ०६	२३ ४४ २६	२ ०५ ४१	४ २१ ५८
१९	६ ३७ ३०	८ ५६ ०८	११ ०० १७	१२ ४२ ४५	१४ १० १७	१५ ३५ १२	१७ १० १८	१९ ०५ ४०	२१ २० १०	२३ ४० ३०	२ ०१ ४५	४ १८ ०२
२०	६ ३३ ३४	८ ५२ १२	१० ५६ २१	१२ ३८ ४९	१४ ०६ २१	१५ ३१ १६	१७ ०६ २२	१९ ०१ ४४	२१ १६ १४	२३ ३६ ३४	१ ५७ ४९	४ १४ ०६
२१	६ २९ ३८	८ ४८ १६	१० ५२ २६	१२ ३४ ५३	१४ ०२ २५	१५ २७ २०	१७ ०२ २६	१८ ५७ ४८	२१ १२ ११	२३ ३२ ३९	१ ५३ ५३	४ १० १०
२२	६ २५ ४२	८ ४४ २०	१० ४८ ३०	१२ ३० ५७	१३ ५८ २९	१५ २३ २४	१६ ५८ ३०	१८ ५३ ५२	२१ ०८ २३	२३ २८ ४३	१ ४९ ५७	४ ०६ १४
२३	६ २१ ४७	८ ४० २४	१० ४४ ३४	१२ २७ ०२	१३ ५४ ३३	१५ १९ २८	१६ ५४ ३४	१८ ४९ ५६	२१ ०४ २७	२३ २४ ४७	१ ४६ ०२	४ ०२ १९
२४	६ १७ ५१	८ ३६ २८	१० ४० ३८	१२ २३ ०६	१३ ५० ३७	१५ १५ ३३	१६ ५० ३८	१८ ४६ ००	२१ ०० ३१	२३ २० ५१	१ ४२ ०६	३ ५८ २३
२५	६ १३ ५५	८ ३२ ३२	१० ३६ ४२	१२ १९ १०	१३ ४६ ४१	१५ ११ ३७	१६ ४६ ४२	१८ ४२ ०४	२० ५६ ३५	२३ १६ ५५	१ ३८ १०	३ ५४ २७
२६	६ ०९ ५९	८ २८ ३६	१० ३२ ४६	१२ १५ १४	१३ ४२ ४५	१५ ०७ ४१	१६ ४२ ४६	१८ ३८ ०८	२० ५२ ३९	२३ १२ ५९	१ ३४ १४	३ ५० ३१
२७	६ ०६ ०३	८ २४ ४०	१० २८ ५०	१२ ११ १८	१३ ३८ ५०	१५ ०३ ४५	१६ ३८ ५०	१८ ३४ १३	२० ४८ ४३	२३ ०९ ०३	१ ३० १८	३ ४६ ३५
२८	६ ०२ ०७	८ २० ४४	१० २४ ५४	१२ ०७ २२	१३ ३४ ५४	१४ ५९ ४९	१६ ३४ ५५	१८ ३० १७	२० ४४ ४७	२३ ०५ ०७	१ २६ २२	३ ४२ ३९
२९	५ ५८ ११	८ १६ ४९	१० २० ५८	१२ ०३ २६	१३ ३० ५८	१४ ५५ ५३	१६ ३० ५९	१८ २६ २२	२० ४० ५१	२३ ०१ ११	१ २२ २६	३ ३८ ४३
३०	५ ५४ १५	८ १२ ५३	१० १७ ०२	११ ५९ ३०	१३ २७ ०२	१४ ५१ ५७	१६ २७ ०३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८ ०८ ५७	१० १३ ०७	११ ५५ ३४	१३ २३ ०६	१४ ४८ ०१	१६ २३ ०७	१८ १८ २९	२० ३३ ००	२२ ५३ २०	१ १४ ३४	३ ३० ५१	५ ५० १९
२	८ ०५ ०१	१० ०९ ११	११ ५१ ३८	१३ १९ १०	१४ ४४ ०५	१६ १९ ११	१८ १४ ३३	२० २९ ०४	२२ ४९ २४	१ १० ३८	३ २६ ५५	५ ४६ २३
३	८ ०१ ०५	१० ०५ १५	११ ४७ ४३	१३ १५ १४	१४ ४० ०९	१६ १५ १५	१८ १० ३७	२० २५ ०८	२२ ४५ २८	१ ०६ ४३	३ २३ ००	५ ४२ २८
४	७ ५७ ०९	१० ०१ १९	११ ४३ ४७	१३ ११ १८	१४ ३६ १४	१६ ११ १९	१८ ०६ ४१	२० २१ १२	२२ ४१ ३२	१ ०२ ४७	३ १९ ०४	५ ३८ ३२
५	७ ५३ १३	९ ५७ २३	११ ३९ ५१	१३ ०७ २२	१४ ३२ १८	१६ ०७ २३	१८ ०२ ४५	२० १७ १६	२२ ३७ ३६	० ५८ ५१	३ १५ ०८	५ ३४ ३६
६	७ ४९ १७	९ ५३ २७	११ ३५ ५५	१३ ०३ २६	१४ २८ २२	१६ ०३ २७	१७ ५८ ५०	२० १३ २०	२२ ३३ ४०	० ५४ ५५	३ ११ १२	५ ३० ४०
७	७ ४५ २१	९ ४९ ३१	११ ३१ ५९	१२ ५९ ३१	१४ २४ २६	१५ ५९ ३१	१७ ५४ ५४	२० ०९ २४	२२ २९ ४४	० ५० ५९	३ ०७ १६	५ २६ ४४
८	७ ४१ २६	९ ४५ ३५	११ २८ ०३	१२ ५५ ३५	१४ २० ३०	१५ ५५ ३६	१७ ५० ५८	२० ०५ २८	२२ २५ ४८	० ४७ ०३	३ ०३ २०	५ २२ ४८
९	७ ३७ ३०	९ ४१ ३९	११ २४ ०७	१२ ५१ ३९	१४ १६ ३४	१५ ५१ ४०	१७ ४७ ०२	२० ०१ ३३	२२ २१ ५२	० ४३ ०७	२ ५९ २४	५ १८ ५२
१०	७ ३३ ३४	९ ३७ ४४	११ २० ११	१२ ४७ ४३	१४ १२ ३८	१५ ४७ ४४	१७ ४३ ०६	१९ ५७ ३७	२२ १७ ५६	० ३९ ११	२ ५५ २८	५ १४ ५६
११	७ २९ ३८	९ ३३ ४८	११ १६ १५	१२ ४३ ४७	१४ ०८ ४२	१५ ४३ ४८	१७ ३९ १०	१९ ५३ ४१	२२ १४ ०१	० ३५ १५	२ ५१ ३२	५ ११ ००
१२	७ २५ ४२	९ २९ ५२	११ १२ १९	१२ ३९ ५१	१४ ०४ ४६	१५ ३९ ५२	१७ ३५ १४	१९ ४९ ४५	२२ १० ०५	० ३१ २०	२ ४७ ३७	५ ०७ ०५
१३	७ २१ ४६	९ २५ ५६	११ ०८ २४	१२ ३५ ५५	१४ ०० ५०	१५ ३५ ५६	१७ ३१ १८	१९ ४५ ४९	२२ ०६ ०९	० २७ २४	२ ४३ ४१	५ ०३ ०९
१४	७ १७ ५०	९ २२ ००	११ ०४ २८	१२ ३१ ५९	१३ ५६ ५५	१५ ३२ ००	१७ २७ २२	१९ ४१ ५३	२२ ०२ १३	० २३ २८	२ ३९ ४५	४ ५९ १३
१५	७ १३ ५४	९ १८ ०४	११ ०० ३२	१२ २८ ०३	१३ ५२ ५९	१५ २८ ०४	१७ २३ २६	१९ ३७ ५७	२१ ५८ १७	० १५ ३६	२ ३५ ४९	४ ५५ १७
१६	७ ०९ ५८	९ १४ ०८	१० ५६ ३६	१२ २४ ०८	१३ ४९ ०३	१५ २४ ०८	१७ १९ ३१	१९ ३४ ०१	२१ ५४ २१	० ११ ४०	२ ३१ ५३	४ ५१ २१
१७	७ ०६ ०२	९ १० १२	१० ५२ ४०	१२ २० १२	१३ ४५ ०७	१५ २० १२	१७ १५ ३५	१९ ३० ०५	२१ ५० २५	० ०७ ४४	२ २७ ५७	४ ४७ २५
१८	७ ०२ ०७	९ ०६ १६	१० ४८ ४४	१२ १६ १६	१३ ४१ ११	१५ १६ १७	१७ ११ ३९	१९ २६ १०	२१ ४६ २९	० ०३ ४८	२ २४ ०१	४ ४३ २९
१९	६ ५८ ११	९ ०२ २०	१० ४४ ४८	१२ १२ २०	१३ ३७ १५	१५ १२ २१	१७ ०७ ४३	१९ २२ १४	२१ ४२ ३३	२३ ५९ ५२	२ २० ०५	४ ३९ ३३
२०	६ ५४ १५	८ ५८ २५	१० ४० ५२	१२ ०८ २४	१३ ३३ १९	१५ ०८ २५	१७ ०३ ४७	१९ १८ १८	२१ ३८ ३८	२३ ५५ ५६	२ १६ ०९	४ ३५ ३७
२१	६ ५० १९	८ ५४ २९	१० ३६ ५६	१२ ०४ २८	१३ २९ २३	१५ ०४ २९	१६ ५९ ५१	१९ १४ २२	२१ ३४ ४२	२३ ५२ ०१	२ १२ १३	४ ३१ ४२
२२	६ ४६ २३	८ ५० ३३	१० ३३ ०१	१२ ०० ३२	१३ २५ २७	१५ ०० ३३	१६ ५५ ५५	१९ १० २६	२१ ३० ४६	२३ ४८ ०५	२ ०८ १८	४ २७ ४६
२३	६ ४२ २७	८ ४६ ३७	१० २९ ०५	११ ५६ ३६	१३ २१ ३१	१४ ५६ ३७	१६ ५१ ५९	१९ ०६ ३०	२१ २६ ५०	२३ ४४ ०९	२ ०४ २२	४ २३ ५०
२४	६ ३८ ३१	८ ४२ ४१	१० २५ ०९	११ ५२ ४०	१३ १७ ३६	१४ ५२ ४१	१६ ४८ ०३	१९ ०२ ३४	२१ २२ ५४	२३ ४० १३	२ ०० २६	४ १९ ५४
२५	६ ३४ ३५	८ ३८ ४५	१० २१ १३	११ ४८ ४४	१३ १३ ४०	१४ ४८ ४५	१६ ४४ ०८	१८ ५८ ३८	२१ १८ ५८	२३ ३६ १७	१ ५६ ३०	४ १५ ५८
२६	६ ३० ३९	८ ३४ ४९	१० १७ १७	११ ४४ ४८	१३ ०९ ४४	१४ ४४ ४९	१६ ४० १२	१८ ५४ ४२	२१ १५ ०२	२३ ३२ २१	१ ५२ ३४	४ १२ ०२
२७	६ २६ ४४	८ ३० ५३	१० १३ २१	११ ४० ५३	१३ ०५ ४८	१४ ४० ५३	१६ ३६ १६	१८ ५० ४६	२१ ११ ०६	२३ २८ २५	१ ४८ ३८	४ ०८ ०६
२८	६ २२ ४८	८ २६ ५७	१० ०९ २५	११ ३६ ५७	१३ ०१ ५२	१४ ३६ ५८	१६ ३२ २०	१८ ४६ ५१	२१ ०७ १०	२३ २४ २९	१ ४४ ४२	४ ०४ १०
२९	६ १८ ५२	८ २३ ०१	१० ०५ २९	११ ३३ ०१	१२ ५७ ५६	१४ ३३ ०२	१६ २८ २४	१८ ४२ ५५	२१ ०३ १४	२३ २० ३३	१ ४० ४६	४ ०० १४
३०	६ १४ ५६	८ १९ ०६	१० ०१ ३३	११ २९ ०५	१२ ५४ ००	१४ २९ ०६	१६ २४ २८	१८ ३८ ५९	२० ५९ १९	२३ १६ ३८	१ ३६ ५०	३ ५६ १८

जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८ १० १३	९ ५२ ४१	११ २० १३	१२ ४५ ०८	१४ २० १४	१६ १५ ३५	१८ ३० ०५	२० ५० २५	२३ ०७ ४४	१ २७ ५७	३ ४७ २५	६ ०६ ०३
२	८ ०६ १७	९ ४८ ४६	११ १६ १७	१२ ४१ १३	१४ १६ १८	१६ ११ ३९	१८ २६ १०	२० ४६ २९	२३ ०३ ४८	१ २४ ०१	३ ४३ २९	६ ०२ ०७
३	८ ०२ २१	९ ४४ ५०	११ १२ २२	१२ ३७ १७	१४ १२ २२	१६ ०७ ४३	१८ २२ १४	२० ४२ ३४	२२ ५९ ५३	१ २० ०५	३ ३९ ३३	५ ५८ ११
४	७ ५८ २५	९ ४० ५४	११ ०८ २६	१२ ३३ २१	१४ ०८ २६	१६ ०३ ४७	१८ १८ १८	२० ३८ ३८	२२ ५५ ५७	१ १६ १०	३ ३५ ३७	५ ५४ १५
५	७ ५४ ३०	९ ३६ ५८	११ ०४ ३०	१२ २९ २५	१४ ०४ ३०	१५ ५९ ५२	१८ १४ २२	२० ३४ ४२	२२ ५२ ०१	१ १२ १४	३ ३१ ४२	५ ५० १९
६	७ ५० ३४	९ ३३ ०२	११ ०० ३४	१२ २५ २९	१४ ०० ३४	१५ ५५ ५६	१८ १० २६	२० ३० ४६	२२ ४८ ०५	१ ०८ १८	३ २७ ४६	५ ४६ २३
७	७ ४६ ३८	९ २९ ०६	१० ५६ ३८	१२ २१ ३३	१३ ५६ ३८	१५ ५२ ००	१८ ०६ ३०	२० २६ ५०	२२ ४४ ०९	१ ०४ २२	३ २३ ५०	५ ४२ २७
८	७ ४२ ४२	९ २५ १०	१० ५२ ४२	१२ १७ ३७	१३ ५२ ४२	१५ ४८ ०४	१८ ०२ ३४	२० २२ ५४	२२ ४० १३	१ ०० २६	३ १९ ५४	५ ३८ ३२
९	७ ३८ ४६	९ २१ १४	१० ४८ ४६	१२ १३ ४१	१३ ४८ ४६	१५ ४४ ०८	१७ ५८ ३८	२० १८ ५८	२२ ३६ १७	० ५६ ३०	३ १५ ५८	५ ३४ ३६
१०	७ ३४ ५०	९ १७ १८	१० ४४ ५०	१२ ०९ ४५	१३ ४४ ५१	१५ ४० १२	१७ ५४ ४२	२० १५ ०२	२२ ३२ २१	० ५२ ३४	३ १२ ०२	५ ३० ४०
११	७ ३० ५४	९ १३ २३	१० ४० ५४	१२ ०५ ५०	१३ ४० ५५	१५ ३६ १६	१७ ५० ४७	२० ११ ०६	२२ २८ २५	० ४८ ३८	३ ०८ ०६	५ २६ ४४
१२	७ २६ ५८	९ ०९ २७	१० ३६ ५८	१२ ०१ ५४	१३ ३६ ५९	१५ ३२ २०	१७ ४६ ५१	२० ०७ १०	२२ २४ ३०	० ४४ ४२	३ ०४ १०	५ २२ ४८
१३	७ २३ ०२	९ ०५ ३१	१० ३३ ०२	११ ५७ ५८	१३ ३३ ०३	१५ २८ २४	१७ ४२ ५५	२० ०३ १५	२२ २० ३४	० ४० ४७	३ ०० १४	५ १८ ५२
१४	७ १९ ०६	९ ०१ ३५	१० २९ ०७	११ ५४ ०२	१३ २९ ०७	१५ २४ २९	१७ ३८ ५९	१९ ५९ १९	२२ १६ ३८	० ३६ ५१	२ ५६ १९	५ १४ ५६
१५	७ १५ ११	८ ५७ ३९	१० २५ ११	११ ५० ०६	१३ २५ ११	१५ २० ३३	१७ ३५ ०३	१९ ५५ २३	२२ १२ ४२	० ३२ ५५	२ ५२ २३	५ ११ ००
१६	७ ११ १५	८ ५३ ४३	१० २१ १५	११ ४६ १०	१३ २१ १५	१५ १६ ३७	१७ ३१ ०७	१९ ५१ २७	२२ ०८ ४६	० २८ ५९	२ ४८ २७	५ ०७ ०४
१७	७ ०७ १९	८ ४९ ४७	१० १७ १९	११ ४२ १४	१३ १७ १९	१५ १२ ४१	१७ २७ ११	१९ ४७ ३१	२२ ०४ ५०	० २१ ०७	२ ४४ ३१	५ ०३ ०८
१८	७ ०३ २३	८ ४५ ५१	१० १३ २३	११ ३८ १८	१३ १३ २३	१५ ०८ ४५	१७ २३ १५	१९ ४३ ३५	२२ ०० ५४	० १७ ११	२ ४० ३५	४ ५९ १३
१९	६ ५९ २७	८ ४१ ५५	१० ०९ २७	११ ३४ २२	१३ ०९ २७	१५ ०४ ४९	१७ १९ १९	१९ ३९ ३९	२१ ५६ ५८	० १३ १५	२ ३६ ३९	४ ५५ १७
२०	६ ५५ ३१	८ ३७ ५९	१० ०५ ३१	११ ३० २६	१३ ०५ ३२	१५ ०० ५३	१७ १५ २४	१९ ३५ ४३	२१ ५३ ०२	० ०९ १९	२ ३२ ४३	४ ५१ २१
२१	६ ५१ ३५	८ ३४ ०३	१० ०१ ३५	११ २६ ३०	१३ ०१ ३६	१४ ५६ ५७	१७ ११ २८	१९ ३१ ४७	२१ ४९ ०६	० ०५ २३	२ २८ ४७	४ ४७ २५
२२	६ ४७ ३९	८ ३० ०८	९ ५७ ३९	११ २२ ३५	१२ ५७ ४०	१४ ५३ ०१	१७ ०७ ३२	१९ २७ ५२	२१ ४५ ११	० ०१ २८	२ २४ ५१	४ ४३ २९
२३	६ ४३ ४३	८ २६ १२	९ ५३ ४४	११ १८ ३९	१२ ५३ ४४	१४ ४९ ०५	१७ ०३ ३६	१९ २३ ५६	२१ ४१ १५	२३ ५७ ३२	२ २० ५५	४ ३९ ३३
२४	६ ३९ ४७	८ २२ १६	९ ४९ ४८	११ १४ ४३	१२ ४९ ४८	१४ ४५ १०	१६ ५९ ४०	१९ २० ००	२१ ३७ १९	२३ ५३ ३६	२ १७ ००	४ ३५ ३७
२५	६ ३५ ५२	८ १८ २०	९ ४५ ५२	११ १० ४७	१२ ४५ ५२	१४ ४१ १४	१६ ५५ ४४	१९ १६ ०४	२१ ३३ २३	२३ ४९ ४०	२ १३ ०४	४ ३१ ४१
२६	६ ३१ ५६	८ १४ २४	९ ४१ ५६	११ ०६ ५१	१२ ४१ ५६	१४ ३७ १८	१६ ५१ ४८	१९ १२ ०८	२१ २९ २७	२३ ४५ ४४	२ ०९ ०८	४ २७ ४५
२७	६ २८ ००	८ १० २८	९ ३८ ००	११ ०२ ५५	१२ ३८ ००	१४ ३३ २२	१६ ४७ ५२	१९ ०८ १२	२१ २५ ३१	२३ ४१ ४८	२ ०५ १२	४ २३ ४९
२८	६ २४ ०४	८ ०६ ३२	९ ३४ ०४	१० ५८ ५९	१२ ३४ ०४	१४ २९ २६	१६ ४३ ५६	१९ ०४ १६	२१ २१ ३५	२३ ३७ ५२	२ ०१ १६	४ १९ ५४
२९	६ २० ०८	८ ०२ ३६	९ ३० ०८	१० ५५ ०३	१२ ३० ०८	१४ २५ ३०	१६ ४० ००	१९ ०० २०	२१ १७ ३९	२३ ३३ ५६	१ ५७ २०	४ १५ ५८
३०	६ १६ १२	७ ५८ ४०	९ २६ १२	१० ५१ ०७	१२ २६ १३	१४ २१ ३४	१६ ३६ ०५	१८ ५६ २४	२१ १३ ४३	२३ ३० ००	१ ५३ २४	४ १२ ०२
३१	६ १२ १६	७ ५४ ४४	९ २२ १६	१० ४७ ११	१२ २२ १७	१४ १७ ३८	१६ ३२ ०९	१८ ५२ २८	२१ ०९ ४७	२३ २६ ०४	१ ४९ २८	४ ०८ ०६

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	७ ५० ४९	९ १८ २०	१० ४३ १६	१२ १८ २१	१४ १३ ४२	१६ २८ १३	१८ ४८ ३३	२१ ०५ ५२	२३ २२ ०९	१ ४५ ३२	४ ०४ १०	६ ०८ २०
२	७ ४६ ५३	९ १४ २४	१० ३९ २०	१२ १४ २५	१४ ०९ ४६	१६ २४ १७	१८ ४४ ३७	२१ ०१ ५६	२३ १८ १३	१ ४१ ३६	४ ०० १४	६ ०४ २४
३	७ ४२ ५७	९ १० २९	१० ३५ २४	१२ १० २९	१४ ०५ ५१	१६ २० २१	१८ ४० ४१	२० ५८ ००	२३ १४ १७	१ ३७ ४१	३ ५६ १८	६ ०० २८
४	७ ३९ ०१	९ ०६ ३३	१० ३१ २८	१२ ०६ ३३	१४ ०१ ५५	१६ १६ २५	१८ ३६ ४५	२० ५४ ०४	२३ १० २१	१ ३३ ४५	३ ५२ २२	५ ५६ ३३
५	७ ३५ ०५	९ ०२ ३७	१० २७ ३२	१२ ०२ ३७	१३ ५७ ५९	१६ १२ २९	१८ ३२ ४९	२० ५० ०८	२३ ०६ २५	१ २९ ४९	३ ४८ २६	५ ५२ ३७
६	७ ३१ ०९	८ ५८ ४१	१० २३ ३६	११ ५८ ४१	१३ ५४ ०३	१६ ०८ ३३	१८ २८ ५३	२० ४६ १२	२३ ०२ २९	१ २५ ५३	३ ४४ ३१	५ ४८ ४१
७	७ २७ १३	८ ५४ ४५	१० १९ ४०	११ ५४ ४५	१३ ५० ०७	१६ ०४ ३७	१८ २४ ५७	२० ४२ १६	२२ ५८ ३३	१ २१ ५७	३ ४० ३५	५ ४४ ४५
८	७ २३ १७	८ ५० ४९	१० १५ ४४	११ ५० ४९	१३ ४६ ११	१६ ०० ४१	१८ २१ ०१	२० ३८ २०	२२ ५४ ३७	१ १८ ०१	३ ३६ ३९	५ ४० ४९
९	७ १९ २१	८ ४६ ५३	१० ११ ४८	११ ४६ ५४	१३ ४२ १५	१५ ५६ ४६	१८ १७ ०५	२० ३४ २४	२२ ५० ४१	१ १४ ०५	३ ३२ ४३	५ ३६ ५३
१०	७ १५ २५	८ ४२ ५७	१० ०७ ५२	११ ४२ ५८	१३ ३८ १९	१५ ५२ ५०	१८ १३ ०९	२० ३० २९	२२ ४६ ४५	१ १० ०९	३ २८ ४७	५ ३२ ५७
११	७ ११ ३०	८ ३९ ०१	१० ०३ ५७	११ ३९ ०२	१३ ३४ २३	१५ ४८ ५४	१८ ०९ १४	२० २६ ३३	२२ ४२ ५०	१ ०६ १३	३ २४ ५१	५ २९ ०१
१२	७ ०७ ३४	८ ३५ ०५	१० ०० ०१	११ ३५ ०६	१३ ३० २७	१५ ४४ ५८	१८ ०५ १८	२० २२ ३७	२२ ३८ ५४	१ ०२ १८	३ २० ५५	५ २५ ०५
१३	७ ०३ ३८	८ ३१ १०	९ ५६ ०५	११ ३१ १०	१३ २६ ३२	१५ ४१ ०२	१८ ०१ २२	२० १८ ४१	२२ ३४ ५८	० ५८ २२	३ १६ ५९	५ २१ ०९
१४	६ ५९ ४२	८ २७ १४	९ ५२ ०९	११ २७ १४	१३ २२ ३६	१५ ३७ ०६	१७ ५७ २६	२० १४ ४५	२२ ३१ ०२	० ५४ २६	३ १३ ०३	५ १७ १४
१५	६ ५५ ४६	८ २३ १८	९ ४८ १३	११ २३ १८	१३ १८ ४०	१५ ३३ १०	१७ ५३ ३०	२० १० ४९	२२ २७ ०६	० ५० ३०	३ ०९ ०७	५ १३ १८
१६	६ ५१ ५०	८ १९ २२	९ ४४ १७	११ १९ २२	१३ १४ ४४	१५ २९ १४	१७ ४९ ३४	२० ०६ ५३	२२ २३ १०	० ४६ ३४	३ ०५ १२	५ ०९ २२
१७	६ ४७ ५४	८ १५ २६	९ ४० २१	११ १५ २६	१३ १० ४८	१५ २५ १८	१७ ४५ ३८	२० ०२ ५७	२२ १९ १४	० ४२ ३८	३ ०१ १६	५ ०५ २६
१८	६ ४३ ५८	८ ११ ३०	९ ३६ २५	११ ११ ३०	१३ ०६ ५२	१५ २१ २२	१७ ४१ ४२	१९ ५९ ०१	२२ १५ १८	० ३८ ४२	२ ५७ २०	५ ०१ ३०
१९	६ ४० ०२	८ ०७ ३४	९ ३२ २९	११ ०७ ३५	१३ ०२ ५६	१५ १७ २७	१७ ३७ ४६	१९ ५५ ०५	२२ ११ २२	० ३४ ४६	२ ५३ २४	४ ५७ ३४
२०	६ ३६ ०६	८ ०३ ३८	९ २८ ३३	११ ०३ ३९	१२ ५९ ००	१५ १३ ३१	१७ ३३ ५१	१९ ५१ १०	२२ ०७ २६	० ३० ५०	२ ४९ २८	४ ५३ ३८
२१	६ ३२ ११	७ ५९ ४२	९ २४ ३८	१० ५९ ४३	१२ ५५ ०४	१५ ०९ ३५	१७ २९ ५५	१९ ४७ १४	२२ ०३ ३१	० २६ ५४	२ ४५ ३२	४ ४९ ४२
२२	६ २८ १५	७ ५५ ४६	९ २० ४२	१० ५५ ४७	१२ ५१ ०८	१५ ०५ ३९	१७ २५ ५९	१९ ४३ १८	२१ ५९ ३५	० १९ ०३	२ ४१ ३६	४ ४५ ४६
२३	६ २४ १९	७ ५१ ५१	९ १६ ४६	१० ५१ ५१	१२ ४७ १३	१५ ०१ ४३	१७ २२ ०३	१९ ३९ २२	२१ ५५ ३९	० १५ ०७	२ ३७ ४०	४ ४१ ५०
२४	६ २० २३	७ ४७ ५५	९ १२ ५०	१० ४७ ५५	१२ ४३ १७	१४ ५७ ४७	१७ १८ ०७	१९ ३५ २६	२१ ५१ ४३	० ११ ११	२ ३३ ४४	४ ३७ ५५
२५	६ १६ २७	७ ४३ ५९	९ ०८ ५४	१० ४३ ५९	१२ ३९ २१	१४ ५३ ५१	१७ १४ ११	१९ ३१ ३०	२१ ४७ ४७	० ०७ १५	२ २९ ४८	४ ३३ ५९
२६	६ १२ ३१	७ ४० ०३	९ ०४ ५८	१० ४० ०३	१२ ३५ २५	१४ ४९ ५५	१७ १० १५	१९ २७ ३४	२१ ४३ ५१	० ०३ १९	२ २५ ५२	४ ३० ०३
२७	६ ०८ ३५	७ ३६ ०७	९ ०१ ०२	१० ३६ ०७	१२ ३१ २९	१४ ४५ ५९	१७ ०६ १९	१९ २३ ३८	२१ ३९ ५५	२३ ५९ २३	२ २१ ५७	४ २६ ०७
२८	६ ०४ ३९	७ ३२ ११	८ ५७ ०६	१० ३२ ११	१२ २७ ३३	१४ ४२ ०३	१७ ०२ २३	१९ १९ ४२	२१ ३५ ५९	२३ ५५ २७	२ १८ ०१	४ २२ ११

सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१. रवि क्रांति—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

२. चर—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

३. अक्षांश व स्टैंण्डर्ड अंतर—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

४. वेलान्तर—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

५. दिनमान—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान

उदाहरण—१. नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

मि. से.

अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर १०।४८

अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से १२।२२ — १२।२२

अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया — -१०।४८

अंतर — १।३४

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

मि.से.

अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से — ११।२२

अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया — १०।४८

अंतर — =०।३४

अतः अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

मि.से.

अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर — १०।४८

रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन) — +०।१९

अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन) — +०।०५

अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर — ११।१२

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	+०।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
स्टैं. अंतर धन होगा	+०।१३।३६
मध्याह्न सूर्योदय	६।२४।४८
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्डैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ।	६।११।२७

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	— ०।११।१२
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ०।१३।३६
मध्याह्न सूर्यास्त	६।०२।२४
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	५।४९।०३

दिनमान — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड को ५ से गुणा किया

११।१२ × ५=५५।६० या ५६ पल

सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अतः यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

मध्याह्न दिनमान	३०।००
चर पल	— ०।५६
दिनमान नागपुर	२९।०४

रात्रिमान—

अहोरात्र	६०।००
दिनमान	— २९।०४
रात्रिमान	३०।५६

उदाहरण २— मद्रास में २० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८।५२, रवि क्रांति २३।२६ उत्तर, वेलांतर + १।१४

	मि.से.
अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर	२२।३०
(अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से)	+००।०८
रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर	+००।३४
अक्षांश १३।०५ एवं रवि क्रांति २३।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर	२३।१२

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	— ०।२३।१२
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
स्टैं. अंतर धन होगा	+ ०।०८।५२
मध्याह्न सूर्योदय	५।४५।४०
वेलांतर	+ ०।०१।१४
स्पष्ट स्डैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ	५।४६।५४

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	+०।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ०।०८।५२
मध्याह्न सूर्यास्त	६।३२।०४
वेलांतर	+ ०।०१।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	६।३३।१८

दिनमान- चर मिनट सेकेण्ड २३।१२×५=११५।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

मध्याह्न दिनमान	३०।००	**रात्रिमान—**	अहोरात्र	६०।००
चर पल	+०१।५६		दिनमान	— ३१।५६
दिनमान मद्रास	३१।५६		रात्रिमान	२८।०४

इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

	घं.	मि.	
(१) २५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै. टा.
(२) २५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२६	''
	६	०९	''
६.९ को ढाई से गुना किया	६	०९	
	३	०४	३०
इष्टकाल घटी पल विपल में	१५	२२	३०

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

	घं.	मि.	
(१) १० सितम्बर को जन्म समय	२०	४५	भा.स्टै.टा.
मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें।			
(२) १० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	—६	०५	''
शेष १४-३७ को ढाई गुना किया	१४	४०	
	१४	४०	
	७	२०	३०
(३) इष्टकाल घटी पल विपल में	३६	४०	३०

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं.	मि.	भा.स्टै.टा.
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५	२१	
२४ जमा करके लिखा	२९	२१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	—७	०६	''
शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२	१५ शेष	
ढाई गुना किया	२२	१५	
	११	०७	३०
इष्टकाल—घटी पल विपल में	५५	३७	३०

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२०	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१७	७	५६	४७	३८	२९	२७	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२१	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	३८	८	८	३६
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२१	२७	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१९	२७	३८	४८	५९	१०	२४	३५	५२	७	२१

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२७	३६	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	५७	१७	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१८
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२९	५०	२२	३४	५९	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१६
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	२७	५०	२३	५७	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२०	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२३	११	५९	४९	४२	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	५०	४३	३०	३३	३१	३०	४१	३४
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५४
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	१३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	११	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३९	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२१	५४	२७	४	४१	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	१	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४६	२५	२	३९	१६	५७	३७	१८	५९	४४	२९	१६	५	५६	४८	४४	४०	४१	४४	५१	५७	१३
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	५	४९	३२	१६	१	४५	३२	१९	६	५८	४९	४४	३९	३६	३६	३७	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	१	५३	४४	३५	२४	२२	१७	१४	१३	१३	१५	१९	२७	३६	४४	४	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३५	३५	३१	२८	२७	२६	२७	२९	३२	३७	४५	५०	६	२०	३७	५७	२०	४७	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
	१	२	३	५	६	१०	१४	१९	२५	३३	४१	५२	५	१९	३६	५५	१७	४१	७	४०	१५	५४	३९	२४
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
	८	१५	२३	३२	४१	४७	१	१३	२६	४१	५६	१४	३४	५४	२०	४७	१७	४९	२५	५	४८	३६	२८	२५
३९	३	६	९	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४६	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
	१४	२९	४४	०	१५	३२	५०	८	२९	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	५८	४६	३४	२६	२३	२५	३२
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
	२१	४३	५	२७	४७	१४	३८	४	३३	२	३३	६	४१	१८	५८	४१	२८	१७	१०	६	१०	१६	२८	४५
४१	३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	४६	४९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८२	८६	९१
	२९	५७	२५	५६	२७	५६	३०	४	३९	१६	५५	३५	१९	५८	५३	४४	३९	३८	४०	४७	७८	१५	३७	५
४२	३	७	१०	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	६३	६८	७२	७६	८०	८५	८९	९४
	३६	१२	४९	२६	०	४३	२३	५	४८	३१	१९	६	५९	५४	५१	५१	५५	४	१५	३१	५३	२०	५३	३२
४३	३	७	११	१४	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५७	६२	६६	७०	७४	७९	८३	८८	९३	९८
	४४	२८	१२	५७	४३	२७	१८	७	५८	५१	५६	४४	४४	४७	५३	२	१६	३३	५५	२२	५४	३२	१६	७
४४	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६४	६८	७३	७७	८२	८७	९१	९६	१०१
	५२	४४	३४	२९	२३	१८	१४	१०	१२	१०	१७	२३	३२	४०	५७	१८	४१	९	४१	१९	२	५२	४८	५१
४५	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	६२	६६	७१	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५
	०	०	१	२	५	४	१०	१९	२७	३७	४७	५	२४	४५	१०	४०	१३	५१	३४	२३	१८	१९	२८	४५
४६	४	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४२	४६	५०	५५	५९	६४	६९	७३	७९	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९
	९	१७	२७	३७	४८	०	१३	२८	४६	५	२७	५२	२१	५०	२६	६	५०	३९	३३	३४	४१	५६	१८	४९
४७	४	८	१२	१७	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	६२	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९७	१०२	१०८	११४
	१८	३५	५३	१२	३२	५१	१६	४०	७	३६	८	४२	१७	२	४८	३८	३३	३४	४१	५०	१४	४२	१९	४
४८	४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९५	१००	१०६	११२	११८
	२७	५३	२१	४९	१८	३९	२१	५५	३०	१०	५२	३७	२६	१८	१५	१७	२४	३६	५६	२२	१६	३९	३०	३२
४९	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४२	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७७	८२	८७	९३	९८	१०४	११०	११६	१२३
	३६	१३	५०	२७	५	४७	२९	१३	०	४९	४१	३७	३६	४०	४९	३	२०	४८	१०	५८	४९	४७	५५	१४

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५०	४	९	१४	१९	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६९	७४	७९	८५	९१	९६	१०२	१०८	११५	१२१	१२८
	४६	३२	१९	७	५६	४७	३९	३४	३१	३१	३५	४२	५३	९	२९	५६	२८	४	५४	५०	५४	८	३३	११
५१	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	६०	६६	७१	७७	८२	८८	९४	१००	१०६	११३	११९	१२६	१३३
	५६	५३	५१	४९	४९	५०	५३	०	७	१८	३३	५२	१६	४४	१७	५७	४४	३७	३९	४७	११	४३	२७	२५
५२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५२	५७	६३	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	१११	११७	१२४	१३१	१३८
	७	१५	२३	३२	४३	५४	१०	२७	४७	७	३७	९	४५	२६	१४	८	६	१९	३६	४	४३	३४	३८	५८
५३	५	१०	१५	२१	२६	३२	३७	४२	४८	५४	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०२	१०८	११५	१२२	१२९	१३७	१४४
	१८	३७	५७	१८	४०	४	३१	५६	३२	८	४८	३२	२२	१७	१९	२८	४५	१०	४६	३२	३०	४१	८	५२
५४	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९३	९९	१०६	११३	१२०	१२७	१३५	१४३	१५१
	३०	१	३३	४	४०	१६	५५	३७	५२	११	४	२	७	१७	३४	०	३२	१६	९	१५	३४	९	०	१०
५५	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११७	१२५	१३२	१४०	१४९	१५७
	४३	२६	१०	५६	४३	३१	२४	१८	१८	२०	२८	४१	५९	३६	०	४२	३३	३५	४९	१७	५९	५८	१६	५६
५६	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४८	५४	६०	६७	७३	८०	८६	९३	१००	१०७	११५	१२२	१३०	१३८	१४७	१५६	१६५
	५६	५२	५०	४८	४९	५१	५७	७	१९	३५	०	२८	४	४६	३८	३८	३९	११	४७	३८	४५	११	०	१३
५७	६	१२	१८	२४	३०	३७	४३	५०	५६	६३	६९	७६	८३	९०	९७	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५३	१६३	१७३
	१०	२०	३१	४४	५६	१०	३६	१	२८	१	४०	२५	१८	१९	२६	४९	१०	५	५	२१	५६	५४	१६	७
५८	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६५	७२	७९	८६	९४	१०१	१०९	११७	१२५	१३३	१४२	१५१	१६१	१७१	१८१
	२४	४९	१५	४२	१२	४४	१७	५९	४४	३४	३०	२६	४४	४	३४	१६	१०	१९	४५	३२	३६	८	९	४६
५९	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	९०	९४	१०५	११३	१२२	१३०	१३९	१४९	१५८	१६९	१७९	१९१
	४०	२०	१	४४	२९	१८	१०	६	६	१६	३०	५२	२३	४	५६	५६	२०	५६	५९	८	५०	१	४७	१५
६०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४९	५६	६३	७१	७८	८६	९४	१०२	११०	११९	१२७	१३७	१४०	१५६	१६६	१७७	१८९	२०१
	५६	५२	५०	५०	४६	५७	७	२१	४१	६	४२	२५	१७	२०	३७	५	५४	०	२७	१९	४१	३९	१८	५०
६१	७	१४	२१	२८	३६	४३	५१	५८	६६	७४	८२	९०	९८	१०६	११५	१२४	१३३	१४३	१५३	१६४	१७५	१८७	१९९	२१३
	१३	२७	४२	५९	१९	४३	११	४६	१९	१२	५	१२	११	५५	३८	३६	५४	३३	३७	७	१९	१०	५४	४५
६२	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९४	१०२	१११	१२१	१३०	१४०	१५०	१६१	१७२	१८४	१९७	२११	२२७
	३२	४	३८	१७	५०	३६	२४	१६	१५	२१	४६	७	५६	५१	३	३२	२४	४०	२६	४७	५२	४९	५३	२७
६३	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६४	७२	८०	८९	९८	१०७	११७	१२६	१३७	१४७	१५८	१७०	१८२	१९२	२०९	२२५	२४३
	५१	४३	३७	३३	३२	३७	४७	२	२६	५९	४२	१९	४६	११	५०	०	२९	२९	४	२१	३२	५१	४०	३७
६४	८	१६	२४	३२	४१	४९	५८	६६	७५	८४	९३	१०३	११२	१२२	१३३	१४४	१५५	१६७	१७९	१९३	२०७	२२३	२४१	२६३
	१२	२५	४०	५८	२०	४६	११	५९	४८	४६	५५	२१	५७	५८	१८	२	१६	६	३८	४	३८	४३	५८	३७
६५	८	१७	२५	३४	४३	५२	६१	७०	७९	८८	९८	१०८	११८	१२९	१४०	१५१	१६३	१७६	१९०	२०५	२२१	२४०	२६२	२८९
	३५	११	४९	३०	१५	४	४	१०	२५	५२	३३	२४	४२	१७	१४	४७	५२	४०	२३	१४	३७	११	११	१९
६६	८	१८	२७	३६	४५	५४	६४	७३	८३	९३	१०३	११४	१२४	१३६	१४७	१६०	१७३	१८७	२०२	२१९	२३८	२६०	२८९	३५४
	५९	०	२	९	२०	३७	१	३६	२२	१९	३३	४	५६	१३	५७	३२	२८	२८	३६	१९	२५	३४	४४	४०

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितम्बर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसम्बर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३५	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	.० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द.० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

तारीख	जनवरी मि. सै.	फरवरी मि. सै.	मार्च मि. सै.	अप्रैल मि. सै.	मई मि. सै.	जून मि. सै.	जुलाई मि. सै.	अगस्त मि. सै.	सितम्बर मि. सै.	अक्टूबर मि. सै.	नवम्बर मि. सै.	दिसम्बर मि. सै.
	+	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—
१	३ ३४	१३ ३८	१२ ३५	४ ७	२ ५२	२ २५	३ ३३	६ १५	+ ९	१० ७	१६ २१	११ ३
२	३ ५२	१३ ४६	१२ २३	३ ४९	३ ०	२ १६	३ ४५	६ ११	— १०	१० २७	१६ २३	१० ४३
३	४ २०	१३ ५४	१२ ११	३ ३२	३ ७	२ ७	३ ५६	६ ७	० २९	१० ४६	१६ २४	१० १८
४	४ ४८	१४ ०	११ ५९	३ १४	३ १३	१ ५७	४ ८	६ २	० ४८	११ ५	१६ २४	९ ५३
५	५ १६	१४ ६	११ ४६	२ ५६	३ १९	१ ४७	४ १८	५ ५७	१ ८	११ २३	१६ २३	९ २८
६	५ ४२	१४ १०	११ ३२	२ ३९	३ २४	१ ३६	४ २८	५ ५१	१ २८	११ ४३	१६ २१	९ ३
७	६ ९	१४ १४	११ १८	२ २२	३ २९	१ २५	४ ३८	५ ४४	१ ४८	११ ५९	१६ १७	८ ३७
८	६ ३५	१४ १७	११ ४	२ ४	३ ३३	१ १४	४ ४८	५ ३७	२ ९	१२ १६	१६ १४	८ ११
९	७ ०	१४ २०	१० ४९	१ ४८	३ ३६	१ ३	४ ५८	५ २९	२ २९	१२ ३३	१६ ९	७ ४५
१०	७ २५	१४ २१	१० ३४	१ ३१	३ ३९	० ५२	५ ७	५ २१	२ ५०	१२ ४९	१६ ४	७ १८
११	७ ४९	१४ २२	१० १८	१ १५	३ ४२	० ४०	५ १५	५ १२	३ ११	१३ ५	१५ ५८	६ ५१
१२	८ १३	१४ २२	१० २	० ५९	३ ४४	० २८	५ २३	५ ३	३ ३२	१३ २१	१५ ५२	६ २३
१३	८ ३६	१४ २१	९ ४६	० ४३	३ ४५	० ११	५ ३०	४ ५३	३ ५३	१३ ३६	१५ ४३	५ ५५
१४	८ ५८	१४ २९	९ २९	० २७	३ ४६	-० ३	५ ३७	४ ५२	४ १४	१३ ४०	१५ ३४	५ २७
१५	९ २०	१४ १७	९ १२	+ १२	३ ४६	+० ९	५ ४४	४ ३१	४ ३६	१४ ४	१५ २५	४ ५८
१६	९ ४१	१४ १४	८ ५५	— ३	३ ४६	० २२	५ ५०	४ २०	४ ५७	१४ १७	१५ १५	४ २९
१७	१० ०१	१४ १०	८ ३८	० १७	३ ४५	० ३४	५ ५६	४ ८	५ १८	१४ ३०	१५ ४	४ ०
१८	१० २१	१४ ६	८ २१	० ३१	३ ४३	० ४८	६ १	३ ५५	५ ४०	१४ ४२	१४ ५२	३ ३१
१९	१० ४०	१४ १	८ ३	० ४५	३ ४१	१ १	६ ६	३ ४२	६ १	१४ ५३	१४ ३	३ २
२०	१० ५८	१३ ५५	७ ४५	० ५७	३ ३८	१ १४	६ १०	३ २८	६ २२	१५ ४	१४ २४	२ ३२
२१	११ १५	१३ ४८	७ २८	१ ११	३ ३५	१ २७	६ १३	३ २४	६ ४३	१५ १४	१४ १०	२ २
२२	११ ३२	१३ ४१	७ १०	१ २३	३ ३१	१ ४०	६ १६	२ ५९	७ ४	१५ २४	१३ ५५	१ ३२
२३	११ ४९	१३ ३४	६.५१	१ ३५	३ २७	१ ५३	६ १९	२ ४४	७ २५	१५ ३३	१३ ३९	१ २
२४	१२ ४	१३ २४	६ ३३	१ ४६	३ २२	२ ६	६ २१	२ ३०	७ ४६	१५ ४१	१३ २२	० ३२
२५	१२ १९	१३ १७	६ १५	१ ५७	३ १७	२ १९	६ २३	२ १३	८ ७	१५ ४९	१३ ४	— ०२
२६	१२ ३२	१३ ७	५ ४७	२ ८	३ ११	२ ३२	६ २३	१ ५६	८ २७	१५ ५६	१२ ४६	+ २८
२७	१२ ४५	१२ ५७	५ ३८	२ १८	३ ५	२ ४४	६ २३	१ ३९	८ ४८	१६ २	१२ २७	० ५८
२८	१२ ५८	१२ ४६	५ २०	२ २७	२ ५८	२ ५७	६ २३	१ २२	९ ८	१६ ७	१२ ७	१ २८
२९	१३ ९		५ २	२ ३६	२ ५०	३ ९	६ २२	१ ४	९ २८	१६ १२	११ ४६	१ ५८
३०	१३ २०		४ ४४	२ ४४	२ ४२	३ २१	६ २०	० ४६	९ ४७	१६ १६	११ २५	२ २७
३१	१३ २९		४ २५		२ ३४		६ १८	० २८		१६ १९		२ ५६
	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—	+

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय बेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में बेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

पंचाग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण—दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४१ है। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अतः यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांश: चरान्तर मिनट चरान्तर सारिणी																					क्रांति दक्षिण हो तो धन							
	यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन																					उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
अयोध्या	यू.पी.	26 48	82 14	—1 04	+20 00	इटावा	यू.पी.	26 47	79 02	—13 52	+7 12	किस्तबाड़	जम्मू	33 12	75 48	—26 48	—5 44
अक्कलकोट	बम्बई	17 33	76 12	—25 12	—3 52	इम्फाल	मणिपुर	24 54	93 54	+45 36	+66 40	किशनगढ़ जं.	राजस्थान	27 10	75 22	—28 32	—7 28
अम्बाला	हरियाणा	30 22	76 46	—22 56	—1 52	इडुंकी	केरल	9 51	77 14	—21 04	0 00	कोच्चि	केरल	10 00	76 15	—25 00	—3 56
आकोला	महाराष्ट्र	20 42	77 02	—21 52	—0 48	इटानगर	अरु.प्रदेश	26 54	93 37	+44 24	+65 32	कोलगंगा	बिहार	25 16	87 16	+19 04	+40 08
अजमेर	राजस्थान	26 27	74 40	—31 20	—10 16	ईगतपुरी	महाराष्ट्र	19 41	73 35	—35 40	—14 36	कोहिमा	नागालैंड	25 41	94 0	+46 00	+67 04
अमृतसर	पंजाब	31 38	74 53	—30 28	—9 24	इटारसी	म.प्रदेश	22 37	77 46	—18 56	+2 18	केलांग	हिमाचल	32 47	77 4	—21 36	—0 40
अहमदाबाद	गुजरात	23 02	72 37	—39 32	—18 28	इलाहाबाद	यू.पी.	25 28	81 52	—2 34	+18 32	कोटा	राजस्थान	25 11	75 50	—26 40	—5 36
अलीगढ़	यू.पी.	27 54	78 05	—17 40	+3 24	उन्नाव	उ. प्र.	26 33	80 30	—8 00	+13 04	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	16 41	74 13	—33 08	—12 05
अहमदनगर	महाराष्ट्र	19 05	74 44	—31 04	—10 00	उतरोला	उ. प्र.	27 19	82 28	—0 08	+20 56	कुशलगढ़	राजस्थान	23 08	74 27	—32 12	—11 08
अलीगढ़ टोंक	राजस्थान	25 58	76 06	—25 36	—4 32	ऊधमपुर	जम्मू	32 55	72 07	—29 32	—8 28	कूचबिहार	राजस्थान	26 20	89 25	+27 40	+48 44
अलीबाग	बम्बई	18 38	72 50	—38 40	—17 36	उज्जैन	म. प्रदेश	23 11	75 44	—27 04	—6 00	कृष्णा	कर्नाटक	16 25	77 19	—20 44	+0 20
अलवर	राजस्थान	27 34	76 38	—23 28	—2 24	उदय मण्डलम	तमिलनाडू	11 17	76 44	—23 04	—2 00	खम्भम	आं. प्र.	17 15	80 11	—9 16	+11 48
अखनूर	कश्मीर	32 54	74 35	—31 40	—10 36	उदयपुर	राजस्थान	24 35	73 42	—35 12	—14 08	खण्डवा	म.प्र.	21 50	76 20	—24 40	—3 36
अनूपशहर	यू.पी.	28 21	78 23	—16 27	+4 36	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	18 08	76 05	—25 40	—4 36	खेडब्रह्मा	गुजरात	24 03	73 4	—37 36	—16 40
अल्मोड़ा	उत्तराखंड	29 37	79 40	—11 20	+9 44	अचलपुर	महाराष्ट्र	21 18	77 33	—19 48	+1 16	गयाजी	बिहार	24 48	85 1	+10 04	+31 08
अमेठी	यू.पी.	26 08	81 48	—2 48	+18 16	एटा	उ. प्र.	27 35	78 41	—15 16	+5 48	ग्वालियर	म.प्र.	26 14	78 10	—17 20	+3 44
आसनसोल	प. बंगाल	23 42	87 20	—20 40	+40 24	कच्छ भुज	गुजरात	23 15	69 40	—51 20	—30 16	गंगापुर	राजस्थान	26 29	76 44	—23 04	—2 00
अनूपगढ़	राजस्थान	29 10	73 13	—37 08	—16 04	कन्नौज	उ. प्र.	27 02	79 58	—10 08	+10 56	गाजीपुर	उ. प्र.	25 26	83 35	+4 20	+25 24
अकबरपुर	यू.पी.	26 26	82 33	+0 12	+21 16	कविरत्तिद्वीप	लक्षद्वीप	10 17	72 21	—40 36	—19 32	गान्तोक	सिक्किम	27 20	88 25	+24 20	+45 24
अमरेली	गुजरात	21 36	71 14	—45 04	—24 00	कलकत्ता	प. बंगाल	22 35	88 24	+23 36	+44 40	गंगानगर	राजस्थान	29 52	73 51	—34 36	—13 32
अगरतला	त्रिपुरा	23 50	91 23	+35 32	+56 36	कपूरथला	पंजाब	31 22	75 12	—28 32	—7 28	गोंडा	उ. प्र.	27 10	81 58	—2 12	+18 52
अनन्तपुरम	आं.प्रदेश	14 41	77 37	—19 32	+1 32	करनाल	हरियाणा	29 42	77 02	—21 52	—0 48	गोरखपुर	उ. प्र.	26 46	83 26	—3 32	+24 36
आईजोल	मिजोरम	23 45	92 45	+41 00	+62 04	कन्याकुमारी	तमिलनाडू	8 04	77 36	—19 36	+1 28	गोआ	गोआ	25 15	73 47	—34 52	—13 48
आहवा	गुजरात	20 47	73 42	—35 12	—14 08	कल्पाद	हिमाचल	31 41	79 10	—13 20	+7 44	गुवाहाटी	असम	26 11	91 45	+37 00	+58 04
आगरा	यू.पी.	27 11	78 02	—17 52	+3 12	करीमनगर	आं. प्र.	18 28	79 06	—13 36	+7 28	गुरदासपुर	पंजाब	32 03	75 27	—28 12	—7 08
आबू	राजस्थान	24 36	72 44	—39 04	—18 00	कानपुर	उ. प्र.	26 27	80 21	—8 36	+12 28	गुना	म. प्र.	24 40	77 30	—20 00	—1 04
आजमगढ़	यू.पी.	26 6	83 12	+2 48	+23 52	काठमाण्डो	नेपाल	27 42	85 17	+11 08	+32 12	घाटमशर	उ. प्र.	26 08	80 11	—9 16	+11 48
आरा	बिहार	25 36	84 42	+8 48	+29 52	कांगड़ा मन्दिर	हिमाचल	32 09	76 18	—24 48	—3 44	चंडीगढ़	चण्डीगढ़	30 40	76 52	—22 32	—1 28
ओरंगाबाद	बिहार	24 44	84 23	+7 32	+28 36	काशी	उ. प्र.	25 20	83 00	—2 00	+23 04	चन्दौसी	उ. प्र.	28 27	78 47	—14 52	+6 12
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	19 52	75 19	—28 44	—7 40	कांचिपुरम	तमिलनाडू	12 51	79 53	—10 28	+10 36	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	19 56	79 17	—12 52	+8 12
ओंगोलु	आंध्र प्र.	15 31	80 06	—9 36	+11 28	कार्गिल	जम्मू-का.	30 30	76 13	—25 08	—4 04	चिलास	जम्मू	35 36	74 17	—33 32	—12 28
इन्दौर	म.प्रदेश	22 43	75 52	—26 28	—5 28	किसनगढ़	राजस्थान	27 52	70 34	—47 44	—26 40	चीलो	राजस्थान	27 23	73 16	—36 56	—15 52

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. सं.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	13 19	75 47	−26 52	−5 48	डोंग	राजस्थान	27 28	77 20	−20 40	+0 24	नागकोविंल	तमिलनाडू	8 07	77 47	−18 52	+ 2 12
चित्रकूट	उ. प्र.	25 12	80 54	−6 24	+14 40	डेराबाबा	पंजाब	32 02	75 04	−29 44	−8 40	नीमच	म. प्र.	24 28	74 51	−30 36	−9 32
चित्तौड़गढ	राजस्थान	24 54	74 42	−31 12	−10 08	ढाका	बंग्लादेश	23 43	90 25	+31 40	+52 44	नैनीताल	उत्तराखंड	29 25	79 27	−12 12	+8 52
छपरा	बिहार	25 47	84 47	+9 08	+30 12	तलागंग	तलांगंगा	32 56	72 28	−40 08	−19 04	नेपालगंज	नेपालगंज	28 03	81 37	−3 32	+17 32
छत्तरपुर	म.प्र.	24 55	79 36	−11 36	+9 28	तराई	बंगाल	26 40	88 30	+24 00	+45 04	नीलगिरी	उड़ीसा	21 27	86 47	+17 08	+38 12
छिबरा मऊ	उ. प्र.	27 10	79 29	−12 04	+9 00	तेजु	अ. प्रदेश	27 54	96 14	+54 56	+76 00	पटना	बिहार	25 37	85 13	+10 52	+31 56
छ्वराटोंक	राजस्थान	24 40	76 51	−22 36	−1 32	तंजाबूर	तमिल.	10 51	79 21	−12 36	+8 28	पठानकोट	पंजाब	32 18	75 42	−27 12	−6 08
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	19 46	85 50	+13 20	+34 24	तिरूवन्तपुरम	केरल	8 44	77 20	−20 40	+0 24	पटियाला	पंजाब	30 22	76 25	−24 20	−3 16
जबलपुर	म. प्र.	23 10	79 58	−10 08	+10 56	शिलांग	मेघालय	25 31	90 15	+31 00	+52 04	परलकोट	म. प्र.	19 45	80 46	−6 56	+14 8
जयपुर	राजस्थान	26 55	75 50	−26 40	−5 40	थानेश्वर	पंजाब	29 58	76 56	−22 16	−1 12	पणजी	गोआ	15 41	73 10	−37 20	−16 16
जलपाईगुड़ी	बंगाल	26 32	88 44	+24 56	+46 00	दतिया	म. प्र.	25 39	78 27	−16 12	+4 52	पालनपुर	गुजरात	24 11	72 27	−40 12	− 19 08
जम्मू	जम्मू का.	32 44	74 54	−30 24	−9 20	दरभंगा	बिहार	26 10	85 55	+13 40	+34 44	पाण्डिचेरी	तमिलनाडू	11 56	79 48	−10 48	+10 16
जसवन्तनगर	उ. प्र.	26 51	78 55	−14 20	+6 44	दार्जलिंग	प. बंगाल	27 03	88 17	+23 08	+44 12	पानीपत	हरियाणा	29 27	76 59	−22 04	−1 00
जनकपुर	म. प्र.	23 42	81 51	−2 36	−18 28	हिसपुर	असम	26 20	92 10	+38 40	+59 44	प्रयागराज	उ. प्र.	25 25	81 53	−2 28	+18 36
जामनगर	गुजरात	22 27	70 5	−49 40	−28 36	दिण्डुक्कल	तमिलनाडू	10 13	78 05	−17 40	+3 24	पूना	महाराष्ट्र	18 31	73 52	−34 32	−13 28
जालौर	राजस्थान	25 35	72 44	−39 04	−18 00	दिल्ली	राजधानी	28 38	77 14	−21 04	−0 00	पोर्टब्लेयर	अन्दमान	11 44	92 41	40 44	+61 48
जूनागढ़	गुजरात	21 32	70 27	−48 12	−27 08	द्वारका	गुजरात	22 16	68 57	−54 12	−33 08	पुष्करजी	राजस्थान	26 28	74 33	−31 48	−10 44
जोधपुर	राजस्थान	26 19	73 4	−37 44	−16 40	देहरादून	उत्तराखंड	30 19	78 04	−17 44	+3 20	पेशावर	प. पाकि.	34 01	71 36	−43 36	−22 32
जौंनपुर	उ. प्र.	25 43	82 43	+0 52	+21 56	देशनोक	राजस्थान	27 54	73 16	−36 56	−15 52	पोरबन्दर	गुजरात	21 38	69 36	−51 36	−30 32
जींद	हरियाणा	29 19	76 23	−24 28	−3 24	देवगढ़	उड़ीसा	21 32	84 45	+9 00	+30 04	फतेहपुर	उ. प्र.	27 06	77 40	−19 20	+1 44
जैसलमेर	राजस्थान	26 54	70 57	−46 12	−25 08	धर्मशाला	हिमाचल	32 16	76 23	−24 28	−3 24	फरीदकोट	पंजाब	30 40	74 45	−31 00	−9 56
जालन्धर	पंजाब	31 19	75 35	−27 40	−6 36	धर्मपुरी	तमिलनाडू	12 08	78 11	−17 16	+3 48	फर्रुखाबाद	उ. प्र.	27 03	79 37	−11 32	+9 32
जाफराबाद	सौराष्ट्र	20 52	71 21	−44 36	−32 32	धारवाढ़	कर्नाटक	15 28	75 02	−29 52	−8 48	फतेहपुर	राजस्थान	27 52	75 02	−29 52	−8 48
झांसी	उ. प्र.	25 26	78 34	−15 44	+5 20	धार	म. प्र.	22 36	75 12	−29 12	−8 08	फुलेरा	राजस्थान	26 52	75 16	−28 56	−7 52
झालावाड़	राजस्थान	24 36	76 9	−25 24	−4 20	धौलपुर	राजस्थान	26 42	77 53	−18 28	+2 36	फीरोजपुर	पंजाब	30 57	74 36	−31 36	−10 32
झुंझनू	राजस्थान	28 07	75 25	−28 20	−7 16	धौलागिर	नेपाल	29 11	83 00	−21 00	−23 04	फैजाबाद	उ. प्र.	26 47	82 08	−1 28	+19 36
टोंक	राजस्थान	26 11	75 50	−26 40	−5 36	धांग्रंधा	सौराष्ट्र	22 59	71 30	−44 00	−22 56	फीरोजबाद	उ. प्र.	27 09	78 24	−16 24	+4 40
टेरू	जम्मू	36 14	72 42	−39 12	−18 08	नवलगढ़	राजस्थान	27 51	75 12	−29 12	−8 08	फूलपुर	उ.प्र.	25 32	82 7	−1 32	+19 32
टनकपुर	उ. प्र.	29 09	80 10	−9 20	+11 44	नसीराबाद	राजस्थान	26 18	74 46	−30 56	−9 52	फाजिलका	पंजाब	30 25	74 03	−33 48	−12 44
टाटानगर	बिहार	24 46	86 13	+14 52	+35 56	नड़ियाद	गुजरात	22 41	72 52	−38 32	−17 28	फतेहगढ़	उ. प्र.	27 23	79 35	−11 40	+9 24
टेहरी	उत्तराखंड	30 23	78 30	−16 00	+5 04	नाथद्वारा	राजस्थान	24 56	73 48	−34 48	−13 44	बक्सर	बिहार	25 34	83 59	+5 56	+27 00
टूंडला जं.	उ. प्र.	27 13	78 13	−17 08	+3 56	नाभा	पंजाब	30 22	76 10	−25 20	−4 16	बद्रीनाथ	उत्तराखंड	30 44	79 30	−12 00	+9 04
डायमण्ड	पं. बंगाल	22 11	84 12	+6 48	+27 52	नागपुर	महाराष्ट्र	21 09	79 6	−13 36	+7 28	वरंगल	आं. प्र.	18 04	79 53	−10 28	+10 36
डिब्रूगढ़	असम	27 29	94 56	+49 44	+70 48	नासिक	महाराष्ट्र	21 00	73 47	−34 52	−13 48	बड़ौदा	गुजरात	22 18	73 12	−37 12	−16 08
डूंगरपुर	राजस्थान	23 50	73 43	−35 08	−14 04	नाचना	राजस्थान	27 52	71 54	−42 24	−21 20	बलिया	उ. प्र.	24 44	84 09	+6 36	+27 40

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
बम्बई	महाराष्ट्र	18 155	72 150	—38 140	—17 136	भुवनेश्वर	उड़ीसा	20 154	85 152	+13 128	+34 132	रोपड़	(पंजा.)	30 157	76 130	—24 100	—2 156
बरेली	उ.प्र.	28 122	79 124	—12 124	+8 140	भूसावल	महाराष्ट्र	21 112	75 147	—26 152	—5 148	लखनऊ	(उ. प्र.)	26 151	80 159	—6 114	+15 100
बद्रीनाथ	उत्तराखंड	30 144	79 130	—12 100	+9 104	भूटान	भूटान	27 130	90 100	+30 100	+51 104	ललितपुर	(उ. प्र.)	24 141	78 124	—16 124	+4 1400
बर्द्धमान	पं. बंगाल	23 125	87 154	+21 136	+42 140	भुजकच्छ	गुजरात	23 115	69 141	—51 116	—30 112	लुधियाना	पंजाब	30 135	75 153	—26 128	—5 124
वहराइच	उ. प्र.	27 134	81 137	—3 132	+17 132	मथुरा	उ. प्र.	27 128	77 141	—19 116	+1 148	शाहजहांमपुर	उ. प्र.	27 154	79 157	—10 112	+10 152
वस्ती	उ.प्र.	26 148	82 146	+1 104	+22 108	चेन्नई	तमिलनाडू	13 105	80 117	—8 152	+12 112	शिलांग	(मेघा.)	25 134	91 145	+37 136	+58 140
व्यावर	राजस्थान	26 107	73 154	—34 124	—13 120	मणीपुर	मणीपुर	24 120	93 158	—45 152	—66 156	शिवपुरी	(म. प्र.)	25 130	78 104	—13 144	+3 120
वाराणसी	उ. प्र.	25 120	83 100	+2 100	+23 104	मण्डी	हि. प्र.	31 143	76 158	—22 108	—1 104	राजापुर	(म. प्र.)	23 124	76 114	—25 104	—4 100
वासवाड़ा	राजस्थान	23 133	78 126	—16 116	+4 148	मल्लपुरम	केरल	11 104	76 104	—25 144	—4 140	शेरकिला	(काश्मी.)	36 107	73 153	—34 128	—13 124
बाराबंकी	उ. प्र.	26 156	81 110	—5 120	+15 144	मालेगांव	महाराष्ट्र	20 131	74 130	—32 100	—10 156	श्रीनगर	(काश्म.)	34 106	74 151	—30 136	—9 132
बालू घाट	प. दिजाज	25 114	88 147	+25 108	+46 112	मुरादाबाद	उ. प्र.	28 150	78 150	—14 140	+6 124	शिमला	(हिमा.)	31 106	77 110	—21 120	—0 116
बाँदा	उ. प्र.	25 128	80 121	—8 136	+12 128	मुंगेर	बिहार	25 123	86 130	+16 100	+37 104	संतालपु	(गु.)	23 147	70 128	—48 108	—27 104
बांदीकुई	राजस्थान	27 126	76 124	—24 124	—3 120	मुजफ्फरपुर	बिहार	26 107	85 127	+11 148	+32 152	सातारा	(महा.)	17 147	73 154	—34 124	—13 120
बूंदी	राजस्थान	25 127	75 140	—27 120	—6 116	फुजफ्फराबाद	कश्मीर	34 133	73 127	—36 112	—15 108	सागर	(म. प्र.)	23 150	78 145	—15 100	+6 104
ब्रह्मकुण्ड	अरु. प्रदेश	27 156	96 110	+54 140	+75 144	मेघालय	शिलंग	25 157	82 100	+38 100	+59 104	सरदारशहर	(राज.)	28 127	74 130	—32 100	—10 156
बंगलौर	कर्नाटक	12 158	77 135	—19 140	+1 124	मैसूर	कर्नाटक	12 129	76 120	—26 120	—2 116	सवाईमाधोपुर	(राज.)	25 159	76 124	—24 124	—3 120
बैतूल	म. प्र.	21 151	77 156	—18 116	+2 148	मेरठ	उ. प्र.	29 101	77 145	—19 100	+2 104	सहारनपुर	(उ. प्र.)	29 159	77 123	—20 128	+0 136
बेलगांव	कर्नाटक	15 155	74 131	—31 156	—10 152	मिर्जापुर	उ. प्र.	25 110	82 137	+0 128	+21 132	सोमनाथ	(गुज.)	21 101	70 126	—48 116	—27 122
बुलन्दशहर	उ. प्र.	28 124	77 152	—18 103	+2 132	मेडतासिटी	राजस्थान	26 139	74 103	—33 148	—12 144	सोलापुर	(महा.)	17 140	75 148	—30 148	—5 144
बिलासपुर	हिमाचल	31 119	76 150	—22 140	—2 136	यानामा	आं. प्रदेश	16 146	82 113	—1 108	+19 156	सोलन	(हिमा.)	30 155	77 109	—21 124	—0 120
बिलासपुर	म. प्र.	22 105	82 110	—1 120	+19 144	यासिन	केरल	36 121	73 119	—36 148	—12 144	सूरत	(गुज.)	21 112	72 150	—38 140	—17 136
बिजनौर	उ. प्र.	29 123	78 111	—17 116	+3 148	यवतमाल	महाराष्ट्र	20 124	78 108	—17 128	+3 136	सिकन्दराबाद	आ. प्र.	17 127	78 133	—15 148	+5 116
बिहार शरीफ	बिहार	25 111	85 132	+12 108	+33 112	यादगीर	कर्नाटक	16 147	77 108	—17 128	+ 3 136	सिरोही	(राज.)	24 156	72 150	—38 140	—17 136
बीकानेर	राजस्थान	28 101	73 119	—26 144	—15 140	रतलाम	म. प्र.	23 119	75 103	—29 148	—8 144	सीकर	(राज.)	27 151	75 114	—29 104	—8 100
बीजापुर	कर्नाटक	16 150	75 142	—27 112	—6 108	रत्नागिरी	महाराष्ट्र	16 159	73 119	—36 144	—15 140	सीतापुर	(उ. प्र.)	27 136	80 140	—7 120	+13 144
बादर	कर्नाटक	18 110	77 147	—18 152	+2 112	राजकोट	गुजरात	22 118	70 150	—46 140	—25 126	हरिद्वार	उत्तराखंड	29 158	78 113	—17 108	+3 156
बीरमगढ़	गुजरात	23 100	72 102	—41 152	—20 148	राजचूर	(कर्ना.)	16 112	77 121	—20 136	+0 128	हरदोई	(उ. प्र.)	27 123	80 110	—9 120	+11 144
बोगरा	बंगलादेश	24 151	89 124	+27 126	+48 140	राजमपेट	(आ. प्र.)	14 112	79 134	—11 144	+9 120	हथुवा	बिहार	26 112	84 105	+6 120	+27 144
भरतपुर	राजस्थान	27 115	77 130	—20 100	+1 104	रामपुर	(यू.पी.)	28 147	79 102	—13 152	+7 112	होशंगाबाद	(म. प्र.)	22 146	77 145	—19 10	+2 104
भंडारा	महाराष्ट्र	21 110	79 140	—11 120	+9 144	रामेश्वर	(तमिल.)	9 117	79 134	—11 134	+9 120	हजारीबाग	झारखंड	24 100	85 123	+11 132	—32 127
भरूच	गुजरात	21 141	73 100	—38 100	—16 156	रायबरेली	(उ. प्र.)	26 114	81 113	—5 108	+15 156	हाजीपुर	बिहार	25 135	83 111	+2 144	—23 148
भटिन्डा	पंजाब	30 111	74 157	—30 112	—9 108	राजमंड्रि	(आ. प्र.)	17 105	81 148	—2 148	+18 116	होशियारपुर	(पंजा.)	31 132	75 155	—26 120	—5 116
भदोही	उ. प्र.	25 124	82 134	+0 116	+21 120	रायपुर	छत्तीसगढ़	21 115	81 138	—3 128	+17 136	हौशंगाबाद	(म. प्र.)	22 146	77 143	—19 108	+1 156
भोपाल	म. प्र.	23 116	77 123	—20 128	+0 136	राजगढ़	(म. प्र.)	24 100	76 144	—23 104	—2 100	हैदराबाद	(आन्ध्र)	17 127	78 130	—16 100	+5 104
भीलवाड़ा	राजस्थान	24 121	74 140	—31 120	—10 116	राजगढ़	(राज.)	27 140	76 124	—24 124	—3 120	हिसार	हरियाणा	29 114	75 144	—27 104	—6 100
भिवानी	हरियाणा	28 148	76 108	—25 128	—4 124	राजनन्द गांव	म.प्र.	21 115	81 105	—5 140	+15 115	हैद्राबाद	पाकिस्तान	25 123	68 122	—56 132	—35 128
भावनगर	गुजरात	21 144	42 110	—42 120	—20 116	रोहतक	हरियाणा	28 154	76 138	—23 128	—2 124	हिंगाटा	(उड़ी.)	20 122	85 112	+10 148	+31 152

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
वेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	—२०।५६	+१२।०	+६।३०	+६।३०।४	—१।३
कनबेरा	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४९।८पू.	—३।२८	" १०।०	" ४।३०	+४।४७।३६	" ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२।०द.	१४६।१७पू.	—१४।५२	" १०।०	" ४।३०	+४।३६।१२	" ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+१९।०	" ९।०	" ३।३०	+४।२०।४	" ०।४४
सेऊल	द. कोरिया	३७।४०उ.	१२७।० पू.	—३२।०	" ९।०	" ३।३०	+३।२९।४	" ०।३३
प्योगयांग	उ. कोरिय	३९।०उ.	१२५।३०पू.	—३८।०	" ९।०	" ३।३०	+३।२३।४	" ०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।१८उ.	१२१।३२पू.	—५३।५२	" ९।०	" ३।३०	+२।५७।१२	" ०।३०
फिर्जाटीप	फिजी	१८।०द.	१७९।०पू.	+६।२६	" १२।०	" ६।३०	+६।४७।४	" १।८
पेइचिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	" ८।०	" २।३०	+२।३६।२४	" ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	" ८।०	" २।३०	+२।२७।४४	" ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	—८।४०	" ७।३०	" २।०	+२।१२।२४	" ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	—३४।५२	" ७।३०	" २।०	+१।४६।१२	" ०।१७
बेंगकांक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८।०	" ७।०	" १।३०	+१।३३।४	" ०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६।८पू.	—५।२८	" ६।३०	" १।०	+१।१५।३६	" ०।१२
मांडले	" "	२२।०उ.	९६।५पू.	—५।४०	" ६।३०	" १।०	+१।१५।२४	" ०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।८ पू.	+३४।३२	" ५।३०	" ०।०	+०।५५।३६	" ०।९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+१।४०	" ६।०	" ०।३०	+०।५२।४४	" ०।८
काडी	सीलोन लंका	७।११उ.	८०।३२पू.	—०।०	" ५।३०	— ०।०	+०।२१।१२	" ०।२
राज. दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	—२१।४	" ५।३०	+ ०।०	+ ०।०।०	" ०।०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+६।४८	" ४।३०	— १।००	—०।३२।८	+०।५
करांची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।०पू.	—३२।०	" ५।०	" ०।३०	—०।४०।५६	" ०।६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	—४।१२	" ३।३०	" २।०	—१।४३।८	" ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।१ पू.	+०।४	" ३।०	" २।३०	—२।८।५२	" ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	—२।०	" ३।०	" २।३०	—२।१०।५६	" ०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।०पू.	—०।०	" ३।०	" २।३०	—२।८।५६	" ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+५।१२	" ३।०	" २।३०	—२।३।४४	" ०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	" ३।०	" २।३०	—२।३८।३६	" ०।२६
नाइरोबी	पूर्वी अफ्रीका	१।२०द.	३६।४४पू.	—३३।४	" २।३०	" ३।०	—२।४२।०	" ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	" २।०	" ३।३०	—२।४३।४४	" ०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	" २।०	" ३।३०	—२।४५।८	" ०।२८
जेरुसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	" २।०	" ३।३०	—२।८।८	" ०।२८
काहिरा	मिश्र	३०।१उ.	३१।१३पू.	+४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।४।४	" ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	" २।०	" ३।३०	—२।५७।०	" ०।३०
ट्रांसवालय	दक्षि. अफीका	२५।०द.	२९।०पू.	+४।०	" २।०	" ३।३०	—३।१२।५६	" ०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।२३।४८	" ०।३३
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	—२६।४०	" २।०	" ३।३०	—३।३५।३६	" ०।३६

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	+ १।०	— ४।३०	—३।४६।२८	+०।३८
बुढ़ापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।५ पू.	+१६।२०	" १।०	" ४।३०	—३।५२।३६	" ०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	—६।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।२०	" ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरी अफ्रीका	३२।४५द.	१३।१५पू.	—७।०	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।५६	" ०।४३
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	—१०।४	" १।०	" ४।३०	" ४।१९।०	" ०।४८
यान	पश्चि.जर्मनी	५०।४३उ.	७।६पू.	—३१।३६	+ १।०	" ४।३०	" ४।४०।३२	" ०।४८
जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६।४२उ.	६।९पू.	—३५।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।४४।२०	" ०।४९
ब्रू सेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	—४२।३६	+ १।०	— ४।३०	" ४।५१।३२	" ०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	—५०।४०	+ १।०	" ४।३०	" ४।५९।३६	" ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	—०।०	+ ०।०	" ५।३०	" ५।८।५६	" ०।५१
लंदन	"	५१।३२उ.	०।५प.	—०।२०	— ०।०	" ५।३०	" ५।९।२६	" ०।५३
मॉड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	—७५।०	+ १।०	" ४।३०	" ५।२३।५६	" ०।५४
जिब्राल्टर "	जिब्राल्टर	३६।७उ.	५।२२प.	—८१।२८	+ १।०	" ४।३०	" ५।३०।२४	" ०।५७
लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	—३६।४०	— ०।०	" ५।३०	" ५।४५।३६	" १।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+४१।०	" ५।०	" १०।३०	" ९।२७।५६	" १।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।०प.	+४।०	" ५।०	" १०।३०	" १०।४।५६	" १।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	—२।४४	" ५।०	" १०।३०	" १०।११।४०	" १।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।०प.	—८।०	" ५।०	" १०।०	" १०।१६।५६	" १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	—३७।८	" ६।०	" ११।३०	" ११।४६।४	" १।५७

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद- इस मसय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रेनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर ही ग्रेनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में- ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्राय धूप घडी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार कोई भी [illegible] फिर भी रेलवे टाईम को देशी (धूप घड़ी) टाईम में बदलने की विधि हम ऊपर लिख चुके हैं।

चालन कोष्ठक

मिनट	० घं.	१ घं.	२ घं.	३ घं.	४ घं.	५ घं.	६ घं.	७ घं.	८ घं.	९ घं.	१० घं.	११ घं.	१२ घं.	१३ घं.	१४ घं.	१५ घं.	१६ घं.	१७ घं.	१८ घं.	१९ घं.	२० घं.	२१ घं.	२२ घं.	२३ घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५	६	२४	५	४३	६	२६	५	४१	६	२८	५	४०	६	३०	५	३८	६	३१	५	३६	६	३३	५	३४	जुला.३
७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८		२६		४७		२८		४५		३०		४३		३१		४१		३३		४०		३५		३८	९
१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१		२८		५०		२९		४८		३१		४७		३३		४५		३४		४३		३६		४२	१५
१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५		२८		५४		३०		५२		३१		५०		३३		४९		३५		४७		३६		४६	२२
२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८		२८		५७		३०		५५		३१		५४		३३		५२		३४		५१		३६		४९	२८
३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०		२८		५९		२९		५८		३१		५७		३२		५५		३३		५४		३५		५३	अग. ४
फर. ६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२६		३		२७	६	२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५८		३१		५७		३३		५६	१०
१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५		२५		४		२६		३		२७		२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९	१६
१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७		२२		६		२३		५		२४		४		२५		३		२६		२		२७	६	२	२२
२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८		१९		७		२०		७		२१		६		२२		५		२२		५		२३		४	२९
मार्च २		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९		१६		९		१७		८		१७		८		१८		७		१८		७		१९		६	सितं. ४
८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०		१२		१०		१३		९		१३		९		१४		९		१४		८		१४		८	१०
१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		९	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२	५	५९		१३	२८
अप्रै. २	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११	५	५५		१२	५	५५		१३	५	५५		१३	५	५४		१३	५	५४		१४		५३		१४	अक्टू. ६
८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२		५१		१३		५१		१३		५०		१४		५०		१४		५०		१५		४९		१६	११
१४		५२		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२		४८		१३		४७		१४		४६		१५		४५		१६		४५		१६		४४		१७	१७
२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३		४४		१४		४३		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१८		३९		१९	२३
२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४		४१		१५		४०		१६		३९		१७		३७		१८		३६		१९		३५		२१	२९
मई १		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५		३८		१६		३७		१७		३६		१९		३५		२०		३३		२१		३२		२२	नवं. ३
७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६		३६		१८		३४		१९		३३		२०		३२		२२		३०		२३		२९		२४	९
१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२३		२८		२५		२६		२७	१५
१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२४		२८		२६		२६		२७		२४		२९	२०
२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१		३१		२३		३०		२४		२८		२६		२६		२८		२५		२९		२३		३१	२६
३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२		३१		२४		२९		२६		२७		२८		२६		३०		२४		३२		२२		३३	दिसं. २
जून ६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७		३०		२५		३२		२४		३४		२२		३६	७
१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६		३१		२८		३०		३०		२८		३२		२६		३४		२४		३६		२२		३८	१३
१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८		३२		३०		३१		३२		२९		३३		२७		३५		२५		३७		२३		३९	१९
२४		४५		२०		४३		२२		४१		२४		३९		२५		३८		२७		३६		२९		३४		३१		३२		३३		३०		३५		२८		३७		२६		३९		२४		४१	२४
३०		४६		२१		४५		२३		४३		२५		४१		२६		३९		२८		३७		३०		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		३०		३८		२८		३९		२६		४१	३०

उत्तर	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण
अक्षांश	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		अक्षांश
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जुला. ६	५	४८	६	२२	५	४६	६	२३	५	४४	६	२५	५	४२	६	२७	५	४१	६	२९	५	३९	६	३०	५	३७	६	३२	५	३५	६	३४	५	३३	६	३६	५	३१	६	३८	५	३०	६	४०	५	२८	६	४२	जन. ४
१२		४९		२२		४८		२४		४६		२६		४४		२७		४२		२९		४१		३०		३९		३२		३७		३४		३५		३६		३३		३८		३२		३९		३०		४१	१०
१८		५०		२२		४९		२३		४७		२५		४५		२७		४४		२९		४२		३०		४०		३२		३९		३३		३७		३५		३५		३७		३४		३९		३२		४०	१५
२४		५१		२२		५०		२३		४८		२५		४७		२६		४५		२८		४४		२९		४२		३१		४०		३२		३९		३४		३७		३५		३६		३७		३४		३९	२१
३०		५२		२१		५१		२२		४९		२३		४८		२५		४६		२६		४५		२७		४४		२९		४२		३१		४१		३२		३९		३३		३८		३५		३६		३६	२७
अग. ५		५३		१९		५२		२०		५०		२२		४९		२३		४८		२४		४७		२५		४५		२७		४४		२८		४२		३०		४१		३१		४०		३२		३८		३४	फर. १
११		५३		१७		५२		१८		५१		२०		५०		२१		४८		२२		४७		२३		४६		२४		४५		२५		४४		२७		४२		२८		४१		२९		४०		३०	७
१७		५३		१५		५२		१६		५१		१७		५०		१८		४९		१९		४८		२०		४७		२१		४६		२२		४५		२३		४४		२४		४३		२५		४२		२६	११
२३		५३		१२		५२		१३		५१		१४		५०		१५		४९		१६		४९		१७		४८		१८		४७		१८		४६		१९		४५		२०		४४		२१		४३		२२	१८
२९		५२		१०		५२		१०		५१		११		५०		१२		४९		१२		४९		१३		४८		१४		४७		१४		४७		१५		४६		१६		४५		१७		४४		१७	२४
सितं. ४		५२		६		५२		६		५१		७		५०		८		४९		८		४९		९		४८		१०		४८		१०		४७		११		४७		११		४६		१२		४६		१२	मार्च २
१०		५१		३		५१		३		५०		४		५०		४		४९		५		४९		५		४९		५		४८		६		४८		६		४७		६		४७		७		४७		७	८
१६		५०		०		५०		०		५०		०		५०		०		४९		०		४९		०		४९		१		४९		१		४८		१		४८		१		४८		२		४८		२	१४
२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५७		४९	५	५७	२०
२८		४९		५३		४९		५३		४९		५३		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		५०		५२		५०		५२		५०		५१		५०		५१	२६
अक्टू. ३		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४९		४९		४९		४९		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५१		४७		५१		४७	३०
९		४८		४७		४८		४६		४८		४६		४९		४६		४९		४५		५०		४४		५०		४४		५१		४४		५१		४३		५२		४३		५२		४२		५२		४२	अप्रै. ५
१५		४७		४४		४८		४३		४९		४३		४९		४३		५०		४२		५१		४१		५१		४१		५२		४०		५२		३९		५३		३९		५३		३८		५४		३७	१२
२१		४७		४२		४८		४१		४९		४०		५०		४०		५०		३९		५१		३८		५२		३७		५३		३६		५४		३६		५४		३५		५५		३४		५६		३३	१८
२७		४८		४०		४९		३९		५०		३८		५१		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३१		५८		३०	२४
नवं. २		४९		३९		५०		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	१		२६	३०
८		५०		३८		५१		३६		५२		३५		५४		३४		५५		३३		५६		११		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	०		२७		२		२५		४		२४	मई ६
१४		५१		३७		५३		३६		५४		३५		५६		३३		५७		३२		५९		३०	६	०		२८	६	१		२८		२		२६		४		२५		५		२४		७		२२	१२
२०		५४		३८		५५		३६		५६		३५		५८		३३		५९		३२	६	१		३०		२		२९		४		२७		५		२६		७		२४		९		२३		१०		२१	१९
२६		५६		३९		५८		३७		५९		३६	६	१		३४	६	२		३२		४		३०		५		२९		७		२८		९		२६		१०		२४		१२		२३		१४		२१	२५
दिसं. २		५९		४०	६	१		३८	६	२		३७		४		३५		५		३४		७		३२		९		३०		१०		२८		१२		२७		१४		२५		१६		२३		१७		२१	३१
८	६	२		४२		४		४०		५		३९		७		३७		९		३५		११		३३		१२		३२		१४		३०		१६		२८		१७		२६		१९		२५		२१		२३	जून ७
१४		५		४५		७		४३		८		४१		१०		३९		१२		३८		१४		३६		१५		३४		१७		३२		१९		३०		२१		२९		२३		२७		२५		२५	१३
२०		८		४७		१०		४५		११		४४		१३		४२		१५		४०		१७		३८		१८		३७		२०		३५		२२		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७	१९
२६		११		५०		१३		४८		१४		४७		१६		४५		१८		४३		२०		४१		२१		४०		२३		३८		२५		३६		२७		३४		२९		३२		३१		३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०				अक्षांश २१				अक्षांश २२				अक्षांश २३				अक्षांश २४				अक्षांश २५				अक्षांश २६				अक्षांश २७			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि
जन. १	६	३५	५	३२	६	३७	५	३०	६	३९	५	२८	६	४१	५	२६	६	४३	५	२४	६	४५	५	२२	६	४७	५	२०	६	४९	५	१८
७		३७		३६		३९		३४		४१		३२		४३		३०		४५		२८		४७		२६		४९		२४		५१		२२
१३		३८		४०		४०		३८		४१		३६		४३		३४		४५		३३		४७		३१		४९		२९		५१		२७
१९		३८		४४		४०		४२		४१		४१		४३		३९		४५		३७		४७		३५		४८		३३		५०		३२
२५		३७		४८		३९		४६		४०		४५		४२		४३		४४		४१		४५		४०		४७		३८		४९		३६
३१		३६		५१		३७		५०		३९		४९		४०		४७		४२		४६		४३		४४		४५		४३		४६		४१
फर. ६		३४		५५		३५		५४		३६		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४८		४२		४७		४३		४६
१२		३१		५८		३२		५७		३३		५६		३४		५५		३६		५३		३७		५२		३८		५१		३९		५०
१८		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९		३०		५८		३१		५७		३२		५६		३३		५५		३४		५४
२४		२४		३		२४		३		२५	६	२		२६	६	१		२७	६	०		२८	६	०		२८		५९		२९		५८
मार्च २		१९		५		२०		५		२०		४		२१		४		२२		३		२२		३		२३	६	२		२३	६	२
८		१५		७		१५		७		१५		७		१६		६		१६		६		१७		६		१७		५		१७		५
१४		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		११		८		११		८		११		८
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
२६	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४
अप्रै. २		५३		१५		५३		१५		५२		१५		५२		१६		५१		१६		५१		१७		५१		१७		५०		१८
८		४८		१६		४७		१७		४७		१७		४६		१८		४६		१९		४५		१९		४४		२०		४४		२१
१४		४३		१८		४२		१९		४२		१९		४१		२०		४०		२१		३९		२२		३८		२३		३७		२४
२०		३८		२०		३८		२१		३७		२२		३६		२३		३५		२४		३४		२५		३३		२६		३१		२७
२६		३४		२२		३३		२३		३२		२४		३१		२५		३०		२६		२८		२८		२७		२९		२६		३०
मई १		३१		२३		३०		२५		२९		२६		२७		२७		२६		२९		२५		३०		२३		३१		२२		३३
७		२८		२६		२६		२७		२५		२९		२३		३०		२२		३२		२०		३३		१९		३५		१७		३६
१३		२५		२८		२३		३०		२२		३१		२०		३३		१९		३४		१७		३६		१५		३८		१३		४०
१९		२३		३०		२१		३२		१९		३४		१८		३६		१६		३७		१४		३९		१२		४१		१०		४३
२५		२१		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		४०		१२		४२		१०		४४		८		४६
३१		२०		३५		१८		३७		१६		३९		१४		४१		१२		४३		१०		४५		८		४७		६		४९
जून ६		२०		३८		१८		४०		१६		४२		१४		४४		१२		४६		१०		४८		७		५०		५		५२
१२		२०		४०		१८		४२		१६		४४		१४		४६		१२		४८		१०		५०		७		५२		५		५४
१८		२१		४१		१९		४३		१७		४५		१५		४७		१२		५०		१०		५२		८		५४		६		५६
२४		२२		४३		२०		४५		१८		४७		१६		४९		१४		५१		१२		५३		९		५५		७		५८
३०		२४		४३		२२		४५		२०		४७		१८		५०		१६		५२		१३		५४		११		५६		९		५८

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २८				अक्षांश २९				अक्षांश ३०				अक्षांश ३१				अक्षांश ३२				अक्षांश ३३				अक्षांश ३४				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	५२	५	१६	६	५४	५	१४	६	५६	५	११	६	५८	५	९	७	१	५	७	७	३	५	४	७	६	५	२	जुला. ३
७		५३		२०		५५		१८		५७		१६		५९		१४		२		११		४		९		६		७	९
१३		५३		२५		५५		२३		५७		२१		५९		१९		१		११		४		१४		६		१२	१५
१९		५२		३०		५४		२८		५६		२६		५८		२४		०		२२		२		२०		४		१८	२२
२५		५०		३५		५२		३३		५४		३१		५६		२९	६	५८		२७		०		२५		२		२३	२८
३१		४८		३९		५०		३८		५१		३६		५३		३५		५५		३३	६	५६		३१	६	५८		२९	अग. ४
फर. ६		४४		४४		४६		४३		४७		४१		४९		४०		५०		३८		५२		३७		५३		३५	१०
१२		४०		४९		४२		४८		४३		४६		४४		४५		४५		४४		४७		४२		४८		४१	१६
१८		३५		५३		३६		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४१		४८		४२		४७	२२
२४		३०		५७		३१		५६		३२		५५		३२		५५		३३		५४		३४		५३		३५		५२	२९
मार्च २		२४	६	१		२५	६	०		२५	६	०		२६		५९		२७		५८		२७		५८		२८		५७	सितं. ४
८		१८		५		१८		४		१९		४		१९	६	३		१९	६	३		२०	६	२		२०	६	२	१०
१४		११		८		११		८		१२		८		१२		७		१२		७		१२		७		१३		७	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		१२	२२
२६	५	५८		१५	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१६	५	५६		१६	५	५६		१६	२८
अप्रै. २		५०		१८		४९		१९		४९		१९		४८		२०		४८		२०		४७		२१		४७		२१	अक्टू. ६
८		४३		२१		४२		२२		४२		२३		४१		२४		४०		२४		३९		२५		३९		२६	११
१४		३७		२५		३६		२५		३५		२६		३४		२७		३३		२८		३२		२९		३१		३०	१७
२०		३०		२८		२९		२९		२८		३०		२७		३१		२६		३३		२५		३४		२३		३५	२३
२६		२५		३१		२३		३३		२२		३४		२१		३५		१९		३७		१८		३८		१७		४०	२९
मई १		२०		३४		१९		३६		१७		३७		१६		३९		१४		४०		१३		४२		११		४३	नवं. ३
७		१६		३८		१४		३९		१२		४१		११		४३		९		४५		७		४६		५		४८	९
१३		१२		४१		१०		४३		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		०		५३	१५
१९		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		०		५३	४	५८		५५	४	५६		५७	२०
२५		६		४८		४		५०		२		५२	४	५९		५५	४	५७		५७		५५		५९		५३	७	२	२६
३१		४		५१		२		५४		०		५६		५७		५८		५५	७	०		५३	७	३		५०		५	दिसं. २
जून ६		३		५४		१		५७	४	५९		५९		५६	७	१		५४		४		५१		६		४९		९	७
१२		३		५७		१		५९		५८	७	१		५६		४		५३		६		५१		९		४८		१२	१३
१८		३		५९		१	७	१		५९		३		५६		६		५४		८		५१		११		४८		१४	१९
२४		५	७	०		२		२	५	०		५		५७		७		५५		१०		५२		१२		५०		१५	२४
३०		७		०		४		३		२		५		५९		८		५७		१०		५४		१३		५२		१५	३०

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
मा. ता.	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	मा. ता.
जुला.६	५ २६	६ ४४	५ २४	६ ४६	५ २२	६ ४८	५ २०	६ ५०	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १३	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ ०	५ ७	७ ३	५ ४	७ ५	५ २	७ ७	५ ०	७ १०	४ ५७	७ १२	४ ५४	७ १५	जन. ४
१२	२८	४३	२६	४५	२४	४७	२२	४९	२०	५१	१८	५३	१६	५५	१४	५७	१२	६ ५९	१०	१	७	४	५	६	३	८	५ ०	११	५८	१३	१०
१८	३०	४२	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१७	५५	१५	५७	१३	६ ५९	१०	२	८	४	६	६	४	८	५ १	११	१५
२४	३२	४०	३१	४२	२९	४४	२७	४६	२५	४७	२४	४९	२२	५१	२०	५३	१८	५५	१६	५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	८	५	५	७	२१
३०	३१	३८	३३	४०	३१	४१	३०	४३	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१८	५५	१६	६ ५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	२७
अग. ५	३७	३५	३५	३६	३४	३८	३२	३९	३१	४१	२९	४२	२८	४४	२६	४५	२५	४७	२३	४९	२१	५०	१९	५२	१८	५४	१६	६ ५६	१४	६ ५७	फर. १
११	३९	३२	३७	३३	३६	३४	३५	३५	३३	३७	३२	३८	३१	३९	२९	४१	२८	४२	२६	४४	२५	४५	२३	४७	२२	४८	२०	५०	१८	५२	७
१७	४०	२८	३९	२९	३८	३०	३७	३१	३६	३२	३५	३३	३३	३४	३२	३६	३१	३७	३०	३८	२८	३९	२७	४१	२६	४२	२४	४४	२३	४५	१३
२३	४२	२३	४१	२४	४०	२५	३९	२६	३८	२७	३७	२८	३६	२९	३५	३०	३४	३१	३३	३२	३२	३३	३१	३४	२९	३५	२८	३७	२७	२८	१८
२९	४४	१८	४३	१९	४२	२०	४१	२०	४०	२१	४०	२२	३९	२३	३८	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	२४
सित. ४	४५	१३	४४	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१७	४०	१८	३९	१९	३८	१९	३८	२०	३७	२१	३६	२१	३५	२२	मार्च २
१०	४६	८	४६	८	४५	८	४५	९	४५	९	४४	१०	४४	१०	४३	११	४३	११	४२	११	४२	१२	४१	१२	४१	१३	४०	१३	४०	१४	८
१६	४८	२	४७	२	४७	३	४७	३	४७	३	४६	३	४६	४	४६	४	४५	४	४५	४	४५	५	४५	५	४४	५	४४	५	४४	६	१४
२२	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	२०
२८	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	२६
अक्टू.३	५१	४७	५२	४६	५२	४६	५२	४६	५२	४५	५३	४५	५३	४५	५३	४४	५४	४४	५४	४४	५४	४३	५५	४३	५५	४३	५५	४२	५६	४२	३०
९	५३	४२	५३	४१	५४	४१	५४	४०	५५	४०	५५	३९	५६	३८	५६	३८	५७	३७	५७	३७	५८	३६	५८	३६	५९	३५	६ ०	३५	६ ०	३४	अप्रै.५
१५	५५	३७	५५	३६	५६	३५	५७	३५	५७	३४	५८	३३	५९	३३	६ ०	३२	६ ०	३१	६ १	३०	६ २	३०	६ २	२९	६ ३	२८	४	२७	५	२६	१२
२१	५७	३२	५८	३१	५८	३१	५९	३०	६ ०	२९	६ १	२८	६ २	२७	३	२६	४	२५	५	२४	६	२३	७	२२	८	२१	९	२०	१०	१९	१८
२७	५९	२९	६ ०	२७	६ १	२६	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२१	८	२०	९	१९	१०	१८	११	१६	१२	१५	१४	१४	१५	१३	२४
नवं. २	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२०	८	१९	९	१८	१०	१७	१२	१५	१३	१४	१४	१२	१६	११	१७	१०	१९	८	२०	७	३०
८	५	२३	६	२१	८	२०	९	१८	१०	१७	१२	१६	१३	१४	१५	१३	१६	११	१८	१०	१९	८	२१	७	२२	५	२४	३	२६	२	मई ६
१४	८	२१	१०	१९	११	१८	१३	१६	१४	१५	१६	१३	१७	११	१९	१०	२१	८	२२	६	२४	५	२६	३	२८	१	२९	४ ५९	३१	४ ५७	१२
२०	१२	२०	१३	१८	१५	१६	१७	१५	१८	१३	२०	११	२२	९	२४	८	२५	६	२७	४	२९	२	३१	०	३३	४ ५८	३५	५६	३७	५४	१९
२६	१५	१९	१७	१७	१९	१६	२१	१४	२२	१२	२४	१०	२६	८	२८	६	३०	४	३२	२	३४	०	३६	४ ५८	३८	५६	४०	५४	४३	५२	२५
दिस.२	१९	२०	२१	१८	२३	१७	२५	१४	२७	१२	२९	१०	३१	५८	३३	६	३५	४	३७	२	३९	०	४१	५८	४३	५५	४६	५३	४८	५१	३१
८	२३	२१	२५	१९	२७	१७	२९	१५	३१	१३	३३	११	३५	९	३७	७	३९	५	४१	३	४३	०	४६	५८	४८	५६	५०	५३	५३	५१	जून ७
१४	२७	२३	२८	२१	३०	१९	३२	१७	३५	१५	३७	१३	३९	११	४१	८	४३	६	४५	४	४८	२	५०	५९	५२	५७	५५	५५	५०	५२	१३
२०	३०	२५	३२	२३	३४	२१	३६	१९	३८	१७	४०	१५	४२	१३	४४	११	४७	९	४९	६	५१	४	५३	५ २	५६	५९	५८	५७	०	५४	१९
२६	३३	२८	३५	२६	३७	२४	३९	२२	४१	२०	४३	१८	४५	१६	४७	१४	४९	१२	५२	१०	५४	७	५६	५	५९	५ २	७ १	५ ०	७ ४	५७	२६

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के न ीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ हैं और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) **सूर्योदय**—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३० ।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८
१५ अक्टूबर का सूर्योदय	६-०२ दिया गया है।

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९)

में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)	६	००	००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६	००	००
भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	०	२२	३२
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार	६	२४	३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६ ।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४=७ मिनट का।

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६	१०	००
जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया	०	२६	४०
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय	६	३८	४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) **इष्टकाल**—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) **सूर्य स्पष्ट**—पंचांग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) **लग्न सारिणी**—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८ ।३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रात: ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३ ।१५ अथवा १३ ।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

	घं.	मि.	सै.
२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला			
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा.	११	५५	००
२५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा.	५	२८	००
	६	२७	००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६	२७	००
	३	१३	३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६	७	३०

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३ ।२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३ ।२७ + १६ ।०८= २९ ।३५

उपरोक्त २९ ।२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९ ।२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९ ।३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११ ।५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चौथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी हैं, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११ ।३७ से १३ ।५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९ ।३७ में से २९ ।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९ ।३५ तक (२९ ।३५—२९ ।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९ ।०५ लग्न आई ५ ।३ ।४९ ।०५ कन्या के ३ अंश ४९ कला ०५ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

राशि	मेष ०	वृषभ १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुम्भ १०	मीन ११
०	८ २३ ५३ २६	९ १६ ४३ ३९	१० १५ ४६ ४८	११ २१ १४ ०	० २७ ९ २५	१ २९ ३८ ३	३ १ ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५१	८ ३ २४ ३९
१	८ २४ ३७ ५६	९ १७ २३ २१	१० १६ ५२ ४२	११ २२ २७ ४५	० २८ १८ ३९	२ ० ४१ ५	३ १ ४८ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२	८ २५ १८ २६	९ १८ २९ ६	१० १७ ५७ ५८	११ २३ ४१ ३६	० २९ २७ ५२	२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४८ ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
३	८ २५ ५९ ३८	९ १९ १९ २४	१० १९ ३ २	११ २४ ५५ २३	१ ० ३७ ६	२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
४	८ २६ ४० ४३	९ २० १० ४२	१० २० ९ २७	११ २६ ९ ५६	१ १ ४६ १९	२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
५	८ २७ २१ ४२	९ २१ १ २४	१० २१ १५ ३	११ २७ २३ २४	१ २ ५५ ३३	२ ४ ५० ०	३ ५ ५६ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
६	८ २८ २ ४७	९ २१ २ ६	१० २२ २० ३६	११ २८ ३६ ४१	१ ४ ४ ४८	२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
७	८ २८ ४३ ५२	९ २२ ४२ ५४	१० २३ २९ १३	११ २९ ५० २६	१ ५ १४ २	२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
८	८ २९ २४ २७	९ २३ ३३ ४४	१० २४ ३१ ५१	० १ ४ ५३	१ ६ २३ १६	२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ १४ ९	८ ८ ५३ १
९	९ ० ५ ५२	९ २४ २४ ३०	१० २५ २७ २४	० २ १८ १९	१ ७ ३२ ३०	२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३५	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १८ ५१ १०	८ ९ ३४ ५
१०	९ ० ४० ११	९ २५ १८ १८	११ २६ ४१ २०	० ३ ३२ ७	१ ८ ४२ ५४	२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १५	६ २४ ४८ ११	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
११	९ १ २९ ५१	९ २६ ६ २	११ २७ ५१ २३	० ४ ४७ ५१	१ ९ ५६ ३२	२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २५	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
१२	९ २ १५ २६	९ २७ ८ ५४	११ २९ ५ १२	० ६ २ २२	१ ११ २० ५	२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
१३	९ ३ २ ३	९ २८ ९ ५४	११ ० ९ ८	० ७ १७ ४१	१ १२ ३५ ८	२ १३ ७ ५२	३ १४ २१ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ५६ १५	८ १२ १३ ३२
१४	९ ३ ४६ ३८	९ २९ १० ५४	११ १ ३२ ५३	० ८ ३१ १५	१ १३ ४४ १२	२ १४ १० ०	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	७ २८ ४० ३२	७ २२ ३८ २७	८ १२ ५९ २६
१५	९ ४ ३६ ४९	१० ० ११ ५४	११ २ ४६ ३७	० ९ ४५ ४२	१ १४ ३५ १२	२ १५ १२ १	३ १६ ५० ०	४ २२ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० १२
१६	९ ५ २३ १०	१० १ १२ ५४	११ ४ ० ३८	० ११ ० १३	१ १५ ४४ १९	२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २३ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ १६ ४८	८ १४ २० ४२
१७	९ ६ १० ४६	१० २ १३ ५४	११ ५ १४ २४	० १२ ९ २५	१ १६ १० २०	२ १७ १६ ७	३ १९ १ ८	४ २४ ३८ ३	५ ० ४२ ३	७ ० ५२ ५०	७ २४ ५९ ५९	८ १५ ४० ३५
१८	९ ६ ५७ ४६	१० ३ १४ ५४	११ ६ २८ १०	० १३ १८ ३९	१ १७ १२ १५	२ १८ १८ १४	३ २० १९ १५	४ २५ ५५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३५ १
१९	९ ७ ४४ ४८	१० ४ १५ ५४	११ ७ ४१ ५५	० १४ २७ ५२	१ १८ १४ ४	२ १९ २१ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ ३
२०	९ ८ ३७ ४०	१० ५ १६ ५४	११ ८ ५५ ५५	० १५ ३७ ६	१ १९ १६ ८	२ २० २३ ३०	३ २२ ३८ ८	५ २८ १९ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२१	९ ९ २८ ५१	१० ६ १७ ५४	११ १० ९ ४०	० १६ ४६ १९	१ २० १८ ९	२ २१ २५ ३२	३ २३ ४८ ९	५ २९ ३४ १८	६ ५ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ६
२२	९ १० ५ १	१० ७ १८ ५४	११ ११ २३ २९	० १७ ५५ ३५	१ २१ २७ १०	२ २२ २७ १	३ २४ ५८ ३५	५ ० ४८ २१	६ ६ १० १२	७ ५ ६ १३	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ०
२३	९ ११ ७ १४	१० ८ १९ ५४	११ १२ ३७ १७	० १९ ४ ४८	१ २२ ३० १५	२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ७ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ १
२४	९ ११ ४२ ५०	१० ९ २० ५४	११ १३ ५१ ५	० २० १४ १२	१ २३ ३२ ५५	२ २४ ३२ ८	३ २७ १७ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ६ ४६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२५	९ १२ ३२ ४३	१० १० २१ ५४	११ १५ ४ ५७	० २१ २३ १६	१ २४ ३४ ७	२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ४ ३० ५	६ ९ २६ ५	७ ७ ३८ ३५	८ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२६	९ १३ २४ ४८	१० ११ २४ ३४	११ १६ १८ ४२	० २२ ३२ २९	१ २५ ३६ २	२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४३ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२७	९ १४ २४ ५०	१० १२ २३ ३०	११ १७ ३२ २७	० २३ ४१ ४३	१ २६ ३८ ५	२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२८	९ १५ ६ १	१० १३ ३५ ४०	११ १८ ४६ २१	० २४ ५० ५६	१ २७ ४० ८	२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५७	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२९	९ १५ ५६ ४८	१० १४ ४१ १७	११ २० ० १३	० २६ ० १२	१ २८ ५३ १	२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३७ ०	७ ११ ७ ५०	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१३	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	[illegible]	[illegible]	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४०	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	२३	३१	३९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	१६	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२७	३५	४३	५१	५९

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, रांची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
मेष	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
वृष	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर,
गया, मणिपुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, [illegible], झांसी, [illegible], [illegible], चित्रकूट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२४	२	३९	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ (अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित)

(अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३४	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	[illegible]	[illegible]	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३८	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४१	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२४	३१	३८	[illegible]	[illegible]	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४८		११	२३	३४	४६	५७	८	२०	२१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३५	४३	५२	०	८	१६	२५	३२	३९	४६	५४	०	८	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होश्यारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चि.	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१२	२२
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९	३७
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, चं.आ, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७
१	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६
३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९
८	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३८	४८	५७	७	१७	२६	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	२	९	१६	२३	२९	३६

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

अंशा:	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चि.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७	५९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	१९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	१९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४४

श्री आनंद धर्मी जी

PAGE NO.
DATE :

गुरु, शनि, विष्णु गायत्री के - 33 हजार जप और
विष्णु सहस्र नाम 108 पाठ

गुरु शान्ति (गुरुवार को) वस्त्र पीला 1¼ मी., चने दाल - 1¼ कि.
हल्दी - 200 ग्रा. गुड़ ½ कि.
मोती 11¼ - 15¼

सोमवार को रुद्र धारण — कलश ताम्बे का - घी शुद्ध - 2¼ कि.
सफेद वस्त्र 3¼ मी., चावल - 5¼ कि. चीनी - 1¼ कि.
स्वर्ण प्रतिमा शंकर जी

श्रीमती रीता देवी

राम मंत्र सम्पुटित विष्णु सहस्त्रनाम के
108 पाठ करना।

नार्णदी केतकी अयनांश २४

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

चन्द्र राशि	(१) मेष — वर्ण: क्षत्रिय, हंसक: अग्नि, वश्य: चतुष्पाद								
नक्षत्र	अश्विनी-१				भरणी-२				कृतिका-३
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ
वर्ग	सिंह	"	"	मृग	"	"	"	"	गरुड
अवकहड़ा चक्र	योनि अश्व	गण देव	युंजा पूर्व	नाडी आद्य	योनि गज	गण मनुष्य	युंजा पूर्व	नाडी मध्य	योनि मेष
पूर्ण राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: उत्तर			गोल: उत्तर			ऋतु: वसंत		

चन्द्र राशि	(२) वृषभ — वर्ण: वैश्य, हंसक: भूमि, वश्य: चतुष्पाद								
नक्षत्र	कृतिका-३			रोहिणी-४				मृगशीर्ष-५	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	इ	ऊ	ए	ओ	वा	वी	वु	वे	वो
वर्ग	"	"	"	"	मृग	"	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	गण राक्षस	युंजा पूर्व	नाडी अंत्य	योनि सर्प	गण मनुष्य	युंजा पूर्व	नाडी अंत्य	योनि सर्प	गण देव
पूर्ण राशि	१	१	१	१	१	१	१	१	२
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: उत्तर			गोल: उत्तर			ऋतु: ग्रीष्म		

चन्द्र राशि	(३) मिथुन — वर्ण: शूद्र, हंसक: वायु, वश्य: मानव								
नक्षत्र	मृगशीर्ष-५		आर्द्रा-६				पुनर्वसु-७		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा
वर्ग	मार्जार	"	"	"	"	सिंह	मार्जार	"	मेष
अवकहड़ा चक्र	युंजा पूर्व	नाडी मध्य	योनि श्वान	गण मनुष्य	युंजा मध्य	नाडी आद्य	योनि मार्जार	गण देव	युंजा मध्य
पूर्ण राशि	२	२	२	२	२	२	२	२	३
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: उत्तर			गोल: उत्तर			ऋतु: ग्रीष्म		

चन्द्र राशि	(४) कर्क — वर्ण: ब्राह्मण, हंसक: वारि, वश्य: जलचर								
नक्षत्र	पुनर्वसु-७	पुष्य-८				आश्लेषा-९			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डु	डे	डो
वर्ग	"	"	"	"	श्वान	"	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	नाडी आद्य	योनि मेष	गण देव	युंजा मध्य	नाडी मध्य	योनि मार्जार	गण राक्षस	युंजा मध्य	नाडी अंत्य
पूर्ण राशि	३	३	३	३	३	३	३	३	४
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: दक्षिण			गोल: उत्तर			ऋतु: वर्षा		

चन्द्र राशि	(५) सिंह — वर्ण: क्षत्रिय, हंसक: अग्नि, वश्य: वनचर								
नक्षत्र	मघा-१०				पू.फा.-११				उ.फा.-१२
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
वर्ग	उंदर	"	"	"	उंदर	श्वान	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	योनि उंदर	गण राक्षस	युंजा मध्य	नाडी अंत्य	योनि उंदर	गण मनुष्य	युंजा मध्य	नाडी मध्य	योनि गौ
पूर्ण राशि	४	४	४	४	४	४	४	४	५
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: दक्षिण			गोल: उत्तर			ऋतु: वर्षा		

चन्द्र राशि	(६) कन्या — वर्ण: वैश्य, हंसक: भूमि, वश्य: मानव								
नक्षत्र	उ.फा.-१२			हस्त-१३				चित्रा-१४	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
वर्ग	"	उंदर	"	"	मेष	श्वान	"	उंदर	"
अवकहड़ा चक्र	गण मनुष्य	युंजा मध्य	नाडी आद्य	योनि महिषी	गण देव	युंजा मध्य	नाडी आद्य	योनि व्याघ्र	गण राक्षस
पूर्ण राशि	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: दक्षिण			गोल: उत्तर			ऋतु: शरद		

योग: विष्कुंभ | प्रीति | आयुष्मान | सौभाग्य | शोभन | अतिगंड | सुकर्मा | धृति | शूल | गंड | वृद्धि | ध्रुव | व्याघात | हर्षण

चन्द्र राशि	(७) तुला — वर्ण: शूद्र, हंसक: वायु, वश्य: मानव								
नक्षत्र	चित्रा-१४		स्वाति-१५				विशाखा-१६		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	रा	री	रु	रे	रा	ता	ती	तू	ते
वर्ग	मृग	"	"	"	"	सर्प	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	युंजा मध्य	नाडी मध्य	योनि महिष	गण देव	युंजा मध्य	नाडी अंत्य	योनि व्याघ्र	गण राक्षस	युंजा मध्य
पूर्ण राशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: दक्षिण			गोल: दक्षिण			ऋतु: शरद		

चन्द्र राशि	(८) वृश्चिक — वर्ण: ब्राह्मण, हंसक: वारि, वश्य: कीट								
नक्षत्र	विशाखा-१६	अनुराधा-१७				ज्येष्ठा-१८			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	तो	ना	नी	नू	ने	नो	य	यी	यु
वर्ग	"	"	"	"	"	"	मृग	"	"
अवकहड़ा चक्र	नाडी अंत्य	योनि मृग	गण देव	युंजा मध्य	नाडी मध्य	योनि मृग	गण राक्षस	युंजा अंत्य	नाडी आद्य
पूर्ण राशि	७	७	७	७	७	७	७	७	८
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: दक्षिण			गोल: दक्षिण			ऋतु: हेमंत		

चन्द्र राशि	(९) धनु — वर्ण: क्षत्रिय, हंसक: अग्नि, वश्य: मानव/चत								
नक्षत्र	मूल-१९				पू.षा.-२०				उ.षा.-२१
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	ये	यो	भा	भी	भु	धा	फा	ढा	भे
वर्ग	"	"	उंदर	"	"	सर्प	उंदर	श्वान	उंदर
अवकहड़ा चक्र	योनि श्वान	गण राक्षस	युंजा अंत्य	नाडी आद्य	योनि वानर	गण मनुष्य	युंजा अंत्य	नाडी मध्य	योनि नकुल
पूर्ण राशि	८	८	८	८	८	८	८	८	९
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: दक्षिण			गोल: दक्षिण			ऋतु: हेमंत		

चन्द्र राशि	(१०) मकर — वर्ण: वैश्य, हंसक: भूमि, वश्य: चत/जल								
नक्षत्र	उ.षा.-२१			श्रवण-२२				धनिष्ठा-२३	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
वर्ग	"	सिंह	"	मार्जार	"	"	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	गण मनुष्य	युंजा अंत्य	नाडी अंत्य	योनि वानर	गण देव	युंजा अंत्य	नाडी अंत्य	योनि सिंह	गण राक्षस
पूर्ण राशि	९	९	९	९	९	९	९	९	१०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: उत्तर			गोल: दक्षिण			ऋतु: शिशिर		

चन्द्र राशि	(११) कुंभ — वर्ण: शूद्र, हंसक: वायु, वश्य: मानव								
नक्षत्र	धनिष्ठा-२३		शत.-२४				पू.भा.-२५		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
वर्ग	"	"	"	मेष	"	"	"	"	सर्प
अवकहड़ा चक्र	युंजा अंत्य	नाडी मध्य	योनि अश्व	गण राक्षस	युंजा अंत्य	नाडी आद्य	योनि सिंह	गण मनुष्य	युंजा अंत्य
पूर्ण राशि	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: उत्तर			गोल: दक्षिण			ऋतु: शिशिर		

चन्द्र राशि	(१२) मीन — वर्ण: ब्राह्मण, हंसक: वारि, वश्य: जलचर								
नक्षत्र	पू.भा.-२५	उ.भा.-२६				रेवती-२७			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	दी	दू	ज्ञा	झा	था	दे	दो	चा	ची
वर्ग	"	"	मेष	सिंह	सर्प	"	"	सिंह	"
अवकहड़ा चक्र	नाडी आद्य	योनि गौ	गण मनुष्य	युंजा अंत्य	नाडी मध्य	योनि गज	गण देव	युंजा पूर्व	नाडी अंत्य
पूर्ण राशि	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन: उत्तर			गोल: दक्षिण			ऋतु: वसंत		

योग: हर्षण | वज्र | सिद्धि | व्यतिपात | वरीयान | परिघ | शिव | सिद्ध | साध्य | शुभ | शुक्ल | ब्रह्म | ऐन्द्र | वैधृति

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. भृगु रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	५	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।८ है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अतः सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दुष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

षट् वर्ग सारिणी चक्र

रा.	चक्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
मार्ग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
० मे.	हो.	५	५	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
क.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

रा.	चक्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६ तु.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	११	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	११	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	०	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ ध.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान— सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिह्न ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भौंरी, लहसुन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दातों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान— जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

उपसूतिका ज्ञान—प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जाननी चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

सिर पाद प्रसव ज्ञान—बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका गृह द्वार ज्ञान—सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार—सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (वृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग—मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से सुख, तीसरे से भूजा, चौथे से हृदय, पाँचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें वे वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियों, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-अलग लक्षण ...

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट—कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। बैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष—माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बलगमी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क—प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह—माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चीज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ ... नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हृष्ट...

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में जिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, वदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४,, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या बसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, सुत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसुति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले वसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्रायः सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा बृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरष्टि योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे— चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष— चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

त्रिखल दोष—तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

दन्तोत्पत्ति फल— बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें में महाधनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल— पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

गण्डमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख ऐश्वर्यवान	मंत्रित्व प्राप्ति	राज्य सम्मान
आश्लेषा	शांति से शुभ	धन हानि	मातृ हानि	पितृ हानि
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुखी	धन-विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	कनि. भाई को कष्ट	मातृ हानि	स्वयं को हानि,
मूल	पिता को हानि	माता को हानि	धन नाश	शांति से शुभ
रेवती	राज्य सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख	व्याधियाँ

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति कराने [illegible]

करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसुति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

मूल निवास चक्र

चन्मामासानुसारेण	वैशा., ज्ये., मार्ग., फा.	चैत्र, श्राव., का., पौ.	आषा., आ.,माघ, भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूल नाशः	वंश नाशः	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल लाभः	अल्प जीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशु नाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धन लाभ	दयावः	कामिनी	मातृ नाश	भ्रातृ नाश	वैधव्यं	फलम्

[illegible] फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्य:
पुत्रादि	पितृ नाश	मातृ नाश	स्त्री लाभ	गुरु भक्त	बली	आत्म हानि	भ्रम:	तपस्वी	धन हानि	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानि:	मातृ हानि:	पितृ हानि:	अल्पायु:

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभाग:
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुल नाश	कुल हानि:	धन हानि:	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली कुहू जनन फल

सिनीवाली— अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल— अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिघ योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्यघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वघस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुन:॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल वियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलावल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना।	मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हीं हीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वत: स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चुर्ण एक सेर	भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	गोघृत।	ॐ भगवती हीं हीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठः ठः स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना	कूठ, गुगल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा।	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर रखना।	गोशृंग, लहसुन	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली निम्ब	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई	ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वत, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ तकिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हूं २ हन २ दुष्टाना ह्रां हूं फट स्वाहा

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं.	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्रौ)	वातज्वर. गात्रपीड़ा. निद्रा भय. बुद्धिभ्रम	९	१, २, ३,४ ९,१०, ११, २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणंनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रयम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः॥	५ सहस्र	खण्ड यव घृत	गुडौदन तिल	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यमः)	छर्द रोग. तीव्र ज्वर अनेक रोग. आलस्य	११	०,८०,४०,११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यतै पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्र पीड़ा. अनिद्रा. अतिदाह. उरूशूल	९	९,११,१६,२८	ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा रेता सिजिन्वति॥ ॐ अग्नये नमः॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कापसि मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, वडाधीका, नैवेद्य।	स्वर्ण, गोदान
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा. ज्वर. कुक्षिशूल. प्रलाप	७	७,९,१८,३०	ॐब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरूचोवेनआवः सुवेध्या उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविधवः॥ ॐ ब्रह्मणेनमः॥	५ सहस्र	तिलाज्य घृत यव	मध्वाज्यक्षो साख्यन्नक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कया भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष. महाकष्ट. अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९,५,७,१०	ॐ इमन्देवा असपत्न सुवध्वं महतेक्षे त्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोस्माक ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ चन्द्रमसे नमः॥	१० सहस्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष. ज्वर. सर्वांग पीड़ा. अनिद्रा	मृ.तु.	०,१८,०,०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना अश्वत्थमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा. कटि पीड़ा	७	७,१४,२,२१	ॐअदितिद्योरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः विश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐअदिताय: नमः॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर. शूल. महाकष्ट	७	७,७,१०,२१	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छवत्र सऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐबृहस्पतये नमः॥	१० सहस्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य।	सूवर्ण गौं, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्पः)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	०,०,४१,०	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः॥ ॐसर्पेभ्यो नमः॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्ठान्न, नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा. अर्द्धमात्र पीड़ा	२०	१५,७,१७,२०	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ पितरम्ये नमः॥	१० सहस्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्न्धान	भंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, उड़द
पू.फा. (भगः)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०,१५,०,३०	ॐभगप्रणोतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भयप्रनृभिनृवैनः स्याम॥ ॐभगाय नमः॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिलघृत	घृतौदन पायस	कटकारो मूलम	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य।	पित्तल, यव उड़द स्वर्ण गौ दान
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिर पीड़ा, अतिकष्ट	७	७,१४,७,६०	ॐदेवावध्वर्यूश्चागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वाय समंजाये तं प्रत्नकथा यं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नमः॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर, गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, सुवर्ण, रजत, अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरुशूल, आफरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५,१७,१५,०	ॐ विभ्राडबृहत्पिबतु सौम्य मध्वायुर्दधयज्ञपता व विहुतमम् वात्जूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति॥ ॐसवित्रे नमः॥	५ सहस्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गन्ध, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	स्वर्ण, पयस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११,९,९,१६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदा-छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदधः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मखव मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	अपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायु:)	नाना कष्ट, ज्वर पीड़ा	मृ.तु.	६०,१७,३०,०	ॐ वायो ये ते सहस्रिणी रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये॥ ॐ वायये नम:॥	१० सहस्र	तिल,यव घृत	घृत पायस	जाति मूलम्	चन्दन गन्ध (दमनक पुष्प) अगर, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तवेणु पकवान्न
विशाखा: (इन्द्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५,०,४,१३	ॐ इन्द्राग्नी आगंत सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यंमू। अस्यं पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नम:॥	१० सहस्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृत दीप, धृपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्र:)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६०,१२,३६,३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशध्ठसत्॥ ॐ मित्रायनम:॥	१० सहस्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुड उड़द	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्र:)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९,९,६,४	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ध्ठ हवे हवे सुहवध्ठशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहुतमिन्द्रध्ठस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्र:॥ ॐ इन्द्राय नम:॥	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्ण तिल, नील वस्त्रदान
मूल (राक्षस:)	मुख तथा उदर रोग, सन्निपात	७	०,९,१५,६	ॐ मातेव पुत्र पृथ्वी पुरीष्यमणि स्वेयोनाव भारुषा। तां विश्वेदेवर्ऋतुभि: संवदान: प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नम:॥	५ सहस्र	कन्दमूल घृत	सहवि उड़द	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णगरु धूप, माषामिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू.षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	०,१५,२४,१०	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरप:। अपाम्मार्ग-त्वमस्मदंनदु:स्वप्न्यध्ठसुव॥ ॐ अदभ्यो नम:॥	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठान्नहवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपापायसान्न नैवेद्य।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ गौदान
उ.षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३०,२४,२९,१६	ॐविश्वेदेवा: शृणुतेमध्ठहव मे ये अन्तरिक्षे य उपध्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिपि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनम:॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णु:)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोषभय, अतिसार	११	६०,२४,६,९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नेप्त्रेस्थो विष्णो: स्थूरत्सि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णेव नम:॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	तिलाज्य सहविपायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रश शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसव:)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५,२,२७,२१	ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामक्षुध:॥ ॐ वसुभ्यो नम:॥	१० सहस्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदन गन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुण:)	वात-ज्वर, सन्निपात, कष्ट	११	०,४५,३,३६	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद॥ ॐवरुणाय नम:॥	१० सहस्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगर गंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू.भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	०,१२,५१,१७	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वजं एकपात्पृथिवी समुद्र:। विश्वेदेवाऽऋता-वृधोहुवानास्तुता मंत्रा: कविशस्ता अघन्तु॥ ॐ अजैकपदे नम:॥	१० सहस्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृङ्गराज मूलम्	केसर चन्दन गंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्रदान
उ.भा. (अहिर्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१०,२०,७,१५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामालि ध्ठ सी निन नवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्या प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नम:॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	तिल घृत भुदग् माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पू.षा.)	वात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८,१०,९,२०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पूष्णे नम:॥	५ सहस्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि दध्यन्न	अश्वत्थ मूलम्	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तवस्त्र, पैत्तलपात्रं वृषभ, छायापात्र

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोथ (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हडफूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड्फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी विहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोध, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोवान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली(गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है — समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोशृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं — वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निंद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निंद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे— तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में — श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), धृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नेवैद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य — गाय, भैंस का घी

होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कडुवा सब प्रकार के स्वादों ये युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), व (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने ली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), कधेनु (लाल गाय), पकवान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), त्रोपानत् (छत्तरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिदृव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ोदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रन्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़यों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ॐ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मगंल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धुम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश— ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र अथवा अष्टम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु हो।

(८) यदि सप्तम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो बालक की सातवें दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भाव में चन्द्रमा हो और अष्टम भाव में शनि हो तो बालक नहीं जीवे।

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ शनि पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की एक वर्ष के अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आठवें स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बालक महीने के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है।

अन्य अरिष्ट योग-(१) तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार की हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

अरिष्ट भंग योग-(१) ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर	चर	चर
चर	स्थिर	द्विस्वभाव
स्थिर	द्विस्वभाव	स्थिर
द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

होरा लग्न—इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर शेष अं[illegible] कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कहीं आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना। **उदाहरण—** जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका फल नीचे लिखी सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

अष्टमर्क्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तम स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्टाष्टमेश्यो दशन्ति रञ्च न शोभनम्। मारके मारकान्तम शोभनम् व्यय द्वितीयेश यद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टवेति।

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	६	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	११	१३	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२६	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२	२९	५	१२
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१९	२४	१	७	१४	२०	२३	३	५	१३	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	१	३	१५	२२	१८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	३६	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घड़ी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३३	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५९	४	११	१७	२०
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

मेष लग्न—मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह्न, कटोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वच्छन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्रायः शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न—जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मैटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न—जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित्त, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्ट्स, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य, अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न—जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न—जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते है। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न—जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न—जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रशन्नचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न--जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दुष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न--बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न—जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न—जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न—जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १२, १६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	३	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	६०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

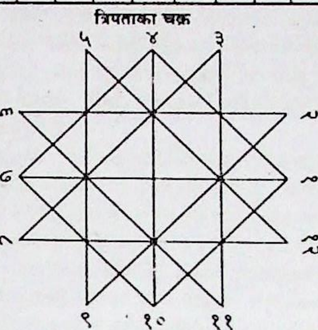
वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को स्थापित करें।

मुन्था—गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

त्रिपताका चक्र—वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताका के मध्य में रखकर क्रमशः अंक लिखें। माना वर्ष लग्न कर्क है। त्रिपताका चक्र निम्नवत है।

दशा—गत वर्षों में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़ कर उसमें २ घटायें तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो—१ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—



मुद्दा दशा

सूर्य	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	३०	दिन

त्रिराशिपति—वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

दृष्टि ज्ञान—वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। ग्रह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा चतुर्थ-दशम भाव को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से दृष्ट हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हों और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो ते अंध रोग होगा।

नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कलत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

ग्रह-शील-चक्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव, अंगि सुरगुरुइज्य	भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ, क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शुद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	......	......
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	....	......
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुड़ी	गुप्त-तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	.....	.....
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	......	......
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रात:	प्रात:	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जमांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्र रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक्	सम	तिर्यक्	अधो.	अधो.	अधो.

अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्वपूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फरवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण लखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून १, १०, १९, २८** जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जूलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७ ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०, ३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२,

३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४. ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्टू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४,२६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। अक्टू. ७, १६, २५ को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। अक्टू. ८, १७, २६ को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५,, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नवं. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवम्बर ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७,६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दि. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१,३५, ४०, ४४,४९, ५२, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसम्बर ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है. इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है. इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहां पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यही ५-३० प्रात:काल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने से सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहयता से गणित शीघ्रता से व सरलता से हो जाता है. इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	२१	५४
१५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति $\frac{७१२ \times ९७५}{१४४०}$

=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला

	राशि	अंश	कला
१५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

	राशि	अंश	कला
२४ घंटे की गति	०	११	५२
१२ घंटे की गति (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ घंटे की गीत (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ घंटे की गति	०	८	०२
	+६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

क्रमांक १

चन्द्र स्पष्ट

सर्वर्क्ष	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४
	०	६	९	१३	१६	२०	२३	२७	[illegible]	३४	३८	४१	४५	४८	५	५६	५९	३	७	१०
गति	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वर्क्ष	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३७	४०	४४	४८	५१	५५	५९	३	६	११	१४	१७	२१	२५
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वर्क्ष	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६
	२९	३३	३६	४०	४४	४८	१२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४०
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वर्क्ष	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८
	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५८	२	६
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वर्क्ष	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	११	१५	१९	२३	२८	३२	३६	४०	४५	४९	५४	५८	०	७	११	१६	२०	२४	२९	३३
गति	१३	१३	१३	१३	[illegible]	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	४५	४४	४३	४[illegible]	[illegible]	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वर्क्ष	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६१
	३८	४२	४५	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४१	४६	५०	५५	५९	४
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वर्क्ष	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२
	८	१३	१७	२२	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५६	१	६	१०	१५	२०	२५	३०	३५	३९
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वर्क्ष	६२	६२	६२	६२	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६४	६४
	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१	१५	२०
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वर्क्ष	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६६
	२६	३१	३६	४१	४६	५२	५७	३	८	१३	१८	२४	२९	३४	४०	४५	५२	५६	१	७
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वर्क्ष	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६८	+
	१२	१८	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५९	५	११	१८	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	+
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	+
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	+

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-(१) भयात भभोग निकालना-६०।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि- चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

क्रमांक २

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

अश्विन	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले
०	०	१	१	२	२	३	३	४
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०		०	०	०	०	०	०	०
मघा	**पू.फा.**	**उ.फा.**	**हस्त**	**चित्रा**	**स्वाति**	**विशाखा**	**अनुराधा**	**ज्येष्ठा**
४	४	५	५	६	६	७	७	८
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मूल	**पू.षा.**	**उ.षा.**	**श्रवण**	**धनिष्ठा**	**शतभिषा**	**पू.भा.**	**उ.भा.**	**रेवती**
८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण-यथा भभोग ६५।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२।०९ को और भभात् १९।०३ को गुणा किया (१२।०९)×(१९।०३)=२३१°।२७'।२७" या ३°।५१'।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

गुणनफल	=	३।५१।२७
गत नक्षत्र विशाखा का मान	=	७।०३।२०।००
चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ	=	७।०७।११।२७

चन्द्र गति १२।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में विशेष अंश कलादि अंतरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम करने में सक्षम है। अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		[illegible]	[illegible]	[illegible]		२	११	३		१	७	२९		१८	[illegible]	[illegible]
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	[illegible]	[illegible]		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	[illegible]

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	२०	केतु	२	१	६	सूर्य	—	३	१८	राहु	१४	४	२४	शनि	१०	५	१२
९	३०		२	—	५		—	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	१०		१७	३	—	चन्द्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९
१५	२०	शुक्र	१७	—	—		६	—	—		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	—	चन्द्र	१	९	—	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	—		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२६	५०	सूर्य	५	११	३	मंगल	५	१	२९	गुरु	७	९	१८	बुध	४	—	१३
२७	०		५	१०	६		५	—	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्रमा १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष	
	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	२	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	६
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

ग्रह	सू	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा

ग्रह	सू	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घ.	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	९	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ.	०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	२	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मास	०	३	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२९	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	[illegible]	०	३	१२	२४	२१	३	३
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२१
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरु (बृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	[illegible]
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घटी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घटी	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१०	२०	१४	२३	१७
घटी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घटी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ.	६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	३	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	२०	२६	२५	९	३
घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०	४५	३२	२१	२२	२५

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३१

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घटी	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२९	२२	३	२६	२३	६	१९	३
घटी	१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१३	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घटी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घटी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घटी	४९	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घटी	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२३	२९
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घटी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२९	१५	८	२०	१२	२९	२५	२५
घटी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घटी	५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घटी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घटी	२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घटी	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	२०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२३	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अतः प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यतः किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।
२. ग्रह शुभ वा अशुभ ग्रह से युक्त या दृश्ट हैं अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषड़ाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान उपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वाभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वाभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वाभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वाभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अतः केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे, सिद्ध है कि व्ययेश और धनेष स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था वाले ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अतः केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्भावगतै वाऽपि यद्यदभावेश संयुतै। ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**—धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**—तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**—बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**—चिंता युक्त, मानसिक दुःख, रोगी। **शक्त अवस्था**—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दुःख मिलता है।

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि— समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः"** बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्ध्य दें। **नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्य मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि— यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर **"ॐ नमः शिवाय"** आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि— सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **'ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः'** की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि— बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि— यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि— यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि— यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें।

राहु की शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु— केतु के बीज मंत्र **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)— १ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध— अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानांतर	भयं	श्रीः	मानभंग	दैत्य	विजयः	मार्गःगमन	पीड़ाः	सुकृ नाश	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोगः	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौमः	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभय	शोकः	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुखः	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलहः	रोगः	पाप	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.लाभ	पुत्रः प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शत्रु भीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रपीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्म हानि	विजयः	सुलाभं	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभः	शोकः
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्मः १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मंत्री	दुःशील	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुचिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्म हानि	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौमः	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	च.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	मं.गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथु.१५°	धनु१५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु १५°	मिथुन १५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	ष४°से ३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु१३°	तुला१०°	कुम्भ २०°	कर्क	मकर
स्वगृह- (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६-६-७	४	२-३-	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ., उ.षा., उ.फा. ६	रो., ह., श्र. १०	मृ., चि., ध. ७	आश्लेषा, ज्ये. रे. १७	पुन. वि., पू. भा. १६	म.पू.फा., पू.षा. २०	पुष्य, अनु., उ.भा. १९	आर्द्रा, स्वा., शत. १८	अश्विनी, भ. मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्यु	नैऋत्यु
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन	३१/४	१/४	५	२१/२	४३	३	१००	६०	६०
मध्यम दिनगति, कला, विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्र गति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"-	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३".४३	१°५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	×	×
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
अनुक्रम से वेध स्थान	९-१२-४-५ शनि वर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	३-६-१०-११ १२-९-१०-५	३-६-१०-११ १२-९-१०-५

टिप्पणी—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है। जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

१. मूंग
२. हरितवस्त्र
३. सुवर्ण
४. कांस्य
५. मृगमद
६. आज्य
७. पंचरत्न
८. दासी
९. हस्तिदंत



ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००

१. चित्रांबर
२. श्वेताश्व
३. धनु
४. हीरा
५. रौप्य
६. सुवर्ण
७. तंदुल
८. सुगंध
९. धृत



पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००

१. वशपात्र
२. तंदुल
३. कर्पूर
४. मौक्तिक
५. श्वेतवस्त्र
६. वृषभ
७. रौप्य
८. घृतकुंभ
९. शंख



आग्नेयां चतुरस्त्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००

१. अश्व
२. शर्करा
३. हलद
४. पीतधान्य
५. पीतवस्त्र
६. पुष्पराग
७. लवण
८. कांचन



उ. दाघचतुरस्त्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव आंगिरसगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप १९०००

१. माणिक
२. गेहूं
३. धेनु
४. कुसुंभ
५. गुड़
६. ताम्र
७. रक्तवस्त्र
८. रक्तपुष्प
९. सुवर्ण



मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००

१. प्रस्त्रल
२. गेहूं
३. मसूर
४. ताम्रवस्त्र
५. गुड़
६. सुवर्ण
७. ताम्र
८. कणेहर
९. वृषभ



द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००

१. वैडूर्य
२. तिल
३. कंबल
४. कस्तूरी
५. शस्त्र
६. कृष्णवस्त्र
७. तैल
८. कृष्णपुष्प
९. छाग
१०. लाहपात्र



वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवेतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

१. माष
२. तिल
३. तैल
४. कुलित्थ
५. महिषी
६. लोहू
७. कृष्णागौ
८. इंद्रनील
९. श्यामवस्त्र



प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र मकरकुंभको स्वा. कृ. व. जप २३०००

१. गोमेदरत्न
२. अश्व
३. नीलवस्त्र
४. कंबल
५. तिल
६. तैल
७. लोह
८. अंभ्रक



नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश पठानसगोत्र कष्णवर्ण जप १८०००

ग्रहाः	गोचराद्येर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं.	जपनीय मंत्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्तचंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेतचंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेतचंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्ण गौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड़ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	०	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि . तन्मध्येऽन्तरम्				पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु.	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	५०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाशः पन्थाः	अन्नलाभः पुष्टिः	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाशः सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाशः	कष्टम् हानिः	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानिः भयं	धनलाभः सुखं	धन नाशः	धन लाभः	धनादि लाभः	अर्थ लाभः सुखं	धन हानिः शोकः	व्यञ्च नैःस्वं	वित्तनाशः वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्तिः	द्रव्याप्तिः सुखं	श्रीप्राप्तिः सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्तिः भयम्	अर्थ लाभः सुखं	अर्थ लाभः सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धिः सुखलाभः
चतुर्थ	माननाशः रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धिः	कष्टम्	वित्तलाभः सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागमः	शत्रुवृद्धिः पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीतिः
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाशः	धन नाशः रुग्भयं	रूक् शोकश्च	लाभः सुखंच	पुत्र लाभः	धनुपुत्रयोर्नाशः	हानिः शोकश्च	शोक, अर्थनाशः
षष्ठ	रिपुनाशः सुखं	वित्तलाभः	सुखम् अर्थलाभः	अलाभः स्थिति	रोगः शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभः	लक्ष्मीप्राप्तिः सुखं	धन लाभः सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानिः	द्रव्य प्राप्तिः सुखम्	धन नाशः	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोकः अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलहः हानिः	दुर्गतिः पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्तिः भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभः	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्तिः धनक्षयः	शत्रु वृद्धि रोगः	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धिः कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाशः रुग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभः	पापं धननाशः	पाप कर्मरतिः	पापदैन्यश्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धिः	शुभम् सुखम्	शोकः	सुख सुखभोगः	दैन्यम्	धर्म लाभः	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्तिः सुखं	विविधार्थ लाभः	लाभः सुखप्राप्तिः	शुभ अर्थागमः	सौख्य प्राप्तिः	दुखं धनागमः	सुख वित्तलाभः	वित्तलाभः सुखं	अर्थलाभः सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाशः पीड़ा	रोगः धन नाशः	रोगः शोकश्च	शोकः धन नाशः	देहे पीड़ा भयं	धनागमः	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानिः	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल	योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	१	४	३	१	१	१	प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

सूर्यादि वारों में कृत्य

रविवार में कृत्य— राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिखौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य— शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य— भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनानिवेशाकरधातुहेम प्रबालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य— नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य— धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्य विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य— स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य— लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्माकंसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को सिखाना, दीक्षा (मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र शुभ हैं। ३. बव बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज करण शुभ हैं। ४. अश्विनी,

रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो। शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८, १२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है—यदि लग्न शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो। लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु के घर में हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८, १ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण ग्रह ११ भाव में श्रेष्ठ होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। **विशेष**—चर लग्न, चर नवाँश तथा राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का १ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६,योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १०० और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अत: गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को विचार कर मुहूर्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर ही मुहूर्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अत: हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्त्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
अधम तिथि	७, १२	११	१०	१, ९	८	७	६
वर्जित तिथि नक्षत्र	५ हस्त	६ मृग	७ अश्विनी	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	११ रोहि.
मृत्यु योग तिथि	१-६-११	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	२-७-१२	५-१०-१५
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
दग्धा योग	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यम घंट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
मुसल योग	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
काल दण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृग.
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल
आनन्द	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
सौम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी
छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
शुभ	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशाखा
अमृत	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
मित्र	उ.फा.	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि	हस्त, मूल ३ उ., पु., अश्विन	श्र.रो.मृ. पुष्य, अनुराधा	अश्विनी उ.भा., कृत्ति., अश्ले.	रोहिणी अनु., हस्त कृत्ति., मृग.	रेव.,अनु., अश्वि.,पुन. पुष्य	रेव. अनु., अश्वि., पुन., श्रव.	श्रवण रोहिणी स्वाति
दुष्ट तिथि	१, ३, ७	२-११	३-९-१२	७-९-११	—	—	११-१३

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अत: कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

विविध मुहूर्त्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

गर्भाधान— सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तानोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अत: इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात्, समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोकर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

पुंसवन—गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

सीमन्तोन्नयन—यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोन्नयन का शब्दार्थ होता है ''शिर की मांग'' लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि—**''प्रथम गर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा''** तथा **''पुंसवनवत्''** कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त्त में इसे करें।

आश्लायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने के मिलते हैं।

मेधा-जनन संस्कार—शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। *मन्त्र*—**ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भूवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।**

स्तन पान मुहूर्त्त—रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

प्रसूता स्नान का मुहूर्त्त—उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसूति स्नान प्रशस्त है।

जातकर्म—मेधा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

नामकरण संस्कार— जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलत: दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति॥

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

निष्क्रमण संस्कार—घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

भूम्युपवेशन संस्कार—भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक की आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अन्न प्राशन—देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में ''प्राणो वै अन्नम'' अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु., हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

कर्ण वेध—जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त्र उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार जन्म से बारहवें या सोलहवें दिन,

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

मुण्डन संस्कार—जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते है वे पशुता के सूचक माने गयें हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवीं गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षों में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह्न से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा याम्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

उपनयन संस्कार—मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय का बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मू., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

विशेष—ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मू., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त—शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

जल पूजन के मुहूर्त्त—अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

नित्यक्षौर का मुहूर्त्त—शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६ ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है।

दाह कर्म में, सूतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाहे दस दोष

मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं—(१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) कान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (ऽ) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१. लत्ता—सूर्य, मंगल, वृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	वि.नक्षत्र
सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यनाश	कुलनाश	मृत्यु	फल

२. पात—साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

पात दोष चक्र

रो.	मृ.	म	उ.फा.	ह	स्वा	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रे	नक्षत्र
आर्द्रा	मृग.	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	कृत्ति.	अनु	रोहि.	भर.	भर.	अश्वि.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	श्रव.	आर्द्रा	ज्ये	पुन.	शत.	ज्ये	
शत.	ज्ये.	ज्ये.	विशा.	शत.	धनि	उ.षा.	धनि	शत.	विशा.	धनि	
पू.फा.	धनि	पुष्य	पू.फा	पू.भा	पु.	पू.भा	आ	वि	उ.फा	म	
चित्रा	मघा	हस्त	उ.भा	स्वा.	हस्त	पू.षा	भर.	अनु	पू.फा	पू.फा	
मूल	हस्त	रेव.	पू.भा	भर.	रेव.	पू.फा	उ.भा	उ.षा	भर.	स्वा	

३. युति—जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

४. वेध— पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	मू.	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अश्वि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पुन	मृ	ह	उ.षा.	वेध नक्षत्र

५. यामित्र— विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	भ	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	अ	कृ	मृ	पुन	उ.फा	ह	ग्रह नक्षत्र

६. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल— विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह— विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाह्यक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य— जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि— जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

लत्तादि दोष परिहार— लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भठिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त्त)— रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना— आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्राय: लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

विवाह विचार में विशेष— दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

त्रिबल शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु— जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।
पूज्य गुरु— जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।
नेष्ट गुरु— जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।
परिहार— जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।
श्रेष्ठ रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।
पूज्य रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से २।५।९।१।७वें हो।

नेष्ट रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

श्रेष्ठ चन्द्र— जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

नेष्ट चन्द्र— जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

गोधूलिका लग्न— हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ठ और अष्टम में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त— विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २, ४, ६, ८, १०वें आदि दिनों में या ५, ७, ९वें विषम दिनों में वधु प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १, ३, ५, ७, ९, ११वें मास में, १, ३, ५वें वर्ष में वधु प्रवेश शुभ होता है। ५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधु प्रवेश कराया जा सकता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त— विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सन्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती में मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ— कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४, ८, १२वें कोई ग्रह न हो तो नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

धार्मिक कृत्य मुहूर्त्त— व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण,. देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

विवाहे मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥

विवाह में लत्ता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नाव्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चहिये।

नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण**— वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।

२. **वश्य**— राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी में एक गुण जानें।

३. **तारा**— वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक्-पृथक् लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।

४. **योनि**— राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

५. **ग्रह मैत्री**— राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

६. **गण**— राशि चक्र (अवकहड़ा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

७. **भकुट**— वर की राशि से कन्या की राशि २, १२, ६, ८, ५, ९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।

८. **नाड़ी**— अवकहड़ा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिएं ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्राय: सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अत: यह स्वत: प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह.	सू.चं.मं.

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्समृतितोऽधिकं यत्॥

↓ कन्या	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २
मेष	अ. ४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३.५	११ ३.६	९ २.३.६	१३ ६
	भ. ४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०.४.१	२१॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५-	१८ २.५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १.३.६
	कृ. १	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३.४	१० १.३.४.०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३.५	२० १.५	२० १.५	१५॥ १.६	१५॥ ६	१८ ६
वृष	कृ. ३	१८॥ -४	२० १.४	१९ ३.४	२८ ३	२० ०.१.३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १.४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १.५	२१ +५	२३॥ +५
	रो. ४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	२२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-
	मृ. २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५
मिथुन	मृ. २	२७	१८ ०३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३
	आ. ४	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १
	पुन. ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४-	२२॥ ०४	१७ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥
कर्क	पुन. १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१
	पु. ४	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३
	अश्ले.४	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६
सिंह	म. ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४
	पू.फा.४	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४
	उ.फा.१	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४-	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२
कन्या	उ.फा.३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+
	ह. ४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०
	चि. २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३

↓ कन्या	वर →	तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
मेष	अ. ४	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३.६	१३॥ ३.५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३.४	२४॥ +४	२६॥ +४
	भ. ४	१३॥ १.३	२९॥	२१॥ १	१७॥ -१६	१७॥ ३.६	१९॥ -१६	२० -१.५	१८ ३.५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १.३.२	२० -१	२४ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३.४	२६॥ +४
	कृ. १	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३.६	१९॥ -६	२५॥ -६	२४॥ +५	१८ १.२.५	१२ ३.१.५	१३॥ १३	११॥ २.३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १.४	१९॥ १.४	११॥ ३.४
वृष	कृ. ३	२२॥ -६	१०॥ ३.६	१४॥ ३.६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १.२.६	७॥ १.३.६	१२ १.३.५	१० ३.५.२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३
	रो. ४	१९ १६	१५॥ ३.६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	मृ. २	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. २	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥
	आ. ४	२० -१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥
	पुन. ३	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७॥ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥
कर्क	पुन. १	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	पु. ४	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	अश्ले.४	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५-	२१ १५	१३ ३५
सिंह	म. ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६-	१९॥ १६-	१३ ३६
	पू.फा.४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१० १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६
	उ.फा.१	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६
कन्या	उ.फा.३	१६॥ १२४-	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ -६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥
	ह. ४	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
	चि. २	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तता नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। चिन्हों का अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) वैर योनी में (२) लिखें हैं।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्।।

← कन्या	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
तुला	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६
	स्वा.४	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५
	अनु.४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४ ०	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
धन	मू.४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९॥ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ +२४	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
	पू.षा.४	२६ +५	१८ ३५	१८ -१२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४-	१५॥ ३४	१७॥ १४-	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
	उ.षा.१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३
मकर	उ.षा.३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र.४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
	ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२६॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ +४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२
	श.४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४
	पू.भा.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५	२६ +५	२० +१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन	पू.भा.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ +३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१४॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५-	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उ.भा.४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५	२४ ०१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
	रे.४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह हैं वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखें है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

ताराबल-बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
आधान	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.या.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
नैधन (वध)	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अस्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

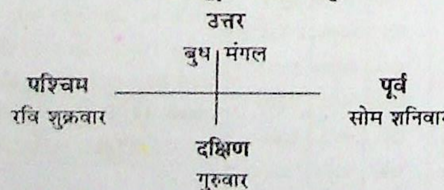
यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये।

दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात् मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल—सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्

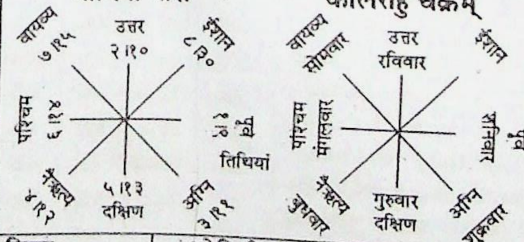


दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास—शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

योगिनी वास — कालराहु चक्रम्



दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल—पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार—यात्रा से समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य- चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चंदन	गुड़	तिल	दही	दूध	तिल

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासां तिथीनाम्
१	अ.	उ.	ने.	ई.	द.	वा.	पृ.	मासां तिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादी
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखष५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चषुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयंपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र योग बनता है।	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये, मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

विडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	अग.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र-लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्टला	धन प्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला.	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥ दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नेऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें षट दिन पृथ्वी सोय॥

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेवाण ५ षट्याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषय७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विशेयम् १४श्चैव चतुर्विशेदश १० नाड़िकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादे पृष्ठपाद			पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुऔ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाक	स्थिर	श्री	नाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहुर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टे च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	आग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पश्चिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु	खंडित	स्वादु	क्षय	स्वादु	क्षार	शिक्षा	मिष्ठ	क्षार
जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेय	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणा:
खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ

नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलाग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतत है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति:	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

दुकान खोलने का मुहूर्त्त

वाणिज्य कर्म— अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त— अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

मशीनरी चालू करना— आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

मुकद्दमा दायर करना— ४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

ऋण लेने का मुहूर्त्त— अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाशे	सुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

हल प्रवाहनम्— अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।६।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभस्यात्।

सूर्य भात हल चक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

अथ बीज बीजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द्र बुध बृह शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रोहिणी, मघा, पू.फा., उ.फा. अनु., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह, शुक्र, वारेषु २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्विन, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु १, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्वलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेशु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्दा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारे ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बृह.	राहु	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रहायां होमयेंसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामर्गो ऽर्थपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरे हणदेवाननामदितर्वजपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद् शांततर्पणम्। दद्शांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतधृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रहे॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालविंभावगः पूर्वार्द्धदैविकं श्राद्धमपरान्हे तु पार्वणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराहे च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्रप्रतिविज्ञात-स्तछशस्यान्मतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्म के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभत्रि.। गयायासर्वकालेपुपिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने अस्ते [illegible]

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना—स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त—चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त—तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

मन्त्री पद की शपथ लेना—उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त—विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठि, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त—अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत [illegible]दाह वर्जित है।

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ताः

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	रवि गुरु मंगल	मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन. हस्त मतान्तर से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर केबली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है।
पुंसवन मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	मंगल गुरु शु. रवि	श्रव., रोहि., पुष्य, उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीरे मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे।
सूतिका स्नान	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. मं. गुरु	रेवती, तीनों उत्तरा, रहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र १।४।१०।७ में शुभ ग्रह हो।
नामकरण	१, २, ३, ५, ७, १०, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, दनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ।
स्तनपान	शुभ	शु. भु. चं. गु.	अश्विन, रहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
कर्ण वेध	१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु तो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो।
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत. रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र. गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु. प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	सू. चं. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कुआं पूजा	शुभ	चं. बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरर, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/वाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव.
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	सू. मं. गु. शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	सू. मं. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषेधि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त्त	२,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३,१५	सू. चं. बु.गु.शु.	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआं व ट्यूबेल	शुभ	बु. गु. शु. चं.	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
दुकान	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३	सू. चं. बु. गु. शु. श.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है।
बड़े-बड़े व्यापार करना	२, ३, ५, ७, ११, १३	बु. गु. शु.	पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो।
ऋण का लेन देन करना			रवि, मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये।
बही खाता	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. चं. बु.गु.श.	मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है।
क्रय खरीदना	शुभ	शुभ	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
विक्रय बेचना	शुभ	शुभ	भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है।
नौकरी करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. बु. गु. शु.	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
कार्य सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. मं. गु. शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू. चं. बु.गु.शु.	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र. बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्ले, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा, सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अत: मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियम:— किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी बार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग बैरी होता है।)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

कर्म-योग

कराग्रे वसते लक्ष्मी: कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गोविन्द: प्रभाते कर दर्शनम्॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्ये में सरस्वती और पृष्ठ पर गोविन्द का निवास है अत: प्रात: काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ। ६ से क्रीड़ा में नेष्ट। ७ से श्मशान में मरण।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा—राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

चन्द्र (सोम) की होरा—कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

मंगल की होरा—वाद-विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

बुध की होरा—साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

गुरु की होरा—धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

शुक्र की होरा—नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

शनि की होरा—गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।

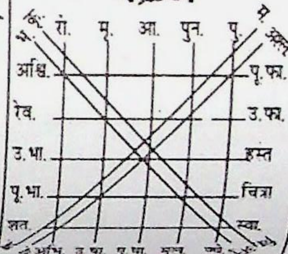
सर्व कार्येषु सप्तशलाका चक्रम्

कृ. रो. मृ. आ. पुन. पु. अश्ले.

धा. — मघा
अश्वि. — पू.फा.
रेव. — उ.फा.
उ.भा. — हस्त
पू.भा. — चित्रा
शत. — स्वा.
धनि. — विशा.

अभि. उ.षा. पू.षा. मूल ज्ये. अनु.

विवाहे पंचशलाका चक्रम



गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)

शुभाशुभ भूमि विचार— जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रात: यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल— नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय— गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार— लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार— चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास— पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय— ब्राह्मण वर्ण, (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर, राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वारा शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय— मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध— ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल— कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३, कृत्तिका नक्षत्र, रविवार— इन योगों में पैदा हुई कन्या **विषकन्या** कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

स्त्री के बांझ होने का योग

१— जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२— जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३— जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४— जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार



प्रश्न कर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दु:ख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी-की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामत: जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रत्नारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी—यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग—यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग—यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी—मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग—यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

डॉक्टर होने का योग— यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग— बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग— अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार— हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन— (१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग— (१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग— (१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग— (१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- ☞ यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- ☞ यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- ☞ यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- ☞ यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- ☞ यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- ☞ यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- ☞ यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- ☞ अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु— भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग— मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु— जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना— दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग— चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग— (१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-

- ☞ यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- ☞ शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- ☞ चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- ☞ हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- ☞ जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- ☞ बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- ☞ शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- ☞ जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- ☞ भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- ☞ यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- ☞ यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति—वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति—वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति—सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति—अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष [illegible] सामान्य क़द के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंगप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति—ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यावहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, [illegible] एवं न्यायप्रिय होगा।

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं —

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौंहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर स्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, बैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पुष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं और अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर छुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है—

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकदमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकद्दमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा—प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुँचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।

२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दुष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।

३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हों तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गढ़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।

२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शोक जानो।

मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

नक्षत्र	ध्रुवा	योग	ध्रुवा	वस्तु	ध्रुवा
अश्विनी	१७	विष्कुम्भ	१३	धान्य	७७
भरणी	५	प्रीति	१२	कनक	१००
कृत्तिका	३२	आयुष्मान	४७	ज्वार	१३३
रोहिणी	१४	सौभाग्य	५९	मूंग	४१
मृगशिर	४	शोभन	३६	चणा	३५
आर्द्रा	१३	अतिगंड	४७	झोना	७५
पुनर्वसु	२८	सुकर्मा	१८	तोरी	७७
पुष्य	३६	धृति	४४	तेल	३९
अश्लेषा	३६	शूल	१३	घृत	९९
मघा	१५	गंड	२५	खाण्ड	९९
पूर्वाफाल्गुनी	३	वृद्धि	१७	गुड़	४७
उत्तराफाल्गुनी	३१	ध्रुव	२२	शक्कर	१०१
हस्त	१८	व्याघात	२५	कपास	१२९
चित्रा	२५	हर्षण	२५	रुई	४४
स्वाति	१४	वज्र	१४	कांस्य	३७
विशाखा	२४	सिद्धि	२२	वस्त्र	१०९
अनुराधा	२९	व्यतीपात	१३	स्वर्ण	९६
ज्येष्ठा	३७	वरीयान	३९	हल्दी	७३
मूल	१८	परिधि	१५	चंदन	१८७
पूर्वाषाढ़	७३	शिव	१३	चांदी	८१
उत्तराषाढ़	३०	सिद्धि	१९	मिर्च	६८
श्रवण	२५	साध्य	१२	पित्तल	९९
धनिष्ठा	२३	शुभ	२५	जौ	५०७
शतभिषा	२४	शुक्ल	२२	कस्तू.	१३४
पूर्वाभाद्रपद	९	ब्रह्मदू	१३		
उत्तराभाद्रपद	४१	ऐन्द्र	२७		
रेवती	२८	वैधृति	२६		

वार	ध्रुवा
रविवार	२१
सोमवार	१५
मंगलवार	१२
बुधवार	१२
गुरुवार	१३
शुक्रवार	१४
शनिवार	००
राशि	**ध्रुवा**
मेष	३
वृष	२२
मिथुन	२२
कर्क	२५
सिंह	१९
कन्या	१७
तुला	२०
वृश्चिक	१३
धन	१६
मकर	१९
कुम्भ	२३
मीन	१४
तिथि	**ध्रुवा**
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१०
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५

मेष—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।
वृष—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिप, बेल
मिथुन—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
कर्क—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
सिंह—शाली, षटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
कन्या—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
तुला—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
मकर—कनीर, सकुट, मजीठ, जर्मीकन्द
कुंभ—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
मीन—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेषु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.षा. श्ले, रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., म.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा।

स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं-जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात् निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यत: सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छ: मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

स्वप्न	फल
आकाश में उड़ना	लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो
आकाश से गिरना	कष्ट मिले, अवनति हो
अनाज भरना	धन लाभ हो
आग देखना	धन प्राप्ति हो
आग उठाना	कष्ट मिले
अनाज बेचना	हानि हो
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आम खाना	लाभ मिले
आंधी देखना	यात्रा में कष्ट, चिन्ता
अनार खाना	अधिक धन लाभ हो
ऊंट देखना	लाभ, उन्नति हो
ऊंट से गिरना	अवनति हो
हंसना	कठिनाई आवे
रोना	अच्छा समाचार मिले
शत्रु के साथ खाना	समझौता हो
अपने को मृत देखना	चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले
अपने को बूढ़ा देखना	सम्मान मिले
बाल कटाना	व्यापार में हानि
हाथ, पैर धोना	चिन्ता मुक्ति
मां का आलिंगन करना	सौभाग्य प्राप्ति
गर्भवती का आलिंगन	कष्ट, हानि
सफेद मांस देखना	लाभ मिले
काला मांस देखना	सन्तान को कष्ट
अपना कटा पैर देखना	यात्रा में विघ्न हो
स्वयं को जलते देखना	बदनामी हो
सफेद वस्त्र पहनना	लाभ मिले
काले वस्त्र पहनना	हानि चिन्ता
पीले वस्त्र पहनना	दमा रोग हो
लाल वस्त्र पहनना	शुभ, प्रशंसा मिले
वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले
बर्फ गिरती देखना	शत्रु वृद्धि हो

स्वप्न	फल
सूखा वृक्ष देखना	लाभ मिले
दूध देखना	शत्रु नष्ट हो
शराब फैंकना	मन को शान्ति मिले
शराब पीना	कष्ट मिले
कई प्रकार की शराब मिलाते देखना	झगडे, फसाद में फंसे, अपवाद फैले
जल पीना	सौभाग्य सूचक
अपने को नंगा देखना	सम्पत्ति की हानि
अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखाना	कठिनाइयों का सामना करना पड़े
सापों को पांवों से रौंदना	शत्रु का नाश हो
मिठाई खाना	विपत्ती आये
तलवार लिए व्यक्ति देखना	किसी से झगड़ा हो
बिच्छू काटे	बीमारी हो
अण्डे खाना	व्यर्थ का झगड़ा हो
कुत्ता भौंकता दिखे	शत्रुओं का नाश हो
चूहा दिखाई दे	शुभ है, लाभ हो
बर्रें (भिड, ततैया) दिखें	शत्रु परास्त हों
मरा बैल देखना	सूखा पड़े
सुरमा लगाना	रोग हो
सूर्य देखना	उच्चाधिकारी से मिलना
बादल देखना	उन्नति हो
थूक देखना	परेशानी हो
थूकना	खर्चा बढ़े
भैंस देखना	मुसीबत आये
हंस देखना	प्रतिष्ठा बढ़े
भेंडिया देखना	राजभय हो
अपने बाल सफेद देखना	आयु बढ़े
मल (टट्टी) खाना	धन मिले
मल त्यागना	व्यय बढ़े
कोई फल दे	पुत्र हो, लाभ हो

स्वप्न	फल
फूल देखना	प्रेमी से मिलन हो
पकवान खाना	प्रसन्नता हो
पान खाना	स्त्री संग हो
पिंजड़ा देखना	कारागार मिले
तीतर देखना	अच्छा समाचार मिले
हरा वन देखना	अच्छा समाचार मिले
सूखा वन देखना	चिन्ता हो
तालाब भरा देखना	दूसरे से धन मिले
मुर्दा देखना	स्वास्थ्य लाभ हो
स्त्री से सहवास करना	धन प्राप्ति हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा मिले
ग्रहण देखना	आफत आये
तेल पीना	रोग हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों
तिल खाना	बदनामी हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में लाभ
घोड़े से गिरना	व्यापार में हानि
बांहे कटी देखना	भाई की मृत्यु हो
सुअर देखना	आयु कम हो
बुलबुल देखना	विद्वानों से मिलन हो
चित्र देखना	राज्य से लाभ
जुआ खेलना	आर्थिक तंगी
कुएं में गिरना	परेशानी हो
कुत्ता काटे	शत्रुभय हो
सफेद सांप काटे	लाभ हो
काला सांप काटे	हानि हो
लाल सांप काटे	शौर्यपूर्ण कार्य करे
पीला सांप काटे	रोग हो
बरात देखना	रोगी हो
रीछ देखना	अच्छा समाचार मिले
विष खाना	चिन्ता, शोक हो
सोना पाना	हानि हो
सांप पकड़ना	शत्रु का नाश हो
सांप मारना	कष्ट से राहत मिले
चीता देखना	असफलता मिले
विद्यालय से भागना	सफलता मिले
ढोलक बजाना (स्त्री)	शीघ्र विवाह हो
ढोलक बजाना (पुरुष)	कठिनाई आये
हस्ताक्षर करना	धन हानि हो
स्याही देखना	इच्छाएं पूरी हों
बिल्ली देखना	हानि, भय

स्वप्न	फल
चूहा काटे	दुर्घटना से बचाव
रथ पर सवारी करना	उच्च पद मिले
जिह्वा (जीभ) कटी देखना	मन्त्री पद मिले
वमन (उलटी) पीना	राज्य पद मिले
जीभ पर लिखना	विद्या प्राप्ति हो
नगर व ग्राम को घेरना	मुखिया पद मिले
गले में मोती का हार पहनना	राज्य पद मिले
कानों में कुण्डल पहनना	राज्य पद मिले
मुकुट धारण करना	राज्य पद मिले
लिङ्ग कटा देखना	स्त्री की प्राप्ति हो
वीर्य पान करना	धन मिले
मूत्र पान करना	धन मिले
रक्त पान करना	धन मिले
शरीर से रक्त निकलना	धन मिले
अपना सिर काटना	धन मिले
गुदा से जल पीना	धन मिले
घर जलता देखना	धन मिले
इन्द्र धनुष देखना	धन मिले
शिव मंदिर देखना	धन मिले
धुंआ पीना	लक्ष्मी मिले
अग्नि खाना	लक्ष्मी मिले
मोती, मूंगा, कौड़ी देखना	धन प्राप्ति हो
चावल खाना	धन प्राप्ति हो
मूंग खाना	धन प्राप्ति हो
सूखे मेवे देखना	धन प्राप्ति हो
इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना	धन मिले
गन्ना चूसना	लक्ष्मी बढ़े
कुंकुम लगाना	कष्ट निवृत्ति हो
देवी, देवता देखना	कष्ट निवृत्ति हो
सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना	सम्मान मिले
झाग वाला दूध पीना	सम्मान मिले
फल खाना व देखना	सम्मान मिले
बादलों, तारों को छूना	सम्मान मिले
मक्खी, मच्छर काटें	स्त्री लाभ मिले
हाथ में वीणा लेना	स्त्री लाभ मिले
अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना	स्त्री लाभ मिले
गेहूँ, जौ, सरसों देखना	विद्या लाभ हो
भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो

स्वप्न	फल
सरस्वती देखना	विद्या लाभ हो
जूते फटे देखना	सन्तति नाश हो
सूअर पर बैठी स्त्री पकड़ें	मृत्यु हो
सिंह, मगरमच्छ पकड़ें	कारागार मिले
गधे पर सवार होना	मृत्यु हो
लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना	मृत्यु हो
अपना विवाह देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध, नोचते देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध सिर पर बैठे	मृत्यु हो
पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना	मृत्यु हो
सूर्य अस्त होते देखना	मृत्यु हो
कान में सर्प घुसना	भयंकर पीड़ा हो
अपना मांस खाना	अङ्ग-भङ्ग हो
स्त्री का स्तन पान करना	मृत्यु हो
शमशान में मदिरा पीना	मृत्यु हो
पर्वत की गुफा में जाना	आपत्तियां आएं
दांतों का गिरना	धन हानि हो
नाक-कान कटना	धन हानि हो
जलमुर्गी, उल्लू देखना	धन हानि हो
हिरण, बकरा देखना	धन हानि हो
जूते चोरी चले जाना	स्त्री वियोग हो
दोनों हाथ कटे देखना	माता-पिता की मृत्यु
छिपकली देखना	दुर्भाग्य सूचक
दर्पण में मुख देखना	सन्तान प्राप्त हो
सोने, चांदी की टट्टी करना	दश माह में मृत्यु हो
अचानक मोटा होना	आठ माह में मृत्यु हो
अचानक पतला होना	आठ माह में मृत्यु हो
अपने को कीचड़ में फंसे	शीघ्र मृत्यु हो
कैंचुए देखना	गुप्त शत्रु हों
हाथों में दस्ताने पहनना	सम्मान मिले
बकरी देखना	धन लाभ हो
ओले गिरते देखना	दु:ख, कष्ट मिले
टोपी फटना	मानहानि हो
टोपी सिर से गिरना	मानहानि हो
स्वर्ग में जाना	यश-गौरव मिले
नर्क में जाना	दु:ख क्लेश हो
सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	राज्यलाभ	नीचे का हांठ	धन नाश
नाक की नोक	व्याधि	हृदय	धन लाभ
बायीं बांह	राज भय	उदर	भूषण लाभ
दाहिनी बांह	राजा समान सुख	कन्धा	विजय
ललाट	बन्धु मिलन	स्तन	दुर्भाग्य सूचक
गुल्फ	कारावास	नाभी	बहुत धन मिले
जानु	शुभ लाभ	नाखुन	धान्य लाभ
नेत्र	धनागम	दाहिने अंगुष्ठ	धन लाभ
भौंह	राज्याधिकार प्राप्ति	बायें अंगुष्ठ	हानि, दुःख
वाम मणिबंध	बदनामी	बायां पैर	नाश
दक्षिण मणिबंध	धन लाभ	दायां पैर	यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	जंघा	शुभ लाभ
कण्ठ	शत्रु नाश	पादमध्य	स्त्री नाश
बायें कान	बहुलाभ	पादान्ते	मृत्यु
दायें कान	आयु वृद्धि	केशान्ते	मरण तुल्य कष्ट
मुख	मिष्ठान्न भोजन	पीठ पीछे	बुद्धि नाश
ऊपर का होंठ	ऐश्वर्य प्राप्ति	कटि प्रदेशे	वाहन लाभ

अङ्ग स्फुरण विचार

सिर	यात्रा हो	बायीं भौंह	आदर, सम्मान
बायां माथा	प्रसन्नता	बायां कान	परेशानी
दायां माथा	कष्ट, यात्रा	दायां कान	पदोन्नति
दायीं आंख	खुशी होगी	गर्दन	लाभ, स्त्री सुख
बायीं आंख	स्त्री वियोग	जीभ	झगड़ा
भौंह के मध्य	प्रेम मिलन	नाक	खुशी हो
बायीं पलक	दुःख कष्ट	पेट	खुशखबरी मिले
दायी पलक	सुख आनन्द	पीठ	बुरा समाचार मिले
दाहिनी कपोल	लाभ	अण्डकोष	भोगानन्द मिले
बायां कपोल	हानि, व्यय	दायीं बगल	ऐश्वर्य बढ़े
दायीं भौंह	पुत्र सुख	बायीं बगल	पद घटे

योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान् मनन् करना चहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण अरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियों का ईलाज भी होता है जैसे:—१. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्नियां व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- विकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

वर्षा ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१५	५०	४२	३९	३४	२९	३०	२८	२४	२१	१६	१५	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां-वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1 : 4 : 2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास की गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए । पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

वर्षा ज्ञान सारणी

दिसम्बर	जून	जनवरी	जुलाई	फरवरी	अगस्त	मार्च	सितम्बर	अप्रैल	अक्टूबर
१	१४	१	१५	१	१५	१	१५	१	१५
२	१५	२	१६	२	१६	२	१६	२	१६
३	१६	३	१७	३	१७	३	१७	३	१७
४	१७	४	१८	४	१८	४	१८	४	१८
५	१८	५	१९	५	१९	५	१९	५	१९
६	१९	६	२०	६	२०	६	२०	६	२०
७	२०	७	२१	७	२१	७	२१	७	२१
८	२१	८	२२	८	२२	८	२२	८	२२
९	२२	९	२३	९	२३	९	२३	९	२३
१०	२३	१०	२४	१०	२४	१०	२४	१०	२४
११	२४	११	२५	११	२५	११	२५	११	२५
१२	२५	१२	२६	१२	२६	१२	२६	१२	२६
१३	२६	१३	२७	१३	२७	१३	२७	१३	२७
१४	२७	१४	२८	१४	२८	१४	२८	१४	२८
१५	२८	१५	२९	१५	२९	१५	२९	१५	२९
१६	२९	१६	३०	१६	३०	१६	३०	१६	३०
१७	३०	१७	३१	१७	३१	१७	O१	१७	३१
१८	J१	१८	A१	१८	S१	१८	२	१८	N१
१९	२	१९	२	१९	२	१९	३	१९	२
२०	३	२०	३	२०	३	२०	४	२०	३
२१	४	२१	४	२१	४	२१	५	२१	४
२२	५	२२	५	२२	५	२२	६	२२	५
२३	६	२३	६	२३	६	२३	७	२३	६
२४	७	२४	७	२४	७	२४	८	२४	७
२५	८	२५	८	२५	८	२५	९	२५	८
२६	९	२६	९	२६	९	२६	१०	२६	९
२७	१०	२७	१०	२७	१०	२७	११	२७	१०
२८	११	२८	११	२८	११	२८	१२	२८	११
२९	१२	२९	१२		१२	२९	१३	२९	१२
३०	१३	३०	१३		१३	३०	१४	३०	१३
३१	१४	३१	१४		१४	३१	१५		१४

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। वालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुंई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ ॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ ॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्ज पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्पास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाम्यन्तरे न दोषः॥

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२(बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अतः उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र को तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या और जिस अंक पर अंगुली रखी है दोनों का योग कर लें तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्टक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह) और प्रश्न कर्ता ने यंत्र में १५ के अंक पर अंगुली रखी। अतः यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह) दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इसमें से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अतः केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इनका योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अतः इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्दमे में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूँगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करुंगा अथवा नहीं?	तक्षक

१. श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है। होशियार।
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पुरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

२. शिव

१. मुकद्दमे में जीत होगी
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. संबन्धी धोखा देगा, सावधान।
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३ यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

३. कृष्ण

१. आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्दमे मे जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. संबंधी धोखा नहीं देगा।
७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

४. राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. संबंधी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

५. सीता

१. उन्नति मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिलेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकद्दमा जीत जाओगे।
५. सन्तान [illegible] के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. संबंधी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।

१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. वर्ष आप के लिए चुनौतियों भरा होगा।
१४. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी होगी।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

६. राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र दिखावा करता/करती है।
९. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुंआ बन जायेगा।

७. लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अधिक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. संबंधी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

८. विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।

७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. संतान सुख के लिए संतान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. संबंधी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तानन जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

९. नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करें।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें संदेह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें।
१२. संबंधी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

१०. दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

११. इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।

३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. संबंधी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

१२. गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. संतान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. संबंधी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

१३. अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।
३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

१४. वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह संबंध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

१५. वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. विद्या प्राप्ति में विघ्न आयेंगे।
८. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. संतान सुख भाग्य में नहीं है।

१६. यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा, परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।

११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

१७. कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसा योग नहीं है।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

१८. सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगाकर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

१९. चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जाएगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।

६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विश्वासु मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

२०. मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नही लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

२१. बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ मिलेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमत मन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

२२. बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा बिलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं है।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

२३. शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करो।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

२४. शनि

१. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाईयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

२५. राहु

१. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुंआ बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

२६. केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआ नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

२७. मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

२८. पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआं बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

२९. काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआं बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

३०. शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाईयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

३१. यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. कुआं निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

३२. तक्षक

१. तीर्थ यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

मंत्रों द्वारा कामना सिद्धि प्रयोग

पुत्र प्राप्ति के लिये:- ''ऊँ हां हीं हूं पुत्र करू स्वाहा'' इस द्वादशक्षर मंत्र का आम के वृक्ष पर बैठकर एकाग्र मन से जो एक वर्ष तक निरंतर जप करता है, उसको अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है, ऐसा भगवान शंकर जी ने कहा है।

पत्नी की प्राप्ति के लिए:- पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्गसंसारसागस्य कुलाद्भवाम्॥ (दुर्गा सप्तसती) इस मंत्र का सवा लाख जप स्वयं करने से शीघ्र पत्नी की प्राप्ति (विवाह) हो जाता है और 'पत्नी मनोरमां देहि.' इस मंत्र के सम्पुट से दुर्गा के 100 पाठ अर्थात् शतचण्डी कराने से शीघ्र विवाह हो जाता है। स देवि नित्यं परितप्यमानस्त्वामेव सीतेत्यभिभापमाण:। दृढ़व्रतो राजसुतो महात्मा तवैव लाभाय कृतप्रयत्न:॥ (बाल्मीकीय रामायण, सुदरकांड 36/46) इस यंत्र का सवा लाख जप करने और इसी मंत्र के सम्पुटित बाल्मीकीय रामायण के सुदंर कांड का कम से कम 1 पाठ स्वयं अथवा ब्राह्मण से कराने पर शीघ्र विवाह हो जाता है।

वर प्राप्ति के लिये:- हे, गौरि! शकड़राधांग्डि! तथा त्वं शङ्करप्रियाता। तथा मां कुरु कल्याणि! कान्त कान्तां सुदुर्लभाम्॥ भगवती पार्वतीजी का पूजन करके उपर्युक्त मंत्र का प्रतिदिन 5 माला जप करने से शीघ्र पति (वर की) की प्राप्ति हो जाती है। पार्वती जी का पूजन कर जो कन्या श्री रामचरित मानस के बालकाण्ड के 234 दोहे के बाद 'जय जय गिरिराज किशोरी' से 'मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे' यहां तक 236 दोहों का प्रतिदिन श्रद्धा विश्वास पूर्वक पाठ करती है, उसका शीघ्र विवाह हो जाता है। **कात्यायनि महामाये महायोगिनीधीश्वरी। नन्दगोपसुतं देवि पतिं में कुरु ते नम:॥** (श्री मद्भागवत 10/ 22/ 4) कात्यायनि देवी अथवा पार्वती देवी की फोटो सामने रखकर जो कन्या उसका पूजन कर उपर्युक्त मंत्र की 1 माला जप प्रतिदिन करती है, उसका विवाह शीघ्र हो जाता है। **ऊँ देवेन्द्रामणि नमस्तुभ्यं देवन्द्रप्रियभामिनी। विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे॥** उपर्युक्त मंत्र का 108 बार कन्या को जप करना चाहिए। जप करने की विधि यह है कि तुलसी के पौधे का पूजन करके उसके सामने तुलसी की माला पर 108 बार जप पूर्ण होने पर तुलसी के पौधे की 12 बार परिक्रमा करनी चाहिए। प्रत्येक परिक्रमा में दुग्ध और जल से भगवान् सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हुए 'ऊँ देवेंद्राणि नमस्तुभ्यम्' मंत्र को भी पढ़ना चाहिए। कन्या को चाहिए कि वह अपने दाहिनी हाथ में दूध और बांए हाथ में जल से अर्घ्य दें। दूध और जल से अर्घ्य एक साथ ही 12 बार देना चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त विधि से जप और सूर्य को अर्घ्य प्रदान करती है, उसको बहुत शीघ्र वर की प्राप्ति हो जाती है। **ऊँ शं शंकराय सकल जन्मर्जितपापविध्वंसनाय। पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च पतिं देहि कुरू कुरू स्वाहा॥** उपर्युक्त मंत्र का जप तीन माला तुलसी की माला पर करने से कन्या का विवाह शीघ्र हो जाता है। जप की विधि यह है कि भगवान् शंकर और अन्न पूर्णा की फोटो सामने रखकर उसका प्रतिदिन पूजन करके धूप वत्ती जलाकर जप करे। जप जहां किया जाय, वहां मिट्टी के गमले में अथवा टीन में केले के स्तंभ को रखकर उसको मौजी (नाला) से 9 अथवा 11 बार लपेट कर उस केले के वृक्ष की पूजा प्रतिदिन करनी चाहिए और जप के बाद केले के स्तंभ की 4 बार अथवा 9 बार परिक्रमा करनी चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त अनुष्ठान नित्य करती है उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।

ज्वर से मुक्त होने के लिए:- **ऊँ भस्मायुधाय विद्ममहे एकदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो ज्वर: प्रचोदयात॥** इस मंत्र की उत्पत्ति संहारोत्पत्ति क्रम से 7 दिन तक जप स्वयं करने से अथवा 21 दिन तक दूसरे विद्वान् से जप कराने से सभी प्रकार का ज्वर ठीक हो जाता है। दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्टैव कालानलसन्निभानि। दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास॥ (श्रीमद्भागवद् गीता 11/25) इस मंत्र का उत्पत्ति संहारोत्पति क्रम से 7 दिन तक जप स्वयं करने से अथवा 21 दिन तक दूसरे विद्वान से जप कराने से सभी प्रकार का ज्वर ठीक हो जाता है।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए:- **ऊँ श्रीं श्रियै नम: स्वाहा।** इस मंत्र से वाल्मीकीय रामायण के सुदंरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति अग्नि में देनी चाहिए। अनन्तर सर्ग की समाप्ति पर 'ऊँ रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम। भो दशास्यान्तकास्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते।' इस मंत्र का पाठ करना चाहिए। 'ऊँ श्रीं श्रियै नम: मह्यं श्रियं देहि देहि दापय दापय स्वाहा।' इससे बाल्मीकि रामायण के सुदंरकांड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति देनी चाहिए। विधि:- इस अनुष्ठान का प्रारम्भ दीपावली की रात्रि को दीपक जलाने के बाद करना चाहिए। 8 दिनों तक प्रतिदिन सात सर्ग का और 9 वें दिन बारह सर्ग का पाठ करके नौ दिन में पाठ पूरा करना चाहिए। अथवा प्रतिदिन सात, पांच, तीन या एक सर्ग का पाठ करके अड़सट दिनों में सुन्दरकाण्ड का 7, 3 अथवा 1 पाठ पूर्ण करना चाहिए। ऐसा करने से लक्ष्मी की प्राप्ति और वृद्धि होती है।

भूत प्रेत बाधा की निवृत्ति के लिए:- **स्थाने हृषिकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनु च। रक्षांसि भतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघा॥** (गीता 11/36) इस मंत्र का सवा लाख जप करके सर्वप्रथम सिद्ध करना आवश्यक है। पश्चात् उपर्युक्त मंत्र काम करता है। भूत-प्रेत आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र में गंगाजल लेकर अथवा कूप का जल लेकर 7 बार उपर्युक्त मंत्र को बोलकर उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को फिरा (घुमा) दें। फिर उस जल में से थोड़ा सा रोगी को पिला देना चाहिए। बा हुआ जल रोगी के समस्त अंगों पर छिड़क देना चाहिए। जब तक रोगी की भूत-प्रेत बाधा शांत न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार प्रात: और सायंकाल इस प्रयोग को करना चाहिए।

मस्तक पीड़ा की निवृत्ति के लिए :- ऊँ नमो आदेश गुरु को बाल में कपाल, कपाल में भेजी, भेजी में कीड़ा करे पीड़ा, सोने का शाला का रूप का हथोड़ा, ईश्चर गढ़े गौरिया तोड़े इनका श्राप श्री महादेव तोड़े शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वर वाचा। अपने बाएं हाथ में 7 बार थोडी-थोड़ी पवित्र राख (भस्म) को लेकर दाहिने हाथ से ढककर उपर्युक्त मंत्र को 7 बार पढ़कर दर्द वाले मस्तक पर लगाने से दर्द दूर हो जाता है।

मित्रता के लिए:- ऊँ दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोभ्यहम। अभिवादी भवेदत्र कलिदोष प्रशान्तिद:॥1॥ ऐकतत्वं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथधियाम्। निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद में ॥2॥ उपर्युक्त दोनों मंत्रों से अलग-अलग पायस (खीर) में घृत डालकर हवन करने से शत्रुता हटकर मित्रता हो जाती है। यह अनुष्ठान कम से कम 61 दिन का है।

शत्रुता कराने के लिए:- ऊँ महाभैरवाय श्मशान- अमुको- विद्वेषं कुरु फट्। इस मंत्र का 41 दिन तक 108 बार जप करने से प्रेमियों का प्रेम हटकर परस्पर शत्रुता हो जाती है। मंत्र में जिन जगहों पर अमुक-अमुक शब्द लिखा है, उस स्थान पर प्रेमियों का नाम लिखना चाहिए जिसकी शत्रुता करानी हो।

शूल निवृत्ति के लिए:- **ऊँ मीढुष्टम शिवतम शिवो न: सुमना भव:। परमे वृक्षऽआयुधं कृत्तिंवसानऽआचार पिनाकं विभ्रदागहि॥** (शुक्ल यजुर्वेद 16/51) इस मंत्र का पाठ अथवा जाप करने से मनुष्य के दर्द दूर हो जाते हैं।

सुख से प्रसव होने के लिए:- ऊँ **मुक्तापाशा विपाशश्च मुक्ता: सूर्येण रश्मय:। मुक्तसर्वभयाद् गर्भ त्राहिहि मारीच**

स्वाहा॥ इस मंत्र द्वारा पवित्र जल को आठ बार अभिमंत्रित करके गर्भिणी स्त्री को जल पिलाने से उसको सुख से प्रसव होगा।

पति को वश में करने के लिए:- **ऊँ नमो महायक्षिणि पतिं में वश्यं कुरू कुरू स्वाहा।** इस मंत्र को दीपावली अथवा ग्रहण के दिन 108 बार जप करके सिद्ध कर लें। पश्चात् 31 दिन 108 बार जप करने से स्त्री का पति उसके वश में हो जाता है।

जलती अग्नि शीतल हो:- ऊँ नमो कोरा करावा जल सा भरिया, ले गौरा के सिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥ इस मंत्र को ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें। विधि:- कुंए के सन्निकट से सात कंकड़ी लेकर प्रत्येक पर सात बार मंत्र पढ़कर अग्नि की ओर फेंके।

नजर झाड़ने का मंत्र:- गुरुर चरणे दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारन, देव दानव दैत्यानी लाई, नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चोटी हुंकारे फुंकारे उड़ाय, माटी शलिकेर पांव देख टुकरियाजय अमुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलाय कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा। दीपावली में सिद्ध करके इस मंत्र को झाड़ने का विधान है।

सर्प विषनाशक मंत्र औषधि:- गरुड़ास्य मंत्र ऊँ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृतो शिरो गायंत्र चक्षुर्बृहद्रयन्तरेवक्षी। सोम गरुत्मांस्त्रिवृतो शिरो गायंत्र चक्षुर्बृहद्रयन्तरेवक्षी। सोम आत्माछन्दास्यंकानि यजूंविषनाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञयज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याऽशम्या सपुर्णोसि गरुश्रमनान्दिवं गच्छ स्वः पत ऊँ। इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्गा से झाड़े का विधान है। दधि मधु नवनीता, पीप्पली श्रृंगवेरं, मीरचमपि कूटो प्रतिहंन्सा सुकेशी। यदि दसति सरोपो, तक्षको वासुकी वा, यमस दनगतानां नास्ति मृत्युर्नराणम्॥ गाय के ताजे दूध से निकाला जाता मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च और कूट बराबर मात्रा में मिलाकर सांप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाएगा।

चिन्ता निवारण लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र:- ऊँ ह्रीं कमले कमल वालेय प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मयै नमः।

स्थायी धनस्थिति मंत्र:-ऊँ ह्रीं क्लीं महालक्ष्मै नमः।

प्रसव समये जल मंत्र:- आकाश टले पवन राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कोकी रिक्ता कुण्डली बसिया बाहिर हव असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़े। **विधि:-** ताजा शुद्ध जल को सात बार मंत्र पढ़कर परोसने के पश्चात् पिलाने का विधान है।

मृत्युंजय मंत्र:- ऊँ हौ ऊँ जूं सः भूर्भव स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिपुष्टिर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भवः स्वरो जूं सः हौं ऊँ। पुरोणोक्तमृत्युंजय मंत्र- मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शवाय महादेवाय ते नमः।

धनधान्य पूर्ण कर अन्नपूर्णा मंत्र:- ऊँ ह्रीं क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहां क्लीं श्रीं ह्रीं ऊँ। इस मंत्र के प्रभाव से धन धान्य पूर्ण रहता है। दो लक्ष जप, तिल, लाल धान की लाई, खीर, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिए। दो लक्ष का पुरश्चरण क्षेत्र के भीतर यंत्र या ताबीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

सर्वसिद्धि हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मंत्र:- ऊँ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा। खीर, दाख, उखरस, पला, पीपल, शैर की लकड़ी से हवन एक लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के लिए अनुकूल हवन वस्तु होनी चाहिए।

बिच्छु झाड़ने का मंत्र:- ऊँ छः फट् स्वाहा। जल अभिमंत्रित करके देना। आदित्यरथ वेगेन विष्णुबाणबलेन च तार्क्ष्य पक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ महाविष॥ विधिः राई से उतारना।

आंख झाड़ने का मंत्र:- शर्यातिंच संकन्यांच च्यवनं शुक्रमश्विनौ। संध्ययोः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति॥ मंत्र पढ़कर जल से धुलवायें।

ज्वर झाड़ना:- 1. ऊँ नमो नरहरे रोगापहारिणे ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुय स्वाहा। इस मंत्र को सात बार पढ़कर झाड़ें तो ज्वर न रहें। 2. ऊँ नमों अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरों वाचा। इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में सात बार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिए।२

अन्तर तिजारा चौथिया का मंत्र:-ऊँ लंकायाम तीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिशोदश॥ से पीपल के पत्ते पर लिखकर डोर से बांध देवे।

यात्रा में स्मरण करने का मंत्र:-यः स्मरेततुलसी सीता रामं सौमित्रिणा सह। कार्य कृत्वा रिपूंजित्वा क्षेमेणायाति वै नरः॥ थोड़ा सा दही खाकर यात्रा आरंभ करें और चंदन तिलक से सदा पूर्ण रहें।

बीमारी दूर भगाने के लिए:- गांव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिए गुरु पुष्य हस्तार्क अथवा उत्तम पर्व में मिट्टी के बड़े सकोरे के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दें तो बीमारी नहीं होगी। मंत्रः- अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः। बीभत्सुविजयी पार्थ सव्यसाची धनंजयः। कपिध्वजो गुड़ाकेशो गांडीव कृष्णसारथिः। एतान्यर्जुननामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्। न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्र प्रजायते।

झाड़ फूंक शाबर मंत्र -सिरपीड़ा दूर करने के लिए:- लंका में बैठ के माथ हिलावै हनुमंत। सो देखिके राक्षसगण पराय दूरंत॥ बैठी सीता देवी अशोकवन मैं। देखि हनुमान को आनंदे मन में॥ गई उर विषाद देषी सिथर दरशाय। 'अमुक' के नहीं कछू पीर नहिं कछु भार। आदेश कामाख्या हरिदासी चण्डी की दोहाई॥ सिर के पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें। सिर को हाथ से पकड़कर मंत्रोच्चारण करते हुए झाड़ें। 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम ले लें।

आधासीसी दूर करने के लिए:- 1. वन में ब्याई कच्चे वनफल खाय। हाँक मारी हनुमंत ने इस पिंड से आधा सीसी उतर जाय॥ 2. ऊँ नमों वन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद-कूद शाखानरी, कच्चे वनफल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े, आधा देय गिराय। हंकारत हनुमान जी, आधासीसी जाय॥ किसी एक मंत्र का उच्चारण करते हुए भस्म से झाड़ें।

नेत्र रोग शमन करने के लिए:- ऊँ नमों वने बिआई वानरी जहां-हजां हनुमंत आँखि पीड़ा कषवरी गिहिया थनै लाई चरिउ जाइ। भस्मन्तन गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्चरोवाचा॥ आंख पर हाथ फेरते हुए सात बार मंत्र पढ़कर मंत्र फूंके। व्यथा मिट जाएगी॥

कर्णमूल पीड़ा दूर करने के लिये:- वनरा गांठि वावरी तो डांटे हनुमान कंठ। बिलारी बाघी थनैजी कर्णमूल सम जाइ॥ श्री रामचन्द्र की बानी पानी पथ होई जाइ॥ विभूति से सात बार झाड़ने से कर्णरोग नष्ट होता है।

बिच्छू का विष झाड़ने के लिए:- 1. पर्वत ऊपर सुरही गाइ। कारी गाइ की चमरी पूछी तेकरे गोवरे बिछी बिआइ। बिछी तोरे कर अठारह जाति। छ कारी छ पीअरी छ भूमाधारी छ रत्नपवारी। छ कुं हुं कुं हुं छारि। उतरू का बिछी हाड-हाड पोर-पोर ते। कस मारे लीलकंठ गरमोर महादेव की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई अनीत टेहरी शंडार बन छाइ उतरहिं बीडी हनुमंत की आज्ञा दुहाई हनुमंत की। 2. ऊँ हरमर्कटमर्कटाय स्वाहा॥ मंगलवार को एक लाख जप तथा दशांश हवन करने से सिद्धि होती है।

अंड वृद्धि रोग दूर करने के लिए:- ऊँ नमो आदेश गुरु को जैसे के लेहु रामचन्द्र कबूत ओई करहु राध बिनि कबूत पवनपूत हनुमंत धाउ हर-हर रावन कूट मिरावन श्रवइ अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड-अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ वाजं गर्भ हि श्रवइ स्त्री पीलहि श्रवइ शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर॥ मंत्र पढ़कर फूले हुए अण्डकोश को हल्के हाथ से मलें तथा अभिमंत्रित जल पिलायें तो अण्डवृद्धि शांत हो जाती है। मिट्टी दे। आंगन और बरामदों में सिर्फ उड़द के दाने ही बिखेरना चाहिए। मात्र इतनी ही क्रिया से ग्रह दोष सदा के लिए दूर हो जाता है।

यंत्र-मंत्र-तंत्र एक साधना एवं सफलता

विश्वासम् फलमदायकम्। श्रद्धारूपेण कर्म साधनम्॥ गुरुत्व गुरु ग्राह्य मंत्रम्। आज्ञानुसारेण साधना सफलम्॥

साधक को आवश्यकतानुसार अपने जीवन में तंत्र साहित्य का प्रयोग मंत्र-यंत्र के रूप में करना हो तो भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। हां उसमें अपने भाव समर्पित होना नितान्त आवश्यक है। तंत्र में शक्ति का योगदान, मंत्र में गुरु का योगदान तथा यंत्र में बुद्धि सरस्वती का योगदान प्राप्त करके अपना कदम रखा जाय या शाबर तंत्र की सामान्य प्रक्रिया को भी यदि अपनाया जाय तो कोई भी यंत्र-मंत्र-तंत्र में विफलता का आना संभव नहीं है। अवश्य सफलता प्राप्त होती है। जरूरत है साधना के नियमों-उपनियमों एवं सीमांकन की। शिव+शक्ति=साधना का आधार। इसीलिए **सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्** की उक्ति चरितार्थ होती है।

आईये जन हिताय-सुरक्षाय-लाभाय कुछ सरल यंत्रों एवं मंत्रों की जानकारी सर्व कल्याण की भावना से परीक्षित यंत्रों की जानकारी आप भी प्रयोग करके देखें। तथा अपनी मंजिल प्राप्त होने पर हमें जरूर संकेत डाक द्वारा/फोन द्वारा बतायें। जिससे विश्वास, श्रद्धा भावना एवं कर्म का सटीक प्रमाण मिल सके। स्वयं करें, फिर लिखें। अनुभव की पाठशाला में जीवन पर्यन्त पढ़ना पड़ता है। यंत्र इस प्रकार है:-

मनोकामना पूर्ण करने के लिए-विधि-इस यंत्र को हल्दी के रस से कागज पर या भोजपत्र के ऊपर लिखें तथा इस यंत्र के नीचे अपना मनोरथ लिख दें। फिर इसका पलीता बनाकर रविवार के दिन जला दें। इस तरह सात रविवार तक प्रयोग करने से तथा साथ ही मंत्र का नित्य हल्दी की माला से जप करें तो शीघ्र ही मनोरथ पूर्ण होगा। मंत्र-ॐ ह्रीं ह्रां सः॥ सूर्य का पूजन भी करें। अवश्य ही लाभ होगा। प्रत्येक मनोरथ की पूर्ति अलग-अलग करें।

८	१५	२	[illegible]
६	३	१२	११
१६	२	८	९
४	५	१०	१३

व्यापार में लाभ प्राप्ति के लिए यंत्र-विधि-इस यंत्र को केसर की स्याही से नदी का जल डालकर चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर शुक्रवार के दिन २१००० यंत्र लिखकर (२४ घंटों में) फिर २१००० आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खिलाने पर यह यंत्र सिद्ध होगा। तब इस सिद्ध यंत्र को भोजपत्र या चांदी में या सोने की पतरी पर लगायें तो दिन-प्रतिदिन लाभ होगा।

५०	[illegible]	२	[illegible]
६	३	५२	५२
५६	[illegible]	८	[illegible]
४	५	५२	५५

बुरी नजर दूर करने का यंत्र-विधि-हल्दी के द्वारा पीले रंग से रंगे सूती कपड़े पर यंत्र लिखकर पोटली सी बनाकर अजवायन डालकर काले धागे से बच्चे के गले में बांधने से बुरी नजर दूर होती है। अथवा इस यंत्र को बुधवार के दिन हल्दी से भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बांधने से नजर दोष का निवारण होता है।

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१३	१३९
६३	७	१४०	०
२०	१३४	९	[illegible]

गर्भ धारण के लिए यंत्र-विधि-इस ताबीज (यंत्र) को भोजपत्र के ऊपर केसर से रविवार को लिखकर स्त्री के गले में शुभ समय में बांधे तो गर्भ धारण होगा। रजस्वला समय को त्यागना है। तथा गौरी शंकर की पूजा स्त्री २१ दिन तक करें। अवश्य लाभ होगा।

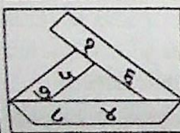
३४२	३४०	२	[illegible]
६	३	३४६	३४५
[illegible]	२४३	८	[illegible]
४	५	३४४	३४४

प्रत्येक कार्य में सफलता के लिए यंत्र-विधि-इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर रविपुष्य / गुरुपुष्य / सर्वार्थ सिद्धि योग में शुभ की होरा में केसर की स्याही से अनार की कलम से लिखें। तथा अपने पास रखें तो लाभ होगा। गुरु मंत्र जपें।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

विद्या प्राप्ति के लिए यंत्र-विधि-इस यंत्र को सरस्वती मंत्र से सिद्ध करके अपनी भुजा पर बांधे तो लाभ होगा। यंत्र केसर से भोजपत्र के ऊपर गुरु पुष्य, रवि हस्त बसंत पंचमी को तैयार करें। अनार की कलम से तथा ५१ दिन तक सरस्वती उपासना करें, लाभ होगा।

११	१	८
४	७	९
५	१२	३



भाग्योन्नति

भाग्योन्नतिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन भोजपत्र पर केशर से 625 यंत्र लिखें। जितने दिनों में संख्या दस हजार पूरी हो जाय, उतने दिनों तक प्रतिदिन यंत्रों को लिख-लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करते रहें, तो भाग्य की उन्नति होती है। सभी कामनायें पूर्ण होती है।

परीक्षा में सफलताः- परीक्षा आरंभ होने से 15 दिन पूर्व इस यंत्र को केसर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 101 यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर दें। सोलहवें दिन एक यंत्र को यथा विधि पूजकर ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा अथवा गले में धारण कर लें और परीक्षा देने जायें तो उसमें सफलता मिलती है।

२	१	१	७
६	३	६	५
८	१	८	१
४	५	४	७

परीक्षा में सफलता

बंधन मुक्तिः-इस यंत्र को रविवार के दिन कागज या भोजपत्र के ऊपर चंदन से लिखकर एक जंगली कबूतर के गले में बांधकर कबूतर को छोड़ दें। इस यंत्र में जिस स्थान पर कैदी का नाम लिखा है, वहां 'कैदी के नाम' का तथा जहां 'मां का नाम' लिखा है वहां कैदी की मां का नाम लिखना चाहिए। बड़ा प्रभावकारी यंत्र है।

या हाफ़ज	३३३	३३८	३३१
या हाफ़ज	३२२	३३४	३३६
९९	३३७	३३०	३३५
कैदी का नाम मां का नाम	९९	या हाफ़ज	या हाफ़ज

बंधन मुक्ति

कारावास मुक्तिः- इस चक्र को पुए के ऊपर घी से लिखकर बीच में देवदत्त के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जो जेल में पड़ा हो। गंध, पुष्प आदि से यंत्र वाले पुए का पूजन करके, वह पुआ उस कैदी व्यक्ति को खिला दें। इस यंत्र के प्रभाव से वह कैदी व्यक्ति तीन अथवा सात दिन के भीतर ही कैद से छूट जाता है। यह भी बड़ा प्रभावकारी यंत्र है।

ह्रीं
ह्रीं देवदत्त ह्रीं
ह्रीं

कारावास मुक्ति

गये हुए व्यक्ति का लौटनाः- घर से लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, भाई, बहिन, सेवक अथवा अन्य व्यक्ति रूठकर या किसी भी कारण से चुपचाप बाहर चला गया हो और न आ रहा हो तो उसे वापिस बुलाने के लिए इस यंत्र को रविवार के दिन भोजपत्र पर चंदन से लिखकर चरखे पर बांध दें और कुंवारी कन्या के हाथ से उल्टा चरख चलवाकर सूत कतवायें तो गया हुआ व्यक्ति वापिस लौट आता है।

क्रोध शमनः- इस यंत्र को लोहे के कांटे से गोरोचन द्वारा ताड़ पत्र पर सोमवार के दिन लिखें। मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए जिसका क्रोध शांत करना हो फिर यंत्र को कुम्हार की मिट्टी में रखकर 7 दिन तक पूजन करें। अंत में ब्राह्मण को भोजन करावें। इसके प्रभाव से शत्रु मित्र अथवा अन्य व्यक्ति का क्रोध दूर हो जाता है।

विद्या प्राप्तिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 225 यंत्र केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखें और उन यंत्रों को उसी दिन पूजन करके नदी के जल में प्रवाहित कर दें। 15 दिन तक इसी प्रकार निरंतर करता रहे तो साधक को इच्छित विद्या की प्राप्ति होती है। एक यंत्र ताबीज में भरकर अपनी भुजा में भी धारण करना चाहिए।

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

विद्या प्राप्ति

१३
६ १० ४
१०
९ ३ ८
१

आजीविका प्राप्ति

आजीविका प्राप्तिः- इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन से लिखना प्रारंभ करें। प्रतिदिन 201 यंत्र अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखें। जब 5 हजार लिखे जा चुके हों तो उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इसके प्रभाव से आजीविका (नौकरी आदि) की प्राप्ति होती है।

भागे हुए व्यक्ति को बुलाने का यंत्रः- खोए या भागे हुए व्यक्ति के पहने हुए, बिना धुले हुए वस्त्र पर गुरु से इस यंत्र को बनायें और पत्थर की सिर के नीचे दबा कर रख दें। व्यक्ति के वापस आने तक रोज सायंकाल इसके ऊपर दीप जलाकर रखें। ऐसा करने से व्यक्ति आ जाता है। शीघ्र न लौटे तो पत्थर को कोड़े से मारें। इस तरह वह व्यक्ति जीवित होगा तो लौट आवेगा। नहीं तो समाचार तो मिल ही जाएगा।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

भागे व्यक्ति को बुलाना

मोमोभय
मोमोभय देवदत्त मोमोभय
मोमोभय

राजदंड से मुक्ति

राजदण्ड से मुक्तिः- इस यंत्र को कपूर कुंकुम से एक बड़े भोजपत्र पर लिखकर बीच में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। फिर यंत्र का गंध, पुष्प आदि से पूजन कर, गिलोह के ताबीज में भरकर कंठ अथवा भुजा में धारण करें तो इसके प्रभाव से राजदण्ड अथवा वंदन (कैद भय से) दूर हो जाता है। यदि किसी ने किसी को जबरदस्ती रोक रखा हो तो छुटकारा मिल जाता है।

ठं.	ठं.	ठं.	ठं.
ठं.	ठं.	ठं.	ठं.
ठं.	ठं.	ठं.	ठं.
ठं.	ठं.	ठं.	ठं.

शत्रु विजय

शत्रु विजयः- इस यंत्र को शमशान के कोयले द्वारा शत्रु के वस्त्र पर लिखकर उसे धूप, दीप दें। तत्पश्चात् उस वस्त्र को जमीन में गाड़ दें या किसी नदी में बहा दें तो शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। इस यंत्र के प्रभाव से शत्रु देश छोड़कर चला जाता है अथवा क्षमा मांगकर शत्रुता छोड़ देता है।

खोई हुई वस्तु का मिलनाः- इस यंत्र को कनेर के वृक्ष की छाया में बैठकर बकरे की हड्डी से पृथ्वी पर 108 बार लिखें। तत्पश्चात् भगवान् शिव का यथाविधि पूजन करें तो इसके प्रभाव से खोई वस्तु मिल जाती है। इस यंत्र को मंगलवार या शनिवार के दिन लिखना चाहिए।

ह्रं.	ह्रं.	ह्रं.	ह्रं.
ह्रं.	ह्रं.	ह्रं.	ह्रं.
जं.	जं.	जं.	जं.
ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.

खोई हुई वस्तु का मिलना

पुत्री का विवाहः- इस यंत्र को सोमवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 225 यंत्र भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से लिखें। जब तक पांच हजार यंत्र लिखे जा चुकें, तब सबको एकत्र कर, धूप दीप देकर नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस यंत्र के प्रभाव से पुत्री का विवाह आनन्दपूर्वक हो जाता है और उसके लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

पुत्री का विवाह

७		८
९		४

पारिवारिक सुख

पारिवारिक सुखः- इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन से प्रतिदिन 101 की संख्या में लिखना प्रारंभ करें। यंत्र को भोजपत्र पर केशर द्वारा लिखना चाहिए। जब 5000 की संख्या पूरी हो जाय तब से यंत्रों का पूजन कर उन्हें नदी के जल में विसर्जित कर दें। इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख प्राप्त होता है।

यश प्राप्तिः- इस यंत्र को रविवार के दिन प्रातःकाल 5 बजे से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 101 यंत्र भोजपत्र पर केशर या गोरोचन से लिखें। जब 2400 यंत्र लिखे जा चुकें, तब उन्हें किसी नदी या समुद्र के जल में प्रवाहित कर दें तो इसके प्रभाव से यश और संतान की प्राप्ति होती है।

९ ५ ६
१ ६
८ ७
२ ३

यश प्राप्ति

दं.	दं.	दं.	दं.
वं.	वं.	वं.	वं.
सं.	सं.	सं.	सं.
अं.	अं.	अं.	अं.

सम्मान प्राप्ति

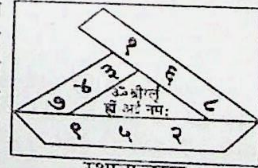
सम्मान प्राप्तिः- यंत्र को केसर अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर सवा लाख की संख्या में लिखें। लिखने का प्रारंभ शुक्ल पक्ष के गुरुवार अथवा पूर्णिमा के दिन करना चाहिए। निश्चित संख्या में लेखन कार्य पूरा हो जाने पर यंत्र लेखक को सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है। यंत्र लिखते समय धूप दीप भी जलानी चाहिए।

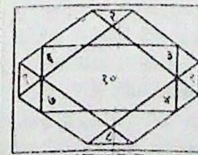
६	११	३
४	७	९
१०	२	८

संतान सुख

संतान सुखः- इस यंत्र को रविवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 201 यंत्र लिखें। जब 2500 यंत्र पूरे हो जायें, तब उनका पूजन करके नदी में प्रवाहित कर दें। इस यंत्र के प्रभाव से संतान का सुख प्राप्त होता है तथा बिगड़ी हुई संतान सुधर जाती है।

स्थानांतरणः- इस यंत्र को मंगलवार के दिन से प्रतिदिन 101 की संख्या में लिखना आरंभ करें। सफेद कागज या भोजपत्र पर केशर से यंत्र लिखने चाहिए। जब 2400 यंत्र लिख जायें, तब उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो साधक व्यक्ति का स्थानांतरण उसके इच्छित स्थान पर हो जाता है।


स्थानान्तरण


आत्म रक्षा

आत्म रक्षाः- इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर यथाविधि धूप दीप आदि से पूजा कर त्रिलोहर के ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा अथवा कंठ में धारण करें तो आत्म रक्षा होती है। ऐसे व्यक्ति को कहीं भय नहीं होता।

धन प्राप्तिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखना प्रारंभ करें। प्रतिदिन 125 यंत्र लिखें, जब 5000 यंत्र लिख जायें, तब उन्हें जल में प्रवाहित कर दें तथा एक यंत्र को चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा में धारण करें, तो धन की प्राप्ति होती है।

१
४ ७ ९
३
८ १० २
५

धन प्राप्ति

लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.

शत्रु विनाश

शत्रु विनाश :- शत्रु का उच्चाटन करने तथा शत्रु से छुटकारा पाने के लिए इस यंत्र को लोहे की कलम से तांबे के यंत्र (ताम्र पत्र) पर लिखकर गंध पुष्पादि से पूजन करें तथा जिस शत्रु का विनाश करना हो, उसका ध्यान करें तो यंत्र के प्रभाव से शत्रु का उच्चाटन होता है। वह उस स्थान को छोड़कर दूर चला जाता है तथा शत्रुता करने का कभी नाम भी नहीं लेता।

सर्वकामना सिद्धि, इक्कीसा यंत्रः- इस इक्कीसा यंत्र को शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से लिखकर भुजा में बांधे। इससे सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण होकर सर्वकार्य सिद्ध होते हैं। ❖

४	१२	५
८	७	६
९	२	१०

इक्कीसा यंत्र

रमल अरबी ज्योतिष बिना कुण्डली के बताएगा रत्न कैसे पहनें?

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक रत्न मुख्य रूप से नौ प्रकार के होते हैं। वेदों में ऋग्वेद द्वारा रत्नों के अग्नि तत्व का जिक्र आता है। गरुण पुराण, अग्नि पुराण और वृहद् संहिता में रत्नों की व्याख्या देवी शक्ति के रूप में कई तरह की चिकित्सा पद्धति के वास्ते की गयी है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता की जन्म कुण्डली की आवश्यकता कदापि नहीं होती है। प्रश्नकर्ता द्वारा किए गये प्रश्न के द्वारा बनाए गये प्रस्तार द्वारा किया जाता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक बारीकी से अध्ययन करें कि जातक को वर्तमान में किस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) चल रही है। उस ग्रह से वांछित लाभ व शांति प्राप्त करने के वास्ते प्रश्नकर्ता के हाथ पर पासे जिसे अरबी भाषा में "कुरा" कहते हैं। इन्हें एक विशेष स्थान पर डलवाए जाते हैं। यह सारी कार्य प्रणाली प्रश्नकर्ता के समक्ष होने पर होती है। रमल शास्त्र में प्रश्नकर्ता की जन्म कुण्डली, नाम, माता-पिता का नाम, तिथि, वार, यहां तक कि पंचांग की आवश्यकता नहीं होती है। प्रश्नकर्ता का मन व प्रश्न की बावत् भावना पूर्ण आस्था की ओर होना चाहिए। क्योंकि किसी भी ज्योतिष शास्त्र में विश्वास का होना आवश्यक है। यदि प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के समक्ष न हो तो रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में नवीन शोध विषय द्वारा प्राप्त की गयी विधि "प्रश्न-फार्म" के माध्यम से भी यह कार्य किया जा सकता है। इन प्रणाली द्वारा प्राप्त फलादेश मय समाधान के एक ही आता है मगर गणितीय पद्धति पूर्णत: भिन्न अवश्य होती है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में 16 शकलों (आकृतियों) पर नौ ग्रहों पर निम्न प्रकार से विभाजित किया गया है। जिसके नाम हिन्दी व उर्दू में निम्न प्रकार से यहां वर्णित है।

नाम		शकल
1. रवि (शम्स)	ग्रह	
2. चन्द्रमा (कमर)	ग्रह	
3. मंगल (जैनख)	ग्रह	
4. बुध (मुश्तरी)	ग्रह	
5. गुरु (मरीख)	ग्रह	
6. शुक्र (जोहरा)	ग्रह	
7. शनि (रास)	ग्रह	
8. राहू (अतारू)	ग्रह	
9. केतू (जुहल)	ग्रह	

प्रथम रत्न माणिक है। इसका प्रतिनिधित्व रवि (शम्स) ग्रह है यानी कि सूर्य ग्रह है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में रवि ग्रह की दो शुभ शकलें कब्जुल दाखिल, नुस्तुल खारिज हैं। रत्न माणिक का रंग गुलाबी होता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक जिस जातक को रवि ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) वर्तमान में चल रही हो, उन्हें रत्न धारण करना चाहिए। इस रत्न को अनामिका अंगुली में सोने या तांबे की अगूंठी में मढ़वाकर धारण करना चाहिए। इसको धारण करने से नेत्र रोग, हृदय रोग, हडिड्यों की कमजोरी में लाभ प्राप्त होता है। इसे वैद्य हकीम भस्म बनाकर रोगी को नियमित नियमानुसार सेवन करने की सलाह देते हैं। इसको सूर्य के सामने रखने में लाल रंग की किरणें निकलती हैं। इस रत्न को रविवार के दिन रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के शुभ-मुर्हूत में धारण करना चाहिए।

द्वितीय रत्न मोती है। इसका प्रतिनिधित्व ग्रह चन्द्रमा (कमर) है। चन्द्रमा ग्रह दो शकलें ब्याज व तरीक होती हैं। चन्द्रमणि और मोती एक से गुणों के धारणकर्ता हैं, मगर फिर भी बारीकी से देखें तो एक-जैसे तो नहीं हो सकते हैं। चन्द्रमणि पत्थर है, पर मोती रत्न है। रत्न महंगे होने की स्थिति में चन्द्रमणि पहनी जाती है। जिसका असर मोती जैसा नहीं होता है मगर असर अवश्य करता है। इसको भी अनामिका अंगुली में चांदी जड़वाकर धारण करना चाहिए। विद्वान् वैद्य-हकीम औधषि के रूप में मोती रत्न की भस्म मिलाकर देते हैं, मगर चन्द्रमणि की कदापि नहीं। इसे सोमवार के दिन रमल शास्त्र द्वारा धारण करना चाहिए। इसके धारण करने से मानसिक अशांति, मन का उचाटना, मन में विभिन्न प्रकार की बात का आना और सुन्दरता व अन्य कार्यों में लाभ अभीष्ठ होता है। जिस महाशय को चन्द्रमा ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) चल रही हो, उसे यह रत्न धारण करना चाहिए।

तृतीय रत्न मूंगा है। इसका प्रतिनिधित्व मंगल (जैनख) ग्रह होता है। मंगल ग्रह की दो शकलें हुमरा और द्वितीय नकीं है। इस रत्न का जन्म समुद्र में होता है। यह स्वयं लाल रंग का कीड़ा होता है। साथ ही लकड़ी नुमा एक लाल रंग की लकड़ी भी बनता है। वैज्ञानिक इसे आइसिस नौबोल्ज नाम का लेसेदार कीड़ा के नाम से जानते हैं। इसके तत्व कैल्शियम के होते हैं। मूंगा रत्न का रंग लाल व सिन्दूरी रंग का होता है। इस रत्न के धारण करने से चर्म रोग, रक्त विकार, रक्त चाप, पठ्ठों की कमजोरी, पुराना जुकाम तक ठीक हो जाता है। इसे अनामिका अंगुली में स्वर्ण या तांबा की अंगुठी में मढ़वाकर धारण करना चाहिए। रमल शास्त्र के मुताबिक जिस जातक को मांगलिक की स्थिति हो, उसे अवश्य ही विधि-विधान से मंगलवार को धारण करना चाहिए। जिससे कि मांगलिक स्थिति में लाभ और शांति प्राप्त हो सके। जातक को मांगलिक स्थिति शुभ-विवाह से पूर्व और बाद में भी प्रभावित करती है। रमल (अरबी ज्योतिष) विद्या के शुभ-मुहूर्त में विधि-विधान द्वारा पहनाने से लाभ व शांति प्राप्त होती है।

चौथा रत्न पन्ना है। यह बुध (मुश्तरी) ग्रह का प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह है। इनकी दो शकलें जमात, इज्जतमा हैं। इस रत्न को संस्कृति में मरकत कहते हैं। हिन्दी में पन्ना, अंग्रेजी में इमरल्ड, उर्दू में जमर्रुद के नाम से जाना जाता है। यह चार प्रकार की गैसों के द्वारा बना है। आक्सीजन, बैरीजिलम, एल्यूमीनियम और सीलिका। बुध ग्रह व्यापार का अधिष्ठाता ग्रह है। व्यापार को आर्थिक लाभार्थ प्रदान करने वाला साथ ही ख्याति, लाभ, शांति प्रदान भी करता है। पन्ने को धारण करने से हर्निया, फेफडों के रोग, दमा रोग, मिर्गी रोग, मानसिक बीमारी और पागलपन को दूर करने में सहायक है। यह पन्ना रत्न हरे रंग का कुछ पारदर्शी जैसा होता है। इस रत्न को कनिष्ठका अंगुली में स्वर्ण या तांबा धातु की अंगूठी में जड़वाकर धारण किया जाता है। इस रत्न को बुधवार को रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के अनुसार धारण किया जाता है।

पांचवा रत्न पुखराज है। जिसका प्रतिनिधित्व गुरु (मरीख) यानी कि वृहस्पति ग्रह है। गुरु ग्रह की दो शुभ शकलें लहियान, नुस्तुल दाखिल हैं। यह रत्न असली कुछ पारदर्शी जैसा होता है। इसे कसौटी पर रगड़ने से रंग निखरता है। यह सफेद रंग, बसन्ती रंग और हल्के पीले रंग का होता है। जहरीले किसी कीड़े ने डंक मार दिया हो तो असली पुखराज को घाव पर रगड़ने से जहर धीरे-धीरे समाप्त हो जावेगा। यह रत्न फलोरिन और एल्यूमीनियम से बनता है। जब नमी हवाएं ग्रेनाइट और प्रेमनाइट नाम की शिलाओं से टकराती है। तब पुखराज रत्न बनता है। रत्न पुखराज के धारण करने से तिल्ली रोग, पीलिया, जिगर की सूजन तन्त्र के दोष की बीमारियों से लाभ प्राप्त होता है। जिस व्यक्ति को रमल शास्त्र के अनुसार गुरु ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) हो उसे शुभ-मुहूर्त में पहनना चाहिए। इस रत्न को तर्जनी अंगुली में स्वर्ण या तांबा धातु में जड़वाकर धारण किया जाता है। यह रत्न शुभ-विवाह के शीघ्र व आसानी से तथा दाम्पत्य जीवन में मधुरता स्नेहकारी के वास्ते धारण किया जाता है। साथ ही आध्यात्मिक अध्ययन और प्रत्येक कार्य में उज्जवलता, ख्याति, लाभ व शांति के वास्ते नियमानुसार धारण किया जाता है। रत्न पुखराज की प्राण-प्रतिष्ठा कराकर गुरुवार को धारण करने का विधान है। यदि गुरु पुष्य योग में इसे धारण एक रमल विशेष शुभ-मुहूर्त में पहना जावे तो अति उत्तम व वांछित लाभ और शांति अमुक कार्य की बावत प्राप्त होगा।

छठा रत्न हीरा है। इसका प्रतिनिधित्व शुक्र (जोहरा) है। शुक्र ग्रह की दो शकलें फरह, अतबे दाखिल हैं। यह रत्न हीरा रोडेशिया, ब्राजील, बेल्जियम और भारत में भी मिलता है। हीरा

रत्न तीन प्रकार का होता है। नर हीरा, नारी हीरा, नपुन्सक हीरा। जो रत्न चमकदार और हल्का होता है। वह नर हीरा कहलाता है। जो रत्न चपटा हो वह नारी हीरा कहलाता है। अन्तिम नपुन्सक हीरा है। रत्न गोल हो व चमक रहित हो व छोटा हो तथा नारी हीरा होता है। यह सफेद व चमकदार होता है। इस रत्न को संतान व संतान सुख के वास्ते भी धारण किया जाता है। हीरा नग को अनामिका अंगुली में शुक्रवार को विधि-विधान से धारण का विधान है।

सातवां रत्न नीलम है। इसका प्रतिनिधित्व शनि (रास) ग्रह है। इसकी दो अशुभ शकलें उक्ला व अंकिश हैं। यह रत्न कुछ सफेद रंग लिए हुए यानी कि हल्का पीला रंग का और नीले रंग का होता है। असली नीलम हल्के रंग का होता है। साथ ही पारदर्शी होता है। एक साधारण नीलम को घुमाकर देखने से केवल नीली झलक दिखाई देती है। किसी भी रत्न को दागी नहीं पहनना चाहिए। विशेषकर नीलम रत्न को। दागी नीलम रत्न पहनने से झगड़ा हो सकता है। इल्जाम लग सकता है व मुकदमा कायम हो सकता है। जातक को मानसिक परेशानी हो सकती है। यह रत्न वायु प्रकोप के कारण होने वाली बीमारियों, जोड़ों के दर्द आदि रोगों में लाभकारी होता है। इस रत्न को मध्यमा अंगुली में धारण करने का विधान है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक जिनको शनि ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) हो उन्हें रत्न नीलम धारण करना चाहिए। इसे शुभ मुहूर्त में शनिवार को धारण करना चाहिए। इस रत्न को चांदी या पंच धातु में पहना जाता है।

आठवां रत्न गोमेद है। इसका प्रतिनिधित्व राहू (अतारू) ग्रह है। इस ग्रह की एक ही कब्जुल खारिज शकल होती है। यह रत्न तीन रंगों में पाया जाता है। एक गौ-मूत्र, द्वितीय काला रंग का व अंतिम कत्थाई रंग का सिलौनी। यह समुद्र के अंदर जो चट्टानें पानी के अंदर घुल-मिलकर नीचे तह में बैठ जाती हैं। वह गोमेद रत्न बनाकर ही रहती हैं। यह रत्न श्रीलंका जिसे सिलौन कहते हैं। यह सबसे अच्छा माना जाता है। इसे धारण करने से चर्म रोग, मिर्गी रोग, पांडू रोग दूर होते हैं। मनोबल को बढ़ानें, मानसिक भटकन को दूर करता है। इसे मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है।

नवां रत्न लहसुनियां है। इसका प्रतिनिधित्व केतु (जुहल) ग्रह है। इस ग्रह की एक शकल अतवे खारिज होती है। इसको संस्कृत में विडाल्याक्ष कहते हैं। हिन्दी और उर्दू भाषा में लहसुनियां कहते हैं। अंग्रेजी में कैट्स आई कहते हैं। इस रत्न का रंग बिल्ली की आंख की भांति होता है। असली लहसुनिया को हिलाने से सफेद रंग की झलक पड़ती है। इसे मध्यमा अंगुली में रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के अनुसार शुभ मुहूर्त में शनिवार को धारण करना चाहिए।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र द्वारा याचक को अमुक रत्नों द्वारा लाभ और शांति होगी मगर लाभ तब ही अच्छा होगा जब वर्तमान में किस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) कहां-कहां पर है। यह स्थिति रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के द्वारा सही गणना कर की गयी होगी। साथ ही रत्न कितने वजन का धारण करना चाहिए। यह बात का तय प्रश्न करने पर ही होती है। किसी भी रत्न को रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के उसी शुभ-मुहूर्त में प्रांण-प्रतिष्ठा कराकर विधि-विधान द्वारा धारण करना चाहिए। रत्न कोई भी खंडित कदापि नहीं पहनना चाहिए। यदि किसी कारण वश जातक रत्न धारण नहीं करना चाहते हैं तो रमल सिद्धयन्त्र विधि-विधान से धारण करना शास्त्रानुसार विधान है। ऐसा पूर्व रमल ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों का मत है।

लेखक-डा. नरेन्द्र कुमार "भैया" रमलाचार्य
रमल (अरबी ज्योतिष) शोध संस्थान (रजि.)
3, महल खास, किला, भरतपुर (राजस्थान)
मो.- 09414268172 फोन-(05644) 22 3216
Website- www.ramalarabicastrology.com
E-mail- narendrabhaiya9@gmail.com

कुंडली से जांनिए कब होगा विवाह

विवाह संस्कार, सोलह संस्कारों में से एक प्रमुख संस्कार है। जब विवाह की आयु के उपरांत भी विवाह संपन्न नहीं होता तो माता-पिता, सगे-संबन्धियों को चिंता होने लगती है कि विवाह क्यों नहीं हो रहा है।

कभी-कभी विवाह की आयु होने के बाद भी अथवा अनेक प्रयत्न करने के बाद भी विवाह का योग नहीं बनता। इसकी सबसे बड़ी वजह अथवा कारण है कि लड़के या लड़की की कुंडली में सप्तमेश का कमजोर होना।

इसीलिए आज भी अनेक लोग कुंडली दिखाकर जानना चाहते हैं कि उनके लड़के या लड़की का विवाह कब होगा। अथवा किस आयु में होगा इसके लिए ज्योतिष शास्त्र में जन्म कुंडली सबसे उत्तम माध्यम है।

कुंडली के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि विवाह कब, किस आयु में, किस दिशा में होगा। वर या वधु कैसा होगा आदि-आदि?

किस जातक का विवाह किस आयु में होगा

जब जन्म कुंडली में सप्तम भाव व सप्तमेश बलवान् हो और लग्न व द्वितीय भाव या सप्तम भाव पर शुभ प्रभाव हो तो ऐसे जातक का विवाह 20-22वें वर्ष में होता है।

यदि जन्म कुंडली में सप्तमेश बलवान् हो तथा शुक्र केन्द्र अथवा त्रिकोण में मित्र राशि में विराजमान हो तो लड़के का विवाह 24-26वें वर्ष में होता है। इस प्रकार कन्या की जन्म कुंडली में सप्तमेश बलवान् हो तथा गुरु त्रिकोण अथवा लग्न में मित्र या उच्च राशि में विराजमान हो तो कन्या का विवाह 21-22वें वर्ष में संपन्न, धनी परिवार में होता है।

जन्म कुंडली में चन्द्रमा सातवें स्थान में शुक्र स्वग्रही हो तो ऐसे लड़के का विवाह 20-21वें वर्ष में हो जाता है।

कन्या की जन्म कुंडली में गुरु, चन्द्रमा से सातवें स्थान में हो तो कन्या का विवाह बिना किसी बाधा या परेशानी के 22-24वें वर्ष में सफलता पूर्वक हो जाता है।

जब जन्म कुंडली के सप्तमेश मित्र राशि में, स्वराशि में अथवा अपनी उच्चराशि में हो तो बुध के साथ हो तो 18 से 21 की आयु में विवाह होता है। यदि सप्तमेश बुध के साथ न हो तो विवाह 21 से 23 की आयु में होता है। यह नियम मंगल, शनि पर लागू नहीं होता है।

जन्म कुंडली में जब मंगल प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में हो तो मंगली दोष की उत्पत्ति होती है। ऐसी अवस्था में यदि सप्तमेश शत्रु राशि नीच राशि में हो तो कन्या अथवा लड़के का विवाह 30 से 35वें वर्ष में होता है तथा वैवाहिक जीवन कष्ट दायक, अभावात्मक रहता है। विवाह में देरी के साथ-साथ अनेक बाधाएं आती हैं।

यदि जन्म कुंडली में लग्न भाव द्वितीय अथवा सप्तम भाव में नीच ग्रह अथवा शत्रु ग्रह विराजमान हो तो जातक के विवाह में अनेक बाधाएं, विरोध आते हैं। विवाह 30-32वें वर्ष में होता है।

जब जन्म कुंडली में लग्नेश सप्तम भाव में तथा सप्तमेश लग्न में और दोनों ग्रह अपनी-अपनी मित्र राशि में हों तो विवाह बिना बांधा आराम से 18-19वें वर्ष में हो जाता है।

किन ग्रहों की दशा में विवाह होता है

सप्तमेश के साथ कोई मित्र ग्रह हो तो उसकी दशा, अन्तर्दशा में विवाह हो जाता है।

सप्तम भाव में विराजमान ग्रह जब मित्र राशि, स्वराशि अथवा उच्चराशि में हो तो उस ग्रह की अन्तर्दशा में विवाह अवश्य होता है। दशमेश अथवा अष्टमेश शुभराशि में, मित्र राशि में हो तो उसकी दशा अथवा अंतर्दशा में भी विवाह संपन्न हो सकता है।

लड़के की जन्म कुंडली में शुक्र जिस राशि में स्थित है उस राशि का स्वामी ग्रह जन्म कुंडली में त्रिक भाव में न हो तो उस ग्रह की दशा अथवा अन्तर्दशा में विवाह कार्य पूर्ण हो सकता है।

लेखक-डॉ. नीरज पांडे (ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्री)
माँ ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र, 651, सेक्टर-10
आवास-विकास कालोनी सिकंदरा, आगरा-282007
मो. 09837701181/ 09897646528

जन्मपत्री में व्यवसाय योग

लेखक–
डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल

धनवान होकर भी दुखी, निर्धन होकर झोपड़ी में रहकर भी सुखी। कारण प्रकृति में घुले हुये सुख-दुख की अनुभूति से मानव का मन भी अछूता नहीं है। कठोपनिषद यही कहता है।

व्यक्ति को व्यापार या नौकरी किसमें सफलता मिलेगी? व्यवसाय का चुनाव करते समय यह आम समस्या होती है कि नौकरी करने वाला व्यक्ति उच्च अधिकारी तो हो सकता है। परंतु आमदनी निश्चित होती है। जबकि व्यापारी हजारों, लाखों एक ही समय में कमा लेता है। व्यापार की सफलता के लिए द्वितीय, पंचम, नवम, दशम और एकादश भाव तथा उन भावों में ग्रहों की स्थिति संपत्ति की सूचक है। जिनके उपरोक्त पांचों भाव निर्बल हो, तो उन्हें नौकरी मिलती हैं।

द्वितीय भाव जातक की आर्थिक स्थिति को विशेष रूप से स्पष्ट करता है। द्वितीय भाव की स्थिति में विशेष जानकारी प्राप्त की जाती है। धन लाभ का तरीका क्या होगा? एकादश से विचार करना चाहिए। एकादश भाव साझेदारी के विषय में प्रकाश डालता है तथा नवम भाव जातक के भाग्यशाली अथवा भाग्यहीन होने की सूचना देता है। आकस्मिक लाभ के संबंध में विचार करते समय चतुर्थ, पंचम तथा अष्टम भाव की स्थितियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

चतुर्थ भाव जातक की स्थायी, पैतृक संपत्ति के संबंध में बताता है। पंचम भाव लॉटरी, आकस्मिक धन लाभ के विषय में सूचित करता है। सप्तम भाव साझेदारी के व्यवसाय तथा ससुराल द्वारा होने वाले धन लाभ का सूचक है। दैनिक आमदनी के संबंध में भी सप्तम भाव से विचार किया जाता है। अष्टम भाव रिक्त, लॉटरी द्वारा धन लाभ, गढ़े हुए धन का लाभ अथवा परस्त्री आदि से होने वाले धन-लाभ की सूचना देता है। नवम भाव भाग्यशाली होने के बारे में तथा दशम भाव ऐश्वर्य, सत्ताधिकार, राज सम्मान, जीविका, धंधे, नौकरी के संबंध में जानकारी देता है। धन-हानि के संबंध में द्वादश भाव से विचार करना चाहिए।

लग्न तथा चन्द्रमा इन दोनों के मध्य में जो बली हो एवं उससे जो दशम स्थान हो, वह कर्म या व्यवसाय का घर है। उसी के वृद्धि से कर्म की वृद्धि तथा शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो उस मनुष्य की सुख जनक जीविका होती है।

लग्न व चन्द्रमा से दशम में सूर्यादि ग्रह हों तो पिता से या पिता के व्यवसाय से धन की प्राप्ति होती है। उसी प्रकार चन्द्र हो तो माता से, भौम हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो स्त्री से, शनि हो तो नौकर से धन की प्राप्ति होती है। लग्न, चंद्र तथा सूर्य इन तीनों के मध्य जो अधिक बली हो उससे दशम में जो राशि हो उसका स्वामी जिस ग्रह के नवांश में हो उसकी वृत्ति अनुसार जीविका होती है। अर्थात् सूर्य की दृष्टि से चिकित्सा, झगड़ा, जल, धान्य, सुवर्ण, मोती, मंत्रोपदेश, मनोरंजन आदि से। चन्द्रमा की वृत्ति से वस्त्र, राजा तथा स्त्रियों के आश्रय से, मिट्टी के काम, खेती के कार्य से जीविका होती है। मंगल की वृत्ति से युद्ध तथा प्रहार, अग्नि, साहस, धातु कला की वृत्ति, चोर वृत्ति आदि से। बुध की वृत्ति से काव्य ज्ञान, शास्त्र, वेदान्त मार्ग, पुरोहिताई, जप, वेदपाठ, शिल्प कलादि से। गुरु की वृत्ति से पुराण, शास्त्र, नीति, धर्मोपदेश, अध्यापन मार्ग द्वारा जीविका होती है। शुक्र के नवांश में माणिक्य, वाहन, चावल, नमक, स्त्री, गाय आदि से। शनि की वृत्ति में घूमने-फिरने, नीच कार्य, लकड़ी, शिल्प, परिश्रम, भार वाहन से जीविका होती है।

व्यवसाय या कर्म, आज्ञा, कृषि, पिता, आजीविका, यश, व्यापार, सत्ता प्राप्ति, पद प्राप्ति, मान, वंश, संन्यास, आश्रम, आकाश, प्रवास, ऋण, विज्ञान, विद्या, वस्त्र, राज-सम्मान, दास आदि इन सभी वस्तुओं का विचार दशम भाव से करें। उपरोक्त सभी बातों का विचार करते समय बुध, गुरु, रवि तथा दशमेश से भी विचार करें। मंगल स्वराशि मेष या वृश्चिक का हो वह शुक्र, बुध से युक्त हो एवं दशम स्थान उस मंगल से दृष्ट हो तो अपने कर्मफल की स्वल्पता होनी चाहिए। षष्टम, द्वादश या अष्टम में शुक्र, बुध, गुरु हो और वे पाप ग्रह से दृष्ट हो तो उक्त योगों में निम्न कर्मों का नाश होता है।

ग्रहों का फल विचारते समय ग्रह के अंश उच्च राशि व नीच राशि का भी ध्यान रखना चाहिए। जो ग्रह सूर्य के साथ हो सामान्यतय: उन्हें अस्त ही माना जाता है। पत्रिका में वर्तमान में दशा-अंतर्दशा तथा प्रयन्तर्दशा का भी ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि ग्रह अपनी दशा तथा अंतर्दशा में अधिक फलदायी होते हैं।

राशियां तीन प्रकार की होती है। चर राशियां–मेष, कर्क, तुला, मकर। स्थिर राशियां–वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ। द्विस्वभाव राशियां–मिथुन, कन्या, धनु, मीन। इन राशियों से हम व्यवसाय आदि की गणना करते हैं।

यदि जन्म कुंडली में चर राशिगत ग्रह अधिक संख्या में हो तो जातक कोई स्वतंत्र व्यवसाय करने वाला महत्त्वाकांक्षी होता है। [illegible] क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। जिस व्यवसाय में सद्व्यवहार, विनम्रता युक्ति आदि की विशेष आवश्यकता पड़ती हो, वे उसके लिए लाभदायी सिद्ध होते हैं।

यदि जन्म कुंडली में स्थिर राशिगत ग्रह अधिक संख्या में हो-जातक धैर्यवान, सहनशील तथा दृढ़-विचारों का होता है। जिसे नौकरी में इन सब गुणों की अधिक आवश्यकता पड़ती हो, चिकित्सा कार्य, सरकारी नौकरी आदि, उनमें ऐसे ग्रहों वाले जातक को विशेष सफलता मिलती है।

यदि जन्म कुंडली में द्विस्वभाव राशिगत ग्रह अधिक संख्या में हो तो जातक को व्यवसाय की अपेक्षा अध्यापक, मुनीमी, एजेंसी आदि के कार्यों तथा नौकरियों में अधिक सफलता मिलती है। क्योंकि द्विस्वभाव राशिस्थ ग्रहों में चर एवं स्थिर दोनों प्रकार के ग्रहों में सम्मिलित गुण पाए जाते हैं। यदि तीनों प्रकार की राशियों में से दो में बराबर की संख्या में ग्रह हो तथा तीसरी प्रकार की राशि में कम ग्रह हो तो अधिक ग्रहों वाली दोनों राशियों के बराबर को देखकर ही जातक के व्यवसाय अथवा नौकरी आदि के संबंध में विचार करना चाहिए। यदि लग्न तथा चन्द्र राशि दोनों अलग-अलग हो तो मिश्रित फल प्राप्त होगा। लग्न पर जिस ग्रह की दृष्टि हो उसका प्रभाव भी दृष्टिगोचर होगा। राशि तथा ग्रहों के बराबर भी फलादेश में अंतर ला देते हैं।

यदि दशम स्थान में कोई ग्रह न हो तो दशमेश के नवांशेश द्वारा धन प्राप्ति के संबंध में विचार करना चाहिए। दशमेश के नवांशेश विभिन्न ग्रहों का फल: यदि सूर्य हो तो व्यवसाय, चिकित्सा, युद्ध कार्य ठेकेदारी से। यदि चन्द्रमा हो तो जलीय पदार्थ, वस्त्र आदि के व्यवसाय से। यदि मंगल हो तो धातु, शस्त्र, मशीनरी से। यदि बुध हो तो लेखन, व्याख्यान, शिल्प से यदि गुरु हो तो धार्मिक अथवा न्याय संबंधी कार्यों से। यदि शुक्र हो तो पशु, वाहन, स्त्री से। यदि शनि हो तो मजदुर, मजदूरी श्रम से धन प्राप्त होता है।

तत्वों के आधार पर आजीविका

यदि अग्नि तत्व की प्रमुखता हो तो जातक उन व्यवसायों में तरक्की करता है, जिनमें बौद्धिक तथा मानसिक क्रियाओं का चमत्कार प्रदर्शित करना आवश्यक होता है। इस तत्व की प्रधानता वाले जातक साहसी, कर्मठ, प्रतिभाशाली तथा यांत्रिक कार्यों से अधिक सफल होते हैं।

जल तत्व की प्रधानता हो तो जातक चंचल-चित्त तथा अस्थिर स्वभाव वाला होता है। वह अपने व्यवसाय को बदलता रहता है और किसी एक काम को जम कर नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति विदेश यात्रा, नौकायान, द्रव पदार्थ आदि के व्यवसायों में सफल होता है।

यदि **वायु तत्व** प्रधान हो तो कलाकार, साहित्यकार, संवाददाता, प्रकाशक, परामर्शदाता, एजेंट के व्यवसायों में सफल होता है।

सूर्य—सब ग्रहों का तेजस्वी सूर्य राजा है। यदि सूर्य व्यवसाय का कारक हो तो जातक उच्च श्रेणी का व्यवसाय करता है। सूर्य का संबंध राज्य से है, उसका संबंध दूरवर्ती स्थान से भी है। ऐसे जातक अधिक पूंजी लगाकर व्यवसाय करता है। जातक शासन अधिकारी या उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है। सूर्य-शनि या राहु से संबंध रखता हो तो चिकित्सक बनता है। यदि सूर्य का संबंध गुरु से हो तो धर्माचार्य, पुजारी आदि होता है।

चन्द्र—जल तत्व प्रधान ग्रह है इससे संबंधित जीविका, पेय पदार्थ, जल, नाविक आदि होती है। चन्द्र का संबंध राहु से होने पर शराब या मादक औषधियां। यदि चन्द्र का संबंध शुक्र से हो तो सुगंध व तेल व्यवसाय। चन्द्र का बुध से संबंध होने पर खाद्य पदार्थ का व्यवसाय होता है। चन्द्र गुरु का संबंध चीनी, मिठाई आदि से होता है। चन्द्र स्त्री ग्रह है, शुक्र, शनि, बुध स्त्री ग्रह से संबंध होने के कारण जातक फिल्म लाइन से जुड़ जाता है। चतुर्थ भाव से चन्द्र का संबंध होने पर जातक नीच कर्म से धन उपार्जन करता है।

मंगल—अग्नि तत्व प्रधान ग्रह है। पराक्रम, हिंसा, कर्मठता, रक्त, मांस आदि का अधिपति है। अतः दशम भाव में मंगल प्रधान व्यक्ति सेना, पुलिस, सर्जन होता है। भूमि पुत्र होने के कारण भूमि, भवन, कृषि कार्य, संपत्ति को किराये पर उठाने से संबंध रहता है। मंगल का संबंध सूर्य के साथ भट्ठा, बिजली का सामान, मंगल का संबंध चन्द्र से होने पर होटल, लॉज, किराये के मकान का व्यवसाय होता है। मंगल लग्न में होने पर चतुर्थेश या एकादश से संबंध होने पर क्रूर कर्मों या चोरी द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

बुध—पृथ्वी तत्व का प्रतीक ग्रह बुध है। व्यापार का नायक है। यदि बुध लग्नेश, सूर्य तथा चन्द्र को प्रभावित करता है। जो जातक अध्यापन कार्य करता है। यदि बुध द्वितीयेश या पंचमेश होकर गुरु से संबंध हो तो जातक वकील, अध्यापक, उपदेशकर्ता होता है। बुध यदि सूर्य से प्रभावित हो तो क्लर्क, लेखाकार, बैंक आदि के पद पर होता है। बुध का शनि, शुक्र से संबंध होने पर वस्त्र विक्रेता, बुध द्वितीयेश के साथ होने पर ज्योतिषी बना देता है। बुध तृतीयेश होने पर विद्वान लेखक या पत्रकार होता है।

गुरु—वायु तत्व प्रधान ग्रह है। यह विद्या, कानून, वित्त, वाणी, राज्य की कृपा आदि का प्रधान ग्रह है। अधिक बली गुरु न्यायाधीश बनाता है। गुरु द्वितीयेश या एकादशेश होकर लग्न और लग्नेश पर प्रभाव हो तो बैंक, किराया, ब्याज, शिक्षक आदि का कार्य हो सकता है।

शुक्र—जल तत्व प्रधान ग्रह है। यह भोग-विलास वाला ग्रह है। इसके प्रभाव से कलात्मक तथा सौंदर्य प्रसाधन वस्तुएं, सुगंध आदि से संबंधित व्यवसाय होते हैं। यदि चतुर्थेश से संबंध हो तो वाहन आदि से संबंधित कार्य होता है। यदि शुक्र लग्नेश, धनेश अथवा गुरु से प्रभावित हो तो जातक जौहरी होता है। शुक्र चतुर्थ चतुर्थेश के साथ चन्द्रमा को प्रभावित करता हो तो जातक कवि होता है।

शनि—वायु तत्व प्रधान ग्रह है। इसका प्रभाव रोग, धातु, मृत्यु, भूमि, पत्थर आदि पर है। शनि मंगल से प्रभावित हो तो इंजीनियर अथवा बिजली का काम करने वाला होता है। शनि से सूर्य व राहु प्रभावित होने पर चिकित्सा कार्य, चतुर्थेश शनि पृथ्वी के अंदर वाले पदार्थ तेल, पेट्रोल तेल, पेट्रोल, कोयला आदि का कारक है। सप्तम से शनि का संबंध हो और लग्न या लग्नेश को प्रभावित कर रहा हो तो व्यक्ति भवन ठेकेदार होता है या उसका व्यवसाय करता है। कम अंश का शनि यदि तुला राशि में हो तो नौकरी करता है।

राहु केतु—छाया ग्रह हैं। इनका पृथक अस्तित्व नहीं है। किसी की दृष्टि या युक्ति होने पर कारकत्व को प्राप्त होते हैं।

दशम भाव में मंगल प्रधान व्यक्ति चुनौतियों को स्वीकार करते हैं। जब तक जीते हैं स्वाभिमान से जीवन व्यतीत कर समाज में त्याग, बलिदान की परंपरा डालकर राष्ट्रीय सम्मान से विभूषित होते हैं। जब सूर्य मंगल के साथ लग्न का स्वामी भी दशम भाव में हो तो निश्चित ही राष्ट्र में सर्वोच्च सम्मान मिलता है।

मंगल के साथ शुक्र की स्थिति कुंडली में हो तो व्यक्ति नाइट क्लब, होटल या मनोरंजन घर, सिने-निर्देशक इत्यादि हो सकता है। उसका विपरीत लिंग वालों से संबंध रहता है।

शुक्र का संबंध राहु अथवा शनि से या सातवें भाव का संबंध राहु या शनि से हो, तब वह व्यक्ति सिने तारिका या कार्यालय में कार्यरत विपरीत लिंगी से विवाह कर जीविका साधन बना सकता है। साथ में यदि पांचवे तथा ग्यारहवें भाव का संबंध भी सातवें भाव से हो तो मनुष्य अन्य जाति में विवाह संबंध स्थापित कर लेता है। कर्म भाव में गुरु स्वराशि का शैक्षिक व्यवसाय का द्योतक है। नवम का स्वामी शनि आयेश का स्वामी मंगल, धनेश चन्द्रमा का लग्न में होना व्यक्ति को प्राप्त होती है। उच्च का शुक्र भाग्य स्थान पर, भाग्येश गुरु की इस पर दृष्टि है जो जातक के लिए भाग्यदायी होगा। भाग्येश में राहु संघर्षशील बनता है। दशमेष मंगल पराक्रम भाव में स्थित होकर भाग्यदेश को अधिक संघर्षमय बनाता है। तुला लग्न के व्यक्ति निर्माण क्षेत्र में अग्रणी होते हैं। दशम पर चन्द्र की पूर्ण दृष्टि, शनि, चन्द्र की दृष्टि, गुरु, सूर्य, मंगल, बुध, चन्द्र की दृष्टि विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से संपर्क कराकर कॉलोनी का ठेकेदार बना देती है। यदि हम संपादन से जुड़ी एक महिला की कुंडली देखें तो हम पाएंगे कि इस महिला का दशम का स्वामी लग्न में हैं, चन्द्र, सूर्य, बुध पद के कारक ग्रह हैं, मंगल का संबंध कागज से है। इस कारण यह संपादक स्थायी तौर पर पत्रिका या लेखन कार्य से जुड़कर आय करती रहेगी।

केतु, चन्द्र, मंगल की दशम पर दृष्टि, नवमेश दशम में होने से दशम का संबंध, बुध, सूर्य, चन्द्र, मंगल, केतु से होने पर जातक औषधि संबंधी कार्य या मसालें आदि का व्यापार कर सकता है। शुक्र और शनि की दृष्टि से स्त्री के प्रति कुविचार एवं द्वितीय भाव का स्वामी सप्तमेश भी माफिया गिरोह से संबंध स्थापित करता है। लेखन द्वारा धन की प्राप्ति की संभावना जब रहती है अगर दशम का स्वामी बुध भाग्य के स्थान पर हो। दशम में सूर्य हो, व्ययेश कर्म भाव में हो। सूर्य से दशम में गुरु हो। गुरु से लेखन, बुध से गणित, सूर्य से ज्योतिष, मंगल से वैद्यक, केतु से तंत्र, शनि से योग, चन्द्र शुक्र से कामकला का संबंध है। इस कुंडली में जल तत्व राशि का प्रभाव ज्यादा होने के कारण शुक्र की दशा में किसी स्त्री के सहयोग से या स्त्री के धन से विदेश व्यापार भी कर सकते है। दशम मे भाग्येश हो या वह लग्न से दशमेष का संबंध हो या सुख में शुक्र गुरु हो, नवम में सुखेश हो वे अस्तगत तथा नीच राशि में न हों एवं लग्न में दशमेश हो या वह लग्न को देखता हो तो सत्ता प्राप्ति योग होता है। चतुर्थेश की दशा तथा अंतर्दशा में चतुर्थेश की अधिष्ठित राशि के स्वामी की दशा में दशमस्थ ग्रह की अंतर्दशा आने पर मनुष्य सत्तासीन होता है। कर्क लग्न के व्यक्ति अत्यन्त साहसी और कर्मठ होते हैं। सुखेश चन्द्र मंगल तुला राशि के होने के कारण निरंतर निर्माण कार्य कराते हैं। मंगल दशम का स्वामी होकर सुखेश में बैठा है। सूर्य सप्तम में समाज-सेवा के क्षेत्र में अग्रणी बना देगा। भाग्य स्थान स्वराशि गुरु से परेशानी के समय स्वयं सहायता प्राप्त होती रहेगी। केन्द्र के शुभ ग्रह विशेष तौर पर गुरु सब प्रकार की विघ्न-बाधाओं को हर लेता है।

– डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल
हुसैनी बाजार, चन्दौसी-202412

राहु का मानस पर विलक्षण प्रभाव

लेखक--
डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल

पौराणिक कथा के अनुसार विप्रचित और सिंहिका का पुत्र दैत्य राहु कहलाता है। उसके चार भुजाएं और एक पूंछ थी। पुराणों में उसकी अत्यन्त रोचक कथा आती है। जब देव और दैत्य समुद्र मंथन कर चुके, तब देवता अमृतपान करने चलें। दैत्य अलग रहे, मगर राहु अपना देव वेश धारण कर देवताओं की पंक्ति में जा बैठा और कुछ अमृत पी लिया। तभी सूर्य और चन्द्रमा ने उसका भेद जानकर विष्णु से कह दिया। विष्णु ने तत्काल उसका मस्तक और दो भुजाएं चक्र से काट डाली, परंतु अमृतपान करने के कारण वह मारा नहीं जा सका, अमर हो गया। तब उसे तारा मंडल में स्थान मिला और उसका मस्तक राहु और धड़ केतु कहलाया। सूर्य और चन्द्रमा के प्रति अपना विद्रोह वह विस्मरण नहीं कर सका। जिससे समय-असमय वह उन्हें ग्रास लिया करता है और इस आचरण के कारण ही सूर्य और चन्द्र ग्रहण होते हैं।

भारतीय ज्योतिष में राहु को ग्रह माना गया है। वास्तव में यह आकाश में पिंडीय ग्रह नहीं है मात्र सूर्य की छाया है। राहु को दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) दिशा का लोकपाल भी कहते हैं।

किसी भी वस्तु या पदार्थ की गति देकर फिर गतिहीन कर देना, कार्य शुरू करके पुनः छोड़ देना, ऐसे भावों का प्रतिनिधित्व राहु करता है। घबराहट, उलझन, असमंजस, समस्या आदि भाव इसमें निहित हैं। वह शक्ति, प्रचंडता, उत्तेजना, आवेश, हिंसा आदि भावों की अभिव्यक्ति भी करता है। राहु को मानसिक उत्तेजना, कामनाओं व लालची प्रवृत्ति के कारण अनेक बाधाओं व कष्टों का सामना करना पड़ता है, एकाकी जीवन अच्छा लगता है। शुभ प्रवृत्ति होने पर धर्म में सहिष्णु, परोपकार में तत्पर, नम्र एवं ऊंचे उठने की इच्छा होती है।

राहु मोक्ष, आकस्मिक धन, खोई हुई वस्तु, गुप्तधन, राजनीति, उच्चपद, विदेश-यात्रा, काना व्यक्ति, नाखून, खोटा सिक्का, तीक्ष्ण बुद्धि व पितामह का कारक है। राहु के प्रभाव में अवसरवादी, निम्नस्तरीय, प्रेत-पिशाच व क्रूर स्त्रियां रहती हैं।

राहु सर्वाधिक बली होने पर व्यक्ति के जीवन पर 42 से 48वें वर्ष में विशेष प्रभाव डालता है। यदि इस अवधि में दशा व अन्य ग्रह भी अनुकूल हो तो सर्वाधिक उन्नति होती है।

राहु की रूचि गुप्त विधाओं, राजनीति, विद्युत, यांत्रिक, जासूसी एवं आंदोलनों में होती है। राहु ग्रह से प्रभावी व्यक्ति यांत्रिक, पहलवान, जासूस, तांत्रिक, दार्शनिक, नेता, राजनीतिज्ञ, चोर, हत्यारा, जेलर, जल्लाद एवं दंगाई होता है। प्राणायाम और व्यायाम में शांति मिलती है।

राहु हमारी अपूर्ण एवं भ्रमित बुद्धि का भी प्रतिनिधित्व करता है। राहु के प्रभाव से हमारी इच्छाएं जो पूरी होने में सक्षम नहीं है, हमारे अचेतन मन में रहती हैं। कुंडली में राहु की स्थिति देखकर बताया जा सकता है कि जीव इच्छाओं के प्रति कितना भ्रमित है। इसका मन कितना अशांत है। यदि राहुं 3, 6, 11 स्थानों में आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा नक्षत्र पर स्थित हों तो अत्यन्त शुभ होते हैं तथा धन कारक भी। यदि गुरु, बुध, शुक्र से दृष्ट हों तो अच्छा शुभ प्रभाव दिखाते हैं और इच्छाओं पर नियंत्रण रख सकते हैं। ऐसी स्थिति में राहु रचनात्मक सृष्टि करता है। साधना, ध्यान, सिद्धि के लिए राहु का प्रभाव बहुत ही अनुकूल रहता है। जीवन का ध्येय या इष्ट सिद्धि में लाभकारी है। जिनकी पत्रिका में कालसर्प योग होता है। उन्हें कुंडलिनी शक्ति जाग्रत करने में सहायता मिलती है। राहु स्त्री ग्रह है अतः स्त्रियों में अधिक प्रभावी है। इसी कारण से पुरुष की अपेक्षा स्त्रियां अधिक पूजा-पाठ में विश्वास रखती हैं। राहु संतान देने में सक्षम है। राहु अपने घर से 5, 7, 9 और 12 भावों पर पूर्ण दृष्टि रखता है। राहु शनि की भांति 3, 7, 10 भावों को भी हल्की दृष्टि से देखता है। पृथ्वी को पुराणों में शेषनाग के फन पर स्थित होने का कारण भी यही है कि पृथ्वी पर राहु का प्रभाव अधिक माना गया है। राहु की किरणों का प्रभाव बहते जल पर नहीं पड़ता है। अतः नदी, झरणों का स्नान लाभकारी है। राहु और केतु ग्रह में से दोनों ग्रह एक साथ खराब नहीं होते यदि राहु खराब है तो केतु अवश्य अच्छा जावेगा।

सन् 1950 के आसपास कॉस्मिक केमिस्ट्री का जन्म हुआ। जिसको **'ब्रह्माण्ड रसायन'** भी कह सकते हैं। इस विज्ञान का जन्मदाता जियाजारजी गिआरडी है। इसने प्रयोगशाला में अनन्त प्रयोगों को करके यह दिखाया कि पूरा जगत एक 'ऑर्गेनिक यूनिटी' है। पूरा जगत एक शरीर में भी स्थित है। यदि शरीर के किसी भाग को भी रूग्णता आती है तो संपूर्ण शरीर पर बैचेनी या रूग्णता आ जाती है।

कॉस्मिक केमिस्ट्री में मुख्य माध्यम पानी है जिसे हम ईथर (तरल पदार्थ) भी कह सकते हैं। वायुमंडल में [illegible] होने के कारण पशु-पक्षी, कीट सभी एक साथ प्रभावी होते हैं। ब्रह्माण्ड की एक भी हलचल होने पर किस प्रकार प्रकृति में छोटे से छोटे कीट प्रभावी होते हैं। जैसे बहुत सी दुर्घटना होने से पूर्व बिल्ली-कुत्ता जोर-जोर से रोने लगता है। वर्षात आने से पूर्व चींटी अपने अंडों को सुरक्षित स्थान ले जाती है। भूकंप आने पर पहाड़ी चिड़ियों में विशेष बैचेनी हो जाती है तथा अक्सर गांव खाली कर देती है। यह सब अतिन्द्रिय ज्ञान के अंतर्गत है। इसका कारक भी राहु है।

ज्योतिष की एक गहनतम पकड़ है वह है आपके अतीत को खोलने की। अगर आपका अतीत खोल दिया जावे तो आपका भविष्य अतीत के हिसाब से जन्मेगा। आधुनिक विज्ञान टाईम ट्रेक से पुरानी सभ्यताओं की खोज अंतरिक्ष में कर रहे हैं। टाईम ट्रेक एक रहस्यमयी जिज्ञासा है। जिसका स्मरण करने से हमारा गया हुआ रोग पुनः वापिस आ जाता है। ज्योतिष के हिसाब से दमा रोग नहीं है। बल्कि पूर्वजन्म की किसी घटना की स्मृति का स्मरण है। यही कारण है कि होमियोपैथी में पूर्व घटनाओं की गहरी खोज-बीन की जाती है। पूर्व लक्षण, मौसम, वातावरण, मानसिक लक्षण आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

राहु प्रभावी व्यक्ति को वायु-विकार, शरीर के विभिन्न अंगों में दर्द, रक्ताल्पता, मानसिक बीमारियां एवं त्वचा रोग होने की विशेष संभावना रहती है। इनको दमा, प्रमेह, संक्रामक रोग एवं मौसमी बीमारियां परेशान कर सकती है तथा बवासीर, हाथ-पैरों में सूजन, गण्डमाला, कुष्ठ, सर्पदंश, विष एवं हृदय विकार भी हो सकता है। सींग वाले जानवरों और जहरीले कीड़े-मकोड़ों से सावधान रहना चाहिए। यात्राओं में दुर्घटना का भय रहता है। अतः अनियमितताओं से बचकर रहें। भोजन समय पर लें। सूर्य और राहु कमजोर हों तो हृदय दौर्बल्य, कष्ठ, मानसिक व स्नायुविक उत्तेजना, विषैले कीटाणु से उत्पन्न रोग, अपस्मार मसूरिका, कृमिरोग, अरुचि, गंजापन, लकवा, मिर्गी, गठियां, कानदर्द, सन्निपात व रक्तविकार आदि रोग हो सकते हैं।

राहु का मंगल के साथ संबंध हो तो व्यक्ति अविवेकी, चिड़चिड़ा, आलसी और कामुक होता है। शुक्र के साथ संबंध होने पर चंचल, अस्थिर और विलासी होता है। बुध से संबंध होने पर चतुर गायक, विवेकी, वाकपटु, स्वाभिमानी एवं संगीत प्रेमी होता है। चन्द्र से संबंध होने पर भावुक, संकीर्ण मनोवृत्ति वाला, यात्रा

का शौकीन होता है। सूर्य से संबंध होने पर चतुर, विचारक, संतान चिंता व राजदंड का भय रहता है। गुरु से संबंध होने पर सात्विक एवं शांत-वृत्ति वाला, विचारक व विशिष्ट संकल्पों से युक्त होता है। शनि से संबंध होने पर जातक मितव्ययी, मित्रद्रोही, आत्मचिन्तक, लेखक, लोकप्रिय व उपदेशक होता है।

राहु से प्रभावी व्यक्ति के दांत, होंठ से बाहर निकले रहते हैं। राहु वृष राशि में उच्च, वृश्चिक में नीच स्थिति होती है। कुंभ और मेष में मित्रगृही होता है। उच्च राशि में धन की आय और सरकारी कर्मचारीगणों से दोस्ती होती है। नीच राशिगत स्थिति में विष, अग्नि, चोर और फांसी का भय रहता है। पाप क्षेत्रगत राहु की महादशा में शरीर कमजोर रहे, परिजनों में किसी की मृत्यु हो, रोग हो तथा धूर्तों से ठगे जावें।

उच्च ग्रह के साथ राहु होने से कुभोजन मिलता है और पुत्र संगत खराब होती है। शुभग्रह से राहु दृष्ट हो तो राज्य सम्मान और बंधुजनों की मृत्यु होती है। पापग्रह की दृष्टि यदि राहु पर हो तो जातक रोगी रहे। उद्योगों में श्रमिकों की समस्या रहे। नौकरी छूटे, अग्नि भय रहे। दशम भाव का राहु व्यक्ति को पुत्र से अंतिम समय बिछोह कराता है अर्थात् मृत्यु के समय उसका अंतिम संस्कार नहीं कराता, हो सकता है दूर या परदेशगामी हो। राहु की सबसे मौलिक उपलब्धि है कि राहु मंत्र की उपासना करने से प्रत्येक प्रकार से रोग दूर हो जाते हैं। राहु की उपासना में जौ, पीली सरसों, गोमूत्र तथा गोमेद रत्न सबसे अधिक जरूरी है।

पत्रिका में कालसर्प योग एक राहु से बनने वाला योग है। इस योग का नाम सुनते ही अच्छे से अच्छे ज्योतिषाचार्य के छक्के छूट जाते हैं। क्योंकि पत्रिका का अत्यन्त गंभीर विषय है–इस लेख में विस्तृत वर्णन करना संभव नहीं है। परंतु संक्षिप्त में कालसर्प योग से राहु लग्न से छठे घर तक रहेगा और केतु सातवें घर से बारहवें घर तक रहेगा और समस्त ग्रह इन दोनों के बीच में रहेंगे। यह योग काल के गर्भ में किसी घटना के छिपे होने का संकेत देता है। इस योग वाले कठिन परिस्थितियों में कठिनाइयों का सामना करते हुए उच्च पद पर आसीन होते हैं तथा अचानक धन लाभ से लाभान्वित होते रहते हैं। श्रेष्ठ अधिकार प्राप्त करते है। शादी के बाद अच्छी तरक्की करते हैं, 40 या 42 वर्ष की उम्र के बाद विशेष उन्नति की ओर अग्रसर होते है। धार्मिक भावना से प्रेरित रहता है। स्वप्न में पानी, मंदिर, सर्प, पुराने किले, महल, खजाने इत्यादि का दिखाना उनमें भ्रमण करना आदि दिखाई देते है।

इसके अतिरिक्त निम्न तीन योग भी कालसर्प योग कहलाते हैं–(1) पत्रिका में शनि छठें भाव में राहु आठवें स्थान पर या राहु शनि की दृष्टि में हो या बारहवें भाव में शनि हो तो सर्पयोग बनता है। (2) पत्रिका में राहु-शनि चौथे भाव में या सातवें भाव या अष्टम भाव में हो तो सर्प योग बनता है। (3) राहु शनि से षडाष्टक योग बनता हो तो भी सर्पयोग बनता है। सर्पयोग से संबंधी सभी व्यक्तियों को **'ॐ नमः शिवाय'** मंत्र से दूध चढ़ावें या महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें। त्रिपिण्डी श्राद्ध या नाग नारायण बली श्राद्ध करें।

पश्चिमी वैज्ञानिक न्यूटन जो ज्योतिष का भी जानकार था, उसने एक प्रिज्म लिया जिसका आधार समबाहु त्रिभुज जैसा होता है और इसके फलक आयताकार होते हैं। प्रिज्म में से जब सफेद प्रकाश की किरणें गुजरती हैं तो उनमें से सात रंग की किरणों के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं इनमें लाल रंग जो सबसे ऊपर थी सबसे कम मुड़ती है और बैंगनी किरणें मुड़ जाती हैं, उसी समय दो अदृश्य किरणें भी निकलती हैं उनमें से एक अदृश्य गहरी नीली तथा दूसरी अदृश्य लाल भी न्यूटन ने प्रिज्म की सहायता से देखी थी, राहु की रश्मियां अदृश्य बैंगनी हैं। इन किरणों को वैज्ञानिक भाषा में एल्फा, बीटा और गामा किरणें कहते हैं। इनमें से दो किरणें एक्सरे मशीन में मनुष्य की आंतरिक संरचना देखने के काम आती है। बीटा किरणें मस्तिष्क की निर्णयात्मक शक्ति को समाप्त कर देती हैं और एल्फा किरणें चोटी के पास शिरोभाग, ह्रदय स्थान, किडनी एवं प्रजनन अंगों पर प्रभाव डालता है।

लेकिन तीसरी गामा किरणें जिनका संबंध राहु से है जो कि अदृश्य बैंगनी हैं। ये अदृश्य किरणें हमारे वातावरण में निरंतर परिवर्तन लाती हैं। वास्तव में सभी किरणें भूमंडल तक नहीं पहुंच पाती हैं। पृथ्वी का ऊपर का भाग इन्हें रोक लेता है। वास्तव में यह अदृश्य किरणों के अनुरूप देवता भी हमें अदृश्य का विधान बताते हैं लेकिन भारतीय ज्योतिष के मर्मज्ञों ने कर्मकांड और उपासना से इस समस्या का हल प्राचीनकाल में ही खोज लिया था।

यह अदृश्य किरणें मनुष्य पर गुप्त रूप से प्रभाव दिखाती है। ठीक उसी प्रकार प्रभावी ग्रह राहु भी गुप्त कार्य करता है। इससे संबंधित गुप्तचर विभाग, प्रेम-विवाह, ज्योतिष, अनुसंधान कार्य, पेट में अपचन, वायु दर्द, बहु विवाह, सभी प्रकार के वायरलैस, सर्प, विषैली गैसें, विषैले जंतु, अंधेरा, नारियल, बाजरा, मूली, गोमेद, वैज्ञानिक, नये अनुसंधान, शराब, अंडा, सपेरा, अन्वेषक, भंगी, मांस, ऊंट, अश्व, खटमल, ऊसर कपोत भूमि, सफेद चन्दन, तंत्र शास्त्र, सिंघाड़ा, गारुडी विद्या, तकनीकी विद्या, स्टेशनरी, दूर्वा, अंकुरित जौ, कोयला, पतलून, शीशा, रांगा, दादा-परदादा, नैर्ऋत्य दिशा, सीढ़ियां, पुराने खंडहर, धुंआ, त्वचा व रक्त संबंधी रोग, रक्त कैंसर, बवासीर, हाथ-पैर में सूजन, संक्रामक रोग (एड्स), गंडमाला, कुष्ठ, ह्रदय विकार, विष द्वारा विकार आदि वस्तुएं इसी ग्रह से संबंध रखती है। किसी भी रोग के समय उपरोक्त से संबंधित दान-संबंधी वस्तु को दान करना चाहिए या बिल्कुल प्रयोग करना छोड़ देना चाहिए। अन्यथा यह गामा किरणें छोटी कोशिका की झिल्ली को हानि पहुंचाती रहती है। रक्त कैंसर की तो जननी है। आधुनिक युग में चकाचौंध जिसने जगत के सभी प्राणियों को भ्रमित कर रखा है, सब पर मानसिक छाप छोड़ता है वह है ग्लैमर। चाहे फिल्मी जगत हो चाहे नेताओं के स्वागत के समय सजावट का हो यह सब राहु की प्रमुख देन है। जिसका मानसिक प्रभाव ही हमारे व्यक्तित्व पर छाप डालता है।

राहु की शांति के लिए हमारे ऋषियों ने बहुत सारे कल्याणकारी उपाय बतायें, जिनमें सबसे प्रमुख यंत्र धारण। राहु से संबंधित वस्तुओं का दान क्योंकि सम विद्युत आयन एक दूसरे को परे धकेलते हैं। इसी कारण हमारे शरीर में (+) या (-) विद्युत जो भी अधिक हो दान द्वारा संतुलन हो जाता है। मनुष्य के अंदर ब्रह्माण्ड में स्थित प्रभावशाली किरणें मनुष्य के शरीर में प्रवेश हो चुकी है। राहु और केतु की दशा तथा अंतर्दशा में रोग की सही स्थिति का परीक्षण नहीं हो पाता, न ही आधुनिक उपकरणों से मानसिक ह्रास का पता चलता है। उस समय मात्र शुद्ध पीली/सफेद सरसों, अपामार्ग को कूटकर पानी में मिलाकर स्नान करने से अचानक लाभ होता है। इसके उपरांत जौ का अधिक से अधिक मात्रा में दान करना चाहिए तथा नदी के किनारे बोना चाहिए। सबसे अधिक कारगर उपाय जो रावण संहिता में बताया गया है कि भगवती सरस्वती की उपासना ही परम कल्याणकारी है। आकाश और समुद्र के नीले रंग का स्वामी राहु है। जिसकी सहायता विवेक रूपी सरस्वती करने लग जावें। उसके सम्मुख सभी का सिर आदर से झुक जाता हैं क्योंकि विवेक और राहु दोनों का निवास स्थान मस्तिष्क है। ज्योतिष किसी अत्यन्त विकसित सभ्यता के द्वारा अति-विकसित विज्ञान है। सभ्यतायें खोती रहती हैं। इतः इस अति गंभीर विषय पर पुनः अनुसंधान की आवश्यकता है क्योंकि ज्योतिष का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष वैज्ञानिक चिंतन है।

– डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल
चक्रपाणि हर्बल रिसर्च फाउंडेशन
श्रीधाम, हुसैनी बाजार, चन्दौसी-202412
फोन:-9412140444, 9837823450
E-mail : chakrapanikp@yahoo.co.in

 पृष्ठ 14 का शेष

17 से 27 मई 2015 तक पिपरमेंट में 575 रुपये प्रति किलो पर मंदी, 27 मई 21 जून तक पिपरमेंट में 75 की तेजी, 21 जून 2015 से 11 अगस्त 2015 तक पिपरमेंट में 155 की मंदी। 27 मई से 6 जून 2015 तक, हल्दी, कालीमिर्च, मूंग, उड़द 115 तेजी, जायफल, बड़ी इलाइची 75 की तेजी, मसूर में 500 तेजी। चना में अच्छी मंदी आ सकती है।

3 जून 2015

(आषाढ़ मास में 5 बुधवार होने से)

2 से 19 जून 2015 तक काबुली चना 450 तेज, लालमिर्च 909 तेज, गेहूं में 65 की तेजी तो दालों व सौंफ में मंदी, हल्दी, तुअर में मंदी आ सकती है। 12 से 19 जून 2015 तक, सौंठ 2005 की भारी तेजी, इमली 500 तेज, अमचूर 1575 तेज, छुआरे 500 तेज, किशमिस 1501 तेजी, जावित्री 250 तेजी, चाय 25 तेजी, तो हल्दी, जीरा में मंदी।

सौंफ में 2500 की मंदी आ सकतीहै। 21 जून 2015 से 2 जुलाई 2015 तक सुपारी 45 तेज, इमली 275 तेजी, अमचूर 1500 तेजी, जावित्री 50 तेजी, तो लौंग 75 रुपये किलो की मंदी, मगज तरबूज 700 मंदी, छोटी इलाइची 175 की मंदी। तो बादाम, काबुली चना, देशी घी में तूफानी तेजी। दालों में मंदी तो गुड़ में अच्छी मंदी। 25 जून 2015 से 3 जुलाई 2015 तक छोटी इलाइची 175 मंदी, जावित्री, सौंफ, जायफल में भारी मंदी आ सकती है। लालमिर्च 1575 की जोरदार मंदी आ सकती है। तो रुई, जीरा में तेजी बन सकती है।

3 जुलाई 2015

(द्वि. आषाढ़ मास में 5 गुरुवार होने से)

3 जुलाई 2015 द्वितीय आषाढ़ मास में 5 गुरुवार होने से–2 से 9 जुलाई 2015 तक, गेहूं 45 तेजी, राजमां 500 तेजी, अरहर 175 तेजी, बिनौला 275 तेजी, जीरा 1709 की तेजी, शक्कर 65 तेज, तो काबुली चना में मंदी आ सकती है। कालीमिर्च में भारी तेजी आ सकती है। तो पिपरमेंट में भारी मंदी आ सकती है। 9 जुलाई 2015 से 1 अगस्त 2015 तक अरहर 155 मंदी, आमचूर 1500 की मंदी, गेहूं 65 की मंदी आ सकती है। चावल में अच्छी तेजी बन सकती है। 9 से 18 जुलाई 2015 तक गेहूं 65 मंदी, चीनी 175 मंदी, बाजरा 45 मंदी चना 165 की तेजी, गुड़ 75 की तेजी। देशी घी में मंदी आ सकती है। 15 जुलाई 2015 से 11 सितंबर 2015 के गुवार में भयंकर तेजी। 18 जुलाई 2015 से 3 अगस्त 2015 के बीच मूंग 275 की मंदी, हल्दी 700 ...

मंदी, इलाइची मंदी, मक्का 135 तेजी, किशमिस 1199 की भड़कती तेजी, लौंग तेजी, चना 275 तेजी आ सकती है।

चन्द्र मास में 5 वार होने से तेजी-मंदी भविष्य

27 मार्च 2015 से 15 अप्रैल 2016 तक धनिया 707 तेजी तो 5 मई 2014 तक धनिया में 505 की मंदी 7 से 21 मई धनियां 701 की मंदी तो 7 जून 2015 से 7 जुलाई 2015 तक धनिया में 1175 की तूफानी तेजी चलने की संभावना है।

1 अगस्त 2015

(श्रावण मास में 5 शनिवार होने से)

29 जुलाई 2015 से 9 अगस्त 2015 तक अरहर 255 तेज, लौंग, बादाम तेज, चावल तेज, जीरा तेज, चना तेज, मगर धनिया में 700, हल्दी में 700 की मंदी, शक्कर मे 25 की तेजी, राजमा में 500 की तेजी, काबुली चना में 700 की तेजी आ सकती है। 11 अगस्त 2015 से 23 अगस्त 2015 तक मूंग 500 तेज, मटर 50 तेज, बड़ी इलाइची 99 तेज, शक्कर में 50 तेजी, गेहूं में 45 की तेजी आ सकती है। लालमिर्च में 2500 की तेजी, काबुली चना में 500 की तेजी, धनिया 700 तेज, मसेर दाल 500 तेज, शक्कर 75 तेज, जीरा में 2500 की तेजी, लौंग में 45 की तेजी, किशमिस मे 800 तेज, बादाम में 500 की मंदी आ सकती है। 23 से 31 अगस्त 2015 तक अरहर 500 तेज, मूंग में 700 की तेजी, चीनी मे 55 की तेजी, छुहारा में 500 तेजी, जीरा तेज, राजमा 150 तेज, काजू तेज, लौंग 175 तेज, धनिया 700 तेज, कलोजी में 700 तेजी आ सकती है। 25 मई 2015 से 5 जून 2015 तक हल्दी में 1500 की भड़कती तेजी आ सकती है। तो एक माह बाद हल्दी में 2500 की भीषण मंदी आ सकती है।

30 अगस्त 2015 को भाद्रपद मास में 5 सोमवार होने से 29 अगस्त 2015 से 12 सितंबर 2015 तक लौंग 75 तेज, छुहारा 500 तेज, कालीमिर्च 1500 तेज, काबुली चना 500 तेज, मगज तरबूज 400 तेज, जायफल 75 तेज, बादाम 200 तेज, जीरा 1500 तेज, देशी चना 250 तेज, चावल 75 तेज, मक्का 45 तेज, बाजरा 45 तेजी, मूंग, उड़द, मोठ में मंदी आ सकती है। सोयाबीन में 500 की मंदी आ सकती है। 14 से 21 सितंबर 2015 तक काबुली चना 250 तेज, बाजरा 45 तेज, बड़ी इलाइची 150 तेज, लौंग 25 तेज, मगज तरबूज 50 तेज, साबुदाना तेज, काजू तेज, हल्दी में 300 मंदी, पोस्तदाना में मंदी, मसूर में 500 की मंदी, अरहर में 50 की मंदी, गेहूं में 25 की मंदी, छोटी इलाइची 25 की मंदी, देशी घी में मंदी, सुपारी 25 तेज आ सकती है। 23 अगस्त 2015 से 25 सितंबर 2015 तक ...

सकती है। 24 जुलाई 2015 से 21 अगस्त 2015 तक कॉपर में 35 की मंदी आ सकती है। तो बाद में एक माह में 51 की तेजी आ सकती है।

28 सितंबर 2015

(अश्विन मास में 5 सोमवार होने से)

30 सितंबर 2015 तक सोने में भारी तेजी, मगज तरबूज में भारी तेजी, बाजरा में 65 की मंदी, जीरा में 1500 की मंदी, धनिया में 700 की मंदी, छोटी इलाइची 175 की मंदी, चीनी में 165 की मंदी आ सकती है। 1 से 11 अक्टूबर 2015 तक सोने में भारी तेजी, छुहारे में तेजी, उड़द में 175 की तेजी, चावल में 175 की मंदी, लालमिर्च में 2500 की मंदी आ सकती है। 17 अक्टूबर 2015 से 25 अक्टूबर तक चीनी 75 तेज।

28 अक्टूबर 2015

(कार्तिक मास में 5 बुधवार)

अक्टूबर 2015 तक गुवार में 1500 की मंदी आ सकती है। 21 अक्टूबर सें 21 दिसंबर 2015 तक के बीच क्रूड आयल में 900 की भयंकर तेजी आ सकती है। 25 अगस्त से 27 सितंबर 2015 के बीच धनियां में 2575 की जोरदार तेजी चल सकती है। तो बाद में धनियां में भारी मंदी आ सकती है। लेख में तेजी-मंदी कई तरीकों से लिखी गई है। जो एक विधि की तेजी-मंदी सही मिल रही हो उसी एक विधि को इस्तेमाल करें।

26 नवंबर 2015

(मार्गशीर्ष मास में 5 गुरुवार होने से)

21 नवंबर 2015 से 31 अक्टूबर 2015 तक लालमिर्च में 3000 की प्रचंड मंदी। 7 से 21 दिसंबर 2015 तक अरहर में 500 की तेजी, मटर 250 तेज, मसूर में 250 तेज, चना 150 तेजी आ सकती है। 15 दिसंबर 2015 से 31 दिसंबर 2015 अरहर में 405 की तेजी, 23 नवंबर 2015 में 9 दिसंबर 2015 तक हल्दी में 1900 की तेजी तूफानी बन सकती है।

26 दिसंबर 2015

(पौष मास में 5 शनिवार होने से)

21 दिसंबर 2015 से 15 जनवारी 2016 तक हल्दी में 999 की धमाकेदार मंदी। 27 दिसंबर 2015 से 11 जनवरी 2016 तक

गुड़ 75 तेज, मूंग 250 तेज, मगज तरबूज 25 तेज, मक्का 45 तेज, बड़ी इलाइची 150 तेज, बाजरा 45 तेज, चिरौंजी तेज, चीनी 165 तेज, जीरा 150 तेजी आ सकती है। सोठ 500 मंदी, हल्दी 200 मंदी, तिल्ली 999 मंदी, चावल 200 मंदी, लालमिर्च 1500 मंदी, मसूर 700 मंदी, गेहूं 45 मंदी, उड़द 500 मंदी, काबुली चना 500 मंदी, छोटी इलाइची 45 मंदी आ सकती है। 12 जनवरी 2016 से 18 जनवरी 2016 तक काबुली चना 500 तेज, उड़द मंदी, हल्दी मंदी, बड़ी इलाइची मंदी, चिरौंजी, पिस्ता तेज, सुपारी तेज, पिस्ता 50 तेज, गुड़ 75 मंदी, मगर चीनी 75 तेजी आ सकती है।

25 जनवरी 2016

(माघ मास में 5 सोमवार होने से)

19 जनवरी 2016 से 31 जनवरी 2016 तक अरहर 175 तेज, लौंग में 45 तेज, उड़द, मूंग में अच्छी तेजी, मसूर में तेजी, शक्कर में 65 तेज, बादाम तेज, चना तेज, राजमा 600 तेज, गेहूं तेज, चावल 45 मंदी कालमिर्च 2500 मंदी, सोठ 1500 मंदी आ सकती है, बादाम में 300 तेजी, किशमिस 250 तेजी, रुई में तेजी, काबुली चना 250 तेज, चिरौंजी, पिस्ता तेज, अरंडी 250 मंदी, गुवार तेजी में 1500 की।

23 फरवरी 2016

(फाल्गुन मास में 5 मंगलवार होने से)

23 फरवरी 2016 से 8 मार्च 2016 तक जीरा 500 तेज, बड़ी इलाइची 150 तेज, बाजरा 45 तेज, जाबित्री 50 तेज, लालमिर्च एवं हल्दी में मंदी, चीनी मंदी, मक्का मंदी, जायफल तेज, धनियां, चिरौंजी तेज, लौंग में 50 मंदी, काजू 25 तेज, बादाम तेज, अजवाइन, सौंफ, सोठ, केसर में मंदी, चावल 150 तेज, कालीमिर्च में तेजी आ सकती है। 15 मार्च 2016 से 9 अप्रैल 2016 हल्दी 2100 तेज, पिपरमेंट में 250 भड़कती तेजी आ सकती है। गुवार में 3000 की भड़कती तेजी, गेहूं में 165 की मंदी आ सकती है। 17 मार्च 2016 से 9 अप्रैल 2016 तक चीनी में 275 की तेजी, गुड़ में तेजी, सोने में 3000 प्रति तोला की तेजी हो सकती है। 27 मार्च 2016 से 5 मई 2016 तक जौ में 500 की भड़कती तेजी आ सकती है। 17 मार्च 2016 से 25 अप्रैल 2016 तक चांदी में 7000 प्रतिकिलो की तेजी आ सकती है। 27 फरवरी 2016 से 2 मार्च 2016 तक काबुली चना, लालमिर्च, सोठ में भारी तेजी आ सकती है। अजवायन, मसूर में मंदी आ सकती है। एवं बड़ी इलाइची में तेजी आ सकती है।

24 मार्च 2016

(चैत्र मास में 5 गुरुवार होने से)

21 मार्च 2016 से 23 अप्रैल 2016 तक कालीमिर्च 1500 तेज, लौंग में 65 तेजी, पोस्तदाना तेज, सुपारी तेज, मगज तरबूज तेज, गुड़ तेज, बड़ी इलाइची तेज, मखाना तेज, सोठ एवं लालमिर्च में 1500 की मंदी, आमचूर में 2000 की भयंकर तेजी आ सकती है। 6 मार्च 2016 से 25 अप्रैल 2016 तक चांदी 9000 की भयंकर तेजी, सोने में 4000 की तेजी।

12 फरवरी 2016 से 4 अप्रैल 2016 के मध्य कभी भी मैंथा पिपरमेंट में 500 से 1100 की तेजी। 27 मार्च 2016 से 27 जून 2016 के बीच पिपरमेंट में 700 की भयंकर मंदी आ सकती है। कभी-कभी एक ही Period में कुछ ग्रहों की Position मंदी कुछ Position तेजी की तो इस लेख में एक जगह मंदी, आगे उस Period में मंदी लिखी हो तो बाजार का रुख देखकर व्यापार करें।

23 अप्रैल 2016

(वैशाख मास में 5 शनिवार होने से)

11 से 25 अप्रैल 2016 उड़द 500 तेज, हल्दी 500 तेज, बड़ी इलाइची, चिरौंजी में तेजी, छोटी इलाइची में 500 की तेजी, इमली में मंदी, कालीमिर्च में तेजी, काबुली चना में भयंकर 500 की तेजी, लालमिर्च में मंदी, चावल में भयंकर मंदी। 5 से 20 अप्रैल 2016 तक कॉपर में 45 की जोरदार मंदी आ सकती है।

22 मई 2016

(ज्येष्ठ मास में 5 रविवार होने से)

6 से 26 मई 2016 तक काबुली चना में 250-300 की मंदी, मसूर में 150 की मंदी तथा सौंफ में 250 की मंदी, मूंग-मसूर में 505 की मंदी चल सकती है। 17 जून 2016 से 5 जुलाई 2016 तक अरहर में 300 की तेजी। 27 जून 2016 से 19 अगस्त तक पिपरमेंट मेंथा में 500 की तेजी आ सकती है।

तेजी— चावल में 200-250 की तेजी, सोयाबीन, मूंगफली, सूरजमुखी, डीओसी में 300-400 की तेजी, गेहूं में 300 की तेजी, घी में 50-75 की तेजी। सोया तेल, पोस्तादाना में भी तेजी, मखाना 90 प्रतिकिलो की तेजी, इलाइची में 90 की प्रति किलो तेजी, लालमिर्च 250/- प्रति क्विंटल की तेजी, मूंग, उड़द में 300 की तेजी आ सकती है।

8 जून 2016 से 21 जून 2016 तक चावल 70 तेज, चना 75 तेज, राजमा 300 तेज, गेहूं 25 तेज, जौ 250 तेज, काबुली चना 500 तेज, सोयाबीन 700 तेज, आमचूर 1500 तेज, बादाम तेज, मटर तेज, काजू में तेजी आ सकती है।

21 जून 2016

(आषाढ़ मास में 5 मंगलवार होने से)

21 जून 2016 से 3 जुलाई तक गेहूं 45 तेज, मक्का 85 मंदी, मसूर 250 मंदी, राजमा 150 मंदी, चना में 500 मंदी, गुड़ 205 तेज, शक्कर 205 तेज, धान 500 तेज, सोयाबीन 700 तेजी। छोटी इलाइची 75 मंदी, हल्दी 500 मंदी, लालमिर्च 700 मंदी, चिरौंजी मंदी, आमचूर 1500 तेज, पिस्ता 200 तेज, मेथी दाना 500 मंदी, छुहारा 500 तेज, बादाम 300 तेज, नारियल में 500 मंदी, काबुली चना 250 मंदी, जौ, सौंफ, लौंग में अच्छी मंदी आवेगी। मसूर में तेजी, चावल 500 तेज, काजू तेज, हल्दी एवं किलौंजी, सोंठ में मंदी, देशी चना तेज, मूंग, उड़द में 500 की मंदी, जीरा में 700 मंदी, उड़द में मंदी, बादाम में 300 की तेजी आ सकती है। 4 से 19 जुलाई 2016 तक काजू 45 तेज, पोस्तदाना 175 तेज, बादाम 100 तेज, सोंठ 500 मंदी, किशमिस 999 मंदी, जीरा 2500 तेज, बादाम 1200 तेज, कोकोनेट खोपरा 200 तेज, तो बाद में मंदी आवेगी। छोटी इलाइची 45 तेज, आमचूर 1500 तेज, लालमिर्च 1100 तेज, हल्दी 300 तेज, काबुली चना एवं चावल में मंदी। शक्कर 65 तेज, मसूर तेज, अरण्डी तेल में 500 मंदी, चना देशी 405 तेजी आ सकती है। 15 जून से 20 जुलाई 2016 तक डालर में भयंकर 7 रुपये की मंदी, रुपया में तेजी हो सकती है।

20 जुलाई 2016

(श्रावण मास में 5 बुधवार होने से)

15 जुलाई 2016 से 31 जुलाई 2016 तक सोंठ 999 तेज, छोटी इलाइची 45 तेज, चिरौंजी 145 तेज, लौंग 175 तेज, मगज तरबूज 25 मंदी, गेहूं में 25 मंदी, काजू 25 तेज, मूंग 500 तेज, पोस्तदाना 45 तेज, जीरा 250 मंदी, बादाम 200 तेज, उड़द में 250 मंदी, चावल में 250 मंदी, डॉलर में एक दम तेजी, चीनी-गुड़ में मंदी, कालीमिर्च 1500 तेज, चाय में भारी तेजी, जावित्री में 75 मंदी, कलौंजी मंदी, पिस्ता तेज, बादाम 300 तेज, आमचूर तेज, तिल्ली में भारी तेजी, चावल में तेजी, मक्का में मंदी। 1 से 5 अगस्त 2016 तक राजमा 250 तेज, देशी चना 500 तेज, पोस्तदाना 150 तेज, उड़द 250 तेज, जौ 145 की

मंदी, बाजरा में मंदी, ज्वार 145 मंदी, मैथा पिपरमेंट में भारी तेजी, सोयाबीन में भारी तेजी, लौंग में 70 मंदी, सौंठ में 1500 मंदी, गेहूं 45 मंदी, ग्वार में 3000 तेजी 45 दिन में कभी भी आ सकती है। राजमा 259 तेज, मूंग 250 मंदी, मोंठ में 300 की मंदी, गुड़ 275 तेजी, चीनी 45 तेज, सायोबीन में 2999 की भयंकर मंदी आ सकती है।

19 अगस्त 2016

(अगस्त मास में 5 शुक्रवार होने से)

6 से 21 अगस्त 2016 तक अजवायन में भयंकर मंदी, कलौंजी 500 मंदी, चना में 99 मंदी, मसूर 99 मंदी, राजमा में तेजी, जावित्री 75 मंदी, लौंग 75 मंदी, पोस्तदाना 150 मंदी, कालीमिर्च 1500 मंदी, चावल 250 तेज, धनियां 700 मंदी, आमचूर 1500 मंदी, मूंग 500 मंदी, उड़द मंदी, जौ मंदी, चावल में तेजी, मखाना व हल्दी में तेजी, छोटी इलाइची 75 मंदी, मखाना 75 तेज। 1 से 31 अगस्त 2016 तक डॉलर में तेजी और दालों में भयंकर तेजी। 22 से 31 अगस्त 2016 तक मूंग 500 तेज, उड़द 500 तेज, राजमा, मक्का तेज, पोस्तदाना 25 तेज, सोयाबीन 775 तेज, जावित्री 45 मंदी, बड़ी इलाइची 75 की मंदी, सरसों 475 तेज, इमली 500 तेज, तेल तिलहन में तूफानी तेजी, धनियां में 1500 की तेजी, चावल 500 तेज, लालमिर्च 2900 तेज, हल्दी, छुआरे, बादाम में अच्छी तेजी तो लौंग में मंदी आ सकती है। 25 अगस्त 2016 से 21 सितंबर 2016 तक चांदी में 11000 की तेजी, सोने में 5000 तेजी, ग्वार में 4000 की तेजी। 23.7.2016 से 1 अक्टूबर 2016 के बीच कभी भी धनियां 1895 की प्रचंड तेजी बन सकती है।

17 सितंबर 2016

(आश्विन मास में 5 शनिवार होने से)

8 सितंबर से 5 अक्टूबर 2016 तक अरहर में 999 की तेजी। चना में 700 की तेजी, आमचूर में 1100 की तेजी बन सकती है। 11 अगस्त 2016 से 21 अक्टूबर 2016 के बीच गेहूं में 259 से 505 की भारी तेजी, जौ 515 की तेजी।

31 जनवरी 2015 को वक्री बुध की सूर्य से INFERIOR युति होने से—31 जनवरी से 25 अप्रैल 2015 तक रुई में 777 की तेजी आ सकती है। 7 दिसंबर 2014 से 15 जनवरी 2015 तक अरहर 799 की जोरदार मंदी आ सकती है। 9 जनवरी 2015 से 21 फरवरी 2015 तक शक्कर में 506 की मंदी आ सकती है। 5 फरवरी से 15 अप्रैल 2015 तक लहसुन में अच्छी मंदी आ सकती है। 29 जनवरी 2015 से 11 फरवरी 2015 तक सोयाबीन तेल इंदौर, अरण्ड, सरसों हापुड़ में जोरदार तेजी आ सकती है। 11 से 21 फरवरी 2015 तक Oil & Seeds में भारी मंदी आवे, तो 11 अप्रैल 2015 तेल तिलहन, सरसों, अलसी अरण्ड, जोरदार में तेजी आ सकती है। 15 जनवरी 2015 से 2 मई 2015 तक अरहर 777 की तेजी आ सकती है।

10 अप्रैल 2015 को सूर्य-बुध की Superior Conjuction होने से— 11 अप्रैल 2015 से 2 जून 2015 तक सरसों, अलसी, अरण्ड, मूंगफली में जोरदार मंदी आ सकती है। 31 जनवरी 2015 से 17 मार्च 2015 तक घट-बढ़ से तेजी आ सकती है। 1 अप्रैल 2015 से 30 अप्रैल 2015 तक रुई में अच्छी तेजी चल सकती है। 25 फरवरी 2015 से 21 मार्च 2015 तक लोहा में 2575 की मंदी आ सकती है। 23 मार्च 2015 से 18 मई 2015 तक लोहा में 9997 की तूफानी तेजी चल सकती है।

30 मई 2015 को वक्री बुध से सूर्य से इनफेरियर युति होने से—3 से 18 जून 2015 तक अरहर 999 की मंदी आ सकती है। 18 जून 2015 से 11 जुलाई 2015 तक अरहर, मसूर, चना, तेवड़ा में तेजी। 1 जून 2015 से 11 जुलाई 2015 तक सरसों, मूंगफली तेल, सोयाबीन तेल, रिफाइन्ड, करड़ी, बिनौला, अलसी, अरण्ड में अच्छी तेजी आ सकती है। 11 से 25 जुलाई 2015 तेल तिलहन में जोरदार मंदी। 1 जून 2015 से 21 सितंबर 2015 तक लौंग में 99 की मंदी आ सकती है। 9 जून 2015 से 5 सितंबर 2015 तक रुई 707 की तेजी। 19 मई से 11 जुलाई 2015 तक लोहे में मंदी का धमाका हो सकता है।

24 जुलाई 2015 को सूर्य-बुध की सुपरियर युति होने से—19 मई 2015 से 24 जुलाई 2015 तक लहसुन में जोरदार मंदी चल सकती है। 17 अप्रैल 2015 से 24 जून 2015 तक चांदी में अच्छी मंदी चल सकती है। 2 जुलाई 2015 से 7 नवंबर 2015 तक चांदी में 9975 की जोरदार तेजी आ सकती है। 11 जुलाई 2015 से 25 अगस्त 2015 तक लोहे में 4507 की जोरदार तेजी आ सकती है।

30 सितंबर 2015 को वक्री बुध से सूर्य से Inferior Conjuction होने से—19 अगस्त 2015 से 15 दिसंबर 2015 तक लहसुन में अच्छी तेजी आ सकती है। 9 सितंबर से 15 अक्टूबर 2015 तक अरण्ड, अलसी में अच्छी तेजी आने की संभावना है। 12 सितंबर से 7 अक्टूबर 2015 तक लोहे में तेजी आ सकती है।

18 नवंबर 2015 को सूर्य-बुध की Inferior Conjuction होने से—17 सितंबर से 9 अक्टूबर 2015 में अरहर, चना, मूंग, उड़द, मसूर, सरसों में अच्छी तेजी आ सकती है। 15 जून 2015 से 5 सितंबर 2015 तक लौंग में 205 की भड़कती तेजी आ सकती है। 05 अक्टूबर 2015 से 31 अक्टूबर 2015 के बीच लोहे में अच्छी मंदी की संभावना है। 1 से 11 नवंबर 2015 तक लोहे में तेजी आ सकती है।

Subject to Gwalior Juridiction

15 जनवरी को वक्री बुध की सूर्य से Inferior Conjuction होने से—27 दिसंबर 2015 से 3 फरवरी 2016 तक लहसुन में एक बार अच्छी तेजी आकर मंदी आ सकती है। 27 दिसंबर 215 से 15 जनवरी 2016 तक अलसी, अरण्ड, बिनौला में अच्छी तेजी। 29 नवंबर 2015 से 25 फरवरी 2016 तक लोहा में 7777 की जोरदार तेजी आ सकती है।

24 मार्च 2016 को सूर्य-बुध की सुपरियर युति होने से— 16 फरवरी 2016 से 3 मार्च 2016 तक अलसी, अरण्ड, सरसों, मूंगफली तेल में जोरदार मंदी का धमाका होकर आगे 30 अप्रैल 2016 तक तेलों में अच्छी तेजी आ सकती है। 15 मार्च से 25 अप्रैल 2016 तक लहसुन में जोरदार मंदी आवेगी। 5 नवंबर 2015 से 15 मई 2016 तक चांदी में 15 हजार की तेजी, सोना में 1409 की जोरदार तेजी आ सकती है।

10 मई 2016 को वक्री बुध से सूर्य से Inferior Conjuction युति होने से— 5 से 31 मई 2016 तक सरसों, फली तेल, चांदी, सोना में अच्छी मंदी आ सकती है।

7 जुलाई 2016 सूर्य-बुध की Superior Conjuction होने से—1 जून 2016 से 3 जुलाई 2016 तक चांदी, सोना में भयंकर मंदी आ सकती है। 5 जुलाई 2016 से 18 सितंबर 2016 तक चांदी में 21 हजार की तेजी आ सकती है। 3 अगस्त 2016 से 18 सितंबर 2016 तक सरसों फली तेल, अरहर, चना, हल्दी, धनियां में अच्छी तेजी आ सकती है। 29 सितंबर 2016 चांदी-सोना में अच्छी मंदी चल सकती है।

13 सितंबर, 2016 को वक्री बुध की सूर्य से Inferior युति होने से—18 सितंबर से 15 अक्टूबर 2016 तक सरसों, अलसी, अरण्ड में भयंकर मंदी आ सकती है।

27 अक्टूबर 2016 को सूर्य, बुध की सुपीरियर युति होने से—27 अक्टूबर से 15 दिसंबर 2016 तक सरसों, चांदी में अच्छी तेजी। 29 दिसंबर 2016 को सूर्य-बुध इनफेरियर युति होगी। 11 दिसंबर 2016 से 29 जनवरी 2017 तक अलसी, अरण्ड, सोना, चांदी में भयंकर मंदी आ सकती है।

30 दिसंबर 2015 मकर राशि का शुक्र पिपरमेंट मैथा में अच्छी तेजी आ सकती है। 27 नवंबर 2014 से मकर राशि का

मंगल से तेजी आ सकती। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। 5 जुलाई 2015 शुक्र ग्रह पिपरमेंट मैंथा में 15 से 25 दिन अच्छी तेजी आ सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। 3 नवंबर 2015 कन्या राशि के शुक्र से पिपरमेंट में जोरदार मंदी की झटका लग सकता है।

18 नवंबर 2015 को सूर्य, सूर्य-बुध की Superior Conjuction होने से—17 सितंबर 2015 से 19 अक्टूबर 2015 अरहर, चना, मूंग, उड़द, मसूर, सरसों में अच्छी तेजी आ सकती है। 15 जून 2015 से 5 सितंबर 2015 लौंग में 205 की भड़कती तेजी आ सकती है। 5 से 31 अक्टूबर 2015 के बीच लोहे में अच्छी मंदी की संमभावना है। 1 नवंबर 2015 से 11 नवंबर 2015 तक लोहे तेजी की संभावना है। 1 नवंबर 2015 तक लोहे में तेजी आ सकती है। 30 नवंबर 2015 को तुला राशि में प्रवेश पिपरमेंट में तूफानी तेजी चलने की संभावना है। 25 दिसंबर 2015 वृश्चिक राशि के शुक्र से पिपरमेंट में मंदी आ सकती है।

19 जनवरी 2016 धन राशि का शुक्र से पिपरमेंट में तेजी आ सकती है।

चन्द्र परमशर की दक्षिण की तारीखें

Moon Maximum South Node

5 दिसंबर 2014, 1 जनवरी 2015, 28 फरवरी 2015, 27 मार्च 2015, 24 अप्रैल 2015, 21 मई 2015, 17 जून 2015, 14 जुलाई 2015, 10 अगस्त 2015, 7 सितंबर, 2015, 4 अक्टूबर 2015, 1 नंवबर 2015, 27 दिसंबर 2015, 21 जनवरी 2016, 17 फरवरी 2016, 13 मार्च 2016, 1 अप्रैल 2016 बाजारों में विशेष घटाबढ़ी चलने की संभावना हैं।

(A) चन्द्र परमशर दक्षिण की तारीखों में, Copper में 5-9 दिन में 15-20 रुपये की मंदी चल सकती है। (B) यदि Copper Market में सवा 6 महीने पहले मंदी चली है तो 6 महीने 8 दिन बाद वैसे ही मार्केट चलने की संभावना रहती हैं। (C) चन्द्र परम शर दक्षिण की तारीखों में Crude oil में तेजी बन सकती है। (D) 6 महीने 8 दिन बाद Crude oil में डेढ़-दो महीने भयंकर मंदी चल सकती है। (E) चांदी Silver एक वर्ष 10 महीने 11 दिन बाद, चन्द्र परमशर दक्षिण की तारीख पड़े तो चांदी के बाजार Lowest बने तो एक वर्ष 10 महीने 11 दिन बाद चांदी के Highest भाव टच हो सकते हैं। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी किसी हालत में नहीं होगी नहीं।

चांदी तेजी मंदी रिपोर्ट

(A) (1-10M-1)(5-D-2Y)-5 सितंबर 2014 से 5 अक्टूबर 2014 तक चांदी 3775 की तेजी, सोना में 2799 की तेजी आ सकती है। फिर बाजार जैसा चले वैसा व्यापार करें। (B) 7 अक्टूबर 2014 से 3 दिसंबर 2014 के बीच, चांदी में 7577 की मंदी आ सकती है। (C) 5 दिसंबर 2014 से 7 फरवरी 2015 तक चांदी 15 हजार की तेजी सोना 5 हजार की तेजी आ सकती है। (D) 7 फरवरी 2015 से 15 अप्रैल 2015 तक चांदी, सोना में तेजी आ सकती है। (E) 25 अप्रैल 2015 से 27 मई 2015 तक चांदी, सोना में मंदी आने की संभावना है। (F) 5 जून 2015 से 11 जुलाई 2015 तक चांदी में तेजी आ सकती हैं।

चन्द्र परमशर की उत्तर की तारीखें

Moon Maximum North Node

चन्द्र परमशर उत्तर 23 दिसंबर 2014, 11 जनवरी 2015, 15 फरवरी 2015, 15 मार्च 2015, 11 अप्रैल 2015, 8 मई 2015, 4 जून 2015, 21 जुलाई 2015, 25 अगस्त 2015, 22 सितंबर 2015, 19 अक्टूबर, 2015, 16 नवंबर 2015, 12 दिसंबर 2015, 9 जनवरी 2016, 3 फरवरी 2016, 30 मार्च 2016, 27 अप्रैल 2016

चन्द्र परमशर उत्तरशर North Node जब शेयर्स मार्केट में तेजी चले और B.S.E. शेयर्स Index ऊंचे भाव बने और उस समय (A) चंद्र परमशर उत्तर हो तो उसके 4 महीने 8-9 दिन बाद चन्द्र केतु युति होने पर शेयर्स मार्केट में 5-7 दिन में भीषण मंदी आती देखी गई है। (B) ग्वार Cluster Been ऊंचे भाव बनने के बाद 4 महीने 8 दिन से 4 महीने 21 दिन बाद ग्वार में मंदी का दौर चल सकता है। ग्वार में तो कभी 6 महीने 4 दिन बाद ग्वार में 7 दिन पहल से तेजी आ सकती हे। इतने अंतराल के बाद तेजी या मंदी का सर्किट लग सकता है। Menthol में नीचे भाव बनने की तारीख से 4 महीने 16 दिन बाद भीषण मंदी सर्किट लग सकते हैं। फिर पुनः 11-12 दिन में वापिस तेजी के भाव आ जाते खा गया है। सिंगदाना तेल Ground Nut Oil ऊंचे भाव से 7 माह 5-7 दिन बाद उत्तर परमशर से चन्द्रमा, राहु, यति, होती है। 5 माह 9-11 दिन बाद अमावस्या के वजाय पूर्णिमा हो जाती है। (C) 17 अप्रैल 2007 को अमावस्या से 5 महीना 7 दिन के बाद 26 सितंबर 2007 को पूर्णिमा हुई। 20 महीना 3-4 दिन बाद भी अमावस्या से पूर्णिमा हो जाती है। जैसे 29 जनवरी 2006 को अमावस्या है तो 26 सितंबर 2007 को पूर्णिमा है। (D) 13 महीने 2 दिन बाद, यदि पहले मंदी आई तो इतने समय बाद कभी-कभी सोयाबीन तेल इंदौर में भयंकर मंदी चल सकती है।

मंगल ग्रह MARS PLANET

18-10-2014 को मंगल धनु राशि, 28 नवंबर 2014 को मकर राशि में, 5 जनवरी 2015, कुंभ राशि में चांदी में भारी तेजी, 12 फरवरी 2015 को मीन राशि में, 23 मार्च 2015 को मेष राशि में मंगल भ्रमण करेगा। 3 मई 2015 वृष राशि में मंगल ग्रह प्रवेश 16 जून 2015 को मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। 31-7-2015 कर्क राशि में तेल-तिलहन और चना में तेजी आ सकती है।

सोयाबीन रिफाईड तेल इंदौर 10 किलो तेजी मंदी

22 अगस्त 2014 से 14 अक्टूबर 2014 तक रिफाईड सोयाबीन तेल में 30 रुपये की मंदी आ सकती है। 15 अक्टूबर 2014 से 23 अक्टूबर 2014 तक 20 रुपये की तेजी आ सकती है। 24 अक्टूबर 2014 से लेकर 6 नवंबर 2014 तक रिफाईड सोयाबीन तेल में 20 रुपये की मंदी आ सकती है। 6 नवंबर 2014 से 6 जनवरी 2015 तक 50 रुपये की तेजी 10 किलो पर रिफाईड सोयाबीन तेल में तेजी आ सकती है। 6 जनवरी 2015 से लेकर 22 जनवरी 2015 तक रिफाईड सोयाबीन तेल में 40 रुपये की मंदी आ सकती है। 23 जनवरी 2015 से 12 फरवरी 2015 तक रिफाईड सोयाबीन तेल में 15 रुपये की मंदी आ सकती है। 13-24 फरवरी 2015 तक रिफाईड सोयाबीन तेल में 40 रुपये की तेजी आ सकती है। 25 फरवरी 2015 से 3 मार्च 2015 तक 30 की मंदी तो बाद में 10 मार्च 2015 तक 40 रुपये की तेजी आ सकती है। 11 मार्च 2015 से 9 अप्रैल 2015 तक रिफाईड तेल में घटा-बढ़ी के बाद 40 रुपये की तेजी आ सकती है। 9-15 अप्रैल 2015 तक के बीच 25 रुपये की रिफाईड सोयाबीन तेल में मंदी आ सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।

निकिल मार्केट

(22-1M-2) 13 दिसंबर 2014 से 11 जनवरी 2015 तक 15 निकिल में तेजी आ सकती हैं। 13-27 जनवरी 2015 तक 85 की भयंकर तेजी चल सकती है। 27 जनवरी 2015 से 18 फरवरी 2015 तक निकिल में 51 की मंदी चल सकती हैं।

18-25 फरवरी 2015 तक निकिल में 45 की तेजी अच्छी चल सकती है। 25-28 फरवरी 2015 तक निकिल में 21 की मंदी आ सकती है। 1-15 मार्च 2015 तक निकिल में 51 की तेजी आ सकती है। 16 मार्च 2015 से 23 अप्रैल 2015 तक निकिल में 38 तूफानी तेजी आने की संभावना है। 25-29 अप्रैल 2015 तक निकिल में 75 मंदी आ सकती हैं। 29 अप्रैल 2015 से 6 मई 2015 तक निकिल में 30 की तूफानी मंदी बन सकती है। 16 मार्च 2016 से 1 जून 2015 तक निकिल में 65 भीषण तेजी चल सकती है। 1-9 जून 2015 तक 23 की मंदी बन सकती है। 9-26 जून 2015 तक निकिल में 31 की तेजी चल सकती है। 26-29 जून 2015 तक 21 की तूफानी मंदी आ सकती हैं।

29 जून 2015 से 23 जुलाई 2015 तक निकिल में 42 की भीषण तेजी चल सकती है। 23 जुलाई 2015 से 18 अगस्त 2015 तक निकिल में 11 मंदी आ सकती हैं। 18 अगस्त 2015 से 2 सितंबर 2015 तक 50 तूफानी तेजी आ सकती है। 2 सितंबर 2015 से 19 सितंबर 2015 तक निकिल में 25 मंदी चल सकती है। 19-21 सितंबर 2015 तक निकिल में 40 रुपये की मंदी चलने की संभावना है। 21 सितंबर 2015 से 19 अक्टूबर 2015 तक निकिल में 200 रुपये की तूफानी तेजी आने की संभावना है। 19-21 अक्टूबर 2015 तक निकिल में 92 रुपये की मंदी चल सकती है। 21-22 अक्टूबर 2015 तक निकिल में 50 रुपये की तेजी आ सकती है। 22 अक्टूबर 2015 से 5 नवंबर 2015 तक निकिल में 65 रुपये की तेज मंदी चलने की संभावना है। 5-11 नवंबर 2015 तक 20 रुपये की तेजी आ सकती है। 11-26 नवंबर 2015 तक 60 रुपये की मंदी चल सकती है। 26-29 नवंबर 2015 तक 25 रुपये की तेजी चलने की संभावना है। 29 नवंबर 2015 से 2 दिसंबर 2015 तक निकिल में 30 रुपये की मंदी चल सकती है। 2-14 दिसंबर 2015 तक 65 रुपये की तेजी निकिल में आने की संभावना है। 14-15 दिसंबर 2015 तक 20 रुपये की मंदी निकिल में आ सकती है। 15-16 दिसंबर 2015 तक निकिल में 20 रुपये की तेजी आ सकती है। 16 दिसंबर 2015 से 24 जनवरी 2016 तक निकिल में 85 रुपये की मंदी आने की संभावना है।

24 जनवरी 2016 से 14 फरवरी 2016 तक निकिल में 65 रुपये की तेजी चल सकती है। 14-22 फरवरी 2016 तक निकिल में 40 रुपये की मंदी आने की संभावना है। 22-26 फरवरी 2016 तक निकिल में 45 रुपये की तेजी। 26-28 फरवरी 2016 तक निकिल में 40 रुपये की मंदी चलने की संभावना है। 28 फरवरी 2016 से 6 मार्च 2016 तक निकिल में 65 रुपये की तेजी। 6-12 मार्च 2016 तक निकिल में 45 रुपये की मंदी आ सकती है। 12-14 मार्च 2016 तक निकिल 70 रुपये की तेजी चलने की संभावना है। 14-26 मार्च 2016 तक 70 रुपये की तेजी मंदी चल सकती है। 26 मार्च 2016 से 13 अप्रैल 2016 तक निकिल में 45 रुपये की तेजी आ सकती है। 13-21 अप्रैल 2016 तक निकिल में 30 रुपये की मंदी आने की संभावना है। 21 अप्रैल 2016 से 10 मई 2016 तक निकिल में 111 रुपये की जोरदार तेजी आ सकती है। 10-19 मई 2016 तक निकिल में 60 रुपये की मंदी आने की संभावना है। 19 मई 2016 से 20 जून 2016 तक निकिल में 200 रुपये की जोरदार तेजी आने की संभावना है। 20-21 जून 2016 तक 50 रुपये की मंदी आ सकती है। 21 जून 2016 से 4 जुलाई 2015 तक निकिल में 175 रुपये की जोरदार तेजी। 4-10 जुलाई 2016 तक निकिल में 100 रुपये की मंदी। 10-21 जुलाई 2016 तक निकिल में 15 रुपये की तेजी आ सकती है। 21 जुलाई 2016 से 4 अगस्त 2016 तक निकिल में 110 रुपये की भीषण मंदी चल सकती है। 4-9 अगस्त 2016 तक निकिल में 100 रुपये तूफानी तेजी आने की संभावना है। 9-16 अगस्त 2016 तक निकिल में 60 रुपये की मंदी। 16-25 अगस्त 2016 तक निकिल में 100 रुपये की तूफानी तेजी आ सकती है।

जिंक तेजी मंदी 2015

(22D-1M-2) 7 नवंबर 2014 से 9 दिसंबर 2014 तक जिंक में 15 की मंदी हुई 9 दिसंबर 2014 से 8 जनवरी 2015 तक 10 की तेजी हो सकती है। 8-25 जनवरी 2015 तक 7 की तेजी आ सकती है। 25-29 जनवरी 2015 तक 5 की जिंक में मंदी चल सकती है। 29 जनवरी 2015 से 20 फरवरी 2015 तक जिंक में 7 की तेजी हो सकती है। 20-25 फरवरी 2015 तक जिंक के भाव सम चलते रहेंगे। 25 फरवरी 2015 से 9 मार्च 2015 तक 10 की तेजी चल सकती है। 9-25 मार्च 2015 तक 8 की मंदी बन सकती है। 25 मार्च 2015 से 24 अप्रैल 2015 तक जिंक में 10 की तेजी चल सकती है। 22 अप्रैल 2015 से 3 मई 2015 तक जिंक में 20 रुपये की मंदी आ सकती है। 3-5 मई 2015 तक जिंक में 10 की तेजी आने की संभावना है। 5-20 मई 2015 तक जिंक में 5 की तेजी हो सकती है। 20 मई 2015 से 1 जून 2015 तक 6 की मंदी आ सकती है। 1-11 जून 2015 तक जिंक में 6 मंदी चल सकती है। 24 जून 2015 तक जिंक में 10 रुपये की मंदी फिर से चल सकती है। 24 जून 2015 से 14 जुलाई 2015 तक 12 की तेजी चल सकती है। 14-27 जुलाई 2015 तक 15 की जिंक में तेजी बन सकती है। 27 जुलाई 2015 से 9 अगस्त 2015 तक 12 की मंदी 25 अगस्त 2015 जिंक में 10 की मंदी आ सकती है। 19 सितंबर 2015 तक 25 रुपये की तेजी चल सकती है। 19 सितंबर 2015 से 20 अक्टूबर 2015 तक 21 की मंदी आ सकती है। 20 अक्टूबर 2015 से 11 नवंबर 2015 तक 14 रुपये की तेजी बनने संभावना है। 21 नवंबर 2015 से 8 दिसंबर 2015 तक मंदी 8 चल सकती हैं। 8-23 दिसंबर 2015 तक 12 रुपये की तेजी जिंक में तेजीं। 213 दिसंबर 2015 से 11 जनवरी 2016 तक जिंक में 12 की मंदी चल सकती हैं। 11 जनवरी 2016 से 16 फरवरी 2016 तक 25 रुपये की मंदी बन सकती है। 16 फरवरी 2016 से 8 मार्च 2016 तक 15 रुपये की मंदी चल सकती है। 8-15 मार्च 2016 तक जिंक 11 तेजी बन सकती है। 15 मार्च 2016 से 3 अप्रैल 2016 तक जिंक 8 मंदीं। 3-27 अप्रैल 2016 तक जिंक 14 रुपये तेजी बन सकती है। 27 अप्रैल 2016 से 23 मई 2016 तक 16 की जिंक में मंदी बन सकती है। 23 मई 2016 से 15 जून 2016 तक जिंक 17 रुपये की तेजी चल सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी नहीं। 15-24 जून 2016 तक जिंक 11 रुपये की मंदी बन सकती है। 24 जून 2016 से 23 जुलाई 2016 तक 12 रुपये की तेजी। 23 जुलाई 2016 से 4 अगस्त 2016 तक जिंक 7 रुपये की मंदी बन सकती है। 4 अगस्त 2016 से 26 सितंबर 2016 तक 30 रुपये की तेजी भीषण तेजी चल सकती है।

 पृष्ठ 18 का शेष

ससुराल पक्ष में भी मान-सम्मान विशेष मिलेगा। ता. 19,20,28,29 अशुभ हैं। **अक्टूबर**—कारोबार वृद्धि का योग। साझेदारी में कार्य करना, धोखा दायक। स्वयं का धंधा अच्छा होगा। आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। पुराना विवाद भी विजयदायक। स्त्री की पीड़ा योग। खर्चा भी अचानक बनेगा। फिर भी मनोबल बढ़ेगा। ता. 20, 21, 23, 27, 29 अशुभ हैं। **नवम्बर**—स्वास्थ्य लाभ शुभ दायक रहेगा। संबंधियों द्वारा नये कार्य के प्रति मित्रों द्वारा परामार्श प्राप्त होगा। उदर पीड़ा में परेशानी। प्रसव पीड़ा में स्त्री का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। ध्यान देवें। भवन निर्माण या भवन क्रय का लाभ बनता है। यात्रा योग। ता. 1, 3, 6, 7, 14 अशुभ हैं। **दिसम्बर**—अचानक स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। चोरी या अन्य अशुभ कार्य का संकेत बनता है। राजकाज में सफलता प्राप्ति, विरोधी पक्ष से शुभ लाभ। शत्रुता-मित्रता में परिवर्तित योग, वाहन क्रय भी करेंगे। राजनीति क्षेत्र में भाग दौड़ चलेगी। धार्मिक यात्रा योग। ता. 16, 23, 26, 27, 29 अशुभ हैं। **जनवरी 2016**—शारीरिक व्याधि का योग, व्यापार में विकास या प्रगति संबंधी योग। स्त्री को भी शारीरिक कष्ट योग। मांगलिक खर्चा भी आएगा। प्रकाशन-संपादन जैसा नया दायित्व प्राप्ति योग। यात्रा योग सुखद। संतान के द्वारा आर्थिक लाभ, विदेश यात्रा योग। ता. 20, 22, 27, 28 अशुभ हैं। **फरवरी**—अचानक आर्थिक लाभ बनेगा। राज पक्ष से लाभ होगा। मित्र वर्ग से काफी अच्छा परामर्श प्राप्त होगा। निजीजनों से शुभ सहयोग प्राप्त होगा। नेत्र पीड़ा या सिर शूल का योग बनेगा। सरकारी कर्मियों को पदोन्नति योग। कृषक वर्ग को अच्छी फसल प्राप्ति व लाभ बनेगा। ता. 1, 2, 9, 10, 14, 15 अशुभ रहेंगी। **मार्च**—माह में खर्चा का दौर विशेष रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में भी सफलता का योग। वाहन चलाते समय सावधानी रखें। सामाजिक दायित्व बढ़ेंगे। परिवार में नया सदस्य का आगमन होगा। राजकीय कार्य का लाभ। रोजगार का अच्छा अवसर प्राप्त होगा। वाहन क्रय योग भी। ता. 13, 14, 15, 21, 22, 24 अशुभ हैं। **अप्रैल**—वायु रोग से परेशानी। वाहन संचालन में सावधानी बरतें। संतान पक्ष से चिंता बनेगी। स्त्री वर्ग द्वारा कोई असामान्य घटना की सूचना का योग। पशुओं से बचकर चलें कहीं चोट का योग बनता है। विदेश यात्रा योग। ता. 15, 22, 23, 29 अशुभ।

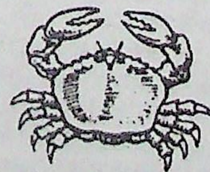
मिथुन-क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह



स्वामी-बुध नग-पन्ना शुभ

अप्रैल—आशा-निराशा योग से घबरायें नहीं। उदर पीड़ा योग। बढ़ते उत्तरदायित्व को संभालना शुभ दायक रहेगा। यात्रा का सुखद योग। मांगलिक खर्चा का शुभ योग। वाहन क्रय योग। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। पिता के स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ योग। ता. 8, 9, 10, 27, 28 अशुभ हैं। **मई**—कानूनी विवाद भूमि संबंधी बन सकता है। कुछ संकट दायक योग बनेंगे। मौन धारण करें शुभ रहेगा। मर्यादा रहित कार्य से बचें। गृहस्थी कार्य का सुख बढ़ेगा। व्यापारिक गतिविधियों में भाग-दौड़ ज्यादा होगी। भाग्योदय का शुभ योग। नवीन मित्रों द्वारा शुभ यात्रा बनेगी। ग्रह चाल योग शुभ। ता. 6, 7, 8, 23, 24, 25 अशुभ। **जून**—माह में कृषि जन्य कार्य के प्रति मनोत्साह बढ़ेगा। माता का स्वास्थ्य खराब होने का योग। कोई चलते रास्ते वाला गुमराह कर सकता है। आर्थिक लाभ का शुभ योग। कोई निकट व्यक्ति का सहयोग भी करना पड़ सकता है। ता. 3, 4, 5, 20, 21, 23 अशुभ। **जुलाई**—माह शैक्षिक दृष्टि से शुभदायक रहेगा। राजकीय सेवा योग बनता है। शुभ कार्य का खर्चा भी बनेगा। न्यायालय संबंधी प्रकरण हो तो विजय योग। मनोरंजन खर्चा भी आप ज्यादा करेंगे। ता. 1, 3, 5, 7, 8 अशुभ हैं। **अगस्त**—माह में कुछ नया कार्य शुभ दायक होगा। प्रतियोगिता का परिणाम उत्तम रहेगा। दोस्तों के साथ मनोरंजन का समय अच्छा गुजरेगा। आमोद-प्रमोद में खर्चा बढ़ेगा, रोजगार के शुभ अवसर बनेंगे। गृहस्थ जीवन में कटुता का योग खत्म होगा। धार्मिक अनुष्ठान का योग भी शुभ दायक रहेगा। आमदनी बढ़ेगी। ता. 10, 11, 12, 22, 24, 27 अशुभ। **सितम्बर**—माह में व्यापारी वर्ग को अच्छा लाभ मिलेगा। घर-परिवार में नये सदस्य का आगमन होगा। स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़। वाहन से सावधान। अशुभता का योग भी। उधार की राशि प्राप्ति का योग अभी नहीं। मंगल ग्रह के कारण भूमि संबंधी विवाद बनेगा। ता. 3, 6, 7, 20, 21, 22 अशुभ हैं। **अक्टूबर**—माह में जोड़-जोड़कर कार्य की सफलता का योग। यात्रा छोटी मगर लाभदायक। नये कार्य में स्त्री वर्ग द्वारा लाभ मिलेगा। देश-विदेश की यात्रा का भी अच्छा योग। भूमि भवन लेन-देन में भी लाभ। कानूनी विवाद से बचें। ता. 3, 6, 7, 8, 23, 24, 26 अशुभ हैं। **नवम्बर**—माह में खुशी एवं दुख दोनों का योग। जन संपर्क बढ़ेगा। लंबी व्यापारिक यात्रा का शुभ योग। साहित्य सेवा तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। भूमि वाहन संबंधी सौदा बनेगा। नया मित्र मिलन होगा। ता. 3, 4, 5, 19, 20, 22 अशुभ हैं। **दिसम्बर**—राजनीतिक दलों से संपर्क बनेगा। सामाजिक सेवा में भी पद भार प्राप्ति का शुभ योग। मौसम के अनुसार बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं। घर में स्त्री वर्ग की सलाह से कार्य लाभ अच्छा। ता. 3, 4, 6, 13, 17 अशुभ हैं। **जनवरी 2016**—माह में भाग्योदय का अच्छा अवसर बनेगा। परिश्रम का लाभ मिलेगा। कार्यालय कार्यों में अच्छा वर्चस्व बढ़ेगा। वाहन लेन-देन में अच्छा लाभ मिलेगा। देश-विदेश में मैत्री योग बढ़ेगा। कुछ धोखा योग। ता. 8, 9, 10, 13, 14, 15 अशुभ। **फरवरी**—कर्मचारी वर्ग को स्थानान्तरण संबंधी योग बनेगा। प्रतियोगिता परिणाम एवं परीक्षा में सफलता मिलेगी। मित्र वर्ग के साथ मौज-मस्ती का समय भी गुजरेगा। लेखन प्रकाशन संपादन योग। धार्मिक यात्रा का योग। ता. 19, 20, 22, 24, 27 अशुभ दायक। **मार्च**—माह के प्रारंभ में सामाजिक कार्यों का दायित्व बढ़ेगा। जनसंपर्क अच्छा रहेगा। गृह निर्माण जैसा योग। आर्थिक लाभ भी बनेगा। देश-विदेश की यात्रा से शुभ समाचार प्राप्ति योग। स्थान परिवर्तन भी। ता. 16, 17, 18, 24, 25 अशुभ हैं। **अप्रैल**—रोजमर्रा के कार्यों में वृद्धि होगी। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। अधिकारी वर्ग से अनबन। माता जी का स्वास्थ्य गड़बड़ होगा। चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। अनुसंधान जैसा कार्य की प्राप्ति। धंधा भी अच्छा। ता. 3, 4, 5, 20, 22, 24 अशुभ।

कर्क-ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो



स्वामी-चन्द्र नग-मोती शुभ

अप्रैल—माह में आपके ग्रह शुभ दायक रहेंगे। उन्नति का योग। संतान, रोजगार एवं आर्थिक लाभ अच्छा होगा। देश-देशांतर की यात्रा का शुभ योग। राजनीति में भी सफलता, पत्नी द्वारा मार्गदर्शन शुभदायक रहेगा। मित्रों का शुभ योगदान लेकिन वाहन से सावधान। ता. 3, 7, 9, 12, 20, 22 अशुभ हैं। **मई**—पारिवारिक कार्यों में गति बिगड़ेगी। स्त्री वर्ग का विवाद-कलह का कारण बनेगा। शत्रु पक्ष से परेशानियां, चोरी, डकैती, बच्चा गुम हो जाना ऐसे अशुभ दायक योग बनेंगे। बाजार में लेन-देन में सावधानी रखें।

ता. 13, 14, 17, 24, 25 अशुभ! **जून**—ग्रह चाल का प्रभाव मध्यम रहेगा। एकाएक कार्य की गति रुकेगी। विवादों से बचें तो शुभदायक रहेगा। मित्र वर्ग से परिवारिक कार्य की गति बढ़ेगी। अशोभनीय घटनाओं से धन हानि का योग। मर्यादा रहित व्यवहार से बचें। कार्य जो छूट गया, उसमें सफलता के योग। ता. 13, 14, 15, 16, 24 अशुभ। **जुलाई**—स्वास्थ्य ठीक रहेगा। प्रशासनिक दृष्टि से आपका नियंत्रण व्यवहार में नियमितता का लाभ मिलेगा। नये मेहमान का आगमन। शादी-सगाई जैसा कार्य का योग। इच्छित भूमि वाहन प्राप्ति का योग। जन संपर्क का लाभ मिलेगा। ता. 24, 25, 26, 28, 29 अशुभ हैं।

अगस्त—माह में शुभ संदेश व्यापारिक दृष्टि से प्राप्त होगा। पुराने परिचित लोगों से सेवाओं का लाभ प्राप्त होगा। दिनचर्या में सुधार से आर्थिक लाभ अच्छा होगा। कोई अशोभनीय घटना का योग। शनि संतान को रोगी कर सकता है। विद्या में विफलता भी। ता. 20, 21, 24, 27 अशुभ। **सितम्बर**—परिश्रम का अच्छा लाभ मिलेगा। साहित्यिक सेवा कार्य का लाभ प्राप्त करें। देश-विदेश में लेन-देन जैसा व्यापार की स्थापना भी हो सकती है। भूमि भवन विक्रय योग। मित्रों से विवाद बनेगा। वाहन दुर्घटना का योग। ता. 13, 14, 15, 22, 24 अशुभ हैं। **अक्टूबर**—माह में बनते-बिगड़ते परिवेश में नए आयामों का योग। गृहस्थ जीवन में मतभेद। भूमि विवाद में पड़ोसी से झगड़ा योग। अनावश्यक लोगों से भी परेशानी। कपड़ा व्यापारी वर्ग को श्रेष्ठ लाभ मिलेगा। ता. 20, 22, 24, 27, 28 अशुभ हैं। **नवम्बर**—नौकरी वर्ग में पदोन्नति योग। व्यापारी वर्ग में धंधा वृद्धि योग। कृषक वर्ग प्राकृतिक आपदा से परेशानी में रहेंगे। गृहस्थ जीवन में लेन-देन संबधी उलझनों से परेशानी। मित्र वर्ग की सलाह से शांति का योग। परिवारिक दायित्व का निर्वहन बढ़ेगा। ता. 10, 11, 12, 20, 21 अशुभ। **दिसम्बर**—आर्थिक दृष्टि से माह शुभदायक रहेगा। ग्रह चाल से समय अनुकूल रहेगा। सामाजिक दायित्वों का लाभ परिवार में मिलेगा। मांगलिक कार्य होंगे। विद्यार्थी वर्ग सफलता प्राप्त करेगा। अपेक्षित कार्यों की योजना से विशेष लाभ एवं सफलता मिलेगी। साझेदारी में काम न करें। ता. 13, 14, 15, 20, 21 अशुभ हैं। **जनवरी 2016**—घर गृहस्थी में उलझन बढ़ेगी। सतर्क रहने से नये कार्य में सफलता का योग। अधिकारी वर्ग से पहचान बनेगी। आयकर विभाग से नोटिस प्राप्ति जैसा योग। कृषि कार्य से आर्थिक लाभ अच्छा रहेगा। विवाद की स्थिति में मौन धारण करें। ता. 23, 24, 25, 27 अशुभ। **फरवरी**—माह में इच्छित कार्य का लाभ मिलेगा। साहित्य संगीत में प्रेम बढ़ेगा। लंबी यात्रा का विचार बनेगा। ग्रहचाल से आर्थिक लाभ। उधार प्राप्ति का अच्छा माह रहेगा। स्थान परिवर्तन तथा न्यायालय संबंधी प्रकरण हो तो विजय योग। ता. 19, 20, 23, 28 अशुभ हैं। **मार्च**—माह में खर्चा ज्यादा आय कम होगी। पुराने विवाद में चेतना आएगी। न्यायालय जैसा प्रकरण दंड योग्य बन सकता है। यात्रा छोटी परंतु लाभदायक होगी। स्त्री वर्ग से अपमान का योग। ता. 23, 27, 29 अशुभ। **अप्रैल**—अर्थ लाभ व्यवसाय की दृष्टि से अच्छा बनेगा। नौकरी वर्ग को स्थान परिवर्तन का योग है। मित्र वर्ग से मदद अच्छी रहेगी। मान-सम्मान प्राप्ति का शुभ योग। बदलते परिवेश में आपको कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। माता के स्वास्थ्य में गड़बड़। सेवा योग बनेगा। ता. 13, 17, 20, 22, 27 अशुभ।

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

सिंह



स्वामी-सूर्य नग-माणिक शुभ

अप्रैल—बनते परिवेश में नए आयाम मिलेंगें। पदोन्नति एवं मंगलोत्सव की खबर मन में खुशी लाएगा। आय में अच्छी वृद्धि होगी। मर्यादा रहित व्यवहार से बचें। मित्र वर्ग के कार्यों में भी मदद करने का शुभ योग बनेगा। राजकीय लाभ मिलेगा। ता. 3, 4, 5, 17, 18, 19 अशुभ दायक। **मई**—पारिवारिक अंतर्विरोध से बचें। समय का सदुपयोग करें। भाग्य विकास, देश-विदेश में व्यवसाय जैसी योजना बनेगी। माता का स्वास्थ्य कमजोर होगा। लेन-देन में धोखा हो सकता है। चोरी-चोट एवं अपमान जनक स्थिति उत्तरार्द्ध माह में बन सकती है। ता. 10, 11, 12, 27, 28 अशुभ हैं। **जून**—खुशी एवं गम दोनों प्रकार के योग बनेंगे। पशुओं से बचकर चलें। उधार प्रदत्त राशि प्राप्ति में चिंता से घर में अशांति। नया कार्य की भागदौड़ चलेगी। लोकोपवाद से बचे। यात्रा का विचार बदलेगा। अशोभनीय कृत्य भी शत्रु पक्ष से संभव। ता. 3, 4, 5, 6, 29, 30 अशुभ रहेंगी। **जुलाई**—नया धंधा में राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। ग्रहचाल से आपको भामाशाह का सहयोग। पुराना विवाद सुलझ जाएगा। रुका हुआ कार्य बनेगा। कृषि जन्य कार्य में अच्छा लाभ बनेगा। मित्रों द्वारा शुभ यात्रा का लाभ मिलेगा। इच्छा के अनुरूप कार्य लाभ का शुभ योग। ता. 10, 11, 12, 21, 22, 23, 24 अशुभ हैं। **अगस्त**—कोई विवाद भूमि-भवन का बन सकता है। देव दर्शनों की यात्रा का शुभ योग। वाहन में सावधानी। पति-पत्नि की कटुता का योग। कुछ अपरिचित लोगों से संपर्क बन सकता है। ता. 19, 20, 22, 24 अशुभ हैं। **सितम्बर**—पारिवारिक विवाद कानूनी मामला बन सकता है। बढ़ती जिम्मेदारियों को निभाना होगा, अन्यथा हानि दायक रहेगा। अधिकारी की हां में हां मिलाते रहे तो कार्य बनेगा। रुका हुआ पैसा (धन) बाद में प्राप्त होगा। घुड़सवारी का लाभ मिलेगा। ता. 18, 19, 20, 27, 28 अशुभ हैं। **अक्टूबर**—माह में हास्य विनोद कार्यों में खर्चा होगा। संतान प्राप्ति का योग बनेगा। इच्छा नहीं होते हुए भी कहीं जाना पड़ेगा। रोजगार लाभ मिलेगा। भूमि भवन वाहन जैसा शुभ लेन-देन बैंकिंग प्रक्रिया से प्राप्ति का योग। राजकीय कार्य गति का भी शुभदायक लाभ मिलेगा। ता. 3, 6, 7, 9, 22, 24 अशुभ हैं। **नवम्बर**—स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ी होगी। देश-विदेश की यात्रा में भी परिवर्तन होगा। घर में शुभ कार्य का योग भी बनेगा। ग्रह चाल में मित्र वर्ग काफी मदद करेंगे। कलात्मक कार्य संबंधी धंधा शुभ रहेगा। ता. 12, 13, 14, 20, 22, 28 अशुभ हैं। **दिसम्बर**—माह में दौड़-धूप ज्यादा होगी। परिवार में कुछ अनैतिक कार्य का योग बनता है। किसी स्थान पर गुमराह हो सकते। मित्र वर्ग के परामर्श से कार्य करें, तो बचाव होगा। असीमित लेन-देन से धंधा में गड़बड़ी बनेगी। कानूनी विवाद में फंसने से आर्थिक हानि होगी। ता. 17, 18, 20, 27, 29 अशुभ हैं। **जनवरी 2016**—माह में यात्राएं ज्यादा होंगी। विभागीय या घरेलू कार्य का लाभ प्राप्त होगा। भूमि भवन लेन-देन का शुभयोग माधुर्य भाव से कार्य योजना में वृद्धि होगी। घर में नए सदस्य का आगमन होगा। यात्रा में भी आर्थिक लाभ जैसा योग बनेगा। ता. 1, 2, 3, 27, 28, 29 अशुभ हैं। **फरवरी**—घरेलू कार्यों से चिंता दायक स्थिति एवं उदासी योग बनता है। आमोद-प्रमोद का कार्य से लोकोपवाद बनेगा। भूमि भवन लेन-देन से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। शादी पार्टियों में आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। कृषि जन्य कार्य में भी आमदनी अच्छी होगी। स्थान परिवर्तन योग बनता है। ता. 5, 6, 7, 8, 19, 20 अशुभ हैं। **मार्च**—व्यवसाय की गति बढ़ेगी। साझेदारी से नया कार्य चलते काम में मिलेगा। राजकीय सेवा कार्य का लाभ मिलेगा। आर्थिक लाभ प्राप्ति का रास्ता खुलेगा। विवाह जन्य शुभ कार्य या धार्मिक आयोजन करेंगे। चौपाये जानवरों से चोट का योग है। ता. 7, 8, 9, 20, 21, 22 अशुभ हैं। **अप्रैल**—परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा। राजनीतिक पार्टियों से संपर्क बढ़ेगा। घरेलू कार्यों की भागदौड़ से कार्य गति में बाधा उत्पन्न होगी। उधार प्रदत्त राशि

की प्राप्ति का संकट बना रहेगा। स्वास्थ्य में गड़बड़ी का योग बनता है। यात्रा लाभ अच्छा रहेगा। ता. 20, 22, 29, 30 अशुभ हैं।

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

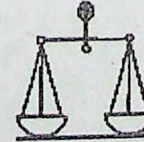


कन्या

स्वामी-बुध नग-पन्ना शुभ

अप्रैल–परिश्रम से लाभ प्राप्ति योग। जीवन साथी का योगदान शुभदायक रहेगा। नया धंधा का शुभ योग। मित्र वर्ग से कुछ अनबन। प्रतियोगिता परीक्षा का परिणाम शुभदायक। हृदय रोग संबंधी पीड़ा का योग। भूमि भवन विवाद से बचें। ता. 19, 20, 21, 27, 29, 30 अशुभ हैं। **मई**–आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधी परेशानी बढ़ेगी। पिता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अनजाने स्थान पर धोखा। लेखन प्रकाशन कार्यों में गति बढ़ेगी। आय कम खर्चा ज्यादा होगा। भवन संबंधी लेन-देन शुभ। ता. 10, 11, 12, 24, 26, 27 अशुभ हैं। **जून**–विद्यार्थी वर्ग के लिए शुभदायक। धार्मिक यात्रा का योग। रोजगार में वृद्धि होगी। यत्र-तत्र भ्रमण का योग। उत्तम कार्य बनेगा। संतान पक्ष का भाग्योदय योग। गुप्त रोग की संभावना, योगासन करें। ता. 2, 3, 4, 18, 19, 20, 22 अशुभ हैं। **जुलाई**–माह में आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। पुराने रुके कार्य में सफलता का योग। व्यवसाय में भी शुभता के साथ प्रगति अच्छी होगी। घर का वातावरण अच्छा रहेगा। ता. 12, 13, 14, 17, 25 अशुभ हैं। **अगस्त**–माह में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। राजकीय कार्यों में लाभ होगा। विद्यालाभ शुभ दायक रहेगा। परिवार में मंगल दायक कार्य योग। कारोबार बढ़ेगा। राजनीतिक कार्य अच्छे बनेंगे। परिवार में धार्मिक खर्चा भी होगा। देश-विदेश की यात्रा का शुभ योग। चिंता दूर होकर शांति होगी। ता. 10, 11, 12, 17, 18 अशुभ हैं। **सितम्बर**–माह में नयें रोजगार की प्राप्ति होगी। विवाह जैसा अन्य धार्मिक कृत्य चलेगा। वाहन प्राप्ति के प्रबल योग वनेंगे। उधार प्रदत्त राशि आने का योग। संतान सुख दायक योग बनेंगे। कारोबार बढ़ेगा। ता. 3, 4, 5, 7, 20, 22, 24 अशुभ हैं। **अक्टूबर**–रिश्तेदारों में अपनी पहचान अच्छी बनेगी। सिर शूल बाधा बनेगी। संतान को बीमारी जैसा योग। नवीन कार्यों में प्रगति योग। आमदनी बढ़ेगी। स्वयं का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। भूमि भवन लेन-देन बनेगा। धार्मिक यात्रा योग। मशीनरी धंधा में लाभ। भाग्योदय योग। ता. 4, 5, 6, 7, 16, 17, 20 अशुभ हैं। **नवम्बर**–माह में नवीन कार्य, मित्र वर्ग मदद करेंगे। संतान पक्ष को नया रोजगार प्राप्त होगा। वाहन की सुख-सुविधा योग। हृदय रोग जैसी बीमारी का प्रभाव। विदेशी सामग्री का संकलन संग्रह से व्यापारिक गति बढ़ेगी। ता. 14, 15, 16, 19, 28 अशुभ हैं। **दिसम्बर**–मानसिक चिंता बढ़ेगी। स्वास्थ्य लाभ अच्छा मिलेगा। आमदनी का स्तर बढ़ेगा। भूमि भवन का शुभदायक योग। अध्यात्म कार्य का योग। व्यापार की गति शुभ दायक बनेगी। अचानक चोट या चोरी का योग। ता. 20, 22, 24, 29, 30 अशुभ हैं। **जनवरी 2016 ई.**–रोजगार का अच्छा अवसर बनेगा, मित्रों का समागम भी। स्थान परिवर्तन या पदोन्नति जैसा योग। वाहन क्रय का योग। पुरुषार्थ परिश्रम का लाभ मिलेगा। घर में नया शुभ खर्चा होगा। संतान को चोट या सिरशूल पीड़ा का योग। कृषि जन्य कार्यों का लेन-देन शुभ होगा। ता. 11, 12, 13, 19, 20, 22 अशुभ हैं। **फरवरी**–परिजनों का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। न्यायालय संबंधी प्रकरण में विजय योग। गृह कार्यों में विवाद योग। विस्फोटक स्थान में कार्य करें तो सावधान। कुत्ता या अन्य जंतु के काटने का योग। संतान प्राप्ति का शुभयोग। ता. 5, 6, 7, 9, 22, 27 अशुभ हैं। **मार्च**–आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यवसाय एवं रोजगार की गति बढ़ेगी। राजकीय सेवा का लाभ। राजनीतिक गति की सहभागिता का लाभ मिलेगा। घर का वातावरण भक्ति एवं सेवामय रहेगा। ता. 14, 15, 16, 27, 28 अशुभ। **अप्रैल**–माह आर्थिक दृष्टि से कष्टदायी होगा। फिर भी कारोबार बढ़ेगा। मित्र वर्ग मदद करेंगे। कुछ नए मित्रों का संगम होगा। मनोरंजन संबंधी खर्चा बढ़ेगा राजकीय कार्यों से लाभ मिलेगा। उधार राशि प्राप्ति का योग। देश-विदेश यात्रा का योग। ता. 1, 3, 4, 7, 9, 12, 14 अशुभ।

तुला-रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते



तुला

स्वामी-शुक्र नग-हीरा शुभ

अप्रैल–माह में कुछ नवीन योजनाओं का लाभ बनेगा। सरकारी सेवाओं का भी लाभ बनेगा। बढ़ती जिम्मेदारियों से आय भी बढ़ेगी। रुका हुआ रुपया प्राप्ति का योग। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। लंबी यात्रा करना हितकर नहीं रहेगा। देश-विदेश से कार्य संबंधी शुभ समाचार प्राप्ति का योग। ता. 15, 16, 18, 24, 27 अशुभ हैं। **मई**–जोड़-तोड़कर कार्य में सफलता बनने का आसार बनेगा। माह में अधिकांश समय आपके अनुकूल रहेगा। सूझ-बूझ के द्वारा कार्य में नया रूप बनेगा। स्थानान्तरण सुखदायक योग। आलस्य का त्याग करें तो आर्थिक लाभ भी अच्छा बनेगा। धन प्राप्ति में मित्र वर्ग का योगदान शुभ। ता. 19, 20, 24, 29, 30 अशुभ हैं। **जून**–परिवार में अन्तर्कलह पर नियत्रंण रखना होगा। अधूरे कार्यों में सफलता का योग। परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा। खाद्य व्यापार में अच्छा लाभ भी मिलेगा। पुराना विवाद न्यायालय तक जाने का योग। घरेलू कार्य का दायित्व बढ़ेगा। ता. 1, 2, 3, 4, 22, 24, 26 अशुभ हैं। **जुलाई**–नया टेंडर प्राप्ति योग, नया कारोबार एवं रोजगार प्राप्ति का सुखद योग। घर में नई खुशी का योग। लेखन संपादन जैसा योग बनेगा। निराशा-आशा में परिवर्तित होगी। हास्य विनोद भी बढ़ेगा। कारोबार बढ़ेगा। ता. 7, 8, 9, 10, 22, 24 अशुभ हैं। **अगस्त**–मास में चिंता दायक योग ज्यादा बनेंगे। भाग्य का सितारा सामान्य बनेगा। कपड़े के लेन-देन में लाभ प्राप्त होगा। देश-विदेश की यात्रा में अर्थ हानि योग। राजकीय सेवा का लाभ बनता है। ननिहाल में शुभ खर्चा में भाग दौड़ करनी पड़ेगी। ता. 9, 10, 11, 14, 27, 29 अशुभ हैं। **सितम्बर**–नया संपर्क सूत्र बढ़ेगा। राजसेवा में स्थान परिवर्तन का योग। दोस्तों के साथ मौज मस्ती से मन में खुशी। चलते-चलते हृदय घात योग भी। ता. 14, 15, 17, 19 अशुभ हैं। **अक्टूबर**–मास में हानि-लाभ का योग बराबर रहेगा। मित्रों से विवाद बन सकता हैं दाम्पत्य जीवन में नया मोड़। रोजमर्रा की गति में बढ़ोत्तरी शुभ होगी। स्वास्थ्य भी गड़बड़ हो सकता है। मेहनत के कार्य में सफलता का योग। ता. 13, 14, 15, 20, 28 अशुभ हैं। **नवम्बर**–सामाजिक कार्यों का दायित्व बढ़ेगा। स्थानान्तरण का सुख दायक योग। अधिकारी वर्ग से अनबन रहेगी। पुरानी चोरी का मामला भी सुलझेगा। मेहनत से सितारा चमकेगा। व्यापार में वृद्धि का योग। देश-विदेश से समाचार शुभदायक मिलेगा। अतीत संबंधी कार्य का विवाद बढ़ सकता है। ता. 19, 20, 22, 24, 27 अशुभ हैं। **दिसम्बर**–पारिवारिक अंतर्कलह से बचें तो ठीक रहेगा। पुराना विवाद पुनः बढ़ सकता है। उत्तरार्द्ध में आर्थिक लाभ अच्छा बनेगा। पुरानी उधार राशि लेन-देन में भी विवाद बढ़ेगा। गृहस्थी जीवन में भी विवाद के बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। ता. 4, 5, 6, 7, 23, 24, 28 अशुभ। **जनवरी 2016 ई.**–राजकीय ठेका कार्य, सेवा कार्य, आर्थिक सहयोग भी प्राप्त होने का योग। भूमि-भवन का लेन-देन

में लाभ शुभ। पत्र-पत्रिका संपादन का योग बढ़ेगा। ग्रह चाल से मित्रों के साथ कार्य का सुखद योग बनेगा। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। चोरी चोट का योग। ता. 17, 18, 20, 24, 27 अशुभदायक हैं। **फरवरी**–कार्य क्षेत्र बढ़ेगा। पत्राचार व्यवहार से चलता कार्य बिगड़ेगा। स्वास्थ्य में गड़बड़ी, स्थान परिवर्तन का योग। धार्मिक अनुष्ठान के प्रति जनता में सेवा का दायित्व बढ़ेगा। मित्र वर्ग संकट के समय सहयोग करेंगे। यात्रा योग भी। ता. 19, 20, 22, 28 अशुभ हैं। **मार्च**–कार्य की दौड़-धूप चलेगी। छोटी यात्रा लाभप्रद रहेगी। अनुसंधान योग बनेगा। पी.एच.डी. या एम.फिल की शिक्षा का लाभ प्राप्त होगा। जन संपर्क बढ़ेगा। पशुओं से चोट योग। तीर्थाटन की यात्रा शुभ दायक। घटना से बचें तो शुभ। ता. 15, 16, 17, 28, 30 अशुभ हैं। **अप्रैल**–भाग्योदय में विडंबना दायक स्थिति बनेगी। नये कार्य बावत स्त्री वर्ग की सलाह लेनी पड़ेगी। वाहन या पशु लेन-देन का योग। माता-पिता का स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। धार्मिक कार्यों में खर्चा बढ़ेगा। यात्रा योग भी। ता. 10, 11, 14, 25, 26 अशुभ।

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

वृश्चिक



स्वामी-मंगल नग-मूंगा शुभ

अप्रैल–दिनचर्या ठीक नहीं चलेगी। स्थानान्तरण सुखदायक होगा। भूमि-भवन लेन-देन का योग भी अच्छा बनेगा। शिक्षा में अच्छी प्रगति का योग। परिश्रम का लाभ मिलेगा। अधिकारी वर्ग से तालमेल शुभ दायक। ता. 19, 20, 21, 22, 29 अशुभ कारक हैं। **मई**–ग्रह चाल के सुखद योग से सामाजिक कार्य योजना में सफलता। बहन की तरफ से श्रेष्ठ सुझाव प्राप्ति। पशुओं से बचकर, रास्ता पार सावधानी से करें। स्वास्थ्य में गड़बड़ योग। ऋण का भुगतान जैसा योग। यात्रा योग भी लाभप्रद। ता. 10, 11, 14, 20, 22 अशुभ। **जून**–माह में आमदनी में गड़बड़ योग। लेन-देन में भी कुछ हानि। नेत्र रोग बाधा, लेकिन मित्र वर्ग की सहायता से सभी कार्य सफल होंगे। भूमि भवन लेन-देन बनेगा तथा अचानक खर्चा से कुछ परेशानी भी बढ़ेगी। यात्रा में सावधान! ता. 16, 17, 18, 20, 23, 24 अशुभ हैं। **जुलाई**–कार्य में गति बढ़ेगी। शैक्षिक दृष्टि से सफलता दायक योग। कार्यालय निर्देशानुसार काम में रुकावट का समाधान होगा। धन प्राप्ति का शुभ रास्ता खुलेगा। कार्यालय के निर्देश सरकारी क्षेत्र से लाभ प्राप्त होगा। यात्रा भी। ता. 13, 14, 15, 16, 29 अशुभ हैं। **अगस्त**–व्यापारिक गतिविधियां बढ़ेंगी पशुधन के क्रय-विक्रय से लाभ बढ़ेगा। पारिवारिक विरोध से बचें। साहित्य सम्मान प्राप्ति का योग। वाहन क्रय का शुभ योग। छोटी यात्रा मे भी अर्थ लाभ। ता. 16, 17, 18, 19, 28, 29 अशुभ रहेंगी। **सितम्बर**–जोड़-तोड़ से काम में सफलता मिलेगी। नया कार्य तथा यात्रा का योग। दाम्पत्य जीवन में श्रेष्ठ कार्य से अर्थ प्राप्ति भी बनेगी। माह में समय अनुकूल रहेगा। शत्रु पक्ष की प्रबलता से शारीरिक चोट का योग भी। सावधान! ता. 12, 13, 14, 27, 28 आशुभ हैं। **अक्टूबर**–ग्रह गोचर मध्यम चलेगा। अधिकारी वर्ग से कुछ अनबन हो सकती है। पंच फैसला का निर्णय आपको लाभ दायक होगा। व्यापार धंधा में अच्छी प्रगति का समय चल रहा है। विदेशी यात्रा से शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। ता. 4, 8, 13, 14, 19, 22 अशुभ हैं। **नवम्बर**–पारिवारिक विवाद या चोट या अपमान जनक घटना से गुजरना पड़ेगा। स्थान परिवर्तन एवं पदोन्नति का योग। राजनीतिक परिदृश्य संकट दायक रहेगा। इस माह में खर्चा ज्यादा। मानसिक विकृति ज्यादा तथा तर्क-वितर्क से झगड़ा। ता. 22, 24, 27, 30 अशुभ। **दिसम्बर**–माह में ग्रह चाल अनुकूल रहेगा। मित्रों द्वारा अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजन में सम्मानित करेंगे। कुछ शरारती तत्व से गुप्त योजना बनाकर हानि पहुंचाएंगे। धार्मिक यात्रा से लाभ। ता. 12, 13, 14, 20, 21 अशुभ हैं। **जनवरी 2016 ई.**–सू+मं+के+चं के योग से विद्या पक्ष प्रबल। अच्छे अंक प्राप्त कर यश प्राप्ति योग। यत्र-तत्र मान-सम्मान मिलेगा। शिर शूल से कुछ परेशानी भी। मित्र वर्ग द्वारा सुखदायक योजना प्राप्त होगी। ता. 22, 27, 29, 30 अशुभ हैं। **फरवरी**–स्वास्थ्य गड़बड़ होगा। भाग्योदय का चांस भी जा सकता है। हनुमान चालीसा का पाठ करना शुभ दायक होगा। शनि ग्रह से मशीनरी उद्योग का काम प्राप्त होने का योग है। लोकोपवाद की धारणा से चिंता नहीं करें। मित्र बंधुओं का सहयोग श्रेष्ठ होगा। ता. 11, 13, 16, 18, 27 अशुभ हैं। **मार्च**–माह में नये कार्य का शुभ योग। मांगलिक खर्चा होगा। कुछ स्थानों की यात्रा भी शुभदायक रहेगी। स्त्री वर्ग की सलाह से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। साहित्य संगीत कला में वर्चस्व बढ़ेगा। रुके हुए कार्य में सफलता। यात्रा भी शुभ। ता. 10, 11, 12, 23, 24 अशुभ हैं। **अप्रैल**–कुछ विवाद जन्य तथ्य सामने आएंगे। कार्यालय संबंधी कार्य का दायित्व बढ़ेगा। गौ, पशु, भैंस चौपाया जानवरों के लेन-देन में लाभदायक योग। मशीनरी धंधा में लाभ। देश-विदेश से शुभ समाचारों की प्राप्ति। कृषि जन्य साधनों के लेन-देन से अर्थ प्राप्ति योग। ता. 1, 2, 3, 4, 17, 18 अशुभ।

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

धनु



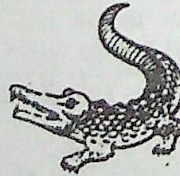
स्वामी-गुरु नग-पुखराज शुभ

अप्रैल 2015–धंधा में वृद्धि, आय बढ़ेगी। परिजनों की राय से नया धंधा या मांगलिक कार्य का योग। भौतिक सुख बढ़ेगा। महिला वर्ग के कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी। मशीनरी, दुकान का योग या वाहन क्रय का शुभ योग। मित्रों द्वारा आर्थिक सहयोग प्राप्ति। ता. 3, 4, 5, 6, 22, 24 अशुभ दायक। **मई**–माह ग्रह योग से प्रतिकूल रहेगा। कार्य में सफलता का योग कम। परिश्रम अधिक करना होगा। व्यापारी वर्ग को हानि। भूमि भवन लेन-देन का शुभ योग। विवादित मामलों में विजय आपकी होगी। विदेश यात्रा का योग भी बनता है। ता. 3, 4, 5, 6, 22, 24 अशुभ। **जून**–माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। न्यायालय संबंधी प्रकरण भी भूमि-भवन के मामले में बन सकता है। रोजगार प्राप्ति एवं राजकीय सेवा का योग बनता है। दक्षिण दिशा की यात्रा से आर्थिक लाभ बनेगा। बड़े भाई से कुछ अनबन योग। यात्रा योग। ता. 19, 20, 22, 24 अशुभ हैं। **जुलाई**–पत्रकारिता जैसी पढ़ाई के प्रति मन चेतन होगा। व्यवसाय बढ़ेगा। रोजगार प्राप्ति। बैंक से ऋण प्राप्ति का योग। मित्र वर्ग प्रत्येक गतिविधि में सहयोग करेंगे। स्त्री वर्ग को कोई रोग। यात्रा का लाभ भी शुभ रहेगा। ता. 13, 14, 15, 25, 27 अशुभ हैं। **अगस्त**–कार्य योजना में शुभ लाभ बनेगा। मान-सम्मान प्राप्ति भी। मित्र वर्ग द्वारा आर्थिक लाभ ऋण रूप में प्राप्त होगा। घर में कुछ अशांति। नया धंधा के लिए भाग दौड़ करनी चाहिए। भूमि भवन के विवाद से बचें। ता. 15, 16, 17, 22, 28 अशुभ हैं। **सितम्बर**–स्थान परिवर्तन जैसा योग बनेगा। नौकरी में तरक्की का योग बनेगा। पशुओं का व्यापार करें तो अर्थ लाभ अच्छा होगा। असामाजिक तत्वों से बचकर कार्य करें। चोट चोरी जैसी अशुभ दायक घटना का योग। लेखन, संपादन जैसे कार्य में मन लगेगा। बैंकिंग लेन-देन में सावधान रहें। ता. 2, 3, 4, 5, 22, 26 अशुभ हैं। **अक्टूबर**–स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ होगा। मानसिक रोग हो सकता है। मां दुर्गा की साधना से लाभ होगा। नये मित्र वर्ग द्वारा स्वास्थ्य सेवा लाभ मिलेगा। भौतिक सुख बढ़ेगा। पत्थर, ईंट, चूना, कली, सीमेंट लेन-देन में माह शुभ दायक रहेगा। धंधा में धन प्राप्ति पत्नी के योगदान से

बनेगी। ता. 5, 6, 7, 8, 27, 28 अशुभ हैं। **नवम्बर**–कारोबार बढ़ेगा। रोजगार प्राप्ति भी होगी। धंधा में उद्योग स्थापना तथा स्टेशनरी, रेडीमेड वस्त्र, ज्वैलर्स में लाभ बनेगा। रुपयों के लेन-देन में गड़बड़ी। हवाई यात्रा इस माह में शुभ दायक नहीं रहेगी। जलयान यात्रा से भी बचें तो शुभ रहेगा। लंबी यात्रा न करें। ता. 17, 18, 19, 24, 27 अशुभ हैं। **दिसम्बर**–कार्य में वृद्धि। बुजुर्गों द्वारा स्थापित धंधा में कुछ परिवर्तन योग। भूमि भवन लेन-देन या भवन मरम्मत जैसा योग। शैक्षिक स्तर भी शुभदायक रहेगा। धंधा में साझेदारी द्वारा भी लाभ। खान-परिवहन जैसा व्यवसाय तथा टेंडर का लाभ भी मिलेगा। ता. 20, 23, 24, 27, 28 अशुभ हैं। **जनवरी 2016**–धंधा में वृद्धि का योग। मित्र वर्ग का सहयोग अच्छा रहेगा। रोजगार सेवा तथा राजकीय सेवा का लाभ प्राप्त होगा। निजी शिक्षण संस्थान की स्थापना का योग। उद्योग स्थापना का भी शुभ योग। विवाह जैसा शुभ कार्य बनेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अधूरे कार्य की सफलता। ता. 20, 22, 24, 28 अशुभदायक। **फरवरी**–घर में कुछ अशांति का वातावरण। न्यायालय विवाद में सफलता का योग। स्टेशनरी संबंधी नये व्यवसाय की स्थापना बनेगी। जनरल दुकान का शुभारंभ योग। मित्र वर्ग इस कार्य में भाग दौड़ करके सहयोग दिलाएंगे। ता. 1, 2, 3, 4, 27, 28 अशुभ हैं। **मार्च**–जो प्रयास कर रहे हैं, उनका लाभ भी मिलेगा। नौकरी एवं व्यवसाय में आतंकवाद या असामाजिक घटकों से परेशानी। हनुमान चालीसा का पाठ करें। सेवा कर्मियों का स्थानान्तरण योग। भूमि भवन का क्रय-विक्रय नहीं करें। ता. 5, 6, 7, 8, 20, 22 अशुभ हैं। **अप्रैल**–माह में मांगलिक, सगाई संबंध का खर्चा भी होगा। व्यवसाय में प्रगति योग। कृषक वर्ग के लिए आर्थिक दृष्टि से माह शुभदायक रहेगा। स्त्रीवर्ग से शुभ प्रेरणा एवं परामर्श प्राप्ति का योग। धार्मिक यात्रा का शुभ योग। ता. 3, 4, 5, 6, 20, 22, 24, 27 अशुभ हैं।

मकर-भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

मकर



स्वामी-शनि नग-नीलम शुभ

अप्रैल 2015–माह के बनते बिगड़ते परिवेश में नए आयाम मिलेंगे। पदोन्नति एवं खुशी के समाचारों की प्राप्ति। आय अच्छी होगी। कृषि आय का भी लाभ अच्छा। मित्र वर्ग धार्मिक यात्रा के लिए बाध्य करेंगे। शादी का शुभ योग। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता। राजकीय सेवा लाभ। ता. 6, 7, 8, 9, 15, 16, 17 अशुभ। **मई**–रोजमर्रा कार्यों में वृद्धि होगी। मेला उत्सव की सेवा का लाभ बनेगा। कानूनी विवाद में फंसने का योग। पशुधन क्रय-विक्रय, खाद्य तेलों के धंधा में लाभ बनेगा। परिवार में नए सदस्य का आगमन होगा। ग्रह चाल से कार्य हितकर बनेंगे। उधार राशि प्राप्ति योग भी। ता. 3, 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ हैं। **जून**–मित्र वर्ग के साथ कार्य की रूप रेखा अच्छी बनेगी। धंधा भी अच्छा चलेगा। दिनचर्या में काफी परिवर्तन आयेगा। जन संपर्क बढ़ेगा। जोड़-तोड़ के साथ कार्य में सफलता की प्राप्ति। लंबी यात्रा इस माह में नहीं करें तो शुभ। ता. 19, 20, 22, 27, 28 अशुभ हैं। **जुलाई**–कार्य में भागदौड़ ज्यादा चलेगी। परिजनों-संबंधियों के सहयोग से बनता काम बिगड़ सकता है। भूमि भवन का शुभ लेन-देन बनेगा। व्यवसाय में साझेदारी हितकर काम करेगी। धार्मिक यात्रा का शुभ योग। स्त्री वर्ग को आभूषण प्राप्ति या निर्माण का योग। यात्रा भी। ता. 12, 13, 14, 19, 20, 22 अशुभ हैं। **अगस्त**–राजकीय सेवारत कर्मियों का स्थान परिवर्तन योग। लेन-देन के मामलों में पत्नी, बहन, मां की सहायता से लाभ होगा। प्रकाशन, लेखन, संपादन जैसे कार्य में सहभागिता निभायेंगे। ता. 20, 22, 24, 27, 28 अशुभ हैं। **सितम्बर**–व्यापारिक दृष्टि से माह में अच्छा लेन-देन चलेगा। साहित्य लेखन, प्रकाशन का शुभ योग। साझेदारी में कारोबार करें तो लाभ मिलेगा। लंबी धार्मिक यात्रा का योग। पुराना विवाद का उजागर होना नजर आ रहा है। राजकीय प्रक्रिया में शुभदायक योग। ता. 10, 11, 13, 14, 17, 28 अशुभ हैं। **अक्टूबर**–कृषि जन्य कार्य में अच्छा लाभ। संतान का भाग्योदय होगा। मांगलिक कार्यों का दौर चलेगा। धन प्राप्ति का सुखद योग। मान- सम्मान प्राप्ति का शुभदायक योग। यात्रा योग। ता. 12, 13, 14, 20, 22, 24 अशुभ हैं। **नवम्बर**–आमदनी बढ़ेगी। रोजगार प्राप्ति का अच्छा योग। संस्थान स्थापना का शुभदायक योग। भाग्योदय का योग। अतीत के संदर्भ की बातों से सामाजिक सेवा का लाभ मिलेगा। जनकार्य योग बनेंगे। राजकीय कार्यों में लाभ भी होगा। ता. 9, 10, 21, 24, 27, 28 अशुभ। **दिसम्बर**–परीक्षा परिणाम शुभदायक रहेगा। नए कार्य धंधे का अच्छा अवसर भी बनेगा। विवादित योग से सावधान रहें। अधिकारी वर्ग से अनबन का योग। अपना संतुलन न बिगाड़ें। पुराने विवाद में भी विजय योग। स्त्री पक्ष की प्रेरणा लाभदायक। ता. 15, 16, 17, 20, 24 अशुभ हैं। **जनवरी**–ग्रह योग कुछ प्रतिकूल रहेंगे। देव दर्शन का लाभ भी मिलेगा। उद्योग का संस्थान केन्द्र खोलने जैसा योग। मांगलिक कार्यों में खर्चा ज्यादा स्थान परिवर्तन तथा पूर्वी यात्रा में आर्थिक लाभ योग है। ता. 1, 2, 5, 17, 18, 19 अशुभ हैं। **फरवरी**–मान-सम्मान बढ़ेगा। बढ़ते उत्तरदायित्व को सतर्कता से संभाले। शत्रु पक्ष की कटुता से बचें। व्यवसाय में भी कुछ परिवर्तन बनेगा। पशु धन के क्रय-विक्रय में भी लाभ। असफलता में शनि ग्रह की वस्तुओं का दान करें तो वांछित सफलता का योग। ता. 4, 5, 6, 7, 24, 25 अशुभ। **मार्च**–माह के दिनचर्या में परिवर्तन बनेगा। भूमि-भवन, लेन-देन या भवन निर्माण जैसा योग। रोजमर्रा की वस्तुओं की उपयोगिता में कमी आयेगी। पारिवारिक कलह बढ़ेगी। नये कार्य में सामाजिक सदस्यों का योगदान मिलेगा। आमदनी बढ़ेगी। कृषि जन्य कार्य में लाभ अच्छा बनने का योग। ता. 10, 11, 12, 24, 25 अशुभदायक। **अप्रैल**–विद्या पक्ष शुभदायक रहेगा। जन संपर्क भी बढ़ेगा। घर में अतिथियों का आगमन भी शुभदायक बनेगा। मशीन लेन-देन या वाहन मोटर, ट्रैक्टर जैसे क्रय-विक्रय योग अच्छे बनते हैं। गृहस्थी जीवन सुख दायक रहेगा। मांगलिक कार्य, गृह प्रवेश, विवाह जैसा शुभ योग। ता. 17, 18, 19, 23, 24 अशुभ।

कुम्भ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

कुम्भ



स्वामी-शनि नग-नीलम शुभ

अप्रैल 2015–नौकरी योग अच्छा रहेगा। रोजगार प्राप्ति का शुभ योग। स्वास्थ्य भी अच्छा बनेगा। कारोबार बढ़ेगा, नवीन कार्य के प्रति सहयोग के लिए स्त्री वर्ग का दायित्व बढ़ेगा, प्रेरणा मिलेगी। लाभ होगा। यश प्राप्ति के शुभ अवसर बनेंगे। मांगलिक विवाह योग। भूमि भवन का शुभ योग। यात्रा योग। ता. 14, 15, 16, 20, 24 अशुभ। **मई**–कृषि कार्य जन्य योग अच्छा बनेगा। घरेलू कार्यों में उलझन। आमदनी का शुभ योग बनेगा। उद्योग स्थापना जैसा कार्य बनेगा। काम काज के लिए विदेश जाने जैसा योग। स्त्री वर्ग का स्वास्थ्य बिगड़ने का योग। पिता का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। शिर शूल योग भी। ता. 1, 3, 5, 6, 17, 18 अशुभ हैं। **जून**–किसी बहस बाजी में न फंसे। कार्य की गति धीमी चलेगी। गृह सुख में कमी का योग। व्यवसाय में भी हानि दायक योग। शिक्षा का लाभ अच्छा मिलेगा। पुराना विवाद खत्म या

विजय मिलेगी। माता-पिता से पैतृक संपत्ति की प्राप्ति होगी। धार्मिक पद यात्रा का लाभ भी मिलेगा। ता. 10, 11, 12, 21, 22, 23 अशुभ। **जुलाई**-यह माह भाग्योदय मय आर्थिक लाभदायक रहेगा। नए धंधा का शुभ योग। नौकरी में परिवर्तन या पदोन्नति का योग। किसी से विद्रोह नहीं करें हानिदायक रहेगा। माह में भाग दौड़ घरेलू कार्य संबंधी बढ़ेगी। प्रतियोगी परीक्षा में शुभ योग। स्वास्थ्य लाभ भी शुभदायक। ता. 22, 24, 28, 29 अशुभ हैं। **अगस्त**-माह में पारिवारिक आनन्द का अच्छा योग। देश-विदेश से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। पुराने विवाद में काफी शत्रुता बढ़ेगी। वाहन से भी सावधानी रखें। हृदय रोग पीड़ा का योग। धनागमन सुख दायक रहेगा। ग्रह चाल से व्यापारिक, आर्थिक स्थिति अच्छी चलेगी। ता. 10, 11, 13, 20, 22 अशुभ हैं। **सितम्बर**-माह में राजनीतिक लाभ मिलेगा। रुका हुआ धन प्राप्ति में अभी सफलता नहीं मिलेगी। संतान पक्ष को बीमारी जैसा योग चिंता दायक भी। जोड़-तोड़ करके कार्य सफलता की गति बढ़ेगी। धार्मिक यात्राएं एवं शुभ कार्य में खर्चा भी बढ़ेगा। ता. 16, 17, 19, 27, 28 अशुभ हैं। **अक्टूबर**-माह आपके लिए खुशियां लेकर आएगा। मित्र वर्ग भी कार्य में मदद करेंगे। दाम्पत्य जीवन संकट मय बन सकता है। तलाक जैसा वातावरण भी, लेकिन पंच पंचायती से शांति बनेगी। नया कार्य योग। ता. 13, 14, 15, 19 अशुभ हैं। **नवम्बर**-उच्च शिक्षा का लाभ छात्रवृति प्राप्ति तक भी बन सकता है। लोकोपवाद से बचें। परिवार में नये सदस्य का आगमन होगा। कानूनी विवाद से बचें। विवाद का निपटारा स्वयं के स्तर पर करना शुभ दायक रहेगा। देश-विदेश में व्यापारिक गतिविधियां बढ़ेंगी। यात्रा भी। ता. 18, 20, 24, 28 अशुभ हैं। **दिसम्बर**-चल-अचल दोनों संपत्ति में वृद्धि का योग। धंधा अच्छा चलेगा। मशीनरी कार्य, राजकीय नौकरी में पदोन्नति के सुखद योग बनेंगे। कुछ संकट लेकिन तुरंत समाधान बनेगा। भाग्य योग अच्छा। बुध ग्रह शुभ दायक। आर्थिक लाभ भी होगा। ता. 14, 17, 19, 24 अशुभ हैं। **जनवरी 2016**-ग्रह चाल अनुकूल होने से अधुरे कार्य में सफलता। रचनात्मक प्रवृति में गति बढ़ेगी। माता-पिता के आशीर्वाद से व्यापार की गति बढ़ेगी। दिनचर्या में परिवर्तन नहीं करें। मित्र वर्ग के साथ यात्रा योग अच्छा बनेगा। न्यायालय संबंधी विवाद में हार बनेगी। ता. 7, 8, 9, 20, 22 अशुभ हैं। **फरवरी**-शारीरिक कार्य में पीड़ा दायक योग। पशुओं से बचकर चलें। बढ़ती जिम्मेदारियों से संकट योग। पशुओं के लेन-देन में सफलता व लाभ बनेगा। वाहन ट्रक, ट्रेक्टर, मोटर, कार में भी अच्छा लाभ बनेगा। मान-सम्मान भी बढ़ेगा। ता. 4, 5, 6, 20, 22, 23 अशुभ हैं। **मार्च**-माह आर्थिक दृष्टि से शुभ दायक रहेगा। खुशी दायक समाचारों की प्राप्ति भी। आमदनी बढ़ेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। परिवार में नये सदस्य का आगमन। देश-विदेश की यात्रा का अच्छा योग। ता. 3, 4, 7, 8, 20, 22, 24 अशुभ। **अप्रैल**-राजकीय सेवा योग। पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। रुका हुआ कार्य पूरा होगा। विद्यालय या तकनीकी शिक्षा संस्थान खोलने का योग बनेगा। परिवार में काफी कार्य में व्यस्तता बढ़ेगी। जन संपर्क बढ़ने से सभी कार्यों में सहयोग मिलेगा। ता. 7, 8, 9, 13, 14, 30 अशुभ है।

मीन-दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

मीन



स्वामी-गुरु नग-पुखराज शुभ

अप्रैल 2015-धंधा में वृद्धि होगी। बैंक-बैलेंस बढ़ेगा। मित्र वर्ग का सहयोग सराहनीय रहेगा। परीक्षा में भी अच्छी सफलता का योग। भौतिक सुख बढ़ेगा। परिश्रम का लाभ भी मिलेगा। चारधाम यात्रा जैसा धार्मिक कार्य में खर्चा बनेगा। पुत्र प्राप्ति का शुभ योग। भूमि भवन का भी योग है। ता. 3, 6, 7, 9, 14, 17 अशुभदायक। **मई**-नौकरी पेशा वाले जातकों के लिए तबादला योग बनेगा। रुपयों के हेर-फेर में हानिदायक योग है। भौतिक सुख बढ़ेगा। महिला वर्ग से सुखद वार्ता बनेगी। व्यवसाय की गति बढ़ेगी। यात्रा भी शुभदायक। सत्संग जैसा शोभनीय कार्य बनेगा। ता. 13, 14, 17, 30 अशुभ हैं। **जून**-माह में भाग दौड़ ज्यादा बढ़ेगी। नौकरी पेशा वालों को काफी भय। वाणी पर नियंत्रण रखें। सत कार्यों में, धार्मिक आयोजनों में भाग ज्यादा लेंगे। घर में नया सदस्य का जन्म शुभदायक होगा। ता. 10, 11, 14, 20, 22 अशुभ हैं। **जुलाई**-राजकीय सेवा का योग सुखदायक रहेगा। व्यापार में नई ऐजेंसी का संपर्क बनेगा। संतान पक्ष का भाग्योदय भी बनेगा। विद्या में रुचि बढ़ेगी। घरेलू उलझनों से मानसिक विकृति। कृषि जन्य उपकरणों के विक्रय से अर्थ की अच्छी प्राप्ति। यात्रा भी। ता. 14, 17, 20, 29 अशुभ हैं। **अगस्त**-नौकरी धंधा में तरक्की होगी। भूमि भवन का विवादित मामला में विजय का योग। सुखद कार्य का अवसर विदेशी व्यापार से बनेगी। तीर्थाटनों का दर्शन मंगलमय रहेगा। मित्र लाभ भी। ता. 13, 14, 20, 24 अशुभ हैं। **सितम्बर**-चलते कार्य में अड़चन या स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ी का योग। राजकीय कार्यों में सफलता का योग। साहित्य सेवा में मान-सम्मान प्राप्ति का अवसर। मित्र के विवाद से हानि भी बन सकती है। भाग दौड़ से आर्थिक लाभ की प्राप्ति होगी। ता. 17, 18, 19, 24, 27 अशुभ। **अक्टूबर**-पारिवारिक कार्य गति में तीव्रता से अच्छा योग। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सर्वत्र मान-सम्मान जैसा शुभ योग। राजनीतिक दृष्टि से भी आपका वर्चस्व बढ़ेगा। यात्रा शुभ। ता. 11, 14, 15, 19, 20 अशुभ हैं। **नवम्बर**-धार्मिक कृत्यों में अग्रगामी रहकर सामाजिक सेवा का लाभ जन-जन तक पहुंचायेंगे। माता-पिता के स्वास्थ्य में बाधा से परेशानी शनि+केतु से बनने का संकेत है। संपादन एवं प्रकाशन संबंधी कार्य का अच्छा योग। नया धंधा में उद्योग, शिक्षण संस्थान, प्लास्टिक उद्योग में लाभ दायक योग। ऐतिहासिक दृश्यों की यात्रा का लाभ भी। ता. 1, 3, 4, 5, 18, 19 अशुभ हैं। **दिसम्बर**-माह में भौतिक सुख बढ़ेगा। उद्यापन, सत्संग या अन्य धार्मिक आयोजनों का अच्छा लाभ मिलेगा। व्यवसाय में सेवा का अच्छा लाभ प्राप्त होगा। विवाद में मौन धारण करना शुभदायक रहेगा। स्त्री वर्ग से कुछ अपमान जनक शब्द भी सुनना पड़ सकता है। कार्यों में गति बढ़ेगी। ता. 5, 7, 9, 12, 15 अशुभ। **जनवरी 2016**-माह में विवाह-सगाई, भवन निर्माण या गृह प्रवेश जैसा शुभ योग। लंबी यात्रा व्यवसाय की दृष्टि से बन सकती है। सामाजिक सेवाओं का लाभ लोग लेंगे। दुर्घटना से कुछ बचाव रखें। पशुओं से भय चोट योग। ता. 12, 14, 17, 29 अशुभ हैं। **फरवरी**-माह में परिवार में पिता-पुत्र में वैमनस्यता योग। पत्नी या मां को शिर पीड़ा की बाधा रहेगी। कृषि जन्य वस्तुओं का नया व्यापार का योग। कुटुम्ब में कोई अशुभ घटना से उदासी बनेगी। गृहस्थ सुख में कमी। प्रतियोगिता परीक्षा में विफलता का योग। ता. 14, 15, 22, 24 अशुभ हैं। **मार्च**-माह में आर्थिक संकट बढ़ेगा। परिवार में कोई अशोभनीय कृत्य से सामाजिक स्तर भी गिरेगा। जुखाम, खांसी जैसी सामान्य बीमारी भी घातक बन सकती है। नौकरी प्राप्ति का योग। पत्नी को भी रक्तचाप योग। लेखन, संपादन, प्रकाशन जैसा शुभ योग। ता. 11, 14, 17, 19 अशुभ। **अप्रैल**-माह में व्यापार कारोबार बढ़ेगा। वकालत पेशा हो तो श्रेष्ठ लाभ बनेगा। दुराचार के अशुभ योग से बचें। कार्य गति बढ़ेगी। राजकीय कर्मियों का स्थान परिवर्तन योग। परामर्श दाता का लाभ मिलेगा। प्रशासन द्वारा सम्मान प्राप्ति योग। शुभ मांगलिक कार्य भी। ता. 14, 15, 19, 22 अशुभ हैं।

शेयर बाजार तेजी-मन्दी समीक्षा सं. 2072 वि.

प्रमुख ग्रहों में वर्ष 2015 में 14 जुलाई तक वृहस्पति कर्क राशि में उच्च का रहेगा उसके बाद यह सिंह राशि में जायेगा। इसी दौरान वृश्चिक राशि का शनि वक्री चाल से चलना आरंभ करेगा। अप्रैल, मई से फिर एक बार उछाल आने की उम्मीद रहेगी। कुछ हद तक आयेगी भी जून में बाजार तेज रहेगा लेकिन जुलाई में फिर इस पर गाज गिरेगी। अगस्त-सितम्बर तक शेयर बाजार का मौसम खराब जैसा ही रहेगा। उसके बाद अक्टूबर से उद्योगों के अच्छे परिणाम आने से बाजार संभलेगा। सरकार की उदारीकरण और विनिवेश की नीतियों से अक्टूबर, नवम्बर में बाजार तेज रहेगा। दिसम्बर में बाजार में घटबढ़ रहेगी।

बाजार को ठठाने और गिराने वाले कुछ तात्कालिक फैक्टर भी होते हैं जिनका हम अभी से अनुमान नहीं लगा सकते हैं। यह सब देश की राजनीति, सरकार की नीतियां, युद्ध, व्यापार और दुनियाभर की अर्थव्यवस्थाओं में उतार-चढ़ाव, आपसी सांठ-गांठ के चलते समय-समय पर रंग दिखाती रहती हैं।

वर्ष 2015 में ग्रहों की कारगुजारी बहुत विचित्र रहेगी। वर्ष 2015 के जनवरी से मार्च तक प्लवंग नामक संवत्सर के राजा और मंत्री चन्द्रमा की भूमिका बेहतरीन रहेगी। परन्तु इसके बाद कीलक संवत्सर के राजा शनि और मंत्री मंगल युवा वर्ग के लिए ज्यादा उत्साही नहीं रहेंगे। अगर थोड़ी-सी मदद मिलेगी भी तो बुध और शुक्र के संकुचित संचार से मिलेगी। जिसमें बीच-बीच में हफ्ते दस दिन के लिए बाजार उछलते हुए दिखाई देंगे। पूरे साल में जनवरी से लेकर दिसम्बर तक की मोटी-मोटी तेजी-मन्दी का नीचे अवलोकन करें। शेयर बाजार की जैसी स्थिति सर्राफा, तिलहन, दलहन और कमोडिटी मार्किट की भी रहेगी। सभी बस्तुओं की मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक तेजी-मन्दी अलग से बनाकर भेजी जायेगी।

महीने वार शेयर बाजार उतार-चढ़ाव इस प्रकार से है :-

जनवरी 2015—यह महीना शेयर बाजार के लिए कुल मिलाकर अच्छा ही रहेगा। 1 से 3 जनवरी तक घट-बढ़। 4 से 15 जनवरी तक एक तरफा तेजी। 16 से 18 तक भाव में घट-बढ़। 19 से 22 तक हल्की तेजी। 23 से 25 तक अच्छी तेजी। 26 से 31 तक मन्दी के बीच में एक-दो दिन की तेजी।

फरवरी—फरवरी के महीने में बाजार अच्छी तेजी पकड़ सकता है। 1 से 4 फरवरी के बीच में बाजार तेज रहेंगे। 5 से 7 फरवरी तक मन्दी। 8 से 14 फरवरी तक अच्छी तेजी। 15 से 22 तक घट-बढ़। 23 से 25 तक भावों में सुधार। 26 से 30 तक एक तरफा तेजी।

मार्च—सरकार की आर्थिक नीतियों और उद्योग धन्धों की आंशिक सफलता के चलते शेयर बाजार सन्तोष जनक रूप से सेंसैक्स को आगे बढ़ायेगा। नये बजट से पहले बाजार स्थिर रहेगा। 1 से 7 मार्च तक बाजार में अच्छी तेजी। 8 मार्च से 14 मार्च के बीच में शेयरों में उल्टा रुख अनेक शेयर धराशायी। 15 मार्च से 19 मार्च तक मामूली घट-बढ़। 20 से 22 मार्च के बीच में शेयरों में फिर तेजी। 23 से 27 मार्च तक अच्छी तेजी। 28 से 31 मार्च तक मन्दी या घट-बढ़।

अप्रैल—कई प्रकार के ढांचागत विकास की सरकारी घोषणाओं और अच्छी रवी की फसल की आशा में अप्रैल का महीना शेयर बाजार को अच्छी तेजी दे सकता है। 1-7 अप्रैल तक शेयरों में मन्दी का जोर रहेगा। बीच में एक आधे दिन की ही तेजी। 8-11 अप्रैल तक शेयर तेज होंगे। 12 से 18 अप्रैल तक पुन: मन्दी का दौर चलेगा। 19 से 24 तक शेयरों में मामूली घट-बढ़। 25 से 30 अप्रैल तक अनेक शेयर संभल कर उठेंगे। निफ्टी और बीएससी में धीरे-धीरे सूचकांक आगे बढ़ेंगे।

मई—यह महीना बाजार में संशोधन का है। कुछ दिन तक बाजार नीचे गिरकर आगे उठ सकता है। 1 से 10 मई तक शेयरों में मामूली तेजी रहेगी। 10 से 14 मई के बीच में मन्दी या घट-बढ़ का दौर है। 15 से 21 मई तक शेयर बाजार अच्छी तेजी पकड़ेगा। 22 से 26 मई के बीच में उछाल आयेंगे। 27 से 31 मई में पुन: शेयर नीचे गिर सकते हैं।

जून—यह महीना भी शेयर बाजार के लिए बहुत अच्छा नहीं है। 1 से 7 तारीख तक सभी शेयर सुस्त रहेंगे । 8 से 11 तक कुछ प्रमुख शेयरों में तेजी आयेगी। 12 से 14 जून के बीच में अच्छी तेजी दर्ज होगी। 15 से 20 जून के बीच में तेजी या घट-बढ़ का दौर रहेगा। 21 से 25 जून के बीच में शेयर पुन: मन्दी। 26 से 31 के बीच में शेयरों में मामूली तेजी दर्ज होगी।

जुलाई—यह महीना बाजार को आगे बढ़ाने में मदद करेगा। 1 से 6 जुलाई तक शेयरों में मन्दा रहेगा। 7 से 12 जुलाई के बीच में हल्की तेजी आ सकती है। 13 से 18 जुलाई के बीच में शेयर बाजार पुन: सुस्त रहेगा। बीच-बीच में एक दो दिन की तेजी है। 19 से 22 जुलाई के बीच में शेयरों में कुछ तेजी दिखाई देगी। 23 से 25 जुलाई के बीच में शेयर तेज होंगे। 26 से 30 जुलाई के बीच शेयर फिर घट-बढ़ के शिकार होंगे।

अगस्त—यह महीना शेयरों के लिए अधिकांश रूप से मन्दी का ही है। 1 से 10 अगस्त के बीच में शेयर कभी आगे तो कभी पीछे रहेंगे। दो-तीन दिन की तेजी बरकरार रहेगी। 11 से 16 अगस्त के बीच में शेयरों में मामूली तेजी आ सकती है। 17 से 22 अगस्त के बीच में शेयर अच्छे तेज होंगे। 23 से 26 अगस्त के बीच में शेयरों में भारी गिरावट दर्ज होगी। 27 से 31 अगस्त के बीच में शेयरों में हल्की तेजी आयेगी।

सितम्बर—अच्छी खरीफ की फसल की उम्मीद में तथा दलहनों के अच्छे उत्पादन से बाजार के सैंटीमैन्ट अच्छे रहेंगे। 1 से 7 सितम्बर तक शेयर बाजार मन्दी और घट-बढ़ के फेर में रहेगा। 8 से 11 तक कुछ प्रमुख शेयर मन्दी से उबर जायेंगे। 12 से 16 के बीच में शेयरों में तेजी होगी। 17 से 24 के बीच में शेयरों में एक तरफा तेजी का रुख रहेगा। 25 से 30 सितम्बर के बीच में शेयर फिर नीचे लुढ़क सकते हैं।

अक्टूबर—इस महीने शेयर बाजार में कुछ सुधार। विदेशी धन के आगमन से और महंगाई घटने से 1 से 6 तक शेयर तेज रहेंगे। 7 से 9 के बीच में मन्दी के झटके लगेंगे। 10 से 14 के बीच में फिर तेजी भड़क सकती है। 15 से 19 अक्टूबर के बीच में एक तरफा तेजी का रुख रहेगा। 20 से 24 तक शेयर बाजार घट-बढ़ के दायरे में रहेगा। 25 से 28 के बीच में हल्की तेजी। 29 से 31 तक कुछ ऊंचे स्तर पर शेयर बाजार चलेगा।

नवम्बर—यह महीना कुल मिलाकर तेजी का है। 1 से 3 तारीख तक बाजार में तेजी। 4 से 7 तक मन्दी। 8 से 14 तक भाव में घटा-बढ़ी। 15 से 19 तक मजबूती और सुधार। 20 से 22 तक फिर मन्दी। 23 से 28 नवम्बर तक अच्छी तेजी।

दिसम्बर—विदेशी धन की आवक और विनिवेश के अन्य उपायों के चलते यह महीना भी बाजार के लिए श्रेष्ठ रहेगा। 1 से 4 दिसम्बर तक बाजार सुस्त रहेगा। 5 से 9 दिसम्बर तक बाजार में तेजी आ सकती है। 10 से 18 तक हल्की मन्दी का दौर चलेगा। 19 से 21 तक अच्छी तेजी। 22 से 25 तक मन्दी का झटका। 26 से 28 तक फिर तेजी।

विशेष रिपोर्ट—शेयर बाजार के अलावा सोना, चांदी तथा किसी भी किस्म की कमोडिटी पर या MCX पर सभी जिन्सों की तेजी-मन्दी की मासिक, त्रैमासिक और छमाही तेजी-मन्दी की स्पेशल रिपोर्ट सभी कमोडिटी मार्केट की तैयार करके फैक्स/ई.मेल अथवा कूरीयर से तत्काल भेजी जाती है।

लेखक– **पं. केवल आनन्द जोशी**
D-I/C-33A, Janakpuri, N.Delhi-110058
Ph. : 09868716447, 09810202780
E-mail : kajoshi46@gmail.com

चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव संवत् 2072 वि.

चैत्र—चैत्र मास का नवीन चन्द्रदर्शन 21 मार्च सन् 2015 ई. शनिवार को हो रहा है। अतः आगे वैशाख में अनाजों में तेजी का संकेत। उदित समय चन्द्रमा की दक्षिण नौंक उच्च होगी जो कि प्रत्येक जिंस के भावों में तेजी को बल प्रदायक है। रुई, सूत, सन, सोना, चांदी, ऊन व ऊनी वस्त्र, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली के भावों में तेजी, किसी-किसी जिंस में विशेष तेजी। गुड़, खांड, शक्कर के भावों में घटा-बढ़ी से नर्मी, तुष, धान्य मंहगें।

वैशाख—वैशाख मास का नवीन चन्द्रदर्शन 20 अप्रैल सन् 2015 ई. सोमवार को हो रहा है। अतः अनाजों के भावों में तेजी को बल प्रदायक है। चन्द्रदर्शन वृष राशि अंतर्गत कृतिका नक्षत्र में हो रहा है। अतः इसका दक्षिण श्रृंग उच्च होगा। (विशेष यदि चन्द्रमा पर रात को कुंडल/मंडल हो तो अन्न का संग्रह करें आगे लाभ की प्राप्ति) मूंग, मौंठ, तिल, तेल, सरसों के भावों में तेजी। वस्त्र, रुई, सूत, सन, सोना व रंगों के भावों में तेजी। चांदी व अनाज के भावों में घटा-बढ़ी से मंदी, अफीम, सरसों, गुड़, खांड, गेहूं, जौ, चना के भावों में तेजी।

ज्येष्ठ—ता. 19 मई सन् 2015 ई. मंगलवार को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 45 मुहूर्ति रोहिणी नक्षत्र अंतर्गत हो रहा है। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, चावल, लकड़ी, कोयला, चौपाये पशु, रसीले पदार्थ, गुड़, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन के भावों में तेजी, मूंग, घी के भावों में अच्छी तेजी का योग। सोना, चांदी, तांबा, शेयर्स के भावों में अच्छी घटा-बढ़ी तो होगी, लेकिन मान तेजी का ही रहेगा।

प्र. आषाढ़—ता. 18 जून सन् 2015 ई. गुरुवार को प्रथम आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 45 मुहूर्ति पुनर्वसु नक्षत्र युक्त हो रहा है। अतः इसके दोनों श्रृंग शूल के समान उच्च होंगे। अतः रुई, सूत, सूती, ऊनी, रेशमी वस्त्र, सरसों, घी, तिल तेलों के भावों में तेजी कारक व सोना, चांदी, गुड़, खांड में घटा-बढ़ी से मंदी व गेहूं, चना, जौ, सूत के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी व आषाढ़ मल मास अर्थात् पुरुषोत्तम मास का भी आरंभ, बाजार भावों में तेजी।

द्वि. आषाढ़—ता. 18 जुलाई सन् 2015 ई. शनिवार को द्वितीय आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ति है। अतः व्यापारिक जिंसों में घटा-बढ़ी की चाल रहेगी। अनाजों के भावों में तेजी का योग। सोना, चांदी के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी, कड़ुवे पदार्थ व अफीम के भावों में तेजी सतर्कता से कार्य करें। रुई, सूत वस्त्र, सरसों, मूंगफली तेज, सोना, चांदी शेयर्स घटा-बढ़ी से तेजी।

श्रावण—ता. 16 अगस्त सन् 2015 ई. रविवार को श्रावण मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन सिंह राशि अंतर्गत 30 मुहूर्ति है। अतः प्रत्येक व्यापारिक जिंसों में घटा-बढ़ी का मान होगा व गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, ग्वार में तेजी। उदित समय चन्द्रदर्शन के दोनों श्रृंग समान होंगे। यदि चन्द्रमा पर श्वेत मंडल हो वर्षा व रक्त मंडल से वर्षा की कमी व दो श्वेत कुंडल हों तो वर्षा अधिक, एवरेज के भावों में मंदी, गुड़, तिल, तेल, सोना, चांदी के भावों में तेजी, रुई के भावों में घटा-बढ़ी से मंदी में रहकर तेजी का झटका। रस, कस, घी व किराना के भावों में तेजी प्रधान रहेगी।

भाद्रपद—ता. 15 सितंबर सन् 2015 ई. मंगलवार को भाद्रपद मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन मंगलवासरी व कन्या राशि अंतर्गत है। अतः इसके दोनों श्रृंग शूल के समान होंगे जो कि तेजी को बल प्रदायक हैं। चौपाये पशुओं के व्यापार में हानि व भय हो। रुई, कपास, मूंग, लवण, तिल, तेल, घी के भावों में तेजी। सोना, चांदी, हल्दी, सरसों व शेयर्स के भावों में भी घटा-बढ़ी से अच्छी तेजी, रुई गिर कर तेज, गुड़, सरसों व मूंगफली के भावों में भी तेजी।

आश्विन—ता. 14 अक्टूबर सन् 2015 ई. बुधवार को आश्विन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 15 मुहूर्ति व तुला राशि अंतर्गत हो रहा है। अतः इसके दोनों श्रृंग समान होंगे जो कि सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, सूत, कपास के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी को बल देंगे। घी के भावों में नर्मी, रुई, सन, वस्त्र, वारदाना, जूट, गुड़, शक्कर में नर्मी, गेहूं, जौ, चना, दलहन के भावों में तेजी।

कार्तिक—ता. 13 नवंबर सन् 2015 ई. शुक्रवार को कार्तिक मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 15 मुहूर्ति, वृश्चिक राशि व ज्येष्ठा नक्षत्र अंतर्गत हो रहा है। अतः इसका उत्तरी श्रृंग उच्च हो तो मंदी का अंदेशा व गेहूं, जौ व चना के भावों में मंदी का झटका। सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल मंदे, रुई, सूत, सोना, चांदी घटा-बढ़ी से गिरकर तेज।

मार्गशीर्ष—ता. 12 दिसंबर सन् 2015 ई. शनिवार को मार्गशीर्ष मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। अतः आगे महीने में अनाजों में तेजी का योग, यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ति है। अतः रुई, सूत, वस्त्र, सोना, चांदी, सरसों, मूंगफली व शेयर्सों के भावों में अच्छी तेजी का झटका, अफीम, गुड़, खांड के भावों में गिरकर तेजी। रस व रसीले पदार्थों में तेजी, गेहूं, जौ, चना, दलहन में घटा-बढ़ी से मंदी, घी के भावों में तेजी।

पौष—ता. 11 जनवरी सन् 2016 ई. सोमवार को पौष मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्रदर्शन सोमवासरी व 30 मुहूर्ति मकर राशि अंतर्गत श्रवण नक्षत्र में हो रहा है। अतः उदित समय इसके दोनों श्रृंग बराबर होंगे। प्रत्येक वस्तु में घटा-बढ़ी व आगे महीने में अनाजों में तेजी। वस्त्र, रुई, सोना, सूत के भावों में तेजी, चांदी व अनाज में घटा-बढ़ी से मंदी, तिल, तेल, सरसों, घी, अफीम व नशीले पदार्थों के भावों में तेजी।

माघ—ता. 9 फरवरी सन् 2016 ई. मंगलवार को माघ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 15 मुहूर्ति कुंभ राशि अंतर्गत है। सभी तरह के चुनिन्दा अनाज वायदा व्यापार में तेजी, रुई गिर कर तेज। सोना, चांदी में घटा-बढ़ी से तेजी। गुड़, सरसों, मूंगफली, राजमा, मूंग, मौंठ, उड़द, चना, अरहर, मसूड़, जौ, गेहूं के भावों में तेजी। पश्मीना ऊन मंदी, व्यापारी वर्ग सतर्कता से कार्य करें व लाभ लें। शेयर्स सोना, चांदी के व्यापारी तुरंत क्रय-विक्रय कर लाभ लें।

फाल्गुन—ता. 10 मार्च 2016 ई. गुरुवार को फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ति व मीन राशि अंतर्गत रेवती नक्षत्र में हो रहा है। इसका दक्षिणी श्रृंग उच्च हो तो सभी प्रकार की जिंसों में तेजी का संकेत व रुई, सूत, सूती वस्त्र, रेशमी, ऊनी वस्त्र व सरसों, घी, तिल, तेल नारियल के भावों में तेजी, सोना, चांदी, गुड़, खांड के भावों में मंदी कारक।

निर्देशक—डा. बसंत लाल व्यास, लेखक—पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया, मथुरा (उ.प्र.)
फोन: 05663-273353, 273492
मो: 09720686322, 09445676654

ग्रहों का शेयर्स मार्केट पर प्रभाव सन् 2015 ई.

जनवरी 2015

ता. 3 जन. नक्षत्र वृद्धि से भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 5 जन. तेजी को बल। ता. 11 जन. आयरन, खाद्यान्न, मेडीसन शेयर्सों में तेजी का झटका। ता. 14 जन. भावों में अच्छी घटा-बढ़ी का योग। सतर्कता से कार्य करें। ता. 17 बाजार में एक तरफा तेजी का योग। ता. 20 शनि अमावस्या तेजी को बल देगी। ता. 22 जन. मंदी का योग। ता. 28 जन. एकाएक अफवाहों से बाजार में घटा-बढ़ी।

फरवरी 2015

ता. 2 फर. भावों में मंदी का योग। ता. 5 फर. बुध उदय से अच्छी घटा-बढ़ी, रुख देखकर कार्य करें। ता. 10 फर. भावों में तेजी। ता. 13 फर. सभी चुनिंदा शेयर्सों में तेजी। ता. 16 मंदी का योग। ता. 18 फर. भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 21 फर. भावों में नर्मी का माहौल बने। ता. 27 घटा-बढ़ी से सायं तक भाव तेज।

मार्च 2015

ता. 1 मार्च भावों में घटा-बढ़ी से मंदी को बल मिलेगा। ता. 6 मार्च गुरुवारी पूर्णिमा से रसायन, कैमीकल्स, धातुवाना शेयर्सों में तेजी का झटका। ता. 8 मार्च भावों में अच्छी तेजी-मंदी का योग, सतर्कता से कार्य करें। ता. 12 मार्च मेष के शुक्र से भावों में तेजी। ता. 14 मार्च भावों में मंदी का योग। ता. 20 मार्च भावों में गिरकर सुधार। ता. 22 मार्च एक तरफा अच्छी या मंदी लाईन निकल सकती है। ता. 27 मार्च भावों में घटा-बढ़ी।

अप्रैल 2015

ता. 1 अप्रैल भावों में घटा-बढ़ी से समता। ता. 4 अप्रैल शनिवारी पूर्णिमा एक सप्ताह के अंदर सभी शेयर्सों में तेजी का झटका। ता. 6 अप्रैल भावों में तेजी का झटका। ता. 9 गुरु मार्गी से भावों में मंदी का झटका। ता. 12 अप्रैल मेषे बुध से भावों में मंदी। ता. 14 अप्रैल घटा-बढ़ी से सायं तक भावों में सुधार। ता. 17 अप्रैल तिथि क्षय दो दिन के अंदर तेजी का योग। ता. 20 चन्द्रदर्शन से तेजी। ता. 26 अप्रैल भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 30 भावों में तेजी का योग।

मई 2015

ता 1 मई भावों में मंदी का योग। ता. 4 सोमवासरी पूर्णिमा भी मंदी कारक है। ता. 5 मई प्रतिपदा भौमवासरी भावों में तेजी ता. 11 मई दो सप्ताह के अंदर आयरन, मेडीसन, बैंकिग व खाद्य पदार्थों से जुड़े शेयर्सों में तेजी। ता. 15 वृष संक्रांति भावों में सायं तक मंदी। ता. 18 मई सोमवती अमावस्या मंदी कारक है। ता. 20 मई तीन दिनों तक तेजी, सतर्कता से कार्य करें। ता. 23 मई तिथि वृद्धि दो दिन के अंदर मंदी। ता. 28 मई गिरे भावों में सुधार।

जून 2015

ता. 2 जून आज जनरल लाईन में तेजी प्रधान रहेगी। ता. 6 जून भावों में घटा-बढ़ी के साथ मंदी। रुख देखकर कार्य करें। ता. 11 जून दो दिन के अंदर भावों में तेजी। ता. 15 जून भावों में दो दिन तक तेजी। ता. 22 भावों में सर्पमुखी चाल से मंदी। ता. 26 भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 30 भावों में तेजी का योग।

जुलाई 2015

ता. 2 जुलाई गुरुवासरी पूर्णिमा भावों में घटा-बढ़ी से मंदी को बल मिलेगा। ता. 4 भावों में तेजी। ता. 8 जुलाई भावों में एक तरफा अच्छी तेजी-मंदी की लाईन, रुख देखकर कार्य करें। ता. 10 भावों में घटा-बढ़ी। ता. 16 भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 18 जुलाई भावों में तीन दिन के अंदर मंदी। ता. 24 जुलाई सभी चुनिंदा शेयर्सों में तेजी। ता. 28 जुलाई भावों में तेजी का झटका। ता. 31 जुलाई सभी शेयरों में तेजी को बल मिलेगा।

अगस्त 2015

ता. 1 अग. आज भावों में मंदी प्रधान रहेगी। ता. 3 अग. तिथि क्षय दो दिन के अंदर तेजी का झटका। ता. 7 अग. बुध उदय मंदी को बल देगा, सतर्कता से कार्य करें। ता. 11 अग. गुरु अस्त सर्पमुखी चाल से शेयर्सों में तेजी का योग। ता. 16 नक्षत्र वृद्धि से तेजी। ता. 19 अग. तिथि वृद्धि रुख देखकर कार्य करें अच्छी मंदी भी आ सकती है। ता. 24 अग. भावो में विशेष घटा-बढ़ी। ता. 28 अग. तिथि क्षय व शनिवासरी पूर्णिमा अच्छी तेजी का योग। ता. 30 भावों में आंशिक मंदी।

सितम्बर 2015

ता. 3 सितं. तिथि क्षय से दो दिन के अंदर तेजी। ता. 6 सितं. गुरु उदय से सभी चुनिन्दा शेयर्सों में एक तरफा अच्छी तेजी-मंदी की लाईन रुख देखकर कार्य करें। ता. 15 सितं. भावों में घटा-बढ़ी से सुधार। ता. 20 सितं. सभी चुनिंदा शेयर्सों में तेजी का योग। ता. 26 सितं. भावों में सर्पमुखी चाल से तेजी।

अक्टूबर 2015

ता. 3 अक्टू. आज जनरल लाईन तेज रहेगी। ता. 6 अक्टू. बुध उदय से भावों में अच्छी घटा-बढ़ी। ता. 11 अक्टू. तीन दिन के अंदर सभी चुनिंदा शेयर्सों में मंदी का झटका। ता. 15 अक्टू. भावों में दोपहर बाद सुधार। ता. 17 अक्टू. भावों में घटा-बढ़ी। ता. 23 अक्टू. दो दिन के अंदर भावों में तेजी। ता. 29 अक्टू. तीन दिन के अंदर सभी प्रकार के चुनिंदा शेयर्सों में तेजी का झटका।

नवम्बर 2015

ता. 1 नवं. भावों में तेजी। ता. 7 दो दिन के अंदर भावों में तेजी। ता. 11 नवं. दीपावली। ता. 3 अक्टू. व ता. 8 नवं. को बाजार भावों में जो लाईन रहेगी वही लाईन दिसंबर मध्य तक रहने का योग। चन्द्रदर्शन गुरुवासरी भावों में तेजी। ता. 16 नवं. भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 20 नवं. भावों में घटा-बढ़ी। ता. 24 नवं. दो दिन के अंदर तेजी। ता. 29 नवं तेजी।

दिसम्बर 2015

ता. 1 दिसं. भावों में आज नर्मी रहेगी। ता. 6 दिसं. भावों में दोपहर बाद गिरकर तेजी। ता. 10 घटा-बढ़ी से भावों में तेजी। ता. 15 भावों में घटा-बढ़ी के साथ मंदी। ता. 19 दिसं. तिथि क्षय से दो दिन तेजी का रुख रहेगा। ता. 25 दिसं. भावों में तेजी का रुख रहेगा। ता. 29 दिसं. भावों में गिरकर सुधार आयेगा।

विशेष तेजी योग-(i) ता. 16 मार्च तुला राशिगत शनि वक्री हो रहे हैं। अतः 16 मार्च के दो मास पश्चात् शेयरों के भावों में मंदी का योग व दो मास तक तेजी का योग। किसी-किसी में विशेष चमक रहेगी। (ii) जिस दिन ऐन्द्र, व्यतिपात या वैधृति योग हो उस दिन शेयरों में तेजी अवश्य होती है।

निर्देशक-डा. बसंत लाल व्यास, लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया, मथुरा (उ.प्र.)

वार्षिक व्यापार भविष्य सन् 2015 ई.

लेखकः
पं. अनिल कुमार व्यास

जनवरी–2015

यह मास पौष शुक्ल 11 गुरुवार से आरंभ होकर माघ शुक्ला 12 शनिवार तक रहेगा। मकर के बुध से सोना, चांदी, तांबा, धातुवाना व इनसे जुड़े शेयर्सों के भावों में तेजी व गेहूं, जौ, चना, चावल, ज्वार, बाजरा के भाव मध्यम रहेंगे। ता. 4 जन. "यदा भूमि पुत्रो कुंभे" से रुई, चांदी के भावों में अच्छी घटा-बढ़ी, घी, गुड़, शक्कर, सोना के भावों में अच्छी तेजी। अनाजों के भावों में घी तेजी। ता. 6 जन. श्रवणे शुक्र से सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर, मूंग, मौठ, उड़द, अनाजों के भावों में मंदी, तिल, तेल, सरसों के भावों में तेजी का झटका, रुई मंदी होकर तेजी ले। ता. 11 जन. उ.षा. के सूर्य योग से दो सप्ताह के अंतर्गत उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खांड, शक्कर, कपास, पीपल मूल, चमड़ा, सरसों के भावों में तेजी। ता. 14 जन. मकर संक्रांति बुध वासरी से ऊन, रेशम, मेवाजात, किशमिश, पिस्ता व ऊंट, बैलों के भावों में तेजी, सोना, चांदी, सूत के भाव उठकर गिर जाएंगे। घी, चावल, नारियल, केशर, छार-छवीला, जावत्री, कत्था के भाव गिर कर तेजी बना लेंगे। इस संक्रांति में मंदे घी का संग्रह कर वैशाख में बेच कर लाभ लें। यदि हल्दी मंदी में संग्रह करें आगे फागुन में लाभ। ता. 17 जन. राहु-केतु का नक्षत्र परिवर्तन व धनि. शुक्र से चावल, मूंग, मौठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, सोना, चांदी, रुई, कपास में तेजी, गेहूं में मंदी। ता. 20 जन. माघी अमावस्या शनिवारी से प्रत्येक व्यापारिक जिंसों में तेजी का झटका। ता. 22 जन. कुंभ राशौ शुक्रे से रुई, चांदी, गुड़, खांड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, ज्वार, बाजरा के भावों में मंदी का झटका। ता. 28 जन. शत. के शुक्र से गेहूं, गुड़, खांड, शक्कर, चावल, घी, सरसों, रुई, चना के भावों में तेजी, सोना, चांदी तेज रहें।

विशेष–सूर्य देव भृगु नाथ का होय एक राशि पर योग।
धान्य मंदा, घी तेज फसल, मंहगाई पर संयोग।।
माघी मावस पूर्णिमा जो मंगल शनिवार।
शोक लोक में परस्पर नेताओं में तकरार।।

फरवरी–2015

यह मास माघ शुक्ला 13 रविवार से आरंभ होकर फाल्गुन शुक्ल 10 शनिवार तक रहेगा। माघ मास में पूर्णिमा व अमावस्या भौमवासरी है। बाजार में तेजी का माहौल रहे। ता. 5 फर. को [illegible] उदय हो रहे हैं। अतः गेहूं, जौ, चना, चावल, ज्वार, बाजार में नर्मी रहेगी। ता. 11 फरवरी मीन के भौम योग से सोना, रुई, तृण, काष्ठ व लकड़ी से बनी हुई वस्तुओं में तेजी का संचार रहेगा। चांदी में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजी का योग सतर्कता से कार्य करें। चौपाये पशुओं के भाव में तेजी का झटका। ता. 13 फर. कुंभ संक्रांति शुक्रवासरी योग से ज्वार, बाजरा, मक्का में मंदी का झटका। गेहूं, जौ, चना के भाव गिरकर तेजी लेंगे। सोना, चांदी, जूट, सन, तांबा के भावों में घटा-बढ़ी से समता को बल, अलसी, तिल, तेल, सरसों, रुई, बिनौला, हल्दी, गुड़ खांड, शक्कर के भावों में तेजी। यहां मंदी वस्तुओं का क्रय कर दो मास पश्चात् लाभ लें। ता. 20 फर. चन्द्रदर्शन शुक्रवासरी है अतः सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र व ऊन में मंदी कारक व सोना, चांदी, रुई में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 28 फर. अनाज दाना के भावों में घटा-बढ़ी से सुधार, शेयर्स बाजार में घटा-बढ़ी से सायं तक तेजी का योग।

विशेष–कुंभ सूर संक्रमणे में सुख समृद्धि साज।
नमक, तेल महंगा रहे, मंदा रहे अनाज।।
फाल्गुन शुक्ला सप्तमी जो कृतिका नक्षत्र।
भादव मावस के दिना वर्षा हो सर्वत्र।।

मार्च–2015

यह मास फाल्गुन शुक्ल 11 रविवार से आरंभ होकर चैत्र शुक्ल 11 मंगलवार तक रहेगा। ता. 1 मार्च रेवत्यां भृगो से रुई, कपास, चांदी, चावल, चंदन, कपूर, गुड़, खांड, शक्कर व जवाहरातों के भावों में मंदी का योग। ता. 5 मार्च होली गुरुवासरी है अतः सोना, चांदी, धातुवाना, रसायन, मेडीसन शेयर्सों में तेजी। रस, कस, लवण के भावों में घटा-बढ़ी से समता को बल। चौपाये पशु व वाहनों के भावों में तेजी। ता. 8 फर. कुंभे बुध से अलसी, रुई के भावों में मंदी, चांदी गिरकर तेज, घी, तेल, गुड़, सरसों, रसीले फल व पदार्थों में तेजी। ता. 12 मार्च "यदा मेघ राशौ शुक्रे" से गेहूं, जौ, चना, अन्न व घी के भावों में तेजी। सोना, चांदी घटा-बढ़ी से तेज सतर्कता से कार्य करें। अच्छी तेजी की लाईन भी बन सकती है। गुड़, शक्कर व वारदाना, पाट आदि में घटा-बढ़ी से तेजी, ऊन, तेल, तिल, सरसों, अलसी के भावों में मंदी को बल, ता. 14 मार्च मीन संक्रांति शनिवासरी है। अतः [illegible] सरसों, मेथी, दाख, मजीठ, जीरा, सौंठ, कालीमिर्च, लालमिर्च, हींग के भावों में तेजी। गुड़, शक्कर, खांड, लोबिया, रमास, पोस्त, सन, सूत, रुई के भावों में समता को बल, चांदी, नारियल, जावित्री, जायफल, इलाईची, लौंग मेवाजात में घटा-बढ़ी से मंदी, ता. 15 मार्च को शनिदेव वक्री हो रहे हैं। अतः व्यापारिक जिंसों में घटा-बढ़ी से तेजी। गुड़, खांड, शक्कर, अनाज, रुई, पाट, वारदाना व तिलहनों में तेजी का झटका। ता. 21 मार्च संवत्सर शनिवार को आरंभ हो रहा है। वर्ष के राजा शनि देव हैं अतः धान्य उत्पादन में कमी, वर्षा की कमी, प्राकृतिक प्रकोप से फसल हानि। उड़द, चना, लोहा, कोयला, डीजल, पैट्रोल, ऊन में तेजी श्रावण व मार्गशीर्ष में अन्न की आई तेजी में लाभ लें। ता. 27 मार्च मीन राशि के बुध रुई, गुड़, खांड, शक्कर के भावों में मंदी, सोना, चांदी तेजी लेकर मंदी लें। बिनौला के भावों में तेजी।

विशेष–खण्डवृष्टि शनि राज में अग्नि भय अरु चोर।
राजक्षत्र पीड़ित क्षुदित प्रजा भ्रमित चहुं ओर।।
जो शशि उगै सोम, शनि एक अचम्भो जिय जोय।
छत्र भंग दिन तीस में अन्न जू मंहगो होय।।

अप्रैल–2015

यह मास चैत्र शुक्ला 12 बुधवार से आरंभ होकर वैशाख शुक्ला 12 गुरुवार तक रहेगा। ता. 1 रेवती के सूर्य अर्थात् दो सप्ताह के अंतर्गत अलसी, सरसों, एरण्डा, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, गेहूं, जौ, चना, चावल के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 3 कृतिकायां भृगुचार्यः से जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत वस्त्र, सोना, चांदी, हीरा, मोती के भावों में मंदी का योग। ता. 4 ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण से रुख देखें। गेहूं, जौ, चना, चावल व चुनिन्दा अनाजों के भावों में छः महीने के अंदर अच्छी तेजी का झटका। ता. 6 वृष राशि स्थितौ शुक्रो से रुई, कपास में नर्मी, सोना, चांदी गिर कर तेज, अनाजों के भाव घटा-बढ़ी से मंदी लेंगे। ता. 12 अप्रैल मेष के बुध से मूंगा, मोती, जवाहारात, सोना, चांदी, तांबा, गेहूं, जौ, चना, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, गुड़, खांड में घटा-बढ़ी से मंदी। चौपाये पशुओं के भावों में तेजी। ता. 14 अप्रैल मेष संक्रांति भौमवासरी है। अतः रुई, कपास, सूत, घी, तिल, तेल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, फल, फूल, गुड़, खांड, शक्कर व सोना, चांदी के भावों में तेजी व गेहूं, चावल, उड़द, मूंग, अरहर, जौ, मटर के भावों में मंदी

कारक रहेगी। ता. 20 अप्रैल चन्द्रदर्शन सोमवासरी है। अतः आगे महीने में अनाजों के भावों में तेजी का योग। गाय, बैल, चौपाये पशुओं के भावों में तेजी व कष्ट। ता. 27 अप्रैल वृष के बुध से रुई प्रथम दो सप्ताह के अंतर्गत भाव गिर कर तेजी लेंगे। गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास व तिल, तेलों के भावों में तेजी। रुई, सोना, चांदी व शेयर्स के भावों में अच्छी तेजी व मंदी की घटा-बढ़ी।

विशेष–मावस्या वैशाख में यदि रेवती नक्षत्र।
धन, धान्य उत्तम रहे सुख सुर्भिक्ष सर्वत्र।।
जो शशि ठगै सोम शनि एक अचम्भो जिय जोय।
छत्र पड़ै दिन तीस में अन्न जूं महंगो होय।।

मई–2015

यह मास वैशाख शुक्ला 13 शुक्रवार से आरंभ होकर ज्येष्ठ शुक्ला 13 रविवार तक रहेगा। ता. 2 मई "मिथुने च यदा शुक्रो" से रुई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, अरंडी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार के भावों में किसी-किसी जिंस में अच्छी मंदी, सतर्कता से कार्य करें। गेहूं, जौ, चना, चावल में तेजी, घी, गुड़ व अलसी के भावों में घटा-बढ़ी। ता. 4 मई सोमी पूर्णिमा वृष के भौम से एक महीने के अंदर लाल वस्त्र व अनाज, चंदन, कपूर, केशर, सोना, तांबा, जस्ता, शेयर्स के भावों में तेजी का झटका। ता. 8 आर्द्रा के शुक्र से अनाजों के भावों में अकस्मात् मंदी का योग। ता. 11 मई कृति. के सूर्य से दो सप्ताह के अंदर घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, एरंडी, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मौंठ, चावल, राई, सरसों के भावों में तेजी। किसी-किसी जिंस में विशेष तेजी का योग, वृष संक्रांति शुक्रवासरी है। अतः ता. 15 मई गुड़, घी, रसीले फल व रसदार पदार्थों, रुई, तिल, तेल सरसों के भावों में तेजी, गेहूं, जौ, चना, सुस्त, सोना, चांदी व तांबा, धातुवाना शेयर्स, बादाम, सुपारी के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 18 सोमवती अमावस्या सभी जिंसों में मंदी का योग, प्रजा में सुख सुर्भिक्ष वर्षा कारक है। ता. 20 पुन. के शुक्र से 10 दिनों के अंदर धान्य व बिनौला के भावों में तेजी। सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास के भावों में मंदी का योग। ता. 25 रोहिणास्थां भानुः से तिल, तेल, एरंडा, अलसी, सरसों, गुड़, घी, खांड, गेहूं, जौ, चना, चावल, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सन, राई, सुपारी व मिर्च के भावों में तेजी का झटका, चांदी सुस्त। ता. 30 मई दैत्य गुरु यदा कर्के से वर्षा कहीं तेज व कहीं कम, रसीले पदार्थ, गुड़, खांड, चीनी, घी, तेल, एरंड, सोना, चांदी के भावों में तेजी। रुई गिर कर तेज, चांदी में घटा-बढ़ी व गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर के भावों में मंदी का योग।

विशेष–जेठ अमावस पूर्णिमा बादल छवै आकाश।
वायु प्रबल प्रकोप से होय वर्षा से नाश।।
पड़वा, पांचै, चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मंदी करें तेजी होय जब क्षीण।।

जून–2015

यह मास ज्येष्ठ शुक्ला 14 सोमवार से आरंभ होकर आषाढ़ शुक्ला 13 मंगलवार तक रहेगा। ता. 1 जून पुष्ये शुक्र योग से रुई, सूत, सन, रेशम, ऊन व धान्य के भावों में तेजी। लाख, चमड़ा, कूपर, पारा, शिगरफ, हींग, गुड़, खांड, शक्कर के भावों में तेजी ता. 6 जून तिल, तेल, चांदी में तेजी। रुई गिर कर तेज व अन्य व्यापारिक जिंसों में मंदी का मान रहेगा। ता. 8 जून मृगे भानुः से रुई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चंदन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मौंठ, बाजरा व अलसी तथा जलीय उत्पन्न पदार्थों व फलों के भावो में तेजी। ता. 15 जून मिथुन संक्रांति सोमवासरी से अन्न, सूत, सन, रेशम के भावों में तेजी व कंद, मूल, फल, पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, राई, सरसों व लोहा, तिल, तेल, गुड़, खांड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, चना, चावल व प्रत्येक अनाज के जिन्सों में तेजी व सोना, चांदी व शेयर्स के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 18 चंद्रदर्शन गुरुवासरी से रुई, सूत, सूती व ऊनी रेशमी, ऊनी वस्त्र व सरसों, तेल, घी के भावों में तेजी। सोना, चांदी, गुड़, खांड के भावों में नर्मी का योग। ता. 22 जून आर्द्रा के सूर्य से रुई, सूत, कपास, खल, आलसी, ऐरंड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ, चांदी के भावों में तेजी। सोने में घटा-बढ़ी। ता. 25 जून रुई, सूत, कपास, अलसी, एंरड, तिल, तेल, नमक तेजी, चांदी में मंदी का योग। ता. 30 मृगे बुधः से एक सप्ताह के अंदर रुई के भावों में तेजी। चांदी उड़द, तिल, तेल, सरसों, गेहूं के भावों में मंदी।

विशेष–आषाढ़ बदी चौदस दिना बनै रोहिणी योग।
करफ्यू और कंट्रोल से दुख पावैं सब लोग।।
पूरनमासी पूर्णिमा मूल नक्षत्र शुभ योग।
सुख, संपति, सुर्भिक्ष हो सुख पावैं सब लोग।।

जुलाई–2015

यह मास प्रथम आषाढ़ शुक्ला 14 बुधवार से आरंभ होकर द्वि. आषाढ़ शुक्ल 15 शुक्रवार तक रहेगा। ता. 4 सिंहे शुक्र से सोना, तांबा, जौ, चना, लाल चंदन, मजीठ, लालमिर्च, घी व रसीले फल व पदार्थों व सब्जियों के भावों में तेजी। चांदी में पहले चार दिन 2-3 की मंदी व रुई एक सप्ताह में गिर कर तेज। ता. 9 आर्द्रा के बुध से गेहूं, जौ, चना, मूंग, मौंठ, तिल, उड़द के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 16 कर्क संक्रांति गुरुवासरी से अन्न के भावों में तेजी। रुई, सूत, बादाम, फल, गुड़ व खांड, शक्कर, तिल, नारियल, सोना, चांदी में तेजी। गेहूं, जौ, चना, मटर, मूंग, उड़द, अरहर व चावलों के भावों में घटा-बढ़ी से मंदी योग है। ता. 20 पुष्ये भानुः दो सप्ताह के अंदर तिल, तेल, मघ, गुड़, खांड, चावल, बाजरा, सुपारी, सौंठ, गूगल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, ऊन, ऊनी वस्त्र, सोना, चांदी, शेयर्स के भावों में तेजी, रुई तेजी लेकर गिर जाएगी। ता. 24 राहु, केतु का नक्षत्र परिवर्तन सतर्कता से कार्य करें। लोहा, कागज व कालीमिर्च में भारी तेजी, तेल, तिलहन सुस्त, शीशा, उड़द, चना, घी, गुड़, खांड, चावल के भावो में घटा-बढ़ी। ता. 28 दो सप्ताह के अंतर्गत तिल, तेल, सरसों, गुड़, खांड, उड़द, मूंगफली, मूंग के भावों में तेजी। ता. 30 कर्क राशि स्थितौ भौमः से रुई में 30 की मंदी का योग। सरसों, एरण्ड, अलसी, तेल, तिलहन, सुस्त, चांदी में अच्छी घटा-बढ़ी व चुनिंदा अनाजों के भावों में तेजी।

विशेष–सिंह शुक्र जब होय भवानी।
चले पवन न वर्षै पानी।।
चार पांच ग्रहों का बने एक राशि पर योग।
वर्षा व युद्ध से दुख पावैं सब लोग।।

अगस्त–2015

यह मास श्रावण कृष्ण 1 शनिवार से आरंभ होकर भाद्रपद कृष्ण 2 सोमवार तक रहेगा। ता. 2 शनि मार्गी हो रहे हैं।। अतः आलू, अदरख, मिर्च के भावों में तेजी, धनियां में मंदी। ता. 3 अग. आश्ले. सूर्य से दो सप्ताह के अंतर्गत सोना, चांदी, बिनौला, गेहूं, उड़द, चावल, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ के भावों में तेजी। ता. 5 शुक्र अस्त से अनाजों में मंदी व ता. 6 को भौम उदय से व ता. 11 अग. गुरु अस्त से लगभग सभी व्यापारिक जिंसों में तेजी। रसीले फल, पदार्थ, घी, किराना तेज। प्राकृतिक प्रकोप से खेतियों में नुकसान। ता. 13 अग. आश्ले. कर्क के शुक्र योग से रुई गिर कर तेज, अलसी, एरण्ड, घी, तिल, तेल, खांड, शक्कर तेज व अरहर, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मटर में मंदी। ता. 19 पंचमी तिथि वृद्धि से सोना, चांदी, शेयर्सों के भावों में मंदी। ता. 17 सिंह संक्रांति सोमवासरी है। अतः सोना, चांदी, गुड़, शक्कर के भावों में तेजी। रक्त वर्ण की वस्तुओं व हीरा, जवाहरात में तेजी। ता. 20 अग. शुक्रोदय से अनाजों के भावों में तेजी का झटका। ता. 22 अग. से यदा कन्या राशौ बुधो से रुई, चांदी के भावों में मंदी व गेहूं, जौ, चना, गुड़, खांड, शक्कर, हल्दी के भावों में तेजी का झटका। पूर्णिमा शनिवासरी व चतुर्दशी क्षय से मासांत में लगभग

सभी व्यापारिक जिंसों में तेजी। सोना, चांदी धातुवाना, शेयर्स मेडीसन, रसायन शेयर्सों में भी तेजी।

विशेष–पौष माघ वैशाख या सावन या आषाढ़।
भयकारी बुध का उदय अस्त होय सुख बाढ़॥
पड़वा पांचे चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मंदी करें तेजी होय जब क्षीण॥

सितम्बर–2015

यह मास भाद्रपद कृष्ण 3 मंगलवार से आरंभ होकर आश्विन कृष्ण 3 बुधवार तक रहेगा। ता. 1 सित. दो सप्ताह के अंदर जीरा, सोना, गुड़, खांड, तिल, तेल, सरसों, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा, रुई, सूत में तेजी, चांदी में घटा-बढ़ी। ता. 6 सित. गुरु उदय से अनाजों के भावों में मंदी कारक है व शुक्र मार्गी से चौपाये पशुओं के भावों में मंदी कारक है। ता. 15 सिंह का मंगल सोना, चांदी, गेरू, कॉपर, लालमिर्च के भावों में तेजी। ता. 17 कन्या संक्रांति गुरुवासरी है। अतः कपूर, केशर, चंदन व सुगंधित द्रव पदार्थ व रुई के भावों में तेजी कारक व गेहूं, जौ, चावल, मकई, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, मसूड़, सोना, चांदी, तांबा, लोहा व धातुवाना शेयर्सों में मंदी कारक है। बकरी व भैंस के भावों में तेजी प्रदायक है। ता. 25 सित. राहु, केतु का नक्षत्र परिवर्तन से रुई में अच्छी तेजी। लोहा, शीशा, काला वस्त्र, चांदी, घी, गुड़, खांड, चावल, गेहूं के भावों में तेजी। ता. 28 भाद्री पूर्णिमा सोमवासरी व हस्ते सूर्य योग से अन्न उत्पादन उत्तम। दो सप्ताह के अंदर गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खांड, रुई, सूत, कपास, लकड़ी, नमक, हरड़, हल्दी, धनियां व क्षारीय पदार्थों में तेजी। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी। ता. 30 सितंबर गुड़, खांड, शक्कर, गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, दालवाना के भावों में घटा-बढ़ी से मंदी का रुख बन जाएगा।

विशेष–गुरुवासरी संक्रांति जब-जब जग में आय।
प्रजा सुखी धन धान्य से वस्तुएं रहें समभाय॥
मावस्या गुरुवार दिन या गुरु मास नक्षत्र।
ज्योतिष का सिद्धांत है वर्षा होय सर्वत्र॥

अक्टूबर–2015

यह मास आश्विन कृष्ण 4 गुरुवार से आरंभ होकर कार्तिक कृष्ण 5 शनिवार तक रहेगा। मास में ता. 1 को गुरु देव सिंह राशि में जाकर मंगल से मिलन करेंगे। ता. 6 अक्टू. बुध उदय से अनाजों के भावों में मंदी, वर्षा का प्रकोप व 20 दिनों के अंदर, गुड़, गेहूं, खांड के भावों में मंदी। ता. 12 अक्टू. सोमवती अमावस्या मंदी कारक है। अतः सोना, चांदी व शेयर्सों के भावों में मंदी का झटका। ता. 15 अक्टूबर [illegible] 1437 प्र. से [illegible] दलों से फसल प्रभावित योग। ता. 17 तुला संक्रांति शनिवासरी है। अतः घी, गुड़, खांड, चावल, तेल, चांदी में मंदी कारक, रुई, कपास तेजी लेकर गिर जाएं। गेहूं, जौ, चना घटा-बढ़ी से तेजी। ता. 24 अक्टू. स्वाति के सूर्य से दो सप्ताह के अंतर्गत रुई, सूत, सन, रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गूगल के भावों में तेजी का झटका। ता. 27 भौमवासरी पूर्णिमा अनाजों में तेजी कारक व रुई, चांदी में घटा-बढ़ी। ता. 29 अक्टू. सोना, अफीम के भावों में तेजी व चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला व मूंगफली के भावों में मंदी का झटका, सौराष्ट्र में अन्न अधिक तेज।

विशेष–सोमवती मावस पड़े जब-जब आश्विन मास।
तेल, अन्न, गुड़, खांड में तेजी का आभास॥
जेही पखवारे तिथि बढ़े वाही में घट जाय।
सभी वस्तु सस्ती रहें महंगाई हट जाय॥

नवम्बर–2015

यह मास कार्तिक कृष्ण 6 रविवार से आरंभ होकर मार्गशीर्ष कृष्ण 5 सोमवार तक रहेगा। कार्तिक मास में पंच बुध योग व अमावस्या-पूर्णिमा बुधवासरी है। अतः बाजार की जनरल लाईनों में तेजी रहेगी। ग्रह योगों के अनुसार सोना, चांदी व रुई में अच्छी तेजी-मंदी के झटके। ता. 3 नवं. **"कन्या राशि गतौ भौमे"** से गेहूं, गेरू, लाल मिर्च, चंदन व तांबा, सोना के भावों में तेजी। रुई में 30 व चांदी में 2-3 टका की तेजी। ता. 10 नवं. से दो सप्ताह के अंतर्गत रुई, सूत, सोना, सन, रेशम, वस्त्र, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपाड़ी, मिर्च, अलसी व गूगल, सरसों, राई, हींग के भावों में तेजी का योग। ता. 11 नवं. दीपावली स्वाति नक्षत्र युक्त है। अतः प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि। ता. 13 चन्द्रदर्शन शुक्रवासरी 15 मुहूर्ति है। अतः सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊन व ऊनी वस्त्र, रुई, सोना, चांदी के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी, ता. 16 नवं. वृश्चिक संक्रांति सोमवासरी व 45 मुहूर्ति है अतः गेहूं, जौ, चना, मटर, चांदी, चावल, घी के भावों में मंदी, कोयला, लकड़ी, सन, सूत, ऊन, ऊनी वस्त्रों में नर्मी व तिल, तेल, सोना, तांबा, लोहा व धातुवाना, कैमीकल्स, रसायन व वित्तीय व्यवस्था के शेयर्सों में तेजी। ता. 18 नवं. शनि अस्त से अन्न, घास तृण की न्यूनता व घटा-बढ़ी से तेजी का झटका। ता. 24 नवं. चित्रायां भृगौ से 12 दिनों तक सोना, चांदी व अनाजों के भावों में समता को बल। ता. 27 नवं. राहु, केतु का नक्षत्र परिवर्तन से रुई में अच्छी तेजी, लोहा, शीशा, कालावस्त्र, चांदी, घी, गुड़, चावल, गेहूं में अच्छी तेजी। कागज, कालीमिर्च में विशेष तेजी का योग, तिलहनों में मंदी का योग। ता.

विशेष–कार्तिक मावस के दिना स्वाति नक्षत्र विचार।
गिरे कहीं भूकंप से पर्वत या मीनार॥
जेहि पखवारे तिथि बढ़े वाही में घट जाय।
सभी वस्तु मंदी रहें महंगाई हट जाय॥

दिसम्बर–2015

यह मास मार्गशीर्ष कृष्ण 6 मंगलवार से आरंभ होकर पौष कृष्ण 6 गुरुवार तक रहेगा, मास में धान्य सस्ता। ता. 3 दिसं. दो सप्ताह के अंदर वस्त्र, सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, अरण्ड, हींग, गुग्गल, पारा, गुड़, खाण्ड के भावों में तेजी, रुई के भावों में गिरकर तेजी। ता. 6 धनु के बुध से रुई, कपास, वस्त्र, चांदी के भावों में नर्मी। ता. 13 दिसं. बुध उदय व ता. 14 दिसं. को शनि उदय से लगभग सभी चुनिन्दा शेयर्स व व्यापारिक सौदों में एकाएक तेजी। गुड़, खांड, शक्कर, अनाज, रुई, पाट, वारदाना, तिल, तेल, सरसों में तेजी। ता. 16 दिसं. धनु संक्रांति बुधवासरी से नारियल, खोपरा, किशमिश, छुहारे, चिरौंजी, जीरा के भाव गिर कर तेजी लें। सूत, सन, ऊंट, जूट में तेजी, उड़द, बाजरा, घास, चारा, गाय, भैंस, बकरी मंदे। ता. 24 दिसं. तुलायां धरती पुत्री से रुई, सूत, सन, पाट, वारदाना, मूंगफली, गुड़, खांड, गेहूं, उड़द, अनाजों में तेजी। ता. 25 वृश्चिके शुक्र से रुई, चांदी, अफीम गिरकर तेज, गुड़ के भावों में घटा-बढ़ी गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग के भावों में तेजी। ता. 28 दिसं. से 20 दिनों के अंदर गुड़, चावल व नमक के भावों में मंदी का योग व तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खांड, गूगल, हल्दी, चमड़ा, कपूर, सन, चांदी के भावों में तेजी।

विशेष–मांगसिर में बुध का उदय या भृगु का अस्त।
तृण चारा तेजी में मिलें बेचौ पशु समस्त॥
मंगसिर लागत तीज को पुनर्वसु आर्द्रा आय।
राजा प्रजा सुखी समस्त सस्ता धान्य विकाय॥

निर्देशक–डा. बसंत लाल व्यास, लेखक–पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया, मथुरा (उ.प्र.)
फोन: 05663-273353, 273492
मो: 09720686322, 09445676654

तेजी मंदी समीक्षा सन् 2015 ई.

जनवरी–ता. 3 से 5 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, रांगा, जस्ता, निकिल, जिंक, काष्ठ, स्टेशनरी का सामान, रुई, कपास, ऊन, रेशम, जूट, पाट, बारदाने, खल, बिनौला, धूप में तेजी। गेहूं, चना, मटर, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, रमास, अरहर, सोयाबीन के भावों में साधारण तेजी। ता. 6 से 5 दिन में कोयला, गेहूं, चना, चावल, अरहर, उड़द, मूंग, मसूर में गिरावट। ता. 11 से 5 दिन तक कोयला, गैस, पैट्रोल, डीजल, मिट्टी तेल, दालवाने, धातुवाने में घोर तेजी। भांग, अफीम, गांजा, कपूर, केसर, मखाने, अगर, तगर, ऊन, रुई, रेशम, गुड़, बिनौला, मूंगफली, अखरोट, काजू, पिस्ता, जायफल में एकदम गिरावट। सोना, चांदी, तांबा, जिंक, निकिल में घोर तेजी।

फरवरी–ता. 1 से 7 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, रांगा, निकिल, पत्थर, चूना, मकराना, सीमेंट पर घोर तेजी। ता. 6 से 14 दिन में अफीम, गांजा, भांग, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पीतल, जिंक, निकिल, रांगा, चूना, जौ, चावल, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ पर विशेष तेजी। ता. 10 से 8 दिन तक गुड़, चावल, चना, मटर, गेहूं, सरसों, कालीमिर्च, लौंग, सुपारी, सूखे मेवा, अखरोट, काजू, पिस्ता, चिरौंजी में तेजी। चावल, तिल, तेल, घी, सोयाबीन, गुड़, धातु में मंदी। ता. 14 से 15 दिन में मार्केट में घटा-बढ़ी। कपास, रुई, रेशम, ऊन, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, शीशा, जूट, पाट, बारदाने में अच्छी तेजी। ता. 23 से 5 दिन में सोना, चांदी, तांबा, सरसों, रसकस पदार्थों, अनाज, धान, रुई, कपास में तेजी।

मार्च– ता. 1 से 22 दिन में आलू, अरहर, गुड़, चीनी, शक्कर, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, स्टील, पीतल, कोयला, गैस, रुई, कपास, ऊन, रेशम, पैट्रोल, डीजल, मिट्टी तेल, सोयाबीन, बिनौला खल पर अच्छी तेजी। ता. 5 से 15 दिन में दाल, घी, तेल, पैट्रोल, डीजल, सोयाबीन तेल में अच्छी तेजी। ता. 15 से 8 दिन में सोना, चांदी, तांबा, पैट्रोल, पीतल, स्टील, रांगा, जिंक, निकिल, हींग, जीरा, हल्दी, सौंठ, कालीमिर्च, लौंग, अगर, तगर, चिरौंजी, काजू, अखरोट, मोटा अनाज, चना, मटर, मूंगा, मोती, पुखराज, पन्ना, नीलम, हीरा में साधारण तेजी। ता. 8 से 7 दिन में रुई, कपास, सूत, ऊन, रेशम, जूट, पाट, बारदाने में घोर तेजी। ता. 10 से 10 दिन में उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, रमास, चना, गेहूं, सरसों, तिली पर अच्छी तेजी। ता. 14 से 14 दिन में ही सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, पीतल, निकिल, रुई, कपास, ऊन में गिरावट। ता. 17 से 15 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, रांगा, निकिल, पीतल, कांच का सामान, रुई, कपास, ऊन के भावों गिरावट होकर तेजी। ता. 18 से दूध, दही, घी, शहद, तेल, पनीर, मूंगा, मोती, शंख, सीप, पुखराज, नीलम में घोर तेजी। ता. 30 से दो दिन में सोना, चांदी, पीतल, तांबा, जिंक, रांगा, निकिल, जस्ता, अगर, तगर, कपूर, कचूर, मखाने, दाख, किशमिश, छुहारे पर मंदी हो।

अप्रैल–ता. 5 से 11 दिन में सोना, चांदी, रुई, केशर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, सोयाबीन, ऊन, अरहर, लोहा, लौंग, हल्दी, इलायची, कालीमिर्च, शहद, दूध, दही, मक्खन, पनीर, घी, तेल में कुछ गिरावट। ता. 16 से 24 दिन में तेल, घी, जूट, पाट, बारदाने, सोना, चांदी, रुई, कपास, ऊन, कपड़ा में साधारण तेजी। कपड़ा, कपास, सोयाबीन, अरहर में कुछ तेजी। ता. 18 से 15 दिन में मोटा अनाज, चना, मटर, मक्का, तिल, तेल, घी, शहद, उड़द, मूंग, मसूर, गुड़, शक्कर, रमास, जूट, पाट, बारदाने में घोर तेजी। ता. 25 से 18 दिन में घी, तेल, तीसी, प्रियंगु, सोना, चांदी, रुई, कपास, ऊन, रेशम, जस्ता, निकिल में गिरावट। ता. 27 से 12 दिन में चावल, गेहूं, मक्का, चना, मटर, उड़द, मूंग, मसूर, अंगूर, अंजीर, गुलाल, मेंहदी, दाख, किशमिश, छुहारे, घी, तेल, सोना, चांदी, तांबा, स्टील, पीतल, जस्ता, रांगा, जिंक में तेजी।

मई– ता. 1 से 7 दिन में रुई, कपास, ऊन, रेशम, लौंग, चंदन, कालीमिर्च, बड़ी इलायची, जीरा, दाख, किशमिश में गिरावट। चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, पीतल, रांगा, स्टील में गिरावट। चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, पीतल, रांगा, निकिल पर सप्ताह के मध्य तेजी होकर मंदी। ता. 7 से 15 दिन में गेहूं, चना, जौ, मटर, भूसा, कोयला, गैस, काष्ठ, कपास, रुई में गिरावट। ता. 11 से 8 दिन में अफीम, गांजा, शराब, अगर, तगर, मूंगफली, सुपारी, कत्था में तेजी। ता. 17 से 7 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, गेहूं, चना, घी, जौ, चावल, उड़द पर घोर तेजी। ता. 25 से 10 दिन में जिंक, निकिल, लोहा, जस्ता, रांगा, पैट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल में तेजी।

जून– ता. 1 से 7 दिन में सोना, चांदी, लोहा, जिंक, पीतल, स्टील, रांगा, निकिल में गिरावट। ता. 8 से 15 दिन में गेहूं, चना, जौ, मटर, मक्का, रुई, ऊन, कपास, चांदी, सोना, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, रांगा, पीतल में घटा-बढ़ी चलकर अकस्मात् तेजी हो। ता. 25 से 15 दिन में गेहूं, चना, जौ, मटर, रुई, ऊन, कपास, मूंग, मसूर, मोंठ, उड़द, सौंठ, लौंग, काजू, कालीमिर्च, पिश्ता, चिरौंजी, गूग्गल, अगर, तगर, बड़ी इलायची, गोला, नारियल, दाख, किशमिश, अखरोट, मखाने, छुहारे, जीरा, धनियां, सोयाबीन में तेजी।

जुलाई–ता. 1 से रुई, कपास, ऊन, रेशम, जूट, पाट, बारदाना, सोना, चांदी, तांबा, जिंक, निकिल, जस्ता, रांगा, स्टील, पीतल, कांसा में घटा-बढ़ी। ता. 10 से 8 दिन में लोहा, स्टील, सोना, चांदी, तांबा, पारा, लौंग, कालीमिर्च, इलायची, गुड़, चंदन, केशर, अगर, तगर में घोर तेजी। ता. 20 से 15 दिन में गेहूं, चना, जौ, चावल, मटर, मक्का, मूंग, मसूर, मोंठ, उड़द, सरसों, घी, सोयाबीन, जूट, पाट, बारदाने में तेजी। ता. 25 से 31 तक घटा-बढ़ी के साथ मार्केट गिर सकता है। पहले साधारण तेजी बनकर मंदी का रुख बन सकता है। इस समय में व्यापारी माल खरीद कर लाभ उठा सकते हैं।

अगस्त–ता. 2 से 8 दिन में गेहूं, चना, मक्का, मटर, उड़द, चावल, तिल, तेल, घी, सोयाबीन, सरसों, वनस्पति, घी, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्ता, रांगा, जिंक, निकिल, मूंग, मसूर, मोंठ, गुलाल, मेंहदी, सिंदूर, अगर, तगर, काजू, पिश्ता, हींग, हल्दी, जीरा, मखाने, दाख, किशमिश में साधारण तेजी। ता. 15 से 18 दिन में चावल, धान्य, मक्का, दालवाने, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, स्टील, जिंक, निकिल, शीशा, कोयला, कागज, स्याही, भूसा, तृण, काष्ठ के सामान, कांच, प्लास्टिक के सामान में तेजी।

सितंबर–ता. 3 से 8 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, उड़द, मूंग, मसूर, रमास, मोंठ, हल्दी, हींग, जीरा, मखाने, दाख, किशमिश, केशर, फूल, फल, दूध, दही, शहद में तेजी। इलायची, चिरौंजी, बड़ी इला., लौंग, कालीमिर्च, गूग्गल, घी, तेल, वनस्पति, डीजल, पैट्रोल, मिट्टी तेल, ग्रीस में तेजी। ता. 16 से 10 दिन में गूग्गल, धूप, छार-छबीला, अगर, तगर, चावल, चना, मटर, लौंग, कपूर, हल्दी, मेंहदी, सुपारी, लाख, किशमिश, जायफल, मैनफल, गोला, चन्दन चूरा, चूना, बेलगिरी तेजी। ता. 25 से 30 दिन में भांग, गांजा, अफीम, शराब, सूखे मेवा, जूट, पाट, बारदाना, ऊन, रेशम, सूती कपड़े, कपास, रुई, धनियां, जीरा, सोना, चांदी, तांबा, निकिल में मंदी।

अक्टूबर– ता. 1 से 7 दिन में गेहूं, जौ, चना, मटर, मक्का, चावल, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ में तेजी। ता. 10 से 8 दिन में हल्दी, सुपारी, कत्था, चूना, मेंहदी पर मंदी। ता. 14 से 20 दिन में गेहूं, रुई, कपास, बिनौला, ऊन, जूट, पाट, बारदाने, सूत, रेशम, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, स्टील, जिंक, निकिल में भी मंदी। ता. 21 से 14 दिन में गेहूं, चना, चावल, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्ता, रांगा, पीतल, जिंक, निकिल में मंदी। अफीम, भांग, गांजा, हल्दी, हींग, कालीमिर्च, लौंग में तेजी। ता. 25 से 10 दिन में ऊन, रेशम, जूट, पाट, बारदाने, रुई, कपास, धनियां, जीरा में मंदी का रुख रहे।

नवंबर–ता. 2 से 6 दिन में गेहूं, चना, जौ, चावल, मटर, सोयाबीन, उड़द, रमास, मूंग, मोंठ, मसूर, हल्दी, मक्का, चिरौंजी, काजू, पिश्ता में तेजी। ता. 14 से 15 दिन में रुई, कपास, ऊन, हल्दी, मक्का, चिरौंजी, काजू, पिश्ता, दाख में घोर तेजी। ता. 19 से 10 दिन में रुई, कपास, ऊन, रेशम, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल में मंदी का रुख होकर तेजी। ता. 26 से 25 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, दाख, किशमिश, हल्दी, जीरा, धनियां, चिरौंजी, लौंग, सुपारी में तेजी।

दिसंबर–ता. 1 से 10 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, जस्ता, रांगा, पीतल, चूना, सीमेंट, जौ, चना, चावल, मक्का, उड़द, मूंग, मसूर, सौंठ, कालीमिर्च, लौंग, सुपारी, कमलगट्टा, जायफल, मैनफल, अरहर, चिरौंजी में तेजी। ता. 17 से 8 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, स्टील, कांच, मूंगा, मोती, हीरा, पुखराज पर मंदापन। ता. 24 से 1 मास में गेहूं, चना, जौ, मटर, मक्का, चावल, सोयाबीन, सरसों, ज्वार, बाजरा, मोंठ, अरहर, घी, तेल, ऊन, रुई, कपास, रेशम, वनस्पति तेल पर तेजी।

लेखक - पं. शंकरलाल गौड़, दूरा, आगरा (उ.प्र.)

चन्द्र शृंगोन्नतः विचार सन् 2015 ई.

जनवरी 2015 — उत्तर शृंग मुहूर्त्त 30

जनवरी–ता. 23 जनवरी, 2015 को उत्तर शृंग पीत वर्ण से दिखाई देने वाला चन्द्रमा का व्यापार पर विलक्षण प्रभाव होगा। इस मास में रुई, कपास, रेशम, लकड़ी, कोयला, पैट्रोल, डीजल, दाख, किशमिश, लौंग, इलायची, मखाने, सूखी पीत वर्ण मेवा पर तेजी होगी। सोना, चांदी, तांबा, जूट, पाट, वारदाने के भाव गिर सकते हैं।

फरवरी 2015 — सम शृंग मुहूर्त्त 30

फरवरी–ता. 29 फरवरी, 2015 को सम शृंग श्याम वर्ण से दिखाई देने वाला यह चन्द्रमा गेहूं, चना, मटर, प्रियंगू, चावल, सरसों, उड़द, मूंग, मसूर, मौठ पर तेजी का सूचक है। अरहर, सरसों, रमास, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, कपूर के भाव मंदे होकर एकदम तेजी पर भी जा सकते हैं संग्रह कर लाभ उठायें।

मार्च 2015 — दक्षिण शृंग मुहूर्त्त 30

मार्च–ता. 22 मार्च, 2015 को दक्षिण शृंग पीत वर्ण से दृष्टिगोचर होने वाला चन्द्र घी, तेल, पैट्रोल, डीजल, गेहूं, चना, मटर, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, रमास, सरसों, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, निकल, जिंक पर तेजी के बाद मंदी का ही सूचक है। हींग, हल्दी, कालीमिर्च, इलायची, चिरौंजी, कत्था, चूना, मेंहदी के भावों में विशेष तेजी आ सकती है। जूट, पाट, वारदाने के भाव गिर जाते हैं।

अप्रैल 2015 — दक्षिण शृंग मुहूर्त्त 30

अप्रैल–ता. 20 अप्रैल, 2015 को दक्षिण शृंग रक्त वर्ण से दिखाई देने वाला चन्द्र गेहूं, चना, जौ, मटर, चावल, मसूर, उड़द, मूंग, अरहर, चावल पर तेजी कारक है। कपूर, फूल, फल, सब्जी, चंदन, इत्र, केवड़ा, गूगल आदि में गिरावट आ सकती है। जूट, पाट, वारदाने, रेशम, ऊन के भाव भी गिर जाते हैं। सोना, चांदी, तांबा, जिंक, निकिल, लोहा पर विशेष तेजी हो।

मई 2015 — सम शृंग मुहूर्त्त 45

मई–ता. 19 मई, 2015 का चन्द्र दर्शन सम शृंग रक्त वर्ण से होगा। मंगलवार का दृश्य चन्द्रमा मार्केट में उथल-पुथल मचा सकता है। संसार में विग्रह, अशांति का वातावरण भी बन सकता है। सरसों, तिली के तेल, सोयाबीन, घी, गेहूं, चना, मटर, रमास, चावल, उड़द, मूंग, मसूर में तेजी हो। सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल के भावों में तेजी हो सकती है। जिंक, निकिल, जूट, पाट, वारदाने के भाव गिर जाते हैं।

जून 2015 — उत्तर शृंग मुहूर्त्त 45

जून–ता. 18 जून, 2015 को उत्तर शृंग, पीत वर्ण से चन्द्रदर्शन होगा। धातुवाने, सोना, चांदी, तांबा, जिंक, निकिल, चावल, चना, मटर, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ में अच्छी तेजी हो सकती है। जूट, पाट, वारदाने, हींग, जीरा, धनिया, कालीमिर्च, लौंग, जायफल, कागज, स्याही, मक्का, दाख, किशमिश आदि पर गिरावट भी हो सकती है।

जुलाई 2015 — उत्तर शृंग मुहूर्त्त 30

जुलाई–ता. 18 जुलाई, 2015 को चन्द्रमा उत्तर शृंग रक्त वर्ण करके दिखाई देगा। इस मास में लौंग, इलायची, कालीमिर्च, कपूर, दाख, किशमिश, गुड़, खाण्ड, शक्कर, आंवला, कचूर, अरहर, सरसों, चना, मटर, गेहूं, चावल, कमलगट्टा, गूग्गल, अगर-तगर पर तेजी होगी। सोना, चांदी, तांबा, लोहा के भाव गिर भी सकते हैं। जूट, पाट, वारदाने पर अच्छी तेजी हो सकती है।

अगस्त 2015 — उत्तर शृंग मुहूर्त्त 30

अगस्त–ता. 16 अगस्त, 2015 को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग रक्त वर्ण से आकाश में दृष्टि गोचार होगा। मोटा अनाज, चना, मटर, मक्का, देवदारु, कत्था, अगर-तगर, सोना, चांदी, चंदन, इत्र, केवड़ा, शाल, चीड़ की लकड़ी, कालीमिर्च, दाख, किशमिश, कपूर, सरसों, रेशम, जिंक, निकिल पर अच्छी तेजी होगी। घी, तेल, पैट्रोल, डीजल, रस पदार्थ में मंदा पन भी आ सकता है। सौंफ, सुपारी, लौंग, कालीमिर्च, गुग्गल, मखाने, सूखे मेवा आदि में भी साधारण तेजी जानें।

सितंबर 2015 — उत्तर शृंग मुहूर्त्त 30

सितंबर–ता. 15 सितम्बर, 2015 को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग पीत वर्ण से होगा। रुई, कपास, ऊन, रेशम, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, जिंक, निकिल के भावों में बढ़ोतरी हो सकती है। कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आंवला, अगर, तगर के भाव में तेजी आ सकती है। प्लास्टिक का सामान, काष्ठ के समान पर भी तेजी आ सकती है। गेहूं, जौ, चना, मटर, तीसी, सरसों, उड़द, कालीमिर्च, हींग, लौंग, बड़ी इलायची, छोटी इलायची पर भी तेजी हो सकती है।

अक्टूबर 2015 — उत्तर शृंग मुहूर्त्त 15

अक्टूबर–ता. 14 अक्टूबर, 2015 को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग श्वेत वर्ण से होगा। सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, रांगा, पीतल, स्टील, कांच का सामान, लकड़ी, फर्नीचर आदि में गिरावट भी आ सकती है। रुई, कपास, ऊन, रेशम, किराना वस्तुओं के भाव हींग, जीरा, धनियां, सिंदूर, गुलाल, मेंहदी, लौंग, सुपारी, कत्था, चूना, अगर, तगर, छार छवीला के भावों में तेजी आ सकती है।

नवंबर 2015 — उत्तर शृंग मुहूर्त्त 15

नवम्बर–ता. 13 नवम्बर, 2015 को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग पीत वर्ण से होगा। रुई, कपास, ऊन, रेशम, खल, बिनौला, लौंग, कालीमिर्च, हरड़, वहेड़ा, आंवला, अमचूर, अगर, तगर, सुपारी, कत्था, चूना, दाख, किशमिश, जायफल, मैनफल, दूध, दही, घी, शहद, तेल पर अच्छी तेजी होगी। सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, जस्ता, रांगा पर जोरदार तेजी हो सकती है।

दिसंबर 2015 — उत्तर शृंग मुहूर्त्त 30

दिसम्बर–ता. 12 दिसम्बर, 2015 को उत्तर शृंग पीत वर्ण वाला यह चन्द्रमा रुई, कपास, ऊन, रेशम, काष्ठ, कोयला, डीजल, पैट्रोल, मिट्टी के तेल पर जोरदार तेजी ला सकता है। कत्था, चूना, दाख, किशमिश, लौंग, सुपारी, छुहारे, मखाने सूखे मेवा पर भी घोर तेजी आ सकती है। घी, तेल, स्याही, कपूर, रांगा, पीतल, सोना, चांदी, तांबा, लोहा के भावों पर गिरावट हो।

विशेष–चन्द्र शृंगोन्नतः विचार द्वारा तेजी-मंदी लेख पूर्णतया शोधपूर्ण व मौलिक है। व्यापार में नफा-नुकसान की जिम्मेदारी लेखक की नहीं होगी। अतः जो भी करें सोच समझकर करें। खगोलवेत्ता विश्व विख्यात ज्योतिर्विज्ञान के पारंगत आचार्य ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य पं. शंकर लाल गौड़ से तेजी-मंदी रिपोर्ट फीस–वार्षिक 4000/-, षट्मासिक 2000/-, त्रैमासिक 1000/-, डाक व्यय 100/- पृथक। हाजिर, वायदा की फीस समान है। जन्मपत्र फीस–अति श्रेष्ठ 2000/-, श्रेष्ठ 1000/-, मध्यम 500/-, डाक व्यय 100/- पृथक।

लेखक- पं. शंकरलाल गौड़ (ज्योतिषाचार्य पंचांगकर्ता)
दूरा, फतेहपुर सीकरी, आगरा (उ.प्र.) पिन कोड–283110
फोन न. 05613–243333, मो. 09411837282, 09756121052

नूतन वर्ष में शेयर्स बाजार की दशा-दिशा एवं धारणा क्या होगी?

लेखकः पं. टुनटुन शास्त्री

जनवरी—मासारंभ में मंगल कुंभ में, केतु मीन में, गुरु कर्क में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, सूर्य धनु में, शुक्र, बुध मकर में विचरण करेंगे। ता. 1 को बुध मकर में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। ता. 4 को मंगल कुंभ राशि में। प्रवेश करेगा। ता. 14 को सूर्य, बुध-शुक्र के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 22 को शुक्र, मंगल के साथ युति करेगा। ता. 25 को बुध पश्चिम में अस्त होगा 27 घंटा 13 मिनट पर फलतः मासारंभ में सकारात्मक स्थितियां बाजार को समर्थन कर सकती हैं। ता. 1 से 2 तक बैंक, सोफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, रियल एस्टेट, पावर, विद्युत, धातुओं के शेयरों में समर्थन मिल सकता है। ता. 5 से 9 तक दूर संचार मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों, साफ्टवेयर, बैंक, विद्युत, आटोमोबाइल, सीमेंट, ईस्पात, शुगर, टेक्सटाइल कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिलने से सूचकांक में सुधार संभावित है। अगामी सप्ताह बाजार में घट-बढ़ चलकर कुछ सुधार होता रहेगा। ता. 12 से 14 तक नई पुरानी अर्थ-व्यवस्थाओं के शेयरों में समर्थन संभावित है। ता. 15 से 16 तक गलत अफवाह अथवा अन्य कारणों से बाजार में नकारात्मक स्थिति बन सकती है। अतः दशा-दिशा देखकर काम करें। ता. 19 से 20 तक मिड कैप, स्माल कैप श्रेणी के शेयरों में समर्थन मिल सकता है। ता. 21 से 23 तक विभिन्न सेक्टरों के ब्लूचिप कंपनियों में अचानक बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। अगामी सप्ताह भी अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 26 से 28 तक बिकवाली की आशंका अधिक हालांकि ता. 28 को 11:15 के बाद कुछ सकारात्मक स्थिति बाजार के अनुरूप चलकर ता. 30 तक बाजार में ईस्पात, विद्युत, सीमेन्ट, रियल एस्टेट, धातुओं, आटोमोबाइल कंपनियों के शेयरों में समर्थन मिल सकता है।

फरवरी—मासारंभ में सूर्य-बुध मकर में, शुक्र-मंगल कुंभ में, केतु-मीन में, शुक्र कर्क में, राहु कन्या में तथा शनि वृश्चिक राशि में भ्रमण शील रहेगा। ता. 4 को बुध पूरब में उदय होगा 8 बजकर 15 मिनट पर। ता. 11 को बुध मार्गी होगा। ता. 12 को मंगल केतु के साथ युति करेगा। ता. 13 को सूर्य शुक्र के साथ युति करेगा। ता. 15 को शुक्र, मंगल-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों में अशांति, प्राकृतिक उत्पात, आर्थिक अस्थिरता व्यापक हो सकती है। अतः बाजार की दिशा देखते हुए काम करना बुद्धिमानी होगी। अन्यथा अधिकतर सौदे गलत हो सकते हैं। मासारंभ में ता. 2 से 3 तक सामान्य सुधार जबकि ता. 4 को कुछ बिकवाली बन सकती है। ता. 5 से 6 तक स्थिति सामान्य रही तो आटोमोबाईल, सीमेन्ट, पॉवर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। ता. 9 से 11 तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, बैंक, विद्युत, पॉवर, आटोमोबाईल, सीमेंट, रियल एस्टेट कंपनियों के शेयरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। ता. 12 से 13 तक व्यापक घट-बढ़। ता. 16 से 17 तक 12|20 तक ईस्पात, सीमेंट, पॉवर, शुगर, धातुओं, विद्युत तथा अर्थ व्यवस्था के शेयरों में कुछ समर्थन। ता. 18 से 19 तक भारी बिकवाली की आशंका है। ता. 20 को घट-बढ़ चलकर कुछ स्थिरता। ता. 23 से 24 तक अस्थिरता। ता. 25 से 27 तक बजट की अफवाह से साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, बैंक, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में अच्छा समर्थन मिल सकता है।

मार्च—मासारंभ में शनि वृश्चिक में, बुध मकर में, सूर्य कुंभ में, मंगल-केतु-शुक्र मीन में, गुरु कर्क में, राहु कन्या राशि में भ्रमण शील रहेंगे। ता. 9 को बुध कुंभ राशि में प्रवेश कर सूर्य के साथ युति करेगा। ता. 12 को शुक्र मेष में, ता. 14 को सूर्य मीन राशि में प्रवेश कर केतु के साथ युति करेगा। ता. 22 को बुध अस्त होगा। ता. 23 को मंगल शुक्र के साथ युति करेगा। ता. 27 को बुध सूर्य-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। बजट पेश होने के समय हालांकि ग्रहीय चाल कुछ अनुकूल होगी। जिससे सॉफ्टवेयर, रियल एस्टेट, विद्युत, पावर तथा धातुओं के शेयरों में कुछ अनुकूलता बन सकती है। वित्तीय संस्थाओं, इलेक्ट्रोनिक कम्पनियों, तेल, गैस के शेयर में कुछ कमजोरी बन सकती है। मासारंभ में कुछ घट-बढ़ चलकर धारणा सुधार की ओर रहेगी। ता. 2 से 6 तक ब्लूचिप, विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। ता. 9 से 10 तक सुधार। ता. 11 को मंदी। ता. 12 से 13 तक घट-बढ़ चलकर बाद स्थिरता। बाजार का झुकाव मंदी की ओर रहना चाहिए। वित्तीय संस्थाओं, म्युचुअल फंड, पावर, तेल एवं गैस, सभी शेयरों के भाव नीचे जा सकते हैं। ता. 16 को सामान्य सुधार जबकि ता. 17 से 19 तक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर भी सकता है। ता. 20 को घट-बढ़ अगामी सप्ताह भी। विशेष कर सॉफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां, फार्मा, बैंकों के शेयरों में विशेष बिकवाली की आशंका है। जबकि अन्य सेक्टरों में कुछ समर्थन मिलता रहेगा। ता. 23 को व्यापक मंदी। ता. 24 से 26 तक कुछ सुधार, ता. 27 को भारी बिकवाली। ता. 30 तक घट-बढ़ अधिक चलेगी। घाटे की भरपाई के लिए बार-बार जोखिम लेना तथा अपनी औकात से ज्यादा जोखिम लेना भारी हानि का कारण बना सकता है।

अप्रैल—मासारंभ में बुध, सूर्य, केतु मीन में, शुक्र, मंगल, मेष में, गुरु कर्क में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में भ्रमण शील रहेंगे। ता. 6 को शुक्र वृष में प्रवेश करेगा। ता. 9 को गुरु मार्गी होगा। ता. 12 को बुध, मंगल के साथ युति करेगा। ता. 14 को सूर्य बुध, मंगल के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 17 को मंगल अस्त होगा। ता. 20 को बुध उदय होगा 7 बजकर 23 मिनट पर। ता. 27 को बुध , शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे ता. 1 से 3 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो ब्लूचिप, विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिलने से अच्छा सुधार। आगामी सप्ताह कुछ घट-बढ़। ता. 6 को सामान्य सुधार। ता. 7 को भारी बिकवाली की आशंका अधिक है। ता. 8 से 10 तक स्थिति सामान्य रही तो ईस्पात, आटोमोबाईल, सीमेंट, पावर, विद्युत, रियल एस्टेट तथा धातुओं के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। आगामी सप्ताह अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 13 से 15 तक भारी बिकवाली की आशंका अधिक है। ता. 16 से 17 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। आगामी सप्ताह बाजार में सकारात्मक स्थिति बन सकती है। ता. 20 को घट-बढ़ चलकर 01|30 के बाद धीरे-धीरे स्थिरता बन सकती है। ता. 21 से 24 तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, बैंक, विद्युत, रियल एस्टेट, पावर, गैस तथा पेट्रो रसायन कंपनियों के शेयरों मे समर्थन मिल सकता है। आगामी सप्ताह भी बाजार में स्थिरता बनी रह सकती है। यदि राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय हालात सब कुछ सामान्य रहे तो ता. 27 को घट-बढ़। ता. 28 से 30 तक वित्तीय संस्थाओं, म्युचुअल फंड, विद्युत, फार्मा, आटोमोबाईल, शुगर, ईस्पात, पेट्रो रसायन, गैस, टेक्सटाइल्स कंपनियों के शेयरों में समर्थन से सूचकांक में आश्चर्यजनक तारीकों से ग्राफ ऊपर उठना चाहिए।

मई—मासारंभ में मंगल, सूर्य, मेष में, शुक्र, बुध वृष में, गुरु कर्क में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, केतु मीन में भ्रमण शील रहेंगे। ता. 2 को शुक्र मिथुन में, ता. 3 को मंगल, बुध के साथ युति करेगा। ता. 15 को सूर्य-बुध, मंगल के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 19 को बुध वक्री होगा। ता. 22 को बुध अस्त होगा 20 घंटा 27 मिनट पर। ता. 30 को शुक्र, गुरु के साथ युति करेगा। जिससे मासारंभ में सुधार जारी रहेगा। आगामी सप्ताह घट-बढ़ चल सकती है। ता. 4 को घट-बढ़। ता. 5 को भारी बिकवाली की आशंका ता. 6 से 8 तक नई पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। ता. 11 से 13 तक भारी बिकवाली की आशंका अधिक है। ता. 14 को घट-बढ़। ता. 15 को भारी

बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। आगामी सप्ताह कुछ सुधार संभावित है। परंतु ता. 18 से 22 तक स्थिति सामान्य रही तो बैंक, फार्मा, साफ्टवेयर, मीडिया, दूर संचार, विद्युत, धातुओं तथा पैट्रो रसायन कंपनियों के शेयरों में अच्छा समर्थन भी मिल सकता है। आगामी सप्ताह भी बाजार में स्थिरता बनी रह सकती है। हालांकि साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में बिकवाली दबाव बना रह सकता है। बाकी सेक्टरों में सुधार संभावित है। ता. 25 से 29 तक संस्थागत तथा विदेशी निवेशकों के समर्थन से सुधार संभावित है।

जून—मासारंभ में मंगल, सूर्य, बुध वृष में, गुरु, शुक्र कर्क में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, केतु मीन में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 12 को बुध उदय होगा 8 बजकर 26 मिनट पर। इसी ता. को बुध उदित होकर मार्गी हो जाएगा। ता. 15 को सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। इसी ता. को मंगल सूर्य के साथ युति करेगा। 2 ग्रहों का आपसी ताल-मेल अचानक राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय हालात में कड़वाहट पैदा करेगा। मुद्रा, डॉलर की स्थितियों में अस्थिरता पैदा कर सकता है। जिसका कु-प्रभाव छोटे-बड़े विकाशशील राष्ट्रों की अर्थ व्यवस्था पर सकता है। ता. 1 को व्यापक अस्थिरता। ता. 2 से 5 तक घट-बढ़ अधिक चलेगी। आगामी सप्ताह भी अस्थिरता रह सकती है। ता. 8 से 9 तक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. 12 तक घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 15 से 19 तक स्थितियां सामान्य रहीं तो साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, बैंक, आटोमोबाईल, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में समर्थन संभावित है। आगामी सप्ताह स्थिरता बन सकती है। ता. 22 से 26 तक विभिन्न सेक्टरों के ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिल सकता है। ता. 29 से 30 तक घट-बढ़ चलकर सुधार हो सकता है।

जुलाई—मासारंभ में सूर्य, मंगल मिथुन में, शुक्र, गुरु कर्क में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, केतु मीन में, बुध वृष में विचरण करेंगे। ता. 4 को शुक्र सिंह में, ता. 5 को बुध, मंगल सूर्य के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 13 को बुध अस्त होगा 21 घंटा 29 मिनट पर। ता. 14 को गुरु, शुक्र के साथ युति। ता. 16 को सूर्य कर्क में प्रवेश करेगा। ता. 20 को बुध सूर्य के साथ युति करेगा। ता. 25 को शुक्र वक्री होगा। ता. 30 को मंगल जलीय राशि कर्क में, सूर्य बुध के साथ प्रतियुति करेगा। फलतः मासारंभ में ता. 1 से 3 तक स्थिति सामान्य रही तो सुधार संभावित है। ता. 6 को भारी बिकवाली की आशंका। ता. 7 से 8 तक सामान्य सुधार जबकि ता. 9 से 10 तक बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. 13 से 17 तक स्थिति सामान्य रही तो ईस्पात, आटोमोबाईल

सीमेन्ट, पावर, विद्युत, धातुओं, शुगर आदि कंपनियों के शेयरों में समर्थन संभावित है। ता. 20 से 24 तक ब्लूचिप विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिल सकता है। जिससे सूचकांक में अच्छा सुधार। ता. 27 से 31 तक सब कुछ सामान्य रहा तो नई-पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं अथवा मिड कैप श्रेणी के शेयरों में रुक-रुककर समर्थन मिल सकता है।

अगस्त—मासारंभ में मंगल, सूर्य कर्क में, गुरु, बुध सिंह में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, शुक्र भी सिंह में, केतु मीन में भ्रमणशील रहेगा। मासारंभ में शनि मार्गी होगा। ता. 4 को बुध सिंह राशि में प्रवेश कर गुरु, शुक्र के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 5 को शुक्र अस्त होगा। ता. 6 को मंगल उदय होगा। ता. 7 को बुध भी उदय होगा। ता. 11 को गुरु अस्त होगा। ता. 13 को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश कर मंगल-सूर्य के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 17 को सूर्य सिंह में प्रवेश करेगा। ता. 20 को शुक्र उदय होगा तथा ता. 23 को बुध राहु के साथ युति करेगा। ता. 3 से 4 तक सामान्य सुधार। ता. 5 से 7 तक ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में भारी बिकवाली बन सकती है। आगामी सप्ताह कुछ स्थिरता बन सकती है। ता. 10 से 13 तक नई-पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं के शेयरों में सामर्थन से अच्छा सुधार संभावित है। ता. 14 को घट-बढ़। आगामी सप्ताह स्थिरता बन सकती है। ता. 17 से 21 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, बैंक, रियल एस्टेट, पावर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में समर्थन मिल सकता है। आगामी सप्ताह भी स्थिरता बनी रह सकती है। ता. 24 से 27 तक आटोमोबाईल, सीमेंट, ईस्पात, भारी इंजीनियरिंग, पावर, विद्युत, पेट्रो रसायन, गैस, फार्मा, बैंकों के शेयरों में समर्थन मिल सकता है। जबकि ता. 28 को भारी बिकवाली बन सकती है। ता. 31 को सामान्य सुधार।

सितम्बर—मासारंभ में गुरु, सिंह सूर्य में, राहु, बुध कन्या में, शनि वृश्चिक में, केतु-मीन में, शुक्र, मंगल कर्क में भ्रमणशील रहेगा। ता. 6 को शुक्र मार्गी तथा गुरु उदय होगा। ता. 15 को मंगल, गुरु, सूर्य के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 16 को बुध अस्त होगा 21 घंटा 58 मिनट पर। ता. 17 को सूर्य बुध-राहु के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 18 को बुध वक्री होगा। फलतः मासारंभ में ता. 1 से 3 तक बाजार में भारी अस्थिरता। ता. 4 को सामान्य सुधार। आगामी सप्ताह कुछ स्थिरता। ता. 7 को घटा-बढ़ी। ता. 8 से 11 तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में समर्थन मिल सकता है। आगामी सप्ताह बाजार में कुछ स्थिरता बनी रह सकती है। फिर भी बैंक, साफ्टवेयर, फार्मा, दूरसंचार कंपनियों के शेयरों में दबाव बना रह सकता है। ता. 14 [illegible]

रही है। आगामी सप्ताह अस्थिरता बन सकती है। ता. 21 से 23 तक नई पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के साथ साफ्टवेयर, फार्मा, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। ता. 24 से 25 तक भारी बिकवाली की आशंका। ता. 28 को सामान्य सुधार।

अक्टूबर—मासारंभ में बुध, सूर्य, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, केतु मीन में, शुक्र कर्क में, गुरु, मंगल सिंह में विचरण करेंगे। ता. 1 को शुक्र गुरु, मंगल के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 6 को बुध उदय होगा 16 घंटा 1 मिनट पर। ता. 17 को सूर्य तुला में, ता. 25 को बुध सूर्य के साथ युति करेगा। ता. 31 को बुध अस्त होगा 17 घंटा 38 मिनट पर। फलतः मासारंभ में कुछ अस्थिरता बनी रहेगी ता. 2 तक। आगामी सप्ताह कुछ स्थिति सुधर सकती है। ता. 5 से 9 तक दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां, साफ्टवेयर, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में समर्थन मिल सकता है। आगामी सप्ताह भी बाजार में कुछ स्थिरता बनी रह सकती है। ता. 12 से 15 तक ईस्पात, पावर, विद्युत, धातुओं, रियल एस्टेट, फार्मा, साफ्टवेयर तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में समर्थन मिल सकता है। ता. 16 को अचानक बिकवाली बन सकती है। ता. 19 से 21 तक सामान्य सुधार जबकि ता. 22 से 23 तक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. 26 से 28 तक ब्लूचिप, विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से भारी बिकवाली से सूचकांक में आश्चर्य जनक गिरावट बन सकती है। ता. 29 से 30 तक कुछ सुधार संभावित है।

नवम्बर—मासारंभ में बुध, सूर्य तुला में, शनि वृश्चिक में, केतु मीन में, गुरु सिंह में, राहु, शुक्र, मंगल कन्या में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 3 को मंगल कन्या में, शुक्र, राहु के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 12 को शनि अस्त होगा। ता. 16 को सूर्य, वृश्चिक राशि में, ता. 17 को बुध-सूर्य के साथ युति करेगा। ता. 30 को शुक्र अपनी राशि तुला में प्रवेश करेगा। फलतः मासारंभ में सुधार जारी रहेगा। ता. 2 से 6 तक विशेष कर ईस्पात, पैट्रोरसायन, विद्युत, शुगर, आटोमोबाईल, सीमेंट तथा धातुओं के शेयरों में समर्थन संभावित है। ता. 9 से 11 तक अच्छा सुधार जबकि ता. 12 से 13 तक बिकवाली की आशंका अधिक। ता. 16 से 17 तक सामान्य सुधार जबकि ता. 18 से 20 तक भारी बिकवाली से सूचकांक में भारी गिरावट बन सकती है। विशेषकर गिरावट साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा बैंकों के शेयरों में हो सकती है। आगामी सप्ताह भी अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 23 से 25 तक बिकवाली का सिलसिला जारी रह सकता है। जबकि ता. 26 से 27 तक शुगर, टेक्सटाईल, पावर, विद्युत, गैस, पैट्रोरसायन, [illegible] के शेयरों में ता. 30 तक सुधार जारी रह सकता है।

दिसम्बर—मासारंभ में बुध, सूर्य, शनि, वृश्चिक में, केतु मीन में, गुरु, चंद्रमा सिंह में, राहु, मंगल कन्या में, शुक्र तुला राशि में भ्रमणशील रहेगा। ता. 6 को बुध धनु में। ता. 13 को बुध उदय होगा 12 बजकर 43 मिनट पर। ता. 14 को शनि उदय होगा। ता. 16 को सूर्य धनु राशि में प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। ता. 23 को मंगल तुला राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। ता. 25 को शुक्र, वृश्चिक राशि में प्रवेश कर शनि के साथ युति करेगा। ता. 26 को बुध मकर राशि में प्रवेश करेगा। जिसका कु-प्रभाव शेयर बाजार में भी प्रलक्षित हो सकता है। मासारंभ में अस्थिरता परंतु ता. 2 से 4 दिसम्बर तक स्थिति सामान्य रही तो टेक्सटाइल्स, शुगर, रियल एस्टेट, पावर, विद्युत, पैट्रो रसायन, गैस के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। आगामी सप्ताह बाजार में घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 7 से 8 तक सामान्य सुधार। ता. 9 से 11 तक घट-बढ़ अधिक बाद में सुधार भी हो सकता है। आगामी सप्ताह बाजार में नकारात्मक स्थिति बन सकती है। ता. 14 को सामान्य घटा-बढ़ी। ता. 15 से 17 तक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर भी सकता है। ता. 18 को घट-बढ़ चलकर कुछ सुधार। आगामी सप्ताह भी घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 21 से 22 तक बिकवाली आशंका जबकि ता. 23 से 25 तक स्थिति सामान्य रही तो साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, ईस्पात, भारी इंजीनियरिंग, आटोमोबाईल, सीमेंट तथा अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में समर्थन संभावित है। ता. 28 से 31 तक उपरोक्त सेक्टरों में समर्थन जारी रह सकता है। उपरोक्त बिवेचना ग्रहीय चाल पर अधारित है। कभी-कभी इसमें जोखिम भी हो सकता है। अतः व्यापार में नफा-नुकशान के लिए लेखक, सम्पादक किसी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगा।

लेखक-पं. टुनटुन शास्त्री
(शेयर बाजार भविष्य एवं कमोडिटी ट्रेडिंग समीक्षाकार)
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सराँव (नटवार)
जिला-रोहतास (बिहार)-802218

सोना, चांदी तथा डॉलर, इस्पात, कॉपर की दशा-दिशा सन् 2015 ई.

लेखक-पं. टुनटुन शास्त्री

सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, इस्पात आदि की तेजी-मंदी

जनवरी—मासारंभ में बुध मकर राशि में 11।44 पर प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे सोना, कॉपर, जिंक, लैड में कुछ सुधार। ता. 4 को मंगल कुंभ राशि में 25।55 पर प्रवेश करने से सिल्वर, ईस्पात, जिंक, लैड में अस्थिरता तथा सोना में कुछ सुधार ता. 13 तक। ता. 14 को सूर्य बुध-शुक्र के साथ प्रतियुति करेगा 19 घंटा 28 मिनट पर। जिससे धातुओं में प्रायः खामोशी बन सकती है ता. 20 तक। ता. 21 को बुध वक्री होने से धातुओं में अस्थिरता। ता. 22 को शुक्र 26 घंटा 19 मिनट पर मंगल के साथ युति करेगा। जिससे सिल्वर, ईस्पात, जिंक, लैड में मंदी बन सकती है। जबकि ता. 24 को सोना, कॉपर में घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 25 को बुध अस्त होने से सोना, कॉपर में कुछ सुधार हो सकता है। अन्य धातुओं में अस्थिरता।

फरवरी—मासारंभ में शुक्र-मंगल की युति जारी रहेगी। जिससे धातुओं में ता. 10 तक अस्थिरता बनी रहेगी। ता. 11 को बुध मार्गी होने से सिल्वर, ईस्पात में घटा-बढ़ी परंतु सोना में सुधार। ता. 12 को मंगल मीन राशि में 13 घंटा 13 मिनट पर प्रवेश कर केतु के साथ युति करेगा। जिससे सोना, कॉपर में सुधार जबकि सिल्वर, ईस्पात, जिंक, लैड में घट-बढ़ चलकर सुधार हो सकता है। ता. 13 को सूर्य कुंभ राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे धातुओं में कुछ खामोशी रह सकती है। ता. 15 को शुक्र मीन राशि में 30 घंटा 11 मिनट पर प्रवेश कर मंगल-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे सिल्वर में विशेष तेजी परंतु अन्य धातुओं में घट-बढ़ जारी रहेगी। सरकारी बजट धातुओं को अस्थिर बना सकता है।

मार्च—विदेशी व्यापार में कमी होगी। जिससे दैनिक कारोबार में क्रय शक्ति कम होगी तथा बिकवाली दबाव बना रह सकता है। ता. 5 को बुध 6 बजकर 31 मिनट पर कुंभ राशि में प्रवेश कर सूर्य के साथ युति करेगा। जिससे सिल्वर में घट-बढ़, अन्य धातुओं में अस्थिरता। ता. 11 को शुक्र मेष राशि में 18 घंटा 8 मिनट पर प्रवेश करने से सभी धातुओं में विशेषकर सोना, कॉपर, सिल्वर में अच्छी तेजी बन सकती है। ता. 14 को सूर्य 29 घंटा 19 मिनट पर मीन राशि में प्रवेश कर मंगल-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे सोना, कॉपर में विशेष तेजी जबकि सिल्वर में ता. 21 तक कुछ मंदी बन सकती है। ता. 22 को बुध अस्त होने से सभी धातुओं में अस्थिरता बन सकती है। ता. 23 को मंगल 22 घंटा 47 मिनट पर शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे सोना, चांदी आदि धातुओं में ता. 26 तक तेजी। ता. 27 को बुध मीन राशि में प्रवेश कर सूर्य-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे धातुओं में घट-बढ़ चलकर सुधार हो।

अप्रैल—मासारंभ बुध-सूर्य-केतु की प्रतियुति जारी रहने से धातुओं में सुधार जारी रह सकता है। ता. 6 को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करने से धातुओं में व्यापक घटा-बढ़ी चलकर कुछ सुधार। ता. 9 को गुरु मार्गी होगा 7 बजकर 30 मिनट पर जिससे सिल्वर, जिंक में मंदी अन्य धातुओं में ता. 11 तक समभाव। ता. 12 को बुध मंगल के साथ युति करेगा 8 घंटा 13 मिनट पर तथा ता. 14 को सूर्य इसी राशि में बुध-मंगल के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे धातुओं में घट-बढ़ चलकर ता. 16 तक सुधार। ता. 17 को मंगल 14 घंटा 22 मिनट पर अस्त होने से ता. 19 तक बाजार में कुछ अस्थिरता। ता. 20 उदय होने से कुछ सुधार संभावित है। परंतु ता. 27 को बुध, शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे मासांत तक दैनिक कारोबार में खामोशी। इस माह की तेजी-मंदी जो भी चलेगी। ता. 16 तक ध्यान रखें।

मई—मासारंभ में ग्रहों की स्थिति विचित्र होने से बाजार की धारणा अस्थिर तथा अशांत रहेगी। ता. 2 को शुक्र-मिथुन राशि में प्रवेश करेगा।16 घंटा 20 मिनट पर जिससे धातुओं में खामोशी। ता. 30 मंगल वृष राशि में 22 घंटा 26 मिनट पर प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। जिससे सोना, चांदी आदि धातुओं में ता. 14 तक धीरे-धीरे सुधार जारी रहेगा। ता. 15 को सूर्य 9 बजकर 55 मिनट पर मंगल-बुध के साथ युति करेगा। जिससे सोना, चांदी आदि धातुओं में अच्छा सुधार। ता. 19 को बुध वक्री होने से शाम 4:12 पर अचानक रुखों में परिवर्तन हो सकता है। ता. 22 को बुध अस्त होने से अस्थिरता। ता. 30 को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश कर गुरु के साथ युति करेगा। जिससे सिल्वर में मंदी अन्य धातुओं में घटा-बढ़ी रहेगी।

जून—यह मास सोमवार विशाखा नक्षत्र वृश्चिक राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य-बुध-मंगल की प्रतियुति तथा गुरु-शुक्र की युति जारी रहने से सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, ईस्पात, सरिया में दैनिक कारोबार के अन्तर्गत ता. 11 तक सुधार। ता. 12 को बुध उदय होकर पुनः मार्गी हो जाएगा 24 घंटा 53 मिनट पर जिससे सुधार जारी रहेगा। ता. 15 को सूर्य मिथुन राशि में तथा मंगल भी मिथुन राशि में प्रवेश करने से मासांत तक सब कुछ सामान्य रहा तो विदेशी निवेशकों के समर्थन से अधिकांश दिनों धातुओं में तेजी बनी रह सकती है। देश तथा अंतर्राष्ट्रीय हालातों को देखते हुए तेजी का सौदा किया जा सकता है।

जुलाई—यह मास बुधवार मूल नक्षत्र धनु राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में मंगल-सूर्य तथा गुरु-शुक्र की युति जारी रहेगी। जिससे धातुओं में समर्थन मिलते रहने की संभावना अधिक है। ता. 4 को शुक्र, सिंह राशि में 24 घंटा 56 मिनट पर प्रवेश करने से सोना, कॉपर में विशेष तेजी तथा सिल्वर में अस्थिरता। ता. 5 को बुध, मिथुन राशि में प्रवेश कर सूर्य-मंगल के साथ प्रतियुति करेगा जिससे 2 सप्ताह के अंदर धातुओं में अचानक मंदी। ता. 2 को बुध पूरब में अस्त होने से एक माह के अंदर सोना में सुधार हो सकता है। ता. 16 को सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करने से धातुओं में कुछ सुधार जारी रहेगा। ता. 20 को बुध, सूर्य के साथ युति करेगा। जिससे धातुओं में अस्थिरता बन सकती है। ता. 25 को शुक्र वक्री होगा 26 घंटा 16 मिनट पर जिससे सभी धातुओं में सुधार। ता. 30 को मंगल कर्क राशि में प्रवेश कर सूर्य-बुध के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे धातुओं में अस्थिरता बन सकती है।

अगस्त—यह मास शनिवार श्रवण नक्षत्र कुंभ राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य-मंगल की प्रतियुति रहेगी। शुक्र-गुरु की युति रहेगी। मासारंभ में धातुओं में अस्थिरता बनी रहेगी। ता. 2 को शनि मार्गी होने से धातुओं में परिवर्तन मंदी की ओर हो सकता है। ता. 4 को बुध, सिंह राशि में प्रवेश कर गुरु-शुक्र के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे धातुओं में अच्छा सुधार हो सकता है। ता. 5 को शुक्र अस्त होने से सोना, चांदी आदि धातुओं में कुछ मंदी। ता. 6 को मंगल उदय होने से घट-बढ़ अधिक चलेगी। ता. 7 को बुध उदय होने से रुखों में परिवर्तन हो सकता है। ता. 11 को गुरु पश्चिम में अस्त होने से अचानक कुछ मंदी। ता. 13 को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश करने से सिल्वर में मंदी तथा अन्य धातुओं में घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 17 को सूर्य, सिंह राशि में प्रवेश करने से सभी धातुओं में सुधार। ता. 20 को शुक्र उदय होने से धातुओं में सुधार। ता. 23 को बुध कन्या राशि में प्रवेश कर राहु के साथ युति करने से मासांत तक सिल्वर, जिंक में मंदी की लंबी लाईन तथा सोना में कुछ सुधार संभावित है।

सितंबर—यह मास मंगलवार उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में गुरु, सूर्य, राहु, बुध तथा शुक्र, मंगल की युति जारी रहेगी। जिससे धातुओं में दैनिक कारोबार के अंतर्गत सिल्वर, जिंक में मंदी तथा सोना, कॉपर में घट-बढ़ चलकर स्थिरता बन सकती है। ता. 6 को शुक्र मार्गी होने से तथा इसी तारीख को गुरु उदय होने से सभी धातुओं में अच्छा सुधार। ता. 15 को मंगल सिंह राशि में प्रवेश कर सूर्य-गुरु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे धातुओं में तेजी बनी रह सकती है। वर्तमान स्तर पर तेजी का सौदा जोखिम रहित प्रतीत हो रहा है। ता. 16 बुध अस्त होने से कुछ अस्थिरता बन सकती है। ता. 17 को सूर्य कन्या राशि में प्रवेश कर बुध-राहु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे सिल्वर में मंदी बाकी धातुओं में सुधार। ता. 18 को बुध वक्री होने से मासान्त तक कुछ स्थिरता रह सकती है। परंतु सिल्वर में अस्थिरता रह सकती है।

अक्टूबर—यह मास गुरुवार भरणी नक्षत्र वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य-राहु की प्रतियुति जारी रहेगी। जिससे धातुओं में कुछ समर्थन मिलता रहेगा। ता. 1 को शुक्र सिंह राशि में मंगल-गुरु के साथ प्रतियुति से सोना, कॉपर में विशेष तेजी तथा सिल्वर में कुछ मंदी की धारणा। ता. 6 को बुध उदय होने से सभी धातुओं में कुछ अस्थिरता। ता. 10 को बुध मार्गी होने से सोना, कॉपर में सुधार, सिल्वर में घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 17 सूर्य अपनी नीच राशि तुला में प्रवेश करने से सोना, कॉपर में सुधार जबकि सिल्वर में अस्थिरता रह सकती है। लंबी लाईन में ता. 29 को बुध सूर्य के साथ युति करेगा। जिससे सोना, कॉपर में सुधार, सिल्वर में मंदी। ता. 21 को बुध अस्त होने से धातुओं में अस्थिरता बन सकती है। सोना, कॉपर में इस माह स्थिरता बनकर रुक-रुककर, तेजी आ सकती है।

नवंबर—यह मास रविवार आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य की युति तथा शुक्र-मंगल-राहु की प्रतियुति जारी रहेगी। फलतः मासारंभ में लगभग सभी धातुओं में स्थिरता बनी रह सकती है। ता. 3 को मंगल कन्या राशि में शुक्र राहु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे सभी धातुओं में ता. 11 तक तेजी। ता. 12 को शनि अस्त होने से एक सप्ताह के अंदर ईस्पात, जिंक, लैड, सोना, चांदी में अस्थिरता बन सकती है। ता. 16 को सूर्य, ता. 17 को बुध वृश्चिक राशि में प्रवेश कर शनि के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे घट-बढ़ चलकर सुधार हो सकता है। शनि-सूर्य-बुध की युति अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अनहोनी घटनाओं तथा अर्थव्यवस्था में तबाही उत्पन्न कर सकता है। जिसका कु-प्रभाव धातुओं के बाजार पर कर सकता है। ता. 30 को शुक्र तुला राशि में प्रवेश करने से सोना, कॉपर में सुधार जबकि सिल्वर में घट-बढ़ जारी रहेगी।

दिसंबर—यह मास मंगलवार अश्लेषा नक्षत्र कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य-शनि की प्रतियुति जारी रहेगी। फलतः ता. 5 तक सोना, कॉपर में सुधार तथा सिल्वर में कुछ स्थिरता बन सकती है। ता. 6 को बुध, धनु राशि में 10 घंटा 52 मिनट पर प्रवेश करने से सिल्वर में मंदी तथा अन्य धातुओं में घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 13 को बुध उदय होने से रुखों में कुछ परिवर्तन होगा, जबकि ता. 14 को शनि उदय होने से सभी धातुओं में कुछ सुधार संभावित है। ता. 16 को सूर्य-बुध के साथ 14 घंटा 21 मिनट पर युति होगी। जिससे सभी धातुओं में सुधार। ता. 23 को मंगल तुला में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे बाजारों में खामोशी बन सकती है। ता. 25 को शुक्र शनि के साथ युति करेगा, जिससे सिल्वर में घट-बढ़ी चलकर सुधार, अन्य धातुओं में अस्थिरता बन सकती है। ता. 23 को बुध मकर राशि में 26 घंटा 29 मिनट पर प्रवेश करने से सभी धातुओं में अच्छा सुधार संभावित है।

सोयाबीन, सरसों, अरण्ड, मूंगफली, अलसी, तेल, तेलवाना में तेजी-मंदी विचार

जनवरी—मासारंभ में तेल-तेलवाना में अस्थिरता ता. 3 तक जारी रहेगी। ता. 4 को मंगल कुंभ राशि में प्रवेश करने से ता. 13 तक कुछ सुधार। ता. 14 को सूर्य-बुध की युति होगी। जिससे ता. 20 तक सुधार तेज हो सकती है। ता. 21 को बुध वक्री होने से कुछ सुधार संभावित है। ता. 22 को मंगल-शुक्र की युति होने से कुछ सुधार मासांत तक रह सकता है।

फरवरी—मासारंभ में घट-बढ़ ता. 10 तक जारी रहेगी। ता. 11 को बुध मार्गी होने से अचानक मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 12 को मंगल मीन में तथा ता. 13 को सूर्य कुंभ राशि में प्रवेश करने से कुछ तेलों में सुधार संभावित है। ता. 15 को शुक्र मंगल-केतु के साथ जिससे मंदी की लंबी लाईन बन सकती है।

मार्च—मासारंभ में सभी तेलों में अस्थिरता जारी रहेगी। ता. 9 को बुध-सूर्य की युति से कुछ तेलों में ता. 11 तक सुधार। ता. 12 को शुक्र मेष राशि में, ता. 14 को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करने से घट-बढ़ जारी रहेगी। बाजार की धारणा ता. 21 तक पकड़ में नहीं आ पाएगी। ता. 22 को रुखों में परिवर्तन। ता. 23 को मंगल, शुक्र के साथ युति से कुछ मंदी की धारणा ता. 26 तक बनी रह सकती है। ता. 27 बुध सूर्य-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे बाजार अस्थिरता की ओर ही रहना चाहिए।

अप्रैल—मासारंभ में बुध-सूर्य-केतु की प्रतियुति जारी रहने से तेलों में अस्थिरता ता. 5 तक जारी रहेगी। ता. 6 से 8 तक संभावित जबकि ता. 9 को गुरु मार्गी होने से तेलों में सुधार ता.

11 तक हो सकती है। ता. 12 को बुध ता. 14 को सूर्य, मंगल के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे घटा-बढ़ी चलकर कुछ सुधार ता. 16 तक संभावित है। ता. 17 को मंगल अस्त होने से सुधार ता. 26 तक जारी रह सकता है। ता. 27 को बुध, वृष राशि में प्रवेश करने से मासांत तक सुधार जारी रह सकता है।

मई—मासारंभ में सुधार जारी रहेगा। ता. 2 को शुक्र, मिथुन राशि में प्रवेश करने से बाजार में मंदी की लंबी लाईन बन सकती है। ता. 15 को सूर्य-मंगल की युति तथा बुध से प्रतियुति होने से ता. 21 तक सुधार जारी रहेगा। ता. 22 को रुखों में परिवर्तन होगा यह परिवर्तन तेजी की ओर ता. 29 तक रहना चाहिए। ता. 30 को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश कर गुरु के साथ युति करेगा। जिससे तेजी की गंभीर लाईन बन सकती है।

जून—मासारंभ में सुधार ता. 11 तक। ता. 12 को बुध मार्गी होने से अचानक मंदी की धारणा। ता. 15 को सूर्य, मिथुन राशि में तथा मंगल भी इसी राशि में स्थित रहने से सुधार जारी रहेगा। बाद सभी तेलों में अच्छा सुधार।

जुलाई—मासारंभ में मंगल-सूर्य की युति जारी रहने से सुधार ता. 3 तक। ता. 4 को शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करने से कुछ सुधार जारी रहेगा। ता. 5 को बुध सूर्य-मंगल के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे घट-बढ़ जारी रहेगी ता. 13 तक। ता. 14 को गुरु 11 बजकर 28 मिनट पर सिंह राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे कुछ तेल-तेलवाना में अस्थिरता। ता. 16 को सूर्य ता. 20 को बुध कर्क राशि में युति होने से ता. 24 तक घट-बढ़ चलकर कुछ सुधार। ता. 25 को शुक्र वक्री होने से अच्छा सुधार ता. 29 तक चल सकता है। ता. 30 को मंगल कर्क राशि में सूर्य, बुध के साथ युति होने से अचानक मंदी बन सकती है। मंदी गंभीर भी हो सकती है।

अगस्त—मासारंभ में मंदी का सिलसिला। ता. 2 को शनि मार्गी होने से 2 मास के अंदर तिल अन्य तेल-तेलवाना में तेजी की गंभीर लाईन। ता. 4 को बुध सिंह राशि में प्रवेश करने से अस्थिरता। परंतु ता. 5 को शुक्र अस्त ता. 6 को मंगल उदय होने से मंदी ता. 10 तक। ता. 11 को गुरु अस्त होने से समभाव। ता. 13 को शुक्र कर्क राशि में विचरण करने से सुधार ता. 16 तक। ता. 17 से 22 तक सुधार। ता. 23 को बुध कन्या राशि में प्रवेश कर राहु के साथ युति होने से घट-बढ़ चलकर सुधार। बाजार बुध के कारण अस्थिर दिशाहीन भी हो सकता है।

सितंबर—मासारंभ में घट-बढ़ जारी रहेगी ता. 5 तक। ता. 6 को शुक्र मार्गी हाने से तथा गुरु उदय होने से कुछ सुधार संभावित है ता. 14तक। ता. 15 को मंगल, सिंह राशि में प्रवेश कर गुरु के साथ युति से सुधार जारी रह सकता है। ता. 17 को सूर्य कन्या राशि में प्रवेश कर राहु के साथ युति करेगा। जिससे तेजी की लंबी लाईन मासांत तक जारी रह सकती है।

अक्टूबर—मासारंभ में शुक्र-मंगल-गुरु की प्रतियुति जारी रहने से सुधार जारी रह सकता है ता. 9 तक। ता. 10 बुध मार्गी होने से अचानक बाजार की धारणा मंदी की ओर जा सकती है ता. 16 तक। ता. 17 को सूर्य तुला राशि में प्रवेश करने से ता. 28 तक कुछ सुधार जारी रहेगा। ता. 29 को बुध, सूर्य की युति होने से अचानक मंदी की धारणा बन सकती है।

नवंबर—मासारंभ में कुछ सुधार ता. 11 तक। ता. 12 को शनि अस्त होने से सुधार की गति तेज। ता. 16 से 20 तक सूर्य-बुध-शनि की प्रतियुति होगी। जिससे तेजी जारी रहेगी ता. 29 तक। ता. 30 को शुक्र तुला में प्रवेश करने से रुखों में परिवर्तन हो सकता है।

दिसंबर—मासारंभ में सुधार जारी रहेगा ता. 13 तक। ता. 14 को शनि उदय होने से मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 16 से मासांत तक सुधार गंभीर हो सकता है।

धनियां, अजवायन, जीरा, हल्दी, लालमिर्च, कालीमिर्च, ईलायची, लौंग में तेजी-मंदी विचार

जनवरी—मासारंभ में मंगल की युति कुंभ राशि में तथा शुक्र, बुध की युति मकर में जारी रहने से हल्दी, जीरा, धनिया, लालमिर्च, कालीमिर्च में सुधार। जबकि अन्य जिंसों में घट-बढ़। ता. 14 को बुध-सूर्य की युति होने से सभी जिसों में सुधार संभावित है ता. 20 तक। ता. 21 को बुध वक्री होने से रुखों में परिवर्तन होगा। ता. 22 से 31 तक घट-बढ़ जारी रहेगी। हल्दी, धनिया में विशेष सुधार संभावित है।

फरवरी—मासारंभ में सभी जिंसों में कुछ सुधार ता. 3 तक। ता. 4 से 10 तक अस्थिरता, ता. 11 को बुध मार्गी होने से लालमिर्च, कालीमिर्च में सुधार, अन्य जिंसों में घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 12 से मासांत तक सभी जिंसों में घट-बढ़ चलकर कुछ सुधार संभावित है। ऐसे तो किराना जिंसों के बकाया स्टॉक, अगला उत्पादन, खपत, मांग, आयात-निर्यात सरकार की दिशा-निर्देश, प्राकृतिक कारणों के कारण कभी भी किसी समय रुखों में परिवर्तन हो जाए तो आश्चर्य नहीं।

मार्च—मासारंभ में सभी जिंसों में अस्थिरता बन सकती है ता. 8 तक। ता. 9 से 11 तक धनिया, जीरा में मंदी अन्य जिंसों में सुधार। ता. 12 को शुक्र, मेष राशि में प्रवेश करने से सभी किराना जिंसों में सुधार संभावित है ता. 22 तक। ता. 23 को मंगल-शुक्र की युति होने से मासांत तक कुछ जिंसों में सुधार। फिर भी सावधानी अपेक्षित है।

अप्रैल—मासारंभ में घट-बढ़ जारी रहेगी ता. 5 तक। ता. 6 से 8 तक अस्थिरता। ता. 9 को गुरु मार्गी होने से सभी जिंसों में सुधार जारी रह सकता है। ता. 12 से 26 तक सभी जिंसों में व्यापक सुधार संभावित है। ता. 27 को बुध, शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे तेजी ता. 30 तक।

मई—मासारंभ में शुक्र, मिथुन राशि में प्रवेश करने से हल्दी छोड़कर सभी में मंदी। ता. 3 से 14 तक लालमिर्च, कालीमिर्च, लौंग, मेथी में सुधार बाकी जिंसों में घट-बढ़ जारी। ता. 15 को सूर्य, मंगल के साथ युति करेगा। जिससे मंदी की धारणा। ता. 21 तक। ता. 22 से 29 तक अस्थिरता। ता. 30 को शुक्र-गुरु के साथ युति करेगा। जिससे सभी जिंसों में सुधार हो सकता है।

जून—मासारंभ में सुधार ता. 11 तक। ता. 12 को बुध उदय होने से, बुध मार्गी होने से रुखों में परिवर्तन। ता. 15 को सूर्य-मंगल की युति होने से मासांत तक सभी जिंसों में सुधार।

जुलाई—मासारंभ में सुधार जारी रहेगा। ता. 4 को शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करने से ता. 13 तक लौंग, ईलायची, हल्दी, जीरा में सुधार। ता. 14 को गुरु शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे सभी जिंसों में कुछ सुधार संभावित है ता. 24 तक। 25 को शुक्र वक्री होने से सभी जिंसों में अस्थिरता मासांत तक बनी रह सकती है।

अगस्त—मासारंभ में शनि मार्गी होने से सभी किराना जिंसों में सुधार जारी रह सकता है ता. 10 तक। ता. 11 से 16 तक अस्थिरता, ता. 17 से 22 तक सुधार जबकि ता. 23 को बुध-राहु की युति होने से सभी जिंसों में व्यापक सुधार संभावित है।

सितंबर—मासारंभ में हल्दी, जीरा, धनिया, अजवाईन, लौंग, ईलायची में सुधार जारी रहेगा ता. 5 तक। ता. 6 शुक्र मार्गी होने से रुखों में परिवर्तन हो सकता है। यह परिवर्तन ता. 14 तक चल सकता है। ता. 15 से 17 तक सभी जिंसों में सुधार संभावित है। परंतु ता. 18 को बुध वक्री होने से जीरा, धनिया में मंदी की धारणा लंबी बन सकती है। हल्दी, लालमिर्च, लौंग, ईलायची, कालीमिर्च में सुधार।

अक्टूबर—मासारंभ में मंगल-शुक्र की युति जारी रहने से सभी किराना जिंसों में सुधार ता. 9 तक। ता. 10 को बुध मार्गी होने से घट-बढ़ ता. 16 तक। ता. 17 को सूर्य अपनी नीच राशि में प्रवेश करने से कुछ किराना जिंसो में व्यापक सुधार ता. 28 तक। ता. 29 को बुध, सूर्य की युति होने से कुछ मंदी की धारणा।

नवंबर—ता. 2 तक अस्थिरता बनी रहेगी। ता. 3 मंगल-राहु के साथ युति करेगा। शुक्र के साथ प्रतियुति होगी। जिससे ता. 11 तक अच्छा सुधार हो सकता है। ता. 12 को शनि अस्त होने से कुछ किराना जिंसों में व्यापक मंदी। ता. 16 से 17 के बीच-सूर्य-बुध-शनि की प्रतियुति होगी। जिससे मंदी का संचार हो सकता है ता. 29 तक। ता. 30 को रुखो में परिवर्तन हो सकता है।

दिसंबर—मासारंभ में मंदी ता. 5 तक। ता. 6 से 13 तक घट-बढ़ अधिक चलेगी। ता. 14 को शनि उदय होने से कुछ जिंसों में ता. 16 से 22 तक सुधार। ता. 23 से मासांत तक अस्थिरता बनी रह सकती है। यह आंकलन ग्रहीय चाल पर अधारित है। अत: इसमें कभी-कभी जोखिम भी हो सकता है।

गुड़, घृत, गेहूं, चना, जौ, मूगं, मोठ, तुवर, उड़द, ग्वार तेजी-मंदी विचार

जनवरी—मासारंभ में सभी अनाजों में समभाव बना रह सकता है। गुड़, खांड, ग्वार, घृत में घट-बढ़ जारी रहेगी ता. 3 तक। ता. 4 से 13 तक सभी अनाजों, गुड़, खांड, चीनी, मेथी, घृत, ग्वार में सुधार। ता. 14 को सूर्य, बुध की युति होने से घृत, गुड़, खांड में सुधार, गेहूं आदि अनाजों में कुछ मंदी की धारणा। यह सिलसिला ता 20 तक चल सकता है। ता. 21 को बुध वक्री होने से घृत, गुड़, खांड में सुधार अनाजों में गेहूं, जौ, चना, ग्वार में मंदी। ता. 22 से 31 तक शुक्र-मंगल की युति होने से गुड़, खांड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार-बाजरा, ग्वार में कुछ मंदी। ऐसे आयात-निर्यात, उत्पादन की दृष्टि से ग्वार में लंबी लाईन।

फरवरी—मासारंभ में सभी जिंसों में अस्थिरता बनी रह सकती है ता. 10 तक। ता. 11 को बुध मार्गी होने से गेहूं, जौ, चना, तुवर, ग्वार में सुधार हो सकता है। ता. 12 को मंगल मीन में तथा ता. 13 को सूर्य-कुंभ में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति से गुड़, खांड, अनाजों में मंदी परंतु ग्वार, घृत में सुधार। ता. 15 को शुक्र-मंगल के साथ युति करेगा। जिससे मासांत तक गुड़, खांड में मंदी, ग्वार, दालवाना में भी सुधार संभावित है।

मार्च—मासारंभ में सभी जिंसों में अस्थिरता ता. 8 तक। ता. 9 से 11 तक घृत, गुड़, खांड, ग्वार में सुधार, अनाजों में घट-बढ़। ता. 12 को शुक्र मेष राशि में प्रवेश करने से सभी अनाजों में मंदी ता. 22 तक। ता. 23 से 30 तक सभी जिंसों में सुधार संभावित है।

अप्रैल—मासारंभ में सुधार जारी रहेगा ता. 8 तक। ता. 9 को गुरु मार्गी होने से सभी जिंसों में सुधार। ता. 12 को बुध, ता. 14 को सूर्य मेष राशि में युति करने से अनाजों में मंदी तथा गुड़, खांड, घृत, ग्वार में सुधार हो सकता है ता. 16 तक। ता. 17 को मंगल अस्त होने से ग्वार तथा अनाजों में व्यापक तेजी, गुड़, खांड में भी सुधार ता. 26 तक। ता. 27 को शुक्र बुध की युति जिससे सभी जिंसों में सुधार जारी रह सकता है मासांत तक।

मई—मासारंभ में शुक्र, मिथुन राशि में प्रवेश करने से तथा ता. 3 को मंगल वृष राशि में बुध के साथ युति करेगा। जिससे घृत, गुड़, गेहूं, चना में सुधार, ग्वार में मंदी की धारणा बन सकती है ता. 14 तक। ता. 15 से 18 गुड़, खांड में सुधार, चना, गेहूं, तुवर, मूंग, मोठ, चावल, ग्वार में मंदी। ता. 19 को बुध वक्री होने से मंदी और व्यापक हो सकती है ता. 31 तक।

जून—मासारंभ में घृत, गुड़, खांड में सुधार, बाकी जिंसों में मंदी जारी रहेगी ता. 11 तक। ता. 12 से धीरे-धीरे सुधार। ता. 15 को सूर्य, मंगल, मिथुन राशि में प्रवेश करने से सभी जिंसों में मासांत तक सुधार।

जुलाई—मासारंभ में सुधार जारी रहेगा ता. 3 तक। ता. 4 को सभी जिंसों में सुधार ता. 5 से 13 तक सभी जिंसों में व्यापक मंदी। ता. 14 को गुरु सिंह राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे सभी जिंसों में सुधार। ता. 16 से अनाजों में कुछ मंदी ता. 24 तक। ता. 25 से रुखों में परिवर्तन होगा।

अगस्त—मासारंभ में शनि मार्गी होने से सभी जिंसों में अस्थिरता बन सकती है ता. 3 तक। ता. 4 से 10 तक सभी जिंसों में सुधार। ता. 11 को गुरु अस्त होने से अचानक मंदी ता. 16 तक। ता. 17 से 22 तक गुड़, खांड, ग्वार, घृत में सुधार, अनाजों में मंदी। ता. 23 को बुध राहु के साथ युति करेगा। जिससे सभी जिंसों में अच्छी तेजी मासांत तक।

सितंबर—मासारंभ में सुधार जारी रहेगा। ता. 6 को शुक्र मार्गी होने से सभी जिंसों में मंदी की धारणा ता. 14 तक। ता. 15 को मंगल-सूर्य के साथ युति करेगा। जिससे सभी जिंसों में सुधार। ता. 17 को सूर्य, कन्या राशि में विचरण करने से मासांत तक मंदी।

अक्टूबर—मासारंभ में शुक्र, मंगल के साथ युति करेगा। जिससे सभी जिंसों में सुधार ता. 9 तक। ता. 10 को बुध मार्गी होने से रुखों में परिवर्तन ता. 16 तक। ता. 17 को सूर्य तुला में प्रवेश करने से गेहूं, जौ, चना, तुवर, उड़द, ग्वार में सुधार ता. 28 तक। ता. 29 को बुध-सूर्य की युति होने से गुड़, खांड में सुधार बाकी जिंसों में घट-बढ़ रहेगी। मासांत तक हालांकि ग्वार, घृत, दाल, दलवाना में खामोशी हो सकती है।

नवंबर—मासारंभ में सभी जिंसों में अस्थिरता रह सकती है ता. 2 तक। ता. 3 को मंगल कन्या में प्रवेश कर राहु के साथ युति से ग्वार, चना, गेहूं, तुवर में सुधार जारी रहेगा। गुड़, खांड, घृत में भी सुधार ता. 11 तक। ता. 12 को शनि अस्त होने से सभी जिंसों में अस्थिरता ता. 16 तक। ता. 29 तक सभी जिंसों में अस्थिरता। ता. 30 को शुक्र तुला में प्रवेश करने से अस्थिरता।

दिसंबर—मासारंभ में ग्वार छोड़कर सभी जिंसों में अस्थिरता ता. 5 तक। ता. 6 से 13 तक सभी जिंसों में घट-बढ़ जारी। ता. 14 को शनि उदय से सभी जिंसों में कुछ सुधार। ता. 16 से 22 तक अस्थिरता, ता. 23 को मंगल तुला में प्रवेश करने से ग्वार छोड़कर सभी जिंसों में सुधार। ता. 25 से 31 तक शुक्र वृश्चिक राशि में विचरण से सभी जिंसों में सुधार। परंतु ग्वार, घृत, दूध पाउडर में अस्थिरता। मंगल शत्रु की राशि में विचरण करने से ग्वार में खमोशी की लंबी लाईन।

• लेखक—पं. टुनटुन शास्त्री

क्रमोडिटी बाजार का दशा-दिशा एवं व्यापार भविष्य का चढ़ता उतरता ग्राफ

जनवरी—मासारंभ में बुध मकर राशि में प्रवेश करेगा तथा सूर्य पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में प्रवेश करेगा। शुक्र उत्तराषाढ़ नक्षत्र में प्रवेश करेगा एवं बुध भी उत्तराषाढ़ नक्षत्र में प्रवेश करेगा। जिससे सोना, चांदी आदि धातुओं, रुई, कपास में कुछ सुधार परंतु अनाजों तथा किराना जिंसों मे कुछ अस्थिरता बनी रह सकती है ता. 3 तक। ता. 4 को मंगल कुंभ राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, सिल्वर, पोस्ता, मखाना, चावल, चीनी अन्य सफेद जिंसों में घटा-बढ़ी, गेहूं आदि अनाजों, सोना में सुधार हो सकता है। ता. 14 को सूर्य बुध के साथ युति करेगा। जिससे घी, तेल, तेलवाना, गुड़, चीनी, रुई में सुधार तथा कुछ अनाजों, दालवाना, किराना जिंसों में सुधार हो सकता है ता. 20 तक। ता. 21 को बुध वक्री। ता. 22 को शुक्र कुंभ राशि में प्रवेश कर मंगल के साथ युति करेगा। जिससे रुई, कपास, सिल्वर, गुड़ खांड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा तथा स्वेत वस्तुओं में मंदी बन सकती है। जबकि जीरा, धनियां, अजवाइन, हल्दी, कालीमिर्च, लालमिर्च तथा ग्वार में कुछ सुधार संभावित है। ता. 1, 4, 7, 10 को तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, जीरा, धनियां, हल्दी, पाट, पटसन, सिल्वर में सुधार। ता. 11, 14, 17, 21, 23 को उड़द, मूंग, मोठ, चना, चावल, गुड़, खांड, लालमिर्च, ग्वार, कपास, कुछ तेल-तेलवाना में सुधार। ता. 24, 27, 30 को गेहूं, जौ, चावल, रुई, सोना, चांदी, गुड़, खांड, सुपारी, लौंग, जीरा, धनियां, कालीमिर्च, लालमिर्च में सुधार। कुल मिलाकर धातुओं के बाजार में अस्थिरता बनी रह सकती है।

फरवरी—मासारंभ में लालमिर्च, कालीमिर्च, धनियां, जीरा, हल्दी, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, लौंग, ईलाइची, गम-ग्वार, डिब्बा बंद तेल में घट-बढ़ तथा धातुओं में कुछ स्थिरता संभावित है। ता. 4 को बुध उदय होने से अस्थिरता। ता. 11 को बुध मार्गी होने से एक सप्ताह के अंदर गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में सुधार। तेल, तेलवाना, गुड़, खांड में मंदी, ग्वार, सोना, लालमिर्च, कॉपर में सुधार हो सकता है। ता. 12 को मंगल, मीन राशि में प्रवेश कर केतु के साथ युति करेगा। जिससे सोना, कॉपर, रूई, कपास में

सुधार, सिल्वर में घटा-बढ़ी, ग्वार, लालमिर्च में अच्छा सुधार भी हो सकता है। ता. 13 को सूर्य कुंभ राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे घी, तेल, तेलवाना में सुधार। रुई, गेहूं आदि अनाज, गुड़, खांड, हल्दी, धनियां, जीरा, लालमिर्च, कालीमिर्च में मंदी बन सकती है। ता. 15 को शुक्र मीन राशि में प्रवेश कर केतु-मंगल के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे अनाज, तेल-तेलवाना, गुड़, खांड में मंदी, रुई में सुधार तथा सिल्वर में अच्छी तेजी बन सकती है। ता. 3, 5 को गेहूं, जौ, चना, तुवर, चावल, रुई, सोना, चांदी, गुड़, सुपारी, लौंग, इलाइची, लालमिर्च, कालीमिर्च, धनियां, जीरा में सुधार जबकि ता. 6, 9, 13, 16, 18 को सोना, चांदी, कॉपर, दाल-दालवाना आदि अनाज में सुधार हो सकता है। ता. 19, 23, 26 को सोना, चांदी, कॉपर, पाट-पटसन, तिल अन्य तेल-तेलवाना, किशमिस, छुहारा, सोंठ, हल्दी, जीरा, धनियां, ग्वार, लालमिर्च, गेहूं, चना, गुड़ में सुधार हो सकता है।

मार्च—मासारंभ में केतु, मंगल, शुक्र की प्रतियुति मीन राशि में जारी रहेगी फिर मंगल, सूर्य, केतु की प्रतियुति होगी। जिससे मासारंभ में किराना जिंसों, तेल-तेलवाना, दालवाना में घट-बढ़ जारी रहेगी। जबकि धातुओं में सोना, कॉपर में कुछ स्थिरता तथा ग्वार, ईमली, आमचूर में अस्थिर सुधार जारी रहेगा ता. 8 तक। ता. 9 को बुध कुंभ राशि में प्रवेश करने से रुई, सिल्वर में घटा-बढ़ी चलकर कुछ सुधार परंतु घृत, तेल-तेलवाना, गुड़, खांड में कुछ सुधार। किराना जिंसों में खामोशी बनी रह सकती है। ता. 12 को शुक्र मेष राशि में प्रवेश करने से एक सप्ताह के अंदर गुड़, खांड, सोना, चांदी, तेल-तेलवाना, रुई, सोठ, लहसुन, जौ, चना, गेहूं, अरहर, मूंग, मोठ, ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां में मंदी बन सकती है। धातुओं में सोना-चांदी में अच्छा सुधार हो सकता है। ता. 14 को सूर्य मीन राशि में प्रवेश कर मंगल, केतु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, रुई, सोना, कॉपर में सुधार, सिल्वर में मंदी तथा किराना जिंसों, अनाजों में भी कुछ मंदी का रुख बन सकता है। ता. 22 को बुध अस्त होने से रुखों में परिवर्तन हो सकता है। ता. 23 को मंगल शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे प्रत्येक जाति के अनाजों में मंदी। सोना, चांदी आदि धातुओं, रुई, कपास, पाट, बारदाना, गुड़, खांड में सुधार हो सकता है। यह फल प्रायः 2 सप्ताह के अंदर भी हो सकता है। ता. 27 को बुध मीन राशि में प्रवेश कर सूर्य-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे रुई, गुड़, खांड में मंदी, सोना, चांदी में घटा-बढ़ी चलकर कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 1 को सोना, चांदी, पाट-पटसन, तेल-तेलवाना, जायफल, किशमिस, छुहारा, सोठ, हल्दी, धनियां, जीरा, गुड़ में सुधार। ता. 4, 8, 11, 14, 17 को सोना, चांदी, गेहूं, चना, चावल, उड़द, ज्वार-बाजरा, घृत, तेल-तेलवाना, रुई, गुड़, खांड में सुधार। ता. 18, 22, 25, 28, 30 को चावल, गुड़, खांड, गेहूं, तेल-तेलवाना, हल्दी, जीरा, धनियां, ग्वार में सुधार हो सकता है। ता. 31 को तेल-तेलवाना, लहसुन, प्याज, अदरख, गेहूं, जौ, चना में सुधार।

अप्रैल—मासारंभ में बुध-सूर्य-केतु की प्रतियुति तथा शुक्र, मंगल की युति जारी रहेगी। मासारंभ में सोना, कॉपर, जिंक, ईस्पात, ग्वार, लालमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां, लौंग, इलाइची, जायफल, पोस्ता में सुधार जारी रहेगा। ता. 6 को शुक्र वृष में प्रवेश करने से रुई, कपास में अच्छी मंदी। ता. 9 को गुरु मार्गी होने से 3 दिन के अंदर रुई में घटा-बढ़ी चलकर सुधार हो सकता है। सिल्वर में भी मंदी तथा एक सप्ताह के अंदर तेल-तेलवाना, चावल, गुड़, खांड, सोना में कुछ सुधार संभावित है। किराना की जिंसों में भी सुधार हो सकता है। ता. 12 को बुध मेष राशि में प्रवेश कर केतु-मंगल के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 14 को सूर्य के साथ चतुर्थ ग्रही योग बनाएगा। अनाजों एवं लाल रंग की जिंस धातुओं में विशेष तेजी तथा रुई, कपास, घृत, तेल-तेलवाना, नारियल, सुपारी, अखरोट, गुड़, खांड, सोना, चांदी आदि धातुओं में सुधार। गेहूं, चना, चावल, मटर, जौ में व्यापक मंदी। ता. 17 को मंगल अस्त होने से रुई में मंदी, गेहूं, चना, गुड़, खाण्ड, ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, हल्दी में सुधार। ता. 20 को बुध उदय होने से रुखों में परिवर्तन हो सकता है। ता. 27 को बुध वृष राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। जिससे 2 सप्ताह के अंदर रुई, पाट-पटसन में मंदी होकर सुधार। किराना, जिंसों में घटा-बढ़ी तथा गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, तिल-तेल, तेलवाना में कुछ सुधार। ता. 4, 7, 10, 13 को अलसी, सरसों, सोयाबीन, अरण्ड, मूंगफली, लहसुन, आलू, प्याज, अदरख, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल में कुछ सुधार। ता. 14, 17, 21, 24, 26 को तेल, तेलवाना, सोना, चांदी, कॉपर, नारियल, सुपारी, मेथी, ग्वार, लौंग, इलाइची, धनियां, हल्दी में सुधार हो सकता है। ता. 27, 30 को रुई में मंदी, सोना, चांदी, कॉपर, गेहूं, जौ, चना, चावल, मूंग, मोठ, तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, घृत में सुधार हो सकता है।

मई—मासारंभ में सूर्य मेष राशि में, मंगल-बुध वृष राशि में विचरण करेंगे। मूंग, मोठ, घृत, दूध पॉवडर, पोस्ता, काजू, बादाम, मखाना, चावल में अच्छा सुधार हो सकता है तथा धातुओं में सोना, चांदी, कॉपर में भी सुधार जारी रहेगा। ता. 2 को शुक्र मिथुन राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, कॉटन, बारदाना, तिल अन्य तेल-तेलवाना, तुवर, ग्वार में व्यापक मंदी बन सकती है। गुड़, घी में घाटा तथा गेहूं, चना, चावल में सुधार हो सकता है। ता. 3 को मंगल वृष राशि में प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। जिससे सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड में सुधार हो सकता है। किराना जिंसों में भी सुधार संभावित है। ता. 15 को सूर्य मंगल-बुध के साथ प्रतियुति करेगा जिससे सोना, चांदी, गुड़, खांड, बादाम, सुपारी, नारियल, तेल-तेलवाना में सुधार। गेहूं, जौ, चना, मटर, मूंग, चावल तथा कुछ किराना जिंसों में मंदी बन सकती है। ता. 19 को बुध वक्री होने से 3 सप्ताह के अंदर, घृत, दूध पावडर, पोस्ता, चीनी, चावल, सिंघाड़ा, मखाना, चाय, कॉफी, गुड़, खांड में सुधार तथा गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में कुछ मंदी बन सकती है। ता. 22 को बुध अस्त होने से रुई में मंदी, सिल्वर में सुधार हो सकता है। ता. 30 को शुक्र जलीय राशि कर्क में प्रवेश करने से रुई में घटा-बढ़ी, अलसी, अरण्ड, अन्य तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, घृत, धनियां, जीरा, हल्दी में सुधार जबकि सिल्वर, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर में अच्छी मंदी। सोना, कॉपर में सुधार जारी रह सकता है। ता. 1, 4, 8, 10 को रुई में मंदी, सोना, चांदी, कॉपर गेहूं, जौ, चना, चावल, मूंग, मोठ, अलसी, सरसों, गुड़, खांड, घृत में सुधार। ता. 11, 15, 18, 21, 24 को घृत, रुई, सोना, चांदी, अलसी, अरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, हल्दी, धनिया, उड़द में सुधार। ता. 25, 29, 30 को तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, गेहूं, जौ, चना, घृत, सुपारी, मिर्च, हल्दी, सोना में सुधार जबकि सिल्वर, मखाना, पोस्ता में कुछ मंदी बन सकती है।

जून—मासारंभ में सूर्य-बुध की प्रतियुति तथा गुरु, शुक्र की युति जारी रहेगी। जिससे किराना जिंसों, ग्वार, सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, सोयाबीन, मूंगफली, सरसों, डिब्बा बंद तेल, दूध पावडर, घृत में सुधार। जबकि अनाजों में भड़कती तेजी, ग्वार में मंदी बन सकती है ता. 11 तक। ता. 12 को बुध पूरब में उदय होने से एक माह के अंदर अनाज, घृत में मंदी, रुई में घटा-बढ़ी, सोना में अस्थिरता के बावजूद मंदी बन सकती है। हल्दी, धनियां में भी मंदी बन सकती है। इसी ता. को बुध मार्गी होने से पहले जिसमें तेजी चल रही हो उसमें मंदी तथा जिसमें मंदी चल रही हो उसमें तेजी बन सकती है। ता. 15 को सूर्य मिथुन राशि में तथा मंगल भी इसी राशि में युति करेगा। जिससे रुई, कपास, तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, घृत, मूंग, उड़द, चना, गेहूं, जौ, चावल, ग्वार, लालमिर्च, ईमली, हल्दी तथा सोना, चांदी, कॉपर में अच्छा सुधार हो सकता है। तथा सिल्वर में मंदी बन सकती है। ता. 8, 11, 15, 18, 21 को रुई, कपास, कपूर, कस्तूरी, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, चना, मखाना, सिंघाड़ा, नारियल में सुधार। ता. 22, 25, 29, 30 को रुई, कपास, अलसी, अरण्ड, गेहूं, चना, चावल, सिल्वर, सोना, ग्वार में सुधार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, आमचूर, ईमली में घट-बढ़।

जुलाई—मासारंभ में मंगल-सूर्य की युति, शुक्र, गुरु की युति जारी रहेगी। जिससे ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, धनियां, लौंग, इलाइची, डिब्बा बंद तेल, रसकस पदार्थ में सुधार ता. 3 तक। ता. 5 को बुध मंगल-सूर्य के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे 2 सप्ताह के अंदर सोना, चांदी, रुई में मंदी बन सकती है। जबकि

तेल-तेलवाना, किराना जिंसों में अस्थिरता बन सकती है। ता. 13 को बुध पूरब में अस्त होने से एक माह के अंदर अनाज, घृत में मंदी, सोना, हल्दी में सुधार हो सकता है। ता. 14 को गुरु सिंह राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। सोना, कॉपर, सिल्वर, ईस्पात में मंदी, रुई में 8 मास तक घटा-बढ़ी चलकर कुछ सुधार। लालमिर्च, ग्वार के संग्रह से 4 मास बाद अच्छा सुधार, घृत, गेहूं में भी सुधार संभावित है। ता. 16 को सूर्य, कर्क राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, बादाम, सुपारी, तिल, नारियल, तेल-तेलवाना, सोना, चांदी में सुधार, गेहूं, चना, मूंग, चावल में कुछ मंदी बन सकती है। ता. 20 को बुध, सूर्य के साथ युति करेगा। जिससे रुई में मंदी, सिल्वर में कुछ सुधार। घृत, गुड़ तेल-तेलवाना में घटा-बढ़ी चलकर मंदी बन सकती है। ता. 25 को शुक्र वक्री होने से चतुस्पद, सोना, चांदी, पीतल में सुधार। ता. 30 को मंगल, सूर्य, बुध की प्रतियुति से रुई, तेल-तेलवाना, ग्वार में मंदी, किराना जिंसों में भी अस्थिरता। धातुओं में घट-बढ़ चलकर धारणा मंदी की ओर जा सकती है। ता. 9, 10, 13, 16, 19 को सोना-चांदी, गुड़, खांड, रुई, कपास, तेल-तेलवाना, मूंग, मोठ, चावल, सुपारी, उड़द, लालमिर्च में सुधार। ता. 23, 27, 30 को तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, चावल, गेहूं, सुपारी, हल्दी, धनियां, जीरा, सोना, चांदी में सुधार हो सकता है।

अगस्त—मासारंभ में मंगल, सूर्य जलीय राशि कर्क में तथा गुरु, बुध, शुक्र सिंह राशि में प्रतियुति करेंगे। मासारंभ में शनि मार्गी होने से एक सप्ताह के अंदर रुई, कपास में घटा-बढ़ी चलकर सुधार। 2 मास के अंदर, तिल-तेल, तेलवाना, लालमिर्च, कालीमिर्च, ग्वार, लहसुन, प्याज, आलू, अदरख में सुधार हो सकता है। अन्य जिंस धातुओं में व्यापक अस्थिरता। ता. 4 को बुध, सिंह राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी आदि धातुओं में अच्छा सुधार, रुई, काटन, ईमली, आमचूर में भी सुधार, गुड़, खांड में मंदी बन सकती है। ता. 5 को शुक्र अस्त होने से घृत, गुड़, खांड में सुधार, रुई काटन, सोना, चांदी, तिल, तेलवाना, चावल में मंदी बन सकती है। ता. 6 को मंगल उदय होने से रुई में सुधार, गेहूं में मंदी, चना, गुड़ में भी मंदी, ग्वार, सोना, कॉपर में घटा-बढ़ी चल सकती है। बुध पश्चिम में उदय होने से रुई में सुधार, सिल्वर में मंदी बन सकती है। ता. 11 को गुरु पश्चिम में अस्त होने से रुई में सुधार, सोना, चांदी, धनियां, जीरा, हल्दी, अनाज में मंदी बन सकती है। ता. 13 को शुक्र, कर्क राशि में प्रवेश करने से रुई में मंदी, तेल-तेलवाना, घृत, गुड़, खांड में सुधार तथा सिल्वर, गेहूं, चावल, मटर, जौ, अरहर, ग्वार में मंदी बन सकती है। ता. 17को सूर्य, सिंह राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, लालमिर्च, ग्वार, कॉपर में सुधार हो सकता है। ता. 20 को शुक्र उदय होने से रुई में सुधार, सिल्वर में घटा-बढ़ी चलकर मंदी, अनाज एक मास के अंदर मंदा होकर सुधार। सोना, कॉपर, जिंक, लेड में मंदी। ता. 23 को बुध कन्या राशि में प्रवेश कर राहु के साथ युति से सफेद, जिंस धातुओं में मंदी, अनाजों तथा धनियां, जीरा में सुधार हो सकता है। ता. 3, 6, 10, 13, 16 को सोना, चांदी, रुई, गेहूं, चावल, चना, उड़द, गुड़, खांड, घृत, तेल-तेलवाना, मिर्च में सुधार।

सितंबर—मासारंभ में गुरु-सूर्य की युति, राहु-बुध की युति, जलीय राशि कर्क में शुक्र-मंगल की युति जारी रहेगी। मासारंभ में किराना जिंसों दाल दालवाना बाजार में अस्थिरता बनी रहेगी। धातुओं में कुछ सुधार संभावित है। ता. 6 को शुक्र मार्गी होने से तथा गुरु उदय होने से 4 दिन पीछे रुई में मंदी और 5 दिन बाद सोना, कॉपर, सिल्वर, ग्वार में सुधार हो सकता है। जबकि चावल, गुड़, घृत का संग्रह अल्पकालिक लाभप्रद हो सकता है। ता. 15 को मंगल सिंह राशि में प्रवेश कर सूर्य-गुरु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे सोना, चांदी, कॉपर, ईस्पात, जिंक, लैड, गुड़, खांड, गेहूं, रुई, लालमिर्च में अच्छा सुधार हो सकता है। ग्वार, ईमली में भी सुधार संभावित है। ता. 16 को बुध पश्चिम में अस्त होने से रुई में मंदी, सिल्वर में सुधार। ता. 17 को सूर्य, बुध-राहु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे रुई, नारियल, सुपारी, तेल-तेलवाना, लालमिर्च, कालीमिर्च में सुधार। सोना में भी कुछ सुधार जबकि सिल्वर में मंदी की धारणा बन सकती है। किराना जिंसों जीरा, धनियां, हल्दी में सुधार। ता. 18 को बुध वक्री होने से 3 सप्ताह के अंदर गुड़, खांड, घृत में सुधार तथा गेहूं, जौ, चना, हल्दी, जीरा, धनियां में मंदी की धारणा। ता. 3, 6, 10, 12 को जीरा, धनिया, हल्दी, सोना, गुड़, खांड, घृत, गेहूं, ज्वार, बाजरा, रुई, काटन में सुधार, सिल्वर में घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 13, 17, 20, 24, 26 को रुई, कपास, सोना, चांदी, ईस्पात, घृत तेल-तेलवाना, चावल, उड़द, सुपारी, नारियल में सुधार। ता. 27, 30 को अनाज, गुड़, खांड, रुई, धनियां, जीरा, हल्दी में सुधार हो सकता है।

अक्टूबर—मासारंभ में बुध, सूर्य, राहु की प्रतियुति तथा मंगल, गुरु की युति जारी रहेगी। ता. 1 को शुक्र, सिंह राशि में प्रवेश कर मंगल, गुरु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे सोना, कॉपर, जौ, चना, गेहूं, लालमिर्च, ग्वार, लाल रंग की जिंस धातुओं घृत में अच्छा सुधार हो सकता है। ता. 6 को बुध उदय होने से रुखों में कुछ परिवर्तन होगा। जबकि ता. 10 को बुध मार्गी होने से रुई में सुधार, सिल्वर में घटा-बढ़ी तथा एक सप्ताह के अंदर गेहूं, जौ, चना, ग्वार, सोना में सुधार हो सकता है। किराना जिंसों में अचानक अस्थिरता बन सकती है। ता. 17 को सूर्य अपनी नीच राशि तुला में प्रवेश करने से रुई, सिल्वर में मंदी, गेहूं, जौ, चना, सोना, कॉपर में विशेष तेजी तथा लालमिर्च, सुपारी, लौंग, ईलाइची में भी कुछ सुधार हो सकता है। ता. 29 को बुध, सूर्य के साथ युति करेगा। जिससे रुई, गुड़, खांड, अफीम में तेजी। तेल-तेलवाना तथा जीरा, धनियां, हल्दी में कुछ मंदी। ता. 4, 7, 9 को गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, गुड़, खांड, रुई, पशुचारा, धनियां, जीरा, हल्दी में सुधार हो सकता है। ता. 10, 14, 18, 21, 23 को रुई, कॉटन, सोना, चांदी, गुड़, खांड, गेहूं, चना, तिल, नारियल, लालमिर्च में सुधार। ता. 24, 27, 31 को रुई, कॉटन, सोना, चांदी, गुड़, खांड, बिनौला, मिर्च, तेल-तेलवाना में कुछ सुधार संभावित है।

नवंबर—मासारंभ में बुध-सूर्य तुला में, राहु-शुक्र-मंगल की प्रतियुति कन्या राशि में जारी रहेगी। जिससे मासारंभ में सोना, कॉपर, लालमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां, डिब्बा बंद तेलों में कुछ सुधार संभावित है। ता. 3 को मंगल कन्या में, शुक्र के साथ प्रवेश करेगा। जिससे सिल्वर, रुई में सुधार, सोना, ग्वार, लालमिर्च, गेहूं, चना, तुवर में सुधार जारी रहेगा। चावल में भी अच्छा सुधार हो सकता है। ता. 12 को शनि अस्त होने से एक सप्ताह के अंदर अलसी, सरसों, अरण्ड, बिनौला, मूंगफली, सोयाबीन में सुधार तथा इस्पात, जिंक, लैड, कालीमिर्च, पशुचारा, लहसुन, प्याज, आलू, अदरख, गुड़, खांड में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 16 को सूर्य, वृश्चिक राशि में प्रवेश कर शनि के साथ तथा ता. 17 को बुध के साथ प्रतियुति से सोना, कॉपर, सिल्वर, रुई में सुधार। लालमिर्च, ग्वार, लालवर्ण की जिंसों में कुछ मंदी। घृत, तेल, तेलवाना में कुछ सुधार। ता. 30 को शुक्र तुला राशि में प्रवेश करने से एक मास के अंदर रुई, सिल्वर में घटा-बढ़ी चलकर मंदी, सोना में सुधार, गुड़, खांड में कुछ सुधार। ता. 3 को किराना जिंसों में सुधार, धातुओं में स्थिरता। ता. 6, 10, 13, 16 को जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खांड, रुई, कॉटन, तेल-तेलवाना में सुधार तथा धातुओं में अस्थिर सुधार हो सकता है। ता. 20, 23, 26, 30 को गेहूं, जौ, चना, चावल में सुधार। गेहूं, मिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां में घटा-बढ़ी, सोना, चांदी में मंदी की धारणा।

दिसंबर—मासारंभ में बुध-सूर्य-शनि की प्रतियुति जारी रहेगी तथा मंगल, राहु की युति जारी रहने से सोना, कॉपर, हल्दी, जीरा, धनियां, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, डिब्बा बंद तेलों में कुछ सुधार। ता. 6 को बुध, धनु राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, कॉटन, सिल्वर में मंदी तथा बिनौला, तेल-तेलवाना, घृत, अनाजों में कुछ सुधार। ता. 14 को शनि उदय होने से एक सप्ताह के अंदर रुई, कपास, अलसी, अन्य तेल-तेलवाना में मंदी। इस्पात, जिंक, लैड, कालीमिर्च, पशुचारा, लहसुन, प्याज, अदरख, चावल, गुड़, खांड, हल्दी, धनियां, जीरा, जायफल, लौंग, इलाइची, चावल, गुड़, खांड में सुधार हो सकता है। जबकि सभी प्रकार के अनाजों में कुछ मंदी की धारणा है। ता. 23 को मंगल तुला राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, गुड़, खांड, गेहूं, मूंग आदि अनाजों में सुधार। ता. 25 को शुक्र, वृश्चिक राशि में प्रवेश करने से रुई, सिल्वर में घटा-बढ़ी, अनाजों में सुधार। ता. 26 को बुध, मकर राशि में प्रवेश करने से धातुओं सोना, कॉपर में सुधार।

● लेखक: आचार्य टुनटुन शास्त्री, जिला-रोहतास (बिहार)

जिंस धातुओं, कमोडिटी ट्रेडिंग एवं हाजिर बाजार तेजी-मंदी समीक्षा 2015 ई.

लेखक: पं. टुनटुन शास्त्री

जनवरी 2015

यह मास गुरुवार पौष शुक्ल पक्ष 11 कृतिका नक्षत्र वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में मंगल कुंभ में, केतु मीन में, चन्द्रमा वृष में, गुरु अपनी उच्च राशि कर्क में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, सूर्य धनु में तथा शुक्र, बुध, मकर राशि में विचरण करेंगे। मास के शुरू में बुध, मकर राशि में 11।45 घं. मि. पर प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। ग्रह योग के कारण रुई, कपास, पाट-पटसन, बारदाना, हैसीयन, बिनौला, खल, सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड आदि धातुओं में सुधार जबकि चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, चना, तुवर, मूंग, मोंठ, मटर, लालमिर्च, कालीमिर्च, ग्वार, धनिया, जीरा आदि में घट-बढ़। समस्त तेल-तेलवाना में अस्थिरता। ता. 4 को मंगल, कुंभ राशि में प्रवेश करने से प्रायः रुई, सिल्वर, बारदाना, मखाना, काजू, पोस्ता, साबूदाना, चीनी, कपूर, सिंघाड़ा में घटा-बढ़ी। विशेषकर सोना, कॉपर, लालमिर्च, मजीठ, ग्वार, किशमिश, छुहारा, गेहूं, चना, तुवर, उड़द, गुड़, खांड में तेजी। जीरा, धनिया, कालीमिर्च, लौंग, इलायची, डिब्बा बंद तेल, घृत में कुछ अस्थिरता। ता. 14 को सूर्य, मकर राशि में 19।28 घं.मि. पर प्रवेश कर बुध, शुक्र के साथ प्रतियुति से दूध पाउडर, घी, वनस्पति घी, डिब्बा बंद तेल, अन्य तेल, तेलवाना, धनिया, जीरा, अजवाइन, मगज तरबूज, गुड़, खांड, रुई, कपास में कुछ सुधार तो गेहूं, चना, तुवर, चावल, उड़द, बारदाना, पोस्ता, काजू, साबुदाना, ग्वार, लालमिर्च, हल्दी में कुछ मंदी। धातुओं में अधिक घट-बढ़। ता. 21 को बुध वक्री 21।20 घं.मि. पर होने से 3 सप्ताह के अंदर घृत, गुड़ खांड, मुनक्का, चीनी, चाय, कॉफी में सुधार, ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, धनिया, जीरा, गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मंदी। ता. 22 को शुक्र, कुंभ राशि में 26।19 घं. मि. पर प्रवेश से रुई, कपास, सिल्वर, गुड़, खांड, गेहूं, चना आदि अनाजों, स्वेत जिंसों में मंदी। सोना, कॉपर, जीरा, धनियां, हल्दी, आमचूर में सुधार।

फरवरी 2015

यह मास रविवार माघ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य, बुध मकर में, शुक्र, मंगल कुंभ में, केतु मीन में, चन्द्रमा मिथुन में, गुरु कर्क में, राहु कन्या में तथा शनि वृश्चिक राशि में विचरण करेंगे। मासारंभ में सोना, कॉपर, जिंक, लैड, ईस्पात में विशेष तेजी। कभी-कभी इस ग्रह योग से तेल-तेलवाना में तेजी की लंबी लाईन भी बन जाया करती है। किराना जिंसों में अस्थिरता। जबकि सफेद जिंस, धातुओं में मंदी की धारणा। कमोडिटी ट्रेडिंग के कारण वास्तविकता परिधि को बिना नजर-अंदाज किए तेजी की जगह मंदी और मंदी की जगह तेजी भी बन जाया करती है। ता. 4 को बुध पूरब में उदय होने से 4 सप्ताह के अंदर अनाज, घृत, रुई, कपास, पोस्ता, काजू, चावल में घटा-बढ़ी, सोना, कॉपर में कुछ सुधार जबकि किराना जिंसों में अस्थिरता। ता. 11 को बुध मार्गी होगा 20।35 घं.मि. पर फलतः रुई, सिल्वर, ग्वार, लालमिर्च में सुधार एवं सप्ताह के अंदर गेहूं, जौ, चना, हल्दी, धनियां, जीरा में सुधार। तेल-तेलवाना, गुड़, खांड में मंदी। ता. 12 को मंगल, मीन राशि में प्रवेश करेगा 13।13 घं.मि. पर। मंगल इस राशि में केतु के साथ युति करेगा। सोना, कॉपर, रुई, कपास, ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, हल्दी में सुधार जबकि सिल्वर, चना, गेहूं, तुवर आदि में भी सुधार। तेल-तेलवाना में अस्थिरता। ता. 13 को सूर्य, कुंभ राशि में 8।27 मिनट पर प्रवेश से तेल, लवण में सुधार तथा रुई, कपास, अनाज, गुड़, खांड में मंदी। ता. 15 को शुक्र मीन राशि में 30।11 घं.मि. पर प्रवेश कर केतु, मंगल के साथ युति से तेल-तेलवाना, गुड़, खांड में मंदी तथा रुई, सिल्वर में विशेष तेजी। सोना, ग्वार, हल्दी, जीरा, धनियां में अस्थिरता।

मार्च 2015

यह मास रविवार फाल्गुन शुक्ल पक्ष 11 पुनर्वसु नक्षत्र कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में शनि वृश्चिक में, बुध मकर में, सूर्य कुंभ में, केतु, मंगल, शुक्र, मीन में, गुरु, चंद्रमा, कर्क में, राहु कन्या में विचरण करेंगे। फलतः मीन राशि के अन्तर्गत केतु, शुक्र, मंगल की प्रतियुति होने से सोना, कॉपर, ज्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, धनिया, जीरा में अच्छा सुधार। जबकि सरसों, सोयाबीन, अन्य तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, चीनी, चाय में अच्छी मंदी। कभी-कभी रुई, कपास, पोस्ता, काजू, मखाना तथा सिल्वर में धमाके की तेजी। ता. 9 को बुध, कुंभ राशि में 6।31 घं.मि. पर प्रवेश करने से रुई, सिल्वर, पोस्ता, काजू, सिंघाड़ा, मखाना में घटा-बढ़ी तथा घृत, तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, सोना-चांदी आदि धातुओं में सुधार संभावित है। ता. 12 को शुक्र, मेष राशि में 18।18 घं.मि. पर प्रवेश करने से गेहूं, जौ, चना, तुवर, मसूर, ज्वार-बाजरा, मूंग, मोंठ, घी में सुधार, सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड में विशेष तेजी तथा गुड़, खांड, बारदाना, ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी में घट-बढ़ एवं तेल-तेलवाना में कुछ मंदी। ता. 14 को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करेगा 29।30 घं.मि. पर इस राशि में सूर्य, मंगल, केतु के साथ प्रतियुति से चावल, गेहूं, चना, तुवर आदि अनाज-लवण, तिल, अन्य तेल-तेलवाना, डिब्बा बंद तेल, सोना, कॉपर में सुधार संभावित है। किराना जिंसों में अस्थिरता। ता. 22 को बुध अस्त होगा 12।06 घं.मि. पर जिससे रुखों में परिवर्तन। ता. 23 को मंगल, मेष राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति से अनाजों में मंदी, सोना, चांदी, कॉपर, सिल्वर, रुई, कपास, गुड़, खांड, ग्वार, लालमिर्च में सुधार जबकि ता. 27 को बुध, मीन राशि में प्रवेश कर सूर्य, केतु के साथ युति से रुई, गुड़, खांड में मंदी, सोना, चांदी, कॉपर, ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, हल्दी, धनिया में सुधार संभावित है।

अप्रैल 2015

यह मास बुधवार चैत्र शुक्ल पक्ष 11 मघा नक्षत्र सिंह राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में केतु-सूर्य-बुध मीन राशि में, शुक्र-मंगल मेष में, गुरु कर्क में, चन्द्रमा सिंह में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में विचरण करेंगे। मासारंभ में सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, ईस्पात, सरिया, सीमेंट, ग्वार, किशमिश, छुहारा, बदाम, अखरोट, चिरौंजी, पोस्ता, मखाना तथा अनाज में कुछ घट-बढ़ चलकर सुधार। ता. 6 को शुक्र वृष राशि में 17।10 घं. मि. पर प्रवेश करेंगे। रुई, कपास, कॉटन में व्यापक मंदी जबकि सोना, चांदी में घटा-बढ़ी चलकर सुधार तथा अनाज, किराना जिंसों में अस्थिरता। ता. 9 को गुरु मार्गी 7।30 घं.मि. पर होने से 3 दिन आगे-पीछे रुई, सिल्वर में घटा-बढ़ी। एक सप्ताह के अंदर चावल, अलसी, अन्य तेल-तेलवाना, सोना, कॉपर, ग्वार, हल्दी, लालमिर्च, धनियां, जीरा में कुछ स्थिरता। ता. 12 को बुध, मेष राशि में 8।13 घं.मि. पर प्रवेश करेगा। बुध, मंगल के साथ युति से सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड आदि धातु, गेहूं, चना, जौ, तुवर तथा तिल, अन्य तेल-तेलवाना, रुई, कपास, घृत, गुड़, खांड में मंदी। लहसुन, प्याज, आलू, अदरक, धनियां, जीरा, ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, उड़द में घट-बढ़ जारी। ता. 14 को सूर्य, 13।02 घं.मि. पर मेष राशि में प्रवेश कर मंगल, बुध के साथ प्रतियुति से रुई, कपास, कॉटन, घृत, तेल-तेलवाना, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खांड, सोना, चांदी, कॉपर में अच्छा सुधार। गेहूं, चावल, उड़द, मूंग, मोंठ, चावल, तुवर में कुछ मंदी। ता. 17 को मंगल, पश्चिम में अस्त होगा 14।22 घं.मि. पर। रुई, कपास में मंदी, गेहूं आदि अनाजों में व्यापक तेजी। ता. 20 को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई में सुधार, चांदी में मंदी। ता. 27 को बुध वृष राशि में 10।09 घं.मि. पर प्रवेश कर शुक्र के साथ युति से 2 सप्ताह में सब जिंस धातुओं में घटा-बढ़ी। परंतु अचानक ही अनाज, रुई, कपास, तेल, तेलवाना में सुधार भी संभावित है।

मई 2015

यह मास शुक्रवार बैशाख शुक्ल पक्ष 13 हस्त नक्षत्र कन्या राशि में प्रारंभ होगा। मासारंभ में मंगल-सूर्य मेष में, शुक्र बुध में, गुरु कर्क में, राहु, चन्द्रमा, कन्या में, शनि वृश्चिक में, केतु मीन राशि में विचरण करेंगे। मासारंभ में शुक्र, मिथुन राशि में 16।20 घं.मि. पर प्रवेश करेगा। ता. 2 को इस राशि में प्रवेश करने से प्रायः रुई, कपास, कॉटन, पाट-पटसन, बारदाना, अरंडी, तिल, अन्य तेल-तेलवाना, तुवर, ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च आदि में कुछ मंदी और गुड़, खांड, घी, दूध पॉवडर, मखाना, सिंघाड़ा, काजू में अच्छी घटा-बढ़ी। जबकि गेहूं, चना, जौ, चावल में सुधार, सोना, चांदी आदि धातुओं में अस्थिरता। ता. 3 को मंगल वृष राशि में 22।26 घं.मि. पर प्रवेश करेगा। मंगल, बुध के साथ युति से एक मास के अंदर लाल रंग की जिंसों एवं सब प्रकार के अनाजों, रुई, कपास, कॉटन, कुसुंभ, चंदन, कपूर, केशर, कुछ तेल-तेलवाना, सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुओं में तेजी। धनिया, जीरा, अजवाईन अन्य किराना जिंसों में अस्थिरता। ता. 15 को सूर्य, वृष राशि में 9।56 घं.मि. पर प्रवेश करेगा। सूर्य, बुध-मंगल के साथ प्रतियुति से सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, ईस्पात, सरिया, सिमेंट, गुड़, चीनी, चाय, कॉफी, रुई, कपास, कॉटन, बादाम, अखरोट, सुपाड़ी, नारियल, पोस्ता, तिल-तेल-तेलवाना आदि में सुधार। गेहूं, चना, तुवर, मूंग, मोंठ, चावल तथा किराना जिंसों में कुछ मंदी। ता. 19 को बुध वक्री से 3 सप्ताह के अंदर घृत, दूध पाउडर, मखाना, काजू, साबूदाना, पोस्ता, गुड़, खांड, चीनी, चाय में सुधार और गेहूं, जौ, चना, तुवर आदि अनाजों तथा धनियां, जीरा, हल्दी, ग्वार, लालमिर्च में कुछ मंदी। ता. 22 को बुध 20।27 घं.मि. पर अस्त होने से रुई, कपास, पाट-पटसन, बारदाना में मंदी जबकि सिल्वर में सुधार। ता. 30 को शुक्र कर्क राशि में 15।26 घं.मि. पर प्रवेश करेंगे। इस राशि में शुक्र, गुरु के साथ युति से रुई में घटा-बढ़ी, अलसी, अरण्ड, तेल, तेलवाना, घी, गुड़, खांड, चीनी, चाय में तेजी तथा सिल्वर, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, ग्वार आदि में व्यापक मंदी की धारणा।

जून 2015

यह मास सोमवार ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष 14 विशाखा नक्षत्र वृश्चिक राशि में प्रारंभ होगा। मासारंभ में मंगल-सूर्य-बुध वृष में, गुरु-शुक्र कर्क में, राहु कन्या में, शनि-चन्द्रमा वृश्चिक में, केतु मीन राशि में विचरण करेंगे। मासारंभ में मंगल, सूर्य, बुध की प्रतियुति होने से ता. 12 को बुध उदय होने से 4 सप्ताह के अंदर अनाज, घी में सुधार। रुई में घटा-बढ़ी चलकर मंदी। सोना, कॉपर, ग्वार, लालमिर्च, मजीठ आदि में कुछ मंदी। जीरा, धनिया आदि में अस्थिरता। इसी ता. को बुध भी मार्गी होने से ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, सोना, कॉपर, धनिया, जीरा, अजवाइन, इमली, आमचूर, किशमिश, छुहारा, बादाम, अखरोट में कुछ सुधार। ता. 15 को सूर्य, मिथुन राशि में 16।07 घं.मि. पर प्रवेश करेंगे। इसी दिन मंगल भी इसी राशि में प्रवेश करेगा 23।38 घं. मि. पर। रुई, कपास, गुड़, खांड, सोना, कॉपर, लालमिर्च, कालीमिर्च, ग्वार, लालवर्ण की अन्य वस्तुओं में अफवाहों पर आधारित धारणा गंभीर हो सकती है।

जुलाई 2015

यह मास बुधवार प्रथम आषाढ़ शुक्ल पक्ष 14 मूल नक्षत्र धनु राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में मंगल-सूर्य मिथुन में, गुरु-शुक्र कर्क में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, चन्द्रमा धनु में, केतु मीन में तथा बुध, वृष राशि में विचरण करेंगे। मासारंभ में सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, ईस्पात, रुई, कपास, कॉटन, पाट-पटसन, बारदाना तथा किराना की जिंसों में अस्थिरता। मंगल-सूर्य की युति मिथुन राशिगत होने से अनेक राष्ट्रों की मुद्राएं कमजोर तथा भारत का रुपया भी नीचे के भाव दिख सकता है। शेयर बाजार से लेकर कमोडिटी ट्रेडिंग अथवा हाजिर बाजार में मंदी। ता. 4 को शुक्र, कर्क राशि को छोड़कर 24।56 घं.मि पर सिंह राशि में प्रवेश से सोना, कॉपर, जौ, चना, गेहूं, लालचन्दन, मजीठ, लालमिर्च, कालीमिर्च, ग्वार, घी, दूध पॉवडर, रस-कस पदार्थ तथा चतुष्पद में तेजी । सिल्वर, रुई में घट-बढ़। ता. 5 को बुध, मिथुन राशि में प्रवेश करेगा 11।40 घं.मि. पर। इस राशि में बुध, सूर्य-मंगल के साथ प्रतियुति से 2 सप्ताह के अंदर, रुई, कपास, सोना, चांदी, ग्वार, धनियां, जीरा, लालमिर्च, हल्दी में मंदी, जबकि तेल-तेलवाना, दालवाना में घट-बढ़। ता. 13 को बुध, पूरब में अस्त होगा 21।29 घं.मि. पर। जिससे 5 सप्ताह के अंदर अनाज, घी, रुई, कपास में घट-बढ़ चलकर मंदी, परंतु सोना, कॉपर में कुछ सुधार। ता. 14 को गुरु मघा नक्षत्र प्रथम चरण सिंह राशि में प्रवेश करेगा 11।28 घं.मि. पर। घी, गेहूं, जौ, चना में सुधार। सोना, चांदी, कॉपर में मंदी। ता. 16 को सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करने से रुई, कॉटन, बादाम, सुपारी, गुड़, खांड, तेल-तेलवाना तथा धातुओं में सुधार। ता. 25 को शुक्र वक्री होने से पशु तथा धातुओं में व्यापक तेजी। ता. 30 को मंगल, कर्क राशि में प्रवेश करने से तेल-तेलवाना, रुई में मंदी तथा सोना, अनाज, गुड़, खांड में सुधार।

अगस्त 2015

यह मास शनिवार श्रावण कृष्ण पक्ष प्रतिपदा श्रवण नक्षत्र कुंभ राशि तथा पंचक प्रारंभ से हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य-मंगल कर्क में, गुरु सिंह में, राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, शुक्र सिंह में, केतु मीन में भ्रमणशील रहेंगे। ता. 2 को शनि मार्गी होगा 25।58 घं.मि. पर। जिससे जो वस्तुएं तथा जिंस धातुएं शनि वक्री के समय तेज थी वह संभवतः मंदी बन सकती हैं। 2 मास के अंदर हींग, मिर्च, तेल-तेलवाना में व्यापक तेजी। रुई, सिल्वर, अनाजों में धारणा मंदी की है। जबकि धनिया, अजवाइन, मगज तरबूज, जीरा में मंदी, ग्वार, लालमिर्च, हल्दी में कुछ सुधार। ता. 4 को बुध, सिंह राशि में 17।36 घं.मि. पर प्रवेश करेगा। इस राशि में बुध, गुरु-शुक्र के साथ प्रतियुति से सोना, कॉपर में विशेष तेजी की लंबी लाईन। जबकि सिल्वर, रुई, कपास, कॉटन, देवदारु, आमचूर, ईमली तथा किराने की कुछ जिंसों में सुधार जबकि कपूर, गुड़, खांड, चीनी, चाय, रसकस पदार्थों में मंदी। डिब्बा बंद तेलों में भी अस्थिरता। ता. 5 को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा 17।14 घं.मि. पर जिससे घृत, गुड़, खांड में तेजी। रुई, कॉटन, पाट-पटसन, सोना, चांदी, कुछ तेल-तेलवाना, चावल, चीनी, काजू, पोस्ता, मखाना, सिंघाड़ा में सुधार। ता. 6 को मंगल, पूरब में उदय होगा 12।26 घं. मि. पर। जिससे अनाजों में मंदी, गुड़, खांड, तेल-तेलवाना, रुई, कपास, ग्वार, लालमिर्च, ईमली में कुछ सुधार। ता. 7 को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई में सुधार, सिल्वर में मंदी, पाट-पटसन तथा सोना में कुछ सुधार। लहसुन, सोंठ, आलू, प्याज, धनियां, जीरा, हल्दी, जायफल, लौंग, इलायची, कालीमिर्च, उड़द, तुवर, चना में घट-बढ़ चलकर सुधार। ता. 11 को बुध 27।10 घं.मि. पर पश्चिम में अस्त से हल्दी, जीरा, धनियां, सोना, चांदी तथा अनाजों में मंदी। ता. 13 को शुक्र, कर्क राशि में 19।21 घं.मि. पर प्रवेश से तेल-तेलवाना, घृत, गुड़, खांड, चीनी, चाय में सुधार, सिल्वर, गेहूं आदि अनाजों में मंदी। ता. 17 को सूर्य, सिंह राशि में प्रवेश से सोना, चांदी आदि धातुओं, गुड़, खांड, तेल-तेलवाना, लालमिर्च, ग्वार में सुधार। ता. 20 को शुक्र उदय होगा। ता. 23 को बुध, कन्या में प्रवेश से रुई, सिल्वर में मंदी, अनाज, गुड़, खांड, हल्दी, जीरा, धनिया में सुधार।

सितंबर 2015

यह मास मंगलवार भाद्रपद कृष्ण पक्ष तीज उत्तराभाद्र पद नक्षत्र का अंतिम चरण मेष राशि में प्रारंभ तथा पंचक समाप्ति से होगा 28।50 घं.मि. पर। मासारंभ में गुरु-सूर्य सिंह में, राहु-बुध कन्या में, शनि-वृश्चिक-केतु मीन में, शुक्र-मंगल कर्क राशि में विचरण करेंगे। मासारंभ में सोना, कॉपर, सरसों, सोयाबीन, अन्य तेल-तेलवाना, दालवाना तथा किराना जिंसों में स्थिरता। सिंह राशिगत गुरु-सूर्य तथा कन्या राशि में राहु-बुध की एवं कर्क राशि में शुक्र-मंगल की युति होने से यह ग्रह योग बाजार के लिए ठीक नहीं है। यह ग्रह योग अनाज, किराना जिंसों में अपना असर विशेष डालेगा। इससे हर बढ़े भाव के साथ मंदी का झटका गंभीर होता रहेगा। ता. 6 को शुक्र मार्गी तथा गुरु उदय होने से

सोना, सिल्वर, ग्वार में सुधार, दाल-दालवाना, घृत में मंदी बने तो इसका संग्रह लाभकारी हो सकता है। हल्दी में भी सुधार। ता. 15 को मंगल, सिंह राशि में प्रवेश करेगा 20।09 घं.मि. पर। इस राशि में मंगल, सूर्य-गुरु के साथ प्रतियुति से सोना, कॉपर, सिल्वर, जिंक, लैड, ईस्पात आदि धातुओं, गुड़, खांड, चीनी, चाय, कॉफी, गेहूं, अलसी, रुई, कपास, लालवस्त्र, लालमिर्च, हल्दी, ग्वार, धनिया, जीरा, ईमली, आमचूर, किशमिश, छुहारा, चना, तुवर, मूंग, मोंठ, चावल, गेहू आदि में अच्छा सुधार। भूमिगत जिंसों में अच्छी तेजी। ता. 16 को बुध पश्चिम में अस्त होगा। 21।58 घं.मि. पर जिससे रुई, पाट-पटसन, बारदाना, हैसियन, पोस्ता, मखाना, चावल, चीनी, सिंघाड़ा, दूध पावडर, घी, मैंथोल, काजू में मंदी जबकि सिल्वर में सुधार। धनिया, जीरा, हल्दी, सोना, कालीमिर्च, ग्वार, लालमिर्च में घट-बढ़ जारी रहेगी। ता. 17 को सूर्य कन्या, राशि में 12।14 घं.मि. पर प्रवेश करेंगे। इस राशि में सूर्य, बुध-राहु के साथ प्रतियुति से रुई, कपास, पाट-पटसन, नारियल, सुपारी, तिल, अन्य तेल-तेलवाना, मजीठ, ग्वार, लालमिर्च, किशमिश, छुहारा, धनिया, जीरा, हल्दी में सुधार जबकि सिल्वर, पोस्ता, मखाना, काजू, बादाम, अखरोट, चिरौंजी, मैंथोल में मंदी, सोना, कॉपर में कुछ सुधार। ता. 18 को 08।13 घं.मि. पर बुध वक्री होगा। जिससे रुई में घटा-बढ़ी तथा गुड़, चीनी, तेल-तेलवाना, अरण्डी, बिनौला, लहसुन, प्याज, आलू, अखरोट में सुधार।

अक्टूबर 2015

यह मास गुरुवार आश्विन कृष्ण पक्ष 4 भरणी नक्षत्र वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य-राहु कन्या में, शनि वृश्चिक में, केतु मीन में, शुक्र कर्क में, गुरु-मंगल सिंह राशि में विचरण करेंगे। ता. 1 को शुक्र सिंह राशि में 13।01 घं. मि. पर प्रवेश कर गुरु-मंगल के साथ प्रतियुति करेगा। सोना, कॉपर में विशेष तेजी जबकि गेहूं, जौ, चना, तुवर, मसूर, मटर, लाल चंदन, मजीठ, लालमिर्च, कालीमिर्च, ग्वार, घी, रसकस पदार्थ, मेथी, लौंग, ईलाइची, हल्दी, जीरा, धनिया आदि में सुधार। सिल्वर, रुई, कपास में अस्थिरता। कमोडिटी ट्रेडिंग में सोना, कॉपर आदि धातुओं के वर्तमान स्तर में तेजी का सौदा अल्पकाल में लाभकारी हो सकता है। ता. 6 को बुध पूरब में उदय होगा 16।00 घं.मि. पर जिससे 1 माह के अंदर अनाज, घृत में सुधार, रुई में घटा-बढ़ी, सोना, ग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां, मगज तरबूज, कमर कंद आदि में अस्थिरता। ता. 10 को बुध मार्गी होगा। 11।13 घं.मि. पर जिससे रुई में कुछ सुधार। सिल्वर, ग्वार, लालमिर्च में घटा-बढ़ी चलकर कुछ सुधार। एक सप्ताह के अंदर गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में सुधार। सोयाबीन, सरसों, अलसी अरण्ड, गुड़, खांड, बिनौला, कपूर, चंदन, धनियां, जीरा में मंदी, जबकि सोना आदि धातुओं में कुछ स्थिरता। नोट-बहुत-सी जिंस धातुओं में मंदी चल रही हो तो मार्गी होते ही उन जिंस धातुओं में सुधार और जिनमे सुधार पहले से चल रहा हो उनमें मंदी। ता. 17 को सूर्य अपनी नीच राशि में 24।00 घं.मि. पर प्रवेश करने से रुई, सिल्वर, काजू, चावल, चीनी, मखाना, में मंदी, सोना, कॉपर में विशेष तेजी जबकि ग्वार, मजीठ, लालमिर्च, सुपारी में सुधार। ता. 25 को बुध तुला में 22।29 घं.मि. पर प्रवेश कर सूर्य के साथ युति करेगा। जिससे रुई, गुड़, खांड, सोना, कॉपर में तेजी जबकि सिल्वर, तेल-तेलवाना, अरण्ड, लहसुन, आलू, अदरक में अस्थिरता। ता. 31 को बुध पूरब में अस्त से एक माह के अंदर घृत में मंदी, रुई में घटा-बढ़ी जबकि सोना में तेजी की लंबी लाईन बन सकती है।

नवंबर 2015

यह मास रविवार कार्तिक कृष्ण पक्ष 6 आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि में प्रारंभ होगा। मासारंभ में बुध-सूर्य तुला में, शनि वृश्चिक में, केतु मीन में, चन्द्रमा मिथुन में, गुरु सिंह में, राहु-शुक्र-मंगल कन्या में विचरण करेंगे। मासारंभ में राहु, शुक्र, मंगल की प्रतियुति किराना जिंसों, धातुओं में सिल्वर, दाल-दालवाना, तेलवाना के लिए शुभकारक नहीं है। जबकि सोना, ग्वार, लालमिर्च, कॉपर, हल्दी में समर्थन कारक ग्रह है। ता. 3 को मंगल-शुक्र कन्या राशि में राहु के साथ प्रतियुति से रुई, सिल्वर में सामान्य सुधार। सोना, लालमिर्च, ग्वार, गेहूं, जौ, चना, तुवर में व्यापक सुधार। चावल, गुड़, खांड, पशुचारा, जलावन, चावल, पोस्ता में विशेष तेजी। धनियां, जीरा, कालीमिर्च, हल्दी में घट-बढ़। ता. 12 को शनि अस्त से रुई, अलसी, सरसों, सोयाबीन, अरंड, बिनौला, मूंगफली में सुधार। लोहा, जस्ता, शीशा, कालीमिर्च, उड़द, तिल, पशुचारा, लहसुन, प्याज, अदरक, आलू, चावल, गुड़, खांड, हल्दी में मंदी। ता. 16 को सूर्य, वृश्चिक राशि में 23।47 घं.मि. पर प्रवेश कर सूर्य, शनि के साथ युति से सोना, कॉपर, सिल्वर, रुई, कपास, ऊनी वस्त्र में सुधार। ग्वार, लालमिर्च, मेथी, गेहूं, चना, तुवर, रक्त वर्ण की जिंसों में कुछ मंदी। ता. 17 को बुध इस राशि में 7।11 घं.मि. पर। सूर्य, शनि, बुध की प्रतियुति से तेल-तेलवाना, घृत, दूध पाउडर, रुई, सिल्वर, मैंथौल, पोस्ता, चिरौंजी, मखाना में सुधार, सोना में घट-बढ़। ता. 30 को शुक्र तुला राशि में 10।44 घं.मि. पर प्रवेश से रुई, सिल्वर में मंदी, सोना, कॉपर में सुधार।

दिसंबर 2015

यह मास मंगलवार मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष षष्ठी अश्ले. नक्षत्र सिंह राशि में प्रारंभ होगा। मासारंभ में बुध-सूर्य-शनि वृश्चिक में, केतु मीन में, चंद्रमा-गुरु-सिंह-मंगल-राहु कन्या में, शुक्र तुला राशि में विचरण करेंगे। ता. 6 को बुध, धनु राशि में 10।52 घं. मि. पर प्रवेश से रुई, कपास, कॉटन, सिल्वर में मंदी। ता. 13 को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई में कुछ सुधार जबकि सिल्वर में मंदी, पाट-पटसन बारदाना, पोस्ता, काजू, सिंघाड़ा में सुधार। शनि उदय होने से रुई, अलसी, सरसों, अरंड, बिनौला, मूंगफली में मंदी, ईस्पात, जस्ता, शीशा, कालीमिर्च, उड़द, पशुचारा, लहसुन, प्याज, आलू, अदरक, चावल, हल्दी, गुड़, खांड में सुधार। ता. 16 को सूर्य, बुध के साथ युति से रुई, कपास, कॉटन, तिल, अन्य तेल-तेलवाना, सोना, चांदी में सुधार। ता. 23 को मंगल तुला में प्रवेश से रुई, कपास, कॉटन, तेल-तेलवाना, गुड़, खांड, उड़द, मूंग, मोंठ, चना आदि में सुधार। ता. 25 को शुक्र, वृश्चिक राशि में प्रवेश से सिल्वर, रुई में घटा-बढ़ी, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा में अच्छा सुधार। ता. 26 को बुध, मकर राशि में प्रवेश से रुई, सोना, कॉपर, सिल्वर, जिंक, लैड, ईस्पात में सुधार तथा दाल-दालवाना, अनाजों में घट-बढ़। यह आंकलन ग्रहस्थितियों पर आधारित है। इसमें जोखिम भी हो सकते हैं। अतः अपने विवेक से तेजी-मंदी का विचार करना चाहिए। यह फला-फल अति संक्षिप्त है। एक ही टर्मिनल के अंदर सभी जिंस धातुओं की तेजी-मंदी विस्तार से विवेचित नहीं किया जा सकता है। आप चाहे तो प्रत्येक जिंस धातुओं के साथ ही किराना जिंसों, तेल-तेलवाना, दालवाना, सोना, चांदी, कॉपर आदि का अलग-अलग रिपोर्ट विस्तार से प्राप्त कर सकते हैं।

दैनिक तेजी-मंदी अचूक चांसों की जानकारी चाहें तो मेरे यहां से प्राप्त कर सकते हैं। लिखित सभी जिन्स धातुओं की दैनिक, साप्ताहिक, मासिक रिपोर्ट अलग-अलग प्राप्त कर सकते हैं। अचूक चांसों की ताजा जानकारी सिर्फ मो.-09431486216 या 09801873719 पर ली जा सकती है। जिसका सेवा शुल्क है-वार्षिक साधारण 15500/-, मध्यम 20500/-, स्पेशल 25500/-, सर्वोत्कृष्ट 30500/-तथा रियायत दर सर्वोत्कृष्ट रिपोर्ट तथा शेयर्स बाजार दैनिक रिपोर्ट एक साथ सेवा शुल्क 50500/-निर्धारित है। 2 या 4 या 6 माह की रिपोर्ट नहीं भेजी जाती। ट्रायल के रूप में कुछ भी संभव नहीं है। सिर्फ उपरोक्त शुल्क ही स्वीकार किये जाते हैं। ट्रायल की अपेक्षा न करें अन्यथा निराशा हो सकती है। अचूक चांसों की जानकारी उपरोक्त मो.-09431486216 पर ही संभावित है। व्यापार में किसी प्रकार के लाभ-हानि की जिम्मेदारी प्रकाशक, लेखक, सम्पादक की नहीं होगी। यह विवेचना पूरी तरह ग्रह-चाल पर आधारित है। अतः इसमें कई कारणों से फला-फल किसी भी समय परिवर्तित हो जाय, तो आश्चर्य नहीं मानना चाहिए।

लेखक-पं. टुनटुन शास्त्री
(शेयर बाजार भविष्य एवं कमोडिटी ट्रेडिंग समीक्षकार)
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरौंव (नटवार)
जिला-रोहतास (बिहार)-802218

व्यापार दिग्दर्शन (तेजी-मंदी योग) सं. 2072 वि.

लेखक:
पं. नारायण शर्मा कौशिक

नोट-यह फलादेश ग्रह स्थिति पर आधारित है। इसका उद्देश्य पाठकों को केवल मार्गदर्शन कराना है। सट्टा खेलने वाले व्यापारी किसी भी समय नुकसान उठा सकते हैं। हानि-लाभ का दायित्व प्रकाशक, संपादक या लेखक पर नहीं होगा।

अप्रैल 2015

यह माह चैत्र शुक्ल पक्ष 12 बुधवार, मघा नक्षत्र से प्रारंभ हो कर बैशाख शुक्ल 12 गुरुवार उ.फा. नक्षत्र तक रहेगा। इस माह में व्यापारिक तेजी-मंदी गणना ग्रह योग से तुष, धान्य महंगे होंगे। तिलहन का अभाव, सरसों में तेजी बनेगी। कृतिका नक्षत्र का शुक्र भेदन से अति वृष्टि का योग। माह में मेष संक्रांति के कारण तेजी।

यदा मेषे स्थितो भानू फल तुलादिकम्।
रक्षादि तिल तेलादेस्तादा चैव महर्घता॥
चैत्री पूर्णिमा हस्त नक्षत्र युक्ता यदा भवेत।
खाद्यान्न तेजी बने तेन उत्पादन न्यूनता॥
प्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहणम् यदा हस्ते नक्षत्र जायते।
धातु स्वर्ण रजत बहुनि महर्घता॥

इन योगों के आधार पर माह में रुई, गन्ना, तिल, तेल, सर्वफल, फूल, कपास, मूंगफली, बिनौला, सरसों आदि में तेजी रहेगी। गुड़, शक्कर, खांड, सोना, चांदी में घटा-बढ़ी रहेगी। गुवार, लौंग, काली मिर्च, तिलहन, दलहनों में तेजी। भौमवारी मेष संक्रांति बैशाख कृष्ण 10 को होने से भूमि भवन महंगे होंगे। लाल रंग की वस्तुओं में अस्थिरता का योग बनता है। **ता. 1 से 7 तक** सोना, चांदी में तेजी आकर मंदी का झटका लगेगा। रुई, कपास, बिनौला, खल, चना में मंदी। गुड़, शक्कर, खांड, कपड़ा बाजार में तेजी। लोहा में विशेष तेजी। **ता. 8 से 13 तक**-गेहूं, चना, चावल, पीतल, तांबा में तेजी बनकर मंदी का झटका चलेगा। शृंगार सामग्री विशेष तेजी। तेल, तिलहन, पेट्रौल के भावों में तेजी। सोना, चांदी में मंदी के झटके। **ता. 14 से 23 तक**-चना, मटर, जौ, अरंडा, तिल, ज्वार, ग्वार, बाजरा में तेजी। सोयाबीन, तांबा, लोहा, सीमेंट में विशेष तेजी। सरकारी नियंत्रण का योग भी। **ता. 24 से 30 तक**-सोना, चांदी, जस्ता, स्टील, खोपरा, नारियल, चावल, चना, गेहूं, रुई, कपास, लहसुन, कपड़ा बाजार, किराना बाजार तेजी का रहेगा।

इस माह में 42% मंदी, 52% तेजी तथा 8% स्थिरता का योग बनेगा। व्यापारी वर्ग स्टॉक करते समय ध्यान रखें। सामाजिक क्रांति हो तो बाजार अस्थिर भी हो सकता है।

मई 2015

यह माह वैशाख शुक्ला 13 प्रथम (वृद्धि तिथि), हस्त नक्षत्र वृद्धि, वार शुक्रवार से प्रारंभ होकर ज्येष्ठ शुक्ल 13 रविवार स्वाती नक्षत्र तक रहेगा। माह में ज्येष्ठ कृष्ण 12 शुक्रवार को वृषभ संक्रांति लगेगी। कृतिका में भौम दिनांक 1 मई को, मिथुन में शुक्र दिनांक 2 मई को, वृषभ में भौम दिनांक 3 मई को, रोहिणी में बुध दि. 4 मई को, आर्द्रा में शुक्र दिनांक 8 मई को। कृतिका में रवि दिनांक 11 मई को, वृषे रवि 15 मई को, सोमवति अमावस्या 18 मई को, चन्द्रदर्शन 19 मई को 45 मु.। वक्री बुध ता. 22 को बुधास्त पश्चिम। ता. 25 को रोहिणी रवि संक्रमण के योग से व्यापार जगत में तेजी-मंदी का योग इस प्रकार रहेगा।

वृष राशौ यवा सूर्य कनकान्न महर्घता।
वातं बहते च दीर्य कर्पासादि विनाशनम्॥
वृषे संक्रमति सूर्य मीने चैव चन्द्रमा।
संग्रह सर्वधान्यानां षष्ठ मासे फलम् शुभम॥

इन ग्रहाचार के योग तेजी-मंदी की गणना निम्न प्रकार से प्रस्तुत है। **ता. 1 से 8 तक**-मसूर, मटर, रस पदार्थ में घटा-बढ़ी चलेगी। घृत, गुड़, शक्कर में तेजी। खनिजों में तेजी बनेगी। तांबा में विशेष तेजी, कांसा में मंदी होगी। अलसी, मूंग, बाजरा भी महंगा होगा। **ता. 9 से 15 तक**-सोना, चांदी, पीतल, लोहा, चना, चावल, जौ, गेहूं में तेजी का अच्छा योग बनेगा। कपास में तेजी के साथ घटा-बढ़ी चलेगी। हल्दी की तेजी-मंदी अस्थिर, सरसों में तेजी अच्छी रहेगी। **ता. 16 से 23 तक**-सरसों, मोठ, मूंग, लाल मिर्च, तिल, तेल, खांड में तेजी कारक योग। सोना, चांदी, तांबा, अरहर, सोयाबीन में घट-बढ़ अस्थिर भाव चलेंगे। आयल, कपास, डोडा में मंदी का योग। **ता. 24 से 31 तक**-किराना बाजार विशेष तेजी में। सोमवती अमावस्या मंदी कारक योग करेगी। रसकस, चना, मलका मसूर, मूंगफली में तेजी का शुभ योग रहेगा। वायु तेज से घास, घी, तेल में तेजी। चौपाया दुधारू पशुओं में तेजी। दूध, दही, सब्जी भी तेजी में।

जून 2015

यह माह ज्येष्ठ शुक्ला 14 सोमवार विशाखा नक्षत्र से प्रारंभ होकर प्रथम आषाढ़ सुदी 13 मंगलवार ज्येष्ठ नक्षत्र तक रहेगा। इस माह में पुष्ये शुक्र ता. 2 को, मृगे भौम ता. 6 को, आश्ले. 3 गुरु। अनु. 1 शनि ता. 6 को प्रवेश करेंगे। ता. 12 को बुधोदय पूर्व में तेजी कारक रहेगा। दिनांक 15 को मिथुन संक्रांति सोमवार। मंगल भी मिथुन में, ता. 17 को आश्ले. में शुक्र, ता. 18 को चन्द्रदर्शन मु. 45, ता. 19 को रमजान। रोजा प्रारंभ मुस्लिम, ता. 22 को रवि आर्द्रा में प्रवेश, वर्षा योग प्रारंभ। ता. 25 को भौम आर्द्रा में, ता. 26 को आश्लेषा में गुरु 4 चरण। ता. 30 को मृगे बुध संचरण करेगा। इन ग्रहाचार योग से इस माह में तेजी-मंदी योग इस प्रकार रहेगा।

कृष्ण पक्ष में तिथि घटै किंतु सुदी बढ़ जाए।
होय सुभिक्ष सुकाल सुख महंगाई हट जाए॥
वृहस्पति यदा कर्के स्वल्पम् मेघः प्रवर्तते।
राजर्षि विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते॥

इन योग एवं ग्रहाचार से वस्तुओं की तेजी-मंदी की विशेष गणना। इस प्रकार रहेगी।

ता. 1 से 8 तक-अरंडा, सूत, मोती, चावल, चांदी, चना में तेजी का योग बनेगा। सोना, तांबा के भावों में उतार-चढ़ाव चलेगा। सरसों, जौ, गेहूं, गन्ना, ईख, रसकस, शक्कर, उड़द के भावों में तेजी होगी। **ता. 9 से 16 तक**-सुपारी, नारियण, बादाम, तिल, तेल में मंदी का योग बनेगा। अरहर, सोयाबीन, मटर, तांबा, सोना, चांदी में तेजी। लालमिर्च, जीरा, सरसों, तारामीरा, शेयर्स बाजार में उतार चढ़ाव चलेगा। इमारती सामान भी तेजी में चलेंगे। शेष में विशेष तेजी योग। **ता. 17 से 23 तक**-सभी वस्तुओं में एक बार तेजी बनेगी। सोना, चांदी, बारदाना, इमारती सामान, सीमेंट में उतार-चढ़ाव खाद्यानों में तेजी विशेष। **ता. 24 से 30 तक**-जूट, जायफल, ईलायची, काली मिर्च, गर्म मसाला में तेजी अच्छी बनेगी। सोना स्थिर चांदी तेजी में रहेगी। कपास, बाजरा, मोठ, ज्वार, ग्वार, हल्दी, पाट, बारदाना में तेजी का अच्छा योग बनेगा। फिर भी व्यापारी रुख देखकर काम करें।

इस माह में तेजी 54%, मंदी 30% तथा समरूपता 16% का योग बना है। मौका एवं बाजार भाव देखकर सौदा करें।

जुलाई 2015

यह माह प्रथम आषाढ़ सुदी 14 बुधवार मूल नक्षत्र से प्रारंभ होकर द्वितीय आषाढ़ सुदी पूर्णिमा शुक्रवार उ.षा. नक्षत्र तक रहेगा। माह में मघा सिंह शुक्र 4 को, आर्द्रा में बुध 9 को बुधास्त पूर्व में 13 को, पुनर्वसु में भौम 15 को, कर्क संक्रांति अमावस्या गुरुवार ता. 16 को, पुनर्वसु में बुध 16 को। चन्द्रदर्शन मु. 30 ता. 18 को, पुष्यं रवि 20 को, वक्री शुक्र 25 को। आश्लेषा बुध 28 को। कर्क भौम 29 को ग्रह चार चलेगा। कृष्ण पक्ष में द्वितीय क्षय। मंहगाई का कारक भी बनेगी।

वक्रचाल चलते हुए शनि की चाल का भान।
चालू रुख बाजार में अस्थिरता को जान॥
यदा कन्या स्थिति राहुर्धात्री फलं च पिप्पली।
मास मेकं द्रव चैव महर्घ त्रिगुणा भवेत्॥

इन योगों से दो मास में आंवला, पिपली, चंदन, कपूर, कस्तूरी आदि सुगंधित पदार्थों में तेजी का योग तिगुना बढ़ सकता है। सर्राफा में मंदी बनेगी।

ता. 1 से 7 तक–रुई, सोना, चांदी, मूंगफली, सरसों, पाट, सूत, गुड़, खांड, गेहूं तथा अन्य प्रमुख वस्तुओं में गिरावट का योग बनेगा। अनाजों में तेजी बनेगी। मशीनरी में भी तेजी का योग है। **ता. 8 से 16 तक**–तेलों, दालों एवं धातुओं में तेजी का योग, गेहूं, चना, ज्वार, ग्वार, खांड, चीनी, अरहर, खल, कपास, बिनौला आदि में तेजी चलेगी। सर्राफा में उठा पटक योग। **ता. 17 से 24 तक**–अरंडा, मूंगफली, अलसी, जीरा, हींग, हल्दी उड़द, सरसों, चावल, शक्कर, मोठ, चंवला में तेजी। भाव यथावत् अन्यथा सभी वस्तुओं में भारी तेजी बनेगी। **ता. 25 से 31 तक**–सोना, चांदी, तांबा में मंदी। खनिज पदार्थों में तेजी। नारियल, तिलहन, दलहन, खांड, मिश्री, चीनी में तेजी का योग। मटर, डोडा पोस्त, तम्बाकू, गुटखों में भी तेजी कारक योग।

देत्यागुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता।
सर्व धान्य समर्घत्सव मेघाश्च प्रबला भुवि॥

अर्थात्–पृथ्वी पर मेघ प्रबल होवे। रुई, सोना, चांदी, घी, सूत, अलसी, अरंडा, गुड़ खांड आदि रस पदार्थों में तेजी कारक योग। यानि किराना सामग्री में तेजी रहेगी।

माह में 48% तेजी, 40% मंदी ,12% एक तरफा भाव या सम स्थिर भाव चलेंगे। स्टॉक का समय मंदी के दौरान शुभ रहेगा।

अगस्त 2015

यह माह श्रावण बदी प्रतिपदा शनिवार श्रवण नक्षत्र से प्रारंभ होकर भाद्रपद बदी द्वितीया सोमवार तक रहेगा। माह में ता. 2 को शनि मार्गी, ता. 3 को आश्लेषा में रवि, ता. 4 को पुष्य भौम, मघा सिंहे बुध, ता. 5 को शुक्रास्त पश्चिम में, ता. 6 को भौमोदय पूर्व। ता. 7 को बुधोदय पश्चिम में। ता. 11 को गुरु अस्त पश्चिम में, ता. 12 को पू.फा. में बुध, ता. 13 को कर्के आश्लेषा शुक्र (वक्री), ता. 15 को मघा 3 गुरु, ता. 16 को चन्द्रदर्शन मु. 30, सिंहेदर्क मघा ता. 17 को। ता. 20 को शुक्रोदय पूर्व में। ता. 30 को मघा 4 गुरु, ता. 31 को हस्ते बुध प्रवेश, माह में पांच शनिवार का योग से–**"दुर्भिक्षं पंच पदेषु शेषावारा शुभ प्रदाः॥"** मंहगाई बढ़ेगी, दुर्भिक्ष कारक योग। लेकिन मार्गी होना शुभ कारक भी रहेगा। सोना में गड़बड़।

पड़वा पांचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मंदी करे क्षय होय तेजी जान॥

धान्यादि भावों में मंदी बनेगी। रस, घृत, किराणा की वस्तुओं में तेजी बनेगी। वर्षा योग्य होगी। कहीं मध्यम तो कहीं तेजी में। उत्तरी भारत में बाढ़ भी। **श्रावण शुक्ल पक्ष में कभी कोई तिथि का नाश। छत्र भंग का योग है, आगे कार्तिक मास॥**

ता. 1 से 8 तक–गुड़, सोना, घी, चावल, तिलहन, नमक, लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, कालीमिर्च, चांदी में मंदी कारक योग बनेगा। वर्षा कारक योग तथा अनाज तेज होगा। चना में विशेष तेजी। ता. 9 से 17 तक–उड़द, गेहूं, सरसों, मटर, चावल, मक्का, रुई, हींग, मसूर, मूंग आदि में घट-बढ़ योग चलेगा। किराना की अन्य शेष सामग्रियों मे तेजी के झटके लगेंगे। ता. 18 से 25 तक– रुई, कपास, सोना, चांदी गुड़, खांड, तिलहन, कागज, मूंगफली, ग्वार, ज्वार में मंदी झटका।

बुधादित्य योग से विश्व व्यापार का तेजी योग होय।
धातु बाजार में शेयर्स एवं वायदा में मंदी बने दोय॥

ता. 26 से 31 तक–इस सप्ताह औषधि बाजार में विशेष तेजी। पाट, बारदाना, कच्चा सूत, धनिया, हल्दी में भी तेजी। इत्र, सुपारी, प्याज, लहसुन में भी तेजी-मंदी उठा पटक चलेगी।

शनिवारा यदा पंच मासे पाताले कम्पते फणी।
ईशानवेश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता ॥

इससे तेजी का विशेष योग भी बनेगा। विद्रोह, युद्ध आदि योग भी बनते हैं। माह में 47% तेजी, 28% मंदी तथा 25% समभाव या उठा पटक चिंतादायक व्यापार गति चलेगी। सावधान।

सितंबर 2015

यह माह भाद्रपद बदी तीज मंगलवार उ.भा. नक्षत्र से प्रारंभ होकर आश्विन बदी तीज बुधवार तक रहेगा। नक्षत्र आश्विनी तक योग। माह में गुरु उदय पूर्व में ता. 6 का, मार्गी शुक्र ता. 6 को। रविवारीय अमावस्या ता. 13 को। पू.फा. में गुरु 14 को। चन्द्रदर्शन ता. 15 को 30 मु., सिंह मघा भौम ता. 15 को, ता. 16 को बुधास्त पश्चिम में, ता. 18 को वक्री बुध। ता. 17 को कन्या में भुवन भास्कर सूर्यदेव चतुर्थी में गुरुवार।। धान्य भावों में तेजी कारक योग। अनुराधा 2 में शनि ता. 26 को, हस्ते रवि 27 को, पू.फा. 2 में गुरु ता. 30 को संचरण करेंगे। इस माह में पांच मंगलवार होने से–**"यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥"** पांच मंगल से विश्व में रक्तपूरित पृथ्वी यानि युद्ध तथा राजा-मंत्री अध्यक्ष आदि का देहावसान फलतः मंहगाई का योग बनेगा। यह घटना विश्व में तेजी का कारक बनाता है। शत्रुता का योग सर्वत्र देशों में परस्पर बनने का योग भी बनता है। **"कन्या राशि गते ज्ञेहि कांचन शुद्ध शर्करा। मासे षष्ठे ददेल्लाभं पुनः शस्तो भविष्यति॥"**

यानि कन्या राशि गत बुध हो तो सोना, चांदी आदि धातु, गुड़, खांड, शक्कर, हल्दी, गेहूं, जौ, चना में तेजी। रुई में मंदी।

ता. 1 से 7 तक–गुड़, खांड में घटा-बढ़ी, वर्षा का अभाव या वृष्टि से व्यापार में गड़बड़ी। चांदी, सोना में घटा-बढ़ी भी चलेगी। घी का भाव मंदा होगा। मूंग, उड़द, मोंठ का उत्पादन अच्छा मंदी का योग। **ता. 8 से 15 तक**–तिल, तेल, सरसों, रायडा, अलसी, अरंडा, सोयाबीन, पीपरमैंट, शहद, ईख, तारामीरा के भावों में तेजी 3 से 5% तक मंदी का भी झटका आएगा। पाट, बारदाना, कन्द, मूल में मंदी बनेगी। **ता. 16 से 24 तक**–रुई, सूत, कपास, सरसों, बिनौला, चावल, गुड़, घी, तांबा, सोना, चांदी आदि में मंदी कारक योग। **ता. 25 से 30 तक**–सोना, लोहा, स्टील, कांसा, पारा, सिगौड़ा, गेहूं, चना, चावल, कागज, चमड़ा, प्लास्टिक एवं शेयर्स बाजार में तेजी बनेगी।

शुक्र मंगल योग सुक्ति कर्क राशि द्वादश भाव।
स्त्री शृंगार सामग्री तेजी बने मन मानी के भाव॥

माह में 48% तेजी, 37% मंदी तथा 15% समभाव या अस्थिरता का योग बनेगा। अतः बाजार रुख का विशेष ध्यान रखें।

अक्टूबर 2015

यह माह आश्विन बदी चतुर्थी गुरुवार भरणी नक्षत्र से प्रारंभ होकर कार्तिक बदी पंचमी मृगशिरा नक्षत्र तक रहेगा। माह में पांच बुधवार शुभ कारक। ता. 3 को उ.फा. में बुध (वक्री), ता. 6 को पू.फा. में भौम पूर्व में बुधोदय। ता. 10 को चित्रा में रवि। नवरात्रा शारदीय ता. 13 को प्रारंभ। चन्द्रदर्शन ता. 14 को, मुहूर्ती 15, ता. 15 को मुस्लिम वर्ष 1437 मोहर्रम प्रथम मास प्रा.। ता. 17 को तुला संक्रांति। पू.फा. 3 गुरु व पू.फा. में शुक्र। ता. 24 को तुला

स्वाती नक्षत्र में सूर्य। ता. 25 को चित्रा में बुध। ता. 28 को भौम उ.फा. में। ता. 29 को तुला में बुध। ता. 31 को बुध अस्त पूर्व में। इन ग्रहों के संचार से व्यापार द्विग्दर्शन परामर्श जन सेवार्थ व्यापारियों की सेवा में प्रस्तुत है।

तुला संक्रांति शनिवार अनुराधा नक्षत्र में जब-जब होय।
सर्व वस्तु मंहगी युद्ध बवंडर का योग होय।
माह में पांच मंगलवार होने से बड़े व्यक्ति का अभाव होय।
व्यापारी भी संकट में रहें वस्तुओं में घटा-बढ़ी होय।।

सोमवती अमावस्या सुभिक्ष का कारक बनेगी। धन-धान्य की उत्पत्ति अच्छी। घी, धान्य के भावों में मंदी का योग बनेगा।

वक्रचाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाए।
चालू रुख बाजार का एक दम पलटा खाये।।

यानि तेजी मंदी में, मंदी तेजी में बदलकर चिंता दायक योग बनाएगा। **ता. 1 से 8 तक**–दूध, घी, इलायची, जौ, गेहूं, चावल, रुई, जूट, कपूर, बिनौला आदि में एकाएक मंदी का योग बनेगा तथा तिलहन, दलहन, आलू, प्याज, लालमिर्च, उड़द में तेजी होगी। **ता. 9 से 16 तक**–रेशम, पाट, बारदाना, कालीमिर्च, तुअर, मटर, सोना, चांदी मूंगफली में अस्थिरता का योग चलेगा। घी, तिलहन में भी घटा-बढ़ी। सूत वस्त्र बिनौला, कपास, तिलहन किराना में तेजी होगी।

एक जगह गुरु-शुक्र हो बने युद्ध आसार।
अनावृष्टि अति वृष्टि से दुख पावे संसार।।

भारी वर्षा से फसलें नष्ट। वस्तुओं में तेजी।

ता. 17 से 25 तक–चावल, सुपारी, हींग, उड़द, राई, अरंडा, चना, मक्का में मंदी बनेगी। शेयर्स बाजार उछलेगा। चांदी में घटा-बढ़ी सोना स्थिर रहेगा। चौपाये जानवर जो दुधारू होंगे, तेजी में बिकेंगे। **ता. 26 से 31 तक**–अनाजों में काफी उतार-चढ़ाव। सावधानी से स्टॉक करें। जुवार, बाजार, गुवार, मूंग, मोठ भी मंदा चलेगा। किराना बाजार, रसकस संबंधी वस्तुओं में तेजी बनेगी।

माह में मंदी 45%, तेजी 45% तथा 10% स्थिरता के भाव रहेंगे। बाजार रुख से सौदा करें।

नवंबर 2015

यह माह कार्तिक बदी षष्ठी रविवार आर्द्रा नक्षत्र से प्रारंभ होकर मार्गशीर्ष बदी पंचमी सोमवार पुष्य नक्षत्र तक रहेगा। माह में पांच रविवार होंगे। **"यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्ष छत्र भंगश्च तदास्ते च महद्भयम्।।"** के अनुसार मास में दुर्भिक्ष (अकाल) छत्र भंग तथा जनता में भय उपस्थित रहेगा। माह में ता. 2 को स्वाती में बुध। ता. 3 को कन्या में भौम, शुक्र, ता. 4 को पू.फा. 4 में गुरु, ता. 6 को विशाखा में सूर्य, ता. 10 को विशाखा में बुध, बुधवारी अमावस्या ता. 11 को, ता. 13 को चन्द्रदर्शन 15 मु., ता. 16 को वृश्चिके सूर्य सोमवार, मु. 45 मंहगाई एवं भय कारक, ता. 19 को हस्ते भौम। ता. 20 को अनुराधा रवि, ता. 24 को चित्रा में शुक्र, ता. 27 को ज्येष्ठा में बुध, ता. 28 को उ.फा. 1 में गुरु, ता. 30 को तुला में शुक्र संक्रमण करेंगे। **कन्या राशि गते शुक्रे सर्वस्य विनश्यती। तत्र धान्य महर्घाणी शालिश्च विशेषता।।** एक मास में चावलों में अच्छी तेजी बनेगी। रुई, रेशम, पाट, काली मिर्च, चांदी, घी, सोना में मंदी करेगा। गुड़, खांड में मंदी का झटका चलेगा। सोमवारी संक्रांति अनाजों में समता गेहूं, चना, घी, मंदे होंगे। सर्वत्र व्यापार में स्टॉक क्रय संबंधी चर्चा का योग बनेगा।

"बुध गुरु की आय दीवाली। जीवे रंक मरे भड़साली।।" यानि वस्तुओं की मंदी के दौर से व्यापारी जो बड़े स्टॉक कर्त्ता हैं रोयेंगे। **ता. 1 से 7 तक**–सोना, चांदी, तांबा, लोहा, इस्पात सभी धातुओं में मंदी का झटका चलेगा। रुई, पाट, बारदाना के भाव भी मंदे होंगे। गुड़, खांड, शक्कर, ईख, मसाला, ऊनी वस्त्र तेजी में चलेंगे। **ता. 8 से 15 तक**–सोना, रुई, गेहूं, बाजरा, मूंग, खांड, सरसों, अलसी, मूंगफली के भावों में अस्थिरता (घट-बढ़) चलेगी। रेशम, कालीमिर्च, लौंग, ईलाइची के भावों में तेजी चलेगी। शेयर्स बाजार उठा-पटक वाला रहेगा। सुपारी तेजी में रहेगी। **ता. 16 से 25 तक**–रुई, पाट, बारदाना, अलसी, रबड़, कागज, सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर, वस्त्रों के भावों में तेजी योग।। अरहर, अलसी, धनियां, सोयाबीन, पीपरमेंट में तेजी का योग रहेगा। किराना की सामग्री में तेजी का योग भी। **ता. 26 से 30 तक**–खाद्यानों में मंदी। रसकस में तेजी तथा सोना, चांदी, चना, गेहूं, चावल, धनिया, मिर्च, हल्दी में अच्छी तेजी का योग बनेगा। पुराना स्टॉक कर्त्ता लाभ प्राप्त करेंगे।

माह में तेजी 42%, मंदी 38% तथा एक तरफा भाव या स्थिरता 20% बनेगी। सावधानी से सोदा करें।

दिसंबर 2015

यह माह मार्गशीर्ष बदी षष्ठी मंगलवार अश्लेषा नक्षत्र से प्रारंभ होकर पौष बदी षष्ठी गुरुवार तक रहेगा। माह में ता. 3 को ज्येष्ठा में रवि। ता. 5 को शुक्र स्वाती में। ता. 6 को मूल धनु राशि में बुध। ता. 12 को चन्द्रदर्शन 30 मु., चित्रा में भौम, ता 14 को शुक्रोदय पूर्व में। ता. 13 बुधोदय पश्चिम में, ता. 16 को सूर्य धनु राशि में प्रवेश बुधवार को, ता. 17 को विशाखा में शुक्र, ता. 23 को तुलायां भौम, ता. 24 को उ.षा. में बुध, ता. 25 वृश्चिक शुक्र, ता. 26 को मकरे बुध, ता. 27 को ज्येष्ठा 1 शनि। ता. 28 को अनु. में शुक्र, ता. 29 को पू.षाढ़ में सूर्य। ग्रह चार योग चलेंगे। बुधवारी संक्रांति के कारण उड़द, मूंग, दहलन, पशुओं का चारा सूखे मेवे व गर्म मसाले आदि मंदे होंगे। तेलों में समता योग। **"यदा वृश्चिक राशि में दिनी दुख संयुक्ता। वर्ष मात्र मथे चोहर्वमिन्दुप्रस्थों विनश्यति।।"** वृश्चिक राशि का शनि लग्न में तथा सूर्य के साथ में होने से गेहूं, चावल, चना, अजवायन, मैथी, मसूर, रुई, चांदी, तिलहन पदार्थों में तेजी कारक योग रहेगा।

मंगसिर में बुध का उदय अथवा भृगु का अस्त।
तृण चारा कमती मिलें बेचो पशु समस्त।।

ता. 1 से 8 तक–सोना, चांदी, अनाज, तिलहन, दालें आदि में घटाबढ़ी चलेगी। रुख मंदी का रहेगा। सूत, सण, कपास, सरसों आदि में तेजी का योग बनेगा। गुड़, खांड, चीनी, तिलहन, दलहन, मूंग, लहसुन में अस्थिरता योग। रुख तेजी का रहेगा। **ता. 9 से 16 तक**–घी, गुड़, खांड, रसकस, चावल तेजी का योग रहेगा। रुई, कपूर, ईलायची, चीनी, बिनौला, गेहूं, जौ में तेजी के झटके आएंगे। धातु बाजार स्थिर रहेगा। बारदाना, पाट, केसर, कपास, धागा, अरहर, सोयाबीन में मंदी का योग। **ता. 17 से 25 तक**–चंदन, कपूर, इत्र, तैल, औषधि, कालीमिर्च, लौंग, ईलायची, धागा, हल्दी, राई, सरसों, दालों में तेजी। घी, गुड़, तेल, रस पदार्थों में अस्थिरता का योग। वस्त्र बाजार, ऊनी कपड़ा बाजार में तेजी का रुख। **ता. 26 से 31 तक**–दूध, घी, सूत, गेहूं, जौ, चावल, रुई, कपूर, ईलायची, बिनौला, चीनी, बादाम, काजू, पिस्ता, किशमिश आदि सूखा मेवा में अच्छी तेजी। मेथी दाणा में घट-बढ़ योग चलेगा। प्लास्टिक वस्तुओं में भी तेजी बनेगी।

शनि बुध सूरज साथ एक राशि इक सेज।
जौ, गेहूं, चावल, चना, ज्वार, बाजरा तेज।।

माह में 52% तेजी, 38% मंदी तथा 10% समभाव या एक तरफा भाव चलेंगे। व्यापारी रुख देखकर ही सौदा करें।

जनवरी 2016

यह मास पौष बदी सप्तमी शुक्रवार उ.फा. नक्षत्र से प्रारंभ होकर माघ बदी सप्तमी रविवार चित्रा तक रहेगा। माह में ता. 4 को स्वाती में भौम, ता. 6 को वक्री बुध, ता. 8 को वक्री गुरु तथा ज्येष्ठा में शुक्र, ता. 11 को चन्द्रदर्शन 30 मु., उषायां रवि प्रवेश, ता. 14 को मकरेऽर्क मकर संक्रांति गुरुवार, धनुषि बुध, ता. 19 को बुधोदय पूर्व में। धनुषि मूले शुक्र, ता. 21 को अभिजित में रवि, ता. 24 का श्रवणे रवि, ता. 26 को बुध मार्गी, ता. 29 को पू.षा. में शुक्र, ज्येष्ठा 2 शनि, सिंहे उ.फा. 1 राहु, कुंभे पू.भा. केतु ग्रहादि चार एवं अन्य योगानुसार व्यापारिक तेजी-मंदी गणना।

ता. 10 जनवरी 2016-को राहु+केतु की राशि परिवर्तन सिंह+कुंभ होना राजनीतिक हलचल से व्यापार जगत विशेष प्रभावित होगा।

पौषी मावस के दिना भौम सूर शनिवार।
भय उपजे महंगे बिकें ज्वार, बाजरा, ग्वार॥
पौषी अमावस को पड़ै शनि रवि, मंगलवार।
धान्य भाव महंगा रहे भय उप जावन हार॥

गुरुवारी संक्रांति के कारण गेहूं, अनाजों में मंदी का योग करेगा। सोना, चांदी व किराना में उतार-चढ़ाव अधिक रहेगा। राहु के कारण गेहूं आदि अनाजों में मंदा लेकिन किराना व पंसारी के सामान में तेजी बनेगी। शनि के कारण मिर्च गर्म मसालों में तेजी। धनिया में मंदी का योग। माह में पांच शनिवार के योग से तेजी का रुख ज्यादा रहेगा।

ता. 1 से 8 तक-सोना, तांबा, मजीठ, सभी प्रमुख शेयर्स, सरसों, काली वर्ण की वस्तुओं में तेजी, लौंग, सुपारी, मूंग, लालमिर्च तेजी के झटकों से व्यापार चलेगा। लकड़ी ईंधन में तेजी का योग। ता. 9 से 16 तक-अमावस्या क्षय योग से तेजी का झटका लगेगा। सोना, चांदी, रुई, सूत, पाट बारदाना तेज, गुड़, घी, गेहूं, तेलों में तेजी, गल्ला, ईख बाजार भी तेजी में रहेगा। मिर्च, किराना सामान में तेजी बनेगी। स्टॉक नहीं करें। ता. 17 से 25 तक-गुड़, खांड, चीनी, अंजीर, खजूर, ज्वार, बाजरा, मक्का, मूंग, मोठ, उड़द आदि दालों में मंदी कारक योग। सोना, चांदी, तांबा में तेजी। चारा, घास में तेजी बनेगी। ता. 26 से 31 तक-गुड़, सरसों, मूंगफली में तेजी। राई, सरसों में अस्थिरता योग। किराना बाजार तेजी में चलेगा। वृश्चिक का शुक्र स्त्री श्रृंगार संबंधी सामग्री में तेजी कारक रहेगा।

मकर च स्थितो भानुर्घृत तैल महर्घता।
सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुख पीड़नम्॥

तेलों के भावों में वृद्धि योग। सुभिक्ष होने के बाद भी जनता पीड़ित रहेगी। माह में 54% तेजी, 36% मंदी का योग 10% स्थिरता या एक तरफा या उतार-चढ़ाव भाव चलेंगे। सावधान!

फरवरी 2016

यह माह माघ बदी अष्टमी सोमवार स्वाती नक्षत्र से प्रारंभ होकर फाल्गुन बदी षष्ठी सोमवार विशाखा नक्षत्र तक रहेगा। माह में ता. 6 को धनिष्ठा में रवि, ता. 8 को मौनी अमावस्या, मकरे, बुध, ता. 9 को चन्द्रदर्शन मु. 15, उ.षा. में शुक्र, ता. 12 को मकरे बुध, ता. 13 को कुंभ संक्रांति शनिवार, ता. 17 को श्रवणे बुध (वक्री), पू.षा. 4 गुरु, ता. 20 को वृश्चिके भौम, श्रवणे शुक्र, ता. 26 को धनिष्ठा बुध, ता. 28 को बुध अस्त पूर्व में, ग्रह संचार योग बनेंगे। तेजी-मंदी में प्रभाव गणना बोध।

भूमिपुत्रस्तते जातः सर्वधान्य महर्घता।
माषा मुद्रास्तथा सुत्रं कर्पासादि विशेषतः॥

तुला मंगल के योग से अलसी, गेहूं, ज्वार, ग्वार, मटर, नारियल, रुई, सूत, सरसों, चावल, पाट, बारदाना, उड़द, अनाजों में तेजी योग।

माघ सुदी साते दिना भरणी नखत विचार।
रोग नाश हो धरा पर उत्तम हो पैदावार॥
माघ सुदी आठे दिना कृतिका नक्षत्र आव।
के फाल्गुन रोली लगे के सावन महंगा भाव॥

भरणी सप्तमी के योग फसलों में रोग नहीं लगेगा। कृतिका नक्षत्र अष्टमी का होने से जौ, गेहूं, फसल को रोली (लाल रंग) का कीड़ा लगेगा या श्रावण में वर्षा का अभाव से भावों में तेजी।

"कुंभ राशौ यदा भानु-समृद्धि तत्र जायते।
लवण च तथा तैल स्वल्पार्घ चैव दापयेत॥" के अनुसार लौंग, ईलायची, जीरा, काली मिर्च, अनारदाना, गेहूं, जौ, चना, मटर, रुई, बाजार मंदा रहेगा। मक्का, ज्वार, बाजरा, सूत आदि में तेजी बनकर एकाएक मंदी भी आएगी या घटबढ़ योग।

ता. 1 से 7 तक-अरहर, सोयाबीन, चना, तिलहन, सोना, चांदी, तांबा, पीपली, पीतल, सूखा मेवा, दूध, पनीर, प्लास्टिक सामग्री, लोहा में तेजी का योग बनेगा। शेयर्स बाजार लुढ़केगा। ता. 8 से 14 तक-रुई में तेजी, कपास, चावल, बाजरा, गुवार, जुवार, मक्का, बारदाना, कुमकुम, सिंदूर, चंदन, धूप, घी, सौंफ, जीरा, हल्दी, समस्त किराना सामग्री में घटा-बढ़ी योग चलेगा। ता. 15 से 22 तक-गुड़, खांड, कपास, तैल, घी, चना, जौ, गेहूं, कपास, चांदी, बिनौला में तेजी। पटसन, बारदाना में मंदी, पत्थर, लोहा, जिपसम, कोयला में घटा-बढ़ी योग। ता. 23 से 29 तक-उड़द, गेहूं, जौ, बाजरा, मूंग, मोठ, तिलहन, नारियल, सरसों, सतावर, हींग, मसूर, मक्का, सुपारी, अरंडा में घट-बढ़ योग तथा धातु बाजार सोना, चांदी, पीतल, तांबा, में तेजी बनेगी। दूध, घी, तेल में एक तरफा भाव चलेंगे।

माह में 47% तेजी, 43% मंदी तथा 10% एक तरफा भाव या घटा-बढ़ी चलेगी। सावधान!

मार्च 2016

यह माह फाल्गुन बदी सप्तमी मंगलवार अनुराधा नक्षत्र से प्रारंभ होकर चैत्र बदी सप्तमी गुरुवार मूला नक्षत्र तक रहेगा। माह अप्रैल चैत्र बदी अष्टमी पू.षा. से चैत्री अमावस्या रेवती दिनांक 7 अप्रैल, 2016 तक वि. स. 2072 की समाप्ति तक गणना बोध। ता. 1 मार्च कुंभे बुध, ता. 2 धनि शुक्र, ता. 4 पू.भा. रवि, ता. 5 शत. बुध, ता. 7 कुंभे शुक्र, ता. 10 को चन्द्रदर्शन मु. 30, ता. 13 को शत. शुक, ता. 14 को मीन संक्रांति सोमवार, ता. 20 को उ. मा. बुध, ता. 18 को मीने बुध, ता. 23 को पू.भा. शुक्र, ता. 25 को वक्री शनि, ता. 27 को रेवती बुध, ता. 30 को रेवती रवि, ता. 31 को मीने शुक्र, माह अप्रैल 2016 दि. 1 से 7 तक गणना, पू.फा. 4 राहु पू.भा. 2 केतु ता. 1 को। ता. 2 को मेष अश्वि. बुध, ता. 3 को उ.भा. शुक्र, गणना गोचर ग्रहादि बोध से तेजी-मंदी योग।

गुरुवारी अमावस्या वृष्टि शुभदायक।
जन कल्याण योग शुभ मंगल दायक॥

मकरे च यदा शुक्र सर्वसस्य विनाश कृत। जायतेऽत्र महर्घाणि नात्र कार्या विचारणा॥ के कारण एक मास में फसलें नष्ट प्राकृतिक कारणों से बनता है। फलतः खाद्यान्न महंगा होगा।

फाल्गुन अथवा चैत्र में मंगल या शनि वक्र।
मंदी रह करके चलै फिर तेजी का चक्र॥

मार्च-ता. 1 से 8 तक-सोना, चांदी, रुई, मूंगफली, अरंडा, बिनौला, अनाज, लाल वर्ण की वस्तुओं में तेजी। मक्का, हींग, राई, नमक, लसण मे मंदी। ता. 9 से 16 तक-गुड़, खांड, चावल, कपास, पाट, बारदाना में मंदी या घट-बढ़ योग। नमक, आलू, तेल, जुवार, गुवार, चना, हल्दी, जीरा में तेजी। ता. 17 से 25 तक-सूत, पाट, बारदाना, कालीमिर्च, लौंग, इलायची, तेल, तिल, अन्न, चांदी, सोना में घट-बढ़ के साथ तेजी का रुख चलेगा या एक तरफा लाईन चलेगी। ता. 26 से 31 तक-दलहन, तिलहन, रुई, कपास, चांदी, सोयाबीन, घी, मूंग, मशीनरी, पत्थर, तांबा, सोना में तेजी। बिनौला, अनाज, मक्का, राई, सरसों में घट-बढ़ योग बनता है।

अप्रैल-ता. 1 से 7 तक-इस सप्ताह में योगानुसार "मीन राशि गते भानो सर्व धान्य महर्घता। लवण तिल, तैल च महर्घ समाजायते" इस सप्ताह में गेहूं, चावल, चना, जौ, गुड़, खांड, नमक, मिर्च, लौंग, इलायची, राई, सरसों, अलसी, मैथी, सोना, चांदी के भावों में तेजी। घी, दूध, तेल के भाव स्थिर रहेंगे। सवा माह में 47% तेजी 43% मंदी 10% एक तरफा भाव चलेंगे।

तेजी-मंदी की धारणा ग्रह गोचर आधार।
कौशिक नारायण मानो रुख आधार॥

लेखक-नारायण शर्मा कौशिक
बेदांग ज्योति संस्थान-सारडा बाजार, मेड़ता सिटी,
जिला-नागौर (राजस्थान) पिन- 341510
फोन-01590-220792, 220900, 09413930247, 09799011197

सामूहिक व्यापार भविष्य संवत् 2072 वि.

लेखकः
विश्वबन्धु शर्मा एवं जयवर्द्धन शर्मा

चैत्र शुक्ल पक्ष

इस माह का प्रारंभ 21 मार्च शनिवार से होकर ता. 4 अप्रैल शनिवार सन् 2015 को समाप्ती हो रही है। प्रतिपदा को शनिवारी चन्द्र दर्शन के प्रभाव से ता. 23 मार्च से पिछली चाल बहुधा वस्तुओं में पलटेगी। गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोंठ, बाजरा में नरमी का रुख रहेगा। सरसों, तिल, सोयाबीन, अरंडा, सींगदाना में तेजी होगी। ता. 23 मार्च की शाम को मेष राशि पर मंगल देव का प्रवेश जोरदार मंदी कारक लाल रंग की वस्तुओं पर करेगा। यह मंदी रिलायंस व वस्त्र उद्योग के शेयरों में भी होगी। निफ्टी में रुख अच्छी नरमी का रहने की धारणा है।

ता. 27 मार्च को मीन राशि में बुध देव का प्रवेश गेहूं, गुड़, खांड के भावों में मंदी कारक होगा। सोना, चांदी में चली आ रही मंदी समाप्त होकर तेजी का रुख बनेगा। हाजिर मार्केटों में ता. 28 मार्च से चाल चलेगी। वायदा मार्केटों में ता. 30 मार्च से यह चाल बनेगी। आज ही बुधास्त भी हो रहा है। जो ता. 30 मार्च से जोरदार चाल अवश्य ही देगा। यह चाल मंदी की चलेगी। गेहूं, जौ, चना में नरमी होगी। वायदा मार्केटों में धमाकेदार मंदी का दौर चलेगा। यहां की चालू चाल लंबी भी खिंच सकती है।

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को खग्रास चन्द्रग्रहण का होना खेती की समृद्धि करेगा। ब्राह्मणों व पशुओं को सुख होगा। जगत में क्षेम, कल्याणर आरोग्य आदि शुभ धन व धर्म की वृद्धि कारक होगा। सोना, चांदी, तांबा, जिंक, लेड के भावों में विशेष तेजी होगी। धान्य के भावों में विशेष तेजी होगी। ज्वार, अफीम, कालीमिर्च व काली वस्तु के संग्रह से दो माह में ही मोटा लाभ मिल सकेगा। पीले रंग की वस्तुओं का संग्रह भी लाभकारी रहेगा। चावल व औषधी के भाव विशेष तेजी पकड़ेंगे।

बैशाख मास

बैशाख माह में ता. 5 अप्रैल रविवार की रात्रि में मार्गी गुरु के प्रभाव से सोना आदि धातुओं में ता. 6 अप्रैल से जोरदार तेजी होगी। हल्दी, केसर, मेथी दाना, गुड़, चीनी के भाव विशेष तेजी पर जाएंगे। तब भी इनमें से जिस वस्तु के भाव ता. 6 अप्रैल को ता. 4 अप्रैल के बने नीचे भाव से टूट जाएं। तब मंदी उसी वस्तु में आगे जानना।

ता. 6 अप्रैल की शाम को वृष में शुक्र देव का प्रवेश सफेद रंग की वस्तुओं व लाल रंग की वस्तुओं में विशेष मंदी की चाल देने वाला होगा। यहां पर निफ्टी व शेयर मार्केटों में तेजी का दौर चलने की धारणा ता. 7 अप्रैल से है।

ता. 9 अप्रैल की रात्रि में मंगल देव का अस्त होने से संगमरमर, ग्रेनाइट, पत्थर तथा पत्थर से बनी वस्तुओं के भावों में विशेष तेजी बनेगी।

ता. 12 अप्रैल की प्रातः मेष राशि में बुध देव का प्रवेश। ता. 13 अप्रैल से सोना, चांदी, मूंग, मोती, हीरा, पन्ना, गेहूं, जौ, चना में तेजी का रुख बनेगा। गुड़, खांड, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, घी, रुई, कपास में मंदी का चांस संपन्न होगा।

ता. 14 अप्रैल को 17 घटी 16 पल पर मेष संक्रांति का प्रभाव लाल रंग की वस्तुओं के भावों में विशेष उछाला आएगा। वायदा मार्केटों में लाल मिर्च, तांबा, रीठा, बादाम, घी, सरसों, गुड़ में विशेष तेजी होगी। नारियल, कपास, रुई, सूत, सुपारी, चांदी, सोना में घट-बढ़ के साथ तेजी होगी। गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, अरहर, मूंग, मोठ, चावल में भाव तेजी पर जाएंगे। यहां पर वायदा मार्केटों में विशेष चाल फलवती होगी। विशेष रूप से ऊपर लिखी वस्तुएं। ता. 15 अप्रैल से जोरदार चाल पकड़ेगी। यहां की चालू चाल ता. 17 अप्रैल तक ही विशेष होगी।

नोट–जिस वायदा वस्तुओं में ता. 15 अप्रैल को ता. 14 अप्रैल के बने नीचे भाव टूटेंगे उसी वस्तु में जोरदार मंदी की चाल तीन दिन चलेगी।

वैशाख शुक्ल पक्ष में सोमवारी चन्द्रदर्शन मंदी कारक है। बाद ता. 27 अप्रैल को वृष राशि पर बुध के प्रवेश का प्रभाव जीरा, धनियां, हरी सब्जी, अजवायन, सौफ आदि हरे रंग की वस्तुओं में मंदी होगी। तिल, सरसों, सोयाबीन, गुड़, खांड, घी, रुई, कपास, गेहूं, जौ, चना के भावों में तेजी होगी। जिन वस्तुओं में ता. 27 अप्रैल को ता. 25 अप्रैल के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा और नीचे ही मार्केट बंद होगा उनमें तूफानी मंदी का दौर ता. 4 मई तक होगी।

ता. 3 मई रविवार को रात्रि में वृष राशि में मंगल देव का प्रवेश लाल रंग की वस्तुएं जूट, पाट, वारदाना, कपास, रुई, सूत, सभी अनाज, केसर, तिल, कपूर, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता व शेयरों में तेजी की चाल देगा। जोकि अगले माह में प्रविष्ट हो जाएगी।

लक्ष्मी चांस– ता. 6 अप्रैल की शाम को ता. 7 अप्रैल के लिए दुतर्फा गली लगाना। ता. 14 अप्रैल 1 बजे लगभग दुतर्फा गली लगाना। ता. 21 अप्रैल की बंद घंटी से पहले 22 के लिए दुतर्फा गली लगाना।

ज्येष्ठ मास

ज्येष्ठ माह पांच मंगलवारों से युक्त होने के प्रभाव से सफेद व लाल रंग की वस्तुओं के भावों में भारी उथल-पुथल होगी। रुख तेजी कारक प्रायः रहेगा।

ज्येष्ठ बदी सप्तमी का क्षय भी जिन वस्तुओं में तेजी चल रही होगी उनमें आगे भी तेजी जारी रहेगी। अगले दिन ता. 11 मई को कृतिका में सूर्य का प्रवेश रात्रि में होगा। यह प्रवेश सोना, चांदी, रुई, अलसी, अरंडी, गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, मूंग, मोंठ के भावों में एक पाक्षिक तेजी कारक होगा।

ता. 15 मई की प्रातः वृष संक्रांति के प्रभाव से अन्नादि के भावों में साधारण तेजी होगी। सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास के भावों में तेजी का रुख रहेगा।

ता. 19 मई को मंगलवारी चन्द्रदर्शन होने से तेजी विशेष ता. 20 मई से बनेगी। ता. 21 मई को बुधास्त दोपहर बाद होने से जोरदार व तूफानी तेजी का चांस बहुधा वस्तुओं में संपन्न होगा। यहां पर सोना, चांदी, तांबा, खल, बिनौला, कपास, जीरा, धनियां, गेहूं, गुड़, चीनी के हाजिर व वायदा मार्केटों में हर घटे भाव खरीदते हुए और उछाले में बेचते हुए ता. 2 जून तक व्यापार करते हुए लाभ उठा सकते हैं। क्रूड आयल, शेसर मार्केट, निफ्टी के मार्केट मंदी में रहेंगे।

नोट– जिस वस्तु में ता. 22 मई को 21 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा। उसी में मंदी की चाल चलेगी।

ता. 30 मई शाम को कर्क राशि में शुक्र देव का प्रवेश करना चांदी में मंदी कारक है। तब भी अगर ता. 31 मई को ता. 30 के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ें तब तेजी ही जारी रहेगी। गुड़, खांड, शक्कर, घी, तेल के भाव वृद्धि को प्राप्त करेंगे। गेहूं, जौ, चना, अरहर, मटर में मंदी होगी।

लक्ष्मी चांस–ता. 8 मई को ता. 11 मई की दुतर्फा गली लगाएं। ता. 15 मई को 11 बजे दुतर्फा गली लगाएं। ता. 21 मई की शाम को ता. 22 मई की दुतर्फा गली लगाएं।

प्र. आषाढ़ मास

यह माह पांच बुधवार तथा पांच ही गुरुवारों से युक्त होने से प्रायः नरमी का रुख मार्केटों में रहेगा। ता. 3 से 8 जून तक पिछले माह की चालू चाल चलकर ता. 9 जून को प्रातः बुध देव के पूर्व दिशा में उदय होने के प्रभाव से एक तेजी का झटका देकर ता. 13 जून तक घट-बढ़ होगी। बाद मार्गी बुध के प्रभाव से 15 जून तक नरमी होगी। बाद ता. 15 जून की रात्रि में मिथुन संक्रांति के प्रभाव से जूट, पाट, वारदाना, रुई, सूत, कपास, रेशम, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, चीनी, घी, उड़द, मूंग, चावल, गेहूं, चना, अरहर के भावों में तेजी बनेगी। आज ही रात्रि में मिथुन में मंगल का प्रभाव धीरे-धीरे मंदी को बल देने वाला होगा। अतः धारणा मंदी की ज्यादा बन रही है।

नोट– जिस वस्तु में ता. 16 जून को 15 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा तब उसी वस्तु में मंदी जोरदार होगी। कुल मिलाकर मंदी के चांस 80% और तेजी के 20% लगते हैं।

ता. 27 जून को नवमी तिथि की वृद्धि मंदी को बल देगी।

लक्ष्मी चांस– ता. 9 मई को प्रातः 10 मई की दुतर्फा गली लगायें। ता. 15 मई को 16 की दुतर्फा गली लगायें। ता. 25 मई को 26 की भी दुतर्फा गली लगायें।

द्वि. आषाढ़ मास

द्वितीय आषाढ़ माह का प्रारंभ प्रतिपदा क्षय से होगा। इस माह में पांच शुक्रवारों का प्रभाव विशेष मंदी कारक होगा। ता. 5 जुलाई को रात्रि में मिथुन में बुध का प्रभाव रुई, कपास, सोना, चांदी, तांबा, निकिल के भावों में मंदी कारक होगा। लाल मिर्च, लाल चंदन, गेहूं, जौ, चना, गुड़, चीनी, खांडसारी में आज दोपहर में सिंह राशि शुक्रदेव के प्रभाव से तेजी होगी।

ता. 12 जुलाई को पूर्व दिशा में बुधास्त के प्रभाव से ता. 13 जुलाई से गुड़, खांड, चीनी, गेहूं, जौ, चना, जूट, पाट, सोना, चांदी में मंदी होगी। यह मंदी एक सप्ताह की वायदा मार्केटों में व हाजिर मार्केटों में चलेगी।

ता. 17 जुलाई की शाम को कर्क संक्रांति के प्रभाव से तिलहनों में ता. 24 जुलाई तक तेजी होकर ता. 25 जुलाई से चाल पलटेगी। नारियल, मजिष्ठ के भाव मंदे होंगे। धान्य के भाव तेज होंगे।

वायदा विचार–अगर ता. 20 जुलाई को ता. 17 जुलाई के बने लोएस्ट भाव से मार्केट टूटे तब मंदी ता. 21 जुलाई तक जोरदार होगी। ऊंचे बने भाव के क्रास होने पर तेजी की चाल चलेगी।

कर्क राशि स्थितो भानुः श्लेषायाम् तत्र वर्षति।
धान्यानि तत्र सर्वाणि क्वचित्क्वापि महर्घता॥

ता. 21 जुलाई शनिवार की रात्रि में कर्क राशि में बुध देव के प्रवेश के प्रभाव से गुड़, खांड, चीनी, दूध, दही, तेल, मूंगफली, सोना, जीरा, धनियां में 24 जुलाई तक तेजी के बाद चाल पलटने की धारणा है। बाद ता. 25 जुलाई की रात्रि में शुक्र देव के वक्री होने से मंदी का प्रभाव चावल, चांदी, कपूर, साबूदाना, गोलाकस के भावों पर पड़ेगा।

ता. 30 जुलाई गुरुवार की रात्रि में कर्क राशि में मंगल देव का प्रवेश गुड़, खांड, शक्कर, रुई, घी, तेल, सरसों, अलसी, अरंडी, अनाजों के भावों में तेजी होगी। चांदी में घटा-बढ़ी होगी। नोट–जिस वायदा वस्तु में ता. 31 जुलाई को ता. 30 के बने नीचे भाव से मार्केट ऊपर लिखित वस्तुओं में टूटेगा। तब उसी वस्तु में मंदी की चाल से बेचकर लाभ उठाना।

लक्ष्मी चांस–ता. 6 जुलाई को प्रातः ता. 7 के लिए दुतर्फा गली लगाना। ता. 10 जुलाई की शाम को ता. 13 जुलाई हेतु दुतर्फा गली लगाएं। ता. 30 जुलाई की शाम को 31 के लिए भी दुतर्फा गली लगायें।

श्रावण मास

श्रावण माह के प्रारंभ में ही बदी प्रतिपदा को मार्गी शनि के प्रभाव से सोंठ, अदरक, कालीमिर्च के भाव तेज होंगे। धनियां जीरा, सौंफ में मंदी होगी।

ता. 3 अगस्त की शाम को आश्लेषा में सूर्य के प्रभाव से सोना, चांदी, रुई, कपास, खल, बिनौला, गेहूं, चावल, गुड़, सोयाबीन, सरसों, तिल, चना, उड़द के भावों में तेजी होगी। वायदा मार्केटों में ता. 2 अगस्त तक चली आ रही चाल पलटने की धारणा ता. 3 अगस्त से है। जोकि ता. 7 अगस्त तक चलेगी।

ता. 7 अगस्त की शाम को शुक्रास्त होने से ता. 8 अगस्त से लाल व सफेद रंग की वस्तुओं के भावों में मंदी होगी।

ता. 14 अगस्त को शाम को गुरु देव का अस्त होना विशेष मंदी कारक 15 दिन तक है। नोट–जिस पीली या लाल वस्तु के भावों में ता. 17 अगस्त को ता. 14 के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ेगा। तब उसी में तेजी की चाल ता. 28 अगस्त तक चलेगी।

ता. 17 अगस्त को सिंह संक्रांति 15 घटी 17 पल पर लगेगी। चांदी, शेयर्स मार्केट, गुड़, खांड, रुई, तिल, तेल रत्नों में तेजी होगी। हल्दी, लाल रंग की वस्तुएं, सोना व अनाजों में मंदी की चाल चलेगी।

ता. 22 अगस्त को रात्रि में कन्या राशि में बुध देव का प्रवेश रुई, कपास में मंदी कारक होगा। जीरा, धनियां में विशेष तूफानी तेजी करेगा। गुड़, खांड, शक्कर, हल्दी, गेहूं, जौ, चना में तेजी कारक होगा। यहां पर यह ध्यान रखें कि जिन वस्तुओं में तेजी लिखी है। उनमें से जिस वस्तु के भाव ता. 24 अगस्त को ता. 21 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा उसी में मंदी का चांस आगे एक सप्ताह अवश्य चलेगा।

लक्ष्मी चांस–ता. 3 अगस्त को प्रातः 4 के लिए दुतर्फा गली लगाना। ता. 11 अगस्त की शाम को दुतर्फा गली लगाना। ता. 17 अगस्त को 11 बजकर 30 मि. पर 18 के लिए दुतर्फा गली लगाना।

भाद्रपद मास

भाद्रपद माह का प्रारंभ ता. 30 अगस्त रविवार से होकर ता. 28 सित. सोमवार को समाप्त होगा। पांच रविवार तेजी को बल देंगे और पांच ही सोमवार मंदी कारक भी हैं। भाद्रपद कृष्ण पक्ष में पष्ठी तिथि का क्षय होने के बाद त्रयोदशी तिथि की वृद्धि होने से तेजी को बल मिलेगा। प्रथम तो ता. 3 सितंबर तक पिछले माह की चालू चाल ही चलेगी। बाद में ता. 4 सितं. से तेजी का चांस ता. 8 सितं. तक प्रायः सभी वस्तुओं में चलेगा।

ता. 8 सितंबर की रात्रि में गुरु देव के उदय के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गुड़, हल्दी, जूट, गेहूं, जौ, चना के भाव तेजी कारक होगा। शुक्र, मंगल का योग तेजी कारक होगा। वायदा वस्तुओं में विशेष धमाकेदार चांस है कि ता. 1 सितं. तक जिस सफेद व लाल रंग की वस्तु में मंदी चलकर तेजी चालू हो और ता. 2 सितंबर को ता. 1 सितं. के बने ऊंचे भाव से भी मार्केट बढ़ जाए। तब उसी वायदा वस्तु में तूफानी व धमाकेदार तेजी का चांस ता. 8 सितं. तक संपन्न होगा। यहां पर चांदी ता. 1 सितं. को घटे भाव खरीद करें और ता. 8 तक ही मोटा लाभ उठा लेवें।

भाद्रपद सुदी दोज की रात्रि में सिंह राशि पर मंगल देव का प्रवेश व मंगलवारी चन्द्रदर्शन के प्रभाव से हल्दी, सोना, तांबा, मक्का, जई, जौ, नारियल, सुपारी, छुआरा के भावों में अच्छी तेजी की चाल चलेगी।

ता. 17 सितं. को दोपहर में कन्या संक्रांति के प्रभाव से रुई, कपास, नारियल, सुपारी, बादाम, काजू, छुआरा, लाल रंग की वस्तुएं, तिल, तेल, सरसों, अरंडी के भावों में मंदी की चाल चलेगी। निफ्टी व शेयर्स में व धातुओं में भी घट-बढ़ साथ मंदी की चाल चलेगी। ता. 24 सितं. को दोपहर बाद पश्चिम दिशा में बुधास्त के प्रभाव से तूफानी तेजी की चाल रुई, कपास, सोना, चांदी, जूट, पाट, गुड़, शक्कर में चलेगी। जो ता. 28 सितं. तक ही जोरदार होगी।

लक्ष्मी चांस–ता. 3 सितं. को 4 के लिए दुतर्फा गली लगाना। ता. 8 की शाम को 9 सितं. के लिए दुतर्फा गली लगाना। ता. 15 सितं. की शाम को 16 के लिए तेजी लगाना।

आश्विन मास

आश्विन माह में प्रतिपदा का क्षय तेजी कारक है। इस माह में पांच मंगलवार भी तेजी को बल देने वाले सिद्ध होंगे। मंगल, गुरु योग सोना, हल्दी, गर्म मसाला, ग्वार, चना, लालमिर्च, मसूर, लाल व पीले रंग की वस्तुओं के भावों में विशेष तेजी ता. 17 अक्टूबर तक चलेगी। वायदा मार्केटों में ता. 30 सितं. की चालू चाल ता. 1 अक्टूबर तक चलकर ता. 3 अक्टूबर से पिछली चाल के पलटकर चलने की धारणा है। बाद ता. 6 अक्टूबर तक या अधिकतम ता. 7 अक्टू. के मार्केट खुलने के 15 मिनट बाद तक वही चाल चलने की धारणा है।

ता. 8 अक्टूबर को बुध उदय के प्रभाव से धान्य, चावल के भावों में नरमी का रुख बनेगा। जो ता. 24 अक्टू. तक चलेगा।

ता. 17 अक्टूबर शनिवार की रात्रि में तुला संक्रांति के प्रभाव से दस दिवसीय मंदी की चाल चलेगी। रुई व चांदी में विशेष मंदी होगी। नारियल, सुपारी, लाल चंदन, मजीठ, गेहूं, जौ, चना में साधारण तेजी होगी।

ता. 24 अक्टूबर शनिवार की शाम को स्वाति नक्षत्र में सूर्य देव का प्रवेश सोना, चांदी के भावों में ता. 26 अक्टू. से पिछली चाल पलटकर चलने की धारणा है। **नोट**–अगर ता. 26 अक्टू. को ता. 23 अक्टूबर के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे तब मंदी का चांस। ता. 27 अक्टू. तक संपन्न होगा। रुई, सूत, वस्त्र, गुड़, खांड, खल बिनौला, सुपारी, मिर्च, सरसों, राई, हींग के भाव तेजी पर जाएंगे।

लक्ष्मी चांस– ता. 7 अक्टू. को ता. 8 के लिए दुतर्फा गली लगाना। ता. 16 अक्टू. की शाम को ता. 19 के लिए दुतर्फा गली लगाना। ता. 24 अक्टू. को शाम को ता. 26 अक्टू. के लिए दुतर्फा गली लगाएं।

कार्तिक मास

कार्तिक का महीना बुधवार ता. 28 अक्टूबर से प्रारंभ होकर ता. 25 नव. बुधवार को समाप्त होगा। पांच बुधवार घटा-बढ़ी कारक है। रुझान मार्केटों का नरमी की ओर रहेगा। बदी प्रतिपदा ता. 28 अक्टूबर को प्रातः बुधास्त के प्रभाव से जोरदार मंदी ता. 30 अक्टू. तक होगी। बाद ता. 31 अक्टू. से उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में शुक्र के प्रभाव से जोरदार तेजी, रुई, कपास, धान्यों के भावों में होगी। धातुओं के भावों में घटा-बढ़ी होगी। शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी चलने की धारणा है। तिलहनों में अगर पहले से तेजी चली आ रही होगी। तब 17 नवंबर तक चलती रहेगी।

आगे ता. 3 नवंबर की प्रातः कन्या में शुक्र और उसके कुछ समय बाद कन्या राशि में ही मंगल देव प्रवेश करेंगे। यह स्थिति मंदी को बल देने वाली होगी। यहां पर सफेद व लाल रंग की वस्तुएं जोरदार मंदी में चलेंगी। **नोट**–अगर किसी वस्तु के भाव ता. 4 नव. को ता. 3 के बने नीचे भाव से टूटेंगे तब उसी वस्तु में अवश्य मंदी ता. 11 नवं. तक चलती रहेगी। विपरीत दिशा के भाव क्रास होने पर विपरीत चाल ही चलती रहेगी।

कार्तिक सुदी प्रतिपदा ता. 12 नवं. की शाम को हस्त में शुक्र के प्रवेश का प्रभाव चावल, रुई, चांदी के भावों में मंदी कारक होगा। सोना के भावों में साधारण तेजी होगी। बाद ता. 13 नवं. को 12 घटी पर शनि देव का अस्त होने से अनाजों के भावों में तेजी का रुख बनेगा।

ता. 16 नवं. की रात्रि में वृश्चिक संक्रांति के प्रवेश के प्रभाव से तूफानी तेजी का योग बनेगा। सरसों, तिल, तेल, सोयाबीन, अरंडी, रुई, कपास, खल, बिनौला, ऊन, सोना, चांदी में श्रेष्ठ तेजी होगी। लालमिर्च व लाल वर्ण की वस्तुओं के भाव नरमी में रहेंगे। **नोट**– जिस वायदा व हाजिर वस्तु में ता. 17 नवं. को 16 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा तब उसी में मंदी लंबी चलेगी।

लक्ष्मी चांस–ता. 30 अक्टू. की शाम को अगले दिन की दुतर्फा गली लगाना। ता. 3 नवं. को 10 घं. 30 मि. पर भी दुतर्फा गली लगाएं। ता. 25 नवं. की प्रातः भी दुतर्फा गली लगाएं।

मार्गशीर्ष मास

मार्गशीर्ष माह पांच गुरुवार व पांच ही शुक्रवारों से युक्त है। जो नरमी की चाल को बल देने वाले होंगे। प्रारंभ में ता. 29 नवं. तक पिछली चाल चलकर ता. 30 नवं. से तुला राशि में शुक्र के प्रभाव से सोना, गुड़, चीनी में साधारण तेजी होगी। रुई में पिछली चाल पलटेगी। धान्यों में तेजी होगी। सुपीरियर लाईन के प्रभाव से सरसों, तिल, तेल, अरंडी, सोयाबीन के भावों में मंदी जारी रहेगी।

ता. 6 दिसं. को 11 घटी 36 पल पर धनु राशि में बुध देव के प्रवेश के प्रभाव से सोना, चांदी, रुई, कपास, खल बिनौला, सूत के भावों में तेजी होगी। यह चाल ता. 7 दिसं. से 19 दिसं. तक होगी। **नोट**–अगर वायदा मार्केटों में जिंक, लेड, कॉपर, निकिल, कालीमिर्च, लोहा, लालमिर्च, निफ्टी, शेयर मार्केटों में ता. 2 दिसं. को ता. 1 दिसं. के बने नीचे भाव से मार्किट टूट जाए। तब मंदी की अवश्य चाल ता. 4 दिसं. तक जोरदार चलेगी। बाद नोट है कि ता. 7 दिसं. को 10 घं. 45 मि. के बाद ता. 5 दिसं. के बनें नीचे भाव से जिस हाजिर या वायदा वस्तु के भाव टूटेंगे तब उसी वस्तु में मंदी की चाल ता. 11 दिसं. तक चलेगी। बाद ता. 14 दिसं. को ता. 11 के बने नीचे भाव से मार्केट के जिस वस्तु के भाव टूट जाएं, तब मंदी ता. 16 दिसं. के 11 घं. 50 मि. तक चलेगी।

ता. 16 दिसं. को 17 घटी 54 पल पर धनु संक्रांति के प्रभाव से अनाजों में श्रेष्ठ मंदी होगी। रुई, तिल, तेल, कपास, सोना, चांदी के भावों में अच्छी तेजी होगी। ता. 16 दिसं. की रात्रि में शनि देव के उदय होने के प्रभाव से मंदी की चाल घट-बढ़ के साथ गेहूं, जौ, चना में चलेगी। रुई, कपास, जूट, पाट, वारदाना, गुड़, खांड, शक्कर व तेल, तिलहनों में तेजी होगी। यहां पर तूफानी तेजी भी बन सकती है। **नोट**– अगर ता. 16 दिसं. को 2 बजे बाद ता. 15 से 16 दिसं. के 2 बजे तक बने लोएस्ट भाव से मार्केट टूट जाए, तब मंदी का चांस ता. 18 दिसं. तक उसी वायदा वस्तु में जोरदार संपन्न होगा।

ता. 24 दिसं. को 12 घं. 41 मि. पर तुला राशि पर मंगल के प्रभाव से जोरदार तेजी जूट, पाट, वारदाना, गुड़, खांड, मूंगफली, गेहूं, रुई, कपास, उड़द, मूंग व सोना, चांदी, तांबा, निकिल के भावों में होगी।

लक्ष्मी चांस– ता. 30 नवं. की प्रातः 1 दिसं. के लिए दुतर्फा गली लगाना। ता. 10 दिसं. की शाम को 11 के लिए दुतर्फा गली लगाएं। ता. 16 दिसं. को दोपहर दो बजे पीली व लाल रंग की वायदा वस्तुओं में दुतर्फा गली लगाना।

पौष मास

इस माह में पांच शनिवार व पांच ही रविवार होने से प्रातः तेजी की चाल सभी वस्तुओं में रहेगी। पौष बदी प्रतिपदा की प्रातः मकर राशि में बुध के प्रवेश के प्रभाव से मंगल से चतुर्थ दशम् योग दृष्टि संबंध बनेगा। जोकि हरे रंग की वस्तुओं में विशेष कर जीरा, धनियां, सौंफ के भावों में जोरदार तेजी बनाएंगा। यहां पर किए गए स्टाक पर 20 जनवरी तक भी अच्छी तेजी आ लेने पर लाभ भी उठा सकते हैं। वायदा मार्केटों में भी मोटा लाभ होगा। **नोट**–जिस वस्तु में ता. 28 दिसं. को ता. 25 दिसं. के बने नीचे भाव से मार्किट टूटेगा। तब उसी वस्तु में मंदी होगी।

ता. 5 जनवरी की शाम को बुध देव वक्री होकर ता. 9 जनवरी की रात्रि में बुध देव पश्चिम में अस्त हो जाएंगे। यहां पर व्यापारी बंधु इस चांस से मोटा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यहां पर ता. 6 से 9 जनवरी तक साधारण तेजी चलकर बाद ता. 11

जनवरी से जोरदार तेजी सोना, चांदी, गुड़, चीनी, रुई, कपास, खल बिनौला में 20 जनवरी तक चलने की धारणा है। यहां पर नोट है कि ता. 6 को 5 जन. के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूट जाएं। उसी में मंदी ता. 9 जन. तक होगी। बाद नोट है कि ता. 11 जन. को ता. 8 से 9 जनवरी के बीच बने लोएस्ट भाव से जिस ऊपर लिखित वस्तु के भाव टूटेंगे, उसी में मंदी ता. 14 जनवरी तक होगी। बाद 15 जनवरी को 14 के बने नीचे भाव के टूटने पर मंदी ता. 20 जनवरी तक होगी।

लक्ष्मी चांस– ता. 5 जनवरी की शाम को 6 के लिए दुतर्फा गली लगाएं। ता. 8 जनवरी की शाम को 11 के लिए दुतर्फा गली लगाएं।

माघ मास

माघ माह में पांच चन्द्रवार हैं जो प्रायः नरमी को प्रोत्साहन देंगे। ता. 26 जनवरी की शाम मार्गी बुध होने से पिछली तेजी की चाल एक तेजी का झटका देकर मंदी में बदलेगी।

ता. 29 जनवरी को सिंह राशि में राहु के प्रभाव से लालमिर्च, धनियां, हल्दी, नमक, सौंठ, नारियल को मंदी में स्टाक करके उछाले में बेचकर अच्छा लाभ कमाया जा सकता है। गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों के भावों में मंदी चलेगी।

ता. 6 फरवरी शनिवार की रात्रि में धनिष्ठा नक्षत्र में सूर्य देव के प्रभाव से सोना, चांदी आदि धातु, अनाजों में तथा रुई, अरंडी, अलसी, सोयाबीन के भावों में तेजी होगी।

ता. 8 फरवरी की शाम को मकर राशि में बुध देव का प्रवेश रुई, कपास में विशेष जारेदार तेजी होगी। सोना, चांदी में भी तेजी होगी। गेहूं, जौ, चना के भाव पड़े रहेंगे।

माघ सुदी पक्ष में ता. 12 फरवरी को मकर राशि में शुक्र देव का प्रवेश जीरा, धनियां, सौफ, अजवायन, हरी सब्जी, मूंग, मोठ, गेहूं, जौ, चना में मंदी चलेगी। ता. 13 फर. को षष्ठी तिथि का क्षय होने से जोरदार तेजी सरसों, अलसी, सोयाबीन, अरंडी, राई व नमक में होगी। अनाज, रुई, जूट, पाट, गुड़, खांड, शक्कर के भावों में मंदी चलेगी। खास तौर से ये चाल ता. 13 फर. को डेढ़ बजे बाद से कुंभ राशि में सूर्य संक्रांति के लगने के बाद होगी।

ता. 20 फर. की रात्रि में वृश्चिक राशि में मंगल के प्रवेश का प्रभाव शनि-मंगल योग बनाएगा। जो आगे विशेष तेजी कारक होगा। सोना, चांदी, रुई के भावों के साथ काली व लाल रंग की व्यापारिक वस्तुओं के भावों में जोरदार तेजी की चाल चलेगी।

लक्ष्मी चांस–ता. 25 जन. को 27 की दुतर्फा गली लगाना। ता. 08 फरवरी की शाम को हरे रंग की वस्तुओं में दुतर्फा गली लगाएं। ता. 13 फर. को डेढ़ बजे लगभग दुतर्फा गली लगाना।

फाल्गुन मास

फाल्गुन माह का प्रारंभ ता. 23 फरवरी मंगलवार से होकर ता. 23 मार्च बुधवार तक समाप्ती होगी। इस माह में पांच भौमवार व पांच ही बुधवार का वर्चस्व होने से तेजी का विशेष प्रभाव व्यापारिक वस्तुओं के भावों पर रहेगा। प्रारंभ में ता. 1 मार्च तक पिछली चाल ही चलने की धारणा है। ता. 1 मार्च की रात्रि में कुंभ राशि में बुध देव के प्रवेश के प्रभाव से सोना, चांदी, धान, चावल, जौ, जई में मंदी चलेगी। रुई, गुड़, खांड, घी, तेल भी नरमी में रहेंगे। वायदा वस्तुओं में 1 चाल मोटी पकड़ सकते हैं कि ता. 26 फर. के बने ऊंचे या नीचे भाव ता. 29 फरवरी को जिस ओर भी क्रास हो जाएंगे। तब उसी ओर की चाल पकड़कर ता. 8 मार्च तक व्यापार करके लाभ उठा सकते हैं।

माघ बदी 14 मंगलवार ता. 8 मार्च की रात्रि को बुधास्त पूर्व दिशा में विशेष मंदी की ओर इशारा कर रहा है। यहां पर अनाज, धान्य, हरे रंग की दालें, हरे रंग के समस्त पदार्थ, जीरा, धनियां, सौंफ, अजवायन के भावों में विशेष मंदी होगी जोकि 2 दिन चलेगी। नोट–जिस वस्तु के भाव ता. 9 मार्च को ता. 8 के बने ऊंचे भाव से बढ़ जाएंगे। तब उसी में तेजी की चाल बन जाएगी। माह के शुरू से अंत तक इंफीरियर लाईन तिलहन तेज करेगी।

ता. 9 मार्च को सूर्य ग्रहण है इसका स्वामी चन्द्रमा होने से किराना व औषधि पदार्थ व जड़ी-बूटियों के भावों में जोरदार चाल चलेगो। धान्यों, चावल, जई, जौ के भावों में धमाकेदार तेजी देखने में आयेगी। इन वस्तुओं के स्टॉकिस्ट मोटा लाभ आने वाले समय में प्राप्त करेंगे। बुधवारी ग्रहण होने से सोना, चांदी, धातु व सुपारी को स्टाकिस्ट भी श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करेंगे। वस्त्रद्योग में रुई, कपास आदि के भावों में भी श्रेष्ठ तेजी बनेगी।

फाल्गुन सुदी प्रतिपदा क्षय होना पक्ष में तेजी का बिगुल बजाएगा। फुलहरिया दोज को चन्द्रदर्शन का होना कुछ मंदी का झटका देगा। बाद ता. 14 मार्च की प्रातः मीन संक्रांति के प्रभाव से सोना, चांदी, गुड़, चीनी, खांडसारी, अलसी, सरसों, सोयाबीन के भावों में तेजी होगी। अनाजों में पहले तेजी बाद मंदी का रुख बनेगा। वायदा मार्केटों में ऊपर लिखी वस्तुओं में जोरदार तेजी ता. 22 मार्च तक चलेगी। नोट– जिस वस्तु के भाव ता. 14 मार्च को ता. 11 मार्च के बने नीचे भाव से टूटेंगे। उसी में अगामी 2 दिन मंदी होगी।

लक्ष्मी चांस–ता. 1 मार्च की शाम को काले रंग की वस्तुओं में मंदी लगाना। ता. 8 मार्च की शाम को ता. 9 मार्च के लिए मंदी लगाना। ता. 14 मार्च की प्रातः सभी वस्तुओं में दुतर्फा गली लगाएं।

चैत्र कृष्ण पक्ष

चैत्र माह के प्रथम पक्ष में बुध अस्तावस्था में चल रहे हैं। जो नरमी की चाल देने वाले सिद्ध होंगे। ता. 26 मार्च से इंफीरियर लाईन सुपीरियर लाईन में पलट जाएंगी। जो सोयाबीन, सरसों, तेल, अरंडी, सी.पी.ओ., अलसी, सूरजमुखी के भावों में अब तक अगर तेजी चली आ रही होगी। तब मंदी की ओर मार्केटों का रुख बन जाएगा। क्रूड आयल में ता. 25 मार्च की शाम को शनि देव के वक्रावस्था में चलने से तूफानी तेजी आगे बनेगी। इस पक्ष में प्रथम तिथि वृद्धि होकर एकादशी क्षय मंदी का रुख करेगा।

ता. 30 मार्च की रात्रि में रेवती में सूर्य देव का प्रवेश रुई, चावल, चांदी, नमक, सरसों, सूरजमुखी, गेहूं, जौ, चना के भाव तेजी पर जाएंगे। बदी त्रयोदशी को बुधोदय चलती मंदी में ब्रेक लगाकर तेजी का आगाज देंगे।

लक्ष्मी चांस–ता. 25 मार्च की शाम को 26 की दुतर्फा गली लगाएं। ता. 5 अप्रैल को 12 बजे दुतर्फा गली लगाना।

पता-विश्वबन्धु शर्मा (एम.काम, एल.एल.बी)
एवं जयवर्द्धन शर्मा (बी.टेक)
श्री ओंकार ज्योतिष भवन,
21/22, ब्रह्मनान, पोस्ट-हापुड़-245101(उ.प्र.)
मो-09837279823, 09412573895, 09219122159
ई-मेलः vishwaastro_999@yahoo.co.in
वेबः omkarjyotishbhawan.blogspot.com

व्यापार भविष्य फल सन् 2015 ई.

लेखकः
रामअवतार गुप्ता "व्यापार भूषण"

जनवरी 2015

ता. 1 जनवरी पौष सुदी 11 कृतिका युक्त है। **पौष सुदी एकादशी जो कृतिका नक्षत्र। लाल वस्तुओं में रहे। खूब लाभ सर्वत्र॥** लाल रंग की वस्तुओं, लाल मिर्च, लौंग, सुपारी, किराना, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी आयेगी। सोना होली तक तेज रहेगा। तुअर-मसूर, तिलहन, तिलहन तेल, अनाज, किराना आदि का स्टॉक मन्दी में करके आगे आषाढ़ में बेचने से लाभ होगा। ता. 4 जन. कुंभ में मंगल एक मास में रुई, चांदी में भारी उतार-चढ़ाव। अनाज, गुड़, धातुएं, हल्दी, दालों में तेजी लायेगी।

माघ मास कृष्ण पक्ष–माघ में पांच मंगलवार अनाजों में अच्छी तेजी का संकेत देते हैं। बदी पक्ष में तिलहन, खल, बिनौला, घी, आलू, प्याज, सब्जियां धातुएं, मसाले आदि में भारी तेजी के योग हैं। परन्तु मंगल अतिचारी चलने से उतार-चढ़ाव अथवा कोई एक तरफा लाईन चलेगी। ता. 8 जनवरी बदी 3 गुरुवारी से व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का प्रभाव पड़ सकता है। यथा-**माघ बदी दोयज या तीज वृहस्पतिवार, उत्तम वर्षा शति सुख बढ़ै मंगलाचार॥**

ता. 11 जनवरी छट रविवारी तीन दिन में अनाजों में तेजी के झटके लायेगी। आज मकर संक्रांति एक मास के अन्दर जहां भी घी मंदा हो खरीदकर वैशाख में बेचने से अच्छा लाभ। ऐसे ही हल्दी मंदी होने पर खरीदकर फाल्गुन में बेचने से लाभ होगा। बुधवारी संक्रांति गुड़ स्याक करने को राय देती है। 20 जनवरी मंगलवारी मावस व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार होगा।

माघ शुक्ल पक्ष–पक्ष में प्रमुख वस्तुओं में प्रथम तेजी आकर फिर मंदा आयेगा। सुदी 4 का क्षय- **किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाये। ग्राहक मागे मूंग, घी विक्रेता नट जाये॥**

पक्ष में दालें, तिलहन तेल आदि में जनरल लाईन तेज रहेगी। ता. 26 जनवरी सुदी सप्तमी सोमवारी गुड़, खांड में अच्छी तेजी तो अष्टमी मंगलवारी चना में अच्छी तेजी के झटके लायेगी।

फरवरी 2015

इस मास में तेजी की ता. 18, 19, 22 फरवरी। सामान्य तो 11 फरवरी विशेष है तथा माल बेचने की ता. 4, 6, 20, 24, 25। सामान्य 12 एवं 16 विशेष तारीख हैं।

ता. 3 फरवरी मंगलवार पूनम रुई, तिलहन, दालें में अच्छी तेजी के झटके लायेगी।

फागुन कृष्ण पक्ष–इस पक्ष में आलू, प्याज आदि मूल पदार्थ, अनाज, दाल, घी, तेज। मसालों में जनरल लाईन तेज रहेगी। इस पक्ष में जिन वस्तुओं में अच्छी तेजी चले, बेचना चाहिए। अच्छी मंदी हो चुकी खरीदें, लाभदायक रहेगा। ता. 10 फरवरी बदी छट मंगलवारी चित्रा युक्त है-**षष्ठी फाल्गुन बदी में चित्रा करै सुर्भिक्ष।** तीसरे मास में सभी खाद्य वस्तुओं में अच्छी मंदी आने की सूचना देती है।

ता. 12 फरवरी **मीने मंगल** अनाज, लाल वर्ण की वस्तुओं में तेजी कारक है। अरहर, सरसों में अचानक अच्छी तेजी भी ला सकती है। यहां शनि से पांचवे मंगल दुर्भिक्ष तथा तेजी को भी समर्थन करेगा। ता. 13 फरवरी कुंभ संक्रांति अनाज मंदा, तो दालें तेज करेगी। इस संक्रांति काल में जिन वस्तुओं में तेजी हो बेचना लाभदायक रहेगा। जिन वस्तुओं में अच्छा मंदा आये तो खरीदकर दो मास बाद बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. 18 फरवरी **श्रवणे बुध** एक सप्ताह के अन्तर्गत तिलहन, चावल, गुड़, खाण्ड तेज करेगा। मावस का क्षय काली मिर्च, रुई में तेजी के झटके। चांदी, प्रमुख शेयर्स आगे मंदे होने पर खरीदें, लाभ होगा।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष–ता. 19 फरवरी सुदी एकम शतभिषा युक्त से सोना-चांदी में मंदी कारक, तो रुई तेज करेगी। अष्टमी रोहिणी युक्त है। आगे वृष संक्रांति काल में अनाज, खाद्य पदार्थों में अच्छी तेजी ला सकती है। ता. 28 फरवरी दशमी शनिवारी आर्द्रा युक्त है। दुर्भिक्षकारी तथा उपज में कमी का संकेत देती है।

मार्च 2015

माल खरीदने की ता. 9, 19 हैं तथा 22 विशेष है। माल बेचने की ता. 3, 6, 11, 23, 24, 31 हैं।

ता. 2 मार्च से 2 दिन के अन्दर गेहूं, अनाजों में तेजी के झटके तो ता. 5 मार्च गुरुवार पूनम पू.फा. युक्त है। आगे प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में अच्छा मंदा आ सकता है। रेवती का मंगल से तीन सप्ताह के अन्दर अनाज, दालों में घट-बढ़ से मंदी चलेगी।

चैत्र कृष्ण पक्ष–पक्ष में तिथि वृद्धि होकर क्षय हुआ है। अतः प्रथम वस्तुओं में तेजी आकर पक्ष के अन्त में मंदी आयेगी। ता. 8 मार्च कुंभ का बुध तीन सप्ताह के अन्दर रुई, कपास, खल, बिनौला, घी, तेल, गुवार आदि में मंदी कारक है। सोना, चांदी मंदा होकर तेज। ता. 11 मार्च बदी पंचमी बुधवारी-चैत्र **बदी पांचै दिना मगल या बुधवार। गेहू; अरु, घी में तेजी चले बाजार॥** सर्व अनाज, दाल, तिलहन, तेलों में धीरे-धीरे भाव बढ़कर अच्छी तेजी आयेगी। यदि आकाश में बादल छा जाये। तो दो मास तक सर्व वस्तुओं में मंदी होगी। चैत्र बदी सप्तमी को घटा-घोप बादल हो तो लाल वर्ण की वस्तुएं, अनाज, तिलहन, गुड़, खांड, लाख, चपड़ा दो मास के अन्दर तेज हो जायेंगे। 15 मार्च शनि वक्री होगा। तिलहन, दालें, अनाज, खल बिनौला, गुड़, खाण्ड, गुवार आदि में अच्छी तेजी कारक है। यहां गुरु भी वक्री चल रहा है। ता. 8 अप्रैल तक दोनों साथ-साथ वक्री चलेंगे। **साथ-साथ गुरु शनैश्चर दोनों वक्रचार। जौ, गेहूं, मकई, मटर तेज बाजरा, गुवार।** चैत्र में शनि वक्री फल-फाल्गुन **अथवा चैत में मंगल या शनि वक्र, मन्दी रह रहकर चले फिर तेजी का चक्र।** स्थूल रूप से प्रथम बाजारों में कुछ दिन मन्दी चलकर फिर तेजी का चक्र चलेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष–पक्ष में तीन शनिवार रुई, पाट, वारदाना, काली मिर्च, सभी प्रमुख शेयर्स आदि में तेजी भी आयेगी। 21 मार्च सुदी एकम शनिवार आज संवत् 2072 विक्रमी का शुभारंभ होगा। राजा शनि एवं मंगल मंत्री है संवत् में चार स्तंभ जल, अन्न, तृण और वायु का अभाव है। अतः संवत् में अनाज, घास, चारा, अन्य प्रमुख वस्तुओं का भाव दुर्भिक्षकारी स्थिति तथा संवत् तेजी प्रधान रह सकता है। ता. 23 मार्च सुदी 3 का क्षय पक्ष में तिलहन, तेल, घी, दालों में तेजी लायेगा। मेष का मंगल + शुक्र का राशि योग फल–

शुक्र भौम शशि जब मंगल के घर आव। मुक्ता मोती शंख पशु इनका महंगा भाव॥

उपरोक्त वस्तुएं तेज होंगी। ता. 31 मार्च आज गेहूं में अच्छी मंदी के झटके। तीन सप्ताह के अन्दर हल्दी, गुवार, खल, बिनौला, तिलहन, सोना, चांदी में घट-बढ़ से अच्छी तेजी संभव है। तो तीन दिन के अन्दर रुई, शेयर्स, काली मिर्च में भारी मंदी के झटके आ सकते हैं।

अप्रैल 2015

ता. 4 अप्रैल हनुमान जयंती शनिवारी पूनम हस्त युक्त है। आज ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। सर्व धातु, मूल पदार्थ में भारी घटा-बढ़ी। अलसी, ज्वार, अरहर, मूंग, मोठ, गेहूं, कपास, ज्वार, राई, धनियां, पिस्ता, उड़द, खांड आदि पर विशेष प्रभाव दो तीन

मास के अन्दर अच्छी तेजी होगी। चैत्र पूनम ग्रहण नभ अथवा बादल बिजली गाज। सोना, चांदी बेचकर संग्रह करो अनाज।

वैशाख कृष्ण पक्ष–मास में पांच रविवार तथा पांच सोमवार होने से प्रथम वस्तुओं में मिले-जुले फल होंगे। तेज बेचें, मंदी खरीदें। 6 अप्रैल वृषे शुक्र तीन सप्ताह के अन्दर अनाज में तेजी आने का संकेत देता है। रुई, चावल, चांदी, आलू, प्याज, सब्जियां, खल बिनौला आदि में विशेष तेजी-मंदी चल सकती है। तीज मंगलवारी विशाखा युक्त है। फसल पर खरीदी हुई वस्तुओं में आसोज मास तक अच्छा लाभ होने की आशा रहेगी। ता. 9 अप्रैल को गुरु मार्गी होगा। पांच दिन पूर्व से सोना, चांदी, तिलहन, रुई, कपास, बिनौला में तेजी लाकर बाद में मंदा लायेगा। घी तेज, तो रुई, कपास, प्रमुख शेयर्स, चांदी में अच्छी मंदी ला सकता है। अच्छी मंदी आने पर खरीदने की राय देता है। ता. 11 अप्रैल शनिवारी सप्तमी-शनि सातै बैशाख बदी में भरणी से **मृगसिर मंगल। तांबा कांसी तेज नारियल लाल वस्त्र अरु पुंगी फल।।** उपरोक्त वस्तुओं में तेजी समर्थक है।

ता. 14 अप्रैल मेष संक्रांति विपरीत खर्पर योग युक्त होने से दुर्भिक्ष तथा हानि कारक है। व्यापारिक वस्तुओं में तेजी की लाईन बनायेगी। ता. 18 अप्रैल शनिवारी मावस अनाज, गल्ला, माल स्टॉक करने की राय देती है। आगे सावन-भादव तक अच्छा लाभ। पक्ष में बुध का उदय मंदी समर्थक है। तो अक्षय तृतीया मंगलवारी तेजी समर्थक है। पक्ष में सोना, चांदी, रुई में मंदी चल सकती है। ता. 26 अप्रैल मृगे शुक्र अनाज, गुंवार, मटर, चना, रुई के भावों में गिरावट, तो गुड़, खांड में आगे तेजी के झटके लायेगा।

मई 2015

माल खरीदने की ता. 3, 4, 13, 15 एवं 31 हैं। माल बेचने की ता. 5, 9, 24 तथा 14 एवं 18 मई विशेष हैं।

ता. 2 मई त्रयोदशी की वृद्धि मंदी वस्तु खरीदने की राय देती है। 3 मई वृष का मंगल, मंगल+मेष सूर्य फल-मेष राशि पर हो सूर्य **वृष पर मंगल शनि। भय व्याकुलता लोक में राजाओं में जंग।।** यहां मंगल-शनि का अपोजिशन योग तिलहन, अरण्डा, अनाज, धातुएं, रुई, पाट, वारदाना, काली मिर्च आदि में तेजी कारक है। 45 दिन के अन्दर कहीं भारी तेजी भी संभव है। ता. 4 मई सोमवारी पूनम हल्दी, अनाज, धातुएं मंदी समर्थक है। गुड़, खांड में अच्छी तेजी के झटके लायेगी।

बैसाख मास के शकुन–1. बैसाख बदी एकादशी को यदि प्रबल मेघों से ढका रहे तो अनाज बेचना चाहिए।

2. बैसाख सुदी पंचमी को दिन भर पूर्व की वायु चले तो अनाज का स्टॉक करना चाहिए। आगे काफी लाभ होगा।

3. बैसाख बदी एकम को सूर्य का उदय बादलों में से होता हुआ दिखाई दे तो समझना चाहिए कि यह संवत् उत्तम होगा।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष–इस मास में पांच मंगलवार लाल वर्ण की वस्तुओं में तेजी कारक है। पक्ष में गेहूं, अनाज, काली मिर्च, प्रमुख शेयर्स, गुड़, खाण्ड, चांदी में मंदी चलने की आशा रहेगी। तो आलू, प्याज, खांड, तेलों, दालों में घटा-बढ़ी से बाजार तेज रहने की आशा है। ता. 9 मई आर्द्रा का शुक्र एक सप्ताह में रुई, चांदी में अच्छी मंदी कारक तो अन्य प्रमुख वस्तुओं में मंदी का संचार होगा। 15 मई वृष संक्रांति गुड़, खांड, घी, लाल मिर्च, गुवार, दाल, धातुओं में तेजी कारक है। रुई, काली मिर्च मंदी कारक है। ता. 18 मई सोमवती मावस मंदी कारक है। सभी प्रमुख वस्तुओं में एक बार आगे अच्छा मंदा आ सकता है। आगे छः मास के अन्दर तिलहन, दाल, अनाज, गुड़, खांड आदि अन्य प्रमुख वस्तुओं में भयंकर मंदा ला सकती है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष–पक्ष में तीन मंगलवार पूनम चन्द्रदर्शन मंगलवार से पक्ष में धातुएं, रुई, कपास, काली मिर्च, घी, गुवार, तेल, तिलहन, दाल, अनाज, गुड़, खांड आदि में घट-बढ़ से तेजी की लाईन चलने की आशा है। पक्ष में शनि अंगारक योग होने से व्यापार की सभी वस्तुओं में जोरदार तेजी/मंदी व्यापारियों को हैरान करेगी। घी, तेल, मूंग आदि दालों में तेजी तो सोना, चांदी, रुई, कपास में मंदी लायेगा।

जून 2015

माल खरीदने की ता. 7, 12, 26, 28 हैं। माल बेचने की ता. 1, 5, 10, 15, 21, 23 हैं।

ज्येष्ठ मास के शकुन–चित्रा स्वाती विशाखा जो ज्येष्ठ मास बरसाय। अन्न भाव महंगा रहे सावन वर्षा नाय।। ज्येष्ठ बदी पंचमी चले जो दक्षिण बाय। तेल, तिलहन लाभ दे आसोज मास बिताय।

प्र. आषाढ़ कृष्ण पक्ष– इस संवत् में दो आषाढ़ मास हैं। **दो आश्विन, दो भादव, दो आषाढ़ के माह। सोना, चांदी बेचकर नाज वे साहो साह।।** सोना, चांदी बेचकर अनाज का स्टॉक करना भी लाभदायक है। मास में तिलहन, तेल, घी, गुड़, खांड, आलू, प्याज आदि मूल पदार्थ, अनाज, दाल, मिर्च, मसाला आदि में घट-बढ़ से जनरल लाईन तेज रहेगी। बदी पंचमी रविवारी उपरोक्त वस्तुओं में तेजी समर्थक है। ता. 12 जून पूर्व में बुध का उदय होगा। आषाढ़ में बुध का उदय तेजी तथा अवर्षण कारक माना गया है। अतः प्रमुख वस्तुओं में तेजी को बढ़ावा मिलेगा। ता. 15 जून बदी 14 सोमवारी रोहिणी युक्त-**साढ़ बदी चौदश दिना होय रोहिणी योग। करफ्यू अरु कंट्रोल से दुख पावें सब लोग।।** मिथुन संक्रांति का प्रवेश, साथ में कन्या में राहु से-कन्या गत राहु तथा मिथुन राशि गत सूर। खेती सूखे जल बिना महंगाई भरपूर।। यह योग एक मास के अंदर वर्षा की कमी तथा प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार करेगा।

मंगलवारी मावस चना खरीदने की राय देती है। आगे तेजी से लाभ होगा तथा एक सप्ताह के अंदर चांदी में कहीं जोरदार मंदा आ सकता है। शेयर्स मार्किट में कोई जोरदार चाल निकलेगी।

प्र. आषाढ़ शुक्ल पक्ष–ता. 18 जून सुदी 2 गुरुवारी अनाजों में मंदी का संचार करेगी। दोयज **नौमी षाढ़ सुदी, सोम गुरु भृगुवार। उत्तम वर्षा अन्न का, मंदा रहे बाजार।।**

ता. 25 जून आर्द्रा में सूर्य, मंगल योग एक मास बाजार अनाजों में तेज रहकर फिर मंदा आयेगा तथा तिलहन, तेल तेज होकर अच्छी तेजी आ सकती है। ता. 30 जून सुदी 13 ज्येष्ठा युक्त है। **शुक्ल त्रयोदशी षाढ़ की ज्येष्ठा संग जो आय। वायु वेग अधिक रहे घटा श्याम हो जाय।।**

जुलाई 2015

ता. 2 जुलाई गुरुवार पूनम एक सप्ताह के अन्दर दूर-दूर तक व्यापक अच्छी वर्षा ला सकती है। तिलहन, तेलों में अच्छी तेजी समर्थक है।

आषाढ़ मास के शकुन– 1.) ता. 3 जूलाई को जिस क्षेत्र में भारी गर्मी रहेगी। उस क्षेत्र में आगे वर्षाकाल में भारी वर्षा होगी।

2.) जुलाई प्रथम सप्ताह में हिन्दव्यापी भारी वर्षा के योग है।

द्वि. आषाढ़ कृष्ण पक्ष–ता. 4 जुलाई बदी 3 श्रवण युक्त है। **पड़वा दोयज तीज तक प्रथम पक्ष आषाढ़। श्रवण धनिष्ठा होय तो अन्न संग्रहों गाढ़।।**

यह योग अनाज संग्रह करने की राय देता है। बदी 4 रविवारी धनिष्ठा युक्त है। पांच दिन के अन्दर रुई, पाट, वारदाना, काली मिर्च में एकदम तेजी का वातावरण बनेगा। सोना, चांदी, खाद्य वस्तुओं में अच्छा मंदा आ सकता है। ता. 13 जुलाई रविवार+बदी 12 रोहिणी युक्त होने से दुर्भिक्षकारी है। पूर्व में बुधास्त से एक सप्ताह पूर्व से बाद तक गुड़, खांड, चीनी, चना, जीरा, धानियां में अच्छी तेजी तो शेयर मार्किट में भारी तेजी-मंदी की कोई चाल निकलेगी। रुई, सोना, चांदी में घट-बढ़ से अच्छी तेजी। अनाज, घी के भाव मंदी की तरफ झुक जायेंगे। ता. 16 जुलाई गुरुवार मावस है। कर्क की संक्रांति खर्पर योग युक्त है। परन्तु शुभवार होने से फल कम रहेगा। अनाज का भाव मंदा होगा। संक्रांति समय चन्द्रमा जल राशि में होने से तन्दुल नामक योग से अच्छी वर्षा। सूर्य-मंगल का नक्षत्र योग सोना, चांदी, रुई, बिनौला में आगे एक सप्ताह के अन्दर भारी उतार-चढ़ाव होगा।

द्वि. आषाढ़ शुक्ल पक्ष–सुदी 2 शनिवारा चन्द्रदर्शन एक मास के अन्दर अनाज तेज करेगा। चांदी में विशेष घटा-बढ़ी तो

खल, बिनौला, मूंगफली, तिलहन, तेलों में कोई भारी एक तरफा लाईन चलने की आशा रहेगी। ता. 22 जुलाई पुष्ये बुध एक सप्ताह के अन्दर वर्षा कारक तथा संसद में कोई नया कानून आ जाने से सोना, चांदी तथा अन्य प्रमुख वस्तुओं में अच्छा मंदा। तेज वस्तुएं बेचें। अच्छी मन्दी वाली वस्तुएं खरीदें। ता. 25 जुलाई भड्डली नोमी है। यदि आज आठो प्रहर बादल रहें। तभी आगे मंदी की आशा करनी चाहिए। ऐसा हो तो सर्व वस्तुओं में घोर तेजी का वातावरण बना देगी। शुक्र वक्री होगा। अपने वक्र काल में अनाज गुड़, घी, सोना, चांदी, पीतल धातुएं, घी, रुई, जीरा, शेयर्स में घट-बढ़ से अच्छी तेजी। पीपरमेंट में भारी मंदी लायेगा। ता. 28 जुलाई श्लेषा का बुध आलू, प्याज, सब्जियां तेज करेगा। 31 जुलाई शुक्रवारी पूनम एक सप्ताह के अन्दर सरसों तेलों, अरहर, चांदी में कहीं जोरदार मंदी के झटके ला सकती है।

आषाढ़ के शकुन–आषाढ़ सुदी में चौथ को बिजली वर्षा गाजा। उत्तम वर्षा समझिये उपजे खूब अनाज॥ आषाढ़ी पूनम बिना गाज बीज बरसन्त। नासे लक्षण काल का आंनद मानो सन्त॥

अगस्त 2015

श्रावण कृष्ण पक्ष–मास में 5 शनिवार दुर्भिक्षकारी हैं। मास में गुरु-शुक्र का अस्त, तो मंगल का उदय तथा शनि मार्गी होगा। अतः प्रमुख वस्तुओं में भारी तेजी-मंदी चलेगी। अनावृष्टि-अतिवृष्टि से फसलों को नुकसान तथा जन हानि की आशंका रहेगी। **पुष्ये भौम** 21 दिन के अन्दर घी, तेल, सरसों, तिलहन, चावल, सोना में तेजी। चांदी में मंदी लायेगा। ता. 7 अगस्त बुध का उदय पश्चिम में होगा। पहले शुक्र का अस्त हो चुका है।

श्रावण में हो बुध उदय शुक्र अस्त के बाद। भादव में वर्षे नहीं पशु विनाश के नाग॥ सावन अथवा चैत्र में बुध उदय भृगु अस्त। अनावृष्टि दुष्काल से सभी जन त्रस्त॥

भादव में वर्षा न होने से घास, चारा, पशु आहार न मिलने से से पशुधन नष्ट तथा गेहूं आदि अनाजों में अच्छी तेजी आने की संभावना रहेगी। ता. 9 से 16 अगस्त तक बुध के पीछे गुरु चलेगा। यह योग किसी क्षेत्र आदि में अत्यधिक वर्षा से जन हानि कर सकता है। बदी 11 को मृगसिर व्यापारिक वस्तुओं में घोर तेजी लाने वाला योग है। ता. 13 अगस्त को शुक्र कर्क में प्रवेश करके सूर्य-मंगल के साथ राशि योग बनाऐगा। **एक राशि पर होय जब मंगल भृगुवर सुर। भय होय महंगे बिके घी, तिल, तेल, मसूर॥** घी, तिल, तेल, तिलहन, पदार्थ, मसूर, चना आदि दालों में तेजी की लाईन बनाएगा। शुक्रवार मावस चांदी, प्रमुख शेयर्स में तेजी। तो रुई में मंदी के झटके लायेगी।

श्रावण शुक्ल पक्ष–पक्ष में तीन शनिवार रुई, पाट, वारदाना, तिलहन में मंदी कारक है। कभी-कभी अच्छा मंदा भी आता है। अतः उपज खपत का ध्यान रखें। 17 अगस्त सिंह संक्रांति-**ईख शर्करा मिष्ट रस, गुड़, हल्दी, तिल, तेल। सोना, तांबा तेज हो, सूर्य सिंह के मेल॥** उपरोक्त वस्तुएं तेज होंगी। 29 अगस्त शनिवारी पूनम+रक्षा बंधन सुदी 14 का क्षय होगा-**शुक्ल पक्ष सावन कभी कोई तिथी का नाश। छत्रभंग का योग है आगे कार्तिक मास॥** शनिवारी पूनम एक सप्ताह के अन्दर चावल, रुई में मंदी। अन्य प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी के झटके लायेगी।

श्रावण के शकुन–सावन सुदी 8 के दिन प्रातःकाल सूर्य मेघों से ढका रहे तो उस क्षेत्र में अनाज की पैदावार अच्छी होगी। ता. 11 अग. को अच्छी वर्षा हो तो भाद्रपद मास में गेहूं तेज बिकेगा।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष–इस मास में पांच रविवार तथा पांच ही सोमवार हैं। प्रमुख वस्तुओं में अच्छी घटा-बढ़ी चलकर मिला-जुला रुख रहेगा। अच्छी तेजी के साथ-साथ अच्छी मंदी का वातावरण भी बनेगा। ता. 31 अगस्त बदी 2 सोमवार सुर्भिक्षकारी है। इस योग के अनुसार खेती की उपज उत्तम होगी।

सितम्बर 2015

ता. 5 सितं. जन्माष्टमी रोहिणी युक्त है-**रोहिणी युक्त जन्माष्टमी शनि रवि भृगुवार। जौ, गेहूं अरु बाजरा मंहगा मटर, गुवार॥ महंगा मटर, गुवार, सोंठ, जीरा किराना। सोना, सीसा आदि धातु सब तेज बखाना॥ कस्तूरी, तिल, तेल, हींग, गुड़, संग्रह कर लो। तीन मास पश्चात् नफा ले घर में धर लो॥** उपरोक्त वस्तुएं तेज होंगी तथा आगे मंदी में स्टॉक करके तीन मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ हो।

ता. 6 सितं. गुरु का उदय तथा शुक्र मार्गी होगा। 5 दिन के अन्दर बाजारों में भारी घटा-बढ़ी चलकर फिर धीरे-धीरे बाजार तेज होंगे। ता. 11 सितं. सूर्य, गुरु, चन्द्रमा का राशि योग फल-**सूर्य गुरु चन्दमा तीन का एक राशि पर बास। कपड़ा जौ अरु मूंग में लाभ सातवें मास॥** तीन दिन के अन्दर अथवा अच्छी मन्दी में उपरोक्त वस्तुएं स्टॉक करके 6 मास पश्चात् बेचने से लाभ होगा। रविवारी मावस घी में तेजी लायेगी।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष–ता. 15 सितं. **सिंहे मंगल** 45 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लाल मिर्च, मसूर, लाल वर्ण की वस्तुएं, गुड़, खाण्ड, रुई, पाट, गेहूं, अनाज, प्रमुख किराना में अच्छी तेजी लाने वाला है। परीक्षित योग है। यदा अंगारमयी महि वर्षा श्रेष्ठ हो जाने पर मंदा। अन्यथा यह योग घोर तेजी ही लाता है। यहां गुरु के साथ राशि योग बनाएगा। वर्षा में कमी करेगा। **वर्षा ऋतु में भौम गुरु आन बसै इक गेह। साथ रहे जब तक न हो वर्षा ऋतु में मेह॥** अतः वर्षा न होने पर घोर तेजी की लाईन बन सकती है। ता. 18 सितं. बुध वक्री होगा। मोटे अनाजों मकई, गुवार आदि में मंदी कारक है। यहां कन्या में सूर्य-बुध-राहु योग मंदी समर्थक है। तथा सुदी छट को अनुराधा का संयोग भी सुख सुर्भिक्षकारी है। इसके बारे में कहा गया है कि यदि कोई दोष भी हो तो वह भी मिट जाता है। **षष्टी भादव सुदी में अनुराधा नक्षत्र। अन्य दोष मिट जाए, सब हो सुर्भिक्ष सर्वत्र॥**

ता. 21 सितं. सुदी 8 मूल युक्त है। अनाज, चना, रुई, पाट, काली मिर्च, रेशम, बिनौला खल, सोना, चांदी, घी, गुड़, खाण्ड आदि में 5 मास के अन्तर्गत घोर तेजी लाने वाला परीक्षित योग है। चावल घट-बढ़ से एक मास तेज रहेगा। ता. 28 सितं. सोमवारी पूनम उ.भा. युक्त मंदी कारक है। तीन दिन के अन्दर सर्व वस्तुओं में एक बार फिर मंदी के झटके आयेंगे।

भाद्रपद के शकुन–चित्रा स्वाती विशाखा ना वर्षो भादव मास। वर्षा काल समाप्त है रखो न आगे आस॥ भादव शुक्ला पूर्णिमा बादल बिजली गाजा। बादल में चन्दा उदय बेचो शीघ्र अनाज।

आश्विन कृष्ण पक्ष– श्राद्ध पक्ष वस्तुओं में उपज की कमी अधिकतर अच्छी तेजी-मंदी का दौर प्रायः हर वर्ष चल सकता है। अतः बाजार का रुख भी देखिये। ता. 30 सितं. पू.फा. 2 गुरु सोना, चांदी, रुई, अनाज, दाल, गुड़, खाण्ड, तांबा, जुवार, गुवार आदि में मंदी कारक है। दस दिन के अन्दर कहीं भी भारी मंदी।

अक्टूबर 2015

ता. 1 अक्टू. सिंहे शुक्र का प्रवेश मंगल गुरु के साथ एक राशि पर मीटिंग करेगा। अनाजों में मंदी के बिल पास होंगे। **भौम भार्गव गुरु बसै एक राशि पर तीन। अन्न भाव मन्दा रहे। संग्रह करो प्रवीन।**

एक मास यह योग है। मंदी में खरीदकर तीसरे मास बेचने से लाभ। ता. 6 अक्टू. पूर्व में बुध का उदय कपास, रुई तेज करता है। **आश्विन में बुध का उदय महंगी विके कपास।** ता. 7 अक्टू. को यदि गेहूं तेज चले तो आगे 5 दिन के अन्दर भारी मंदा आयेगा। स्टॉक करें। ता. 13 अक्टू. बदी 13 शनिवारी-दो मास के अन्दर अनाजों में अच्छी तेजी लाने वाला परीक्षित योग है। बदी 14 रविवार को यदि उत्तरी-पश्चिमी एवं मध्य हिन्द में जहां भी वायु जोरों की चलेगी। तो 10 दिन के अन्दर गेहूं में भारी तेजी आ जायेगी। ता. 12 अक्टू. सोमवती मावस-**सोमवती मावस पड़ै कभी भी आश्विन मास। अन्न खाण्ड गुड़ तेल में मंदी का आभाष।** एक सप्ताह के अन्तर्गत उपरोक्त सभी वस्तुओं में तथा धातुओं में अच्छी मंदी के झटके लायेगी।

आश्विन सुदी पक्ष–इस पक्ष में अथवा आश्विन मास में जो वस्तुएं मंदी स्तर की मिलें, खरीदें। अगले दो मास के अन्दर उन्हीं वस्तुओं में अच्छी तेजी आने का लाभ होगा। घी मंदा हो तो जरूर खरीदें। ता. 17 अक्टू. तुला संक्रांति रिक्ता तिथि 15 मुहूर्ती

शनिवारी प्रमुख वस्तुओं में तेजी का प्रभाव रखती है। हानि हाथी हेम की तुला राशि गत सूर। सभी तरह के धान्यों में तेजी हो भरपूर।। ता. 19 अक्टू. सुदी छट मूल युक्त है। यह योग मंदे स्तर की वस्तुओं को खरीदने की राय देती है। बुधवारी अष्टमी धान, घी आदि स्टॉक करने की राय देती है। ता. 25 अक्टू. चित्रा बुध 10 दिन में धातुएं, दालें, मोटे अनाज, काली मिर्च आदि के भावों मे गिरावट लायेगा। ता. 27 अक्टू. पूनम अश्विनी युक्त है। एक सप्ताह में सावणी फसल के मालों में मंदी के झटके लायेगी।

आश्विन के शकुन–दसमी द्वादश ग्यारस लागत आश्विन मास। बिजली बादल गाज हो, जौ गेहूं का नाश। बादल वर्षा बिजली विजया दशमी देख। मूंग, उर्द, तिल, तेल में तेजी रहे विशेष।

कार्तिक कृष्ण पक्ष–ता. 28 अक्टू. बदी एकम बुधवारी से पक्ष में आलू, प्याज, सब्जियां, दालें, मसालें, अनाज, सावणी फसल का माल आदि से घट-बढ़ से जनरल लाईन तेज रहेगी। उ.फा. में मंगल-राहु का योग–**मंगल, राहु साथ में एक नक्षत्र इक रास। अनावृष्टि दुर्भिक्ष दुख हो खेती का नाश।।**

व्यापारीक वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। ता. 31 अक्टू. बदी 5 शनि आर्द्रा युक्त से घास, चारा, पशु आहार आदि में तेजी लायेगी। बुधास्त पूर्व सप्ताह दस दिन में रुई, सोना, चांदी, काली मिर्च में तेजी कारक तो शेयर्स मार्किट में भारी मन्दी आ सकती है। मास में घी तेज बिकेगा।

नवम्बर 2015

ता. 3 नवं. कन्या मंगल तिलहन पदार्थ, घी, तेलों, रुई, गुवार, रेशम, गुड़, लाल मिर्च, प्रमुख किराना सामान में तेजी लायेगा। यहां मंगल, राहु, शुक्र का राशि योग बनेगा। बाजारों में आगे अच्छी तेजी भी ला सकता है। ता. 29 नवं. तक यह योग है। **मंगल राहु शुक्र जब एक राशि आधार। राजाओं में युद्ध हो बहे रक्त की धार।**

ता. 5 नवं. स्वाती बुध+सिंहे चन्द्र दो दिन के अन्दर गेहूं आदि अनाज खरीदने की राय देता है। आगे लाभ होगा। ता. 10 नवं. विशाखा बुध एक सप्ताह में रुई, पाट, बारदाना, काली मिर्च आदि में अच्छी मंदी, तो अनाजों में घट-बढ़ अधिक रहे। ता. 11 नवं. बुधवारी दीपावली है। **बुध गुरु की आय दीवाली, जीवे रंक मरे भड़साली।** स्टॉकिस्टों को हानि कारक। साधारण जनता सुखी रहे। दीपावली स्वाती युक्त है। **कातिक मावस के दिना स्वाती नक्षत्र विचार। गिरे कहीं भूकंप से पर्वत या मीनार।।** बुधवारी दीपावली लहसुन में तेजी लायेगी। कुछ महीने पहले से मंदी में खरीदकर दीपावली से 2 मास के अन्दर बेचें, लाभ होगा। **यह एक चांस है।**

कार्तिक सुदी पक्ष–ता. 12 नवं. हस्ते शुक्र 13 दिन के अन्दर जो भी वस्तुएं मंदे स्तर पर हों, खरीदे एवं तेज चल रही वस्तुएं बेचें। ता. 16 नवं. पंचमी सोमवारी होली तक रस पदार्थों, दालें, अनाज, तिलहन आदि खाद्य पदार्थों में धीरे-धीरे मंदी लाकर भयंकर मंदी का वातावरण बना देगी। आज वृश्चिक संक्रांति का प्रवेश घी, चावल में मंदी कारक है। लाल वर्ण वस्तुएं स्टॉक करने की राय देती है। पांच मास बाद बेचने से लाभ। यहां सूर्य, बुध, शनि के साथ राशि योग फल।

शनि बुध सूरज साथ जब इक राशि इक सेज। जौ, गेहूं, चावल, चना, गुवार, जुवार, बाजरा, तेज।। उपरोक्त वस्तुओं में आगे तेजी का वातावरण बनेगा। ता. 25 नवं. पूनम का क्षय होगा। तीन दिन पूर्व से रुई में अच्छी तेजी के झटके लायेगी। अनाज सावणी फसल का माल तेज करेगी।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष–मास में ग्रह योगों के अनुसार पक्ष में व्यापारिक वस्तुओं में अच्छा मंदा आ सकता है। बदी 2 आर्द्रा युक्त-**मंगसिर लागत तीज को पुनर्वसु आर्द्रा आय। राजा प्रजा सुखी रहे। मन्दा धान्य बिकाय।।**

उ.फा. गुरु चांदी, मोती में अच्छा मंदा लायेगा। ता. 30 नवं. कन्या में राहु, मंगल के योग से फसलों को नुकशान। प्रमुख वस्तुओं में सरकार द्वारा प्रतिबंध। 23 दिसं. तक यह योग है। रुई, कपास में तेजी की लंबी लाईन निकल सकती है।

दिसम्बर 2015

ता. 3 दिसं. ज्येष्ठा सूर्य खल बिनौला, चावल, चना, तिलहन, पदार्थों में तेजी लायेगा। ता. 6 दिसं. रविवार तिथि वृद्धि–**मंगसिर पहले पाख में कोई तिथि बढ़ जाए। कहीं जगत में युद्ध का भारी बादल छाये।**

बदी 14 एवं मावस को यदि सूर्य, चन्द्रमा बादलों से घिरे रहें तो आने वाली फसलें बम्पर पैदा होंगी। तथा चार मास बाद भयंकर मंदी का सूत्रपात होगा। मावस को ज्येष्ठा नक्षत्र दुर्भिक्षकारी। बाजार में अफवाह से दो सप्ताह में अच्छी तेजी-मंदी अस्थाई तौर पर चलेगी। चांदी, रुई में भारी मन्दी के झटके आयेंगे।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष– ता. 12 दिसं. शनिवारा चन्द्रदर्शन एक मास में अनाज तेज। सुदी 2 का बुध उदय पश्चिम में पशु आहार घास चारा तेज करेगा। **मंगसिर में बुध उदय अथवा भृगु का अस्त। तृण चारा कमती मिले बेचो पशु समस्त।।** तथा तीन मास के अन्दर रुई में भारी तेजी ला सकता है। सुदी 4 मंगलवारी तथा सुदी 7 शुक्रवारी से पक्ष में दालों में जनरल लाईन तेज चलने की आशा है। ता. 16 सित. धनु संक्रांति का प्रवेश वस्तुएं तेज करेगी। अनाज मंदा रहे। **धनु राशि के भानु में मंदा रहे अनाज। तिलहन, तेल, कपास में महंगाई का राज।।**

इस संक्रांति काल में कोई भी स्टॉक न करें। वरन् खरीदते-बेचते रहें, लाभ होगा। मंगसिर में धनु संक्रांति आना शुभप्रद नहीं है। सोना, चांदी में अच्छी मंदी, बिनौला में तेजी। ता. 20 दिसं. नवमी का क्षय रुई, पाट, बारदाना, घी, देशी घी में तेजी। ता. 24 दिसं. तुला में मंगल का प्रवेश 15 दिन के अन्दर सावणी फसल का माल, रुई, सूत, बिनौला, उर्द, दालें, तिलहन, लाल मिर्च आदि में तेजी अथवा अच्छी तेजी। ता. 25 दिसं. शुक्रवारी पूनम मृगे युक्त से एक सप्ताह के अन्दर सर्व वस्तुओं में अस्थाई तौर पर मन्दी।

मंगसिर के शकुन–मंगसिर लागत सप्तमी को नभ निर्मल दिन रात। अन्न मन्दा बैशाख में महंगा बादल बात।। मंगसिर पूनम निर्मला अथवा ग्रहण मयंक। लाभ मिले आगे करो संग्रह अनाज निशंक।।

पौष कृष्ण पक्ष–ता. 26 दिसं. एकम शनिवारी गुड़, सोना, चांदी में तेजी के झटके लायेगी। ता. 28 दिसं. अनुराधा शुक्र 10 दिन में दूध, घी, चावल, हल्दी, नमक, गुड़, लाल मिर्च आदि वस्तुओं में अच्छी मंदी के झटके लायेगा। ता. 29 दिसं. दो दिन के अन्दर गेहूं, अनाजों में अच्छी तेजी के झटके आ सकते हैं।

आवश्यक सूचना

यह लेख ग्रहों की विभिन्न पोजीशनों को आधार बनाकर लिखा गया है। होना या न होना ईश्वराधीन है। लाभ-हानि में हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं होगी। लेख सूक्ष्म रूप से लिखा गया है। सम्पूर्ण डिटेल सिलसिले वार जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तक **भविष्य फल प्रकाश सन् 2015** ई. को पढ़ें। पुस्तक में गुवार, गेहूं, चना, जौ, मक्का, उड़द, बारदाना, पाट, जूट, मूंग, मटर, अरहर, लाल मिर्च, इलायची, अजवायन आदि किराना सामान, शेयर्स आदि की दैनिक लाईनें, माल खरीदने-बेचने की तारीखें, स्टॉक करने के उचित मौके, मासिक विश्लेषण, लाभकारी चांस लिखे गये हैं। एक प्रति का मूल्य 300 रु. हैं। डाक खर्च 25 रुपये हैं। 325 रु. का मनीआर्डर भेजकर मंगा सकते हैं। पुस्तक का पंचवर्षीय शुल्क 1200 रु. हैं। कार्यालय द्वारा उपरोक्त सभी वस्तुओं की एक वर्ष की फीस 3000 रु., 6 मास की 1800 रु. हैं। सोना, चांदी, इन्दौर तेल, वायदा सहित बनाई जाती है। एक वर्ष का चार्ज 2500 रु., मासिक 900 रु. हैं। शेयर्स मार्काट दैनिक टाईम सहित रिपोर्ट बनाई जाती है। एक वर्ष का चार्ज 7000 रु. हैं। मंगाकर लाभ उठाएं। पुस्तक मंगाने या मनीआर्डर भेजने का पता –

लेखक: **राम अवतार गुप्ता व्यापार भूषण**
राव उमराव सिंह मार्किट, आर्य समाज रोड
नई सब्जी मन्डी, रेवाड़ी-123401 (हरि.)
मो. :-09416110996, 09996692224

व्यापारिक भविष्य फल सन् 2015-16 ई.

लेखकः
श्री प्रवीन कुमार जैन

गत अनेक वर्षों से ज्योतिष जगत के सर्वश्रेष्ठ पंचांग 'आर्यभट्ट' तथा अनेकानेक पंचांगों में प्रकाशित हमारा कमोडिटी बाजार का ग्रह गोचर आधारित आकलन सर्वथा सत्य होकर पूर्वाचार्यों के सिद्धांतों की सत्यता एवं सफलता को प्रतिष्ठित कर रहा है। वास्तव में तो हमारा प्रयास मात्र ज्योतिष की प्रतिष्ठिता को पुनर्स्थापित करना भर रहा। इस वर्ष इन्ही पृष्ठों के माध्यम से हम कमोडिटी बाजार की वर्ष 2015-16 की संभावित गतिविधियों का आकलन प्रस्तुत कर रहे हैं। यह आकलन पूर्णतया वैदिक ज्योतिष पर आधारित है। हमें वैदिक ज्योतिष में पूर्ण आस्था एवं विश्वास है। इस माध्यम से सदैव ही अत्यन्त सटीक परिणाम हमें प्राप्त हुए हैं। अतः समन्वय के नाम पर अन्य ज्योतिष विधाओं के साथ वैदिक ज्योतिष का घालमेल हमने नहीं किया है।

मार्च मास

मार्च 2015–मार्च मास का प्रारम्भ फाल्गुन शुक्ल एकादशी से होकर समापन चैत्र शुक्ल एकादशी में हुआ है। मास पांच शुक्र एवं पांच शनिवार युक्त है। मास में अमावस्या का घट्यादि मान-दिवस नक्षत्र से अधिक होने से तेजी का रुख रहेगा। पूर्णिमा में मास नक्षत्र का अभाव तथा मास में वक्री हुआ शनि सभी प्रकार के अन्नों में तेजी बनायेगा। अन्न का संग्रह करने वाले चार गुना तक लाभ प्राप्त करेंगे। फाल्गुन शुक्ल पक्ष की गुरुवारी अष्टमी से अन्न तथा अन्न पदार्थों में घटा-बढ़ी करेगी।

शकुन–चैत्र कृष्ण पक्ष में तृतीया की वृद्धि, शुक्ल पक्ष में तृतीया का क्षय तथा शनिवारी मीन संक्रांति से चैत्र मास में राजनैतिक सरगर्मियां बढ़ेंगी। अनावृष्टि से हानि होगी। चैत्री संक्रांति के दिन की वर्षा से वैशाख अथवा ज्येष्ठ मास में भूसा महंगा रहेगा। 26 मार्च चैत्र शुक्ल सप्तमी के दिन आकाश निर्मल रहा तो गेहूं का संग्रह करने से श्रावण मास में तीन गुना लाभ होगा।

मास व्यापार फल–21 मार्च–चैत्र शुक्ल शनिवारी प्रतिपदा से भूसा तथा अन्य पशु आहारों की कमी रहेगी। 22 मार्च–चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया का क्षय अशुभफलकारक रहेगा। बुध पू.भा. में प्रातः 07।12 पर अन्न पदार्थों की उपलब्धता में कमी आयेगी। सोना, चांदी, लोहा, तांबा तथा धान्यों के मूल्यों में गिरावट रहेगी। रुई, सूत में घटा-बढ़ी चलेगी।

23 मार्च– रात्रि 19।22 पर भरणी के शुक्र में तथा रात्रि 22।47 पर मंगल के मेष राशि अश्विनी नक्षत्र के गोचर में रुई, मूंग, मोठ, अरहर, मटर, चना तथा मोठ में गिरावट आयेगी। गुड़, शक्कर, खांड में घटा-बढ़ी के बाद मंदा रहेगा। सोना, मूंगा, सूत, कपास, मक्का, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा तथा भूसा में साधारण तेजी बनेगी। 12 दिनों में लाल रंग की वस्तुओं, नारियल तथा चांदी में मंदा आयेगा। 24 मार्च–आज के कृतिका नक्षत्र में रुई, भूसी वाले धान्य, मिर्च, ज्वार, बाजरा आदि मोटे अनाज तथा सभी प्रकार की औषधियों में गिरावट आयेगी।

25 मार्च– चावल, चारा-घास, भूसा, जूट, भार वाहक पशु, ऊंट, घी, धान्यों, वस्त्र आदि में तेजी रहेगी। 27 मार्च–औषधियों, किराने के माल, धातु, तांबा, पीतल, चांदी, धान्य आदि में दक्षिण प्रान्तों में तेजी चलेगी। 28 मार्च–फाल्गुन शुक्ल पक्ष की शनिवारी दशमी से रुई में तेजी बनेगी। बुध, मीन में रात्रि 01।35 पर रुई, कपास, बिनौला में तेजी बनेगी। गेहूं, चना, गुड़, शक्कर में मंदा रहेगा। सोना, चांदी तेज होकर मंदे होंगे। दक्षिणी क्षेत्रों में धान्यों, औषधियां, प्रियंगु, जावित्री, देवदारु, किराने की वस्तुओं, धातु तांबा, पीतल, चांदी में गिरावट चलेगी। रात्रि 23।35 से 31 मार्च प्रातः 11।15 तक मेष राशि के मंगल तथा कर्क के चन्द्रमा में अफीम आदि मादक पदार्थों में 15-20 रु. की तेजी आयेगी।

29 मार्च–बुध उ.भा. में रात्रि 21।36 पर चांदी में घट-बढ़ चलेगी। खाद्यान्नों के भावों में अधिक फेर-बदल नहीं होने से गुड़, खांड, रुई, धान्य एवं चावलों के भावों में समता रहेगी। 30 मार्च–चैत्र शुक्ल एकादशी की वृद्धि शुभफल देगी। कृषि उत्पादों तथा अन्न की आमद बढ़ने से भावों में गिरावट आयेगी। 31 मार्चः शुक्ल पक्ष में एकादशी तिथि की वृद्धि सभी प्रकार से शुभ एवं सुखद फल देगी। भूसी वाले धान्य, मिर्च, ज्वार, बाजरा आदि मोटे अनाज, सभी प्रकार की औषधियों में गिरावट आयेगी।

अप्रैल मास

अप्रैल 2015–अप्रैल मास का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल द्वादशी से समापन बैशाख शुक्ल द्वादशी में हुआ है। पांच रविवार तथा सोमवार युत मास में सोना, अलसी, गुड़ में तेजी बनेगी। मैदा, घी, तेल तथा धान्यों में मंदा आयेगा। शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी तिथि की वृद्धि शुभ एवं सुखद फलप्रद रहेगी।

शकुन–2 अप्रैल की चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन की वर्षा से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। 23 अप्रैल में यदि वर्षा हुई तो घास-भूसा आदि पशु आहरों तथा सभी प्रकार के ईंधनों में तेजी बनेगी।

मास व्यापारिक फल– 1 अप्रैल सूर्य रेवती में रात्रि 0।23 पर जलीय उत्पादों मोती, रत्न, नमक, फल, फूल तथा सुगन्धित पदार्थों आदि की हानि होगी। रुई, चावल, चांदी, सरसों, अलसी, लाख, गेहूं, जौ, चना, अरहर, मूंग, उड़द, तूअर, लहसुन, सब्जी, चावल, चारा-घास, भूसा, जूट, भार वाहक पशु, ऊंट, घी, धान्यों तथा वस्त्रों आदि में तेजी रहेगी। इसके बाद मीन राशि उ.भाद्रपद नक्षत्र में 18।40 पर पूर्व दिशा में अस्त बुध अन्न तथा धान्यों की हानि करेगा। रुई, चांदी में घटा-बढ़ी चलेगी रुख गिरावट का रहेगा। रुई पहले तेज बीच में मंदी तथा बाद में तेज होगी। सोना, गेहूं, अलसी में तेजी रहेगी। घी, धान्यों में 30 दिनों में मंदा आयेगा। 3 दिनों बाद अफीम में एक बार मंदा आयेगा।

2 अप्रैल–जलीय उत्पादों, सुगन्धित पदार्थों, फल-फूल, नमक, रत्न, शंख, मोती में तेजी बनेगी। 3 अप्रैल–शुक्र कृतिका में रात्रि 23।57 पर-11 दिनों में चांदी, कपास, रुई, सूत, सरसों, अरंडी, तिल, तैल, हींग, खजूर, घी में तेजी। 5 अप्रैल बुध रेवती में रात्रि 20।37 पर चांदी, गुड़, खांड, घी, तैल, सरसों, तिल तथा तिलहनों में मंदा। लौंग, मजीठ, लाल चन्दन, लाल मिर्च तथा लाल रंग की अन्य वस्तुओं, गेहूं, गेरू, कुंकुंम, कपूर, केसर में तेजी बनेगी।

6 अप्रैल–शुक्र वृष में रात्रि 19।43 पर रुई तथा चांदी में गिरावट के बाद 15 दिनों में तेजी बनेगी। शेयर्स में गिरावट आयेगी। परन्तु आगे चलकर तेजी बनेगी। जौ, गेहूं, चना, मटर आदि अनाजों तथा मादक पदार्थों में तेजी बनेगी। 7 अप्रैल–आज के विशाखा नक्षत्र से रुई में तेजी बनेगी। चावल, गेहूं, जौ, मटर आदि अनाजों, श्वेत पुष्प, सोना, चांदी आदि धातुओं, मणि, हीरा, पन्ना, पुखराज आदि रत्नों, तिल, तेल, आदि तिलहनों में दक्षिणी प्रान्तों में आठ मास के अन्तर्गत गिरावट आयेगी।

8 अप्रैल– रात्रि 22।26 पर कर्क राशि में मार्गी गुरु के गोचर में बाजारों में घटा-बढ़ी रहेगी, रुख गिरावट का बनेगा। 3-4 दिनों में रुई में मंदा होकर तेजी बनेगी। गेहूं, चना, चांदी, अलसी, सरसों में तेजी आयेगी। तम्बाकू, गुड़, शक्कर, खांड तथा समुद्री उत्पादों में गिरावट आयेगी। 09 अप्रैल– चावल, चारा-घास, भूसा, जूट, भार वाहक पशु, ऊंट, घी, धान्यों, वस्त्र आदि में तेजी रहेगी। 10 अप्रैल– मंगल भरणी में रात्रि 23।02 पर धान्य महंगा होगा। जलीय उत्पादों, सुगन्धित पदार्थों, फल, फूल, नमक, रत्न, शंख, मोती में घट-बढ़ के बाद तेजी का रुख रहेगा। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ग्वार, मोठ, मूंग, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। ईख, गुड़, खाण्ड, शक्कर में गिरावट चलेगी।

12 अप्रैल–बुध मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में प्रातः 08।40 पर जौ एवं गेहूं की फसलों को रोग तथा कीटों से हानि होने से गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मोंठ, मूंग आदि कृषि उत्पादों तथा चौपायों में तेजी आयेगी। रुई, सूत, सन, चांदी, ईख, गुड़, खांड, शक्कर, गोला, घी, तेल, तिल, सरसों तथा अन्य तिलहनों में मंदा रहेगा। तेलों में बाद में तेजी। दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों में घट-बढ़ चलेगी। सोना के मूल्यों में समता रहेगी। 13 अप्रैल– चावल, गेहूं, जौ, मटर आदि अनाजों, श्वेत पुष्प, सोना, चांदी आदि धातुओं, हीरा, पन्ना, पुखराज, मणि आदि रत्नों, तिल, तेल आदि तिलहनों में दक्षिणी प्रान्तों में आठ मास के अन्तर्गत गिरावट बनेगी।

14 अप्रैल–सूर्य मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में दोपहर 13।46 पर मंगलवारी संक्रांति से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। गेहूं, चना आदि अन्न, घी, रस, कपूर, लाल वस्तुओं आदि में तेजी आयेगी। संग्रह करने से दूसरे महीने में लाभ होगा। 13 दिनों के अन्दर सोना, चांदी, अलसी, अरण्डा, तिल, तेल, मेथी, अनाज, सभी प्रकार के रसकस, ईख, लोहा, तांबा, सूत, कपड़ा, सुपारी, नारियल, शिंगरफ, कपूर, लाल चन्दन, मेथी, लौंग, इलायची, हींग, अरण्डा, ऊनी वस्त्रों में तेजी बनेगी। रुई में मंदा होकर तेजी।

15 अप्रैल–शुक्र रोहिणी में प्रातः 08।46 पर खारी, मुनक्का तथा सुपारी में गिरावट आयेगी। 12 दिनो में अफीम में तेजी बनेगी। 17 अप्रैल– बैशाख कृ. चतुर्दशी का क्षय शुभ फल देगा। शुक्रवारी चतुर्दशी में उत्तम कृषि उत्पादन से खाद्य पदार्थों की मंहगाई दर में कमी आयेगी। मादक पदार्थों में तीन दिनों में पहले कुछ तेजी आकर बाद में मंदा होगा। बुध पश्चिमोदय मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में 23।08 पर रुई, कपास, कपड़ा, धान्यों तथा चांदी में 15 दिनों में मंदा होगा। गेहूं, जौ, चना, घी, तैल, अरण्डी, सरसों तथा धान्यों में तेजी बनेगी। अलसी घटा-बढ़ी में रहेगी।

18 अप्रैल–मंगल पश्चिमास्त मेष राशि भरणी नक्षत्र में 11।23 पर, बुध भरणी में रात्रि 17।27 पर अन्न में घटा-बढ़ी चलेगी रुख तेजी का रहेगा। चावलों में तेजी रहेगी। सभी प्रकार के धान्यों, सभी प्रकार के रसों, सभी प्रकार की धातुओं, ऊनी वस्त्रों, गाय, बैल, जलीय उत्पाद, कास्मेटिक्स, ट्रान्सपोर्ट व्यवसाय में पूर्व दिशा में सात दिनों के अन्तर्गत तेजी आकर गिरावट आयेगी। वैशाखी अमावस्या में रेवती नक्षत्र के योग से कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा।

19 अप्रैल–आज भरणी नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा। 20 अप्रैल–सोमवारी द्वितीया तथा कृतिका नक्षत्र से रुई एवं चांदी में मंदा रहेगा। भूसी वाले धान्य, मिर्च, ज्वार, बाजरा आदि मोटे अनाज, सभी प्रकार की औषधियों में घट-बढ़ आयेगी। 21 अप्रैल–वैशाख शुक्ल मंगलवारी तृतीया का कृतिका नक्षत्र रुई एवं चांदी में तेजी रहेगी। चावल, चारा-घास, भूसा, जूट, भार वाहक पशु, ऊंट, घी, धान्यों, वस्त्र आदि में तेजी चलेगी। 22 अप्रैल–जलीय उत्पादों, सुगन्धित पदार्थों, फल, फूल, नमक, रत्न, शंख, मोती में तेजी बनेगी।

23 अप्रैल–गुरुवारी वैशाख शुक्ल पंचमी मेष राशि भरणी नक्षत्र में 09।23 पर पश्चिम दिशा में उदित बुध से रुई, कपास तथा चांदी में 15 दिनों में मंदा आयेगा। घी, तेल, अरण्डी, सरसों, गेहूं, जौ, चना आदि धान्यों में तेजी बनेगी। अलसी घटा-बढ़ी में रहेगी। 24 अप्रैल–शुक्रवारी षष्ठी दो मास में सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनायेगी।

25 अप्रैल–मध्याह्न 13।55 पर कृतिका के बुध में अन्न उत्पादन विपरीत रूप से प्रभावित होगा। अन्न भंडार में कमी होगी तथापि प्रतिपदा की वृद्धि से अन्न आपूर्ति में सुधार होगा। रुई, सभी प्रकार के धान्य एवं भूसी वाले धान्यों, मिर्च, ज्वार, बाजरा आदि मोटे अनाज तथा सभी प्रकार की औषधियों में तेजी आयेगी। चांदी में गिरावट रहेगी। 26 अप्रैल–रात्रि 22।53 पर मृगशिरा में शुक्र के गोचर से धान्यों की हानि होगी। मीठा तथा रसकसों में तेजी। 12 दिनों में चना, धान, भूसा में गिरावट आयेगी।

27 अप्रैल–दोपहर 12।01 पर वृष के बुध से रुई में मंदा आकर 15 दिनों बाद तेजी बनेगी। गेहूं, चना, जौ, तेल, तिल, सूत, कपास, मटर, भूसी वाले धान्य, मिर्च, ज्वार, बाजरा आदि मोटे अनाज तथा सभी प्रकार की औषधियों में तेजी आयेगी। अन्य व्यापारिक वस्तुओं में घटा-बढ़ी चलेगी।

28 अप्रैल–प्रातः 5।31 पर भरणी के सूर्य से कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। गेहूं, सरसों, राई, खांड, भूसी वाले धान्य, मिर्च, ज्वार, बाजरा आदि मोटे अनाज तथा सभी प्रकार की औषधियों में तेजी आयेगी। 15 दिनों के अन्दर चना, जौ, चावल, मोंठ, अलसी, तुअर, गुड़, घी, अफीम, सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातुओं में तेजी बनेगी। रुई में मंदा रहेगा।

29 अप्रैल–प्रातः 8।07 पर कृतिका के मंगल में गेहूं, जौ, चावल, मसूर, मोंठ, चना, तिल, तेल, घी, अरण्डी, राई, सरसों, अलसी, चांदी, चावल, रुई, सूत, कपड़ा में तेजी बनेगी। रुई में मंदा रहेगा। 30 अप्रैल–जलीय उत्पादों, सुगन्धित पदार्थों, फल, फूल, नमक, रत्न, शंख, मोती में तेजी बनेगी।

मई मास

मई 2015–मई मास का प्रारम्भ बैशाख शुक्ल त्रयोदशी से होकर समापन ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी में हुआ है।

शकुनः ज्येष्ठ कृ. अमावस्या में दिन अथवा रात्रि में बादल दिखाई पड़े अथवा वर्षा हुई, तो आगे चौमासे में वर्षा का अभाव रहेगा। और यदि अमावस्या एवं पूर्णिमा दोनों में ही आकाश में घटा बादल न दिखाई दिए, तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा होगी। 11 मई की वर्षा से आगे चलकर उत्तम अन्न उत्पादन होकर सुभिक्ष रहेगा। 25 मई ज्येष्ठ सुदी सप्तमी में यदि बादल छाए अथवा गर्जे तो दक्षिणी वायु चलेगी। इस समय तिल का संग्रह करने से कार्तिक मास में लाभ होगा।

मास व्यापारिक फल– 2 मई 9 दिनों में मादक पदार्थों में तेजी बनेगी। शुक्र मिथुन में रात्रि 20।33 पर रुई, वारदाना, मूंगफली, कपास, सूत, कपड़ा, सरसों, अरण्डी, तिल, तेल में मंदा चलेगा। गुड़ तेज होकर मंदा होगा। चांदी घट-बढ़ में रहेगी। जौ, गेहूं, चना, अफीम में सामान्य तेजी आयेगी। 3 मई–किन्हीं स्थानों पर झगड़े-झंझट होंगे। मंगल वृष में रात्रि 23।54 पर शुक्र की राशि का मंगल दो मास तक सभी वस्तुओं में तेजी देगा। जौ, गेहूं, चना, उड़द, मूंग, मोठ, सरसों, अरण्डी, तिल, तेल, अलसी, तोरया, कुमकुम, केशर, चन्दन, कपास, वस्त्र, जूट, वारदाना, गेरू, मजीठ, कपूर तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी आयेगी। धान्यों में तेजी के बाद गिरावट आयेगी।

04 मई–बुध रोहिणी में प्रातः 09।48 पर रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खांड, शक्कर में तेजी के बाद मंदे का रुख बनेगा। अरहर, सन, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों में गिरावट आयेगी। 05 मई–मंगलवारी ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा विशाखा नक्षत्र में रुई में तेजी बनेगी।

10 मई–ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी का क्षय शुभफल कारक रहेगा। पांच दिनों में मादक पदार्थों में घटा-बढ़ी बनेगी। धान्यों में मंदा आयेगा। घी में तेजी चलेगी। 11 मई-सूर्य कृतिका में रात्रि 23।45 पर सोना, चांदी, अलसी, चना, मोंठ तथा चावल में तेजी आयेगी। जौ, गेहूं, मूंग, सरसों, राई में 15 दिनों के अन्दर तेजी बनेगी।

15 मई– सूर्य वृष में प्रातः 10।37 पर मंगलवारी संक्रांति से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। मजीठ, जायफल, सुपारी, कपूर, कपास, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, मसूर, रस, तेल, घी, नमक, कपूर, किराना, सोना, कपड़ा, मादक पदार्थों, अस्त्र-शस्त्रों तथा लाल वस्तुओं में तेजी आयेगी। संग्रह करने से दूसरे महीने में लाभ होगा। दोपहर 11।33 पर मंगल-शनि की प्रतियुति से अनेक स्थानों पर खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। 17 मईः आज के भरणी नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा।

18 मई–रुई में घट-बढ़ चलेगी। मंगल रोहिणी में रात्रि 02।48 पर शेयर मार्केट, सूत, कपास, कपड़ा, रेशम, सन, गुड़, खांड, शक्कर, हींग, मिर्च, राई, छुआरा, सरसों तथा तेलों में तेजी चलेगी। 19 मई प्रातः 07।19 पर वृष राशि रोहिणी नक्षत्र में वक्री हुआ बुध सभी व्यापारिक वस्तुओं में घट-बढ़ देगा। चांदी में घट-बढ़ के बाद तेजी आयेगी। रुई में तेजी आकर मंदा होगा। ईख, गुड़, खांड, शक्कर, घी, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी, बिनौला अन्य तिलहनों तथा कपूर में तेजी बनेगी।

21 मई–शुक्र पुनर्वसु में रात्रि 04।27 पर अन्नों की अनुपलब्धता बढ़ने से गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर में तेजी बनेगी। रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी में मंदा रहेगा। रुई, चांदी में तेजी होकर मंदा आयेगा। शेयर्स, हैसियन, वारादाना में गिरावट चलेगी। 15 दिनों में रुई में लगभग 10 से 15 रु. की गिरावट आयेगी। 24 मई– ज्येष्ठ शुक्ल रविवारी षष्ठी में रुई, कपास, सूत, चावल, घी तथा धान्यों में तेजी बनेगी।

25 मई–सूर्य रोहिणी में रात्रि 19।53 पर गेहूं, जौ, चावल, चना, सूत, सन, सुपारी, द्राक्ष, गुड़, खांड, घी, ज्वार, बाजरा, सरसों, राई, तिल, तेल, अरण्डा तथा अलसी में तेजी आयेगी। रुई में साधारण तेजी बनेगी। चांदी में मंदा आयेगा। 29 मई: ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की शुक्रवारी एकादशी में प्रातः 07।30 से व्यतिपात का संयोग रुई तथा चांदी में गिरावट देगा। 30 मई– शुक्र कर्क में रात्रि 20।55 पर कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। सूत, सन, वारदाना, घी, तेल, गोला, गुड़, खांड, शक्कर सभी रसकसों में तेजी बनेगी। रुई में मंदा आकर तेजी आयेगी। जौ, गेहूं, चना में गिरावट रहेगी। परन्तु बाद में तेजी आयेगी।

जून मास

जून 2015–जून मास का प्रारंभ ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी से होकर समापन आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी में हुआ है। प्रथम आषाढ़ मास के पांच बुधवारों से रुई, चांदी में घट-बढ़ होकर तेजी बनेगी। घी, गुड़, खांड, घी आदि रसों में तेजी रहेगी। पांच गुरुवार होने से सोना, पीतल, सूत, कपड़ा, शक्कर, चावलों में गिरावट आयेगी।

वर्षा को प्रभावित कर रहे शकुन–2 जून ज्येष्ठी पूर्णिमा में दिन अथवा रात्रि में बादल दिखाई पड़ने से वर्षा का अभाव रहेगा। 10 जून में यदि रात्रि में आकाश में बादल छाये रहे तो चौमासे में अच्छी वर्षा होगी। 21 जून की आषाढ़ी पंचमी के योग से वर्षा में कमी रहेगी। इस दिन वर्षा होने, इन्द्र धनुष दिखाई पड़ने अथवा पछुआ हवा चलने से अन्न तथा भूसा आदि का संग्रह कर कार्तिक मास में बेचने से लाभ मिलेगा। 26 जून आषाढ़ सुदी नवमी के दिन प्रातः, मध्याह्न अथवा सांय काल में सूर्य के आस-पास बादलों का दिखाई देना अशुभ शकुन सिद्ध होगा। 27 जून के स्वाति नक्षत्र में गर्जदार वर्षा से चातुर्मास में उत्तम वर्षा होगी। कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा।

मास व्यापारिक फल–1 जून आज के विशाखा नक्षत्र में रुई में तेजी बनेगी। 3 जून बुधवारी प्रतिपदा से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। शुक्र पुष्य नक्षत्र में प्रातः 05।13 पर उत्तम वर्षा होगी। शिंगरफ, पारा, कपूर, लाख, चपड़ा, हींग, गुड़ में तेजी आयेगी।

06 जून–मंगल मृगशिरा में प्रातः 07।16 पर वर्षा की अधिकता से कपास की खेती में हानि होगी। रुई में मंदा आकर तेजी बनेगी। चांदी तेजी में रहेगी। अन्य वस्तुओं में मंदा रहेगा। 08 जून–सूर्य मृगशिरा में 17।50 पर, वक्री बुध पूर्वोदय वृष राशि रोहिणी नक्षत्र में 19।14 पर तेज हवाएं चलेंगी। नारियल, सभी प्रकार के फलों, धान्य, रुई, सन, कपास, सन, कस्तूरी, उड़द, मूंग, मोंठ, गेहूं, जौ, बाजरा, अलसी, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, लाल मिर्च में तेजी आयेगी। चना, भूसा, जलीय उत्पादों, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित वस्तुओं, सूत, कपड़ा, रेशम तथा धातुओं में 14 दिनों के अन्दर तेजी आयेगी। चांदी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी आयेगी। सोना में मंदा बनेगा।

12 जून–बुध मार्गी वृष राशि रोहिणी नक्षत्र में 4।03 पर रुई, चांदी, सूत, सन में घटा-बढ़ी के बाद गिरावट का रुख बनेगा। अलसी, कपड़ा, गेहूं, रुई, शक्कर गिरावट में रहेगी। धान्यों में घट-बढ़ के बाद तेजी आयेगी। 14 जून–आज के भरणी नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा। 15 जून–सामान्यतया सुख, चैन तथा शांति बनी रहेगी। रुई में घट-बढ़ रहेगी। सूर्य, मिथुन में सायं 17।11 पर सोमवारी मिथुन संक्रांति के समय कन्या के राहु से कृषि की हानि होगी। कंद-मूल, कपास, तिल, तेल, जौ, सूत तथा पीले रंग की वस्तुओं में तेजी बनेगी। धान्यों में साधारण मंदा रहेगा। मोती सस्ते होंगे। रसकस, घी, तेल का संग्रह करने से आगे तीसरे महीने में लाभ होगा।

16 जून–मंगल मिथुन में रात्रि 1।09 पर अधिक मास में मंगल के राशि परिवर्तन से वर्षा की अधिकता रहेगी। 17 जून–बुधवारी प्रतिपदा से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। शुक्र आश्लेषा में दोपहर 13।19 पर 12 दिनों में तूअर, मोठ, चावल, चना, धान, भूसा में मंदा आयेगा। 22 जून–सूर्य आर्द्रा में 16।46 पर वर्षा योग। रुई, सूत, कपास, लाल रंग के वस्त्र, अलसी, सरसों, अरण्डा, घी, गुड़, खांड, चीनी, चावल, धान्य, गेहूं, जौ, चना, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित वस्तुओं, हल्दी, सोंठ, सीसा, लोहा, चांदी, मोती, रत्न, खल तथा भूसा में तेजी आयेगी। सोने में कुछ घटा-बढ़ी के बाद तेजी आयेगी।

25 जून–मंगल आर्द्रा में रात्रि 21।22 पर गुड़, खांड, अलसी, रुई, सूत, नमक, तिल, तेल में तेजी आयेगी। चांदी में मंदा रहेगा। तीन दिनों में मादक पदार्थों में तेजी आकर मंदा आयेगा। भैंसों तथा तिल की हानि होगी। 28 जून–आज के विशाखा नक्षत्र में रुई में तेजी बनेगी।

30 जून–बुध मृगशिरा में रात्रि 22।29 पर वायु वेग के साथ वर्षा से कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। गेहूं, चना, तिल, उड़द मंदे होंगे। तिल, सरसों, अलसी, बिनोला, तेलों में घटा-बढ़ी के बाद मंदा होगा। रुई में तेजी बनेगी।

जुलाई मास

जुलाई 2015–जुलाई मास का प्रारम्भ अधिक आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी से होकर आषाढ़ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा में समाप्त होगा। पांच शुक्रवार युत अधिक आषाढ़ मास में सामान्य जन में सुख व्याप्त होगा। धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी। मालवा क्षेत्र में मादक पदार्थों में तेजी बनेगी।

शकुन–13 जुलाई सोमवार रोहिणी नक्षत्र में प्रातः 09।06 तक चली हवा से आगे श्रावण तथा भाद्रपद मास में अच्छी वर्षा होगी। 31 जुलाई आषाढ़ सुदी पूर्णिमा की वर्षा से अन्न एक मास तक महंगे रहकर बाद में सस्ते होंगे।

मास व्यापारिक फल– 01 जुलाई दोपहर 13।21 गुरु-शुक्र की युति से घी, तिल, तेल, सूत का स्टाक कर दो मास बेचने के पश्चात् लाभ होगा। रुई में तेजी रहेगी। इस योग की पुष्टि आगे 05 अग. में बने योग से हो रही है।

3 जुलाई–आषाढ़ कृ. द्वितिया का क्षय शुभ फल देगा। 5 जुलाई–शुक्र सिंह राशि मघा नक्षत्र में 9।48 पर, बुध मिथुन में दोपहर 12।17 पर लाल रंग की वस्तुओं, सोना तथा सभी प्रकार के धान्यों में तेजी बनेगी।

6 जुलाई–सूर्य पुनर्वसु में सायं 16।25 पर चांदी, सोना, कपास, बिनौला, अरंडी, अलसी, सरसों, तिल, तेल, ज्वार, मूंग, मोंठ, मसूर, बाजरा, उड़द, गुड़, खांड, चावल, नमक, नील, सज्जी, मजीठ, माजूफल, केसर, कपूर, देवदारु, चन्दन, लाख, कुसंभ, लौंग, नारियल, सफेद वस्तुओं तथा सुगन्धित पदार्थों में तेजी आयेगी।

9 जुलाई–बुध आर्द्रा में प्रात 10।14 गेहूं, तिल, उड़द सस्ते होंगे। भाद्रपद मास में मंहगाई होगी। 11 जुलाई तथा 12 जुलाई में रुई में मंदा रहेगा। 14 जुलाई– प्रातः 6।25 पर गुरु सिंह राशि मघा नक्षत्र में सिंह राशि से गोचर कर रहे गुरु के श्रावण वर्ष में दूध, घी तथा अन्य दुग्ध उत्पादों का उत्पादन बढ़ेगा। दूधारू पशुओं, गेहूं, तिल, उड़द, घी, चावल, सोना, चांदी, तांबा, मूंगा में तेजी रहेगी। कार्तिकी फसल का उत्पादन उत्तम रहेगा।

15 जुलाई–मंगल पुनर्वसु में रात्रि 20।53 पर तिल की हानि होगी। सफेद वस्तुओं-रुई, कपास, चांदी, नमक, खांड, तिल, तेल, सरसों तथा रसकसों में तेजी आयेगी। 16 जुलाई–बुध पुनर्वसु में प्रातः 5।39 पर-रुई, कपास, सूत में मंदी आयेगी। मिथुन राशि पुनर्वसु नक्षत्र में रात्रि 20।02 पर पूर्व दिशा में अस्त बुध से चांदी में घटा-बढ़ी चलेगी। रुख गिरावट का रहेगा। रुई पहले तेज बीच में मंदी तथा बाद में तेज होगी। सोना, गेहूं, अलसी में तेजी रहेगी। घी, धान्यों में 30 दिनों में मंदा आयेगा। 3 दिनों बाद अफीम में एक बार मंदा आयेगा।

17 जुलाई–सूर्य कर्क में रात्रि 04।03 पर-कर्क संक्रांति आश्लेषा नक्षत्र में वर्षा होने से कहीं-कहीं पर अन्न मंहगे होंगे। धान की उपज अच्छी होने के उपरान्त भी किन्हीं स्थानों पर धान्यों में तेजी आयेगी। मालवा की अफीम में गिरावट रहेगी। गुड़ तथा खांड के भाव स्थिर रहेंगे। गुड़ का संग्रह दो मास के बाद लाभ देगा। 20 जुलाई–सूर्य पुष्य में सायं 15।52 पर, बुध कर्क में रात्रि 23।02 पर खाद्यान्नों की उपलब्धता कम होने से सामन्य जन पीड़ित रहेगा। तिल, तेल, सरसों, मद्य, गुड़, खांड, ज्वार, बाजरा, सुपारी, गुग्गल, नारियल, सौंठ, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सन, जूट, ऊनी वस्त्र, सीसा, सोना, चांदी तथा चांदी की वस्तुओं में तेजी आयेगी। रुई में तेजी आकर मंदा बनेगा।

25 जुलाई–शुक्र वक्री सिंह राशि मघा नक्षत्र में दोपहर 14।59 पर तीसरे मंडल के नक्षत्र में वक्री हुए शुक्र के गोचर में धान्यों, घी, तेल, सोना, चांदी, पीतल, गाय, बैल आदि पशुओं में तेजी बनेगी। 26 जुलाई–आज के विशाखा नक्षत्र में रुई में तेजी बनेगी। 28 जुलाई– बुध आश्लेषा में रात्रि 21।36 पर उत्तम वर्षा से भूसे वाले धान्यों, चावल आदि का उत्पादन उत्तम रहेगा। गुजरात में 15 दिनों में वृष्टि, तिल, उड़द तेज होंगे। 31 जुलाई–मंगल कर्क में रात्रि 2।17 पर बुध पश्चिमोदय कर्क राशि आश्लेषा नक्षत्र में 23।16 पर वर्षा होगी। सभी प्रकार के धान्यों, दूधारू भैंसों, धान, गुड़, खांड, ईख, घी, तेल, अरण्डी, सरसों तथा धान्यों में तेजी बनेगी। रुई, कपास, कपड़ा, अलसी घटा-बढ़ी में रहेंगे। चांदी में 15 दिनों में मंदा होगा।

अगस्त मास

अगस्त 2015–अगस्त मास का प्रारम्भ शनिवारी श्रावण कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से होकर भाद्रपद कृष्ण द्वितीया में समाप्त होगा। पांच शनिवार युक्त मास में मालवा क्षेत्र के मादक पदार्थों में गिरावट बनेगी।

शकुन–यदि 20 से 22 अगस्त में चित्रा स्वाती विशाखा नक्षत्रों में वर्षा नहीं हुई, तो भूसे का अभाव रहेगा। चावल आदि के उत्पादन की हानि होगी।

मास व्यापारिक फल–2 अगस्त प्रातः 11।23 पर वृश्चिक राशि में मार्गी शनि से बाजार की चलती लाईन में परिवर्तन होगा। अलसी, सोंठ, अदरक, मिर्च, पीपल, चांदी में तेजी आयेगी। दो महीने में हींग, मिर्च, सरसों, तिल, तेल में तेजी बनेगी। रुई, धनियां तथा अन्न सस्ता होगा।

3 अगस्त–श्रावण कृ. चतुर्थी का क्षय शुभ फल देगा। सूर्य आश्लेषा में दोपहर 14।48 पर कर्क राशि आश्लेषा नक्षत्र के सूर्य से वर्षा के कारण खाद्यान्न खराब अथवा नष्ट होंगे। कहीं कहीं पर अन्न मंहगे होंगे। सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, चना, उड़द, गुड़, शक्कर, ज्वार, घी, तेल, सरसों, अरण्डी, अलसी, तिल, तेल, द्राक्ष, मिर्च, नील, मादक पदार्थ तथा शेयर मार्केट में तेजी आयेगी।

4 अगस्त–बुध सिंह राशि मघा नक्षत्र में सायं 18।13 पर धान्यों के मूल्यों में समता रहेगी। सूत, कपड़ा, दही आदि खट्टे पदार्थों, औषधीय वनस्पतियों तथा देवदारु में तेजी बनेगी।

5 अगस्त–रात्रि 3।17 पर बृहस्पति, शुक्र युति से वर्षा होगी। सोने में तेजी बनेगी। चांदी तथा रुई में घट-बढ़ चलेगी। घी, तिल, तेल, सूत का स्टाक कर दो मास में बेचने के पश्चात् लाभ होगा।

7 अगस्त–आज भरणी नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा। दोपहर 12।38 पर बुध-बृहस्पति युति से वर्षा का अभाव रहेगा।

जब-जब ही बुध बृहस्पति मिल बैठे इक गेह।
तब-तब ही संसार में बरसैं नाही मेह॥

8 अगस्त–रुई में मंदा रहेगा। 11 अगस्त–वक्री शुक्र पश्चिमास्त सिंह राशि मघा नक्षत्र में 15।35 पर सोना, चांदी में गिरावट आयेगी। रुई में अच्छी घट-बढ़ रहेगी। सभी वस्तुओं में प्रायः ही हानि होगी। सूत, कपास, कपड़ा आदि सफेद वस्तुओं, घी, तेल, अलसी, अरण्डी, बिनौला, मूंगफली में तेजी आयेगी। 12 अगस्त–प्रातः 08।38 पर बुध के पू.फा. से गोचर के प्रभाव से सभी प्रकार के अन्नों तथा वस्तुओं में घट-बढ़ चलेगी। 10 दिनों में अन्नों में मंदा होगा।

13 अगस्त–सायं 18।47 पर श्रावण कृष्ण पक्ष में सिंह राशि मघा नक्षत्र में अस्त गुरु से धान्यों की हानि होगी। वक्री शुक्र आश्लेषा में सायं 17।05 पर 6 महीनों तक सभी प्रकार के अन्नों में गिरावट बनेगी। सभी वस्तुओं में मंदा होगा। 26 दिनों में रुई में गिरावट आयेगी। परन्तु तूअर, मोठ, चावल, चना, धान, भूसा में तेजी आयेगी। 17 अगस्त–मघा नक्षत्र में दोपहर 12।24 पर सोमवारी सिंह संक्रांति के समय कर्क राशिस्थ सूर्य एवं चन्द्रमा से 15 दिनों में सभी स्थानों पर वर्षा होगी। मोती तथा धान्यों में मंदा आयेगा। घी, रत्न, ईख, गुड़, शक्कर, तिल, तेल, सरसों, लाल रंग की वस्तुओं, मूंग, ज्वार, बाजरा, अरण्डा, द्राक्ष, मिर्च, मादक पदार्थ, चांदी, रुई, कपास में तेजी बनेगी।

19 अगस्त–मादक पदार्थों में तीन दिनो में तेजी बनेगी। वक्री शुक्र पूर्वोदय कर्क राशि आश्लेषा नक्षत्र में 18।20 पर धान्यों में तेजी बनेगी। खाद्यान्नों की आपूर्ति बाधित होगी। 20 अगस्त–बुध उ.फा. में रात्रि 23।37 पर उड़द, मूंग के उत्पादन में कमी से आमद कम होकर भावों में तेजी बनेगी। 22 अगस्त–रुई तेजी में रहेगी। 23 अगस्त–बुध कन्या में प्रातः 8।37 पर अब से छः मास तक सोना तथा अच्छी क्वालिटी की खांड में तेजी रहेगी बाद में गिरावट 25 अगस्त–मंगल आश्लेषा में रात्रि 21।28 पर सभी प्रकार के अन्नों में तेजी। चांदी तथा रुई में मंदा आयेगा।

28 अगस्त–श्रावण शु. चतुर्दशी के क्षय एक मास में घी में तेजी बनेगी। 31 अगस्त–बुध हस्त में प्रातः 07।37 पर, सूर्य पू.फा. में प्रातः 08।25 पर खाद्यान्नों की उपलब्धता सुलभ होगी। सोने में अच्छी तेजी बनेगी। चांदी तथा चांदी की वस्तुओं, लोहा, जूट, रुई, कपास, सूत, चावल, गेहूं, ज्वार, गुड़, खांड, जीरा, तिल, तेल, सरसों, अरण्डी, सुपारी, मादक पदार्थों, ज्वार, घी, ऊनी वस्त्रों में तेजी आयेगी।

सितंबर मास

सितम्बर 2015–सितम्बर मास भाद्रपद कृष्ण तृतीया से प्रारम्भ होकर समापन आश्विन कृष्ण तृतीया में होगा। पांच रविवार तथा पांच सोमवार युक्त मास में सोना, अलसी, गुड़ में तेजी बनेगी। मैदा, घी, तेल तथा धान्यों में मंदा आयेगा।

शकुन–1 सितम्बर भाद्रपद कृष्ण तृतीया में उत्तर दिशा में बादल हुए तो इस समय अन्न का संग्रह करें। छठे मास में तेजी बनेगी। 21 सितम्बर सोमवारी भादो सुदी अष्टमी में प्रातः 07।04 के बाद मूल नक्षत्र के योग से पांचवें मास में सन तथा सूत में तेजी आयेगी।

मास व्यापारिक फल–आज तथा कल 4 सितं. में रुई में मंदा रहेगा। 6 सितं.–शुक्र मार्गी 13।59 पर कर्क राशि आश्लेषा नक्षत्र में 05 दिनों में सोना, चांदी, करेंसी, गाय, बैल आदि पशुओं में मंदा आयेगा। 9 सितं.–प्रातः 09।55 पर सिंह राशि मघा नक्षत्र में भाद्रपद कृष्ण पक्ष में उदित गुरु से कृषि उत्पादन मध्यम रहेगा। 14 सितं.–सूर्य उ.फा. में रात्रि 02।15 पर सोना, चांदी, लोहा, तिल, तेल, सरसों, घी, चावल, उड़द, नारियल, सुमारी, मूंग, मूंज, बांस, नील, जौ, ज्वार, गुड़, चीनी, जूट, कपास, रेशम, हल्दी, हरड़, हींग, क्षार, कत्था, अरण्डी, अफीम में तेजी आयेगी।

15 सितं.–मंगल सिंह में रात्रि 21।26 पर वर्षा की कमी से उड़द, मूंग तिलों की फसल नष्ट होगी, अन्य धान्य दुर्लभ होंगे। महंगाई बढ़ेगी। सोना, चांदी, तांबा तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी आयेगी। 17 सितं.–सूर्य कन्या में 12।19 पर, बुध वक्री कन्या राशि हस्त नक्षत्र में रात्रि 23।39 पर संक्रांति में सभी प्रकार के अन्नों का उत्पादन अच्छा रहेगा। प्रायः सभी वस्तुओं में मंदा आयेगा। परन्तु कपास, घी, मजीठ, नारियल, तिल, तेलों में तेजी रहेगी। रुई में तेजी आकर मंदा होगा। गुड़ तथा खांड के भाव स्थिर रहेंगे। इन वस्तुओं का संग्रह करने से दो मास के बाद लाभ मिलेगा। 18 सित.–रुई में तेजी रहेगी।

24 सितम्बर–बुध पश्चिमास्त कन्या राशि हस्त नक्षत्र में रात्रि 21।01 पर किराना तेज होगा। रुई, चांदी में तेजी होकर मंदा आयेगा। शेयर्स, हैसियन, बारादाना में गिरावट चलेगी। 15 दिनों में रुई में लगभग 10 से 15 रु. की गिरावट आयेगी। 27 सितं.–सूर्य

हस्त में सायं 17।45 पर गेहूं, जौ, चना, ज्वार, गुड़, खांड, सूत, जूट, सन, रुई, कपास, कपड़ा, कथीर, हरड़, खार, हल्दी, हींग, धनिया, घास, लकड़ी, नमक में तेजी आयेगी।

अक्टूबर मास

अक्तूबर– अक्तूबर मास का प्रारम्भ आश्विन कृष्ण चतुर्थी से होकर समापन कार्तिक कृष्ण पंचमी में होगा। पांच सोमवार तथा पांच मंगलवार युत आश्विन मास में मैदा, घी, तेल, धान्यों तथा मादक पदार्थों में मंदा आयेगा।

मास व्यापारिक फल–1 अक्टूबर–आज के भरणी नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा। शुक्र सिंह राशि मघा नक्षत्र में रात्रि 04।07 पर सभी प्रकार के धान्यों-गेहूं, जौ, चना, मटर, बाजरा, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, मजीठ, लाल चन्दन, लाल मिर्च, लाल रंग की वस्तुओं, तेल तिल, मूंगफली, सरसों, ग्वार, केसर, कस्तूरी तथा चौपायों में तेजी आयेगी। 2 अक्टू.–रुई में मंदा रहेगा। 3 अक्टू. –वक्री बुध उ.फा. में मध्याह्न 17।02 पर उड़द, मूंग का उत्पादन उत्तम रहेगा।

7 अक्टू.–बुध पूर्वोदय कन्या राशि उ.फाल्गुनी नक्षत्र में 04।51 पर, मंगल पू.फा. में प्रातः 05।00 पर आश्विन मास में उदित बुध से वर्षा अधिक होगी। धान्यों की उत्तम उत्पत्ति से भावों में गिरावट आयेगी। मंहगाई पर नियन्त्रण होगा। सोना, कपड़ा, रुई में गिरावट आयेगी। चांदी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी आयेगी। गेहूं, जौ, चना, गुड़, खांड, नमक, अलसी, अरण्डी, तिल तेल, सरसों, लाही, मूंगफली, घी, लाल मिर्च तथा अन्य धातुओं में तेजी आयेगी। 9 अक्टू.–बुध मार्गी रात्रि 20।27 पर कन्या राशि उ.फा. नक्षत्र में सुपारी नारियल, अगर, चन्दन में तेजी बनेगी। 11 अक्टू.–सूर्य चित्रा में प्रातः 6।46 पर गेहूं, चना, रुई, सूत, कपास, रेशम, तिल, सोना, चांदी, गुड़, खांड, अरहर, लाख, चपड़ा, केसर, कपूर में तेजी आयेगी।

13 अक्टू.–प्रतिपदा बुधवारी होने से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। 16 अक्टू.–बुध हस्त में रात्रि 00।49 पर धान्य सस्ते होंगे। सुर्भिक्ष से जनता सुखी रहेगी।

17 अक्टू.–शुक्र पू. फाल्गुनी में प्रातः 11।02 पर उत्तम वर्षा से 14 दिनों में धान्यों में कुछ गिरावट आयेगी। गेहूं, जौ, चना, घी, मूंग, उड़द, ज्वार, बाजरा मंदा रहेगा। 18 अक्टू.–रुई में तेजी बनेगी। सूर्य तुला में रात्रि 00।16 पर शनिवारी संक्रांति से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। अफीम में कुछ मंदा रहेगा। घी, रसकस, तिल, तेलों, सभी प्रकार के अन्नों तथा सोना में तेजी चलेगी।

24 अक्टू.–सूर्य स्वाति में सायं 17।13 पर सोना, चांदी आदि सभी धातुओं में, जूट, सन, रुई, सूत, कपड़ा, गुड़, खांड, शक्कर, बिनौला, गुग्गल, सुपारी, मिर्च, तेल, सरसों, अलसी, राई, हींग, कपूर, लाख, हल्दी में तेजी बनेगी। 26 अक्टू.–रात्रि 01।33 पर बृहस्पति शुक्र युति से रुई के भावों में तेजी बनेगी। घी, तिल, तेल, सूत का स्टॉक कर दो मास बेचने के पश्चात् लाभ होगा।

28 अक्टू.–आज के भरणी नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा। बुधवारी प्रतिपदा से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। मंगल उ.फा. में रात्रि 20।42 पर घोड़ों के मूल्यों में वृद्धि होगी। गुड़, खांड, शक्कर, भारी माल वाहकों के मूल्यों में तथा सवारी गाड़ियों के मूल्यों में वृद्धि होगी।

29 अक्टू.–आज के कृतिका नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा। बुध तुला में रात्रि 22।43 पर धान्यों में तेजी आयेगी। 31 अक्टू.–शुक्र उ.फा. में रात्रि 2।29 पर कृषि की हानि होगी। सोना, चांदी में घटबढ़ चलेगी। सभी प्रकार के अन्नों, धान्यों तथा रुई में तेजी आयेगी।

नवंबर मास

नवम्बर 2015–मास का प्रारम्भ कार्तिक कृष्ण षष्ठी से होकर समापन मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी में होगा। पांच बुधवार युत कार्तिक मास में रुई, चांदी में घट-बढ़ के बाद तेजी बनेगी। घी, गुड़, खांड में तेजी रहेगी। पशु आहारों में मंदा आयेगा। धान्यों में तेजी बनेगी। कार्तिक शुक्ल पंचमी की संक्रांति की वर्षा से पौष मास में अन्नों के मूल्यों में गिरावट रहेगी। वृश्चिक संक्रांति के दिन की वर्षा से पौष मास में अन्न के भावों में गिरावट आयेगी।

मास व्यापारिक फल–2 नवम्बर–बुध स्वाति में रात्रि 23।22 पर आठ दिन में किसी स्थान पर थोड़ी वर्षा होगी। 3 नवम्बर–शुक्र कन्या में प्रातः 7।30 पर, मंगल कन्या में प्रातः 8।08 पर, बुधास्त पूर्व दिशा में दोपहर 12।05 पर सोना, गेहूं, गुड़, मिर्च, मजीठ, चन्दन, रेशमी वस्त्र, लाल वस्त्र तथा लाल रंग की सभी वस्तुओं में तेजी बनेगी। अलसी में फेरबदल होगा। रुई, चांदी में घटा-बढ़ी चलेगी। रुख गिरावट का रहेगा। 27 दिनों में रुई में कुछ मंदा आयेगा। घी में 30 दिनों में मंदा आयेगा। 3 दिनों बाद अफीम में एक बार मंदा आयेगा।

7 नवम्बर–सूर्य विशाखा में रात्रि 1।26 पर चांदी, चावल, रस, गुड़, खांड, रुई, सूत, कपास, गेहूं, जौ, चना, सरसों, तिल, अफीम, करेंसी तथा चांदी में तेजी बनेगी।

11 नवम्बर–बुध विशाखा में रात्रि 2।10 पर किन्हीं स्थानों पर खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। रुई में मंदा आयेगा। 12 नवम्बर–आज के विशाखा नक्षत्र में रुई में तेजी बनेगी। शुक्र हस्त में दोपहर 14।55 पर चांदी, चावल में मंदा रहेगा। अन्न, गुड़, खांड, शक्कर में घटा-बढ़ी रहेगी। सोना में साधारण तेजी बनेगी।

13 नवम्बर–शनि अस्त वृश्चिक राशि अनुराधा नक्षत्र में दोपहर 12।32 पर धान्यों की हानि होगी। 15 नवम्बर–रविवारी मूल नक्षत्र में रुई में तेजी बनेगी। 17 नवम्बर सूर्य वृश्चिक में रात्रि 00।03 पर, बुध वृश्चिक में प्रातः 07।30 पर सोमवारी वृश्चिक संक्रांति में रुई, कपड़ा, तांबा, तेल, चांदी तथा ऊनी वस्त्र, चौपाये महंगे होंगे। अन्न तथा मूंगा, मोती में गिरावट आयेगी। सोना के मूल्यों में स्थिरता रहेगी। रसकस, घी, तेल का संग्रह तीसरे महीने में लाभ देगा।

19 नवम्बर–बुध अनुराधा में प्रातः 9।54 पर, मंगल हस्त में रात्रि 22।28 पर धान्यों के उत्पादन में कमी रहेगी। 22 दिनों के अन्दर घी, गुड़, खांड, नमक तथा सभी प्रकार के अन्नों में तेजी आयेगी। 20 नवम्बर–सूर्य अनुराधा में प्रातः 07।24 पर- चांदी, चावल, सूत, मादक पदार्थ, गेहूं, जौ, चना, आदि अनाजों तथा करेंसी में तेजी बनेगी। सोना में गिरावट रहेगी।

24 नवम्बर–शुक्र चित्रा में दोपहर 12।37 पर सभी वस्तुओं सोना, चांदी, धान्यों आदि के भावों में स्थिरता रहेगी। 25 नवम्बर–भरणी नक्षत्र के योग से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी। रुई में मंदा रहेगा। 27 नवम्बर–बुध ज्येष्ठा में रात्रि 21।51 पर घी, ईख, शाली, चावल, रस में तेजी आयेगी। 28 नवम्बर–गुरु उ. फाल्गुनी नक्षत्र में रात्रि 20।49 पर उ. फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण से गुरु के गोचर में दाना, मोती तथा चांदी में मंदा रहेगा। 30 नवम्बर–शुक्र तुला में प्रातः 07।46 पर मादक पदार्थों में तेजी बनेगी।

दिसंबर मास

दिसम्बर 2015–मास का प्रारम्भ मार्गशीर्ष कृष्ण षष्ठी से होकर समापन पौष कृष्ण षष्ठी में होगा। पांच गुरुवार तथा पांच शुक्रवार युत मार्गशीर्ष मास में धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी। सोना, पीतल, सूत, कपड़ा, शक्कर, चावल में मंदा रहेगा। मालवा क्षेत्र के मादक पदार्थों में तेजी बनेगी। 10 तथा 11 दिसम्बर में यदि आकाश में बादल छाये रहे तो भूसा तथा अन्य पशु आहारों में तेजी रहेगी। वृश्चिक संक्रांति के दिन की वर्षा से पौष मास में अन्न के भावों में गिरावट आयेगी।

मास व्यापारिक फल–3 दिसम्बर–सूर्य ज्येष्ठा में मध्याह्न 11।47 पर सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, कपड़ा, मादक पदार्थ, गुड़, खांड, शक्कर, अलसी, पारा, हींग, अरण्डा, गूगल में तेजी आयेगी। रुई में मंदा आकर तेजी बनेगी। 04 दिसम्बर–बुध पश्चिमोदय वृश्चिक राशि ज्येष्ठा नक्षत्र में 07।37 पर कपास उत्पादन कम होगा। रुई, कपड़ा, धान्यों तथा चांदी में 15 दिनों में मंदा होगा। घी, तेल, अरण्डी, सरसों तथा धान्यों में तेजी बनेगी। अलसी घटा-बढ़ी में रहेगी।

6 दिसम्बर–शुक्र स्वाति में रात्रि 1100 पर, बुध धनु राशि मूल नक्षत्र में दोपहर 12101 पर वर्षा होगी। गुड़, खांड, शक्कर, सरसों, तेल, पशु आहारों एवं भूसी वाले धान्यों में तेजी बनेगी। अन्य सभी अन्नों में घटा-बढ़ी चलेगी, परन्तु गेहूं, जौ, चना में गिरावट आयेगी।

9 दिसम्बर–आज के विशाखा नक्षत्र में रुई में तेजी बनेगी। 12 दिसम्बर–मंगल चित्रा में दोपहर 14121 पर गेहूं, जौ, चना, चावल, चांदी, सोना, पीतल, तांबा में तेजी बनेगी। 15 दिसम्बर–बुध पूर्वाषाढ़ में रात्रि 4118 पर गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, मूंग, बाजरा, ग्वार, सोना, चांदी में मंदा आयेगा। गुड़, शक्कर, खांड, सरसों, अलसी, बिनौला, रुई, कपास में तेजी आयेगी।

16 दिसम्बर–सूर्य धनु राशि मूल नक्षत्र में दोपहर 14142 पर बुधवारी संक्रांति में कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा। धान्यों में घट-बढ़ चलेगी। सोना, चांदी, चावल, तिल, तेल, रुई, कपास, सूत, सफेद कपड़ा, अलसी, सरसों, नारियल, किराना, मादक द्रव्य मंहगे होंगे। लाल, नीली तथा काली वस्तुओं के संग्रह से दूसरे मास में लाभ होगा। शनि उदित वृश्चिक राशि अनुराधा नक्षत्र में रात्रि 20124 पर चावल, मूंग, लहसुन, सब्जी में तेजी आयेगी। रुई में गिरावट चलेगी। मार्गशीर्ष मास में उदित शनि से खाद्यान्नों में कमी आयेगी। चौपायों तथा गेहूं की हानि होगी।

17 दिसम्बर–शुक्र विशाखा में प्रातः 7115 पर बाजारों में उथल-पुथल तथा व्यापार में अनिश्चितता के कारण व्यापारियों में चिन्ता बनेगी। गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, मूंग, सूत, कपास, रुई में मंदा रहेगा। पशु आहारों एवं भूसी वाले धान्यों में घट-बढ़ रहेगी। 19 दिसम्बर–मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी का क्षय होने से अशुभ, धान्यों में तेजी का रुख रहेगा। 22 तथा 23 दिसम्बर–रुई में मंदा रहेगा।

24 दिसम्बर–मंगल तुला में प्रातः 5158 पर, बुध उ.षाढ़ में प्रातः 8158 पर सभी प्रकार के अन्नों में घट-बढ़ चलेगी। उड़द, मूंग, सूत, कपास, रुई में तेजी बनेगी। 25 दिसम्बर–शुक्र वृश्चिक में दोपहर 15114 पर सब धान्यों तथा रुई में मंदा आयेगा।

26 दिसम्बर–बुध मकर में रात्रि 23150 पर शनि के क्षेत्र का बुध सोना, चांदी आदि धातुओं तथा अन्न के भावों में समता बनाये रखने में मदद करेगा। रुई, गुड़, खांड, घी, तेल के भावों में मंदा आयेगा। 28 दिसम्बर–शुक्र अनुराधा में प्रातः 09129 पर, शनि ज्येष्ठा में दोपहर 15109 पर ज्येष्ठा के प्रथम चरण से शनि के गोचर में गुड़, खांड, शक्कर, चावल, नमक तथा क्षारीय पदार्थों में गिरावट आयेगी। रुई में तेजी बनेगी।

29 दिसम्बर–सूर्य पू.षा. में सायं 17101 पर तिल, तेल, सरसों, घी, मजीठ, गुड़, खांड, हल्दी, गुग्गल, चांदी, कपूर, अफीम, कपड़ा, ऊनी वस्त्र, सन में तेजी बनेगी।

जनवरी मास 2016

जनवरी 2016–मास का प्रारम्भ पौष कृष्ण सप्तमी से तथा समापन माघ कृष्ण सप्तमी में हुआ है। पौष मास पांच शनिवार युत है। मालवा क्षेत्र के मादक पदार्थों में गिरावट बनेगी। माघ मास में माघ कृ. प्रतिपदा की वृद्धि, शुक्ल पंचमी के क्षय तथा शनिवारी संक्रांति से राजनैतिक सरगर्मियां एवं अनावृष्टि से हानि योग। 3 तथा 18 जनवरी की पौषी नवमी तथा 5 जनवरी पौषी एकादशी में यदि पूर्व दिशा में बादल छाये रहे तथा गर्जे तो भूसा नष्ट होगा। पशु आहारों में कमी आयेगी।

मास व्यापारिक फल–5 जनवरी बुध वक्री 18135 पर, मकर राशि उ.षा. नक्षत्र में मंगल स्वाति में रात्रि 4134 पर सभी प्रकार के धान्यों में गिरावट आयेगी। तिल, सभी प्रकार के तेलों तथा रुई में तेजी बनेगी। चांदी में घटा-बढ़ी चलेगी, सोना साधारण मंदा रहेगा। 6 जनवरी–आज के विशाखा नक्षत्र में रुई में तेजी बनेगी। मादक पदार्थों में 05 दिनों में तेजी आयेगी। 8 जनवरी–शुक्र ज्येष्ठा में प्रातः 08150 पर, गुरु वक्री सिंह राशि में प्रातः 10110 पर सोना, चांदी, तिल, चावल, हींग, तेल, दूध, घी, रसकस, केशर, कपूर, रुई, सरसों तथा धातुओं में मंदा रहेगा। धान्यों तथा मादक पदार्थों में तेजी बनेगी।

9 जनवरी–बुध पश्चिमास्त मकर राशि उ. षाढ़ नक्षत्र में प्रातः 6152 पर पौषी अमावस्या में मूल नक्षत्र के योग से भूसा में दाम आधे तक गिर जायेंगे। शनिवारी अमावस्या से अन्न मंहगा होगा। मादक पदार्थों में तीन दिनों में तेजी बनेगी। रुई, चांदी में तेजी होकर फिर मंदा आयेगा। शेयर्स, हैसियन, बारादाना में गिरावट चलेगी। 15 दिनों में रुई में लगभग 10 से 15 रुपये की गिरावट आयेगी।

11 जन.–सूर्य उ.षा. में सायं 18157 पर उड़द, मूंग, चावल, गेहूं, गुड़, खांड, देशी शक्कर, घी, सरसों, तिल, तेल, चांदी, रुई, कपास, जूट, सूत, रेशम, चना, बांस, हल्दी, लाख, चपड़ा, पीपला मूल, मूंज में तेजी आयेगी। 14 जनवरी वक्री बुध धनु राशि में दोपहर 15102 पर मादक पदार्थों में मंदा होगा।

15 जनवरी–सूर्य मकर में रात्रि 01127 पर घी, तेल, रुई, तथा लाल वस्त्रों में तेजी आयेगी। धान्यों के भावों में घट-बढ़, रुख गिरावट का रहेगा। गुड़ तथा खांड के मूल्यों में स्थिरता रहेगी। गुड़ का संग्रह करने से दो मास के बाद लाभ होगा। 17 जनवरी–वक्री बुध पूर्वाषाढ़ में रात्रि 04119 पर गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, मूंग, बाजरा, ग्वार, सोना, चांदी में तेजी आयेगी। गुड़, शक्कर, खांड, सरसों, अलसी, बिनौला, रुई, कपास में गिरावट आयेगी। 18 जनवरी–आज के भरणी नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा।

19 जनवरी–आज कृतिका नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा परन्तु 1 मास में रुई की खेती की हानि से तेजी आकर मंदा होगा। सभी प्रकार के धान्यों में तेजी आकर मंदा बनेगा। सोना, सन, सूत में घटा-बढ़ी चलेगी। 20 जन.–वक्री बुध पूर्वोदय धनु राशि पू.षाढ़ नक्षत्र में 02128 पर रुई में 25 दिनों तक तेजी चलेगी। चांदी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी आयेगी। सोना में मंदा। गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तिल तेल, सरसों, लाल मिर्च में तेजी आयेगी।

24 जनवरी–मादक पदार्थों में तीन दिनों में तेजी आयेगी। सूर्य श्रवण में रात्रि 21116 पर-सभी प्रकार के अन्नों में विशेषकर गेहूं में तेजी आयेगी। उड़द, मूंग, जूट, सूत, कपास, जौ, चावल, बांस, सरसों, गुड़, खांड, चीनी, अफीम, अलसी, रुई, कपास, जौ, सन, सोना, चांदी आदि धातु तथा करेंसी मंहगी होगी। 26 जनवरी–बुध मार्गी रात्रि 3120 पर धनु राशि पू.षा. नक्षत्र में ईख, चावल में तेजी आयेगी।

30 जनवरी–शुक्र पूर्वाषाढ़ में रात्रि 02138 पर, मंगल विशाखा में प्रातः 11105 पर सोंठ, मिर्च, पीपल, अदरक खरीदने से चौथे मास में लाभ की सम्भावना बनेगी। खाद्यान्नों की अनुपलब्धता से अन्न महंगे होंगे। रुई, कपास, वस्त्र तथा गेहूं में तेजी बनेगी। उड़द, मूंग, तिल, तैल, सरसों, गुड़, शक्कर, खांड, खार तथा नमक में मंदा आयेगा।

फरवरी मास

फरवरी 2016–फरवरी मास का प्रारम्भ माघ कृष्ण अष्टमी से तथा समापन फाल्गुन कृष्ण षष्ठी में हुआ है। फाल्गुन मास पांच रवि तथा पांच सोमवार युत से सोना, अलसी, गुड़ में तेजी बनेगी। मैदा, घी, तेल तथा धान्यों में मंदा आयेगा। अगले मास अर्थात माघ मास की शनिवारी संक्रांति से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी रहेगी।

मास व्यापारिक फल–2 फर.–रुई में तेजी चलेगी। 5 फरवरी बुध उ. षाढ़ में रात्रि 20127 पर अन्न उत्पादन श्रेष्ठ रहने से धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी। 7 फर.–सूर्य धनिष्ठा में रात्रि 0126 पर मूंग, मसूर, सोना, चांदी, रुई, चावल, जौ, गेहूं, सूत, सन, गुड़, खांड, जूट, तिलहन, अलसी, नील में तेजी।

9 फरवरी–बुध मकर में रात्रि 03108 पर, शुक्र उ.षा. में रात्रि 22103 पर सोना, चांदी आदि धातुओं तथा अन्न के भावों में स्थिरता रहेगी। गुड़, शक्कर, खांड, घी, तेल अलसी, सरसों, अरण्डी में मंदा आयेगा। आज की वर्षा से चंदन, खस, कपूर, इत्र तथा अन्य सुगंधित वस्तुओं में तेजी। रुई में घटा-बढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 12 फरवरी–शुक्र मकर राशि में दोपहर 14149 पर कृषि की हानि होगी। 20 दिनों में अन्न तथा रसों में तेजी आयेगी।

13 फरवरी–सूर्य कुंभ में प्रातः 14।25 पर गुड़ तथा लाल रंग की वस्तुओं का उत्पादन संतोषजनक रहेगा। शनिवारी संक्रांति में भारवाहक पशुओं हाथी, घोड़ा तथा ऊंट, गुड़, खांड, शक्कर, रुई, नमक, तेल तथा तिलहनों में तेजी बनेगी। अफीम तथा अन्नों में मंदा रहेगा। इस दिन की वर्षा से पशु आहारों तथा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होगी। भैंसों का संग्रह लाभ देगा।

14 तथा 15 फरवरी–रुई में मंदा रहेगा। 17 फरवरी–बुध श्रवण में प्रातः 8।08 पर गुड़, शक्कर, खांड, चावल, धान, अलसी, चना, गेहूं में तेजी आयेगी। 20 फरवरी–सूर्य शतभिषा में 4।54 पर, शुक्र श्रवण में सायं 17।02 पर गेहूं, चना, सूत, कपास, जूट, सन, कपड़ा, घी, सरसों, अलसी, अरण्डी, तिल, तेल, द्राक्ष, जायफल, हींग, छुवारा, सोंठ, हल्दी खार तथा नील में तेजी आयेगी। चांदी, सोना, गोला, गुड़, शक्कर, खांड में घट-बढ़ चलेगी। उड़द, मूंग में मंदा आयेगा। रुई में मंदा आकर तेजी बनेगी।

26 फरवरी–सायं 16।55 पर धनिष्ठा के बुध में सोना, चांदी, पीतल, जस्ता तथा धान्यों में गिरावट आयेगी। रुई में घटा-बढ़ी चलेगी। चावल में तेजी बनेगी। मादक पदार्थों में तीन दिनों में तेजी आयेगी।

28 फरवरी–मंगल अनुराधा में 15।23 पर खाद्यान्नों में सुधार होगा। गेहूं, लाल मिर्च, लाल चन्दन तथा लाल रंग की सभी वस्तुओं में तेजी बनेगी। 29 फरवरी–रुई में तेजी बनेगी।

मार्च मास

मार्च 2016–मास का प्रारम्भ फाल्गुन कृष्ण सप्तमी से तथा समापन चैत्र कृष्ण सप्तमी में हुआ है। फाल्गुन मास पांच मंगल तथा पांच बुधवार युत है। रुई चांदी में घट-बढ़ के बाद तेजी बनेगी। घी, गुड़, खांड में तेजी रहेगी। मादक पदार्थों में मंदा रहेगा। **चैत्र** मास में वक्री हुए शनि तथा मंगल अन्नों में तेज करेंगे। संग्रह कर बेचने वालो को चार गुणा तक लाभ होगा।

मास व्यापारिक फल–2 मार्च–बुध कुंभ में रात्रि 00।12 पर, शुक्र धनिष्ठा में मध्याह्न 11।47 पर, शनि के क्षेत्र में गोचर कर रहे बुध की अवधि में सोना, चांदी आदि धातुओं तथा अन्न के भावों में अधिक घट-बढ़ न होने से प्रायः ही स्थिरता रहेगी। मूंग, मोठ, अरहर, ज्वार, रुई, कपास, चावल, उड़द, सुपारी, सरसों, सोंठ, लाख तथा चमड़े में तेजी बनेगी।

5 मार्च–सूर्य पू.भाद्रपद में प्रातः 11।16 पर सोना, चांदी, गेहूं, चावल, चना, उड़द, ज्वार, बाजरा, गुग्गल, पीपल, गुड़, खांड, देशी शक्कर, घी, सरसों, तिल, तेल, रुई, कपास, सूत तथा रेशम में तेजी होगी। 6 मार्च–रात्रि 2।44 पर शतभिषा के बुध में खाद्यान्नों की अनुपलब्धता रहेगी। अन्न में कुछ स्थानों पर तेजी तथा अन्य स्थानों पर भावों में स्थिरता रहेगी।

9 मार्च–बुधवारी प्रतिपदा से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी आयेगी। 13 मार्च–आज के भरणी नक्षत्र में रुई में मंदा रहेगा। शुक्र शतभिषा में प्रातः 6।25 पर, बुध पू.भा. में रात्रि 19।29 पर अन्न पदार्थों की उपलब्धता में कमी रहेगी। घी, तेल, गुड़, शक्कर, खांड, तिल, तेल, घी, सरसों, अलसी, अरण्डी, रुई, कपास, चावल तथा पशुओं में तेजी रहेगी। सोना, चांदी, सूत में घट-बढ़ रहेगी। लोहा, तांबा में गिरावट आयेगी। मादक पदार्थों का सेवन करने वालों को कष्ट रहेगा।

14 मार्च–रुई में मंदा रहेगा। मास की सोमवारी मीन संक्रांति से व्यापार में वृद्धि होगी। किराना, तिलहन, रसकसों तथा अनाजों में तेजी आयेगी। नमक, तिल, तेल में तेजी का प्रमाण अधिक रहेगा। मूंगा, मोती, अफीम में मंदा आयेगा। रसकस, घी तथा तेल का संग्रह तीसरे महीने में लाभ देगा। बुध पूर्वास्त कुंभ राशि शतभिषा नक्षत्र में 12।01 पर चांदी में घटा-बढ़ी चलेगी। रुख गिरावट का रहेगा। रुई पहले तेज बीच में मंदी तथा बाद में तेज होगी। गेहूं, सोना, अलसी में तेजी रहेगी। घी, धान्यों में 30 दिनों में मंदा आयेगा। 3 दिनों बाद अफीम में एक बार मंदा आयेगा।

17 मार्च–सूर्य उ.भाद्रपद में रात्रि 19।38 पर सोना, चांदी, रुई, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूं, तेल, धान्य तथा रसों में तेजी बनेगी।

19 मार्च–रात्रि 04।37 पर बुध के मीन से गोचर में रुई, कपास, बिनौला में तेजी बनेगी। गेहूं, चना, गुड़, शक्कर तथा मादक पदार्थों में मंदा रहेगा। सोना, चांदी तेज होकर मंदे होंगे। 15 दिनों में लौंग, मेथी, अलसी, रुई तेज होगी। 20 मार्च–बुध उ.भा. में रात्रि 22।07 पर चांदी में घट-बढ़ चलेगी। खाद्यान्नों के भावों में अधिक फेर-बदल नहीं होने से गुड़, खांड, रुई, धान्य एवं चावलों के भावों में समता रहेगी।

24 मार्च–शुक्र पू.भा. में रात्रि 1।11 पर रुई में तेजी रहेगी। गेहूं, जौ, चना आदि अन्नों में गिरावट रहेगी। 25 मार्च–दोपहर 15।31 पर वृश्चिक राशि, ज्येष्ठा नक्षत्र में वक्री हुए शनि से खाद्यान्नों की कमी से अन्नों में तेजी बनेगी। संग्रह कर बेचने वाले लाभ उठायेंगे। शनि वक्री होते समय मंगल के वृश्चिक से गोचर के प्रभाव से मोती आदि रत्नों, सोना, चांदी आदि धातुओं में गिरावट आयेगी। लौंग, सुपारी, नारियल, तिल, तेल में घटा-बढ़ी चलेगी। घोड़ा, अफीम, नील, नीला थोथा, पतंग, हल्दी, जीरा, धनियां, मेथी, द्राक्ष, खजूर, घी, गेहूं, मूंग, ज्वार आदि मंहगे होंगे।

27 मार्च–रुई में तेजी रहेगी। बुध रेवती में दोपहर 14।19 पर चांदी, गुड़, खांड, घी, तेल, सरसों, तिल तथा तिलहनों में मंदा आयेगा। अफीम, लाल मिर्च, लौंग, मजीठ, लाल चन्दन तथा लाल रंग की वस्तुओं, गेहूं, गेरू, कुमकुम, कपूर, केसर में तेजी बनेगी। 28 मार्च–रुई में तेजी बनेगी। 29 मार्च–चैत्र कृष्ण षष्ठी की वृद्धि से धान्यों में मंदा रहेगा।

31 मार्च–सूर्य रेवती में प्रातः 06।33 पर रुई, चावल, चांदी, नमक, सरसों, अलसी, लाख, गेहूं, जौ, चना, अरहर, मूंग, उड़द, लहसुन, सब्जी, फल, फूल, सुगन्धित पदार्थों तथा चौपायों में तेजी आयेगी। जलीय उत्पादों, मोती, रत्न, फल-फूल, सुगंधित वस्तुओं तथा नमक आदि की हानि होगी।

अप्रैल मास

अप्रैल 2016–1 अप्रैल शुक्र मीन में रात्रि 3।22 पर, बुध पश्चिमोदय मीन राशि रेवती नक्षत्र में 4।37 पर रुई 25 दिनों में तेज होगी। धान में मंदा आयेगा। कपड़ा, धान्यों तथा चांदी में 15 दिनों में मंदा होगा। घी, तेल, अरण्डी, सरसों तथा धान्यों में तेजी बनेगी। अलसी घटा-बढ़ी में रहेगी।

3 अप्रैल–बुध मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में रात्रि 3।44 पर, शुक्र उ.भा. में रात्रि 20।07 पर सोना के मूल्यों में समता रहेगी। चांदी, ईख, गुड़, खांड, शक्कर, रुई, सूत, सन, गोला, घी, सरसों तथा अन्य तिलहनों में मंदा आयेगा। गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मोंठ, मूंग, अदरक, हल्दी, प्याज, लहसुन आदि कृषि उत्पादों तथा चौपायों में तेजी आयेगी। दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों, घी में घट-बढ़ चलेगी। मोती, तिल, तेल में मंदा आकर तेजी बनेगी।

कमोडिटी मार्केट का उपरोक्त संभावित रुख ग्रह गोचर पर आधारित है तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के दिया जा रहा है। बाजार स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त वैश्विक एवं स्थानिक राजनैतिक वातावरण, केन्द्र तथा प्रदेशों सरकार की नीतियों आदि पर निर्भर करता है। बाजार में काम करने व्यापार करने से पूर्व बाजार का आकलन कर लेना हितावह है। ज्योतिषीय आधार पर किये गये व्यापार से होने वाले लाभ अथवा हानि के लिये लेखक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं होंगे।

बाजार की वार्षिक, अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट संवत् 2072 के लिये लेखक से निम्न पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।

लेखकः प्रवीन कुमार जैन
सी-82, वल्लभ नगर,
उमा नगर सोसायटी के सामने, नोविनो तरसाली रोड,
वड़ोदरा (गुजरात) पिन-390009
मो. 09574337962
E-mail : pmummy@gmail.com

 पृष्ठ 17 का शेष

योग से आपको काफी चिंता बनेगी। तथा पद की गरिमा का भी दुरुपयोग जैसे आरोपों से मानसिकता में असह्य योग बनेगा। ता. 10.5.15 से 27.9.15 तक दुर्घटना योग भी। सावधान।

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास जी मोदी—भारत सरकार आपको यह वर्ष अग्नि परीक्षा तुल्य रहेगा। पार्टी के अंदर कुछ रोष व्याप्त होगा, जिसे आप सहन नहीं कर पाएंगे। अक्टूबर से दिसंबर 2015 व जनवरी 2016 अत्यंत कठिनता से गुजरेंगे। छद्मवेशी योग तक भी बन सकता है। सावधान! देश-विदेश एवं जनता में ख्याति विशेष बनेगी। धार्मिक कृत्यों के प्रति आपका झुकाव अच्छा रहेगा। दक्षिणी भारत में नवीन कार्य योजना से स्थानीय पार्टियों में विद्रोह बढ़ेगा। पारिवारिक विवाद न्यायालय तक पहुंचाने का घटक बनेगा।

स्मृति ईरानी—यह वर्ष आपके लिए पारिवारिक दृष्टि से अच्छा नहीं रहेगा। पार्टी का कार्य करते-करते काफी अशोभनीय घटनाओं से गुजरना पड़ सकता है। शैक्षिक दृष्टि से भी विवाद यत्र-तत्र आपका बनता रहेगा। हवाई दुर्घटना या अन्य अशोभनीय घटना से सावधान। दिनांक 24.6.2015 से 30.10.2015 तक सावधान, शत्रुता बढ़ेगी।

पूर्व राष्ट्रपति महामहिम प्रतिभा देवी सिंह पाटिल—यह वर्ष परिवारिक दृष्टि से चिंता दायक। स्वयं को चोट या गिरने का योग बनेगा। प्राकृतिक आपदा से भी भौतिक हानि का योग। लंबी यात्रा नहीं करें। ता. 17.5.2015 से 20.9.2015 तक विशेष संकट योग बनेगा।

पूर्व राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम—यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से चिंता जनक रहेगा। शोध पूर्ण वैज्ञानिक कार्य से भारत का वर्चस्व आपके द्वारा बढ़ेगा। कहीं विस्फोटक स्थिति से हानि। बचाव रखें। ता. 10.5.2015 से 24.10.2015 तक कुछ अशोभनीय स्थिति तथा रोग बाधा का योग बनता है।

श्रीमती सोनिया गांधी अध्यक्ष (रा.कां.आई.)—आपको इस वर्ष शारीरिक दृष्टि से मानसिक विकृति एवं हृदय रोग जैसी अचानक स्थिति बनेगी। पार्टी के नेतृत्व में भी अपमान जनक घटकों से मुकाबला करना पड़ेगा। पार्टी नेतृत्व का शायद त्याग भी कर सकती हैं। ता. 16.5.15 से 20.10.15 तक स्वास्थ्य विशेष चिंतादायक। लंबी यात्राएं नहीं करें।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी—इस वर्ष मानसिक दृष्टि से वर्ष ठीक नहीं रहेगा। पुराने विवादों से घिर सकते हैं। परिवार में कुछ अशुभता का योग भी। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। गुरु ग्रह आध्यात्मिकता की ओर बढ़ाएगा। ता. 13.6.15 से 23.9.2015 तक का समय प्रतिकूल चलेगा।

श्री राहुल गांधी—यह वर्ष राजनीतिक दृष्टि तथा पार्टी कार्य में गौण (नगण्य) जैसा रहेगा। आपका वर्चस्व घटेगा। संगठनात्मक कार्य शैली में विफलता योग। परिवार में भी कटुता, वाहन से सावधान। ता. 10.5.15 से 20.8.15 तक दुर्घटना योग या शत्रु पक्ष द्वारा अशुभ कार्य से सावधान।

श्रीमती प्रियंका बढेरा—यह वर्ष आपके लिए चुनौती दायक रहेगा। राजनीति में हानि भी, फिर भी पद प्राप्ति योग है। कांग्रेस में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। वैवाहिक स्थिति में तनाव बनेगा। निजी वाहन से यात्रा में दुर्घटना स्वयं चालक नहीं बनें तो शुभ रहेगा। ता. 16.4.15 से 20.8.15 तक सावधान। अशोभनीय घटना योग भी।

श्रीमान् अटल बिहारी वाजपेयी जी (पूर्व प्रधानमंत्री)—यह वर्ष आपके लिए अशोभनीय। स्वास्थ्य हानि सहित बीमारी से ग्रसित होकर चिंतादायक रहेगा। चिकित्सालय का योगदान चलेगा। ता. 10.5.15 से 22.10.15 तक आपको शारीरिक विशेष कष्ट। राजनीतिक कार्य तो संन्यास जैसा ही रहेगा। परिवार में भी चिंता दायक योग बनेगा।

श्रीमती सुषमा स्वाराज जी (विदेश मंत्री)—यह वर्ष आपको मान सम्मान बढ़ाएगा। छद्मवेशी योग से बचें। हवाई दुर्घटना का योग तीन बार बनेगा। विपक्षी वर्ग लज्जित भी कर सकते हैं। विदेशों में आपको मान प्रतिष्ठा वर्चस्व की प्राप्ति होगी। ता. 17.5.15 से 28.9.15 तक स्वयं की पार्टी से अशुभ बातें सुनने को मिलेंगी। स्वयं के परिवार में अशुभ घटना भी घटेगी।

श्रीमती बसुन्धरा राजे सिंधिया (मु.मं.रा.सरकार)—यह वर्ष आपके कार्यकाल का संकट दायक प्रतीत होगा। जनता का विश्वास न्यून बनेगा। मंत्रिमंडल में परिवर्तन की पहल कई बार करनी पड़ सकती है। धार्मिक स्थलों में गुरु ग्रह से जीर्णोद्धार के साथ व्यवस्था भी अच्छी करने का योग है। स्वयं का स्वास्थ्य ता. 13.5.15 से 29.10.15 तक गड़बड़ होगा। हवाई यात्रा में भी बीमारी योग। राजनीति में आपकी छवि अच्छी नजर आएगी। पूजा-अर्चना से लाभ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी—शनि आठवां मारक तुल्य योग करता है। गुरु चौथा परिवारिक गतिविधियों में भी अशुभदायक योग। राजकीय मान सम्मान प्राप्त होगा। हृदय रोग, घात संबंधी योग ता. 10.5.15 से 28.9.15 तक बनेगा। वाहन से भी दुर्घटना योग बनेगा। सावधान!

श्री राजनाथ सिंह (गृहमंत्री भा. सरकार)—आपको यह वर्ष चुनौती पूर्ण शाबित होगा। विदेशी शक्तियों से सामना एवं भारतीय अश्लीलता तथा न्यायालय प्रकरणों के निपटारों से मानसिक अशांति से स्वास्थ्य खराब होगा। गृह मंत्रालय में नियंत्रण की कमान में कुछ त्रुटियों से कर्मचारी भी परेशान। छद्मवेशी से बचकर रहें। ता. 20.5.15 से 24.9.15 तक संकट योग। दुर्घटना दायक योग भी बनेगा।

माननीय श्री अशोक गहलोत जी—यह वर्ष आपके लिए घटनात्मक रूप से ऐतिहासिक रहेगा। पार्टी में नेतृत्व की भूमिका घटेगी। स्वयं का स्वास्थ्य भी प्रतिकूल होगा। लोक प्रियता में वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष से बचाव रखें। ता. 17.5.15 से 30.9.15 तक वाहन एवं सभा व्याख्यान में सावधानी रखें तो शुभ होगा।

सुश्री मायावती जी—यह वर्ष आपके लिए अच्छा एवं लाभदायक प्रतीत होगा। काफी नेता आपसे संपर्क करके अपना अभिमत प्राप्त कर पार्टी में आने का प्रयास करेंगे। क्षेत्रीय रूप में मान सम्मान भी बढ़ेगा। धोखा से बचें। ता. 10.5.15 से 23.11.15 तक वाहन एवं सभाओं से सावधानी रखें तो अच्छा रहेगा।

श्री मुलायम सिंह यादव जी—इस वर्ष आप पर आरोप प्रत्यारोप बनाने का योग है। पुराना किस्सा रहस्य खुलने का योग भी है, पारिवारिक संकट भी। गुरु ग्रह के कारण धार्मिक आयोजन भी होगा। दिनांक 20.6.15 से 30.10.15 तक संकट ज्यादा रहेगा। सावधान। स्वयं की पार्टी में दरारें जैसा वातावरण भी बनेगा।

श्री एम. करुणानिधि—इस वर्ष राजनीति का लाभ प्राप्ति का शुभ योग बनेगा। विरोधी नेता मिलकर चलने का वादा करके सम्मिलित होंगे। वर्चस्व एवं सम्मान भी मिलेगा। अनावश्यक खर्चा बढ़ेगा है। दुर्घटना का योग ता. 10.5.15 से 26.9.15 तक बनता है।

सुश्री जयललिता जी—शृंगार सामग्री का शौक शुक्र के कारण बढ़ेगा। महिलाओं में वर्चस्व भी बढ़ेगा। इधर-उधर के बिखरे नेताओं से पुनः सम्पर्क एवं संगठन के प्रति तत्परता से लाभ प्राप्त करेंगी ता. 16.5.15 से 27.9.15 तक स्वास्थ्य में गड़बड़। वाहन से भी सावधानी बरतने से श्रेष्ठ रहेगा।

श्री एम. चन्द्र बाबू नायडू—आपका इस वर्ष स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा। भाग-दौड़ में गिरने का या चोट का योग बनता है। छद्मवेशी योग से सावधान। ता. 22.6.15 से 23.10.15 तक चिंतादायक योग बनेगा। मित्र वर्ग भी धोखा दे सकते हैं।

डॉ. मुरली मनोहर जोशी–इस वर्ष गुरु+मंगल+बुध से आपकी छवि चमकेगी। परिवार में मांगलिक कार्य होगा। मान-सम्मान के साथ देश-विदेश भ्रमण योग भी बनेगा। ता. 20.6.15 से 12.9.15 तक न्यायालय संबंधी प्रकरण का उद्भव योग बनेगा। सावधान। प्राकृतिक आपदा से भी हानि।

श्रीमान् लालू प्रसाद यादव जी–आपकी पार्टी के सदस्यों से विद्रोह योग। आपको अचानक शिर शूल या हृदय पीड़ा योग बनता है। पार्टी का वर्चस्व बनाए रखने बावत नवीन सदस्यता अभियान चलाया जाना चाहिए। ता. 15.5.15 से 28.9.15 तक संकट दायक योग रहेगा।

श्रीमान् रामविलास पासवान जी–यह वर्ष मांगलिक खर्चा वाला तथा नया व्यवसाय कारक रहेगा। चोरी-चपाट के योग से बचें। घर में अशोभनीय घटना का शिकार हो सकते हैं। ता. 20.6.15 से 30.9.15 तक संकट दायक योग बनेगा। राजनीतिक मोड़ में कुछ विवाद भी बनकर छवि बिगाड़ सकते हैं।

श्रीमान् शिवराज पाटिल जी–चुनावी कार्यों में हानिदायक योग, शत्रु पक्ष से बचकर रहें तो शुभ। छदमवेशी या विस्फोटक घटना का चक्र भी चल सकता है। शासकीय कार्यों में बाधा आएगी। कार दुर्घटना योग ता. 17.5.15 से 22.9.15 तक बनेगा। राजनीतिक जीवन में भी गुप्तचरों द्वारा परेशानी दायक योग बनेगा।

सुश्री उमा भारती–इस वर्ष राजा शनि तथा मंत्री भौम के योग से जन सेवा का लाभ श्रेष्ठ मिलेगा तथा न्याय पूर्ण कार्य प्रणाली से जनता में विश्वास बढ़ेगा। प्राकृतिक या कृत्रिम उपद्रव की आप शिकार (हानि) होने का संकेत बनता है। ता. 22.5.15 से 20.9.15 तक संकट दायक योग। छदम वेशी से सावधान रहे।

श्री पी. चिदम्बरम्–यह वर्ष आपके लिए अग्नि परीक्षा तुल्य रहेगा। कही खाद्य भोज में स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। हृदय घात योग का संकेत। शील भंग योग बनता है। ता. 30.5.15 से 27.11.15 तक का समय प्रतिकूल रहेगा। पशुओं से भी सावधान।

श्रीमती शीला दीक्षित–कांग्रेस में आपकी शाख कुछ न्यून बनेगी। आपका मौन साधन योग रहे तो शुभदायक स्वास्थ्य की गड़बड़ी ज्यादा बनती है। ता. 16.6.15 से 20.10.15 तक कार दुर्घटना योग। गुप्तचरों द्वारा घर की तलाशी-बर्बादी जैसा योग।

श्री अमिताभ बच्चन–इस वर्ष से स्वास्थ्य गिरेगा। विज्ञापन एजेंसियों द्वारा लाभ ज्यादा प्राप्त होगा। न्यायालय संबंधी प्रकरण बनने का योग है। ता. 16.5.15 से 26.9.15 तक चिंतादायक योग संकट विशेष स्वास्थ्य हानि योग। चोट दुर्घटना का योग भी।

श्रीमती मेनका गांधी–इस वर्ष आपको अच्छा अवार्ड प्राप्ति योग बनेगा। मगर संतान पक्ष से चिंता, दुर्घटना योग से परेशानी बनेगी। कार्य शैली जन हित में आपकी सराहनीय होगी। ता. 17.5.15 से 28.9.15 तक शत्रु पक्ष से बच कर कार्य करना ठीक रहेगा।

श्री अन्ना हजारे जी–इस वर्ष आपको कष्टदायी योग। अंतिम समय भी आ सकता है। देश में आंदोलनों में विफलता से सदमा भी लग सकता है। ता. 18.5.15 से 30.10.15 तक चिंता बाधा। चोट एवं गिरने का योग भी।

श्री टोनी ब्लेयर (ब्रिटेन)–इस वर्ष स्वास्थ्य बिगड़ेगा। स्त्री वर्ग से आर्थिक हानि योग। गुप्तचर गोपनीय अभिलेख में टटोल सकते हैं। ता. 22.5.15 से 13.11.15 तक हवाई दुर्घटना में बाल-बाल बचने का योग।

श्री सचिन तेंदुलकर (क्रिकेटर)–राजनीतिक हालात में वर्ष 2019 से 22 तक सुधार बनेगा। वर्तमान में धीरे-धीरे वर्चस्व बढ़ेगा। ता. 20.5.15 से 30.9.15 तक संकट दायक योग। सावधान।

सुश्री किरण बेदी–इस वर्ष शनि+मंगल+शुक्र आपको शारीरिक दृष्टि से कमजोर करेंगे। नियंत्रण कार्य में शीक्षणता (धीमीगति) का योग। ता. 30.6.15 से 20.10.15 तक सावधान-बाहर भ्रमण में न जाएं। आप पार्टी द्वारा धोखा भी हो सकता है।

राष्ट्रीय संत श्री मोरारी बापू–इस वर्ष आपकी मिशन का लाभ सर्वत्र देश-विदेश में चलेगा। लेकिन शनि+मंगल+शुक्र के कारण स्वास्थ्य में गिरावट या अशोभनी घटना का योग भी है। कथा कार्यक्रमों में भगदड़ों से अशांति का वातावरण बना रहेगा। तारीख 17.6.15 से 30.9.15 तक चोट, बीमारी या अशोभनीय घटना योग।

श्री नितिन गडकरी जी–यह वर्ष आपके लिए विवाद युक्त रहेगा। झगड़ा विवाद में गुप्तचरों के द्वारा पीड़ा योग। कारागार तक की स्थिति भी शनि की साढ़ेसाती से बनने का योग रहेगा। ता. 10.5.15 से 30.8.15 तक विशेष संकट दायक रहेगा। शत्रु पक्ष से बचें। राजनीतिक संकट का सामना करना पड़ सकता है।

श्री वरुण गांधी– यह वर्ष आपके लिए प्रगति दायक रहेगा। संगठन संबंधी दायित्व का लाभ मिल सकता है। हवाई या कार दुर्घटना का योग ता. 13.5.15 से 30.9.15 तक बनेगा। सामाजिक सेवा के योग से वर्चस्व बढ़ेगा। विदेशी यात्रा योग में स्वास्थ्य गड़बड़ होगा।

श्री अरविन्द केजरी वाल–आपको यह वर्ष उठा-पटक के रूप में ही साबित होगा। पार्टी में कुद छदमवेशीयों के कारण हानि का योग बनेगा। ता. 10.5.15 से 18.9.15 तक चिंतादायक योग।

क्रिकेट खेल का भविष्य–भारत वर्ष के लिए क्रिकेट का खेल हानि का सौदा साबित हो सकता है। ता. 13.5.15 से 30.9.15 तक टीम गठन आर.सी.ए. में विवाद जनक स्थिति बनेगी।

चुनाव स्थिति–भारतीय संसद का कार्यकाल श्रेष्ठ रहेगा तथा जनहित में अनेक निर्णय होंगे। प्रांतीय एवं क्षेत्रीय चुनावों में स्थानीय राजनीतिक दलों का वर्चस्व बढ़ेगा। काला धन वापसी की प्रक्रिया में सरकार सतर्क रहकर चुनौतियां स्वीकार करते हुए सफलता की स्थिति में पहुंच सकती है। राष्ट्रपति का अभिभाषण भी वर्तमान सरकार के लिए प्रेरणादायी रहेगा। कुछ छदमवेशी गतिविधियां संसद में बनने का योग भी शनि ग्रह राजा के प्रभाव से बनेगा। सावधानी बरतें। छोटी-छोटी पार्टियों द्वारा कार्यगत की स्थिति में विद्रोह करेंगे।

भाजपा का वर्चस्व–संगठन से केन्द्रीय सरकार बनेगी सत्य साबित हुई। नरेन्द्र मोदी आगामी चुनावों में अपने वर्चस्व के साथ देश का **प्रधान मंत्री पद शोभित करेंगे।** प्रेमिकाओं का तांडव छाएगा, जो चल रहा है एवं चलेगा। प्राकृतिक आपदाओं में केदारनाथ की घटना विश्व में दर्यनीय साबित हुई। होटलों में काला धंधा तथा सड़क हादसे में नेताओं की दुर्घटनाएं घटने का विवरण भी संसार चक्र में लिखा गया। हां, अपनी बड़ाई आप करना ठीक नहीं है? लेकिन आपका ध्यान स्मृत कराने बावत संकेत दे रहे हैं। सोनिया गांधी का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। बिगड़ा तथा ईलाज भी हुआ। प्रियंका का वर्चस्व बढ़ेगा, बढ़ा है। राहुल गांधी का जादू नहीं चलेगा तथा चोट योग, जो घटित हुई है। वर्षा का असामान्य करण से होना भी लिखा था। श्रीमती वसुंधरा जी राजे का वर्चस्व बढ़ेगा। मुख्यमंत्री बनेंगी व्यक्तिगत भविष्य बोध में बताया गया है। नृशंश हत्याएं। पुलिस की उदासीनात, जनता में बेरोजगारी समस्या की स्थिति का संकेत भी पढ़ा होगा। राष्ट्रीय कांग्रेस की घिनौनी हार भी पूर्व पंचांगों में तथा इस वर्ष 2072 के पंचांग में दर्शायी गई थी। दक्षिण भारत में स्थानीय पार्टियों का वर्चस्व, तेलंगाना राज्य की घोषणा करना केन्द्र सरकार की तत्कालीन सरकार से की गई गुजारिश प्रस्ताव सत्य शाबित हुआ। तकनीकी शिक्षा का विकास संबंधी, निजी विधायकों का वर्चस्व बढ़ेगा। वैदिक विद्या का प्रचार-प्रसार भी शुभ दायक जैसी वाणी की सत्यता प्रतीत हुई है। अतः यह सशक्त सटीक भविष्य वाणी वाला राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भविष्य बोध का परामर्श के साथ खरी कसौटी का प्रामाणिक पंचांग है। इसे पढ़ें और जाने आगे क्या होगा। इस वर्ष 2072 के पंचांग की दैवज्ञ दृष्टि एवं संगार चक्र में।

शेयर बाजार वर्ष 2015 ई.

लेखकः
श्री प्रवीन कुमार जैन

गत् वर्ष 2014 के शेयर मार्केट का आकलन करते हुए हमने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि 'रोलर कॉस्टर' की भांति कभी ऊपर तो कभी नीचे चलते शेयर बाजार स्थिरता की ओर जायेगा। ऐसा ही हुआ। बाजार में तीन-तीन, चार-चार महीनों की स्थिरता के बाद परिवर्तन हुआ। शेयर मार्केट संबंधी इस प्रकार का आकलन अन्य किसी पंचांग अथवा जंत्री में प्रकाशित नहीं हुआ। इस वर्ष के लिए ग्रहों का संकेत है कि 11 अगस्त तक शेयर बाजार में गिरावट चलेगी। परन्तु इसमें विशेषता है कि कुल 29 गिरावट के दिनों के योगों में से कार्यकारी दिवसों में 19 तथा छुट्टियों के दिनों में 10 अवसर बन रहे हैं।

वर्ष 2015 के लिए प्रस्तुत श्री बापूधाम जंत्री में शेयर बाजार का आकलन उन्हीं ज्योतिषीय सिद्धांतों, मतों एवं परंपरा तथा ग्रह गोचर पर आधारित है। जिनकी गणना के आधार पर हमारा शेयर बाजार का आकलन पूर्व में बहुचर्चित, सर्वत्र प्रशंसित तथा सराहनीय रहा है। विभिन्न संचार माध्यमों से दिन प्रतिदिन अनेक पाठकों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। पूर्व की भांति इस वर्ष भी हम इस आलेख में वर्ष के प्रत्येक मंगलवार के लिए शेयर बाजार का आंकलन प्रस्तुत कर रहे हैं। तो उसका कारण जैसा कि हम पूर्व में भी कह चुके हैं, मात्र इतना है कि अनेक विद्वानों ने शेयर बाजार का लग्न वृश्चिक निर्धारित किया है। अपने संशोधन तथा शोध के उपरांत हम भी इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि मंगल ग्रह का शेयर बाजार पर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हमारा प्रयास सदैव शोधात्मक कार्य को प्रस्तुत करना रहा है ताकि वह अनेकानेक प्रकार से विद्वान जनों के लिए न केवल उपयोगी हो वरन् विचारोत्तेजक भी हो तथा विद्वान पाठकों को इस दिशा में और भी अधिक परिष्कृत रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

शेयर बाजार में गिरावट–2 जनवरी शुक्रवार शेयर बाजारों में गिरावट करेगी। 04 फरवरी बुधवार शेयर बाजार में घट-बढ़ के बीच गिरावट का रुख बनेगा। 6 फरवरी शुक्रवार शेयर बाजार में घट-बढ़ के बीच मामूली से गिरावट का रुख रहेगा। 18 फरवरी बुधवार शेयर बाजार में घट-बढ़ के बीच गिरावट का रुख रहेगा। 02 मार्च सोमवार शेयर बाजार में गिरावट बनी रहेगी। 03 मार्च मंगलवार शेयर बाजार में गिरावट बनी रहेगी। परन्तु टोबैको, रबर, बैंकिंग सैक्टर में तेजी चलेगी। 11 मार्च बुधवार शेयर बाजार में घट-बढ़ के मध्य गिरावट बनी रहेगी। 17 मार्च मंगलवार शेयर बाजार में साधारण तेजी के बावजूद गिरावट बनी रहेगी। 30 मार्च सोमवार शेयर बाजार में कुछ शेयरों में सुधार के संकेत के उपरान्त भी ट्रेंड गिरावट का रहेगा। 13 अप्रैल सोमवार बाजार तेजी में खुलेगा। परन्तु वर्किंग अवधि में शेयर बाजारों में गिरावट आयेगी। 26 अप्रैल रविवार रात्रि 20।33 से शेयर बाजारों में गिरावट का योग है। इसका प्रभाव सोमवार प्रात 07।18 तक रहेगा। 11 मई सोमवार बाजार साधारण गिरावट में खुलेगा। 24 मई रविवार शेयर बाजारों में गिरावट का योग है। 07 जून रविवार सांय 16।35 से शेयर बाजारों में गिरावट का योग है। परन्तु इसका प्रभाव सोमवार में नहीं मिलेगा। 21 जून रविवार गिरावट चलेगी। 29 जून सोमवार बाजार साधारण सुधार के उपरान्त भी गिरावट में खुलेगा। प्रात 07।20 पर बने गिरावट के योग की अवधि समाप्त होते ही शेयरों में तेजी बनेगी।

01 जुलाई बुधवार शेयर बाजार सुधार के उपरान्त भी गिरावट से खुलेगा। 5 जुलाई रविवार शेयर बाजारों में गिरावट का योग है। परन्तु इसका प्रभाव सोमवार में नहीं मिलेगा। 18 जुलाई शनिवार रात्रि 20।20 पर के योग से शेयर बाजारों में गिरावट आयेगी। बाजारों पर इसका प्रभाव नहीं होगा। 24 जुलाई शुक्रवार बाजार गिरावट के साथ खुलेगा। प्रात 07।37 के बाद शेयरों में तेजी बनेगी। 26 जुलाई रविवार 14।44 पर बने गिरावट के योग के बाद तेजी का योग है। 02 अगस्त रविवार रात्रि 00।45 से शेयर बाजारों में गिरावट करेगी। 05 अगस्त बुधवार शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा। बाद में भी बाजारों में गिरावट रहेगी। 07 अगस्त शुक्रवार शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा। 20 अगस्त गुरुवार शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा। दोपहर 14।55 से शेयरों में तेजी बनेगी। इसका प्रभाव 21 अगस्त में भी रहेगा। 22 अगस्त शनिवार 23।31 पर गिरावट का योग बना है। इसके बाद तेजी का योग है। 26 सितम्बर शनिवार गिरावट का योग बना है। 07 दिसंबर सोमवार शेयर बाजार तेजी के साथ खुलकर गिरावट में जायेगा। 11 दिसंबर शुक्रवार शेयर बाजार तेजी के साथ खुलकर गिरावट में जायेगा।

जनवरी–6 जन. 8.33% शेयर तेजी में तथा 25% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 33.32% शेयर निगेटिव तथा 16.66% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 16.69% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

रबर, जिंक, जूट, टोबैको तथा बैंक शेयर्स एच.डी.एफ.सी. बैंक, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, इण्डस इण्ड बैंक, जे.एण्ड.के. बैंक, कर्नाटका बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफे फिलिप्स, आई.टी.सी., अपोलो टायर्स, जे.के. इण्डस्ट्रीज, एम.आर.एफ. में तेजी आयेगी।

ग्लास, कॉपर, कोयला, लैड, सीमेंट, बिल्डिंग कन्सट्रक्शन तथा रियल एस्टेट सैक्टर, शुगर-बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, टैक्स्टाईल इण्डस्ट्रीज-इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट में गिरावट रहेगी।

13 जन.-16.66% शेयर तेजी में तथा 16.66% शेयर सामान्य तेजी में। 16.66% शेयर निगेटिव तथा 33.36% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 16.66% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

रबर, जिंक, जूट, टोबैको तथा बैंक शेयर्स, आयरन एण्ड स्टील, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज सैक्टर्स, टाटा स्टील, एस्सार स्टील, सेल, जे.के. लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, टाटा काफी, टाटा.टी, एच.डी.एफ. सी. बैंक, आई सी.आई.सी.आई. बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, इण्डस इण्ड बैंक, जे.एण्ड.के. बैंक, कर्नाटका बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई.टी.सी., अपोलो टायर्स, जे.के. इण्डस्ट्रीज, एम. आर.एफ. में तेजी आयेगी।

क्रांपटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम.टी.एन.एल., बी. एस.एन.एल. में गिरावट रहेगी।

20 जनवरी– 33.34% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 25% शेयर निगेटिव तथा 25% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 16. 66% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

कॉटन, जूट, शुगर मिल्स तथा कन्फैक्शनरी, ग्लास, कॉपर, कोयला, लैड, सीमेंट, बिल्डिंग कन्सट्रक्शन तथा रियल एस्टेट सैक्टर, सीमेंट, कॉपर माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज में तेजी आयेगी। क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम.टी.एन.एल., बी.एस.एन.एल. में गिरावट चलेगी।

27 जनवरी–33.32% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 25% शेयर निगेटिव तथा 33.35% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 8. 33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

कॉटन, जूट, शुगर मिल्स तथा कन्फैक्शनरी, ग्लास, कॉपर, कोयला, लैड, सीमेंट, बिल्डिंग कन्सट्रक्शन तथा रियल एस्टेट सैक्टर में सीमेंट कापर माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज में तेजी आयेगी। क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया,

भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्वा ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी.एन.एल., बी.एस.एन.एल. में गिरावट चलेगी।

03 फर.–16.66% शेयर तेजी में व 33.32% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 16.66% शेयर निगेटिव तथा 25% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 8.36% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

सीमेंट, कॉपर, माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज सैक्टर्स, टाटा स्टील, एस्सार स्टील, सेल, जे के लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, टाटा काफी, टाटा टी में तेजी रहेगी।

गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, डिव्सि लैबोरेट्रीज, डॉ. रैड्डीज लैब्स, हीरो मोटर्स कार्प, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुती उद्योग में गिरावट रहेगी।

10 फर.–16.70% शेयर तेजी में व 33.32% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 25% शेयर निगेटिव तथा 16.65% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 08.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

सीमेंट, कॉपर, माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज, कॉटन, जूट, शुगर मिल्स तथा कन्फैक्शनरी, ग्लास, कॉपर, कोयला, लैड, सीमेंट, बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन तथा रियल एस्टेट सैक्टर में तेजी आयेगी।

पेट्रोलियम शेयर, हॉस्पीटिलीटी सैक्टर, ब्रीवरीज, शिपिंग सैक्टर्स की मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एशियन होटल्स, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में गिरावट आयेगी।

17 फर.–25% शेयर तेजी में व 16.65% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 33.32% शेयर निगेटिव तथा 16.65% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 08.38% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

सीमेंट, कॉपर, माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, रबर, जिंक, जूट, टोबैको तथा बैंक शेयर्स, चाय, काफी, डिस्टलरीज सैक्टर्स, टाटा स्टील, एस्सार स्टील, सेल, जे.के. लक्ष्मी सीमेंट, टाटा काफी, टाटा टी, एच.डी.एफ.सी. बैंक, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई.टी.सी., अपोलो टायर्स, जे.के. इण्डस्ट्रीज, एम.आर.एफ. में तेजी आयेगी।

शुगर-बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, टैक्स्टाईल इण्डस्ट्रीज, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, पेट्रोलियम शेयर, हॉस्पीटिलीटी सैक्टर, ब्रीवरीज, शिपिंग सैक्टर्स की मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एशियन होटल्स, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में गिरावट आयेगी।

24 फर.–25% शेयर तेजी में तथा 16.65% शेयर सामान्य तेजी में। 16.65% शेयर निगेटिव तथा 33.32% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 08.38% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

सीमेंट, कॉपर, माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम शेयर, हॉस्पीटिलीटी सैक्टर, ब्रीवरीज, शिपिंग सैक्टर्स की मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एशियन होटल्स, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास, रबर, जिंक, जूट, टोबैको तथा बैंक शेयर्स एच.डी.एफ.सी. बैंक, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, कर्नाटका बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई.टी. सी., अपोलो टायर्स, जे.के. इण्डस्ट्रीज, एम.आर.एफ. में तेजी आयेगी।

आयरन एण्ड स्टील, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज सैक्टर्स, टाटा स्टील, एस्सार स्टील, सेल, जे. के. लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, टाटा काफी, टाटा टी, टेलीकॉम, लोजिस्टिक एवं ट्रान्सपोर्ट शेयर्स, फिल्म एण्ड ऐन्टरटेनमेन्ट इण्डस्ट्रीज, एल्यूमीनियम सैक्टर, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, आर्किड एण्ड फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज के शेयर्स में गिरावट रहेगी।

03 मार्च–8.35% शेयर तेजी में तथा 25% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 33.32% शेयर निगेटिव तथा 25% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 8.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

सीमेंट, कॉपर, माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज सैक्टर्स में तेजी बनेगी। शुगर बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, टैक्स्टाईल इण्डस्ट्रीज-इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, आयरन एण्ड स्टील, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज सैक्टर्स, टाटा स्टील, एस्सार स्टील, सेल, जे.के. लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, टाटा काफी, टाटा टी, पेट्रोलियम शेयर, हॉस्पीटिलीटी सैक्टर, ब्रीवरीज, शिपिंग सैक्टर्स की मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एशियन होटल्स, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में गिरावट रहेगी।

10 मार्च–16.35% शेयर तेजी में तथा 25% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 25% शेयर निगेटिव तथा 25% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 8.65% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

सीमेंट, कॉपर, माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज में तेजी आयेगी।

कॉटन, जूट, शुगर मिल्स तथा कन्फैक्शनरी, ग्लास, कॉपर, कोयला, लैड, सीमेंट, बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन तथा रियल एस्टेट सैक्टर, आयरन एण्ड स्टील, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज सैक्टर्स, टाटा स्टील, एस्सार स्टील, सेल, जे.के. लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, टाटा काफी, टाटा टी में गिरावट आयेगी।

17 मार्च–33.32% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 16.65% शेयर निगेटिव तथा 41.68% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 08.35% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

सीमेंट, कॉपर माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज, टेलीकॉम, लोजिस्टिक एवं ट्रान्सपोर्ट शेयर्स, फिल्म एण्ड ऐन्टरटेनमेन्ट इण्डस्ट्रीज, एल्यूमीनियम सैक्टर, ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, नाटको फार्मा, निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, आर्किड एण्ड फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज के शेयर्स में गिरावट रहेगी।

24 मार्च–16.65% शेयर तेजी में, 16.65% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 33.32% शेयर निगेटिव तथा 25% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 8.38% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

कॉपर, कोयला, लैड, सीमेंट, बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन तथा रियल एस्टेट सैक्टर, शुगर बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, टैक्स्टाईल इण्डस्ट्रीज-इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट में तेजी रहेगी। सीमेंट, कॉपर, माईनिंग, फार्मिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज, रबर, जिंक, जूट, टोबैको तथा बैंक शेयर्स एच.डी. एफ.सी. बैंक, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, इण्डस इण्ड बैंक, जे.एण्ड.के. बैंक, कर्नाटका बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई.टी.सी., अपोलो टायर्स, जे.के. इण्डस्ट्रीज, एम. आर.एफ. में गिरावट आयेगी।

31 मार्च–8.35% शेयर तेजी में तथा 8.35% शेयर सामान्य तेजी में रहेंगे। 50% शेयर निगेटिव तथा 25% शेयर सामान्य निगेटिव रहेंगे। शेष 8.30% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। शुगर बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, टैक्स्टाईल इण्डस्ट्रीज, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोट, कॉपर, कोयला, लैड, सीमेंट, बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन तथा रियल एस्टेट सैक्टर में घट-बढ़ चलेगी। लेदर इण्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम शेयर, हॉस्पीटिलीटी सैक्टर, ब्रीवरीज, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास, रबर, जिंक, जूट, टोबैको तथा बैंक शेयर्स एच.डी.एफ.सी. बैंक, आई.सी.आई. सी.आई. बैंक, कर्नाटका बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई.टी.सी., अपोलो टायर्स, जे.के. इण्डस्ट्रीज, एम.आर.एफ. में गिरावट आयेगी।

07 अप्रैल–बाजार साधारण गिरावट के साथ खुलेगा तथा साधारण गिरावट के साथ बंद होगा। 41.65% शेयरों में तेजी रहेगी तथा 50% शेयरों में गिरावट रहेगी। शेष 8.35% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। कॉटन, जूट, शुगर मिल्स, सीमेंट, कॉपर, स्टील माईनिंग, कोयला के शेयरों में तेजी। पेट्रोलियम कम्पनीज, ब्रीवरीज तथा होटल्स एण्ड हास्पीटिलीटी सैक्टर्स में दिन भर तेजी के बाद क्लोजिंग समय पर गिरावट बनेगी।

21 अप्रैल–बाजार साधारण गिरावट के साथ खुलेगा तथा साधारण गिरावट के साथ बंद होगा। 41.65% शेयरों में तेजी रहेगी तथा 50% शेयरों में गिरावट रहेगी। शेष 8.35% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। अपोलो टायर्स, जे.के. इण्डस्ट्रीज, एम. आर. एफ., टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई.टी.सी., जैप्रकाश एसोसियेट, महिन्द्रा गैस्को, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान कॉपर, निटको टाईल्स, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर के शेयरों में तेजी आयेगी। यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, टी. टोबेको, फार्मास्युटिकल सैक्टर्स में गिरावट आयेगी।

28 अप्रैल– बाजार सामान्य तेजी में खुलेगा। तेजी तथा गिरावट के शेयरों का अनुपात लगभग समान रहेगा। 16.67% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस.आर. एफ., वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई.आई.डी. कन्फैक्शनरी में तेजी आयेगी। ए.सी.सी. सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, बिरला कारपोरेशन, डालमिया सीमेंट (भारत), गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे.के. लक्ष्मी सीमेंट साधारण तेजी में रहेंगे। यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग में गिरावट रहेगी।

05 मई–बाजार गिरावट में खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 41.65% शेयर तेजी में तथा 50% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 8.35% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस.आर.एफ., वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर में तेजी बनेगी। इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग में गिरावट आयेगी।

12 मई–बाजार गिरावट में खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 41.65% शेयर तेजी में तथा 50% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 8.35% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी.वी. के होटल्स, जे.पी. होटल्स, यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग में प्रारम्भ में गिरावट रहेगी। परन्तु दोपहर 12।30 के बाद इन शेयरों में सुधार होगा।

19 मई– बाजार गिरावट में खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 33.35% शेयर तेजी में तथा 58.32% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 8.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस.आर.एफ., वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई. आई.डी. कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास में साधारण गिरावट रहेगी। परन्तु दोपहर 13.36 के बाद इन सैक्टर्स में सुधार होगा।

26 मई–बाजार गिरावट में खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 25% शेयर तेजी में तथा 58.33% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 16.67% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, टी. टोबेको, मेडिसन सैक्टर्स में तेजी रहेगी।

02 जून–बाजार गिरावट में खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 33.35% तेजी में तथा 58.32% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 8.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी.वी. के होटल्स, जे.पी. होटल्स, यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन में साधारण तेजी बनेगी। टिन, रबर, लेदर, मशीनरी उद्योग, कापर, जिंक तथा अन्य मेटल सैक्टर्स में तेजी चलेगी।

09 जून–बाजार गिरावट में खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 25% तेजी में तथा 66.67% शेयर गिरावट के साथ बंद होगें। 8.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी. ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास के शेयर तेजी में रहेंगे। परन्तु दोपहर 15.06 पर मार्केट क्लोज होते-होते गिरावट में जायेंगे। एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, जे.एस.डब्ल्यू., लायडस स्टील इण्डस्ट्रीज, मुकुन्द, सेल, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए.सी.सी. सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न में गिरावट आयेगी।

16 जून–बाजार गिरावट में खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 16.67% शेयर तेजी में तथा 75% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 08.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। यू. बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मकेटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन में साधारण तेजी बनेगी। रेमण्ड, एस. आर.एफ., वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई.आई.डी कन्फैक्शनरी, टी टोबेको, मेडिसन सैक्टर्स में गिरावट रहेगी।

23 जून–बाजार गिरावट में खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 25% शेयर तेजी में तथा 58.33% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 16.67% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में तेजी रहेगी परन्तु दोपहर 15।14 पर यह सैक्टर्स गिरावट में जायेंगे। गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे.के. लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, लायडस स्टील इण्डस्ट्रीज, मुकुन्द, सेल, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, निटको टाईल्स में गिरावट रहेगी।

30 जून– बाजार साधारण सुधार के उपरान्त भी गिरावट में खुलेगा तथा साधारण गिरावट के साथ बंद होगा। 41.65% तेजी में तथा 50.02% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 8.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। टिन, रबर, लेदर, मशीनरी उद्योग, कॉपर, जिंक सैक्टर्स में तेजी आयेगी। रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मकेटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में गिरावट आयेगी।

07 जुलाई– शेयर बाजार में सामान्य कारोबार होगा। बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा सुधार के उपरान्त भी साधारण गिरावट के साथ बंद होगा। 41.65% शेयर तेजी में तथा 50.02% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 8.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी. ई. शिपिंग, मकेटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में साधारण सुधार होगा तथा 9।53 से मध्यान्ह 14।15 तक तेजी बनेगी। इसके बाद पुनः यह सैक्टर्स गिरावट की ओर जायेंगे।

14 जुलाई–शेयर बाजार में सामान्य कारोबार होगा। बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा तेजी के साथ बंद होगा। ओपनिंग समय पर 41.65% शेयरों में तेजी रहेगी। क्लोजिंग समय पर 50% तेजी में, 41.67% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 8.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस.आर.एफ., वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई.आई.डी. कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कॉपर, टाटा स्टील,

उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ.एन.जी.सी., एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी.एम.डी.सी., सेसा गोआ, गैमन इण्डिया तथा टिन, रबर, लेदर, मशीनरी उद्योग, जिंक सैक्टर्स में तेजी।

21 जुलाई–शेयर बाजार कारोबार में सुधार होगा। बाजार तेजी के साथ खुलेगा तथा तेजी के साथ बंद होगा। 41.65% शेयर तेजी में तथा 33.35% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। आयल एण्ड पेट्रोलियम कम्पनीज, ब्रिवरीज, होटल्स एण्ड हास्पीटिलीटी, नेवीगेशन तथा फिशरीज सैक्टर्स के शेयरों में साधारण तेजी आयेगी। रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास तथा बैंकिंग, टोबैको, टिन, रबर, लेदर, मशीनरी उद्योग, कॉपर, जिंक, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट सैक्टर्स में गिरावट आयेगी।

28 जुलाई–बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 33.33% शेयर तेजी में तथा 50% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 16.67% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। ओरियेन्टल होटल्स, यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास के शेयर गिरावट में रहेंगे।

04 अगस्त–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा तेजी के साथ बंद होगा। 25% शेयर तेजी में तथा 66.67% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 8.33% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। टिन, सिल्वर, जिंक, प्रसाधन सामग्री, टोबैको, रबर, बैंकिंग सैक्टर्स में तेजी आयेगी। ऑयल एण्ड पेट्रोलियम कम्पनीज, ब्रिवरीज तथा होटल्स एण्ड हास्पीटिलीटी, नेवीगेशन, फिशरीज तथा ग्लास, कॉटन, जूट, शुगर मिल्स कन्फैक्शनरी के शेयरों में गिरावट आयेगी।

11 अगस्त–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा। बाजार गिरावट के साथ बंद होगा। 25% तेजी में तथा 58.33% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 16.67% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। टिन, सिल्वर, जिंक, जूट, क्लॉथ मिल्स, प्रसाधन सामग्री, टोबैको, रबर, बैंकिंग सैक्टर में तेजी आयेगी। टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ.एन.जी.सी., एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी.एम.डी.सी., सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच.सी.सी. के शेयरों में साधारण तेजी बनेगी।

18 अगस्त–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 16.67% शेयर तेजी में तथा 58.33% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन में तेजी चलेगी। दोपहर 12।40 के बाद यह सैक्टर्स गिरावट की ओर जाकर पुन: तेजी में आयेंगे। स्पष्ट है कि यह सैक्टर्स घटा-बढ़ी में चलेंगे। इनमें काम करते समय अतिरिक्त सावधानी रखें। ए.सी.सी. सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, जे.के. लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, एस्सार स्टील, जिन्दल स्टेनलैस, मुकुन्द, सेल, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ.एन.जी.सी., सेसा गोआ में गिरावट आयेगी।

25 अगस्त–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 16.67% शेयर तेजी में तथा 41.68% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 41.65% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। ओरियन्टल होटल्स, मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में साधारण तेजी बनेगी। मध्याह्न 13।51 से मध्याह्न 14।10 के मध्य यह सैक्टर्स गिरावट में रहेंगे।

1 सितम्बर–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा। बाजार गिरावट के साथ बंद होगा। 16.67% शेयर तेजी में तथा 58.33% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, क्राम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, सीमेन्स, भारती टेलीवेन्चर्स, एम.टी.एन.एल., बी.एस.एन.एल., स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शांति गियर्स, थर्मैक्स, सी.सी. आई. प्रोडक्टस तथा टी, कॉफी, टोबेको, कपास, फार्मास्युटिकल, जैम्स सैक्टर्स में तेजी आयगी। इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई. आई.डी. कन्फैक्शनरी में गिरावट के बाद दोपहर 13।54 से तेजी बनेगी। जे.पी. होटल्स, यू.बी. मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग में गिरावट आयेगी।

8 सितम्बर–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 25% शेयर तेजी में तथा 50% शेयर गिरावट में रहेंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, टैक्समेको, एल.एम.डब्ल्यू., एल.जी. बालाकृष्णन, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी.सी. आई. प्रोडक्टस में तेजी चलेगी। रेमण्ड, एस.आर.एफ., वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई.आई.डी. कन्फैक्शनरी के शेयर तथा टिन, सिल्वर, जिंक, जूट, क्लाथ मिल्स, प्रसाधन सामग्री, टोबैको, रबर, बैंकिंग सैक्टर गिरावट में जायेंगे।

15 सितम्बर–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा। बाजार गिरावट के साथ बंद होगा। 16.67% शेयर तेजी में तथा 58.33% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। टी कार्फी, टोबेको, फार्मास्युटिकल, टिन, रबर, लेदर, मशीनरी उद्योग, कॉपर तथा जिंक सैक्टर्स में तेजी बनेगी। एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में साधारण तेजी बनेगी। यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कॉपर, निटको टाईल्स में गिरावट रहेगी।

22 सितम्बर–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 16.67% तेजी में तथा 49.98% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 33.35% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में साधारण तेजी आयेगी। ओ.एन.जी.सी., एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी.एम.डी.सी., सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज में गिरावट आयेगी।

29 सितम्बर–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। 16.67% शेयर तेजी में तथा 58.33% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, हिम्मत सिंगका शैदे, इण्डो रामा सिन्थैटिक में तेजी बनेगी। बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई. आई.डी. कन्फैक्शनरी में साधारण तेजी रहेगी। जैम्स एण्ड ज्वैलरी, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग में गिरावट चलेगी।

6 अक्तूबर–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा गिरावट के साथ बंद होगा। ओपनिंग समय पर 25% शेयर तेजी में रहेंगे। क्लोजिंग समय पर 16.67% तेजी में तथा 58.33% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई.आई.डी. कन्फैक्शनरी में तेजी रहेगी। एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन, सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स अस्तरा माइक्रो, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम.टी.एन.एल., बी.एस.एन.एल. में साधारण तेजी बनेगी। आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, सैन्चुरी एन्का, फार्बेस गोकाक, गार्डन सिल्क, जैम्स एण्ड ज्वैलरी, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज में गिरावट आयेगी।

13 अक्टू.–शेयर बाजार गिरावट के साथ खुलेगा तथा बंद होगा। 25% शेयर तेजी में व 33.35% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 41.65% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कॉपर, निटको टाईल्स में साधारण तेजी। यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, बी.एस.एन.एल., अशोका लेलैण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो मोटर्स कार्प, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा. मारुती उद्योग, पंजाब ट्रेक्टर्स, टाटा मोटर्स, टी.वी.एस. मोटर्स, एडलैब फिल्म्स, बालाजी टेली फिल्म्स, टी, टोबेको, कपास, फार्मास्युटिकल में गिरावट।

20 अक्टूबर–शेयर बाजार सामान्य तेजी के साथ खुलेगा तथा फ्लैट बंद होगा। 25% शेयर तेजी में, 25% गिरावट के साथ बंद होंगे। 50% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। ओपनिंग समय में जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में साधारण गिरावट। प्रातः 09I55 के बाद इन सैक्टर्स में सुधार होकर तेजी।

27 अक्टू.–बाजार तेजी के साथ खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। 41.65% शेयर तेजी में तथा 16.70% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 41.65% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज में साधारण तेजी। इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शांति गियर्स, थर्मैक्स, सी.सी.आई. प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी, यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, फार्मास्युटिकल, मशीनरी उद्योग, टिन, सिल्वर, जिंक, जूट, क्लाथ मिल्स, प्रसाधन सामग्री, टोबैको, रबर, बैंकिंग सैक्टर्स में गिरावट।

3 नवम्बर–शेयर बाजार तेजी के साथ खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। 41.65% तेजी में तथा 16.70% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 41.65% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। रेमण्ड, एस.आर.एफ., वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई.आई.डी कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, टी, टोबेको, फार्मास्युटिकल, टिन, सिल्वर, जिंक, जूट, बैंकिंग, आयरन एण्ड स्टील, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी सैक्टर्स में गिरावट आयेगी।

10 नवम्बर–शेयर बाजार लगभग फ्लैट खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। 50% शेयर तेजी में तथा 16.65% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 33.35% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। जैम्स एण्ड ज्वैलरी, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एण्ड सिक्योरिटीज में गिरावट आयेगी। टिन रबर, लेदर, आयरन एण्ड स्टील, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, टी, कॉफी एण्ड डिस्टलरीज सैक्टर्स में तेजी रहेगी। यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन में गिरावट बनेगी। दोपहर 14I19 के बाद इन शेयरों में तेजी आयेगी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग में गिरावट आयेगी।

17 नवम्बर–शेयर बाजार तेजी के साथ खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। 41.65% शेयर तेजी में तथा 33.35% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। एशियन होटल्स, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में साधारण तेजी। टी, कॉफी, टोबेको, फार्मास्युटिकल सैक्टर्स में तेजी। आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग में गिरावट आयेगी।

24 नवं.–शेयर बाजार तेजी के साथ खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। 50% शेयर तेजी में तथा 25% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। टेक्समेको, एल.एम.डब्ल्यू., एल.जी. बालाकृष्णन, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स तथा टी, कॉफी, टोबेको, फार्मास्युटिकल सैक्टर्स में तेजी रहेगी। जे.के. लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट में घट-बढ़ के बाद तथा हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ.एन.जी.सी., एग्रोटैक फूड्, रुचि सोया, जी.एम.डी.सी., सेसा गोआ में गिरावट प्रातः 10I48 के बाद तेजी बनेगी।

1 दिसम्बर–शेयर बाजार तेजी के साथ खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। 41.65% शेयर तेजी में तथा 33.35% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। भारती टेलीवेन्चर्स, एम.टी.एन.एल., बी.एस.एन.एल., अशोका लैलेण्ड, बजाज ऑटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो मोटर्स कार्प, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुती उद्योग, टाटा मोटर्स, टी.वी.एस. मोटर्स, एडलैब फिल्म्स, बालाजी टेली फिल्म्स, टी.वी.18, टी.वी.टुडे, जी.टेली., भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यू., टोबैको, रबर, बैंकिंग सैक्टर में तेजी। इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस.आर.एफ., वैलस्पन इण्डिया, टिन, सिल्वर, जिंक, जूट, क्लाथ मिल्स, प्रसाधन सामग्री, टोबैको, रबर तथा बैंकिंग सैक्टर में गिरावट।

8 दिसम्बर–शेयर बाजार तेजी के साथ खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। क्लोजिंग समय पर 58.30% तेजी में तथा 16.70% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 25% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। जैम्स एण्ड ज्वैलरीज, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एण्ड सिक्योरिटीज में तेजी। अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, जयप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कॉपर, निटको टाईल्स में गिरावट आयेगी।

15 दिसम्बर–शेयर बाजार तेजी के साथ खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। 41.65% तेजी में तथा 25% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 33.35% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। आयल एण्ड पेट्रोलियम कम्पनीज, ब्रिवरीज तथा होटल्स एण्ड हास्पीटिलीटी तथा ग्लास सैक्टर्स गिरावट में रहेंगे। इन शेयरों में दोपहर 14I49 के बाद तेजी बनेगी। परन्तु क्लोजिंग आते-आते पुनः गिरावट दिखाई पड़ने लगेगी। टिन, रबर, लेदर, मशीनरी उद्योग, कॉपर तथा जिंक सैक्टर्स तेजी में बने रहेंगे।

22 दिसं.–शेयर बाजार तेजी में खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। ओपनिंग समय पर 50% शेयर तेजी में, क्लोजिंग समय पर 41.65% शेयर तेजी में तथा 16.70% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 41.65% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी.ई. शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईंग, टी, टोबेको, कपास, फार्मास्युटिकल सेक्टर्स में तेजी।

29 दिसम्बर–शेयर बाजार तेजी में खुलेगा तथा पॉजिटिव बंद होगा। क्लोजिंग समय 33.33% शेयर तेजी में तथा 25.02% शेयर गिरावट के साथ बंद होंगे। 41.65% शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। रुचि सोया, जी.एम.डी.सी., सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, जयप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कॉपर, निटको टाईल्स तथा जैम्स एण्ड ज्वैलरीज, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एण्ड सिक्योरिटीज, टी, कॉफी, टोबैको, फार्मास्युटिकल सैक्टर्स में साधारण तेजी रहेगी। टिन, जिंक, जूट शेयर्स, क्लाथ मिल्स, प्रसाधन सामग्री, टोबैको, रबर, बैंकिंग सैक्टर में गिरावट चलेगी।

शेयर बाजार का उपरोक्त संभावित रुख ग्रह गोचर पर आधारित तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के दिया गया है। बाजार स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त वैश्विक एवं स्थानिक राजनैतिक वातावरण, केन्द्र तथा प्रदेश सरकार की नीतियों आदि पर निर्भर करता है। व्यापारी काम करने से पूर्व बाजार का आकलन अवश्य कर लें। व्यापार से होने वाले लाभ अथवा हानि के लिए लेखक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं होंगे। बाजार की वार्षिक, अर्धवार्षिक रिपोर्ट के लिए लेखक से उनके स्थायी आवास सी-82 वल्लभ नगर, उमा नगर सोसायटी के सामने, नोविनो तरसाली रोड, वड़ोदरा (गुजरात), पिन- 390009, मोबाइल- 09574337962 पर अथवा pmummy@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

लेखकः **प्रवीन कुमार जैन** (वड़ोदरा, गुजरात)

भारतीय मानसून, प्राकृतिक वातावरण एवं आकाशीय लक्षण 2015 ई.

जनवरी–शीत लहर में वृद्धि जारी रहेगी। अप्रत्याशित ऋतु विपर्यय होगा। कहीं बादल वर्षा से, कहीं ओलापात से क्षति। ता. 1, 3, 5, 7, 9, 11, 12, 13 को कुछ पहाड़ी क्षेत्रों में व्यापक हिमपात से ठंड में वृद्धि। मकर संक्रांति वायुमंडल में पड़ने से वायु वेग के कारण उत्तर भारत पूर्वी पंजाब, बिहार, उड़ीसा आदि शीत लहर के चपेट में। ता. 16, 17, 20, 22, 25, 27, 29, 31 को कहीं-कहीं छिट-पुट बारीश तथा मौसम का मिजाज बदला-बदला सा रहेगा। ओला-पाला से जीवन कष्टमय। यातायात, दूर-संचार व्यवस्था में गतिरोध। फसलों की हानि हो सकती है।

फरवरी–मासारंभ में शीत लहर का प्रभावी प्रकोप जारी रहेगा। वायु वेगाधिक्य जोर जारी रहेगा। ता. 1, 3, 5, 6, 7, 8, 10 को सामान्य से भारी वर्षा संभावित है। हिमालय की तराईयों में व्यापक हिमपात हो सकता है। हांलाकि बुध मार्गी होने के बाद मौसम में सुधार संभावित है। कुंभ संक्रांति वायुमंडल में पड़ रही है। हवा के तेज आवेग से व्यापक ठंड बनी रह सकती है। माह के अंत में दिन के तापमान में धीरे-धीरे सुधार संभावित है। ता. 17, 18, 19, 21, 23, 24, 26 को कुछ भू-भागों में वर्षा संभावित है। ता. 20 के बाद हवाओं के जोर से खड़ी फसलों को हानि हो सकती है। कुछ भू-भागों में प्राकृतिक उत्पात हो सकते हैं।

मार्च–मौसम में व्यतिक्रम जारी रहेगा। गर्मी और सर्दी का मिला-जुला मौसम होगा। जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होगा। पूर्वी भारत में वायु के उपद्रव के साथ छिट-पुट बारिश हो सकती है। उत्तर भारत की पहाड़ियों में कुछ ओला-पाला अथवा अन्य प्राकृतिक उत्पात हो सकते हैं। ता. 2, 3, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12 को आसमान में हल्के-फुल्के बादल दिखाई देंगे। मीन संक्रांति महेन्द्र मंडल में पड़ रही है। अतः उत्तरार्द्ध में मौसम बहुत सुहाना होगा। आसमान बिल्कुल साफ होगा तथा दिन में गर्मी का एहसास होगा। भारत के कुछ भू-भागों में भूकंप आदि उपद्रव हो सकते हैं।

अप्रैल–गर्मी का प्रकोप क्रमशः बढ़ता जाएगा। तेज आंधी एवं लू के कारण उत्तर एवं पश्चिम भारत का जन-जीवन प्रभावित रहेगा। दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में सामान्य से भारी वर्षा हो सकती है। ता. 1, 3, 4, 5, 7, 9, 10 को वायु वेगाधिक्य से आंधी का जोर रहेगा। समुद्रतटीय क्षेत्रों में वायु के दबाव के कारण कुछ प्राकृतिक उत्पात हो सकते हैं। मेष संक्रांति चन्द्र मंडल में पड़ रही है। इसलिए उत्तरार्द्ध का मौसम कुछ खुशगवार रह सकता है। ता. 14, 20, 21, 24, 25, 27, 28 मौसम में परिवर्तन दिखेगा। आंधी-तूफान का दौर हो सकता है।

मई–मौसम में व्यतिक्रम दिखेगा। अप्रत्याशित परिवर्तन भारतीय मानसून को दशा-दिशा धारणा परिवर्तित करेगा जिससे मानसून में गतिरोध उत्पन्न हो सकता है। लू के प्रकोप से उत्तर-पश्चिम भारत का जन-जीवन प्रभावित रहेगा। कृषक वर्ग व्यापक चिंतित दिख पड़ेंगे। ता. 1, 2, 3, 4, 8, 9, 11, 12, 13 को तेज पछुआ हवाओं के साथ मौसम गर्म रहेगा। आम जन-जीवन, पशु-पक्षी इस गर्मी से परेशान रहेंगे। समय से काफी देर से मानसून प्रवेश करेगा तथा खंडवृष्टि संयोग बनेगा। वृष की संक्रांति वरुण मंडल में पड़ने से मौसम में गतिरोधता बनी रहेगी। मौसम परिवर्तित होकर भी बारिश नहीं होगी। इसलिए मौसम का मिजाज सुस्त रहेगा।

जून–गर्मी एवं लू का प्रकोप अपने चरम सीमा पर रहेगा। शुभ ग्रहों की युति सूर्य से होने के कारण जनता गर्मी के कारण परेशान रहेगी। आकाश में बादल का अभाव रहेगा। मानसून में गतिरोधता बनी रहेगी। कुछ क्षेत्र में तेज आंधी-तूफान या अन्य प्राकृतिक उत्पात संभावित है। मिथुन की सूर्य संक्रांति वायु मंडल में पड़ने के कारण तापमान में कमी नहीं होगी और तेज हवाओं का जोर बना रह सकता है। ता. 23, 24, 25, 27, 29, 30 को मौसम विपरीत हो सकता है। मानसून में बिलम्ब हो सकता है।

जुलाई–मास के प्रारंभ में गर्मी तो पड़ेगी किंतु बादल वृष्टि के कारण मौसम बदला-बदला सा दिखेगा। गर्मी से जनता को राहत मिलने की संभावना बनेगी। गुरु, शुक्र की युति उत्तर मध्य भारत में वर्षा की स्थिति अच्छी बनाएगी। गुजरात, राजस्थान, विदर्भ क्षेत्रों में बारिश बाधित होनी चाहिए। ता. 4, 6, 8, 9, 10, 11, 12 को कहीं-कहीं भारी वर्षा हो सकती है। कर्क संक्रांति वायुमंडल में पड़ने से तेज-हवाओं के साथ साधारण से भारी वर्षा हो सकती है। परन्तु कुछ क्षेत्रों में तेज हवाओं के कारण बादल बिखर भी सकते हैं। ता. 15, 17, 21, 25, 27, 28, 31 को कहीं-कहीं अतिवृष्टि से बाढ़ की स्थिति गंभीर हो सकती है।

अगस्त–मौसम का मिजाज बदलेगा। वर्षा में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है। कुछ प्रदेशों में ही अश्लेषा, मघा का जल प्राप्त होगा। कुछ प्रदेशों में अतिवृष्टि से व्यापक नुकसान। समयानुकूल वर्षा गतिरोधता से कृषि उत्पादन प्रभावित हो सकता है। मासारंभ में शनि का मार्गी होना वर्षा के लिए शुभकारक नहीं माना जाता है। ता. 3, 5, 7, 9, 11, 12, 13 को कहीं-कहीं साधारण से भारी वर्षा हो सकती है। सिंह की सूर्य संक्रांति अग्निमंडल में पड़ने से उत्तरार्द्ध में वर्षा का क्रम बाधित हो सकता है। आकाश में बादल तो दिखेंगे। लेकिन उसमें जल नहीं रहेगा।

सितंबर–वर्षा का जोर कुछ अधिक हो सकता है। उत्तर भारत की पहाड़ियों पर बरसात अचानक और उपद्रवी हो सकती है। राजस्थान, गुजरात में वर्षा अधिक हो सकती है। महाराष्ट्र में अधिक वर्षा होने से जन-जीवन बाधित होगा। दक्षिण भारत में सामान्य से कम वर्षा होगी। उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में व्यापक वर्षा। पश्चिमी तटीय क्षेत्रों में चक्रवात या तूफान से परेशानी हो सकता है। कन्या की सूर्य संक्रांति वायुमंडल में पड़ने से समुद्रतटीय क्षेत्रों में आंधी-तूफान, अन्य प्राकृतिक उत्पात अधिक हो सकते हैं। बिहार, उत्तर-प्रदेश, बंगाल, झारखंड, मध्यप्रदेश में अच्छी वर्षा संभावित है। हालांकि कुछ प्रदेशों में खंड वृष्टि की संभावना है।

अक्टूबर–मासारंभ में वर्षा का क्रम कुछ जारी रहेगा। जिससे रात के तापमान में धीरे-धीरे गिरावट बनेगी। दिन-रात के तापमान में विशेष अंतर एवं आर्द्रता बढ़ने से रोगों का प्रकोप बढ़ेगा। दक्षिण भारत में व्यापक वर्षा हो सकती है। परंतु उत्तर भारत में ता. 9 के बाद मानसून का वापसी हो जाना चाहिए। पर्वतीय क्षेत्रों में भू-स्खलन या अन्य प्राकृतिक उत्पात से जन-धन की हानि हो सकती है। ता. 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 को गरज के साथ साधारण से भारी वर्षा हो सकती है। तुला की सूर्य संक्रांति अग्नि मंडल में पड़ने से मौसम में गतिरोधता उत्पन्न होने लगेगी।

नवंबर–फलतः गुलाबी ठंड का असर क्रमशः दिखने लगेगा। हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, हिमाचल में हिमपात हो सकता है। तराई वाले क्षेत्रों में गरज के साथ कुछ वर्षा संभावित है। ता. 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 10, 11 को कहीं-कहीं खंडवृष्टि, तो पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात हो सकता है। जिससे कुछ फसलों की बुआई प्रभावित हो सकती है। वृश्चिक की सूर्य संक्रांति वरुण मंडल में पड़ने से ठंड का प्रकोप बढ़ता जाएगा। दक्षिण भारत में वृष्टि का योग बनेगा। ता. 16, 17, 18, 20, 21, 23, 25, 27, 29 को मौसम परिवर्तित रहेगा।

दिसंबर–उत्तर भारत में शीत लहर जारी रहेगी। साथ ही कुछ क्षेत्रों में सामान्य से भारी वर्षा संभावित है। मास मध्य के बाद अधिकांश समुद्रतटीय प्रदेशों में हवा का दबाव बढ़ने से तूफान आदि से जन-जीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। ता. 1, 2, 4, 5, 7, 9, 11, 15 को मौसम का मिजाज बदला रहेगा। धनु की संक्रांति चन्द्र मंडल में पड़ने से शीतलहर का प्रकोप बढ़ता जाएगा। पहाड़ी क्षेत्रों में व्यापक हिमपात हो सकता है।

लेखक–पं. टुनटुन शास्त्री
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरॉंव (नटवार), जिला-रोहतास (बिहार)-802218

कैसा हो आपके आवासीय घर का वास्तु

लेखक–
पं० केवल आनन्द जोशी

गृह वास्तु के 51 सूत्र : घर बनाने से पहले परखें

1. सफेद रंग की सुगंधित मिट्टी वाली भूमि ब्राह्मणों के निवास के लिए श्रेष्ठ मानी गई है।
2. लाल रंग की कसैले स्वाद वाली भूमि क्षत्रिय, राजनेता, सेना व पुलिस के अधिकारियों के लिए शुभ मानी गई है।
3. हरे या पीले रंग की खट्टे स्वाद वाली भूमि व्यापारियों, व्यापारिक स्थलों, वित्तीय संस्थानों के लिए शुभ मानी गई है।
4. काले रंग की कड़वे स्वाद वाली भूमि अच्छी नहीं मानी जाती। यह भूमि शूद्रों के योग्य है।
5. मधुर समतल व सुगंधित व ठोस भूमि भवन बनाने के लिए उपयुक्त है।
6. खुदाई में चींटी, दीमक, अजगर, सांप, हड्डी, कपड़े, राख, कोड़ी, जल, लकड़ी व लोहा मिलना शुभ नहीं माना जाता।
7. भूमि की ढलान उत्तर और पूर्व की ओर, छत की ढलान ईशान कोण में होनी चाहिए।
8. भूखण्ड के दक्षिण या पश्चिम में ऊचें भवन, पहाड़, टीले या पेड़ शुभ माने जाते हैं।
9. भूखण्ड से पूर्व या उत्तर की ओर कोई नदी या नहर हो और उसका प्रवाह उत्तर या पूर्व की ओर हो तो शुभ होता है।
10. भूखण्ड के उत्तर, पूर्व या ईशान में भूमिगत जल स्रोत, कुंआ, तालाब एवं बावड़ी शुभ।
11. भूखण्ड दो बड़े भूखण्डों के बीच होना अशुभ।
12. भवन दो बड़े भवनों के बीच होना शुभ नहीं।
13. आयताकार, वृताकार व गोमुखी भूखण्ड गृह वास्तु में शुभ होता है। वृताकार भूखण्ड में निर्माण भी वृताकार ही होना चाहिए।
14. सिंहमुखी भूखण्ड व्यवसायिक वास्तु के लिए शुभ।
15. भूखण्ड का उत्तर या पूर्व या ईशान कोण में विस्तार शुभ माना जाता है।
16. भूखण्ड के उत्तर और पूर्व में मार्ग शुभ।
17. दक्षिण व पश्चिम में मार्ग व्यापारिक स्थल में लाभदायक माने जाते हैं।
18. भवन के द्वार के सामने मंदिर, खंभा व गड्ढा शुभ नहीं माने जाते।
19. आवासीय भूखण्ड में बेसमेन्ट नहीं होनी चाहिए।
20. बेसमेन्ट बनानी आवश्यक हो तो उत्तर और पूर्व में ब्रह्म स्थान को बचाते हुए बनानी चाहिए।
21. बेसमेन्ट की ऊंचाई कम से कम 9 फीट हो और 3 फीट तल से ऊपर हो ताकि प्रकाश और हवा आ जा सके।
22. कुआ, बोरिंग व भूमिगत टंकी उत्तर पूर्व या ईशान में बना सकते हैं। वास्तु पुरुष के अतिमर्म स्थानों को छोड़ कर।
23. भवन की प्रत्येक मंजिल में छत की ऊंचाई 12 फुट रखें। 10 फुट से कम नहीं।
24. भवन का दक्षिणी भाग हमेशा उत्तरी भाग से ऊंचा।
25. भवन का पश्चिमी भाग हमेशा पूर्वी भाग से ऊंचा।
26. भवन में नैऋत्य सबसे ऊंचा और ईशान सबसे नीचा होना चाहिए।
27. भवन का मुख्य द्वार ब्राह्मणों को पूर्व में, क्षत्रियों को उत्तर में, वैश्य को दक्षिण में तथा शूद्रों को पश्चिम में रखें। इसके लिए 81 पदों का वास्तु चक्र बना कर निर्णय करना चाहिए।
28. द्वार की चौड़ाई उसकी ऊंचाई से आधी।
29. बरामदा घर के उत्तर या पूर्व में होना चाहिए।
30. खिड़कियां घर के उत्तर या पूर्व में अधिक तथा दक्षिण या पश्चिम में कम बनानी चाहिए।
31. ब्रह्म स्थान को खुला साफ, हवादार रखना चाहिए।
32. गृह निर्माण में 81 पद वाले वास्तु चक्र में 9 स्थान ब्रह्म स्थान के लिए नियत किए गये हैं।
33. चार दीवारी के अंदर सबसे ज्यादा खुला स्थान पूर्व में छोड़ें। उससे कम उत्तर में, उससे कम पश्चिम में, सबसे कम दक्षिण में छोड़ें।
34. दीवारों की मोटाई सबसे ज्यादा दक्षिण में, उससे कम पश्चिम में, उससे कम उत्तर में, सबसे कम पूर्व में रखें।
35. घर के ईशान कोण में पूजा घर, कुंआ, बोरिंग, बच्चों का कमरा, भूमिगत वाटर टेंक, बरामदा, लिविंग रूम, ड्राइंग रूम व बेसमेंट बनायें।
36. घर की पूर्व दिशा में स्नान घर, तहखाना, बरामदा, कुंआ, बगीचा व पूजा घर बनायें।
37. घर के आग्नेय कोण में रसोई घर, बिजली के मीटर, जेनरेटर, इन्वर्टर व मेन स्विच लगाएं।
38. घर की दक्षिण दिशा में मुख्य शयन कक्ष, भंडार, सीडियां व ऊंचे वृक्ष लगाएं।
39. घर के नैऋत्य कोण में शयन कक्ष, भारी व कम उपयोगी सामान का स्टोर, सीढ़ियां, हैड वाटर टेंक व शौचालय बनाए जा सकते हैं।
40. घर की पश्चिम दिशा में भोजन कक्ष, सीढियां, अध्ययन कक्ष, शयन कक्ष, शौचालय व ऊंचे वृक्ष लगाए जा सकते हैं।
41. घर के वायव्य कोण में अतिथि घर, कुंवारी कन्याओं का शयन कक्ष, रोदन कक्ष, लिविंग रूम, ड्राइंग रूम, सीढ़ियां, अन्न भण्डार व शौचालय बनाये जा सकते हैं।
42. घर की उत्तर दिशा में कुंआ, तालाब, बगीचा, पूजा घर, तहखाना, स्वागत कक्ष, कोषागार व लिविंग रूम बनाये जा सकते हैं।
43. घर का भारी सामान नैऋत्य कोण, दक्षिण या पश्चिम में रखना चाहिए।
44. घर का हल्का सामान उत्तर-पूर्व व ईशान में रखना चाहिए।
45. घर के नैऋत्य भाग में किरायेदार या अतिथि को नहीं ठहराना चाहिए।
46. सोते समय सिर पूर्व या दक्षिण की तरफ होना चाहिए। (मतान्तर से अपने घर में पूर्व दिशा में, ससुराल में दक्षिण सिर करके, परदेश में पश्चिम सिर करके और उत्तर दिशा में सिर करके कभी नहीं सोना चाहिए।)
47. दिन में उत्तर की ओर तथा रात्रि में दक्षिण की ओर मुख करके मल मूत्र का त्याग करना चाहिए।
48. घर के पूजा गृह में बड़ी मूर्तियां नहीं होनी चाहिए। दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य प्रतिमा, तीन देवी प्रतिमा, दो गोमती चक्र व दो शालिग्राम नहीं रखने चाहिए।
49. भोजन सदा पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके ही करना चाहिए।
50. सीढ़ियों के नीचे पूजा घर, शौचालय व रसोई घर नहीं बनाना चाहिए।
51. धन की तिजोरी का मुंह उत्तर दिशा की ओर।

6 श्लोकी सम्पूर्ण गृह वास्तु माये करें

ईशान्यां देवतागृहं पूर्वस्यां स्नानमन्दिरम् ।
आग्नेयां पाक सदनं भाण्डारं गृहमुत्तरे ॥1॥
आग्नेयपूर्वयोर्मध्ये दधिमन्थन-मन्दिरम् ।
अग्निप्रेतेशयोमैध्ये आज्यगेहं प्रशस्यते ॥2॥
चाम्यनैऋत्ययोर्मध्ये पुरीषत्याग मन्दिरम् ।
नैर्ऋतयाम्बुपयोर्मध्ये विद्याभ्यासस्य मन्दिरम् ॥3॥
पश्चिमानिलयोर्मध्ये रोदनार्थं गहं स्मृतम् ।
वायव्योत्तरयोर्मध्ये रतिगेहं प्रशस्यते ॥4॥
उत्तरेशानयोर्मध्ये औषाधार्थं तु कारयेत् ।
नैर्ऋत्यां सूतिकागेहं नृपाणां भूतिमिच्छता ॥5॥
आसन्नप्रसवे मासि कुर्यांच्चैव विशेषतः ।
तद्वत् प्रसवकाले स्यादिति शास्त्रेषु निश्चयः ॥6॥

अर्थात् : ईशान कोण में देवता का गृह, पूर्व दिशा में स्नानगृह, अग्नि कोण में रसोई का गृह, उत्तर में भंडारगृह, अग्निकोण और पूर्व दिशा के बीच में दूध-दही मथने का गृह अथवा जैनरेटर, बैटरी, इनवर्टर का स्थान, अग्नि कोण और दक्षिण दिशा के मध्य में तेल/घी का गृह, दक्षिण दिशा और नैऋत्य कोण के मध्य में शौचालय जाने का स्थान, नैऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में विद्याभ्यास का गृह, पश्चिम और वायव्य कोण के मध्य में रोदन/ पीड़ा निवारण का गृह, वायव्य और उत्तर दिशा के मध्य में रति करने का गृह, उत्तर दिशा और ईशान के मध्य में औषधि के लिए गृह, नैऋत्य कोण में सूतिका (बच्चा होने के लिए) गृह बनाना चाहिए। यह सूतिका गृह प्रसव के आसन्न मास में बनाना चाहिए। ऐसा शास्त्र में निश्चित है।

नोट–घर बनवाते वक्त अथवा फ्लेट/प्लाट खरीदते वक्त इस लेखक को अवश्य सम्पर्क करें ताकि वास्तुदोष का समय रहते उपचार हो सके।

लेखक–पं० केवल आनन्द जोशी
D-I/C-33A, Janakpuri, N.Delhi-110058
Ph. : 09868716447, 09810202780
E-mail : kajoshi46@gmail.com

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
21 जन.	मूल	2		23:31
24 "	"	3		16:38
27 "	"	4		09:40
29 "	पूषा.	1		26:40
01 फर.	"	2		19:34
04 "	"	3		12:26
06 "	"	4		30:15
09 "	उषा.	1		22:05
12 "	"	2	मकर	14:51
15 "	"	3		07:35
17 "	"	4		24:19
20 "	श्रवण	1		17:04
23 "	"	2		09:45
25 "	"	3		26:27
28 "	"	4		19:08
02 मार्च	धनि.	1		11:49
04 "	"	2		28:28
07 "	"	3	कुंभ	21:08
10 "	"	4		13:46
12 "	शत.	1		30:27
15 "	"	2		23:06
18 "	"	3		15:48
21 "	"	4		08:30
23 "	पूभा.	1		25:13
26 "	"	2		17:56
29 "	"	3		10:40
31 "	"	4	मीन	27:25
03 अप्रै.	उभा.	1		20:10
06 "	"	2		12:55
08 "	"	3		29:41
11 "	"	4		22:29
14 "	रेवती	1		15:20
17 "	"	2		08:10
19 "	"	3		25:02
22 "	"	4		17:56
25 "	अश्वि.	1	मेष	10:52
27 "	"	2		27:46
30 "	"	3		20:43
03 मई	"	4		13:40

शनि का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
16 अप्रै.	अनु.	2	वृश्चि.	12:47
04 जून	"	1		11:37
27 सितं.	"	2		26:06
31 अक्टू.	"	3		27:17
29 नवं.	"	4		21:46
28 दिसं.	ज्ये.	1		17:09
31 जन.	"	2		16:00

राहु का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
06 जून	हस्त	1	कन्या	08:09
13 जुला.	उफा.	4		16:13
28 अक्टू.	"	3		08:49
10 दिसं.	"	2		09:41
09 जन.	"	1	सिंह	11:45
26 अप्रै.	पूफा.	4		09:10

केतु का नक्षत्र राशि संचार

ता. मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
06 जून	उभा.	3	मीन	08:09
13 जुला.	"	2		16:13
28 अक्टूं.	"	1		08:49
10 दिसं.	पूभा.	4		09:30
09 जन.	"	3	कुंभ	11:45

मंगल वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
20 मई'15	मार्गी	08:18
17 अप्रै.'16	वक्री	18:52

बुध वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
19 मई	वक्री	06:33
11 जून	मार्गी	27:21
17 सितं.	वक्री	22:49
09 अक्टू.	मार्गी	19:31
05 जन.'16	वक्री	17:38
25 जन.'16	मार्गी	26:26
28 अप्रै.'16	वक्री	22:03
22 मई'16	मार्गी	18:08

गुरु वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
09 अप्रैं.	मार्गी	08:14
08 जन. 16	वक्री	19:01

शुक्र वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
31 जन.'15	मार्गी	26:06
25 जुला.	वक्री	14:42
06 सितं.	मार्गी	13:45

शनि वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
15 मार्च	वक्री	14:36
03 अग.	मार्गी	06:52
26 मार्च'16	वक्री	10:13

हर्षल वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
28 जुला.	वक्री	09:07
27 दिसं.	मार्गी	22:34

नेपच्यून वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
14 जून	वक्री	28:06
27 नवं.	मार्गी	08:12
16 जनू'16	वक्री	15:51

प्लूटो वक्री-मार्गी

ता. मास	व./मा.	घं.मि.
19 अप्रै.	वक्री	26:51
28 सितं.	मार्गी	06:39
21 अप्रै.'16	वक्री	06:34

उदयास्त भौम:

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
10 अप्रै.	पश्चिमास्तं	11:12
11 अग.	पूर्वोदयं	26:28

उदयास्त बुध:

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
26 मार्च	पूर्वास्तं	12:03
23 अप्रै.	पश्चिमोदयं	09:25
22 मई	पश्चिमास्तं	09:44

उदयास्त बुध:

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
08 जून	पूर्वोदयं	09:32
11 जुला.	पूर्वास्तं	13:49
06 अग.	पश्चिमोदयं	18:49
24 सितं.	पश्चिमास्तं	20:12
07 अक्टू.	पूर्वोदयं	07:19
26 "	पूर्वास्तं	14:39
13 दिसं.	पश्चिमोदयं	14:46
08 जन.	पश्चिमास्तं	25:52
20 "	पूर्वोदयं	07:11
26 मार्च	पूर्वास्तं	13:52
06 अप्रै.	पश्चिमोदयं	20:30
01 मई	पश्चिमास्तं	12:07

उदयास्त गुरु:

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
12 अग.	पश्चिमास्तं	9:18
10 सितं.	पूर्वोदयं	18:49

उदयास्त शुक्र:

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
10 अग.	पश्चिमास्तं	22:03
20 अग.	पूर्वोदयं	27:25

उदयास्त शनि

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
12 नव.	पश्चिमास्तं	06:55
17 दिसं.	पूर्वोदयं	25:04

उदयास्त हर्षल

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
21 मार्च	अस्त	17:14
22 अप्रै.	उदय	25:31
24 मार्च	अस्त	23:45

उदयास्त नेपच्यून

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
13 फर.	अस्त	10:18
15 मार्च	उदय	11:13

उदयास्त प्लूटो

ता. मास	उ./अ.	घं.मि.
21 दिसं.	अस्त	27:18
21 जन.	[illegible]	[illegible]